6402.

अमृत सागर

अमृत रूपी औषधियों का सागर

वा केवल और यौगिक औषधियों का बड़ा अगाध सरोवर है जिनका
गुण अमृत तुल्य है

जो

स्वस्ति श्रीमद्विविध विद्या प्रचाराभ्यर्णीय गुणिजन जेगीयमान सत्कीर्ति
श्री ५ महाराजाधिराज सवाई प्रताप सिंह वीरेश जयपुराधीश वैकुण्ठ वासी
की इच्छानुकूल अच्छे २ सद्वैद्यों के सम्मति से उत्तमोत्तम आयुर्वेद
की आनुभविक चिकित्सा का सङ्ग्रह जयपुर देश भाषा में सर्वोपकारक हुवा

परन्तु

उक्त देश भाषा के एक देशीय होने से सर्वोपकारकता में अन्तर जान
कर समस्त कार्य्य कमल मार्त्तण्ड श्री मन्मुंशी नवलकिशोर जी
अवध समाचाराधीश ने इस पुस्तक के चरितार्थ करने को अपने भुज
बल से अति वित्त व्यय कर श्री मत्परोप कृति तरङ्गिणी तरल वर्द्धित
कल्प लता ललाम श्री अयोध्या जी के महाराज मानसिंह कायमजङ्ग
वैकुण्ठ वासी की अनुमति से श्री मन्निज चातुरी चमत्कृति चन्द्रिका
विशदी कृतानेक विद्वज्जनाग्रणी श्री मद्गौड़ ब्राह्मण पण्डित काली
चरण जी से सरल सर्व्व सम्मत ब्रज भाषा में प्रति वर्ण यथोचित
रचवाय तीन बार छपवाया —

जिसने इस पुस्तक को देखा चित्त से अङ्गीकार किया और आनुभविक
औषधियों का फल पाय अपने शारीरिक कष्टों को यमालय पहुंचाया
पुस्तकें ऐसी हाथों हाथ बिकीं कि कुछ दिनों में यन्त्रालय में भी इस
अलभ्य लाभ का साधन न हुवा अब यन्त्रालयाधिष्ठाता मुंशीजी ने
अपने मित्र वर्ग समाज सम्मति से अवध मण्डलान्तर्गत आयुर्वेद
की-वृहत्त्रयी-मध्यत्रयी-लघुत्रयी ग्रन्थों के पारङ्गत भिषग्वरों
के प्रसाद भूत ग्रन्थान्तरीयोत्तमोत्तम क्रोड पत्र जिन में छोटे अल्प
बड़े २ असाध्य रोगों में अपना कार्य्य बनाय शरीरों को आरोग्य प्रद
होते हैं इस ग्रन्थ में संयुक्त कराय चौथी बार

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर यन्त्रालय में बाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से छपवाया
अप्रैल सन् १८७८ ई०

PRATAP SINGH MUSEUM, SRINAGAR.
Gl. No. 2922
~~3260~~

Amrita Sagar.

Price Rs. 2/-

6402.

अमृत सागर

अमृत रूपी औषधियों का सागर

वा केवल और यौगिक औषधियों का बड़ा अगाध सरोवर है जिनका
गुण अमृत तुल्य है

जो

स्वस्ति श्रीमद्विविध विद्या प्रचारभूणीय गुणिजन जेगीयमान सत्कीर्ति श्री ५ महाराजाधिराज सवाई प्रतापसिंह वीरेश जयपुराधीश वैकुण्ठवासी की इच्छानुकूल अच्छे २ सद्वैद्यों के सम्मति से उत्तमोत्तम आयुर्वेद की आनुभविक चिकित्सा का सङ्ग्रह जयपुर देश भाषा में सर्वोपकारक हुवा

परन्तु

उक्त देश भाषा के एक देशीय होने से सर्वोपकारकता में अन्तर जान कर समस्त कार्य्य कमल मार्त्तण्ड श्रीमन्मुंशी नवलकिशोर जी अवध समाचाराधीश ने इस पुस्तक के चरितार्थ करने को अपने भुज बल से अति वित्त व्यय कर श्रीमत्परोप कृति तरङ्गिणी तरलवर्द्धित कल्पलता ललाम श्री अयोध्या जी के महाराज मानसिंह कायमजङ्ग वैकुण्ठ वासी की अनुमति से श्री मन्त्रिज चातुरी चमत्कृति चन्द्रिका विशदी कृतानेक विद्वज्जनाग्रणी श्री महेन्द्र ब्राह्मण पण्डित कालीचरण जी से सरल सर्व्व सम्मत ब्रज भाषा में प्रति वर्ण यथोचित रचवाय तीन बार छपवाया —

जिसने इस पुस्तक को देख चित्त से अङ्गीकार किया और आनुभविक औषधियों का फल पाय अपने शारीरिक कष्टों को यमालय पहुंचाया पुस्तकें ऐसी हाथों हाथ बिकीं कि कुछ दिनों में यन्त्रालय में भी इस अलभ्य लाभ का साधन न हुवा अब यन्त्रालयाधिष्ठात मुंशीजी ने अपने मित्र वर्ग समाज सम्मति से अवध मण्डलान्तर्गत आयुर्वेद की - वृहत्त्रयी - मध्यत्रयी - लघुत्रयी ग्रन्थों के पारङ्गत भिषग्वरों के प्रसाद भूत ग्रन्थान्तरीयोत्तमोत्तम क्रोड पत्र जिन में छोटे २ व बड़े २ असाध्य रोगों में अपना कार्य्य बनाय शरीरों को आरोग्य प्रद होते हैं इस ग्रन्थ में संयुक्त कराय चौथी बार

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर यन्त्रालय में वाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से छपवाया
अप्रैल सन् १८७८ ई०

SPS
610 N 29 A
6402

LIBRARY
No________
JAMMOO

भूमिका ॥

जोकि बहुत दिन व्यतीत हुये कि जयपुर के महाराजा श्रीयुत सवाई प्रताप सिंह जिनका प्रताप और ऐश्वर्य्य सम्पूर्ण देशों में विख्यात है उन्होंने अपने बड़े २ विद्वान वैद्य लोगों के द्वारा वैद्यक के चरक सुश्रुत वाग्भट्ट आदि अनेक प्रमाणिक ग्रन्थों से सार सार बातें निकाल कर अमृत सागर नाम ग्रन्थ रचा उसमें सम्पूर्ण रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न नाना प्रकार से अन्य बहुत से आर्ष ग्रंथों के प्रमाण सहित लिखी हैं परन्तु वह जयपुर की बोली में रचा गया था इस कारण सबका उपकारी न हुआ क्योंकि उस बोली के जानने वाले जयपुर के सिवाय और कहीं नहीं हैं उसको अब सब छोटे बड़े और खासकर अवध के सब ताल्लुकेदार और पण्डित लोगों को इसी ग्रन्थ के द्वारा वैद्यक की सर्व चिकित्सा में प्रवीण होने के निमित्त अयोध्या के स्वामी स्वर्ग वासी महाराजा मानसिंह कायमजङ्ग प्रतापी जोकि वैद्यकादि सब शास्त्रों में अत्यन्त कुशल बुद्धि हैं उनकी अनुमति से पण्डित काली चरण के द्वारा अवध अख़बार के सम्पादक मुंशी नवल किशोर ने उसकी सब बोलियों का सुधार और दिल्ली आगरे की खड़ी भाषा में जिसको सब देश के मनुष्य जानें तैयारकर अपने सीसाक्षर के यंत्रालय में छपवाया यह ऐसा ग्रन्थ है कि मनुष्य इसी एक ग्रन्थ को पढ़कर डाक्टरी और मंत्र यंत्र तंत्र और सब रसों के शोधन मारण खाने का प्रमाण और अनोपान सहित विधि और अनेक भूत प्रेत पिशा-

चादि बाल ग्रहों के नाना रोगों की अनेक बिधि लिखी हैं और आदि सेही नाड़ी मूत्र आदिसे रोगी के रोग की परीक्षा उत्पत्ति लक्षण और यत्न सहित ऐसी लिखी हैं कि थोड़ासा भी बुद्धिमान होय वह इसको जान कर बैद्य होसक्ता है ॥

इससे पहिले यह पोथी कईबेर इस यंत्रालय में मुद्रित हुई और विद्वज्जनों ने इसे ग्रहण किया अन्त को बड़े २ विद्वान बैद्यों की यह इच्छा हुई कि और पुस्तकों में जो इसके विशेष बातें लिखी हैं वह भी इस विचित्र पुस्तक में छापी जावें और सम्पूर्ण वैद्यक के आशय इसी दिव्य पुस्तक में संग्रह किये जावें ॥

यह अमृतसागर अब ऐसी पुस्तक होगई कि जैसा नाम है तैसाही गुण है हमने इसके बनवाने और दुरुस्त कराने और छपवाने में जो परिश्रम किया वह हमारा मनहीं जानता है तिसपर भी ऐसी सस्ती है जिसे लोग सुगमता से मोल ले सक्ते हैं-यह वैद्यक की पुस्तक के होते हुये दूसरी किसी पुस्तक के अवलोकन की कुछ आवश्यकता नहीं है ॥

कोई रोग अथवा कोई रोग का ऐसा लक्षण नहीं है जो इस पुस्तक में न होवे जो लोग इस हमारे परिश्रम को देख कर प्रसन्न हों हमको आशीर्बाद दे और यह भी हमको आशा है कि यह दिव्य पुस्तक शीघ्रही बिके और संसार का उपकार हो-ईश्वर हमारा अभीष्ट सिद्ध करे ॥

सूची पत्र

प्रकरण पृष्ठ

रोग विचार ... १
सर्व्व रोग परीक्षा ... १
नाड़ी परीक्षा ... २
मूत्र परीक्षा ... ४
रोगीकी परीक्षा ... ५
स्वप्न परीक्षा ... ५
दूत परीक्षा ... ६
शकुन परीक्षा ... ७
काल ज्ञान ... ७
औषधि विचार ... ८
देश विचार ... ८
काल विचार ... ९
अवस्था विचार ... ९
अर्थ विचार ... ९
कर्म विचार ... १०
अग्नि बल विचार ... १०
रोगी की असाध्य परीक्षा ... ११
रोगी की साध्य परीक्षा ... ११
रोगों का भेद ... १२
रोगों का पृथक् २ लक्षण ... १२
चौदह वेगोंके रोकने का विचार १४
ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ... १७
ज्वर मात्र का सामान्य लक्षण ... १७
ज्वर का पूर्व्वरूप ... १८
वात ज्वर की उत्पत्ति ल० य० ... १८
पित्त ज्वर की उत्पत्ति ल०य० ... १९
कफ ज्वर की उत्पत्ति ल० य० ... २१
बात पित्तज्वर की उत्पत्ति ल०य० २२

प्रकरण पृष्ठ

वातकफ ज्वरकी उत्पत्ति ल०य० २३
कफपित्त ज्वरकी उत्पत्ति ल०य० २४
सन्निपात ज्वरकी उत्पत्ति ल०य० २६
आगन्तुक ज्वरकी उत्पत्ति ल०य० ३७
शस्त्रादिसे उपजेज्वरकीउ०ल०य० ३८
भूतादि के आने सेउपजे ज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ... ३८
भूतादिक उतारनेकानास अंजन ३९
क्रोध ज्वर का लक्षण यत्न ... ३९
मानस ज्वरकी उ०ल० य० ... ३९
काम ज्वरकी उ० ल० य० ... ४०
भयज्वर की उत्पत्ति लक्षण यत्न ४०
बिषमज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ४१
जीर्ण ज्वरकी उत्पत्ति लक्षणयत्न ४२
अजीर्ण ज्वरकी उत्पत्तिलक्षणयत्न ४४
दृष्टि ज्वरका लक्षण ... ४४
दुष्टरक्तसेउपजे ज्वरकी उ०ल०य० ४४
मल ज्वरका लक्षण यत्न ... ४५
गर्भिणी के ज्वरका यत्न ... ४५
प्रसूतिका ज्वर का लक्षण यत्न ४५
बालक ज्वरकी उत्पत्तिलक्षणयत्न ४६
पेटमें कृमि पड़िजानेके ज्वर की उत्पत्ति लक्षण यत्न ... ४६
कालज्वरकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ४७
ज्वरके १० उपद्रव ... ४७
ज्वरातीसार के यत्न ... ४७
ज्वरकीतृषा खांसी स्वास नींद वमन के नाशका य० ... ४७

प्रकरण पृष्ठ
ज्वर उतर जानेका लक्षण … ४९
अतीसार की उत्पत्ति लक्षणयत्न ४९
आमातीसारका और लक्षण यत्न ५३
सोजातीसार का यत्न … ५४
अतीसारका असाध्य लक्षण … ५६
संग्रहणी की उत्पत्ति लक्षण यत्न ५६
बवासीर की उत्पत्ति लक्षण यत्न ६१
बवासीर के मस्से दूर करने की औषधि … ६५
बवासीर का असाध्य लक्षण … ७१
अजीर्ण की उत्पत्ति लक्षण यत्न ७१
बिशूचिका रोग की उ० ल० य० ७४
आलसबिलम्बिका का उ०ल०य० ७५
कृमि रोग की उत्पत्तिलक्षण यत्न ८३
पाण्डु कामला हलीमककी उत्पत्ति लक्षण यत्न … ८५
रक्त पित्त रोग की उ० ल० य० ८९
राज रोग शोषरोगकी उ० ल०य० ९१
खांसी रोग की उत्पत्ति ल० य० १०३
हिचकी रोग की उत्पत्ति ल०य० १०६
स्वास रोग की उत्पत्ति ल० य० १०८
स्वर भेद रोग की उत्पत्ति ल०य० ११३
अरोचक रोग की उत्पत्ति ल० य० ११५
छर्दि रोग की उत्पत्ति ल० य० ११८
तृषा रोग की उत्पत्ति ल० य० १२०
मूर्छामोहभ्रम तन्द्रानिद्रासंन्यास की उ० ल० य० … १२३
मदात्यय रोग की उ० ल० य० १२७
दाह रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न १३१
उन्माद रोग की उत्पत्ति ल०य० १३४

प्रकरण पृष्ठ
भूतादिक के उन्मादका ल० य० तंत्र मंत्र १३६
डाकिनीसाकिनीनिवारणोपाय १४२
प्रत्यक्ष हाजरायत यंत्र … १४४
मिरगी रोग की उत्पत्ति ल०य० १४५
सम्पूर्णबातब्याधिकी उ०ल०य० १४८
अल्पकेशी की चिकित्सा … १५०
उरुस्तंभ रोग की उ० ल० य० १७९
आम बात की उ०ल०य० … १८०
पित्तब्याधिकी उ० ल०य० … १८६
कफ ब्याधिकी उ०ल०य० … १८७
बात रक्त रोग की उ०ल०य० १८८
शूल रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न १९२
उदावर्त्त रोग की उ० ल० य० २०१
आनाह रोग की उ० ल० य० २०६
गुल्मरोग की उत्पत्ति ल० य० २०७
यकृत् प्लीह रोग की उ०ल०य० २१५
हृद्रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न २१८
मूत्र कृच्छ्रोगकी उत्पत्ति ल०य० २२१
मूत्राघात की उत्पत्ति ल०य० २२६
अश्मरी रोगकी उ०ल० य० … २३०
प्रमेह रोग की उ० ल० य० … २३४
प्रमेह पिड़का का लक्षण य०… २४७
मेद रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न २४८
कार्श्य रोग की उ० ल० य० २५२
उदर रोग की उत्पत्ति ल० य० २५३
शोथ रोग की उ० ल० य० २६०
अंडवृद्धिकी उत्पत्ति लक्षण यत्न २६४
बर्ध्मवा बद रोग की उ०ल० य० २६७
गलगंडादि रोगकी उ० ल०य० २६

प्रकरण पृष्ठ
श्लीपद रोग की उत्पत्ति ल० य० २६४
बिद्रधि रोग की उ० ल० य० २७६
ब्रणशोथ रोग की उ० ल० य० २८०
ब्रण रोग की उत्पत्ति ल० य० २८२
अग्नि दग्ध की उत्पत्ति ल० य० २८६
ब्रणग्रंथि रोग की उ० ल० य० २९५
भग्न रोग की उत्पत्ति ल० य० २९५
नाड़ी ब्रण की उत्पत्ति ल० य० २९९
भगन्दर रोग की उ० ल० य० ३०४
उपदंश रोग की उ० ल० य० ३०७
शुक्र रोग की उत्पत्ति ल० य० ३१०
कुष्ट रोग की उत्पत्ति ल० य० ३१३
शीतपित्त उदर्दादिकी उ०ल०य० ३३०
अम्लपित्त की उत्पत्ति लक्षण य० ३३३
विसर्प रोग की उत्पत्ति ल० य० ३३५
स्नायु रोग की उत्पत्ति ल० य० ३३९
विस्फोटक रोग की उ० ल० य० ३४०
फिरंग रोग की उत्पत्ति ल० य० ३४३
मसूरिका नाम शीतला की उ०
लक्षण यत्न ... ३४७
क्षुद्र रोगों की उत्पत्ति ल० य० ३५३
शिर नाम मस्तक रोग की उत्पत्ति
लक्षण यत्न ... ३६५
नेत्र रोग की उत्पत्ति ल० य० ३७२
कर्ण रोग की उत्पत्ति ल० य० ४०१
नासिका रोगोंकी उत्पत्तिल०य० ४०८
मुख रोगों की उत्पत्ति ल० य० ४१४
स्थावर जंगम विष रोग की उ०
लक्षण यत्न ... ४३४

प्रकरण पृष्ठ
स्त्रियों के प्रदरादि सर्व रोगोंकी
उ० लक्षण यत्न ... ४४५
बालक के रोगों की उ० ल० य० ४६५
बाल ग्रहका लक्षण यत्न ... ४६६
बाजी कर्णकी औषधि ४८३
धातु पुष्ट के यत्न ५०३
शरीर की पुष्टाई का यत्न ... ५०९
धातु उपधातु मारने की बिधि ५२२
आसव करने की विधि ... ५५९
मूशली पाक करने की विधि ५६१
सिलाजीत शोधने की विधि ५६१
जवाखारादिखारबनानेकी विधि ५६२
स्नेह विधि ५६३
स्वेद विधि ५६७
वमन विधि ५६७
गंडूक विधि ... ५६८
विरेचक नाम जुलाब की बिधि ५७१
ऋतु में जुलाब लेने की बिधि ५७२
६ छओं ऋतु में हड़ खाने की
विधि ... ५७४
बस्ति कर्म्म की विधि ... ५७४
हुक्का आदिले धूमपानकी विधि ५७९
रुधिर छुड़ाने की विधि ... ५८०
छओ ऋतु के वर्णन ६९५
बात पित्त कफका ६ ऋतु में
संचय प्रकोप ... ६९५
बातादिके कोपका आहार वि० ६९६
ऋतुके सेवनका आहार विहार ६९६
दिन चर्य्या अर्त्थात् दिनका आहार
विहार ... ६९८

हि०स्वच्छन्द भैरव र० ५५१ त्रिविक्रम र०५५१ महाहरतालेश्वर र० ५५१ कुष्टकुठार र०५५२ उदया दित्य र० ५५२सर्वेश्वरर०५५३मेहवज्रर० ५५३ वन्हि र० ५५३ विद्याधर र० ५५४ त्रिनेत्र र० ५५४ गजकेशरी र० ५५४ क्षुधितुण्डी र० ५५५ अजीर्णकण्टक र० ५५५ आपान भैरव र० ५५५ वातनाशक र० ५५५ कनक सुन्दर र० ५५५ भैरव र० ५५६ ग्रहणीकपाट र० ५५६ वज्रकपाट र० ५५७ मदन कामदेवर० ५५७ कन्दर्पसुन्दर र० ५५८ लोहरसायन र० ५५८ ॥

गुटिका

मृतसंजीवनीगुटिका ३६ अभ्रक गु०६० वृहत्स्मरणामोदकगु० ६४प्राणदागु० ६८ लवङ्गामृतगु०८० संजीवन गु० ८२एलादि गु०९१ शृंगाराभ्रक गु०९८ कर्पूरादि गु १०४ अमृतनाम गु० १७६ हरताल गु० १७८ आमवातारि गु० १८४ चित्रकादि गु० १९६ शूलनाशिनी गु० १९७ कूठादि गु० १९७ शूलगज केशरी गु० १९७ सौवर्चलादि गु० १९९ हिंग्वादि गु० १९९ कांकायन गु०२१२चन्द्रप्रभागु० २४३ पंचानन ग०२४६ संप्रसारणी गु० ३४४ लेखनी गु० ३९३ रोपणी गु० ३९३ स्नेह गु० ३९३ रसांजन गु० ३९३ नयनामृत गु० ३९९ चन्द्रोदय गु० ४०० चन्द्रप्रभा गु० ४०० व्योषादि गु० ४१२ भद्रमुस्तादि गु० ४१९ वानरी गु० ४८५ मदन मंजरी गु० ४८६ लिङ्गार्जुन गु० ४८७ ज्वरघ्न गु० ५४४ इन्द्रारु गु० ६७३ मरिचादिगु० ६७३ गुड़ादि गु० ६७४संजीवनी गु० ६७४ मण्डूरवटी ६७५ चन्द्रप्रभा गु०६७५कांकायन गु०६७६ अजमोदादि गु० ६८१ ॥

चूर्ण

षोड़शांग चू० ४१ निंबादि चू० ४३ सुदर्शन चू०४४ लघुगंगा धरचू० ५३ ब्राह्मी चू० ५८ कपित्थाष्टक चू०६१ विजय नाम चू० ६८ हिंग्वाष्टक चू० ७५ अग्निसुख चू० ७६ बैश्वानर चू० ७६ लवणभास्कर चू० ७६ बड़वानल चू० ७६ क्रव्यादि चू० ७९ राजवल्लभ चू०८० जीरकादि चू० ८१ अजमोदादि चू० ८१करपूरादि चू० ९५ महातालीसादि चू० ९७ शुंठ्यादि चू०९७ लवङ्गादिक चू० ९७द्वितीयएलादि चू० १०८ चव्यादि चू० ११५ दाड़िमादि ११७ वृहदेलादि चू० ११७ सारस्वत सू० १४०विश्वाद्य चू० १४० अज-मोदादिचू० १८२ कूष्मांडक्षार चू० १९५ पचसमं च० १९६ शूलनाशन चू० १९६ नाराच चू० २०५ हिंग्वादि चू० २१० वज्रक्षार चू०२१० हिंगुद्वादसक चू० २१२ वचाद्य चू० २१३ हरीतक्यादि चू० २२० न्याग्रोधाद्य चू० २४३ प्रमेहारि चू० २४४कूटादि चू० २५६ नारायण चू० २५७ उदरामय हर चू० २५८ पिप्पल्यादिचू० २७६ अम्लपित्त चू० ३३५ पीनस दूर होने का चूर्ण ४१२

प्रतिसारण चूर्ण ५७० अनेक रोगों पर सर्व्व प्रकार के गुणकारी चूर्ण ६४० से ६७२ तक ॥

क्वाथ।

पञ्चभद्र क्वाथ २३ वृहत् क्षुद्रादि क्वा० ४१ वंचक क्वा० ४५ दशमूल क्वा० ४५ संखबटी क्वा० १०० महारास्नादि क्वा० १७३ द्वितीय महारास्नादि क्वा० १८१ कणादि क्वा० २१२ गोक्षुरादि क्वा० २२३ हरीतक्यादि क्वा० २२४ तृन पंचक क्वा० २२४ सुंठ्यादि क्वा० २३२ एलादि क्वा० २३२ पथ्यादि क्वा० २६३ पुनर्नवादि क्वा० २६४ लघुमञ्जिष्ठादि क्वा० ३२२ मध्यमञ्जिष्ठादि क्वा० ३२२ वृहन्मञ्जिष्ठादि क्वा० ३२३ अनेक रोगों पर सर्व्व प्रकार के गुणकारी क्वा० १६५ से ६१५ तक ॥

अवलेह

कूष्माण्डावलेह ९१ च्यवन प्राश अ० ९६ अदरक अ० ९८ कटेली अ० १०५ भारङ्गी अ० १११ कल्यका अ० १५३ गुड़ाद्य मण्डूर १९८ तारा मण्डूर १९८ क्षाराष्टक २१० ग्वार पट्ठेका आसव २११ सीपप्रयोग २११ वाणादि गुड़का अ० २३३ भटकटैया अ० ५८४ द्वितीय च्यवन प्राश अ० ५८५ कफज्वरावलेह ५८७ श्वास नाश अ० ५८७ ॥

तैल

लाक्षादि तैल ४३ प्रसारणी तै० १५२ माषादि तै० १५६ महाबल तै० १६४ ग्रम्यका तै० १६७ नारायण तै० १७१ अष्टाङ्ग तै० १७३ विषगर्भ तै० १७३ लक्ष्मी विलास महासुगन्ध तै० १७४ विजयभैरव तै० १७५ वृहत्सैंधवादि तै० १८३ अमृतादि तै० २७२ चक्रमर्दन तै० २७३ गुञ्जा तै० २७३ चन्दनादि तै० २७३ सुंठ्यादि तै० २७३ निर्गुण्डी तै० ३०१ लघुमरिचादि तै० ३२३ मरिचादि तै० ३२४ अर्क तै० ३२६ कचराक्षस नाम तै० ३२६ मूषक तै० ३६१ षणविन्दु तै० ३६८ बिल्व तै० ४०५ व्याधि तै० ४१२ शिग्रु तै० ४१३ सहचरादि घृत तै० ४१९ चन्दनादि तै० ४८५ अनेक रोगोंपर और बहुत से अमृत सदृश गुणकारी तै० ६०१ से ६०९ तक ॥

घृत

कल्याण घृत १४० सारस्वत घृ० १५२ शुष्क मूलकाद्य घृ० २०६ महारोचक घृ० २१८ धान्य गोक्षुर घृ० २२९ चित्रकाद्य घृ० २३० कुलत्थाद्य घृ० २३४ नाराच घृ० २५८ विन्दु घृ० २६० जात्यादि घृ० २९३ सिक्थादि घृ० २९४ खर्जिका घृ० ३०१ भूनिम्बादि घृ० ३०९ मृत्युपासच्छेद घृ० ४४१ फल घृ० ४५४ क्षार घृ० ४९४ अनेक रोगों पर अनेक प्रकार के आनन्द दायक घृ० ५९५ से ६०० तक ॥

गूगल

त्रयोदशांग गूगल १६० योगराज गू० १७२ व्याधि शार्दूल गू० १८४ द्वात्रिंशति गू० १८४ सिंहनाद गू० १८५ किशोर गू० १९१ गोक्षुरादि गू० २२४ अमृत गू० २५० कचनार गू० २७२ अमृतादि गू० २९३ नवक षिक गू० ३०६ स्वायम्भुव गू० ३२० द्वितीय किशोर गू० ३२० ॥

पाक

लहसन पाक १७८ शुण्ठी पाक १८२ मेथी पाक १८३ हिरन की सींग का पुट पाक २०७ सुपारी पाक २४५ गोखुरू पाक २४५ सौभाग्य शुण्ठी पाक ४६३ रति वल्लभ पूंगी पाक ४८४ मूसली पाक ५६१ कुरैया पुट पाक ६१३ अन्यपुट पाक ६१३ बिजौरा पुट पाक ६१४ बासापुठ पाक ६१४ भटकटैया पुट पाक ६१४ विभीत पुट पाक ६१४ सुण्ठी पुट पाक ६१४ सूरनपुट पाक ६१४ हरिण शृङ्ग पुटपाक ६१४ ॥

गोली

अग्नितुण्डावली गोली ७८ गन्धक वटी ८१ मधुपक्व हड़ ९८ अगस्त्य हड़ की विधि १०० लवङ्गादि गोली १०३ शूलदावानल गोली १९७ शंखद्राव १९७ वीजपरादि योग: १९९ हिंग्वादि फला वर्ति: २०५ मदन फला वर्ति: २०५ गुड़ाष्टक २०६ हरिद्रा खण्ड ३२७ मलहर मलहम ३४६ बिच्छू का मन्त्र ४४२ सन्निपात नाश गोली ६७९ दाहयुक्त अतीसार नाश गो० ६८० लीला वती गो० ६८० जमालगोटा की गो० ६८१ क्षुधावृद्धि गो० ६८२ चतकादि गो० ६८२ खैरसार गो० ६८२ पाचक गो० ६८२ शङ्खवटी ६८३ गन्धक वटी ६८३ ॥

लेप

कफ पित्त वायु की सूजन दूर करने का लेप २८७ व्रण के शोथ दूर करने का लेप २८९ व्रण के कृमि दूर करने का लेप २९१ दशाङ्गलेप ३३८ सूतक लेप ३४५ लेपन विधान जिसमें अनेक प्रकार के रोगों पर लेप हैं ६८४ से ६९५ तक ॥

अनेक रोगों पर बहुत से फाण्ट और मन्थ और कल्क ६३५ से ६४० तक ॥

इति

अथ अमृतसागर ॥

श्रीगणेशायनमः

श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराज राजेन्द्र महाराज श्री सवाई प्रताप सिंह जिन्होंने मनुष्यों के रोग दूर करने के अर्थ संसार का हित विचार अत्यन्त करुणा करके चरक, सुश्रुत वाग्भट्ट भाव प्रकाश आत्रेय आदि वैद्यक के संपूर्ण ग्रन्थों को विचार उनका सार निकाल कर सब रोगों के निदान पूर्वक संक्षेपता से अमृत सागर नाम ग्रन्थ रचा उस को सरल हिन्दी भाषा में उल्था करके अनेक प्रकार की अनुभूत औषधियों के विचार पूर्वक यत्न लिखते हैं ॥

अथ प्रथम रोग विचार ॥

अनेक प्रकार की पीड़ा को रोग कहते हैं वे रोग दो प्रकार के हैं एक कायिक दूसरा मानसिक काया में रहै सो कायिक उसका नाम व्याधि है मन में रहै सो मानसिक उसका नाम आधि है सो ये दोनों शरीर में किसी प्रकार के कुपथ्य से वात पित्त कफ रूप दोष और मिथ्या हार मिथ्या विहार के वयश की कोप होने से सब रोगों को उपजावें हैं और यह वात पित्त कफ कई प्रकार के कुपथ्य से बिगड़े थके देह को बिगाड़े है और येही अच्छे प्रकार पथ्य के सेवन से शरीर को पुष्ट भी करै हैं ॥

प्रथम सर्व्व रोगों की परीक्षा ॥

नाड़ी परीक्षा १ मूत्र परीक्षा २ और रोगों के दृष्टान्त आदि से रोगों की परीक्षा तीन प्रकार की है और रोगों के निदान से भी इन तीनों प्रकार के रोगों का ज्ञान होता है ॥

अथ नाड़ी परीक्षा ।

पुरुष रोगी होय तौ उसके दाहिने हाथ की और स्त्री रोगिणी होय तौ उसके बाएं हाथ की नाड़ी देखे परंतु वैद्य को उचित है कि एकाग्र और प्रसन्न चित्त होकर बिचार पूर्वक रोगी के हाथ को हलने न दे इसी प्रकार अंगूठे के समीप जीव की साक्षी नाड़ी है वह नाड़ी जीव के सब दुःख सुख को बताती है उसको वैद्य अच्छे प्रकार अपनी तीन अंगुलियों से देखे जैसे राग के जानने वाले को बीणा की तांत से सब राग बिदित होजाते हैं इसी प्रकार नाड़ी भी शरीर के सब दुःख सुख को बतावै है और तत्काल स्नान करके आया हो अथवा तत्काल भोजन किया हो अथवा शरीर के तेल लगाया हो या सोते से उठा हो अथवा दौड़ता आया हो और भूखा प्यासा कामातुर मल मूत्र आदि से वेग युक्त हो इतने पुरुषों की नाड़ी ग्रन्थ के मत से देखनी नहीं चाहिये और जो देखे तौ वैद्य को रोगी के रोग का यथार्थ ज्ञान नहीं होता और जैसे वैद्य रोगी के हाथ की नाड़ी देखे तैसेही रोगी के पैर की भी नाड़ी देखे शास्त्र की परिपाटी और अपनी बुद्धि के प्रभाव से जैसे जौहरी अपने अभ्यास के बलसे हीरा आदि रत्न के सच्चे झूठे और मोल को कह देता है तैसेही सद्वैद्य भी शास्त्र के अभ्यास के बल से रोगीके रोग की साध्यता और असाध्यता और शरीर के दुःख सुख की चेष्टा को जान लेता है ॥

अथ नाड़ी की पहिचान ॥

अंगठे से लगी हुई तीन अंगुलियों में पहली अंगुली के नीचे बायु की मुख्य नाड़ी चलती है बीच की अंगुली के नीचे पित्तकी और पिछली अंगुली के नीचे कफकी नाड़ी चलती है जैसे सर्प जोंक आदि जीव टेढ़े चलते हैं तैसेही बायु की नाड़ी भी बांकी और तिरछी चलती है और जैसे काक कुलंग मेंढक आदि फुदकते और शीघ्रता युक्त चलते हैं तैसेही

पित्त की नाड़ी उतावली और फुदकती चलती हैं और जैसे राजहंस मोर बतक मुर्गा कबूतर आदि जीव मन्द २ चलते हैं तैसे ही कफ की नाड़ी भी मन्द २ चलती है और बार २ सर्प और मेढ़क कीसी गति चलै उसको बात पित्त की नाड़ी जानिये और जिस नाड़ी की सर्प और हंस कीसी गति हो उसको बात कफ की जानिये और बानर मेढ़क हंस इन तीनों कीसी गति हो उसको पित्त कफकी जानिये और जैसे खाती चीड़े हुए काष्ट को अत्यन्त वेग से काटता है तैसे ही जिस पुरुष की नाड़ी चलै और चलने से रह जाय और फिर चलने लगे उस नाड़ी को सन्निपात की जानिये और मन्द २ टेढ़ी मेढ़ी व्याकुलता पूर्व्वक स्थिर अस्थिर हो वह धमनी नाड़ी जीवकी है वह नाड़ी सूक्ष्म होजानेसे पुरुष को मारै है उसी नाड़ी को सन्निपात की जानिये और जिस पुरुष के ज्वर का कोप होय उसकी नाड़ी बहुत गरम और जल्दी २ चलै है और जिस रोगी की नाड़ी एक ढंग से अपने स्थानपर चलै वह रोगी नहीं मरता और कामातुर पुरुषकी नाड़ी शीघ्रता युक्त चलती है क्रोधी की और चिन्तावान पुरुषकी नाड़ी क्षीण चलती है और कई प्रकार से भय भीत हुए पुरुष की नाड़ी महा क्षीण चलै है और मन्दाग्नि और क्षीण धातु वाले पुरुष की नाड़ी महा मन्द चलती है ॥

और रुधिर के बिकार वाले पुरुष की नाड़ी कुछ एक गरम और भारी चलती है और जिस पुरुष के पेट में आंव का बिकार होय तिसकी नाड़ी अत्यन्त भारी चलती है और जिस पुरुष को भूख बहुत लगी होय उसकी नाड़ी चपल होती है और जो पुरुष आहार बहुत करता हो उसकी नाड़ी हलकी और उतावली चलती है और जिस पुरुष ने भोजन किया होय उसकी नाड़ी धीरी चलती है और जिस पुरुष के मल का उत्पात हुआ हो उसकी नाड़ी बहुत उतावली चलती है

सुखी मनुष्य की भी नाड़ी धीरी और बल युक्त चलती है और नाड़ी की परीक्षा अनेक प्रकार की हैं सो बुद्धिवान सद्वैद्य अपनी बुद्धि से नाड़ी के द्वारा शरीरका सब दुःख सुख बिचार ले जैसे योगी के योग के अभ्यास करके ब्रह्म का साक्षातज्ञान हो जाता है तैसेही सद्वैद्य को नाड़ी के अभ्यास करके शरीर के सब रोग और सुख दुःख का ज्ञान होजाता है—इति नाड़ी परीक्षा ॥

अथ मूत्र परीक्षा ॥

वैद्य को उचित है कि चार घड़ी के तड़के रोगी को उठा कर कांच के सुपेद बासन में अथवा कांसी के पात्र में मुतावै पीछे उस बासन को कपड़े से ढककर रक्खे सूर्य्योदय होनेके पीछे वैद्य उसकी परीक्षा करै अगर रोगी का मूत्र पानी के सदृश हो और बहुत हो और कुछ एक नीला भी होय तौ वायु के विकार का मूत्र जानिये और जो मूत्र लाल कुसुम के सदृश होकर गरम अथवा पीला टेसू के फूल के रंग के सदृश और थोड़ा उतरे तौ गरमी के रोग का मूत्र जानिये और जिस रोगी का ठंढा और सुपेद और चिकना मूत्र उतरै उसे कफका रोगी जानिये और चार घड़ी के तड़के का रोगी का मूत्र चार घड़ी तक धूप में रखने के पीछे वैद्य उसमें तेलकी बूंद डाले जो तेलकी बूंद मूत्र के ऊपर फैलजाय तौ उस रोगी को साध्य जानिये और वह अच्छा होजाय और जो तेलकी बूंद मूत्र के ऊपर न फैलै और स्थिर होकर रह जाय तो उस रोगी को कष्ट साध्य जानिये और जो वह बूंद मूत्र में डूब जाय अथवा चक्र के सदृश घूमने लगे तौ वह रोगी अवश्य मरै और जिस रोगी के मूत्र में तेल की बूंद पड़तेही छिद्र होजाय अथवा खड्ग वा दण्डवा धनुष के सदृश तेल की बूंद का आकार होजाय तौ वह रोगी अवश्यही मरै और रोगी के मूत्र के ऊपर तेल की बूंद तालाव के आकार होजाय अथवा हंसके

आकार होय वा पद्म वा हस्ती वा छत्र वा चमर वा तोरण के आकार बंद होजाय तो वह रोगी निरोग्य होय और जिसका मूत्र सरसों के तेल के सदृश होय उसको वात पित्त का रोग जानिये और जिसका काला और बुद बुदे लिये हुए होय तिसको सन्निपात का रोग जानिये और मूतते हुए जिस रोगी को लाल धार उतरे उसको महा रोगी जानना और जिसको धार काली निकले वह रोगी मर जाय और जिसके मूत्र में बकरी के मूत्र कीसी बास आवै उसको अजीर्ण का रोग जानिये और जिसका मूत्र गरम और लाल अथवा केसर सा पीला होय तिसको ज्वरका रोग जानिये और जिसका कूए के पानी के सदृश मूत्र उतरे उसके लिंग रोग जानिये इति मूत्र परीक्षा—अब रोगों का अहवाल और प्रसंग कहते हैं ॥

अथ रोगी परीक्षा ॥

रोगीकी परीक्षा इतने प्रकार से होतीहै देखने स्पर्श करने और पूछने और स्वप्न और दूत शकुन और काल ज्ञान और औषधि देश काल अवस्था और अग्नि बल के विचार से और साध्य असाध्य आदि प्रकारों से रोगी की परीक्षा करनी उचित है सो क्रम पूर्वक लिखते हैं पीलिया आदि कई एक रोग तो रोगी के देखनेसेही वैद्य को विदित होते हैं और ज्वरादि कई एक रोग रोगीके स्पर्श कियेबिन नहीं जाने जाते और उदरशूल मस्तक पीड़ा बवासीर उपदंश अर्थात् गरमी और शोजाक हौलदिली और मूत्रादिक का लगना प्रमेह आदि ले कई एक रोग रोगीके बिना कहे वैद्य यथार्थ नहीं जान सक्ता ॥

अथ स्वप्न परीक्षा ॥

रोगी को ऐसे स्वप्न देखने अच्छे नहीं होते अगर रोगी स्वप्न में नंगा और मुण्डित और लाल और काला वस्त्र पहिरे हुये मनुष्य देखे अथवा नकटा बूचा और काले हथियार

और फांसी लिये हुए मारता हुआ पुरुष देखे तौ वह रोगी असाध्य जानिये और भैंसा ऊंट गधा इन पर चढ़ा हुआ दक्षिण दिशा को जाता हुआ स्वप्न में मनुष्य देखे तौ वह रोगी अच्छा नहीं होय और ऊंचे से नीचे गिरे जलमें डूब जाय और अग्नि भभकती जाय और सिंह आदि ले कोई हिंसक जीव उसको खाता होय दीपक को बुझता देखे तेल मदिरा पीता देखे और पकवान खाय और कुए में गिरै ऐसा स्वप्न रोगी को होय तो वह रोगी असाध्य जानिये और ऐसा स्वप्न देखे तो स्वप्न देखने वाला किसी से कहै नहीं और प्रातःकाल उठतेही भष्मादिक से स्नान करे और उस स्वप्न के सदृश हवन दान पाठ आदि करै तौ स्वप्न दोष दूर होय और रोगी को स्वप्न में देवता राजा याचक मित्र ब्राह्मण गौ अग्नि तीर्थ दीखें तौ वह रोगी जल्दी अच्छा होय और स्वप्न में कीचड़ को उलंघ जाय और शत्रु को जीते महल रथ पर्वत आदि के ऊपर चढ़े तौ वह रोगी जल्दी अच्छा हो और स्वप्न में श्वेत वस्त्र धारै और मास मीन फल खाय तौ वह रोगी जल्दी अच्छा होय और स्वप्न में अगम्या से गमन और शरीर में विष्टा का लेप करै और रोवै और अपनी मृत्यु देखे और कच्चा मांस खाय तो वह रोगी शीघ्र अच्छा होय और जोंक सर्प भौंरा मक्खी जिसको स्वप्न में काटे वह रोगी भी शीघ्र अच्छा होय और जो यह स्वप्न अच्छे भले नीरोगी मनुष्य को भी होय तौ शुभ जानिये इति

अथ दूत परीक्षा ॥

वैद्यके बुलाने के लिये जो दूत भेजै वह काणा खोबड़ा नकटा आदि नहो क्योंकि ऐसे के भेजने से वह रोग जल्दी अच्छा नहीं होता और जो निर्मल वस्त्र पहरे और सुख पर्वक घोड़े रथ आदि पर चढ़ कर वैद्य को भेंट के लिये उत्तम वर्ण का अच्छा चेष्टा वान चतुर पुरुष जिसका बांया स्वर चलता होय वैद्य के पास अकेला जाय तौ वह रोगी

शीघ्र अच्छा होय—इति दूत परीक्षा ॥

अथ शकुन परीक्षा ॥

जो वैद्य रोगी की चिकित्सा करने को जाता होय उसको उस समय सन्मुख शीतल शकुन मिलैं तो अच्छा और जो अग्नि आदि ले गरम शकुन मिलैं तो रोगी अच्छा न होय और जो दूत वैद्य के बुलाने को जाता होय उसको जल आदि शीतल शकुन सन्मुख मिलैं तो रोगी अच्छा नहीं होय और अग्नि आदि गरम वस्तु मिलैं तो रोगी जल्दी अच्छा होय इति शकुन परीक्षा ॥

अथ कालज्ञान ॥

जिस रोगी को रात्रि में गरमी और दिन में शीत लगैं और कण्ठमें कफ बोलै वह रोगी निश्चय मरै और जिस रोग की नाक का अग्र भाग शीतल होय और उसके हाथ पैर और हृदय भी शीतल होय और शिरमें शूल होय वह रोगी भी निश्चय मरै और जिस रोगी की कांति और तेज और लज्जा जाती रहै और स्वभाव में अधिक क्रोध होजाय वह रोगी छः महीने में मरै और जिस रोगी का अंग कांपता होय और गति भंग होय और शरीर का रंग और का और होजाय और सुगन्ध और दुर्गन्ध का ज्ञान न रहै वह रोगी निश्चय मरै और वृक्ष और वृक्ष की डालियों में रोगी को अग्नि सी दीखै वह रोगी भी छः महीने में मरै और जो रोगी काम करके हीन होय और प्रस्वेद नहीं आवै वह तीन महीने में मरै और जो रोगी कान के छिद्रों को बन्द करै पीछे कान का घूं घूं शब्द न सुनै वह रोगी निश्चय मरै और जिस रोगी की आंख देह और मुख का वरण और का और हो जाय वह रोगी भी निश्चय मरै और जिस रोगी को अपनी जीभ और नासिका का अग्र भाग और भृकुटी का मध्य दीखै नहीं वह रोगी निश्चय मरै और जिस रोगी के मुख का वर्ण और का और हो जाय और नाक का अग्र

घटने बढ़ने का जानने वाला हो वह रोगी साध्य जानिये ॥ इति रोगी की साध्य परीक्षा ॥

अथ रोगों का भेद ।

जो रोग काया में रहै उसका नाम व्याधि है वह १४ प्रकार का है सो लिखते हैं—सहज रोग १ गर्भज रोग २ जात जात रोग ३ पीड़ा जनित ४ काल जनित ५ प्रभाव जनित ६ स्वभाव जनित ७ देश जनित ८ आगंतुक रोग ९ कायिक रोग १० आन्तर रोग ११ कर्म्मज रोग १२ दोषज रोग १३ कर्म्म दोषज रोग १४ ॥

अथ रोगों का पृथक् २ लक्षण ॥

माता पिता के वीर्य्य के दोष से उसकी सन्तान के भी वही रोग हो आवै है जैसे बवासीर कोढ़ आदि यह सहज रोग हैं १ गर्भ में ही कुबड़ा पंगुल छः अंगुल बावना खंजा आदि रोग होंय उन को गर्भज रोग कहते हैं २ गर्भ में माता के मिथ्य आहार और विहार के करने से बालक के रतुआ और बुरा शरीर गूंगा पन आदि से जो रोग होंय उनको जात जात कहिये ३ और शस्त्रादिक के प्रहार से उपजे जो अस्थि भंग पीड़ा आदि रोग उस को पीड़ा जनित रोग समझना चाहिये ४ और सीत काल में अधिक शीत और उष्ण काल में अधिक धूप और वर्षा में अधिक भीजना उन से उत्पन्न जो रोग उनको कालज रोग कहते हैं ५ और देवता गुरु और बड़ों के शाप से और ग्रहों की प्रति कूलता से जो रोग उत्पन्न होय उस को प्रभावज कहिये ६ और क्षुधा तृषा जरा आदि से उत्पन्न जो रोग उनको स्वभावज रोग कहते हैं ७ और भूतादिक और काम क्रोध राग द्वेष लोभ मोहादिक ने जिस के शरीर में प्रवेश किया होय उससे उत्पन्न जो रोग उस को आगन्तुक रोग कहते हैं ८ और ज्वरादि विष पर्य्यन्त मुख्य रोग हैं उन को कायिक रोग कहते हैं ९ और हौल दिली को आदि ले अर्द्ध विक्षिप्त

होजाय उसको आन्तर रोग कहिये १० और जिस देश के कालेही काले और लालही लाल और भूरेही भूरे मनुष्य उपजें उसको देशज कहिये ११ और पूर्व जन्म से अथवा इस जन्म में ब्रह्महत्यादिक पाप से जो रोग उपजे उनको कर्म्मज कहिये १२ और बात पित्त कफ से उपजा जो रोग उसको दोषज कहिये १३ और ब्रह्म हत्यादिक जो पाप और बात पित्त कफ आदिक जो दोष इन दोनों से मिला हुआ उपजा जो रोग उसको कर्म्मदोषज रोग कहते हैं १४ अब यही संपूर्ण रोग दो प्रकार के हैं एक साध्य दूसरा असाध्य वह साध्य भी दो प्रकार का है एक तौ बहुत यत्न से जैसे तैसे अच्छा होता है और दूसरा थोड़ेही यत्न करने से अच्छा होता है वह साध्य है २ और असाध्य रोग भी दो प्रकार का है एक जाप्य जो गंभीरादिक बवासीर मिरगी अर्द्धाङ्ग जयी स्वासादिक और जिसमें अधिक रोग मिले हों वह पुरुष औषधी खाया करै पथ्य से चलै और सद्वैद्य के कहने के अनुसार वर्त्तें जहां तक रोग का अन्त होय इन रोगों को जाप्य कहते हैं और एक ऐसा रोग उत्पन्न हो जिसकी चिकित्साही न हो वह मारही डालै है और वह महा असाध्य और अप्रतीकार है और रोग के भेद तो अनंत हैं जिनका पार नहीं उन रोगों का ज्ञान तौ ईश्वरही को है परन्तु सद्वैद्य भी शास्त्र बल और अपनी बुद्धि सत्ता से इन सब रोगों को १४ वेगों के अंतर्गतही जान ले॥ इति रोग भेद॥

अथ प्रकारान्तर से संपूर्ण रोगों के उत्पन्न होने की और ही विधि॥

जो मनुष्य सब बातों से सावधान है और १४ प्रकार के वेगों में से कोई वेग वृथा प्रकट करै नहीं और स्वतः सिद्ध प्रकट हुआ है उसको रोकै नहीं और उस का कार्य्य करै तौ मनुष्य को रोग न होय और उन १४ को वृथा प्रकट कर

और उनके प्रकट होने से उसको धारण करै तौ रोग अवश्य होय वे १४ वेग लिखते है ॥

अथ १४ वेग ॥

अधो वायु १ दिशा बाधा २ मूत्र बाधा ३ डकार ४ छींक ५ तृषा ६ क्षुधा ७ नींद ८ स्वास ९ खेद का स्वास १० जंभाई ११ आंसू १२ वमन १३ कामदेव ये १४ वेग हैं इन वेगों को वृथा रोकै और इनसे उत्पन्न हुए वेग को धारण करै तौ निश्चय मनुष्य के रोग उत्पन्न होय सो क्रमसे लिखते हैं जो पुरुष अधो बायु को रोकै उसके गोला और उदर में अफरा और पीडा ये रोग होंय पीछे उसके अधो बायु अच्छे प्रकार से नहीं होती है और मूत्र कृच्छ और बद्ध कोष्ट और नेत्र रोग और मन्दाग्नि और हृदय पीड़ा ये रोग होंय—इति अधो बायु रोकने के रोग १ ॥

अथ मलके रोकने के रोग ॥

जो पुरुष मलकी बाधा को रोकै उसके ये रोग होते हैं हाथ पैर में हड़ फूटन और पीनस मस्तक पीड़ा और बायु की ऊर्द्ध गति और अधो बायु की प्रवृत्ति अच्छे प्रकार से नहीं होती और हृदय पीड़ा उदावर्त्त और गोला फिया उदर रोग उदरपीड़ा मूत्रकृच्छ बद्धकोष्ट नेत्र रोग मन्दाग्नि यह भी रोग हो आवैं—इति मल के रोकने के रोग २ ॥

अथ मूत्र रोकने के रोग ॥

जो मनुष्य मूत्र की बाधा को रोकै उसके यह रोग होवैं अंग में हड़ फूटन और पथरी और लिंगेन्द्री और काले बालों की सन्धि में पीड़ा और गोला फिया आदि जो पीछे मल के रोकने से रोग कहे हैं सोभी इस मूत्र के रोकने से उत्पन्न होते हैं ३—इति मूत्र रोकने के रोग ॥

अथ डकार रोकने के रोग ॥

जो मनुष्य डकार आती हुई को रोकते हैं। उनके इतने रोग होते हैं अरुचि शरीर कांपै। हे। [illegible] धके। अफरा। खांसी

हिचकी इत्यादि ४—इति डकार रोकने के रोग ॥

अथ छींक रोकने के रोग ॥

जो मनुष्य छींक के वेग को रोकै उसके ये रोग उत्पन्न होते हैं। मथवाय। और शरीर की संपूर्ण इन्द्री दुर्व्बल होजांय और गर्दन मुड़ै नहीं औ मुख टेढ़ा होजाय—इति छींक रोकने के रोग ५ ॥

अथ तृषा रोकने के रोग

जिस पुरुष को तृषा लगी होय उसको जो रोकै तौ ये रोग होंय मुख सूखे और सब अंग में हड़फूटन और बधिरता और मोह भ्रम और हृदय दूखे ६—इति तृषा रोकने के रोग ६॥

अथ क्षुधा रोकने के रोग ॥

जो पुरुष भूख के वेग को रोकै उसके इतने रोग होंय सब अंग टूटने लगैं अरुचि होय और सर्व वस्तु के ऊपर ग्लानि शरीर क्षय शूल भ्रम और विनाही श्रम किये श्रम और सब इन्द्री शिथिल और शरीर का वर्ण और का और—इति क्षुधा रोकने के रोग ७ ॥

अथ नींद रोकने के रोग ॥

जो मनुष्य आवती हुई नींद को रोकै उसके ये रोग उत्पन्न होते हैं मोह और मस्तक नेत्र भारी आलस्य उबासी अंग पीड़ा इत्यादि—इति नींद रोकने के रोग ८ ॥

अथ खाँसी रोकने के रोग ॥

जो मनुष्य खांसी को रोकै उसके खांसी। श्वास। अरुचि। हृदय रोग। हिचकी आदि रोगों की वृद्धि होती है ९—इति खांसी रोकने के रोग ९ ॥

अथ श्रम के सांस रोकने के रोग ॥

जो पुरुष श्रम के श्वासों को रोकै उसके इतने रोग होते हैं गोला। हृदय रोग। मोह। प्रमेह१०—इति श्वास रोकने के रोग ॥

अथ उबासी रोकने के रोग ॥

जो मनुष्य आवती उबासी को रोकै उसके मस्तक पीड़ा इन्द्रियों की दुर्बलता और गर्द्दन मुख की बंकता होय ११ इति उबासी रोकने के रोग ॥ ११ ॥

अथ आंसू रोकने के रोग ॥

जो पुरुष आंसू रोकै उसके पीनस नेत्र रोग मस्तक हृदय और गर्द्दन में पीड़ा अरुचि भ्रम गोला १२—इति आंसू रोकने के रोग ॥

अथ वमन रोकने के रोग ॥

जो मनुष्य आवती छर्द्दि वमन के वेग को रोकै उसके रतुआ पित्ती कोढ़ नेत्र रोग खाज पांडु रोग ज्वर खांसी स्वास हृदय शूल मुखकील अथवा मुख छाया यह रोग वमन के रोकने से होते हैं १३—इति वमन रोकने के रोग ॥

अथ काम देव रोकने के रोग ॥

जो पुरुष कामदेव के वेग को रोकै उसके सुजाक प्रमेह लिंगेन्द्री में पीड़ा और लिंगशोथ चिन्ता भोजन में अरुचि इतने रोग होते हैं १४—इति प्रकारान्तर से सर्व रोगों के उत्पन्न होने के हेतु ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप
सिंह बिरचिते अमृतसागर नाम ग्रंथे रोग बिचार नाड़ी मूत्र
रोग स्वपन दूत शकुन कालज्ञान इत्यादि परीक्षा और
औषध बिचार देश काल अवस्था अर्थ कर्म्म
अग्नि बल और रोगों का साध्या साध्य
बिचार रोग भेद तथा रोगोत्पत्ति
निरूपणो नाम प्रथमस्तरंगः ॥

* * *

अथ कायिक रोगों में सर्व रोगों का राजा जो ज्वर है उसका वृत्तान्त पूर्वक लक्षण और यत्न क्रम से लिखते हैं ॥

अथ प्रथम ज्वर की उत्पत्ति ।

दक्ष प्रजापति के यज्ञ में सती के तन त्याग करने से त्रिलोकीनाथ शिवजीने कोप करके दक्ष और दक्ष के सहायकों के मारने और यज्ञ विध्वन्स करने को अपने तीसरे नेत्र से एक बीर भद्र नाम गण उत्पन्न किया उस गण ने शिवजी महाराज की आज्ञा पाकर दक्षप्रजापति को मार यज्ञ विध्वन्स कर यज्ञ की सब सामग्री खाई तब शिवजी ने बीर भद्र का नाम ज्वर रक्खा सो वह ज्वर मनुष्य के मिथ्याहार मिथ्या बिहार से नाभि और स्तन के मध्य में जो आम का घर है उसमें रहते जो बात पित्त कफ उनको रोगी के शरीर में आमाशय के स्थान पर दुष्ट करै है और आमाशय के स्थान में रहता जो आहार तिस्से उपजा जो रस उसको भी बिगाड़ै है और आमाशय के स्थान में रहती जो अग्नि तिसको उदर में से बाहर निकाल कर रोगी के संपूर्ण शरीर को अग्नि के स्वरूप तत्ता करै है वही ज्वर रूप हो कर शरीर के पराक्रम को खाजाय है वह ज्वर आठ प्रकार का है । बात ज्वर १ पित्त ज्वर २ कफ ज्वर ३ बात पित्त ज्वर ४ बात कफ ज्वर ५ कफ पित्तज्वर ६ सन्निपात ज्वर ७ आगंतुक ज्वर ८ यह आठ प्रकार के ज्वर हैं अब इनके पृथक पृथक् लक्षण लिखते हैं ॥

अथ प्रथम ज्वर मात्र का सामान्य लक्षण ।

जिस के शरीर में एक साथही ये लक्षण होंय उसके ज्व कहना चाहिये । शरीर तत्ता होआवै पसीना न आवै क्षुध जाती रहै सब अंग जकड़ा सा मस्तक में शूल होय हा पैरों में हड़ फूटन और कहीं मन नहीं लगे ऐसा लक्ष जिस रोगी में होय उस के ज्वर कहिये ॥

अथ ज्वर का पूर्व्व रूप ॥

हाथ पैरों में हडफूटन और मस्तक भारी होय और जंभाई आवै बिना श्रम के शरीर में खेद हो ऐसा लक्षण जिस मनुष्य के होय तौ जानना कि ज्वर आवैगा यह लक्षण वैद्य को जानने चाहिये ॥

अथ ज्वर के विशेष लक्षण ॥

प्रथम बात ज्वर के लक्षण ॥ शरीर कांपे ज्वर का विषम वेग होय कंठ ओठ सूखे नींद और छींक न आवै शरीर रूखा होय माथा भारी शरीर में पीड़ा मुख से कहीं रस का स्वाद जाता रहै दिशा न उतरै पेटमें शूल और अफरा होय और उबासी बहुतसी आवैं तौ बात ज्वर जानिये ॥

अथ सामान्य ज्वर मात्र का यत्न ॥

गरम पानी पिलावै और मलके बल सदृश हलका लंघन और लघु पथ्य करावै और निर्वात स्थान में रक्खे अच्छे महीन वस्त्र पर सुलावै तौ ज्वर जाय और तीन दिन तक तौ ज्वर में कड़वी कसैली जुल्लाब आदि की कोई औषधी न दे यही यत्न कीजिये तदनंतर २ मासे सोंठ १० मासे धनियाँ इनका क्वाथ कर पिलावै तौ ज्वर जाता रहै और भूख भी लगे ॥

अथ बात ज्वर के यत्न ॥

बात ज्वर वाले को और तीक्ष्ण जठराग्नि वाले को और र्भिणी स्त्री और दुर्बल मनुष्य और बालक और वृद्ध और य शील इतने मनुष्यों को लंघन नहीं करावै लघु पथ्य और बातज्वर वाले को चिरायता। नागर मोथा त्रवाला। दोनों कटेरी। गिलोय। सोंठ इन सब औषधियों ा छदाम छदाम भर लेकै जवकुट कर पांच दिन तक क्वाथ तौ बातज्वर जाय २ ॥

अथ बातज्वर दूर करने का दूसरा क्वाथ ॥

ँठ। नीमकीछाल। धमासा। पाढ़। कचूर। अडूसा। अर-

बड़की जड़। पुष्करमूल। इन सब औषधियों को जव कुट कर छदाम २ भर लेकर क्वाथ दे तौ बातज्वर दूर होय ३ और हिंगुलेश्वर रससे बात ज्वर तत्काल दूर होता है। सिंगरफ पीपल। सोघा सिंगी मुहरा इन तीनों को बराबर ले महीन पीस पानी में आध २ रत्ती की गोली बनाकर प्रति दिन एक २ खाय तौ पाच गोलियों में बातज्वर निश्चय जाय और मूंग। मसूर। कुलत्थ। मोठ। इन सबकी दाल का पानी पथ्यमें दे और सतावर। गिलोय यह दोनों छदाम २ भर ले क्वाथ कर उसमें छदाम भर पुराना गुड़डालकर पांच दिन तक खाय तौ बातज्वरजाय और मुनक्का दाख। पीपल पित्तपापड़ा। सौंफ यह सब छदाम छदाम भर ले कर क्वाथ करके दे तौ बातज्वर जाय—इति बातज्वर के यत्न॥

अथ पित्तज्वर के लक्षण।

नेत्रोंमें दाहहो मुख कडुआ रहै। तृषा अधिकहो। घुमेर आवै। बहुत बकै। शरीर गरम रहै। ज्वर का वेग बहुत हो। मल पतला हो। और वमन होय नींद नहीं आवै। मुख सूखे और पक जाय। पसीना आवै नेत्र मल मूत्र पीले हों ये लक्षण जिस पुरुष में होंय उसको पितज्वर जानिये॥

अथ पित्तज्वर का यत्न॥

नागरमोथा। धमासा। पित्तपापड़ा। नेत्रबाला। चिरायता नीबकीछाल। इन सब औषधियों को छदाम २ भर लेकर जब कुट कर क्वाथ दे तौ पितज्वर दूर होय १ अथवा गरम पानी के साथ खैरसार का चूर्ण छदाम भर और २ मासे कुटकी और दो टंक मिश्री इन का चूर्ण कर दे तौ पित्तज्वर जाय २ अथवा १ टंक चन्दन १ टंक खस इनको महीन पीस फालसे के ४ पैसे भर सरबत में दो पैसे भर मिश्री डाल के पिये तौ पित्तज्वर दूर होय ३ यह यत्न चिसती नाम ग्रंथ में लिखा है अथवा चावल की खील के पानी में मिश्री मिलाकर पिये तौ पित्तज्वर दूर होय ४ अथवा कुटकी। किर

माला की गिरी। नागरमोथा। हड़की छाल। पित्तपापड़ा इन सबको छदाम २ भर ले कै कूट कर काढ़ा दे तौ पित्तज्वर। और तृषा। दाह। मूर्छा। प्रलाप। घुमनी इन सब रोगों को यह क्वाथ दूर करै है यह वैद्य विनोद में लिखा है ५ अथवा गेहूं के आटे को खूब भिजो कर उसमें मिश्री डाल कर पतला हरीरा कर दे तौ पित्तज्वर दूर होय ६ अथवा मीठे अनार का सरबत दे तौ पित्तज्वर दूर होय ७ अथवा महा सुन्दरी सर्व गुण सम्पन्न १६ वर्ष की स्त्री से संभोग करै तौ दाह की व्यथा दूर होय और तोता मैना और बालक की वाणी और मनोहर बाग फूलों का हार कमल का फूल मनोहर शृंगार की कथा कपूर का लगाना। सुन्दर स्त्रियों का संग। फुहारा आदि ये सब दाह की व्यथा को दूर करै हैं ८ अथवा फालसे के सरबत में सेंधानौन डाल कर पिये तौ पित्तज्वर जाय ९ अथवा मूंग की दाल के पानी में मिश्री मिला कर पिये तौ पित्त ज्वर दूर होय १० अथवा मुनक्कादाख का सर्बत मिश्री मिला कर पिये तौ पित्तज्वरजाय ११ अथवा पित्तपापड़ा। नागरमोथा। चिरायता इन सबको ५टंक ले क्वाथ कर ३ दिन पिये तौ पित्तज्वर जाय १२ यह सब यत्न ज्वर तिमिर भास्कर में लिखे हैं अथवा रक्त चन्दन पद्माक धनियां गिलोय नींबकीछाल इन सब औषधियों को छदाम २ भर लेकै जवकुट कर ५ दिन काढ़ा पिये तौ पित्तज्वर दाह तृषा बमन सब दूर होंय १३ यह यत्न लोलिम्बराज में लिखे हैं और यही पित्तज्वर बहुत दाह कारक ज्वर हो तो कमल के फूलों की सय्या पर अथवा केले के पत्तों पर सुलावै तौ दाह ज्वर दूर होय १४ अथवा अच्छे बन या खसकी टट्टियों में खसकेही पखे की वायु करै तौ दाहज्वर दूर होय १५ यह यत्न लोलिम्बराज में लिखा है अथवा गुलाब के फूल की पंखड़ी को तिलमें पांच सात पुटदे और उनका तेल चमेली के सदृश निकाले उसको

हकीम गुलाब रोगन कहते हैं और हिंदू गुलाब का तेल बोलते हैं उसके मर्द्दन से दाह ज्वर बन्द होता है १६ अथवा १०० या १००० बार का धोया हुआ घी देह में मलै तौ दाह ज्वर की व्यथा तत्काल दूर होय १७ अथवा नीबके कोमल पत्तों को पीस कर उसमें पानी डाल बिलोय कर झाग उठाय दाह ज्वर वाले के शरीर में लेप करै अथवा उन झागोंमें बहेड़े की मींगी मिलाकर लेप करै तौ दाह की व्यथा तत्काल दूर होय १८ ॥

ये यत्न वैद्यजीवन और वैद्य विनोद में लिखे हैं—इति पित्त ज्वर और दाह ज्वर के लक्षण और यत्न ॥

अथ कफ ज्वर का लक्षण और यत्न ॥

अन्नमें अरुचि शरीर भारी और रोमांच होंय और जिसके मूत्र और नख सफेद हों नींद बहुत आवै शरीर ठंढा और मुख मीठा होय ज्वरका वेग कम हो आलस। स्वास। खांसी पीनस आदि लक्षण जिसमें हों उसको कफ ज्वर जानिये ॥

अथ कफ ज्वर के यत्न ।

नीबकीछाल। सोंठ। गिलोय। कटेरी। पुष्करमूल। कुटकी कचूर। अडूसा। कायफल। पीपल। सतावर। इन सब को छदाम २ भर लेके जव कुटकर ७ दिन क्वाथ दे तौ कफ ज्वर दूर होय अथवा। कायफल। पीपल। काकडासिंगी। पुष्करमूल इन सब औषधियों को कपरछान करकै छदाम भर सहत में चटावै तौ कफ ज्वर। स्वास। कास। आदि दूर होंय। यह यत्न वैद्य विनोद में कहा है २ और कफज्वर वालेको गरम सेरभर का तीनपाव पानी करकै थोड़ा२पिलावै और१२लंघन करावै पीछे मूंगमोठ अथवा कुलत्थ के पानी का पथ्य करावै और दिन में सोने न दे और बिजौरा के भीतर के जीरे में सेंधानोन अदरक मिला के दे पथ्य में अथवा यह पाचन वस्तु दे सोंठ। मिरच। पीपल। चित्रक। पीपलामूल। दोनोंजीरे। लौंग। इलायची। भुनी हुई हींग। अजवायन। अजमोद। इन

सब को समान लेकर चूर्ण करकै छदाम भर गरम जलसे दे तौ पाचन होय कफ ज्वर जाय भूख लगे ३ अथवा कटेरी। गिलोय। सोंठ। पुष्करमूल। अडूसा। इन सबको धेले २ भर लेकर जवकुट कर ७ दिन तक क्वाथ दे तौ कफ ज्वर जाय यह क्षुद्रादि क्वाथ है। अथवा कटेरी। पीपल। काकड़ा सिंगी। गिलोय। अडूसा इन सब औषधियों को २ टंक लेकै क्वाथ कर १० दिन दे तौ कफ ज्वर स्वांस कास मन्दाग्नि ये सब दूर होंय अथवा अडूसे का काढ़ा छदाम भर तोल के प्रमाण १० दिन दे तौ कफ ज्वर निश्चय तत्काल जाय अथवा २ रत्ती शीत भंजी रस अडूसा और सोंठ के क्वाथ के अनोपान से ७ दिन दे तौ कफज्वर निश्चय तत्काल दूर होय ॥ ६ ॥

अथ शीतभंजी रस ॥

सिंगरफ से निकाला हुआ शुद्ध पारा ५ टंक सोधी गंधक ५ टंक तामेश्वर ५ टंक सिंगीमुहरा २ टंक सोंठ ५ टंक मिरच ५ टंक पीपल ५ टंक सोधा हुआ सुहागा ५ टंक इन सबको महीन पीस चित्रक के रसकी ३ पुट दे पीछे अदरख के रसकी ७ पुट देकै पान के रसकी ३ पुट देकर एक२रत्ती की गोलियां बनावै यह शीतभंजी रस है इससे कफ ज्वर सीतांग और सर्व्व वायुके रोग दूर होते हैं ७—इति कफ ज्वर के लक्षण और यत्न ॥

अथ वात पित्तज्वर के लक्षण यत्न ॥

जिस मनुष्य को वात पित्तज्वर मूर्छा घुमेर दाह होय और निद्रा न आवै मस्तक पीड़ा करै कंठ मुख सूखे वमन रोमांच अरुचि और अंधेरा होजाय सब अंगमें पीड़ा होय और जंभाई और बकवाद यह लक्षण जिस ज्वर में होय उसको वात पित्तज्वर कहिये ॥

अथ वात पित्तज्वर के यत्न ॥

खरैटी। गिलोय। अरण्ड की जड़। नागरमोथा। पद्मा भारंगी। पीपल। खस। रक्तचन्दन इन सब औषधियों

80 6402.

५ मासे के प्रमाण ले पीछे जवकुट कर छदाम २ भर का क्वाथ १२ दिन तक दे तौ बात पित्तज्वर दूर होय २ अथवा गिलोय । नागरमोथा । पित्तपापड़ा । चिरायता । सोंठ इन सबको बराबर ले जवकुट कर छदाम २ भर का क्वाथ प्रति-दिन १२ दिन दे तौ बात पित्तज्वर दूर होय ॥ ३ ॥ यह पंचभद्र नाम क्वाथ है अथवा गिलोय । पित्तपापड़ा । सोंठ । नागरमोथा । अडूसा । इनको बराबर ले जवकुट कर छदाम भर का क्वाथ दे तौ बात पित्तज्वर जाय ४ अथवा पटोल । नीब की छाल । गिलोय । कुटकी इन सबको बराबर ले छदाम भर क्वाथ १२ दिन तक दे तौ बात पित्तज्वर दूर होय ५ अथवा महुआ । मुलहटी । लोध । गौरीसर । नागरमोथा । किरमाला की गिरी । इन सबको बराबर ले के जवकुट कर छदाम भर का क्वाथ १२ दिन तक दे तौ बात पित्तज्वर जाय ६ अथवा चावल की खील के पानी में मिश्री और सहत मिला कर १० दिन दे तौ बात पित्तज्वर जाय ७ अथवा सोंठ । मिरच पीपल इनको बराबर ले कै सब की बराबर मिश्री मिला चूर्ण कर प्रति दिन धेले भर सहत के साथ १० दिन तक खाय तौ बात पित्तज्वर दूर होय—इति बात पित्तज्वर के यत्न ॥

अथ बात कफ ज्वर के लक्षण यत्न ॥

खांसी अरुचि सन्धि २ और मस्तक में पीड़ा पीनस सन्ताप अंग कम्प शरीर में भारीपन और निद्रा आवै नहीं पसीना स्वास और उदर में शूल होय और नाड़ी सर्प अथवा हंस की गति चलै धूसर अथवा स्वेत और चिकना सुरमे के सदृश मूत्र और काला और चिकना मल होय आंख धूसरी और मुख कसैला अथवा मीठा और जीभ काली अथवा स्वेत कंठ में कफ और भारी बोल शरीर ठंढा यह लक्षण जिसमें होंय उसको बात कफज्वर जानिये यह लक्षण ज्वर तिमिर भास्कर में लिखा है ॥ १ ॥

अथ वात कफ ज्वर का यत्न ॥

इस ज्वर वाले को १० लंघन करवावे और अधौटा पानी पिलावै और १० दिन पीछे चिरायता। नागरमोथा। गिलोय। सोंठ। ये सब बराबर लेकर जवकुट कर छटांक भर का क्वाथ दे पीछे उसको पथ्य दे तौ कोई उपद्रव नहीं उठे और तीन दिन पीछे कायफल। देवदारु। भारंगी। नागरमोथा। धनिया। पित्तपापड़ा। हड़कीछाल। सोंठ। कच गचकी जड़ ये सब औषध बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा करकै दे तौ वात कफ ज्वर खांसी सूजन स्वास इन सबको दूर करै १ अथवा नागरमोथा। पित्तपापड़ा। सोंठ। गिलोय। धमासा। इन सब को बराबर ले कै जवकुट कर छटांक भर का क्वाथ १० दिन तक दे तौ वात कफ ज्वर वमन मुख शोष इत्यादि दूर होंय अथवा कटेली। सोंठ। पीपल। गिलोय। यह सब छटांक २ भर ले काढ़ा कर दे तौ वात कफ ज्वर जाय ३ ॥ अथवा सालपर्णी। पृष्टपर्णी। दोनों कटेली। गोखुरू। बेलगिरी। अरणी। अरलू। कमेर। पाढ़। यह दसमूल हैं इनको कूट कर क्वाथ करै और पीपल मिला कर १० दिन तक दे तौ वात कफ ज्वर दूर होय ॥ ४ ॥ अथवा ज्वर में मुख और तालू सूख जाय जीभ लठरा जाय तौ बिजौरा के जीरे में सेंधानोन और मिरच लगाय जीभ के लेप करै तौ मुख और तालु का शोष और जीभ की लठरता दूर होय ५ अथवा चिरायता। गिलोय। देवदारु। कायफल। वच यह बराबर ले छटांक भर का क्वाथ कर दे तौ वात कफ ज्वर जाय। यह यत्न ज्वर तिमिर भास्कर में लिखा है ६— इति वात कफ ज्वर यत्न ॥

अथ कफ पित्त ज्वर का लक्षण ॥

मुख और जीभ कफ से लिपी हों तंद्रा। मोह। खांसी। अरुचि। तृषा। अधिक हो। वारंवार शरीर में दाह और शीत और पीड़ा हो हृदय दूखे। घूमनी आवै क्षुधा न लगे।

शरीर जकड़ासा होजाय। नाड़ी हंस की अथवा मेंढ़क की गति चलै मूत्र स्वेत ललाई लिये चिकना हो और मल भी ललाई लिये हो और नेत्र मेंढ़क के रंग के सदृश हों मुख मीठा अथवा कड़ुवा रहै जीभ ललाई लिये स्वेत हो जिस मनुष्य के ये लक्षण हों उसके कफ पित्त ज्वर जानिये यह लक्षण ज्वर तिमिर भास्कर में लिखा है १ ॥

अथ कफ पित्त ज्वर का यत्न ॥

इस ज्वर वाले को १४ लंघन करावै और अष्टाव शेष जल पिलावै और गिलोय। रक्तचन्दन। सोंठ। नेत्र वाला। दारु हल्दी इन औषधियों को बराबर लेकै जवकुट कर छदाम भर का काढ़ा १० दिन तक दे तौ कफ पित्तज्वर दूर होय १ अथवा नींबकीछाल। रक्त चन्दन। पद्माक। गिलोय। धनियां इन औषधियों का काढ़ा १० दिन दे तौ यह ज्वर और दाह। तृषा। वमन सब दूर होंय २ अथवा। गिलोय इन्द्रजव। नींबकीछाल। पटोल। कुटकी। सोंठ। सुपेद चन्दन नागरमोथा। पीपल इन सब को बराबर ले महीन चूर्ण कर ४ मासे अष्टाव शेष जल के साथ दे तौ ज्वर स्वांस गरमी हृदय शूल अरुचि खांसी आदि रोगों को यह चूर्ण दूर करै ३ अथवा। गिलोय दोनों कटेली। कचूर। दारु हल्दी। पीपल। अड़ूसा। पटोल। नींबकीछाल। चिरायता इन सब औषधियों को समान लेकै जव कुटकर छदाम भर का काढ़ा दोनों समय १० दिन तक दे तौ पित्त कफ ज्वर दूर होय ४ अथवा दाख। किरमाला की गिरी। धनियां। कुटकी। नागरमोथा। पीपला मूढ़। सोंठ। पीपल। इन सब को बराबर लेकै ११ दिन तक काढ़ा दे तौ शूल। भ्रम। मूर्छा। अरुचि। छर्दि। पित्त कफज्वर। इतने रोगों को दूर करै ५ अथवा सिंगरफ का निकाला हुआ पारा ५ टंक सोधी गन्धक ५ टंक कालीमिरच ५ टंक सोधा हुआ सुहागा ५ टंक इन सबको महीन पीस अदरक के रस की ७ पुट दे फिर पान के रसमें

७ पुट दै तदनन्तर ४ रत्ती प्रमाण की गोली बांधे एक गोली प्रति दिन दोनों समय ७ दिन तक खाय तौ कफ पित्तज्वर निश्चय दूर होय ६—इति पित्त कफ ज्वर का यत्न ॥

अथ सन्निपात ज्वर की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जो मनुष्य बहुत चिकना और खट्टा और अधिक गरम चरपरा मीठा रूखा भोजन करै और विरुद्ध वस्तु खाय अथवा अधिक भोजन करै और बुरा पानी पिये और क्रोधवती रगैली स्त्री के साथ प्रसंग करै और दुष्ट और कच्चा मांस खाय और शीत तामडा देस ऋतु ग्रह इनके विपरीत होने से मनुष्य के सन्निपात रोग होता है ॥

अथ सन्निपात का लक्षण ॥

अकस्मात् कभी दाह कभी शीत लगे स्वभाव बदल जाय और सब इन्द्रियां अपने २ धर्म्म को छोड़ दें शरीर के हाड़ २ और संधि २ और माथे में अधिक पीड़ा होय और नेत्र में जल आवै और काले और लाल होजांय कानोंमें शब्द और पीड़ा हो कंठमें कांटे पड़जाँय तन्द्रा। मोह। श्वास। कास अरुचि। भ्रम यह भी होंय और जीभ काली और खरखरी होकर लठरा जाय और रुधिर मिला हुआ कफ थूकै दिनमें सोवै रात्रि में जागे पसीना बहुत आवै अथवा नहीं आवै अकस्मात गावै नाचै हंसे रोवै माथा धुने तृषा अधिक लगै हृदय दूखे मल मूत्र उतरै नहीं और जो उतरे तौ थोड़ा उतरे शरीर कृश होजाय कंठ में कफ घर घराय गूंगा हो जाय ओष्ट आदि अंग पक जांय पेट भारी हो नाड़ीकी गति महामन्द शिथिल सूक्ष्म टूटीसी होय और मूत्र हल्दीसा या काला या रुधिर के समान और मल काला श्वेतता लिये होय अथवा शूकर के मांस सदृश होय इतने लक्षण जिसमें होंय तिसके सन्निपात ज्वर कहिये जो वैद्य औषध रस और यंत्र मंत्र तंत्र करकै सन्निपात ज्वर को दूर करै उस वैद्य से

धन देकर भी रोगी उऋण नहीं होता—इति सन्निपात ज्वर लक्षण ॥

अथ सन्निपात ज्वर का यत्न ॥

सन्निपात ज्वर वाले को अर्द्धावशेष अच्छे कुए के जल में १ टंक सोंठ डालकर दिनका औटा दिन में और रात्रि का औटा रात्रि में पिलावै और चतुर मनुष्य पास रहै और निर्व्वात स्थान में रक्खे शीतल यत्न कभी न करै और शिव आदि का पूजन और हवन मंत्र मणि धारण दानादिक करै अथवा सात दिन पीछे कायफल। पिपलामूढ़। इन्द्रजव। भारंगी। सोंठ। चिरायता। कालीमिरच। पीपल। काकड़ासिंगी। पुष्कर मूल। रास्ना। दोनों कटेली। अजमोद कूड़। बच। पाढ़। चव्य इनसब औषधियों को समान लेजवकुट कर २ टंक का क्वाथ दोनों समय दे तौ सन्निपात और सर्व्व वस्तु की अज्ञानता और अधिक प्रस्वेद शीतांग और विक्षिप्तता उदर शूल अफरा बात और कफ के रोग और सुआ रोग इन सब रोगों को यह क्वाथ दूर करै है अथवा आक की जड़ जवासा। चिरायता। देवदारु। रास्ना। निर्गुण्डी। बच। अरनी। सहंजना। पीपल। पिपलामूढ़। चव्य। चित्रक। सोंठ। अतीस। जलभांगरा इन सबको बराबर लेजवकुट कर २ टंक प्रमाण का काढ़ा दोनों समय दे तौ महा सन्निपात ज्वर धनुर्वात और जबड़ा भिचगया हो तिस को और सूआ का रोग श्वास खांसी और वायु के रोगों को यह काढ़ा दूर करै है यह यत्न लोलिम्बराज में लिखा है २ सन्निपात में जीभ जड़ होगई हो तौ बिजौरा की केसर में सेंधानौन और मिरच मिलाकै लेप करै तौ जीभ की जड़ता दूर होय ३ अथवा जिस सन्निपात में ज्ञान जाता रहा हो तिसका यत्न यह है बच। महुआ। सेंधानौन। मिरच। पीपल यह सब बराबर लेकै महीन पीस गरम जल में नास दे तौ ज्ञान होआवै ॥

अथ सन्निपात के दूर करने की और नास ॥

पारा ५ टंक गन्धक ५ टंक इन दोनों की कजली खरलमें करै पीछे दोनों की बराबर सोंठ । मिरच । पीपल महीन पीस इन पांचों को मिलाय धतूरे के फल के रस की ३ पुट दे कै एक दिन खरल करै यह उन्मत्त नाम रस है इसको नास दे तौ सन्निपात दूर होय ५ ॥

अथ सन्निपात दूर करने का अंजन ॥

जमाल गोटे की मींगी १० टंक कालीमिरच १ टंक पिपलामूढ़ १ टंक इन तीनों को जंभीरी नीबू के रस में ७ दिन तक खरल करै पीछे इसका अंजन दे तौ सन्निपात दूर होय ६ अथवा पारा । गन्धक । कालीमिरच । पीपल । यह सब बराबर ले और इन चारों का चतुर्थांश जमालगोटा लेकै खरल में पारा गन्धक की महीन कजली करै पीछे इन दोनों की कजली में मिला सबको जंभीरी के रस में आठ दिन तक खरल करै फिर इसका अंजन दे तौ सन्निपात दूर होय ७ इस अंजन का नाम भैरवांजन है ॥ यह वैद्य रहस्य में लिखा है अथवा सिरसके बीज । पीपल । काली मिरच । सेंधानोन । लहसन । मैनसिल । बच इनको बराबर लेकै महीन पीस गोमूत्र में एक दिन तक खरल करै पीछे इसको अंजन करै तौ सन्निपात दूर होय ॥ ८ ॥

अथ सन्निपात दूर होने का पंचवक्र नाम रस ॥

सिंगरफ का निकाला हुआ पारा ५ टंक सोधी गन्धक ५ टंक सोधा सिंगीमुहरा ५ टंक सोधा सुहागा ५ टंक पीपल ५ टंक कालीमिरच ५ टंक पारा और गन्धक की कजली कर पीछे से कजली में इन सब औषधियों को मिलाकै धतूरे के बीज के तेल में ४ घड़ी खरल करकै १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे एक गोली अदरक के रसमें दे तो सन्निपात जाय इसके ऊपर दही भात खवावै यह यत्न वैद्य रहस्य में लिखा है ॥ ९ ॥

अथ सन्निपात दूर होने का स्वच्छन्द भैरव रस ॥

सिंगरफ का निकाला हुआ पारा ५ टंक सोधी गन्धक ५ टंक सोधा हुआ सिंगीसुहरा ५ टंक जायफल २ टंक पीपल १० टंक पारा और गन्धक की कजली करे पीछे इन सब औषधियों को इसमें मिलाय और अदरक के रस में १ दिन तक खरल करै पीछे १ रत्ती के प्रमाण दे तौ सन्निपात ज्वर। शीतज्वर। बिशूचिका। बिषमज्वर। मन्दाग्नि। माथे का रोग इन सबको यह रस दूर करै है यह वैद्य रहस्य में लिखा है ॥

अथ सन्निपात में शीत उत्पन्न हुआ हो उसका उबटना ॥

मिरच। पीपल। सोंठ। हड़का छिलका। लोध। पुष्कर मूल। चिरायता। कुटकी। कूट। कचूर। इन्द्रजव इन सब को बराबर लेकै महीन पीस मर्द्दन करै तौ पसीना और शीतांग दूर करै ॥ १० ॥ अथवा पारा ५ टंक सिंगीसुहरा। ५ टंक मिरच १० टंक धतूरे के फल की राख ४० टंक इन सबको महीन पीस कर शरीर में मर्द्दन करै तौ पसीना शीतांग सन्निपात दूर होय ॥ ११ ॥

अथ महा सन्निपात दूर करने का यत्न ॥

पारा। सिंगीसुहरा। कालीमिरच। नीलाथोथा। नौसादर। इन सबको बराबर ले महीन पीस धतूरे और लहसन के रस में रोटी करै वह रोटी चौर कराके रोगी के शिर पर एक पहर तक रक्खे जब शरीर में ताप हो आवै और चैतन्य होजाय तौ वह पुरुष जीवै और जो ताप युक्त और चैतन्य न होय तौ निश्चय वह मनुष्य मरै ॥ १२ ॥ अथवा लहसन। राई। सहजनेकीजड़ इन सबको गौके मूत्रमें महीन पीस रोटी करे वह रोटी दो पहर तक चौर कराके मस्तक पर रक्खे जो चैतन्यता और ताप न हो तौ वह न जीवै यह यत्न वैद्य विनोद में लिखा है ॥ १३ ॥

अथ सन्निपात दूर करने का यत्न ॥

महा भयंकर सन्निपात वाले को बिच्छू से कटवावै तौ सन्निपात दूर होय १४ और सन्निपात वाले को सर्प से भी कटाना लिखा है परंतु लोक विरुद्ध है इस्से यह चिकित्सा न करै ॥ १५ ॥ अथवा सन्निपात वाले को लोहे की सलाका अत्यन्त गरम कर उसके पगथली और भौंह और ललाट के मध्य में दाग दे तौ सन्निपात जाय यह बैद्य बिनोद में लिखा है और मंत्र यंत्र आदि के साधन से भी सन्निपात दूर होता है और सुश्रुत चरक बाग्भट्ट के मतसे तौ सन्निपात ज्वर एकही प्रकार का है परंतु अन्य ऋषियों के मत से ५२ प्रकार का है उनमें १३ मुख्य हैं उनका पृथक् २ नाम और लक्षण और यत्न लिखते हैं ॥

अथ १३ सन्निपात के नाम ।

संधिग १ अन्तक २ रुग्दाह ३ चित्तभ्रम ४ शीतांग ५ तन्द्रिक ६ कंठकुब्ज ७ कर्णक ८ भग्ननेत्र ९ रक्तष्ठीवी १० प्रलाप ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ अब इनकी आयुर्बल लिखते हैं संधिग ७ दिन रहै अन्तक १० दिन रुग्दाह २० दिन चित्तभ्रम ११ दिन शीतांग १५ दिन तन्द्रिक २५ दिन कंठकुब्ज १३ दिन कर्णक ३० दिन भग्ननेत्र ८ दिन रक्तष्ठीवी १० दिन प्रलाप १४ दिन जिह्वक १६ दिन अगिन्यास १५ दिन इति आयुर्बल ॥ परंतु इनमें जो कुछ उपद्रव उठ आवै तौ मनुष्य तत्काल ही मरजाय और सन्निपात ज्वर वाले का शीतल यत्न न करै और दिन में सोने न दे अह्नीविशेष जल पिलावै और आंव कफ घटै ऐसा यत्न करै और सन्निपात के दोष सदृश लंघन करावै ॥

अथ सन्धिग सन्निपात का लक्षण ॥

शरीर की सन्धि २ में शूल और सूजन होय पेटभारी रहै अंग सिथिल पड़जाय बल जाता रहै बात कफका कोप बहुत होय नींद आवै नहीं यह लक्षण सन्धिग सन्निपात के जानिये ॥ १ ॥

अथ सन्धिग सन्निपात का यत्न ॥

रास्ना। हड़कीछाल। गिलोय। सहजना। चित्रक। लज्जालू सोंठ। देवदारु। कुटकी। कचूर। अड़ूसा। बायबिड़ंग सालिपर्णी। पृष्टपर्णी। दोनों कटेली। बेलगिरी। अरणी। अरलू। कुम्हेर। पाढ़। पीपल। यह सब बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा कर दोनों समय दे तो सर्व लक्षण संयुक्त संधिग सन्निपात दूर होय ॥ १ ॥

अथ अन्तक सन्निपात का लक्षण ॥

शरीर में दाह और कम्प और मस्तक पीड़ा होय खांसी और हिचकी आवै बकै बहुत ज्ञान जाता रहै और स्वास होय ये लक्षण जिसमें होंय उसके अन्तक सन्निपात कहिये इसकी औषधि नहीं है इस सन्निपात का मनुष्य जीता नहीं ॥ २ ॥

अथ रुग्दाह सन्निपात का लक्षण ॥

शरीर में दाह और व्याकुलता होय उदर में शूल चलै तृषा अधिक लगै यह लक्षण जिसमें होंय उसके रुग्दाह सन्निपात जानिये यह भी असाध्य है ॥ ३ ॥

अथ रुग्दाह का यत्न ॥

हड़की छाल। पित्तपापड़ा। नीमकीछाल। कुटकी। देवदारु। किरमाला की गिरी। मुनक्कादाख। नागरमोथा। ये सब बराबर ले जवकुट कर २ टंक का क्वाथ दोनों समय १५ दिन दे तौ रुग्दाह सन्निपात जानिये ॥ ४ ॥

अथ चित्त भ्रम सन्निपात का लक्षण ॥

भ्रम मद ताप मोह स्वास ये होंय और विक्षिप्त के से नेत्र होजांय और हंसै गावै नाचै ये लक्षण जिसके होंय उसके चित्त भ्रम सन्निपात जानिये ॥

अथ चित्त भ्रम सन्निपात कायत्न ॥

ब्राह्मी। बच। लजालू। त्रिफला। कुटकी। खरैटी। किरमालाकीगिरी। नीमकीछाल। नागरमोथा। कड़वीतोरई की

जड़ । मुनक्कादाख । पृश्निपर्णी । दोनोंकटेली । गोखुरू । बेलगिरी । अरणी । अरलू । कुंभेर । पाढ़ यह सब बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा दोनों समय ११ दिन दे तौ चितभ्रम सन्निपात दूर होय ॥ ५ ॥

अथ शीतांग सन्निपात का लक्षण ॥

सम्पूर्ण शरीर शीतल ओलासा होजाय और कांपै हिचकी आवै अंग शिथिल होजाय स्वास खांसी और बमन होय मुख में से लार पड़े ये लक्षण जिसमें होंय उसके शीतांग सन्निपात जानिये यह भी महा असाध्य है यह सन्निपात वाला जीता नहीं तथापि यत्न लिखते हैं इस सन्निपात वाले को बिच्छू से कटावे और सिंगीमुहरा तेल में मिलाय अच्छे प्रकार मर्द्दन करै और सिंगीमुहरा लहसुन राई इनको गोमूत्र से पीस रोटी कर रोगी के चौर करा उसके माथे पर धरै जब तक शरीर गरम न होय तब तक रोटी माथे पर रक्खे जो ताप न आवै तौ वह रोगी मरजाय अब उसका उबटना लिखते हैं पारा ५ टंक सिंगी मुहारा ५ टंक काली मिरच ५० टंक धतूरे के डंडे की राख ४० टंक इनको महीन पीस शरीर के मर्द्दन करै तौ शीतांग दूर होय ॥

अथ तन्द्रिक सन्निपात का लक्षण ॥

तन्द्रा होय ज्वर का बेग और तृषा अधिक होय जीभकाली और खरदरी होय स्वास । अतीसार । दाह कान में पीड़ा ये लक्षण जिसके होंय उसके तन्द्रिक सन्निपात जानिये ॥

अथ तन्द्रिक का यत्न ॥

भारंगी । गिलोय । नागरमोथा । कटेली । हड़कीछाल । पुष्करमूल । इनको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा १५ दिन तक दे तौ तन्द्रिक सन्निपात दूर होय ६ ॥

अथ कंठ कुब्ज सन्निपात का लक्षण ॥

माथा बहुत दूखे दाह और दाढ़ में पीड़ा होय शरीर बहुत गरम रहै मूर्च्छा होय गला रुकै और पक जाय बात

से शरीर में पीड़ा होय और बकै ये लक्षण जिसके होंय उसके कंटकुब्ज सन्निपात जानिये यह कष्ट साध्य है ॥

अथ कंठ कुब्ज का यत्न ।

काकड़ासिंगी । चित्रक । हड़कीछाल । अडूसा । कचूर । चिरायता । भारंगी । दारुहल्दी । कटेरी । पुष्करमूल । नागरमोथा कुड़ाकीछाल । इन्द्रजव । कुटकी । कालीमिरच । इन सब को बराबर लेकै जवकुट कर २ टंक का काढ़ा दोनों समय ८ दिन तक दे तौ कंठकुब्ज सन्निपात जाय ८ ॥

अथ कर्णक सन्निपात का लक्षण ॥

कंठ में पीड़ा और शरीर खेद युक्त और अति गरम रहै खांसी स्वास और कर्णमूल में सूजन और बहुत पीड़ा ये लक्षण जिस किसी में होंय उसके कर्णक सन्निपात जानिये ९ ॥

अथ कर्णक सन्निपात का यत्न ।

रास्ना । असगन्ध । नागरमोथा । दोनों कटेली । भारंगी काकड़ासिंगी । हड़कीछाल । बच । पुष्करमूल । कुटकी । इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा दोनों समय २० दिन तक दें तौ कर्णक सन्निपात जाय १० ॥

अथवा दूसरा यत्न ।

हल्दी । हिंगौटा की जड़ । कूट । सहजने की जड़ । सेंधानौन । दारुहल्दी । देवदारु । इन्द्रायणी की जड़ । इन औषधियों को बराबर ले जवकुट कर आक के दूध में महीन खरल करै और कर्णमूल में ठंढाही लेप करै तौ कर्णमूल वैठजाय और कर्णमूल का रोग दूर होय २ अथवा कर्णमूल के उठतेही जोंक लगावै और कर्णमूल के माफिक रुधिर कढ़ावै तौ कर्णमूल निश्चय अच्छा होय ३ ॥

अथ भग्ननेत्र सन्निपात का लक्षण ॥

जिस रोगी का स्मरण जाता रहै ज्वर का वेग होय बाके और चंचल नेत्र होजांय भ्रम और कम्प होय बकने लगै ये लक्षण जिसमें होंय उसके भग्ननेत्र सन्निपात जानिये यह भी असाध्य है ॥

अथ भग्ननेत्र सन्निपात का यत्न ॥

दारुहल्दी । पटोलपत्र । नागरमोथा । कटेली । कुटकी हल्दी । नींबकीछाल । त्रिफला । इन सबको बराबर ले २ टंक का काढ़ा दोनों समय १५ दिन तक दे तौ भग्ननेत्र सन्निपात दूर होय ११ ॥

अथ रक्तष्ठीवी सन्निपात का लक्षण

लोहू थूकै तृषा अधिक हो मोह स्वास उदर शूल भ्रम वमन अफरा ये लक्षण जिस में होंय उसके रक्तष्ठीवी सन्निपात जानिये यह महा असाध्य है ॥

अथ रक्तष्ठीवी का यत्न ॥

नागरमोथा । पद्माक । पित्तपापड़ा । रक्तचन्दन । मजीठ । नेत्रवाला । सतावर । मलयागिरचन्दन । बकाइनकी छाल । इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा १५ दिन तक दे तौ रक्तष्ठीवी सन्निपात जाय १२ अथवा दूबकारस और अनार के फूलों के रस कीनास दे तौ रक्तष्ठीवी सन्निपात दूर होय १३ ॥

अथ प्रलाप सन्निपात का लक्षण ॥

शरीर कंपै और बहुत गरम रहै और बकै दाह होय ज्वर का वेग अधिक हो संज्ञा जाती रहै सब अंग विकल होजांय ये लक्षण प्रलाप सन्निपात के जानिये ॥

अथ प्रलाप का यत्न ॥

नागरमोथा । नेत्रवाला । सालिपर्णी । पृष्टिपर्णी । दोनों कटेली । बेलगिरी । अरलू । कुम्हेर । पाढ़ । सोंठ । पित्तपापड़ा । चन्दन । अडूसा इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा दोनों समय १० दिन तक दे तौ प्रलाप सन्निपात दूर होय ॥

अथ जिह्वक सन्निपात का लक्षण ॥

स्वास कास और ताप होय जीभ लठरा जाय और कांटे भी पड़जांय गूंगा और बहरा होजाय बल जाता रहै यह

लक्षण जिह्वक सन्निपात के जानिये यह भी कष्ट साध्य हैं ॥

अथ जिह्वक का यत्न ॥

बच। कटेली। जवासा। रास्ना। गिलोय। नागरमोथा। सोंठ। कुटकी। काकड़ासिंगी। पुष्करमूल। ब्राह्मी। भारंगी। नींबकी छाल। अडूसा। कचूर। ये सब बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा १० दिन तक दे तौ जिह्वक सन्निपात दूर होय ॥

अथ अभिन्यास सन्निपात का लक्षण ॥

नींद आवै नहीं स्वास बहुत शीघ्र चलै शरीर कांपै सब चेष्टा जाती रहै घों घों बोलै काष्टवत जड़ होजाय ये लक्षण अभिन्यास सन्निपात के हैं सो महा असाध्य और मृत्यु रूप है १५ ॥

अथ अभिन्यास सन्निपात का यत्न ॥

भारंगी। रस्ना। पटोल। देवदारु। हल्दी। सोंठ। मिरच। पीपल। अडूसा। इन्द्रायण कीजड़। चिरायता। नींबकी छाल। नेत्रवाला। कुटकी। बच। पाढ़। अरलू। दारुहल्दी। कटेली। गिलोय। निसोत। झाऊकीजड़। पुष्करमूल। त्रायमाण। नागरमोथा। जवासा। इन्द्रजव। त्रिफला। कचूर इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा १७ दिन तक दे तौ अभिन्यास सन्निपात दूर होय १६ ॥

अथ सन्निपात दूर करने का अंजन ॥

लहसन। पीपल। मिरच। बच। अरलूके बीज। सेंधानोन इन सबको बराबर ले के गोमूत्र में महीन पीस कर नेत्रों में अंजन करै तौ सब सन्निपात दूर होय १७ ॥

अथ सन्निपात की नास ॥

कालीमिरच। महुआ। सेंधानोन। चित्रक। कायफल। पीपल। इन सबको बराबर ले महीन पीस गरम पानी में नास दे तौ सन्निपात दूर होय ॥

अथ आठों ज्वर के दूर करने का चिन्तामणि रस ॥

सिंगरफ का निकाला हुआ पारा। सोधी गन्धक। अभ्रक त। मेश्वर। सोंठ। कालीमिचर। पीपल। हड़कीछाल। बहेड़ेकी छाल। आमला। सोधा जमाल गोटा। इन सबको बराबर ले दड़घल के पत्तों के रसमें खरल कर दो पहर पीछे धूप में सुखाय १ रत्ती के प्रमाण गोलीबांधे १ गोली दे तो आठों ज्वर दूर होंय और उदरशूल। अजीर्ण। आमवात। येभी सब दूर होंय यह बैद्यरहस्य और बैद्य बिनोद में लिखा है ॥

अथ मृत संजीवनी गुटिका ॥

सिंगरफ का निकाला हुआ पारा २ टंक सोधी गन्धक ३ टंक ता।सेश्वर ४ टंक सोधा सुहागा २ टंक सोधा सिंगीसुहरा १ टंक कालीमिरच ४ टंक पहले पारे और गन्धक की कजली करै पीछे यह सब औषधि मिलाय सबको ब्राह्मी के रस में १ पुट दे पीछे २ पुट अदरकके रसकी दे फिर सोंठ। मिरच पीपल। इन तीनों का औटाय १ पुट दे फिर चित्रक की १ पुट दे तदनन्तर इसकी १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे १ गोली अदरक के रस में दे तो सन्निपात और मूर्छा को दूर करै यह रस मृतक पुरुष को जिवावै है और आमबात। बाय शूल। दाहदाग। बिषमज्वर। मन्दाग्नि। सन्निपात इन सब को भी यह मृत संजीबिनी गुटिका दूर करै है यह रस मंजरी में लिखा है ॥ २० ॥

अथ कालारि रस ॥

सोधापारा १२ मासे सोधी गन्धक २० मासे सिंगीसुहरा १२ मासे। कालीमिरच २० मासे पीपल ४० मासे लवंग १६ मासे। धतूरे के बीज १३ मासे सोधा सुहागा २० मासे। जायफल २० मासे अकरकरा १२ मासे पहले पारा और गन्धक की कजली करै पीछे उस कजली में ये सब औषधि महीन पीस कर मिलावै तदनन्तर ३ दिन अदरक के रसमें खरल करै फिर ३ दिन नींबू के रसमें खरल करै फिर केले के

रस में खरल कर सब के पीछे १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे एक गोली खाय तौ बाय और सन्निपात रोग दूर होय यह रस योगचिन्तामणि में लिखा है ॥ २१ ॥

अथ त्रिपुर भैरव रस ॥

सोंठ ४ पैसे भर कालीमिरच ४ पैसे भर सोधा तेलिया सुहागा ३ पैसे भर सोधा सिंगीमुहरा १ पैसे भर इन सब को महीन पीस ३ दिन नींबू के रसमें और ५ दिन अदरक के रसमें फिर ३ दिन पानों के रस में खरल करै तदनन्तर । १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे एक गोली अदरक के रसमें दे तौ सन्निपात दूर होय ॥ २२ ॥

अथ संज्ञा करण रस ॥

सोधा सिंगीमुहरा । सेंधानौन । कालीमिरच । रुद्राक्ष कटेली । कायफल । मऊआ । समुद्रफैन । ये सब बराबर ले महीन,पीस आक के खार को ३ पुट दे पीछे १ या २ या ३ रत्ती कान में या नाक में रख कर फूंक दे तौ संज्ञा होआवै और सन्निपात दूर होय ॥ २३

अथ ब्रह्मास्त्र रस ॥

पारे की भस्म २ टंक सोधी गन्धक २ टंक इन दोनों के समान सोधा सिंगीमुहरा और इनके बराबर कालीमिरच ले सब को एक रसकर करिहारी के बकले और ज्वाला मुखी जड़ी के रसमें और अदरक के रस में २१ पुट देकै यह रस तैयार करै फिर १ रत्ती के प्रमाण देतौ सन्निपात दूर होय २४ इति सन्निपात का यत्न ॥

अथ आगन्तुक ज्वर के नाम उत्पत्ति लक्षण ॥

शस्त्रादिक के आघात से १ और भूतादिक के लगने से २ और विष आदि के खाने से ३ और आधि अर्थात् मानसी व्यथा से और राजा गुरू माता पिता आदि के तिरस्कार से और काम क्रोध शोक भय स्नेह द्वेषज इन सबसे उत्पन्न जो ज्वर उसको आगन्तुक ज्वर कहे हैं ॥

अथ शस्त्रादिक के आघात से उत्पन्न ज्वर का लक्षण ॥

शस्त्रादिक के लगने से उत्पन्न हुई जो पीड़ा तिससे हुआ जो बायु का कोप वह रुधिर को बिगाड़े है फिर उसके पीड़ा और सूजन और शरीर का वर्ण और का और होजाय है तदनन्तर वह बायु शरीर में ज्वर करै है १ ॥

अथ शस्त्रादि के आघात से उत्पन्न हुए ज्वरका यत्न ॥

इस ज्वर वालेको लंघन न करावै कषैलो और गरम बस्तु खानेको न दे मधुर और सचिक्कण बस्तु या शोरुआ खिलावै और सेक और पट्टी बन्धन आदि यथा योग्य यत्न करै ॥

अथ भूतादिक के लगने से उत्पन्न ज्वर का लक्षण ।

शरीर में उद्वेग होय कभी रोवैकभी हंसै कभी कांपै चित्त स्थिर न रहै उसके भूतादिक का प्रवेश जानिये २ ॥

अथ भूतादिक का यत्न ॥

जिसके भूत लगा हो उसको बन्धन ताड़नादिक करके मंत्र यंत्र तंत्र करै और नासदे ॥

अथ भूतादिक दूर होने के थोड़े २ सब अनुभूत उपाय लिखते हैं ॥

प्रथम भूतादिक के झाड़ने का मंत्र॥ ओं नमो ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं नमो भूतनायक समस्त भुवन भूतानि साधय साधय हुं ३ यह मंत्र पढ़के मोरपंखसे झाड़ दे तौ भूतादिकभागजांय १ ॥

अथ दूसरा मंत्र ॥

ओं नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपु वक्षस्थल बिदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूत प्रेत पिशाच शाकिनी कीलोन्मूलनाय स्तंभोद्भव समस्त दोषान् हन २ सर २ चल २ कम्प २ मथ २ हुं फट ३ ठह २ महारुद्रो ज्ञायपति स्वाहा इस नृसिंह रक्षा मंत्र को पढ़कर मोरपंख से झाड़ दे तौ भूतादिक नहीं रहै २ ॥

अथ भूतादिक के बकराने का मंत्र ॥

ओं नमो भगवते भूतेश्वराय किल २ लरवाय रौद्र दंष्ट्रा कराल बक्राय त्रिनयन भूषिताय धग धगित पिशंग ललाटनेत्राय तीव्रकोपान लाया मित तेजसे पाशशूल खट्वाङ्ग डमरुक

धनुर्बाण मुद्गर भूप दण्ड त्रासमुद्रा व्यग्र दश दोर्द्दण्ड मण्डिताय कपिलजटा जूट कूटार्द्ध चन्द्र धारिणे भस्म राग रंजित विग्रहाय उग्रफणिपति घटा टोप मण्डित कंठ देशाय जय २ भूत डामरेश आत्मरूपं दर्शय २ नृत्य २ सर २ चल २ पाशेन बन्ध २ हुंकारेण त्रासय २ वज्रदंडेन हन २ निशित खड्गेन छिंधि २ शूलाग्रेण भिन्धि २ मुद्गरेण चूर्णय २ सर्व्व ग्रहाणां आवेशय २ इस मंत्र से गौके घृत में गुग्गुल मिलाय बहुतसी धूप दे और इसी मंत्र से उड़दों को अभिमंत्रित करकै उसके मारे तौ वह मनुष्य निश्चय बकार कर जैसा होय वैसा कहै पीछे उसी मंत्र से लिख कर नींब के पत्ते और सर्प की कांचली मिला कर धूप दे ॥

अथ भूतादिक के उतारने की नास और अंजन ॥

हींगको लहसन के पानी में पीस कर नास दे तथा अंजन करै तौ भूतादिक दूर होंय ४ ॥ यह तंत्रोपचार में लिखा है ॥

अथ भूतादिक उतारने का तंत्र ॥

तुलसीपत्र ८ कालीमिरच ८ सहदेई कीजड़। रविवार को पवित्र होकर ले इन तीनों को मिलाके कंठमें बांधे तौ भूतादिक दूर होंय ५ ॥

अथ क्रोध ज्वर का लक्षण ॥

शरीर कांपै मस्तकपीड़ा करै और पित्तज्वर का लक्षण मिले उसको क्रोधज्वर जानिये ॥

अथ क्रोध ज्वर का यत्न ॥

अच्छे शीतल बचनों से चित्त विनोदक लोभ दिखावै तौ यह ज्वर दूर हो ॥ ७ ॥

अथ मानस ज्वर की उत्पत्ति और लक्षण ॥

इष्टमित्र पुत्र स्त्री धन आदि जिसका नष्ट होगया हो अथवा राजा और बड़ों का तिरस्कार करै उसको अतीसार और सर्व वस्तु में ग्लानि चित्त भ्रम स्वास और अश्रुपात आदिक हो ये सब लक्षण मानस ज्वरके जानिये ८ ॥

अथ मानस ज्वर का यत्न ॥

इसज्वर वाले को ज्ञान और धैर्य्यता रखनी उचित है मिष्टान्न और नाना प्रकार के रुचिकारी भोजन औ व्यञ्जन खाय तो यह ज्वर दूर होय ॥ ९ ॥

अथ काम ज्वर का लक्षण ॥

जिसके कामज्वर प्रकटहो उसको भोजनादिकमें अरुचि और मनमें दाह होय और लज्जा निद्रा बुद्धि धैर्य्य ये सब जाते रहैं हृदय दूखे संभोग ही में ध्यान रहै निश्वास हो आवै यह लक्षण जिसके होंय उस को कामज्वर जानिये ॥

अथ कामज्वर का यत्न ॥

अत्यन्त सुन्दरी सर्व गुण सम्पन्न नवयौवना १६ वर्ष की स्त्री से अच्छे प्रकार संभोग करै तौ कामज्वर दूर होय १० ॥

अथ स्त्री के कामज्वर का लक्षण ॥

मूर्छा और सर्व्व शरीर में मरोड़ा होय प्यास लगे नेत्र चपल होजांय कुचमर्द्दन कराने को मन में इच्छा होय पसीना और हृदय में दाह और भोजन में अरुचि होय लज्जा निद्रा धैर्य्यता जाती रहै जिस स्त्री के यह लक्षण होय उसके काम ज्वर जानिये ११ ॥

अथ स्त्री के कामज्वर का यत्न ।

जिस स्त्री को कामज्वर होवह अच्छे प्रकार से सर्व अलंकार युक्त होकर अपने पति से रमण करै तौ काम ज्वर दूर होय ॥ १२ ॥

अथ भयज्वर का लक्षण ॥

भयज्वर वाले के प्रलाप अतीसार और भोजन में अरुचि होय और चित्त स्थिर न रहै ये लक्षण जिस में होंय उस को भयज्वर जानिये १३ ॥

अथ भयज्वर का यत्न ॥

आनन्द की बातें कहकर उस के भय को दूर करै तो भय ज्वर जाय ॥ १४ ॥

अथ विषमज्वर का लक्षण ॥

जिस मनुष्य के ज्वर आने के पीछे किसी प्रकार के कुपथ्
से रस धातु को छोड़ रुधिर आदि धातु को प्राप्त हुआ जो
पित्त कफ वह बिषमज्वर को करै है अथवा ज्वर आये बिना भ
जिस पुरुष के ज्वर होकर शीत और दाह हो आवै औ
तृषा अथवा दाह के थोड़े बहुत का नियम और समय का भ
नियम न रहै किसी समय आजाय उसके बिषमज्वर कहि
वह बिषमज्वर चार प्रकार का है एक सन्तत जो प्रति दि
आवै १ दूसरा एकान्तरा जो एक दिन बीच देकै आवै
तीसरा तिजारी जो तीसरे दिन आवै ३ चौथा चातुर्थिक ज
चौथे दिन आवै ४ बिषमज्वर के भेद तौ बहुत हैं पर
चार मुख्य हैं वेही लिखे हैं ॥

अथ विषमज्वर का यत्न ॥

बिषमज्वर वाले को मूंग अथवा मोठकीदाल का पानी दी
हलका रक्खे औटा जल पिलावै। और पटोल। हड़कीछाल
नीबकीछाल। इन्द्रजव। गिलोय। जवासा इन औषधियों क
बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिनतक दे
सन्तत ज्वरजाय ॥ १५ ॥

अथवा शीतज्वर वाले को वृहत् क्षुद्रादि क्वाथ दे तौ शी
ज्वर जाय सो लिखते हैं कटेली। धनियां। सोंठ। गिलोय
नागरमोथा। पद्माक। रक्तचन्दन। चिरायता। पटोल प
अडूसा। पुष्करमूल। कुटकी। इन्द्रजव। नीब की छा
भारंगी। पित्तपापड़ा। इन सबको बराबर ले जवकुट कर
टंक का काढ़ा दोनों समय १० दिन तक दे तौ शीतज्व
दूर होय १६ अथवा षोड़शाङ्ग चूर्ण से भी विषम ज्वर दू
होता है सो लिखते हैं ॥ चिरायता। नींमकीछाल
कुटकी। गिलोय। हड़ की छाल। नागर मोथा। धनिय
अडूसा। त्रायमाण। कटेली। काकड़ा सिंगी। सोंठ। पित्तप
पड़ा। प्रियंगु के फूल। पटोल। पीपल। कचूर। इन सब

बराबर ले महीन पीस कपडछान कर १ टंक भर शीतल जल से ८ दिन तक खाय तौ विषम ज्वर जाय १७॥ अथवा चिरायता। कुटकी। निसोत। नागर मोथा। पीपल। बाय विडंग। सोंठ। नीब की छाल। कड़कीछाल। इन सबको बराबर ले महीन पीस चूर्ण करकै १ टंक गरम जल से ७ दिन तक दै तौ विषम ज्वर दूर होय और भूख लगै १८॥ अथवा शीत दाह एकान्तरा तिजारी आदि को ज्वरांकुश रस दूर करै है सो लिखते हैं सुम्बुल को भाटू बैंगन के पेट में १४ बार पकाकर भुरता करै पीछे उसके बराबर पीपल और सिंगरफ ले इन तीनों को राई के बराबर गोली बांध १ गोली बतासे में ३ या ५ दिन तक दे तौ शीतज्वर एकान्तरा तिजारी इन सबको दूर करै ॥

अथ जीर्णज्वर का लक्षण ॥

२१ दिन के पीछे जिसके शरीर में सूक्ष्म होकर ज्वर रहै और भूख जाती रहै शरीर दुर्बल होजाय पेट में क्रिया होय उसको जीर्णज्वर कहिये ॥

अथ जीर्णज्वर का यत्न ॥

प्रथम तो बसन्त मालती रस जीर्णज्वरादिक को दूर करै है सो लिखते हैं सुवर्ण के वरक़ १ मासे। बूके मोती २ भाग। सिंगरफ ३ भाग। काली मिरच ४ भाग। गोमूत्र में सोधी खपरिया ८ भाग। इन सबको खरल में महीन पीस पीछे से इसके माफ़िक़ गौके मक्खन में खरल करै फिर नींब के रस में जबतक चिकनाई न मिटै तब तक खरल करै इस प्रकार इसको तैयार करकै १ रत्ती या २ रत्ती पीपल और सहत के साथ देतौ जीर्णज्वर धातु का बिकार और गरमी का रोग संग्रहणी मूत्रकृच्छ्र श्वास कास प्रदर अनोपान के संयोग से इन सब रोगों को दूर करै २०॥ अथवा कटेली गिलोय। सोंठ। इन तीनों का काढ़ा १० दिन तक दै तौ जीर्णज्वर जाय २१॥ अथवा कचूर। पित्तपापड़ा। सोंठ

नागरमोथा। कुटकी। कटेली। चिरायता। इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा दोनों समय ११ दिन तक दे तो जीर्णज्वर विषमज्वर जाय २२ ॥ यह वैद्यविनोद में लिखा है ॥

अथ लाक्षादि तैल ॥

पीपलकीलाख पावसेर। मीठा पानी ६ सेर लोध १० टंक इनको मधुरी आंचसे औटाय इनका चतुर्थांश करकै निकाले पीछे से इस रसमें गौका मट्ठा १ सेर मीठा तैल १ सेर सोंफ २ टंक असगन्ध २ टंक हलदी २ टंक देवदारु २ टंक सम्हालू २ टंक पित्तपापड़ा २ टंक कुटकी २ टंक मूर्वा २ टंक मुलहटी २ टंक नागरमोथा २ टंक रक्तचन्दन २ टंक रास्ना २ टंक इन सब औषधियों को महीन पीस इस तेल में डालकर पीछे से सबको एक रस कर मधुरी आंच से औटावै जब रस जलजाय और लस आजाय तब उतारले फिर इसतेल का मर्द्दन करै तौ जीर्णज्वर विषमज्वर दोनों दूर होंय और शरीर में बल होय २३ ॥ अथवा ३ पीपल से एक २ प्रति दिन २१ तक बढ़ावै और एकही एक घटावै जब फिर तीन पर आ जाय इसको वर्द्धमा पिप्पली कहते हैं इससे भी जीर्णज्वर विषमज्वर रोग दूर होते हैं और पथ्यसे रहै २४ अथवा बकरी के दूध के झागसे भी जीर्णज्वर जाता है २५ ॥ अथवा नीब के पत्र। त्रिफला। सोंठ। मिरच। पीपल। अजमोद। सेंधानौन संचरनौन। बिड़नौन। जवाखार। चित्रक। चिरायता। पित्तपापड़ा इन सब औषधियों को बराबर ले महीन पीस कपड़छान कर १ टंक प्रातःकाल जलसे ले तौ बिषज्वर जीर्णज्वर दूर होंय २६ ॥ यह निम्बादि चूर्ण है ॥ अथवा। त्रिफला। दारु हल्दी। दोनों कटेली। कचूर सोंठ। कालीमिरच। पीपल। पिपलामूढ़। मूर्वा। गिलोय धनियां। अड़ूसा। कुटकी। त्रायमाण। पित्तपापड़ा। मोथा। नेत्रबाला। नीमकीछाल। पुष्करमूल। मुलहटी। अजवाइन। इन्द्रजव

भारंगी। सहजने केबीज। फिटकरी। बच। तज। कमलगट्ट
पद्माक। चन्दन। अतीस। खरैटी। बायबिडंग। चित्र
देवदारु। पटोल। चब्य। लौंग। बंशलोचन। पत्रज। इन स
औषधियों का आधा चिरायता लेकै महीन पीस कपड़छा
कर १ टंक शीतल जलसे लेय तौ विषमज्वर जीर्णज्वर और
सर्व ज्वरनाश को दूर करै है यह सुदर्शन चूर्ण है २७।
अथवा किसी प्रकार विषमज्वर जीर्णज्वर जाता हो
नहीं तौ रोगके माफिक जुलाब और वमन करावै त
विषमज्वर और जीर्ण ज्वर दूर होंय २८॥

अथ अजीर्णज्वर का लक्षण ॥

बारम्बार होलाहल और खट्टी डकार आवै वमन क
इच्छा रहै। उदर में पीड़ा। और अफरा और गुड़गुड़ा
शब्द होय तौ अजीर्णज्वर जानिये॥

अथ अजीर्णज्वर का यत्न ॥

अजमोद। हड़कीछाल। सौंचरनौन। कचूर। इन सब
बराबर ले महीन चूर्ण कर १ टंक गरम पानी के साथ
तौ अजीर्णज्वर जाय २९ ॥

अथ दृष्टिज्वर का लक्षण ॥

जम्हाई बहुत आवे। उदर में पीड़ा। और हाथ में ह
फूटन हो शरीर से शक्ति जाती रहै तो दृष्टिज्वर जानिये ३

अथ दृष्टिज्वर का यत्न ॥

भुनीहुईहींग। कालीमिरच। पीपल। सोंठ। इनको म
पीस गरम पानी के साथ २ टंकले तौ दृष्टिज्वर दूरहोय ३

अथवा सुहराआदि का जल पिलावै तौ दृष्टिज्वर
होय॥३२॥

अथ बिगड़े रुधिर के ज्वर का लक्षण ॥

अंगमें हड़फूटन हो। मुखसे श्वास आवै। शरीर शि
और नेत्रलाल होंय। तृषा। मूर्छा। अफरा ये लक्षण
में होंय उसके रुधिर का ज्वर जानिये॥ ३३॥

अथ रुधिर के ज्वर का यत्न ॥

दाख। अडूसा। कटेली। हल्दी। गिलोय। हड़कीछाल इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा करै जब शीतल होजाय तब धेले भर सहत मिलाय ७ दिन तक पिये तौ बिगड़े रुधिर का ज्वर जाय ३४ ॥

अथ मलज्वर का लक्षण ॥

मुखशोष। दाह। भ्रम। मूर्छा। मस्तकपीड़ा। और हिचकी वमन। पेट में शूल ये लक्षण जिसमें होंय उसके मलज्वर जानिये ३५ ॥

अथ मलज्वर की औषधि ॥

कुटकी। पीपलामूड़। नागरमोथा। हड़कीछाल। किरमालाकीगिरी। ये सब औषधि बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा दे तौ मलज्वर जाय यह किरमाला पंचक है ॥

अथ गर्भिणी के ज्वर का यत्न ॥

रक्तचन्दन। दाख। गौरीसर। खस। मुलहटी। मऊआ। धनियां। नेत्रवाला। मिश्री। इन सबको बराबर ले काढ़ा कर ७ दिन तक पिये तौ गर्भिणी का ज्वर जाय ३६ ॥

अथ प्रसूतिका के ज्वर का लक्षण ॥

अंग में हड़फूटन शरीर भारी और गरम रहै कम्प तृषा सूजन। अतीसार यह लक्षण जिस स्त्री में होंय उसके प्रसूतिका ज्वर कहिये ३७ ॥

अथ प्रसूतिका ज्वर की औषधि ॥

अजमोद। जीरा। बंशलोचन। खैरसार। बिजयसार सौंफ धनियां। मोचरस। इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा १० दिन तक दे तौ प्रसूतिका ज्वर दूर होय ३८॥ अथवा दशमूलका काढ़ा दे तौ प्रसूति का ज्वर जाय सो लिखते हैं शालिपर्णी। पृष्टपर्णी। दोनों कटेली। गोखुरु। बेलकीगिरी। अरणी। अरलू। कुंभेर। पाढ़। पीपल। ये सब

बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा १० दिन तक दे त प्रसूति का रोग जाय ३९ ॥

अथ बालक के ज्वर की उत्पत्ति और लक्षण ॥

बालक की माता अथवा धाय कुपथ्य करै और गरि वस्तु खाय तौ बालक के नाना प्रकार के रोग होंय और बालक के रोने से ज्वर प्रत्यक्ष विदित होता है ॥

अथ बालक के ज्वर का यत्न ॥

बालक की माता अथवा धाय को पथ्य से रक्खे और हलका भोजन दे और जो माता के दूध न होय तौ बकरी का दूध दे अथवा नागरमोथा । हड़की छाल । पटोल । मुलहटी इन सबको बराबर ले १ मासेभरका काढ़ा ७ दिन तक दे तौ बालक का ज्वर जाय ॥ १ ॥ अथवा खील । मुलहटी । कूड़ । महुआ इनको महीन चूर्ण कर १ मासे सहत के साथ दे तौ बालक का ज्वर जाय २ ॥ अथवा बालक के अतीसार लिये ज्वर होय तौ अतीस । बेलगिरी । इन्द्रजव । धवई के फूल । लोध । धनियां । नेत्रबाला । इनका २ मासे भरका क्काथ कर दे तौ ज्वरातीसार दूर होय ३ ॥ अथवा बालक की नाभी पकगई हो तौ घृतके सेकने से अच्छी होय ॥ ४ ॥ अथवा पेटमें कीड़े पड़ गयेहों उससे उत्पन्न हुआ जो ज्वर उसका लक्षण ॥ ज्वर होय शरीर का वर्ण और का और होजाय पेट में शूल और हृदय में पीड़ा वमन । भ्रम । भोजन में अरुचि । अतीसार सब ये हों तौ उसके उदर के कीड़ों से हुआ ज्वर जानिये ॥

अथ यत्न ॥

पलास । पापड़ा । नींब की छाल । सहजनेकीजड़ । नागरमोथा । देवदारु । बायबिडंग । इनको बराबरले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा ७ दिनतक दे तौ पेटके कीड़े दूर होंय १ ॥

अथ कालज्वर का लक्षण ॥

ज्वर का अधिक वेग । और कई श्वास होय शरीर की

कान्तिजाती रहै। पसीना आवै। शरीर सिथिल होय। नाड़ी हाथ न लगै। सर्व इन्द्रियों के धर्म्म जाते रहैं तौ कालज्वर जानिये॥

अथ कालज्वर का लक्षण॥

गौ पृथ्वी आदिक श्रद्धा पूर्व्वक दान और विष्णु, का स्मरण और सन्निपातका यत्न जो पीछे लिखा है वह करै

अथ ज्वर के १० उपद्रव॥

तृषा १ खांसी २ स्वास ३ हिचकी ४ वमन ५ अतीसार ६ अरुचि ७ बद्धकोष्ट ८ अफरा ९ मूर्छा १० ये ज्वरके उपद्रव हैं॥

अथ उपद्रवों के लक्षण।

प्रथम ज्वर होय फिर अन्य रोग होंय और वह ज्वर का यत्न करने नहीं दे उसी को ज्वरका उपद्रव कहिये॥ क्षुधा तृषा तौ ज्वर की स्त्री हैं। और कास स्वास बेटे। हिचकी और वमन बेटी। अतीसार ज्वर का भाई। अरुचि बहन। बद्धकोष्ट भानजा। अफरा सुसर। मूर्छाबांदी इनमें जो बलवान होय उसका यत्न करै॥

अथ ज्वर अतीसार इकट्ठे होंय उस का यत्न।

सोंठ। अतीस। नागरमोथा। चिरायता। गिलोय। कुड़ाकी छाल। इनको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तौ यह रोग दूर होय १॥ अथवा पीपल। पीपलामूढ़। चव्य। चित्रक। सोंठ। बेलगिरी। नागरमोथा। चिरायता। कुड़ाकीछाल। इन्द्रजव। इनसबको बराबर लेजवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तौ ज्वरातीसार मुखशोष। हिचकी। तृषा। वमन। स्वास। कास येसब दूरहोंय २॥

ज्वर में तृषा अधिक लगे उसका यत्न

धनियां। नागरमोथा। पित्तपाड़ा। इनकोबराबरलेजवकुट कर २ टंक का काढ़ा ३ दिन तक दे तौ तृषा। दाह। अतीसार ये सब दूर होंय ३॥ अथवा बड़कीकोंपल। चावलकी खील। कमलगट्टा इन सबको बराबर ले महीन पीस

सहत से गोली बांध एक गोली मुख में रक्खे तौ तृषा दूर होय ॥ ४ ॥

अथ ज्वर में खांसी होजाय उसका यत्न ॥

पीपल । पीपलामूड़ । सोंठ । भारंगी । खैरसार । कटेली । अडूसा । कुलींजन । बहेड़ा इन सबको बराबर ले १ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तौ खांसी जाय ५ ॥

अथ ज्वर में स्वास होय उसका यत्न ॥

सोंठ । मिरच । पीपल । नागरमोथा । काकड़ासिंगी । भारंगी । पुष्कर मूल । इनको बराबर ले १ टंकका काढ़ा ७ दिन दे तौ ज्वर का स्वास दूर होय ६ ॥

अथ ज्वर में हिचकी आवै उसका यत्न ॥

जल में सेंधानौन महीन पीस नासदे तौ हिचकी दूर होय ७ ॥ अथवा मोर के पंख की राख । पीपल । और सहत में चटावै तौ हिचकी और बमन दूर होय ८ ॥

अथ ज्वर में वमन होय उसका यत्न ॥

१ टंक गिलोय का काढ़ा सहत मिला कै दे तो ज्वर की बमन दूर होय ९ ॥ अथवा २ रत्ती मक्खी की बीठ सहत में चटावै तौ बमन दूर होय १० ॥ अथवा चावल की खीलपीपल और सहत में चटावे तौ भी बमन दूर होय ११ ॥

अथ ज्वर में मूर्च्छा होय उसका यत्न ॥

किरमाला की गिरी । दाख । पित्तपापड़ा । हड़कीछाल इन को बराबर ले २ टंक का काढ़ा दे तो मूर्छा दूर होय १२ ॥

अथ ज्वर में बद्ध कोष्ट या अफरा होय उसका यत्न ॥

साबुन की बत्ती बनाकै गुदा में रक्खै तौ बद्धकोष्ट और अफरा यह दोनों दूर होय १३ ॥

अथ ज्वर में मुख शोष और जीभ में विरसता होय उसका यत्न ॥

मिश्री और अनार के दानों के कुल्ले करै अथवा दाख और अनार के दानौं का कुल्ला करै तो मुख शोष और जीभ की विरसता दूर होय १४ ॥

अथ ज्वर में निद्रा जाती रहे उसका यत्न ॥

आलू बुखारा १ सिकी भंग १ रत्ती भर सहत में चटावै तौ निद्रा आवै और अतीसार। संग्रहणी दूर होंय भूख लगै १५ ॥ अथवा १ टंक पीपलामूढ़। गुड़ में खाय तौ अवश्य निद्रा आवै १६ ॥ अथवा अरखड। और अलसी के तेल का कांसी की थाली में घिस अंजन करै तौ अवश्य निद्रा आवै ॥ १७ ॥

अथ ज्वर उतर गया होय उसका लक्षण ।

सब शरीर हलका। मस्तक में खुजली ओठ में पपड़ी पड़ै सब इन्द्री अपने २ विषयों को ग्रहण करने लगैं शरीर की सम्पूर्ण व्यथा जाती रहै सब शरीर में पसीना आवै क्षुधा लगै छींक आवै मलकी प्रवृत्ति होय ये लक्षण जब होंय तब निश्चय ज्वर गया जानिये बुद्धिमान पुरुष ज्वर आने के पीछे भी जब लक शरीर में बल न आवै तब तक पथ्य से रहै मैथुन व्यायाम बोझ उठाना अति भोजन इत्यादि न करै—इति आठों ज्वर के उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥ * ॥ ॥ * ॥ * ॥

इति श्री मन्महाराज राजेन्द्र श्रीसवाई प्रताप सिंह विरचिते ॥
अमृतसागर नाम ग्रन्थे सर्व्व ज्वरोत्पत्ति लक्षण निरूपणो नाम द्वितीयस्तरङ्गः ॥ २ ॥ * ॥

अथ अतीसार रोग के उत्पत्ति लक्षण यत्न ।

मैदा आदि गरिष्ट वस्तु और शीतल पतली वस्तु और विरुद्ध वस्तु खाने और भोजन के ऊपर भोजन करने और विष खाने और मल की बाधा रोकने और अधिक चिकनी और रूखी और गरम वस्तु के खाने आदि से मनुष्यों के अतीसार रोग उत्पन्न होता है ॥

अथ अतीसार का स्वरूप ॥

मनुष्य के शरीर में इन कुपथ्यों से जल धातु बढ़ै तौ उदर की अग्नि को शान्त करै और वह जल पवन का प्रेरित विष्टा

से मिल गुदा के मार्ग से पतला होकर नीचे अधिक उतरे उसको अतीसार जानिये ॥ बात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ शोच ५ आम ६। इन भेदों से यह अतीसार छः प्रकार का है ॥

अथ अतीसार का पूर्व्व रूप ॥

प्रथम हृदय नाभि गुदा उदर पेड़ू इनमें पीड़ा और सब अंग में हड़फूटन होय और गुदाकी पवन रुक जाय बद्ध कोष्ट और अफरा होय अन्नपचे नहीं तौ जानिये कि मनुष्य के अतीसार होगा ॥

अथ बात के अतीसार का लक्षण ॥

कुछ एक ललाई लिये मल उतरे और मल में झाग मिले हों और रूखा और थोड़ा बार २ आम सहित आवै और दिशा के समय पेड़ू में पीड़ा होय तौ बात का अतीसार जानिये ॥

अथ बात के अतीसार का यत्न ॥

बच। अतीस। नागरमोथा। इन्द्रजव। सोंठ। ये सब बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन तक दे तौ बात का अतीसार दूर होय १ ॥ अथवा इन्द्रजव। नागरमोथा। लोध। बेलगिरी। आमकीगुठली। धवईके फूल इनको महीन पीस चूर्णकर २ टंक भैंसकी छाछ में ७ दिन दे तौ बायु का अतीसार दूर होय २ ॥

अथ पित्त के अतीसार का लक्षण ॥

मल पीला। लाल। हरा और दुर्गन्ध युक्त पतला होय और गुदा पकजाय शरीर में पसीना आवै प्यास लगै दाह और मूर्छा होय ये लक्षण जिसमें हों। य उसके पित्त का अतीसार जानिये २ ॥

अथ पित्तके अतीसार का यत्न ॥

बेलगिरी। इन्द्रजव। नागरमोथा। नेत्रबाला। अतीस इन को जव कुट कर २ टंक का काढ़ा ८ दिनदे तौ पित्तका अतीसार जाय ॥ अथवा रसौत। अतीस। इन्द्रजव। धवई

के फूल। सोंठ। इन सबको बराबर ले महीन चूर्णकर चांव के पानी से २ टंक सहत मिलाकै ७ दिन दे तौ भयंकर भ पित्त का अतीसार जाय २ ॥ और पित्तातीसार का रक्तातीसार भी भेद है ॥ अत्यन्त गरम वस्तु खाने से पित्त बढ़कर रुधिर को बिगाड़ै है तब रुधिर से मिला हुआ मल उतरता है उसको रक्तातीसार कहते हैं ॥

अथ रक्तातीसार का यत्न ॥

कुड़ा की छाल। अनार का छिलका। इन दोनों को २ टंक भर ले काढ़ा कर ५ टंक सहत मिलाय ७ दिन दे तौ रक्तातीसार जाय १ ॥ अथवा कुड़ा की छाल। अतीस। मोथा। नेत्रबाला। लोध। रक्तचन्दन। धवई के फूल। अनार का छिलका। पाढ़। इन सबको बराबर ले जवकुट कर ३ टंक का काढ़ा कर उसमें २ टंक सहत मिलाय ७ दिन दे तौ दाह और शूल संयुक्त रक्तातीसार दूर होय २ ॥ अथवा सुपेद चन्दन। १ टंक महीन पीसकै २ टंक सहत और २ टंक मिश्री मिलाय ८ दिन चाटै तौ रक्तातीसार दूर होय ३ ॥ अथवा मीठे अनार का पुट पाक १ टंक सहत मिलाय कर चाटै तौ रक्तातीसार जाय ४ अथवा बकरी के दूध में मक्खन मिश्री और सहत मिलाकै पिये तौ रक्तातीसार जाय ५ ॥

अथ गुदा पकगई होय उसका यत्न ॥

पटोल। मुलहटी। महुआ। इनको पानी में औटावै और ठंढाकर इस पानी से गुदा धोवै तौ गुदा का पकना जाय १ अथवा बकरी के दूध में। मिश्री और सहत मिलाकै धोवै तौ भी गुदा का पकना जाय ॥ अथवा गेहूं के आटे में घृत मिलाय पानी से उसन उसको सुहाता २ सेकै तो गुदा का पकना अच्छा होय ॥

अथ श्लेष्मा के अतीसार का लक्षण ॥

जिसका मल चिकना और सुपेद गाढ़ा दुर्गन्ध लिये शीतल थोड़ी पीड़ा सहित उतरै और शरीर भारी रहै भोजन

में अरुचि होय ये लक्षण जिसमें होंय उसको श्लेष्मातीसार जानिये ॥ १ ॥

अथ श्लेष्मातीसार का यत्न ॥

कफातीसार वाले को दो चार लंघन करावै अथवा मूंगका थोड़ासा पथ्यदे पीछे चव्य। अतीस। कूट कुटकी। बेलगिरी। सोंठ। कुड़ाकीछाल। तज। इनको जवकुटकर २ टंक का काढ़ा ७ दिनदे तौ श्लेष्मातीसार जाय १॥ अथवा सिकी हुई हींग। कालानौन। सोंठ। कालीमिरच। पीपल अतीस। इन सबको बराबर ले चूर्णकर १ टंक ७ दिन दे तौ श्लेष्मातीसार जाय॥

अथ सन्निपातातीसार का लक्षण ॥

जिसका मल शूकर के मांस के सदृश हो और अनेक रूप का दीखै और तन्द्रा। तृषा। मुखशोष। भ्रम। मोह ये सब बातें बालक वा वृद्ध वा स्त्री के होंय तौ असाध्य जानिये॥

॥ अथ यत्न ॥

पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठ। खरैटी। बेलगिरी। गिलोय। मोथा। पाढ़। चिरायता। कुड़ाकी छाल। इन्द्रजव। इन को जव कुटकर २ टंक का काढ़ा १० दिन दे तौ सन्निपात का अतीसार जाय १॥ अथवा जंगीहड़। सोंठ। मोथा। इन सबको बराबर ले महीन पीस पुराने गुड़ में २ टंक ७ दिन खाय तौ त्रिदोष का अतीसार दूर होय २॥ अथवा कुड़ा की छाल का पुटपाक कर रस निकाल ५ टंक सहत मिलाकै १० दिन तक दे तौ सन्निपात का अतीसार जाय ६॥

॥ अथ शोक के अतीसार का लक्षण ॥

पुत्र मित्र स्त्री धन आदि के नाश से उपजा जो शोक वह उदर की अग्नि को मन्द करै है और शरीर के बाहर का तेज उदर में जाकै रक्त बिगाड़ै है वह रक्त विष्टा से मिलकै अथवा न मिल के गुदा के द्वारा गुंजा के सदृश निक-

लै तो उसको शोकातीसार जानिये वह शोक दूर होने से जाता है और उसी तरह किसी प्रकार के भय से उपज जो भयातीसार उसको भी जान ले ॥

॥ अथ आमातीसार का लक्षण ॥

जिस पुरुष के प्रथम भोजन का अजीर्ण होय और वह पीछे गरिष्ट वस्तु खाय तौ उसके कोष्ट में वात। पित्त। कफ ये तीनों जाकर धातु के समूह और मलको बिगाड़ै हैं औ वह मल शूल संयुक्त दुर्गन्ध लिये अनेक रंग का गुदा के द्वारा निकलता है उसको वैद्यआमातीसार कहते हैं और जो मल जल में तिरे आम है और जल में डूब जाय अथवा दुर्गन्धता युक्त सुपेद चिकनाई लिये होय यह भी इसका लक्षण है ॥

अथ आमातीसार का यत्न ।

धनियां। सोंठ। बेलगिरी। नागरमोथा। नेत्रवाला। ये सब बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा ७ दिन अथवा रोग के सदृश १० दिन तथा १५ दिन दे तौ आमातीसार और शूल ये दूर होंय ॥ यह धान्य पंचक है १ ॥ अथवा जंगीहड़। मोथा। सोंठ। अतीस। दारुहल्दी इनसबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन दे तौ आमातीसार दूर होय अथवा जंगीहड़। अतीस। सिकीऊई हींग। सोचर नौन। सेंधानौन। इनको बराबर ले महीन पीस २ टंक गरम पानी से ले तौ आमातीसार जाय ३ ॥

अथ पक्वातीसार का यत्न ।

लोध्र। धवई के फूल। बेलगिरी। मोथा। आमकी गुठली इन्द्रजव। ये सब बराबर ले महीन पीस २ टंक भैंसकी छाछ से ले तौ पक्वातीसार दूर होय ४ ॥ अथवा। अजमोद। मोचरस। सोंठ। धवई के फूल। जामुनकी गुठली। आंमकी गुठली। इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक गौकीछाछ के साथ दे तौ पक्वातीसार जाय यह लघुगंगाधर चूर्ण है ५

अथ सोजातीसार का यत्न ।

सांठी की जड़ । इन्द्रजव पाढ़ । बायबिडङ्ग । अतीस । नागरमोथा । कालीमिरच । इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टंक का काढ़ा ७ दिन दे तौ सोजातीसार जाय ६ ॥

अथ अतीसार में वमन होय उसका यत्न ।

आमकीगुठली । बेलकीगिरी । इन दोनों को २ टंक ले काढ़ा करउस में २ टंक सहत और २ टंक मिश्री मिलाके ७ दिन दे तौ वमन सहित अतीसार जाय ५ ॥ अथवा सिकी ऊई मूंग । चांवल की खील इन दोनों को औटाय सहत मिश्री मिलाय ५ दिन पिये तौ वमन अतीसार दाह ज्वर दूर होंय ॥

अथ अतीसार का भेद मोढ़ानिवाही है उसका लक्षण ।

कुपथ्य के करने वाले मनुष्य के बात बढ़ कर कफसे मिलके मोढ़ा निबाही को करै है जब पुरुष के क्षण क्षण में मड़ोरा होकर थोड़ा अथवा अधिक गुदा के द्वारा मलनिकलै उसको मोढ़ा निवाही कहते हैं सोबात । पित्त । कफ । रुधिर के भेद सेचार प्रकार का है जिसमें बहुत पीड़ा होकर मल उतरै उसको बायुका कहिये और जिसमेंदाह अधिकहोय उसको पित्तकाऔर जिसमें कफ संयुक्त मल जाय उसको कफ का कहिये और जिसमें रुधिर संयुक्त मल उतरै उसको रुधिर का जानिये ॥

अथ इन चारों का यत्न ।

वलगिरी । लोध । कालीमिरच । इन तीनों को दो पैसे भर ले महीन पीस १ टंक सहत में चाटै तौ मोढ़ानिवाही दूर होय अथवा धवई के फूल २ टंक महीन पीस दही के साथ ७ दिन खाय तौ मोढ़ानिवाही जाय । अथवा कैथ का रस ५ टंक सहत में ७ दिन खाय तौ मोढ़ानिवाही दूर होय ॥ ३ ॥ अथवा २ टंक लोध दही के साथ ७ दिन खाय तौ मोढ़ानिवाही जाय ये सब लक्षण और यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥

अथ आमातीसार का और यत्न ॥

हड़की छाल महीन पीस २ टंक सहत में ५ दिन खाय तौ आमातीसार जाय १ अथवा भांगरे का रस ५ टंक दहीके साथ ७ दिन खाय तौ सब प्रकार के अतीसार दूर होय २ ॥ अथवा २ टंक राल में १० टंक मिश्री मिलाय १० दिन खाय तौ बहुत कालका भी अतीसार जाय ३ ॥

अथवा बेलगिरी २ टंक बकरीके दूधके साथ ७ दिन पिये तौ रक्तातीसार जाय यह वैद्यविनोद में लिखाहै ४ ॥

अथवा धनियां । सोंठ । पीपल । सेंधानौन । अजमोद । सिकी हींग । जीरा इन सबको बराबर ले महीन पीस मठे के साथ पिये तौ अतीसार । शूल । आम । इत्यादि जांय भूख लगै और रुचिहोय यह वृन्दनाम ग्रन्थमें लिखाहै ५ ॥

अथवा सोंठको जलसे पीस कर गोला बनाय गोले को अरण्ड के पत्तों से लपेट डोरों से बांध कपड़ौटी कर मधुरी आंचमें पकावै फिर उसकी मट्टी दूरकर सोंठ काढ़ ले ठंढीकर २ टंक सहत से ७ दिन खाय तौ अतीसार जाय ३ ॥ अथवा एक भाग अफीम दो भागहींग तीन भाग लवङ्ग चारभाग मोचरस तीन भाग । मिश्री इनको महीन पीस १ या २ रत्ती साठी के चावल के पानी में अथवा छाछ के साथ खाय तौ भयंकर भी अतीसार जाय ७ ॥ अथवा नागरमोथा । मोचरस । लोध । धवईकेफूल । वेलकीगिरी । इन्द्रजव । अफीम । सोधापारा । सोधीगन्धक । इनसबको बराबर ले पहिले पारे और गन्धक की खरल में कजली करै पीछे इन सब औषधियों को उस कजली में मिलाय २ रत्ती के प्रमाण छाछ में खाय तौ अतीसार । मोढ़ानिवाही । संग्रहणी । ये सब दूर होंय ८ ॥ यह गन्धार रस है ॥ अथवा सोंठ । जायफल । अफीम कच्चे अनार का गूदा । इनसबको बराबर ले इकट्ठा कर कच्चे अनार में भरै पीछे उसको पुट पाक कर उसकी गोली चिरमिटी के प्रमाण बनाकर एक गोली गौकी छाछ से

७ दिन खाय तो पक्का तीसार दूर होय ९ ॥ अथवा अफीम को ठीकरे में मधुरी आंच से सेककर प्रमाण से दे तो अतीसार निश्चय दूर होय १० ॥ अथवा जायफल । लवंग । धवई के फूल । बेलगिरी । नागरमोथा । सोंठ । मोचरस । सिंगरफ । अफीम । इन औषधियों को बराबर ले महीन पीस पोस्ता के छिलके के पानी में १ या २ रत्ती के प्रमाण गोली बांधै एक गोली चांवल के पानी या छाछ के साथ खाय तो निश्चय सर्व अतीसार जांय ११ ॥ अथवा जायफल । छुआरा । अफीम । इन तीनों को बराबर ले पीछे पान के रस में एक रत्ती प्रमाण गोली बांधे एक गोली छाछ के साथ ७ दिन खाय तो भयंकर भी अतीसार दूर होय १२ और जिसके अतीसार होय वह नवीन अन्न गरम वस्तु भारी और चिकना भोजन धूप खेद । मैथुन । स्नान । चिन्ता आदि न करै यह वैद्यरहस्य में लिखा है १३ ॥

अथ अतीसार का असाध्य लक्षण ।

सूकर के मांस सदृश मल होय और प्यास । दाह । अरुचि श्वास । हिचकी । पसलीमें शूल । मूर्छा । इत्यादि होंय और किसी बात में मन न लगे गुदा पकजाय अग्निमन्द होजाय ज्वर भी रहै मल बन्ध होय शरीर निर्बल होजाय ये लक्षण जिस पुरुष में होय वह पुरुष मर जाय १४ ॥

अथ अतीसार जाता रहा हो उसका लक्षण ।

जिसके दिशा आये बिना मूत्र उतरै गुदा की पवन अच्छे प्रकार से चलै और कोठा हलका होय ये लक्षण होय तो अतीसार रोग दूर हुआ जानिये—इति अतीसार की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ संग्रहणी रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ।

प्रथम मनुष्य के अतीसार होकै जाता रहा हो फिर उस मनुष्य के कुपथ्य करने से मन्द हुई जो अग्नि सो पुरुष के उदर में रहने वाली जो छठीकला जिसका नाम संग्रहणी है और

वही कला अग्निका स्थान है और खाये हुए अन्नादिक को ग्रहण करै है वह मन्दाग्नि उस कला को बिगाड़कर कच्चे अन्न को ग्रहण कर पक्के अन्न को गुदा के द्वारा निकालती है इसी हेतु से वैद्य लोग उसका नाम संग्रहणी कहते हैं इस संग्रहणी कला में अग्नि ही का बल है सो वह कला अग्नि को ही बिगाड़ै है ॥

अथ संग्रहणी का लक्षण ।

प्रथम वात। पित्त। कफ। सन्निपात इन भेदों से संग्रहणी ४ प्रकार की है ये जो वात। पित्त। कफ हैं। सो अधिक कुपथ्य से और अधिक भोजन करने से कच्चे ही अन्न को गुद के द्वारा निकालै है अथवा पक्के अन्न को निकालै तौ भी कभी पीड़ा और कभी मल पतला और कभी बंधा उतरै यही संग्रहणी का लक्षण है ॥

अथ बात की संग्रहणी की उत्पत्ति समेत लक्षण ।

जो पुरुष बादी वस्तु को अधिक सेवन करै और मिथ्याहार और मैथुनादिक अधिक करै तिस पुरुष के बात कुपित होकर जठराग्नि को बिगाड़ बात की संग्रणी को करै है सो जिस पुरुष के अर्द्ध पक्क अन्न पचै और कंठ सूखै क्षुधा तृषा लगै कानों में शब्द होय और पसली जंघा पेड़ू और कांधों में पीड़ा होय और कभी २ बिषूचिका भी हो आवै हृदय दूखै शरीर दुर्ब्बल होजाय। जिह्वा का स्वाद जाता रहै मीठे आदि रसों के खाने की इच्छा रहै और भोजन करै तौ जिह्वा आनन्द पावै और उदर में गोला फिया का आकार होय पैर दुखने लगै और थोड़ासा शीघ्रता समेत पवन सरै बारंबार दिशा जाय और स्वास कास भी होय ये सब लक्षण बातकी संग्रहणी के हैं ॥ १ ॥

अथ बात की संग्रहणी का यव ।

सोंठ। गिलोय। नागरमोथा। अतीस। इन सबको बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा १५ दिन दे तो आम

समेत बात को संग्रहणी जाय और भूख बढ़ै १ ॥ अथवा गौके मट्ठे में सोंठ। पीपलामूल। पीपल। चित्रक। चव्य। इन सबको बराबर ले चूर्ण कर २ टंक प्रति दिन मट्ठे में मिलाकै पिये और मट्ठे का ही खूब सेवन करे तौ बात की संग्रहणी अवश्य जाय २ ॥ अथवा सोधी गन्धक २ टंक। पारा। १ टंक। दोनौ को कजली कर पीछे से सोंठ १० मासे कालीमिरच २ टंक पीपल १० मासे पांचौनोन १० मासे। भुनीअजमोद ५ टंक। भुनाजीरा ५ टंक। भुनीहींग ५ टंक। भुनासुहागा ५ टंक। भुनीभंग ४ पैसे भर। इन सब को महीन पीस पारे और गन्धक की कजली में मिलावै फिर उस सब मिले हुए को २ दिन खरल करै तौ यह लाही चूर्ण होय इसको २ तथा ४ मासे गौके मट्ठे में दे तौ बात की संग्रहणी मन्दाग्नि। अतीसार। बवासीर। पेटकेछाम और क्षयी। इनको यह लाही चूर्ण दूर करै ॥ ३ ॥

अथ पित्त की संग्रहणी की उत्पत्ति लक्षण ॥

जो पुरुष मिरच आदि गरम बस्तु और तीखी खट्टी खारी अधिक खाय उसका पित्त बिगड़ कर जठराग्नि को बुझा देता है और नीला पीला पतला जलसहित कच्चामल निकलै और खट्टी डकार आवै हृदय और कंठ में दाह और अन्न में अरुचि होय। तृषा लगै ये लक्षण जिसमें होंय उसके पित्त की संग्रहणी जानिये ॥

अथ पित्तकी संग्रहणी का यत्न ।

रसौत। अतीस। इन्द्रजव। तज। धवईकेफूल। इन सबको बराबर ले महीन पीस चूर्णकर २ टंक गौके मट्ठे से अथवा सहतसे। वा चावलके पानीके साथ १५ दिन खाय तौ पित्त की संग्रहणी जाय ॥ अथवा। जायफल। चित्रक। सुपेदचन्दन बायबिड़ंग। इलायची। भीमसेनीकपूर। बंसलोचन। जीरा सोंठ। काली मिरच। पीपल। तगर। पचज। लवंग। इन सब को बराबर ले महीन पीस सबकी दूनी अथवा बराबर मिश्री

और बिनासेकोभंग मिलाकर सबको महीन पीस ४ या ६ मासे गौके मट्ठे के साथ १५ दिन ले तौ पित्त की संग्रहणी जाय २ ॥ यह वैद्यरहस्य में लिखा है ॥

अथ कफकी संग्रहणी की उत्पत्ति लक्षण ॥

भारी अति चिकनी और शीतल वस्तु को जो मनुष्य भोजन कर कै सोजाय उस पुरुष के कफके कोप होने से अन्न आधा पचे। हृदय दूखे। और वमन और अरोचकता होय। मुखमीठा रहै। खांसी और पीनस होय। पेट भारी रहै। मीठी डकार आवै। स्त्री प्यारी न लगै आम सहित मल उतरे बलबिना शरीर पुष्ट दीखै आलस्य अधिक आवै जिसमें ये लक्षण होय उसके कफकी संग्रहणी जानिये १ ॥

अथ कफकी संग्रहणी का यत्न ।

हड़की छाल। पीपल। सोंठ। चित्रक। कालानौन काली मिरच। इन सबको बराबर ले महीन पीस चूर्णकर २ टंक प्रति दिन मट्ठे के साथ १५ दिन खाय तौ कफकी संग्रहणी जाय ॥

अथ सन्निपातकी संग्रहणी का लक्षण ॥

जिस में। बात पित्त कफ इन तीनों के सब लक्षण मिलैं उसको सन्निपात की संग्रहणी जानिये ॥

अथ सन्निपात की संग्रहणी का यत्न ॥

बेलगिरी। मोचरस। नेत्रवाला। नागरमोथा। इन्द्र जव। कुड़ाकीछाल इन सब को बराबर ले महीन पीस २ टंक बकरी के दूधके साथ २५ दिन पिये तौ सन्निपातकी संग्रहणी जाय १ ॥ अथवा अनारदाना ८ टके भर कालानौन १ टके भर जीरा १ टके भर धनियां १ पैसे भर सोंठ १ टके काली मिरच १ टके मिश्री १ टके इन सबको महीन पीस २ टंक गौके मट्ठे के साथ १ महीने पिये तौ सन्निपात की संग्रहणी और आमातीसार। पसलीकीपीड़ा। अरुचि। गोला ये सब रोग दूर होंय २ ॥ अथवा शोधापारा। शोधीगन्धक।

सिंगीमुहरा। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। भुनासुहागा। सार। अजमोद। अफीम। इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर अभ्रक ले फिर इन सबको चित्रक के काढ़े के रसमें १ दिन खरल कर पीछे काली मिरच के बराबर गोली बांधे १ गोली प्रति दिन १ महीने तक खाय तौ संन्निपात की संग्रहणी जाय ३॥ यह अभ्रक गुटिका है॥

अथवा शोधीगन्धक। पारा। अभ्रक। सिंगरफ। सार। जायफल। बेलकीगिरी। मोचरस। शोधासिंगीमुहरा। अतीस सोंठ। कालीमिरच। पीपल। धवई के फूल। घृतमें सिकी हुई हड़ीकीछाल। कैथ। अजमोद। चित्रक। अनारदाना। इन्द्रजव। धतूरेकेबीज। कणगच। अफीम। ए सब बराबर ले प्रथम पारे और गन्धककी कजली करै फिर इस कजली में ये औषधियां महीन पीस मिलावै पीछै मिरच के प्रमाण पोस्त के छिलके के रसमें गोली बांधे १ गोली नित्य १५ दिन तक दे तौ सन्निपात की संग्रहणी। अतीसार। विषूचिका इन सब को दूर करै॥

यह संग्रहणी कपाटरस है और वैद्यरहस्य में लिखा है॥

अथ त्रिदोषकी संग्रहणी के भेद और आमवात की संग्रहणी के लक्षण॥

पतला सुपेद चिकना और आमसहित मलहोय और कटि में पीड़ा और बात अधिक सरै कभी अच्छा होजाय और कभी महीने पन्द्रहदिन पीछै फिर होआवै अथवा सदैव बना रहै आंत बोला करै आलस्यआवै शरीर दुर्बल होजाय पेट में पीड़ा रहै दिनमें पीड़ा और रात्रि में अच्छा होजाय ये लक्षण जिस में होंय उसको आम बात की संग्रहणी कहिये यह असाध्य है इसका और सन्निपात की संग्रहणी का एकही यत्न है॥

अथ संग्रहणी का भेद घटी यंत्र है उसका लक्षण॥

शरीर सुन्न रहै पसली में शूलहोय पेटबोला करै और पूर्वोक्त संग्रहणी के लक्षण भी होंय उसको घटीयंत्र कहिये

यह भी असाध्य है और जो अतीसार के असाध्य लक्षण और अच्छे यत्न पीछे लिखे हैं सोई इस संग्रहणी के भी जानने चाहिये ॥

अथ संग्रहणी का और विशेष यत्न ॥

कैथ ८ भाग । मिश्री ६ भाग । अजमोद ३ भाग । पीपल ३ भाग । बेलगिरी ३ भाग । धवई केफूल ३ भाग । अनारकागूदा ३ भाग तिलिणी ३ भाग । कालानौन १ भाग । नाग केसर १ भाग । धनियां १ भाग । लज १ भाग । पत्रज १ भाग मिरच १ भाग । अजवाइन १ भाग । पीपला मूल १ भाग । नेत्रबाला १ भाग । इलायची १ भाग । इन सबको महीन पीस गौकेमट्ठे के साथ २ टंक ले तौ संग्रहणी गोला इन सबको यह चूर्ण दूर करै यह कपित्थाष्टक है और संग्रहणी वाला इतनी वस्तु नहीं खाय भारी वस्तु जो आम करै और मल बन्द करै और अतीसार में जो वस्तु वर्जित की हैं वे न करै और जिन वस्तुओं से भूख लगे वे खाय तौ संग्रहणी जाय—इति संग्रहणी रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ ववासीर रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

मनुष्य की गुदा में शंखकी भितरली नाभि के सदृश ४ अंगुल के ३ चक्र हैं एक ऊपर का दूसरा बीचका तीसरा नीचे का ऊपर के चक्र का नाम प्रवाहिनी वह मल पवन आदि को बाहर निकाले है ॥ और बीचका चक्र मल पवन आदिको छुटाता है और तीसरा नीचे का चक्र उस मल पवन के छोड़ने के पीछे गुदा को ज्यों की त्यों ढक देता है इन तीनों चक्रों में बवासीर उत्पन्न होती है यह बवासीर का स्थान है पहले में बवासीर होय तौ साध्य और बीच के में होय वह कष्ट साध्य और भीतर के में होय वह असाध्य सो बवासीर बात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ रुधिर ५ और एक वह जो शरीर के साथही उत्पन्न हो ६ इन भेदों से छः प्रकार की है ॥ और बादी अथवा गरम

कफकारी चिकनी मीठी वस्तु जो पुरुष बहुत खाय और वात पित्त कफके करने वाले मिथ्या अहार मिथ्या विहार करकै कोप को प्राप्त जो वात पित्त कफ दोष वह गुदा तीनों चक्रों के ऊपर त्वचा । मांस । मेदा को बिगाड़ कर नाना प्रकार के मांस के अंकुरों को मस्से के आकार गुद के ऊपर करैं हैं उसको वैद्य बवासीर कहै हैं सो छः प्रका की है परन्तु लौकिक में दो प्रकार की प्रसिद्ध हैं एक खूनी दूसरी बादी जिसमें बहुतसा रुधिर जाय वह खूनी और जिसमें रुधिर तो नहीं जाय परन्तु पीड़ा चिम चिमी और खुजली आदि होय वह ये बादी दोनों उन्हीं छः के भे में हैं ॥

अथ सम्पूर्ण बवासीर का पूर्व रूप ॥

अन्न का परिपाक अच्छे प्रकार होय नहीं और कोख में रहै बद्ध कोष्ट और मन्दाग्नि होय डकार बहुत आ शरीर कृश होजाय । कोखमें अफरा होय । अंग में पीड़ रहै ये लक्षण जिसके होंय उस पुरुष के जानिये कि बवासीर होगी ॥

अथ वातकी बवासीर का लक्षण ॥

जिसको गुदा के मस्से चिम चिमी और ललाई लिये ख दरे कठोर बांके तीक्ष्ण फटे मुखके गुदाके ऊपर हों और छोटे बेर अथवा कपास अथवा कदम के फूल के सदृ होंय और शिर । पसली । कन्धे । कटि । जंघा । पेड़ू । इ में व्यथा होय छींक और डकार आवै नहीं हृदय दूखे भूख ल नहीं कास श्वास मन्दाग्नि कर्ण में शब्द । भ्रम । शोजा । फि उदर रोग जिसमें ये लक्षण होंय उसके वातकी बवासी जानिये ॥

अथ वातकी बवासीर का यत्न ॥

जिमीकन्द को मट्टी में लपेट भाड़ में खूब भरता क तेल या घृत से लपेट १ टके भर नित्य ३१ दिन खाय तो बा

को बवासीर अवश्य दूर होय ॥ यह भाव प्रकाश में लिखा है १ ॥ अथवा आकके नवीन पत्तों में पांचों नोन और तेल खटाई प्रमाण से लगावै और उन्हें जलाय राख करै पीछे गरम पानी से वह राख १ टंक या २ टंक १५ दिन खाय तो बात की बवासीर जाय यह वैद्य विनोद में लिखा है ॥ अथवा गौके मट्ठे में सेंधानौन प्रमाण से मिलाय अच्छे प्रकार बहुत दिन सेवन करै तो बात की बवासीर जाय और शरीर पुष्ट रहै यह भावप्रकाश में लिखा है ३ ॥ अथवा हड़की छाल ५ टके भर चित्रक १ टके भर सोंठ १ टके भर शोधा भिलावा ५ टके भर कालीमिरच १ टके भर पीपलामूल १ टके पीपल १ टके जीरा १ टके चव्य १ टके पकाया जिमीकन्द पाव भर जवाखार ४ टके भर इन सबको ले महीन पीस सब से दूना गुड़ मिलाय १ टके भर के प्रमाण की गोली बांधे एक गोली प्रति दिन खाय तो बात की बवासीर निश्चय जाय यह गुण कांकायन मुनि ने कहा है ४ ॥ अथवा बन्दाल के पत्तों को औटाय उसके पानी से शौच ले तो बवासीर के मस्से जांय अथवा बन्दाल के ढोढ़ों की धूनी दे तो मस्से दूर होंय ५ ॥ अथवा सेंधानौन और बन्दाल के ढोढों को कांजी में पीस बवासीर के लेप करै तो मस्से जांय ६ ॥ अथवा नीमके पत्ते और कनैर के पत्ते गुड़ कड़वी तूंबी की जड़। इन सबको कांजी के पानी में पीस मस्सों के लेप करै तो मस्से दूर होंय ७ ॥ अथवा हल्दी। कड़वी तोरई की जड़। आकके पत्ते। सहंजने की जड़। इनको कांजी के पानी में महीन पीस लेप करै तो मस्से दूर होंय ८ अथवा अरण्ड की जड़। मुलहटी। रास्ना। अजवाइन। महुआ इनको कांजी में पीस गरम कर लेप करै अथवा इससे सेक करै तो मस्से की चिमचिमी जाय और मस्से झड़ पड़ें ९ ॥ यह वैद्य रहस्य और वैद्य विनोद में लिखा है ॥ अथवा हीरा कसीस। सेंधानोन। पीपल। सोंठ। कूठ। कलिहारी की जड़ पाषाण भेद। कनेर की जड़। बायविडंग। दात्यूणी

चित्रक । हरताल । चोख । इन सबको बराबर ले महीन पीस इनका तिगुना तेल लेकै थूहर और आकके दूध और गोमूत्र तीनों तेल से चौगुने ले इन सब को इकट्ठा कर पकावै जब वे जल जांय और तेल ऊपर आरहै तब उतार कर तेल निकाल मस्सों के मर्द्दन करै तौ मस्से दूर होय बवासीर जाय और बली दूखै नहीं। यह क्षारतैल वैद्यरहस्य में लिखा है १०॥ अथवा १६ भाग पकाया जिमीकन्द ८ भाग चित्रक ८ भाग सोंठ ४ भाग । कालीमिरच २ भाग। त्रिफला ८ भाग। पीपलामूल ८ भाग। शोधाभिलावा ८ भाग। सतावर १६ भाग बिधारा ८ भाग। भंग ४ भाग इलायची ८ भाग वायविडंग इन सब को महीन पीस सब औषधियों से दूना गुड़ मिलाय ५ टंक के प्रमाण गोली बांधे नित्य १ गोली ३० दिन तक खाय तौ बवासीर। हिचकी। श्वास। कास। राजरोग। प्रमेह। फिया। इन सब रोगों को यह वृहत्सूरण मोदक दूर करै ११ यह वैद्यरहस्य में लिखा है॥

अथ पित्तकी बवासीर का लक्षण॥

मस्सों का मुंह नीला और लाल पीला सुपेदाई लिये हो और उन मस्सों में से गरम २ महीन धार से रुधिर निक और महीन कोमल मस्से होंय और उन मस्सों का मुंह जों कासा हो और शरीर में दाह। ज्वर। मूर्छा। और अरुचि होय और नीला पीला लाल मल उतरै और त्वचा नख ने जिसके पीले होंय ये लक्षण जिसमें होंय उसके पित्त की बवासीर जानिये १॥

अथ रुधिर की बवासीर का लक्षण

गुदा के मस्से चिरमिटी के रंग के सदृश होंय और मस्सों रुधिर की धार गरम और बहुत गिरै और गाढ़ा कच्चा लो निकलै और रुधिर के बहुत जाने से उसका शरीर ढाक फूल सदृश होजाय और उसका बल वर्ण उत्साह पराक्र सब जाता रहै शरीर सूखजाय अधोवायु अच्छे प्रकार नहीं

सरै मस्सों में से रुधिर निकलते हुए आगहैं। और कटि जंघा औ गुदा में पीड़ा होय शरीर दुर्बल होजाय तौ रुधिर की बवासीर में वाय का भी मेल जानिये और जिसका मला चिकना भारी और ठंढा होय और मस्सोंमें से रुधिर की धार मोटी और गरम पड़ै और गुदा में कफसाही लगा रहै तौ रुधिर की बवासीर कफ संयुक्त जानिये ॥

अथ बवासीर के रुधिर थंमने की औषधि ॥

बड़केपत्ते। और सूखे आमले चार २ पैसे भर लेकै पाव भर गौके मक्खन को लोहेकी कढ़ाई में खूब तप्त करै फिर इन दोनों वस्तुओं को घृत में डालै जब ये तीनों जल जांय तब उतार ठंढी कर धातु के बासन में भर रक्खे फिर इन सबको खरल में डाल महीन पीस एक रस करै पीछे बवासीर वाले रोगी को ६ मासे प्रति दिन प्रातःकाल २१ दिन दे फिर पानी का कुल्ला करै कुल्ले का पानी पीवै नहीं और गरम वस्तु बाजरा। करेला। मिरच। पेड़ा। अचार। बैंगन। ठेंठी। उड़द आदि खाय नहीं तौ बवासीर का रुधिर थंभजाय ॥

अथ रुधिर रुकने का दूसरा यत्न ॥

निबौली कीमींगी। एलुआ। इन दोनों को बराबर ले खरल में पानी से महीन पीस १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे १ गोली रसौत के पानी में प्रति दिन प्रातःकाल ११ दिन दे तौ बवासीर का रुधिर निश्चय थंभै ॥

अथ बवासीर के मस्से दूर करने की औषधि ।

रसौत। चीनियांकपूर। निबौलीकीमींगी। इन तीनोंको पानीसे महीन पीस लेप करै तौ मस्से दूर होंय ॥

अथ पित्त और रुधिर की बवासीर का यत्न एकही है सो लिखते हैं ॥

रसौत को महीन पीस २ टंक पानी में चारघड़ी भिजोकर फिर उस पानी को छान प्रति दिन २ महीने पिये तौ पित्त और रुधिर की बवासीर अवश्य जाय ४ ॥ अथवा पीपलकी

लाख। हल्दी। मुलहटी। मंजीठ। कमलगट्टे की मींगी। इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक नित्य ४९ दिन तक ले तौ दोनों बवासीर जांय ५ ॥ अथवा नागकेसर। मक्खन मिश्री ५ टंक प्रति दिन बकरी के दूध से ४९ दिन ले तौ दोनों बवासीर जांय ६ ॥ अथवा नागकेसर मिश्री ५ टंक ४९ दिन ले तौ दोनों बवासीर जांय ७ ॥ अथवा १०० टके भर कुड़ाकीछाल पीस कै १६ सेर पानी में औटावै जब उसका आठवाँ भाग रहै तब उतार रस छान ले फिर उस रस में नागरमोथा १ टके भर सोंठ १ ट० कालीमिरच १ ट० पीपल १ ट० त्रिफला ३ ट० रसौत २ ट० चित्रक २ ट० इन्द्र जव २ ट० बच १ टके इन सबको महीन पीस गुड़की चासनी में मिलावे फिर उसमें ऽ। भर गौका घृत मिलावे फिर उसे ऽ। सहत में मिला के १ टकेभर प्रति दिन खाय तौ दोनों और सब प्रकार की बवासीर। रक्तपित्त। अतीसार। पांडु रोग। संग्रहणी क्षीणता। सूजन। पृथक २ अनोपान से और ऊपर कहे के सेवन से इन सब रोगों को दूर करै है यह कुड़ाकीछाल का अवलेह है ॥ अथवा बकायन के फल ६ तथा ८ प्रति दिन मिश्री के साथ १ महीने तक ले तौ दोनों प्रकार की बवासीर जांय ८ ॥ अथवा सत्तगिलोय। धोबाधारा। धोबीगन्धक बीजबोल। मोचरस ये सब बराबर ले सब औषधि मिला के ३ मासे प्रति दिन सहत के साथ २१ दिन ले तौ दोनों बवासीर। अतीसार। प्रमेह। प्रदर। भगंदर ये सब रोग जांय ॥ यह बीजाबोल बद्ध रस है ९ ॥ अथवा बसन्तमालती रस २ रत्तीपीपल २ तथा ४ सहत और मिश्री के साथ २५ दिन ले तौ दोनों बवासीर और संग्रहणी जांय ॥ यह यत्न वैद्यरहस्य में लिखा है ॥ अथवा बवासीर से बद्ध कोष्ट होकर मस्सा ऊंचा हो आवै और खुजली और रुधिर बहै उस मस्से में जोंक लगा कर रुधिर निकलवा डालै तौ बवासीर जाय इसके समान और कोई यत्न नहीं है ॥ यह वैद्य रहस्य में लिखा है ११ ॥

पित्त और रुधिर की बवासीर को खूनी बवासीर जानिये और सब की बादी ॥

अथ कफ की बवासीर का लक्षण ॥

गुदा का मस्सा मोटा और मन्द २ पीड़ा सहित ऊंचा और भारी कफसे लिपटा हो खुजली अधिक और प्यार लगै पेडू में अफरा और गुदा में खाज बहुत हो और कास। श्वास। हृदय पीड़ा। अरुचि। पीनस। मूत्रकृच्छ्र। मयनाय। मन्दाग्नि ये सब होंय और शीत लगै और कफसे लिपटा मल उतरै और गुदा के मस्से से रुधिर नहीं निकलै और शरीर का रंग पीला और चिकना और आमवात युक्त होय ये लक्षण जिसके होंय उसको कफकी बवासीर जानिये ॥

अथ कफकी बवासीर का यत्न ॥

१ टके भर अदरक का काढ़ा २१ दिन ले तो कफकी बवासीर जाय १ ॥ अथवा हल्दी में थूहर के दूध की ७ पुट देकै मस्से के लेप करै तौ मस्से दूर होंय २ ॥ अथवा त्रिफला। दशमूल। चित्रक। निसोत दात्यूणी ये पांचों सेर भर लेकै कूट कर २० सेर पानी में २१ दिन रक्खे और औषधियों के साथ ७ सेर गुड़ भी जल में डालै फिर यंत्र के द्वारा मदिरा के सदृश अर्क निकालै पीछे १ टंक भर प्रति दिन ले तौ कफकी बवासीर जाय यह दात्यूणी का अर्क है ३ और वृन्दनाम ग्रन्थ में लिखा है ॥

अथ सन्निपातकी बवासीर का लक्षण ॥

वात। पित्त। कफके मिले हुए जो लक्षण हैं वही इसके भी लक्षण जानना ॥

अथ सन्निपात की बवासीर का यत्न ॥

अदरक ३ टके भर। कालीमिरच १ टके पीपल ऽ। भर चव्य १। टके १। नागकेसर १। पीपलामूल १। चित्रक १। इलायची १। अजमोद १। जीरा १। इन सब औषधियोंको महीनपीस ३० टकेभर गुड़में ५ टंक के प्रमाण गोली बांधे प्रातःकाल १

गोली खायकै भोजन करै और पथ्य से रहै तौ सन्निपात की बवासीर मूत्रकृच्छ्र । वातकारोग । विषमज्वर । पांडुरोग गोला फिया । कास । स्वास । वमन । अतीसार हिचकी इन सब रोगों को पृथक २ अनोपान से तत्काल दूर करै है जैसे तेल में जल डालतेही क्षण भर में फैल जाय है तैसेही औषधि भी अनोपान के बल से फैलजाय है यह प्राणदा गुटिका सर्व्वसंग्रह में लिखाहै ॥ अथवा । त्रिफला । सोंठ । कालीमिरच पीपल । तज । पत्रज । इलायची । बच । भुनी हींग । पाढ़ । सज्जी जवाखार । दारुहल्दी । चव्य । कुटकी । इन्द्रजव । सोंफ । पांचो नोन । पीपलामूल । बेलगिरी । अजमोद । इनसबको बराबर ले महीन पीस गरम जलसे २ टंक प्रति दिन ले तौ सन्निपात की बवासीर । स्वास शोष । हिचकी । खांसी । भगन्दर । पसलीका शूल । गोला । उदर रोग । प्रमेह । पांडुरोग अंत्रवृद्धि । संग्रहणी । विषमज्वर । जीर्णज्वर । उन्माद । इन सब रोगों को पृथक् २ अनोपान से यह विजय नाम चूर्ण दूरकरै है और भावप्रकाश में लिखा है २ ॥ अथवा शोधा पारा १ । टकेभर शोधीगन्धक १ । तामेश्वर ३ । सार १ । सोंठ २ । कालीमिरच २ । पीपल २ । शोधासिंगीमुहरा १ । दात्यूणी १ । चित्रक २ । सुहागा २ । बेलगिरी १ । जवाखार १ । सेंधानोन ५ । गोमूत्र ३२ । थूहर का दूध ३२ । इनसबको इकट्ठा कर कढ़ाई में मधुरी आंचसे पकावै जब उसकी पिण्डी बंध जाय तब २ मासे के प्रमाण गरमपानी से ले तौ असाध्य भी सन्निपातकी बवासीर जाय यह कुठाररस है और योग तरंगिणी में लिखा है ॥ ३

अथ शिवजी के मतसे बना हुआ लोहसार ॥

जिससे बवासीर आदि सर्व्व रोग जाय सो लिखते हैं ॥

बवासीर को महा असाध्य रोग जानकै मनुष्यों के रोग दूर करने के अर्थ नारद जीने श्री महादेवजी से पूछा कि महाराज सुम्बल आदि के लगानेसे गुदा के मस्से दूर होते हैं

परंतु उस्से मनुष्य मर २ कर नीठ बचैं हैं इस कारण इस्से अन्य कोई सुगम उपाय जिस्से बवासीर जाय सो बताओ तब महादेव जीने बहुत करुणा कर नारद जीको इन सबके बनाने की क्रिया बताई उसके करने से बवासीर आदि अनेक रोग जांय हैं ॥ सो लिखते हैं कांतीलोह अथवा गजबेल का लोह ले उसके पत्र कराकर उनको तैल तक्र। गोमूत्र। कांजी त्रिफला। इनमें सात २ बार पहले शोधे पीछे उसको रेतवाय उसकी बराबर मैनसिल। सोनामक्खी ले फिर इन दोनों को रेते हुए लोहको शरावे में रख कर अग्निझाल के रससे उन दोनों को उसने सानके प्रमाण सदृश रेते हुए लोह में उन दोनों को डाल शरवे को बन्दकर बुहारी कोयलों में खब धौंकनी से फूंकै जब वह दोनों जल जांय और बास आनी बन्द होजाय तब उनको निकालै इसी प्रकार उसको १० बार फूंके फिर त्रिफले के रससे पारे और उस रेते लोहे के आठवें भाग को चरावै इसविधिसे चारबार और भस्मकरै तदनन्तर उन सब को खरलमें महीन पीसे जब वह लोहसार पानीमें तिरने वाला होजाय तब उस लोहके शरवे में उस सार को विषखपरेके रसकी १ पुट उसी बिधिसे दे फिर त्रिफले की १ पुट दे फिर अदरककी १०पुट फिर जिमीकन्दकी १० पुट दे फिर छीलके रस की१०पुट फिर थूहर के दूध की १०पुट फिर सांठी के रसकी१० पुट फिर सतावर की १० पुट फिर गिलोय के रसकी २० पुट फिर जामनके बकलेकी ७ पुट फिर गूलरके छिलके की ७ पुट फिर ग्वारके पट्ठे की १० पुट फिर तेंदूकी ७ पुट फिर आमलेकेरसकी २० पुट फिर नीबूके रसकी २०पुट फिरछीले के बकलेके रसकी १०पुट सारका १२ भाग सिंगरफ डालकर उसको ग्वारके पट्ठे के रस में मिलावै और उसकी पुट दे फिर उसमें घृतकी १० पुट फिर सहतकी १० पुट और हर एक पुट में खरल करता जाय इसी प्रकार इस सारको सिद्ध करै पीछे इस सारको १ रत्ती के प्रमाण

सहत और पीपल के साथ ले और शिवजीका पूजन करै ॥ और ओं अमृतं भक्षयामि स्वाहा इस मंत्र से खाय और इसकी परम मात्रा चढ़ती बलमाफिक ले तौ ३ रत्ती प्रभात कालही ले और इसके ऊपर खरैटी का काढ़ा ले इसी प्रकार तीन महीने तक इसका सेवन करै तौ बवासीर मात्र दूर होकर वह पुरुष तरुण होजाय और मन्दाग्नि। स्वास। कास। पांडुरोग। बातरक्त। मूत्रकृच्छ्र। अण्डवृद्धि। आदि असाध्यभी रोगजांय और बल बरणबहुत बढ़ै पुष्टता शरीर में होय आयुर्बल बढ़ै सर्व्व रोगमात्र जांय और इसका सेवन करने वाला पेठा। तेल। उर्द। राई मदिरा। खटाई इतनी वस्तु न खाय यह बिधि आत्रेय और भावप्रकास में लिखी है ४ ॥ अथवा बड़ी हड़कीछाल २टंक पुरानागुड़५टंक इन दोनों को मिलाय जलसेप्रतिदिन ले ऊपर से गौकेमट्ठे का सेवन करै तौ बवासीर जाय ५ ॥ अथवा अन्धाहोली। नीलेफूलकीजड़। खरैटी। दारुहल्दी। पृष्टपर्णी। गोखुरू। इन्द्रजव। सारिकेफूल। बड़काअंकुर। गूलरका अंकुर और पीपलकेकोमलपत्र। इन सब औषधियोंको दो २ टके भर ले जवकुटकर २टंकका काढ़ाकर छानलेफिर जीवन्तीकीजड़। कुटकी।पीपलामूल। कालीमिरच। सोंठ। देवदारु सतावर चन्दन। रसौत। कायफल। चित्रक। मोथा। प्रियंगु। खरैटी। सालिपर्णी। कमलगट्टेकीमीगी। मंजीठ। कटेली। बेलगिरी। मोचरस। पाढ़। इन सबको धेले २ भर ले महीन पीस ४ सेर इनके काढ़े का रस ले उसमें गौकाघृत १ सेरडाल दोनों को कढ़ाईमें चढ़ाकर औटावै जब काढ़ा जलजायऔर घृत रहजाय तब उतार छानकर टके भर प्रतिदिन खाय तौ बवासीर जाय ६ अथवा ॥ शोधापारा। शोधीगन्धक। दोनों को बराबर ले कजली करै फिर कजली को घृतसे चुपड़े फिर उन दोनोंसे दूना बीजाबोल कजली में डाल रगड़कर टिकड़ी बांधे फिर टिकड़ी को लोहे के पात्र में आंच देकर पतली

करके केलेके पत्तेपर डालकर उसकी पपड़ी करै इसका नाम परपटी रस है इस रस का सेवन ३ रत्ती नित्य १५ दिन करै तौ सन्निपात की बवासीर जाय ७ ॥ यह बैद्य विनोद में लिखा है ॥ और गुदा के मस्से के सिवाय और शरीर में किसी ठिकाने पर मस्सा होय जिसको चर्म्मकील कहते हैं ॥ उसको अग्नि से और क्षारसे दूर करै ॥

अथ मस्से का यत्न ॥

खानेकाचूना । सज्जी । सुहागा । नीलाथोथा । इन सबको बराबर ले नीबूके रसमें ३ दिनतक भिजोवै फिर मस्से के लगावै तौ मस्सा अवश्य दूर होय ८ ॥ अथवा सीसेकी गोली को गौके घृत में घिसकै बवासीर के मस्से पर १० दिन लगावै तो बवासीर दबजाय ९ ॥ अथवा विष्णु कान्त जड़ी २ टंक काली मिरच २० टंक भंग आधमासे प्रतिदिन घोटकर पिये तौ बवासीर दबी रहै १० ॥

अथ बवासीर का असाध्य लक्षण ॥

जिसकी बवासीर में सूजन । अतीसार । वमन । अंग में पीड़ा । तृषा । ज्वर । अरुचि । मन्दाग्नि । गुदाका पकना हृदयमेंशूल ये लक्षण होंय वह निश्चय मरजाय और बवासीर वाला मलमूत्र का रोकना स्त्री से अधिक प्रसंग घोड़े की सवारी उकड बैठकर करेला बाजरा आदि गरमवस्तु का खाना इतनी वस्तुको नहीं करै— इति बवासीरकी उत्पत्तिलक्षण यत्न संपूर्ण ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

इति श्री मन्महाराजा धिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप
सिंह जी विरचिते अमृतसागरनामग्रन्थे अतीसार संग्रहणी
बवासीर की उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणो नाम
तृतीयस्तरङ्गः ॥

अथ अजीर्ण ज्वर की उत्पत्ति ॥

प्रथम मनुष्य केमन्दाग्नि १ तीक्ष्णाग्नि २ विषमाग्नि ३ समाग्नि

४ इन भेदों से चार प्रकार की जठराग्नि होती है जिस पुरुष की कफ प्रकृति होय उसके मन्दाग्नि १ और जिसकी पित्त प्रकृति होय उसके तीक्ष्णाग्नि और जिसकी बात प्रकृति होय उसके बिषमाग्नि ३ और जिसकी बात पित्त कफ तीनोंसे मिली प्रकृति होय उसके समाग्नि ४ ॥

अथ मन्दाग्नि का लक्षण ॥

मन्दाग्नि वाले को थोड़ा हितकारी भी खाया हुआ भोजन अच्छे प्रकार पचता नहीं और उसका सिर और उदर भारी रहै अंगमें हड़फूटन रहै १ ॥

अथ तीक्ष्णाग्नि का लक्षण ॥

अत्यन्त भी भोजन किया हुआ अच्छे प्रकार पचजाय यह अग्नि अच्छी होती है ॥

अथ बिषमाग्नि का लक्षण ॥

कभी अच्छे प्रकार और कभी बुरे प्रकार भोजन पचै और, कफरा। पेटमेंशूल। उदरभारी। अतीसार। पेट बोला करै यह लक्षण होंय तो बिषमाग्नि जानिये ३ ॥

अथ समाग्नि का लक्षण ॥

जिसके समाग्नि होती है उसके प्रमाण का भोजन और अजीर्ण में भी बहुत खाया भारी अन्न पचै यह समाग्नि तीनों अग्नि से श्रेष्ठ है इस अग्नि से किसी प्रकार का बिकार होता नहीं और जो भूख को किसी कारण से रोकै तो भी तत्काल रोग को नहीं उपजावै है और तीक्ष्णाग्नि भूख को रोकतेही तत्काल पित्त के रोगको उत्पन्न करै है इस हेतु से समाग्नि श्रेष्ठ है ४ ॥ और मन्दाग्नि से कफका रोग और तीक्ष्णाग्नि से पित्तका रोग औ बिषमाग्नि से बायुका रोग और समाग्नि से कोई भी रोग नहीं होता है ॥

अथ भस्मक रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

तीखी वस्तु को आदि ले जो रूखा अन्न खाय उसके कफघटै और बात पित्त बढ़ै है तब पित्त पवन से प्रेरित

होकर भस्मक अग्नि को रोग रूप उत्पन्न करै है उस समय जो खाय सो एक क्षण मात्र में भस्म होजाता है इसको भस्मक रोग कहते हैं ॥

यह तृषा। दाह। मूर्च्छा को प्रकट कर किये हुये भोजन और सब धातुओं को खाकर मनुष्यों को मार डाले है ५ ॥

अथ अजीर्ण रोग की उत्पत्ति ॥

बहुत जल पिये विषमाशन से भोजन करै मलमूत्र के वेग को रोकै दिनमें सोवै रात्रिमें जागे ऐसे पुरुष को पथ्य का भी भोजन अच्छे प्रकार पचता नहीं अथवा अष्ट प्रहर ईर्षा। भय। क्रोध। लोभ। अथवा कोई रोग दीनता अरुचि कारक भोजन की अप्राप्ति इतनी बातों से मनुष्य को अच्छे प्रकार अन्न पचता नहीं ॥

अथ अजीर्ण का सामान्य लक्षण ॥

मनमें ग्लानि। शरीरभारी। उदरमें अफरा। प्रमेह रहै। गुदा की वायु अच्छे प्रकार वहै नहीं बद्धकोष्ट होय अथवा बारम्बार पतले मलकी प्रवृत्ति होय जिसमें यह लक्षण होंय उसके अजीर्ण जानिये १ ॥

अथ अजीर्ण का भेद ॥

अजीर्ण छः प्रकार का है एक तो वह जो मीठा कच्चाही अन्नगुदा के द्वाराजाय और कफ प्रकृति लिये मन्दाग्नि होय १ उसको आम कहते हैं दूसरा जो कुछेक खटाई लिये मल जाय और पित्त प्रकृति लिये तीक्ष्णाग्नि होय उसको बिदग्ध कहते हैं २ ॥ तीसरा वह जो खाया हुआ अन्न कोखही में रहै पचै नहीं उदर में शूल और अफरा रहै और कच्चाही अन्न गुदा के द्वाराजाय और वायुकी प्रकृति कर विषमाग्नि होय उसको बिष्टब्ध कहते हैं ३ ॥ चौथा वह जो भोजन करै और अच्छे प्रकार पचै नहीं मल पतलाजाय उसको रसशेष कहते हैं ४ ॥ पांचवां वह जो भोजन एकदिन और रात्रि में पचै दूसरे दिन भूखलगै यह अच्छा निर्दोष है इसको दिन

पाक कहते हैं ५ ॥ छटा अजीर्ण जो स्वतः सिद्ध सदा रहै उसको प्रतिबासर कहते हैं ६ यह अजीर्ण बाईं करवट सोनें और गरम पानी पीने से और श्रम करने से और छड़के खाने से जाता है ६ ॥

अथ आमाजीर्ण का लक्षण ॥

शरीर भारी रहै । वमन की इच्छा रहै । जैसा भोजन करै वैसाही डकार है । गरमी के नाना प्रकार के रोग होंय धुएं सहित खट्टी डकार आवै पसीना होय १ ॥

अथ विष्टब्धअजीर्ण का लक्षण ॥

पेटमेंशूल । अफरा और बायुकी नानाप्रकार की पीड़ा होय मल और अधोवायु रुकजाय शरीर जकड़ा बन्द होय २

अथ रसशेष अजीर्ण का लक्षण ॥

अन्नमें अरुचि । हृदय दूखे । शरीर भारी रहै ॥

अथ अजीर्ण का उपद्रव ॥

मूर्छा । प्रलाप । वमन । अङ्गमें पीड़ा । भ्रम । यह उपद्रव होंयतौ वह मर जाय ४ मूर्ख मनुष्य अजीर्ण में पशु की भांतिभोजन करै तौ उसकी स्वल्प आम दोषों से बन्द होकर जब अग्निके मार्गको नहीं रोकतीहै तब अजीर्ण में भी भूख लगै है उस कच्ची भूखमें जो पुरुष खाय वह अनेक रोग युक्त होकर मर भी जाता है ॥

अथ विशूचिका का लक्षण ॥

जिस पुरुष के मन्दाग्निमें प्रथम आमाजीर्ण हुआ और पीछे वह पशुकी भांत अधिक गरिष्टवस्तु खायतो उसके विशूचिका । मूर्छा । अतीसार । वमन । भ्रम । पीड़ा । हड़फूटन । जम्हा । दाह । और शरीरका वर्णऔरका और होजाय । कम्प । हृदय और मस्तकमें पीड़ा शरीरमें सुईके चभके जिस में ये लक्षण होंय उसके विशूचिका कहिये लौकिकमें इसको बासी कहै हैं इसके उपद्रव से नींद आवै नहीं सर्वत्र अप्रीति । शरीर कम्प । मूत्र कच्छी होय संज्ञा जाती रहै यह उपद्रव जिस में होंय वह मर जाय १ ॥

अथ आलसका लक्षण ॥

विष्टब्ध वायुके अजीर्ण से पेट में अफरा होय । आंतचलै पवन फिरने से रुकरुकर कोखमें फिरै मलमूत्र और गुदा की पवन भीरुक जाय तृषा अधिक होय डकार बहुत आवैं जिस पुरुष में ये लक्षण होंय उसके आलस जानिये २ ॥

अथ विलम्बिका का लक्षण ॥

भोजन किया हुआ पचै नहीं ऊपर नीचे जाय नहीं दांत । ओष्ट । नख । कालेहोंय । संज्ञाजाती रहै । वमन होय । नेत्र बैठ जांय । स्वर घोंघों बोले । शरीर शिथिल होजाय जिसमें ये लक्षण होंय वह मरजाय ॥

अथ अजीर्ण जाता रहा हो उसका लक्षण ॥

डकार शुद्ध आवै शरीर में उत्साह होय मलमूत्र और पवन की अच्छे प्रकार प्रवृत्ति होय शरीर हलका होय भूख प्यास अच्छीतरह लगै तौ जानिये कि अजीर्ण दूर हुआ है ॥

अथ मन्दाग्नि को आदि ले अजीर्ण विशूचिका का यत्न ॥

हड़कीछाल । सोंठ । इन दोनों को २ टंक ले महीन पीस १० टंक गुड़के साथ जलसे प्रतिदिन दे तौ आमाजीर्ण जाय क्षुधा बढ़ै १ ॥ अथवा हड़कीछाल । सेंधानौन । इनका सेवन प्रतिदिन करै तौ अजीर्ण जाय और भूख बढ़ै २॥ अथवा चित्रक । अजमोद । सेंधानौन । सोंठ । कालीमिरच । ये सब बराबर ले महीन पीस २ टंक गौकी छाछ के साथ १५ दिनले तौ क्षुधा बढ़ै मन्दाग्नि पांडुरोग और बवासीर जाय ३ ॥ अथवा आमाजीर्ण होय तौ बच । और लवण । की वमन से जाय । विदग्धा जीर्ण होय तौ लंघन से जाय । विष्टब्धाजीर्ण होय तौ सेक से जाय रस शेष होय तौ सोने से जाय ४ ॥ अथवा सोंठ । कालीमिरच । पीपल । अजमोद । सेंधानौन । दोनोंजीरे । भुनी हींग । इन सबको बराबर ले चूर्णकर १ या २ टंक खिचड़ी में घृत से मिलाय प्रथम ग्रास के साथ प्रतिदिन खाय तौ अजीर्ण कभी न होय यह हिंग्वाष्टक चूर्ण है ५ ॥ अथवा नवा-

खार। सज्जी। चित्रक। पाचोंनौन। इलायची। पत्रज। भारंगी भुनीहींग। पुष्करमूल। कचूर। निसोत। मोथा। इन्द्रजव। डांसरा। अमलवेत। जीरा। आमला। हड़कीछाल। अजवाइन। पीपल। तिलोंकाखार। सहजनेकाखार। छीलेकाखार। सार। ये सब औषधि बराबर ले महीन पीस कपरछानकर बिजौरे केरसकी ८ पुट देकै सिद्धकर प्रतिदिन २ टंक जलके साथ ले तौ बहुत भूखलगै और अजीर्ण। गोला उदर व्याधि। अण्डवृद्धि। वात रक्त। इन सब रोगों को यह अग्नि मुख चूर्ण दूर करै है ६॥ अथवा थूहर। आक। चित्रक। अरण्डकाखार। सांटो। तिल। आंधीझाड़ा। छिलाकेला। डासरा इन सबका पृथक् २ खार निकाल महीन पीस अदरक के रसको ५ पुट देकै इस वैश्वानर चूर्ण को सिद्ध करै पीछे १ टंक शीतल जलसे प्रात समय ले तौ अजीर्ण कभी न रहै भूख बहुत बढ़ै और पृथक२ अनोपान से अनेक रोगों को दूर करै ७॥ अथवा साम्हरनौन ४ पैसे भर कालानौन २ पैसे भर वायबिड़ंग ५ टंक सेंधानौन ५ टंक धनियां ५ टंक पीपल ५ टंक पीपलामूल ५ टंक पत्रज ५ टंक कालाजीरा ५ टंक नागकेसर ५ टंक चव्य ५ टंक अमलवेत ५ टंक कालीमिरच ५ टंक जीरा २ टंक सोंठ २ टंक अनारदाना १० टंक तज १ टंक इलायची १ टंक इन सबको महीन चूर्णकर ४ मासे गौके मट्ठे से अथवा कांजी से लेतौ गोला। फिया। उदररोग। बवासीर। संग्रहणी। बद्धकोष्ट। शूल। सूजन। खास। काम आम का विकार। पांडुरोग। मन्दाग्नि। सब प्रकार के अजीर्ण इनसबको यह लवण भाष्कर चूर्ण दूर करै है ८॥ अथवा सेंधानौन १ टंक पीपलामूल २ टंक चव्य ३ टंक चित्रक ४ टंक सोंठ ५ टंक हड़की छाल ६ टंक इन की बराबर मिश्री ले पीछे इस तोलसे यह चूर्णकर २ टंक प्रतिदिन ले तौ अजीर्ण दूर होय क्षुधा बहुत लगै ९ यह बड़वानल चूर्ण है॥ अथवा शोधीगन्धक २। टकै पारा १। टकै सार ५ टंक तामेश्वर ५ टंक

पहलेपारे और गन्धककी कजलीकरै फिर इन दोनोंको उस कजली में मिलावै तदनन्तर इन चारों कोलोहेके पात्रमें अग्नि परचढ़ाकर पिघलावै फिर पिघलानेके पीछे चतुराईसे अरंड के पत्तोंपर ढालै फिर उसको महीन पीस कै खरल में डाल १०० टके भर जंभीरी नीबूकेरसमें सानै फिर उसमें बिजोरे कारस १०० टके भर सुखावै फिर इसमें पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठ। इनका काढ़ा करै उस काढ़े के ५० पुट दे फिर जब यह सब सूख जाय तब इन सब को बराबर भुना हुआ सुहागा डाले और सुहागे से आधा कालानौन मिलावै और सब की बराबर कालीमिरच डाले फिर इसमें चनेके खारकी ७ पुट दे फिर तैयारकर इस क्रव्याद रस को अच्छे प्रकार सुन्दर पात्र में रख छोड़ै फिर इस रस मेंसे २ मासे ले और ऊपरसे सेंधानौन मिलाकै गौकामट्ठा पिवै तौ अजीर्ण मात्र तत्काल दूर होय और अति गरिष्ट भोजन किया हुआ भी तत्काल पच जाय और शूल गोला अफरा फिया उदर रोग आदिको भी यह रस दूर करै है १० इति क्रव्यादि रस॥

अथवा जवाखार। सज्जी। सुहागा। पारा। ओधीगन्धक। पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठ। इन सब को बराबर ले और सबकी बराबर भुनीभंग। और भंगसे आधी संहजने की जड़ ले फिर इन को भंगके रस में १ दिन खरल करै फिर संहजने के रस में एक दिन खरल करै फिर चित्रक के रस में एक दिन खरलकर धूप में सुखावै फिर इसको सकोरे में रक्ख कपड़ौटी कर फूंकदे फिर निकाल कर ७ दिन अदरक के रस में खरल कर १ या २ रत्ती के प्रमाण सहतसे ले और ऊपर से गुड़ का काथले तौ तत्काल सब अजीर्ण और अतीसार संग्रहणी कफरोग। वमन। अरुचि इन सबको दूर करै और क्षुधावढ़ावै यह ज्वालानल रस है और भावप्रकाश में लिखा है ११॥ अथवा ओवीगन्धक।

कालीमिरच। चूक। कालानौन। इनको बराबर ले महीन पीस २ टंक पानीके साथले तौ बद्धकोष्ट दूर होय १२ अथवा पारा ५ टंक। शोधीगन्धक ५ टंक शोधासिंगी मुहरा ५ टं० कालीमिरच १० टंक जायफल २ टंक। प्रथम पारे और गन्धककी कजली करै फिर उस कजलीमें उन सबको मिला कै डासरे के रसमें ५ दिन खरल करै फिर १ रत्ती प्रमाण ७ दिन खाय तौ भूख बढ़ै और अजीर्ण तत्काल मिटै यह रामबाण रस है १३ अथवा शोधापारा। शोधी गन्धक। अजमोद। त्रिफला जवाखार। चित्रक। सेंधानौन। जीरा। कालानौन। वायबिड़ंग। साम्हरनौन। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर बकायन के फल। प्रथम पारे और गन्धक की कजली करै फिर कजली में ये मिलावैं फिर जंभीरी के रस में ७ दिन खरल करकै एक रत्ती प्रमाण गोली बनाकै प्रति दिन एक गोली खाय तौ भूख बहुत लगै इस के ऊपर हड़की छाल। सोंठ। गुड़। इनका काढ़ा ले तौ सर्व रोगमात्र दूर होंय यह अग्निकुण्डावली गोली है १५ अथवा सोंठ १ भाग काली मिरच २ भाग पीपल ३ भाग सेंधानौन ४ भाग शोधी गन्धक ५ भाग इन सबको महीन पीस। नीबू के रस में १० दिन खरल करै फिर १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे एक गोली प्रतिदिन खाय तौ क्षुधा बढ़े यह क्षुद्बोधरस है १६ अथवा बिड़नौन। कालानौन। अजवाइन। दोनोंजीरे। हड़कीछाल। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। चित्रक। अमलवेंद। अजमोद। धनियां। डांसरा। इन को बराबर ले महीन चूर्णकर २ टंक प्रतिदिन लेतौ पत्थर भी पचजाय तौ भोजन क्या वस्तु है १७ अथवा शोधीगन्धक। कलीमिरच। पीपल। सोंठ। सेंधानौन। जवाखार। लवंग। इन सबको बराबर ले महीन पीस नीबू के रस में १० दिन खरलकरै फिर १ रत्तीप्रमाण गोलीबांधे प्रतिदिन एक गोली खाय तौ क्षुधा अधिक होय १८॥ अथवा

हड़कीछाल ६ भाग। पीपल ४ भाग। चित्रक २ भाग। सेंधा नौन २ भाग। इनका महीन चूर्णकर २ टंक जलके साथ खाय तौ अजीर्ण जाय और क्षुधा लागै १९ अथवा भुनासुहागा २ टंक। पीपल २ टंक। शोधासिंगी मुहरा २ टंक हींग २ टं० कालीमिरच २ टंक इन सब को महीन पीस नीबू के रस से १० दिन खरल करै फिर मटर के प्रमाण गोली बांधकर १ तथा २ गोली जलके साथ खाय तौ अजीर्ण और विषूचिका दूर होंय यह अजीर्ण कंटक रस है २० अथवा शोधा सिंगीमुहरा २ टंक। भुनासुहागा २ टंक कालीमिरच २ टंक सेंधानौन २ टंक। इनसबको महीनपीस फिर इस में अदरक का पावसेर रसडालके सुखावै और दहीको बांध उसका जल १ सेरले इसमेंडाल सुखा ले और नीबू काभी १ सेर रस उसमें सुखावै फिर इसकी गोली २ रत्ती के प्रमाण बांधे एक गोलीप्रतिदिन जलसे ले तौ अजीर्ण अफरा उदर रोग। गोला। क्रिया शूल ये सब जांय और क्षुधा बढ़ै यह क्रव्यादिरस है २१॥ अथवा दालचीनी १० टं० इलायची १० टंक। लौंग १५ टं० भुनासुहागा १० टं० चित्रक१०टं० कालीमिरच ५ टंक। सेंधानौन ३ पैसेभर इनको महीन पीस गरम जलसे १ टंकके प्रमाण ले तौ अजीर्ण तत्काल जाय यह भी क्रव्यादिचूर्ण है २२ यह सर्व यत्न वैद्यरहस्य से लिखे हैं॥ अथवा सोंठ। कालीमिरच। पीपल। त्रिफला। पांचौनौन। भुनासुहागा। जवाखार। सज्जी। पारा। शोधीगन्धक। शोधा सिंगीमुहरा। इन सबको बराबर ले पारे और गन्धककी कज्जली कर उस कज्जली में इन सबको मिलाय अदरक के रसकी ७ पुट देकै १ रत्ती प्रमाणकी गोली बांधे १ या २ गोली लवंगके क्वाथके साथ ले तौ अजीर्णतत्काल जाय और क्षुधा बढ़ै यह क्षुधासागर रस है २३॥ अथवा १०० बड़ीहड़ ले कै गौके मट्ठे में औटावै फिर उनकी गुठली निकाल उन हड़ोंमें सोंठ। कालीमिरच। पीपल। चव्य।

चित्रक। दालचीनी। पांचौनौन। भुनोहींग। जवाखार। सज्जी दोनोंजीरे। अजमोद। निसोथ। इन सबको बराबर ले महीन पीस नीबूके रसकी १० पुटदे। और इनके समान चूक मिलाके यह सब भरै पीछे उनके धूपमें सुखाय १ हड़ प्रति दिन खाय तो अजीर्ण मन्दाग्नि। उदररोग। गोला। शूल। संग्रहणी। बद्धकोष्ट। अफरा। आमवात। इनसबको यह दूरकर क्षुधा बहुत बढ़ावै है यह अमृत हरीतकी है २४ अथवा काली मिरच ७ टं० अजवाइन २। टं० चित्रक २। टं पीपल ७ टंक काला नौन २ टंक साम्हरनौन २ टं० पारा १ टंक सेंधा नोन २ टं० शोधीगन्ध १। टं० पीपलामूल २। टं० सोंठ ५ पैसेभर हड़कीछाल ५ पैसेभर बहेड़े कीछाल ५ टंक जीरा १। टं० चव्य ५ टंक इनसब से आधी लवंग ले पहिले पारे और गन्धक को कजली करै फिर इन औषधियों को महीन पीस कजलीमें मिलाय अदरकके रसकी १० पुटदे और सबकी बराबर चूक मिलाय २ मासे प्रमाण की गोली बांधे १ गोली जलसे खाय तौ अजीर्ण तत्काल जाय और इसका सेवन सदैव करै तौ क्षुधा बढ़ै और सब रोग नाश दूर होंय और शरीर पुष्ट करै यह लवङ्गामृत गुटिका है २५॥ ये सब बैद्यरहस्य में लिखे हैं अथवा दलचीनी ५ टंक लवंग १० टंक दोनोंजीरे १० टंक सेंधानौन २० टंक सोंठ १० टंक कालीमिरच ५ टंक अजमोद ५ टंक हड़कीछाल ५ टंक पत्रज ५ टंक डांसरा १० टंक कालानौन १० टं० निसोथ १५ टंक सोनामक्खी पावभर। अनारदाना आधसेर इन सबको महीन पीस नीबूके रसको १० पुट दे फिर इन सबके बराबर चूकमिलाय सुखाय अच्छे प्रकार अमृतबान में धररक्खे पीछे १ टंक जलसे ले तौ अजीर्ण। बद्धकोष्ट। मन्दाग्नि। उदररोग। गोला। फिया। आदि सर्व्वरोगों कोदूर करै है इसचूर्ण का नाम राजबल्लभ है २६॥ अथवा हड़कीछाल। पीपल। कालानौन इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक गरमजलके साथ ले तौ

अफरा आदि सर्व्व अजीर्ण जांय २७ अथवा मुनक्का। दाख हडकीछाल। मिश्री इन तीनो को बराबर ले सहत मिलाकै २ टंक की गोली करै पीछे एक गोली जलसे ले तौ अजीर्ण जाय यह वृन्दनामग्रन्थ में लिखा है २८॥ अथवा जीरा। काला नोन। सोंठ। पीपल। सेंधानौन । अजमोद । भुनीहींग। हड़कीछाल इनसबको धेले २ भर और निसोथ २ टके भर लेकै महीन चूर्णकर २ टंक गरम जलसे ले तौ तत्काल अजीर्ण जाय और भूख लगै यह जीरकादि चूर्ण है और योग तरंगिणी में लिखा है २९ ॥ अथवा अजमोद। हड़ कीछाल। चित्रक। लवंग। दालचीनी। सेंधानौन इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक पानी के साथ ले तौ अजीर्ण जाय और क्षुधा बढ़ै यह अजमोदादिक चूर्ण सर्व्व संग्रह में लिखा है ३०॥ अथवा शोधीगन्धक १। टं० चित्रक २ टं० कालीमिरच २ टं० पीपल ५ टं० जवाखार २ टं० सेंधानौन १ टं० कालानौन १ टं० साम्हरनौन १ टं० इन सबको महीन पीस नीबू के रसमें ७ दिन खरल करै फिर १ टंकके प्रमाण गोली बांधकर एक गोली जलसे लेतौ अजीर्ण। शूल। आमकादोष । गोला। अफरा। आदि सब तत्काल दूर होंय यह गन्धक वटी सर्व्व संग्रह में लिखी है ३१—

इति मन्दाग्नि और अजीर्ण का यत्न संपूर्ण ॥

अथ विशूचिका का यत्न ॥

एक लहसन की पोटी की गुली। जीरा। शोधीगन्धक। सेंधानौन। सोंठ। कालीमिरच । पीपल । भुनीहींग इन सबको बराबर ले खरल में महीन पीस नीबू के रसको ५० पुट दे फिर इसकी गोली छोटे बेर के प्रमाण करै एक गोली जलसे दे तौ विशूचिका और अजीर्ण मिटै क्षुधा बढ़ै ३२ यह जीरकादिक है॥ अथवा वायविडंग। सोंठ। पीपल। हड़कीछाल। अमला। बहेड़ा। बच। गिलोय। सोधाभिलावा। सोधासिंगी मुहरा इनसबको बराबर लेमहीन पीस गोमूत्र

मैं १ दिन खरल करके एक रत्ती प्रमाण गोली बांधे १ गोली अदरक के रसमें दे तौ अजीर्ण जाय और दो गोली दे तौ विशूचिका जाय ३ तीन गोली दे तौ सर्प का काटा अच्छा होय और चारगोली दे तौ सन्निपातजाय यह संजीविनी गुटीका है ३३ अथवा भुना सुहागा ५ टं० पारा ५ टं० शोधीगन्धक ५ टं० शोधासिंगीसुहरा ५ टं० पीलीकौडीकीराख २ टं० सज्जी २ टं० पीपल २ टं० सोंठ २ टं० कालीमिरच २ टं० प्रथम पारे और गन्धक की कजली करै फिर इन सब औषधियों को जंभीरी नीबू के रसमें ८ दिन खरल करै १ रत्तीके प्रमाण गोलीबांधे १ गोली विशूचिका वाले को दे तौ विशूचिका तत्काल अच्छी होय यह अग्निकुमार रस है ३४॥ अथवा आकके पत्तोंका रस १ सेर धतूरेके पत्तोंकारस १ सेर थूहर का दूध १ सेर सहजने की जड़ का रस १ सेर कूट २ टके भर सेंधानौन २ टके तेल १ सेर कांजीकापानी ४ सेर इनसबको इकट्ठाकर कढ़ाई में मधुरी आंच से पकावै जब रस मात्र जल जाय और तेल रह जाय तब इस तेल को मर्द्दन करै तौ विशूचिका और पक्षाघात जाय यह वैद्यरहस्य में लिखा है ३५॥ अथवा कसागच कीजड़। आंधीझाड़कीजड़। नीबकीछाल। गिलोय। कुडाकीछाल इनसबको बराबर ले २ टंक काढ़ा ३ दिन दे तौ विशूचिका जाय ३६॥ अथवा कड़कीछाल। वच। भुनीहींग। इन्द्रजव। भांगरा। कालानौन। अतीस इनको बराबर ले महीन पीस २ टंक जलके साथ ले तौ विशूचिका जाय ३७॥ अथवा इलायची ४ मासे लवंग ४ मा० अफीम १ मा० जायफल १० मा० इनको महीन पीस ४ मासे गरमजलके साथले तौ विशूचिका तत्काल जाय ३८॥ अथवा चूक को आटाके उसका १ सेर रस निकाल उसमें सेंधानौन ५ टंक कूट १ टंक तेल पावभर इन सबको इकट्ठा कर मन्दअग्नि से पकावै जब रस जलजाय और तेलमात्र रहजाय तब उसका मर्द्दन करै तौ विशूचिका

दूर होय ३९ ॥ अथवा जवकाआटा ४ पैसेरभ जवाखार ५ टं० इन को मट्ठे में पकाकर गरम लेपकरै तौ पेटका शूल विशूचिका दूर होय ४० ॥ अथवा कड़वेतेल कागरस २ मर्द्दन करै तौ कोखका दर्द दूरहोय ॥ अथवा विशूचिका में तृषा बहुत बढ़ै तौ लवंग का काढ़ा देने से तृषा दूर होय ४१ ॥ अथवा विशूचिका बहुत बढ़ै तौ उसकी पसली दागदे तौ विशूचिका दूर होय ४२ ॥ अथवा बिजौराकीजड़। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। हल्दी। कागच केबीज इनको बराबर कांजी के पानी में महीन पीस अंजन करै तौ विशूचिका जाय ४३ ॥ यह सर्व्व संग्रह में लिखा है—इति विशूचिका का यत्न संपूर्ण ॥

अथ अलस बिलम्बिका का यत्न ॥

सावन ६ टंक नालाथोथा १० टंक इनको जलसे महीन पीस गुदामें लगावै तौ तत्कालबन्द छूटै और अलस बिलम्बिका जाय ४४ ॥ अथवा दारुहल्दी। चोख। कूट। सोंफ। हींग। सेंधानोन इनको बराबर लेकै कांजी के पानीमें महीन पीस गरम कर उदर में लेपकरै तौ अलस बिलम्बिका दूर होय ४५ ॥ अथवा जौका आटा आधपाव उस में १। टं० भर सज्जीखार पकाकर कूख में गरम२ लेपकरै तौ बिशूचिका और अलस बिलम्बिका दूर होंय ४६ ॥ इति विशूचिका और अलस बिलम्बिका का यत्न ॥

अथ कृमिरोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

प्रथम कृमि दो प्रकार के हैं एक बाहर के दूसरे भीतर के बाहर वालोंका जन्म तौ दो स्थान से है एक मल से उपजे दूसरा पसीने से जैसे जूं लीख अमजूं ॥

अथ भीतर के कृमिकी उत्पत्ति ॥

अजीर्ण में भोजन करै और प्रतिदिन मीठा खट्टा पतला खाय और भोजन करकै परिश्रम न करै दिन में। सोवै और विरुद्ध भोजन करै तौ पुरुष के पेटमें कृमि पड़जाते हैं

यह कृमि गिड़ोला आदि भेदों से २० प्रकार के हैं॥

अथ उदर में गिड़ोला आदि कृमि पड़गये होंय उसका लक्षण।

ज्वर होआवै और शरीर का रंग और का और होजाय। पेटमें शूल होय। हृदय दूखै। वमन। भ्रम। भोजनमें अरुचि। अतीसार। ये लक्षण जिसके होंय उसके जानिये कि पेटमें कृमि गिड़ोला है १॥

अथ कृमि रोग के दूरकरने का यत्न॥

खुरासानी अजवाइन २ टंक वासीपानी से ७ दिन ले तौ पेट के कृमि जांय २ अथवा १ टंक पलास पापड़ा को पानी में पीस २ टंक सहत डाल ५ दिन पिये तौ पेट के कृमि जांय ३॥ अथवा २ टंक वायविड़ंग महीन पीस सहत के साथ ७ दिन ले तौ पेटके कृमिजांय ४। अथवा वायविड़ंग। सेंधानौन। हड़की छाल। जवाखार। इन सबको बराबर ले महीन पीस २ टंक मट्ठे के साथ ७ दिन पिये तौ पेटके कृमि झड़पड़ैं ५ अथवा १० टंक नीब के पत्तों के रस से १ टंक कालानौन मिलाके ७ दिन पिये तौ पेटके कृमिजांय ६॥ अथवा परा १ टंक। घोधी गन्धक २ टंक। खुरासानी अजवाइन ३ टंक। बकायनकाफल ४ टंक। पलासपापड़ा ५ टंक इनसब को महीन पीस २ टंक। नित्य ५ टंक सहत के साथ ७ दिनखाय तौ पेटके कृमि जांय यह सर्व्व संग्रह में लिखा है। अथवा नागरमोथा। त्रिफला। देवदारु। संहजने की जड़। इनको बराबर ले जवकुटकर ५ टंक का काढ़ा ७ दिनले तौ पेटके कृमिजांय ८॥ अथवा वायविड़ंग सेंधानोंन। भुनीहींग। पीपल। कपेला। कालानौन। इन सब को बराबर ले महीन पीस २ टंक गरम पानी से ७ दिन ले तौ पेटके कृमिजांय यह वैद्यविनोद में लिखा है ९॥

अथ सिरमें जूं लीख पड़जांय उनके दूरकरने का यत्न॥

धतूरे के पत्तों के रस में। अथवा नागर बेलके पत्तों के रसमें परा मिला कर बालोंमें लेपकरै तौ जुं लीख मरजांय

अथ गुदामें चुन्ने पड़गयेहोंय उसका यत्न ॥

हींगको जलमें पीस गुदामें लेपकरै तौ चुन्ने जांय ॥ १ ॥ अथवा काहूकेफूल । बायविड़ंग । करिहारीकी जड़ । सेद्दल चन्दन । राल । खस । कूट । भिलावा । लोहबान । इन सबको बराबर मिलाकै धूनी दे तौ चुन्ने और घरके मच्छर खटमल भी जांय ॥ २ ॥ यह बैद्यरहस्य और बैद्यविनोद में लिखा है इति कृमिरोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ पाण्डु कामला हलीमकरोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

प्रथम पांडु रोग बात पित्त कफ सन्निपात मट्टीखाना इन भेदोंसे ५ प्रकार से उत्पन्न होता है ॥

अथ पांडु रोग की उत्पत्ति ॥

अधिक खेदकरने से खट्टी वा तिक्त बस्तु खाने अथवा सोने से बात पित्त कफ पुरुष के रुधिर को बिगाड़ शरीर की त्वचा को पीली करदे हैं ॥

अथ पांडुरोगके पूर्व्वरूप का लक्षण ॥

त्वचा फटने लगै अङ्ग में पीड़ा होय मट्टी खाने की इच्छा रहै नेत्रों पर कुछ सूजन होय मल मूत्र पीले होंय अन्न पचै नहीं ये लक्षण जिसमें होंय तौ बैद्य बतला दे कि तुम्हारे पांडु रोग होगा इस पाँडु रोग को लौकिक में पीरिया भी बोलते हैं

अथ बातके पांडुरोगका लक्षण ॥

जिसकी त्वचा मूत्र नेत्र रूखे होंय अथवा काले और लाल होंय और शरीर में कम्प पीड़ा अफरा और भ्रमादिक होंय तौ बात का पांडु रोग जानिये ॥

अथ पित्तके पांडुरोग का लक्षण ॥

मलमूत्र नेत्र जिसके पीले होंय शरीर में तृषा दाह ज्वर होय और पतलामल शरीर की त्वचा पीली होय तौ पित्त का पांडुरोग जानिये ॥

अथ कफके पांडुरोगका लक्षण ॥

मुखसे कफ निकलै शरीर में सूजन होय तन्द्रा आलस्य और शरीर भारी होय त्वचा मूत्र नेत्र सुपेद होंय तौ कफका पांडु रोग जानिये ३ ॥

अथ सन्निपातके पांडुरोगका लक्षण ॥

कषैलीमट्टी खानेसे बातका कोप होता है और मीठीमट्टी खानेसे कफका कोप होता है फिर वही मट्टी सात धातुओं को और खाये हुए भोजन को रूखा कर डालै है फिर वही मट्टी पेटमें बिगड़कर पकी हुई नसों को फुला दे है अथवा रसको बहनेसे रोक देती है तब सब इन्द्रियोंका बल जाता रहै है और शरीर का वीर्य्य और पराक्रम भी जाता रहता है फिर वही मट्टी शरीर की त्वचा को पीली करकै बल बरण अग्नि इनका नाश करै है तब उसको तन्द्रा आलस्य खासकास शूल बवासीर। अरुचि। और नेत्रपाव। उदर। इन्द्री इतने अङ्गोंपर सूजन होय पेट में कृमि अतीसार मलकफ रुधिर आदिसे मिले होंय ये सब लक्षण होंय तौ मट्टी खानेका पांडुरोग जानिये ॥

अथ पांडुरोग का असाध्य लक्षण ॥

शरीरका रुधिर जाता रहै। शरीर सुपेद होजाय। दांत नख नेत्र पीले होजांय और सबपदार्थ जिसको पीलेही पीले दीखे और सब शरीर में सूजन और अतीसार और ज्वर भी होय ऐसा पांडुरोग होय तौ वह रोगी मरजाय १ ॥

अथ कामलारोगका लक्षण ॥

जो पांडुरोगी गरम वस्तु बहुत खाता है उसका पित्त रुधिर औ मांसको दग्ध करै है और नेत्र। त्वचा। नख। मुख आदि अंग हल्दी के सदृश पीले होजांय हैं और मलमूत्र रुधिरसा उतरै इन्द्रियों का बलजाता रहै है दाह होय अन्नपचै नहीं दुर्ब्बलता और अरुचि होय ये लक्षण होंय तौ कामला रोगजानिये ॥

अथ हलीमकरोगकालक्षण ॥

जिस पांडुरोगी के बात। पित्त। बढ़ै और त्वचा। हरी पीली। काली होजाय और बल। उत्साह जाता रहै और तन्द्रा। मन्दाग्नि। सूक्ष्मज्वर। दाह। तृषा। अरुचि। भ्रम ये सब होंय स्त्री का संग प्यारा न लगै अंगमें पीड़ा होय तौ हलीमकरोग जानिये॥

अथ पांडुरोग का यत्न ॥

सारकोगोमूत्रमें ७ दिन पकावै फिर महीन पीस जलसे १ टंक गुड़केसाथ १५ दिनतक ले तौ पांडुरोग जाय १॥ अथवा मांडूर को गोमूत्रमें पकाय १ टंक गुड़के साथ १५ दिन ले तौपांडुरोग जाय २ अथवा सांठीकीजड़। निसोत। सोंठ मिरच। पीपल। बायबिड़ंग। दारुहल्दी। चित्रक। कूट हल्दी। त्रिफला। दात्यूणी। चव्य। इन्द्रजव। कुटकी। पीपलामूल। नागरमोथा। काकड़ासिंगी। खुरासानी अजवाइन। कायफल। इनसबको टके २ भर ले महीनपीसे और इनसबका दूना मांडूर मिलावै फिर इन सबको अष्टगुणित गोमूत्रमें पका कर १ टंक प्रमाण की गोली बांधे १ गोली गौके मट्ठेकेसाथ मिलाकै १५ दिन ले तौ असाध्य भी पांडुरोग जाय और कामला। हलीमक। स्वास। कास। राजरोगज्वर। सूजन। प्लूतफिया। अफरा। बवासीर। संग्रहणी। कृमिरोग। बात रक्त। कोढ़। इनसबरोगों को यह दूर करै है यह पुनर्नवादिमांडूर रस है ३॥ अथवा हड़कीछाल ५ टं० बहेड़े की छाल ५ टंक आमला ५ टं० सोंठ ५ टं० कालीमिरच ५ टं० पीपल ५ टं० नागरमोथा ५ टंक बायबिड़ंग ५ टं० चित्रक ५ टं० साराऊआसार ८ पैसे भर इन सबको महीन पीसे फिर सार मिलाकर ८ रत्ती लेकै सहतके साथ अथवा घृतके साथ अथवा गौके मट्ठेके साथ अथवा गोमूत्रके साथ ले तौ पांडुरोग। सूजन। मन्दाग्नि। बवासीर अरुचि इनसब रोगों को दूर करै और खानेका यह प्रकार है कि प्रथम

दिन २ रत्ती खाय फिर प्रतिदिन २ रत्ती के हिसाब १८ रत्ती तक बढ़ावै यह नवायसचूर्ण है ४॥ अथवा अडूसा। गिलोय। नीबकीछाल । त्रिफला। चिरायता। कुटकी इन सबको बराबर ले जवकुट कर २ टं० का काढ़ाकर सहत मिलाय १० दिन ले तौ पांडुरोग। रक्तपित्त। कामला। हलीमक। ये सब दूर होंय ५ अथवा त्रिफला । गिलोय। दारुहल्दी। नीब इनके पृथक् २ रसों में सहत मिलाय १० दिन पिये तौ पांडुरोग। कामला। हलीमक ये सब जांय ६॥ अथवा दड़घलके रसका नेत्रोंमें अंजन करै तौ पांडुरोग। कमला। हलीमक। जांय ७॥ यह वैद्यरहस्य में लिखा है॥ अथवा चिरायता। कुटकी। देवदारु। नागरमोथा। गिलोय। पटोल । धमासा । पित्तपापड़ा । नीबकीछाल । सोंठ। कालीमिरच । पीपल। चित्रक। त्रिफला। बायबिड़ंग। इन सब को बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर इनमें सार मिलाय १ टंक सहत के साथ अथवा मट्ठे के साथ प्रतिदिन खाय तौ पांडुरोग। कामला । हलीमक। सूजन । प्रमेह। संग्रहणी। श्वास। कास। रक्तपित्त। बवासीर। आम। बात गोला। कोढ़ ये दूरहोंय यह अष्टादशांगावलेह है ८॥ और भावप्रकाश में लिखा है॥ अथवा कड़वीतूंबी की गिरी के रसकोनासलेतौ तत्काल पीलिया जाय ९ और पांडुरोग वाला जौ। गेहूं। चांवल। मूंग। अड़हड़। मसूर ये अनाज खाय ९॥

इतिश्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रतापसिंहजी
विरचिते अमृतसागर नामग्रंथे अजीर्ण मन्दाग्नि भस्मक बिशूचिका
अलसविलम्बिका कृमिरोग पाण्डुरोग की उत्पत्ति लक्षण
यत्न निरूपणं नाम चतुर्थस्तरंग:

* * *

अथ रक्त पित्त की उत्पत्ति लक्षण यत्न।

बहुत धूप में रहने और खेदकरने और बहुत चलने और

अधिक मैथुन और शोच करने और तीक्ष्ण। गरम। खारी कडबी वस्तु और नोन खटाई के खाने से पित्त दग्ध होकर शरीर के रुधिर को दग्ध करै है तब उसका रुधिर दो प्रकार से प्रवृत्त होता हैं एक ऊपर दूसरा नीचे ऊपर तौ नाक। नेत्र। कान। मुख। में और नीचे। लिंग। योनि। गुदा। में होकर प्रवृत्त होता है और अधिक तर जब रुधिर कुपित होता है तो सब बालों में प्रवृत्त होता है ॥

अथ रक्त पित्त का पूर्व्व रूप ॥

अंगो में पीड़ा और बमन होय। ठंढा अच्छा लगै और मुखसे धुआं निकलै रुधिर की बास मुख में आवै तौ जानिये कि रक्त पित्त होगा ॥

अथ कफ रक्त पित्त का लक्षण ॥

शीतल। पीला। चिकना मोर के पंख सदृश रुधिर होय तौ कफका जानिये ॥

अथ बात के रक्त पित्त का लक्षण ॥

काला। झाग समेत महीन धारलिये रूखा रुधिर होय तौ बातका जानिये ॥

अथ पित्त के रक्त पित्त का लक्षण ॥

कत्थे के काढ़े के समान काला गोमूत्र और स्याही के सदृश चिकना रुधिर होय तौ पित्तका जानिये और ये संपूर्ण लक्षण रुधिर में पाये जांय तौ सन्निपात का जानिये नाक मुख। आंख। कान में होकर रुधिर जाय तौ साध्य जानिये और गुदा। लिंग। योनि। में होकर जाय तौ याप्य जानिये और दोनों मार्गोंसे जांय तौ असाध्य जानिये ॥

अथ रक्त पित्त का उपद्रव ॥

जिसका शरीर रोगों से क्षीण और वृद्ध और दुर्बल होय और लंघन करता होय तौ असाध्य जानिये और। श्वास। कास। ज्वर। बमन मदयुक्त। पाण्डु रोगी के सदृश। दाह। मूर्छा और अधैर्य्यवान के सदृश। हृदयशूल। तृषा। और

अती सार वाले के सदृश भोजन में अरुचि होय तौ उपद्रव जानिये और रक्त पित्त वाले को आकाश लालदीखे और नेत्र लाल होंय और रुधिर की डर आवे और सर्व्वत्र रुधिरसा दीखै तौ असाध्य जानिये ॥

अथ रक्त पित्त का यत्न ॥

नकसीर वाले के मुख में रुधिर जाय तौ हड़। त्रिफला। निसोथ। किरमाला। इनका जुलाब दे तौ रक्त पित्त जाय १ और नीचे के मार्ग का रक्त पित्त बमन कराने से जाता है २॥ अथवा, खस। कमलगट्टे। अडूसा। गिलोय। मुलहटी। महुआ। नागरमोथा। रक्त चन्दन। धनियां। इनसब को बराबर ले जवकुटकर २ टंक का काढ़ा सहत डाल कर ले तौ रक्त पित्त जाय ३॥ अथवा पियंगु के फूल। लोध रसौत। चक्कीको मट्टी। अडूसा इनसब को बराबर ले ८। टंक का काढ़ा सहत मिश्री मिलाय १० दिन ले तौ रक्त पित्त जाय ४॥ अथवा दूब के रसको वा अनार के फूलों के रस को वा अमलतास के रसको अथवा हड़को शीतल जलमें पीस उसकी नास दे तौ नकसीर वहना दूर होय ५॥ अथवा दूब और आमले को पीस कर मस्तक में लेप करै तौ नकसीर तत्काल बन्द होय ६॥ अथवा पक्का गूलर वा छुआरा वा दाख सहत से खाय तौ रक्त पित्त जाय ७॥ ये संपूर्ण बैद्यबिनोद में लिखे हैं अथवा धनियां। अमला। अडूसा। दाख। पित्तपापड़ा इन सबको बराबर ले फिर ५ टंक शीतल जलमें भिगोय पानी से पीसछान कर पिये तौ रक्त पित्त। ज्वर। दाह। तृषा ये सब जांय ८॥ अथवा मुनक्कादाख चंदन। लोध के फल। प्रियंगु इन को बराबर ले महीन पीस सहत से १० दिन चाटै तो रक्त पित्त जाय ९॥ अथवा बसंत मालनीरस। बोलबद्ध। परपटीरस जो पीछे लिखे हैं उनसे भी नकसीर अच्छी होती है १०॥ अथवा प्याजके रसको नासलेय तो बवासीर अच्छी होती है ११॥ अथवा १०० बार का धोया

घी मस्तक में लेपकरै तौ नकसीर बन्दहोय १२ ॥ अथवा बड़ापक्का पेठालेके उसके बीज और छिलके दूर कर पानी में पकाय ठंढाकर गाढे वस्त्र में उसका जल छानकर उस जलको जुदे बासन में रक्खे और पेठ को कढ़ाई में घीसे भूने जलने नदे फिर उस पेठ के रस में मिश्री की चासनी करै उस में पेठे को डाले और पीपल २। टं० सोंठ २। टं० जीरा २। टं० धनियां ५ टंक पत्रज ५ टं० इलायची ५ टं० कालीमिरच ५ टं० तज ५ टं० बंसलोचन ५ टं० इन सब को महीन पीस ऽ। सहत के साथ उस चासनी में मिलावै फिर इसमें से १ टके या २ टके भर प्रति दिन खाय तौ रक्त पित्त। ज्वर। तृषा। दाह। प्रदर। क्षीणता। वमन। स्वरभंग। कास। क्षयी। इनसब रोगों को यह कूष्माण्डाव लेह दूर कर शरीर को पुष्ट करै है १३—इति कूष्माण्डाव लेह ॥

अथवा इलायची। पत्रज। बंसलोचन। तज! दाख पीपल इन सबको दो२ पैसे भर ले महीन पीस मिश्री। मुलहटी। दाख। छुआरा। इन सबको टंके २ भर ले महीन पीस उनमें मिलाय २ टंक सहत में गोली बांध एक गोली प्रतिदिन खाय तौ रक्त। पित्त। कास। स्वास। पित्तज्वर। हिचकी। मूर्च्छा। मन्दाग्नि। भ्रम। तृषा। पसलीकाशूल। अरुचि। स्वरभंग। क्षयी इनसबको यह एलादि गुटिका दूरकर देहको पुष्ट करै है १४ यह एलादि गुटका है और बैद्यरहस्य में लिखा है ॥ इति रक्त पित्त के यत्न संपूर्ण ॥

अथ राज रोग और शोष रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

राजरोग पांच प्रकार का है बातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ४ हृदय में चोटलगने का ५ औरशोषरोगछः प्रकार का है एकतौ अत्यन्त स्त्री संगसे १ दूसरा बहुतशोच से २ तीसरा गंभीर दुख और हृदय मेंबहुत चोट लगने से ३ चौथा बहुत मार्ग चलने से ४ पांचवां अत्यन्तखेद से ५ छठा वृद्धावस्थासे ६ इत्यादि कारणों से छः प्रकार का है ॥

अथ राज रोग की उत्पत्ति ॥

मलमूत्र और अधोवायु का रोकना वीर्य्य की क्षीणता बहुत साहस करना। सामर्थ से बाहर कामकरना कुसमयमें अत्यन्त भोजन करना। इत्यादि बातें रसकी बहने वाली नाड़ी को रोकके वीर्य्य को क्षीण करती हैं इस कारण से इस रोग में कफ प्रधान है और यह कफ बहुत स्त्री संग करने से त्रिदोष रूपराज रोग होकर पैदा होता है रस बहने वाली नाड़ियों को रोक के और वीर्य्य को क्षीण कर पीछे सातों धातुओं को क्षीण करता है तब यह मनुष्य प्रति दिन सूखता जाता हैं यह राज रोग की उत्पत्ति है ॥

अथ राज रोग का पूर्व्व रूप ॥

श्वास। अंगोंमें पीड़ा। खांसी में कफ थूकना। तालू का शोष। वमन। अग्निकीमन्दता। पीनस खांसी। अत्यन्त निद्रा नेत्रों में श्वेतता मांसखाने और मैथुन करनेकी इच्छा रहै ये लक्षण मनुष्यके होंय तौ जानिये कि राजरोग पैदा होने वाला हैं ॥

अथ राज रोग का लक्षण ॥

पसली और कन्धों में। संताप हाथ पैरों में जलन सब अंग में ज्वर रहै ये लक्षण होंय तौ राज रोग जानिये अथवा भोजन मात्रमें अरुचि और श्वास। कासहोंय। मुख में रुधिर आवे स्वर भंग होय ये लक्षण होंय तौ राजरोग जानिये २ ॥

अथ बात के राज रोग का लक्षण ॥

स्वर भेद और शूल होय। कन्धे और पसली में संकोच ये बातें होंय तौ वातका राजरोग जानिये ॥

अथ पित्त के राज रोग का लक्षण ॥

ज्वर दाह। अतीसार होय मुखमें रुधिर आवे। तौ पित्त काराजरोगजानिये ॥

अथ कफ के राज रोग का लक्षण ॥

माथाभारी रहै। भोजन में अरुचि। खांसी होय कंठ से बोला न जायतौ कफका राजरोग जानिये ३ ॥ ये संपूर्ण मिले हुए होंय तौ सन्निपात का राज रोग जानिये ॥

अथ हृदय में चोट लगने से उपजा जो राज रोग उसका लक्षण ॥

सिरमें पीड़ा। मुखसे रुधिर की बमन। शरीरमें रूखापन होय वह राजरोगी असाध्य जानिये १ ॥ अथवा जिसके नेत्र स्वेत होंय। अन्नमें अरुचि होय। और स्वासका रोग और प्रमेह बढ़ जाय और बहुत मूत्र करै वह राजरोग मृत्यु बस होता है ॥

अथ इस राज रोगी की अवधि ॥

अच्छा शास्त्रज्ञ यत्न कारक और संपूर्ण क्रियाकुशल चतुर तौ वैद्य मिलै और रोगी तरुण और धनवान और वैद्यका आज्ञावर्ती और जितेन्द्री होय वहभी १००० दिन तक जियें उपरान्त नहीं जिये ॥

अथ साध्य राज रोग का लक्षण ॥

जिसके ज्वर न होय और बलवान होय वैद्यकी दी हुई कड़वी कषैली औषधी खा जाय और क्षुधा उसकी तीव्र होय और शरीर पुष्ट होय ऐसे रोगी का यत्न करना चाहिये १ ॥

अथ अधिक मैथुन से उत्पन्न जो शोष रोग उसका लक्षण ॥

लिंगेन्द्री और पोतों में पीड़ा होय और मैथुन करने की सामर्थ न रहै फिर हाड़ोंका नाश होय और पीछे कहे हुए राजरोगों का भी उपद्रव होय शरीर पीला और चिन्ताग्रस्त हो जाय और अंग शिथिल होंय ये लक्षण होंय तब जानिये कि इस के मैथुन करने से शोष रोग हुआ है और शोच करने से जो शोष रोग होता है उसका भी यही लक्षण है इस में वीर्य्य का क्षय नहीं २ ॥

दोनों कटेली। बेलगिरी। अरणी। अरलू कुम्हेर। पाढ़। नागरमोथा इनसब औषधियों को एक २ टकेभर लेवै अत्यन्त महीन पीसके आमले के संयोग की मिश्री की चासनी में डालै फिर उस चासनी में ६ टकेभर सहत डालै फिर पीपल। टं० तज २ टं० पत्रज २ टं० नागकेसर २ टं० इलायची २ टं० वंसलोचन २ टं० ये सब महीनपीस डालै फिर इनको एक रस कर १ टके भर प्रति दिन खाय तौ राजरोग शोषरोग को दूर कर बल कान्ति पुष्टता और वृद्धको तरुण यह चवनप्रास अवलेह करता है ७— इति चवनप्रास अवलेह संपूर्ण॥

अथवा अडूसेका रस और कटेलीका रस १। टकेभर ले उस में सहत १। पीपल २ टं० मिलाकै प्रति दिन खाय तौ राजरोग दूर होय ८॥ अथवा रुक्म १ भाग पारा १ भा० अनवेधे मोती २ भा० शोधीगन्धक २ भा० प्रथम पारे और गन्धककी कजली करै पीछे सब औषधि मिलाय कांजीमें १ दिन खरल करै फिर इसकी गोली कर एक सरवें में धरकर कपरौटी करै उस कपरौटी किये हुए सरवे को एक नोनसे भरी हुई हंड़ियां में धर एक दिनतक अग्निदेकै पकालै जब शीतल होय तब काढ़कर १ या २ रत्तीके प्रमाण प्रातःकाल मिश्रीके साथलेतौ राजरोग जाय९ यह कुमुदेश्वर रस है॥ वैद्यविनोद में लिखा है ४॥ अथवा बड़ी पीली कौड़ी और पारा गन्धक बराबर ले उसकी कजलीकर उसको कौड़ी में भरै और उस कौड़ीके मुहको भुनेसुहागेसे बन्द करै फिर उसकौड़ीको सरवे में बन्दकर गजपुटसे फूंक दे जब शीतल होय तब काढ़े इसमेंसे १ रत्ती प्रमाण खाय तौ राजरोग। श्वास। कास। संग्रहणी। ज्वरातीसार। इनसब रोगोंको दूरकरै यह कपर्दिकेश्वर रस है और रुद्रदत्त नामग्रंथमें लिखा है १०॥ अथवा राजरोग शोषरोग। वाले को दूध मीठा अनार ये गुणकारी हैं और वृन्दमें लिखा है ११॥ अथवा शुद्धसिलाजीत के सेवनसे राजरोग जाय १२॥ यह चरकमें लिखा है॥ अथवा तालीसपत्र १०

टं० चित्रक १० टं हड़कीछाल १० टं० अनारदाना १० टं० डांसरा १०टं० अजमोद २॥ टं० गजपीपल २॥ टं० अजवाइन २॥ टं० आककीजड़ २॥टं० जीरा २॥टं० धनियां २॥ टं० जायफल २॥ टं० लवंग २॥ टं० तज २॥ टं० पत्रज २॥टं० इलायची २॥ टं० इन सबकी बराबर मिश्री मिला कर महीन पीस २॥ टं० प्रति दिन बकरी के दूध में ले तौ राजरोग। क्षयी रोग। पीनस। हिक्का। अतीसार। मूत्रकृच्छ्र। पांडुरोग। वातपित्तका रोग। प्रमेह इनसब रोगों को यह चूर्ण दूर करै है १३ यह महातालीसादि चूर्ण है और हारीतमें लिखाहै

अथवा सेंठ। कालीमिरच। पीपल औ तज। पत्रज। इलायची। लवंग। जायफल। वंशलोचन। कचूर। बावची। अनारदाना। इन सबको बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर इसमें चोखासार मिलावै फिर इन सबकी बराबर मिश्री मिलाय २॥टं० प्रति दिन बकरी के दूध के साथ खाय तौ राज रोग मन्दाग्नि बीस प्रमेह यह दूर करके शरीर को पुष्ट करैहै ४॥ इति सुंठ्यादि चूर्ण संपूर्णम् ॥ १४ ॥

अथवा लवंग। कङ्कोल। मिरच। खस। चन्दन। तगर। कमलगट्टे। कालाजीरा। इलायची। अगर। नागकेसर पीपल। सोंठ। चित्रक। नेत्रवाला। भीमसेनीकपूर। जायफल। वंसलोचन। इनसबको बराबर ले और सबसे आधी मिश्री मिला के १ टंक प्रति दिन खाय तौ राजरोग। मन्दाग्नि। स्वास। हिचकी। संग्रहणी। अतीसार। भगन्दर। प्रमेह। इन सबको दूर करै है १५ इतिलवंगादिचूर्ण अथवा मारी अभ्रक २। टंके भीमसेनीकपूर ४ मासे जाविची ४ मासे खस ४ मासे तेज पात ४ मा० लवंग ४ मासे तालीसपत्र ४मासे दालचीनी ४ मासे दालचीनी के फूल ४ मासे धवईकेफूल ४ मासे हडकीछाल ६ मासे आंवला ४ मासे बहेड़ेकीछाल ६ मासे सोंठ ६ मासे पहले पारे और गन्धक की कजली करै पीछे इन औषधियों को महीनपीस एक रस कर उसमें मिलाय पानी से चने प्रमाण

गोली बांध कर ४ गोली प्रति दिन शीतल जलसे खाय तौ राजरोग। स्वास। खांसी। शूल। प्रमेह। वमन। आमपित्त। अरुचि। संग्रहणी। वातरक्त इनसब रोगों को यह गोली दूर करके शरीरको पुष्ट करै है १६ यह शृंगाराभ्रक गुटिका है॥

अथ मधुपक्क हड़की क्रिया॥

दसमूल। पीपल। चित्रक। कौंचके बीज। बहेड़ेकी छाल। कायफल। कालीमिरच। पीपलामूल। रोहिष। दालचूनी। दाख। दोनोंजीरे। हल्दी। आमला। वायविडंग। काकड़ासिंगी। देवदारु। सांठीकीजड़। धनियां। लवंग। किरमाला कीगिरी। गोखुरू। बिधारा। कूट। इन्द्रायण ये सब औषधि दो २ टंक लेके जवकुट कर १६ सेर पक्के जलमें इन औषधियों को डाले और औषधियों के साथ चोखी मोटी ४ सेर बड़ीपक्की हड़डाल मधुरी आंचसे मटकेमें औटावै और पीछे उन हड़ों को जलसे निकाल ठंडी करै फिर चोखे सहतमें ५ दिन तक डाल रक्खे फिर उनको उस सहतसे निकाल और सहतमें ऐसी डाल कि सहत में हड़ डूबी रहै फिर हड़ों समेत सहत के बासन में तज। पत्रज। नागकेसर। इलायची। पीपल। इन सब को महीन पीस ८ टंके भर चूर्ण डालकर १ हड़ प्रतिदिन खाय तौ राजरोग। शोषरोग। कास। स्वास। हिचकी। वमन। ज्वर। मूत्रकृच्छ्र। प्रमेह। वातरक्त। बवासीर। संग्रहणी। रक्तपित्त। दाह। विसूति। व्यौचा। कोच। मृगी। पाण्डु रोग। इन रोगों को यह मधुपक्क हड़ दूर करै है १७—इति मधुपक्क हड़की विधि संपूर्ण यह धन्वन्तरी संहितामें लिखी है॥

अथवा पुरानागुड़ ऽ। और अदरक का रस १ सेर इस रस में मधुरी आंच से गुड़की पतली चासनी करै फिर तज। पत्रज। नागकेसर। इलायची। लवंग। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। इन सबको २ टंके भर ले के महीन पीस मिलाकर १ टंकेभर प्रति दिन खाय तौ राजरोग। मन्दाग्नि। स्वास। कास। अरुचि इन रोगों को दूर करै है १८ इति अदरक का अवलेह॥

अथवा बकरीके दूधमें बराबर का पानी डालकर ३पीप डालै और एक २ प्रतिदिन ३० दिनतक बढ़ावै फिर एकही एक घटावै जब पानी जलजाय और दूध रह जाय तब पहि तौ पीपल खाय पीछै उस दूध को पिये तौ राजरोग। खास कास। ये सब रोग जाते रहैं यह काशीनाथ पद्धति में लिखा है १८ अथवा ४ सेर पक्का मुनक्का दाख १ मन पानीमें औटावै जब चतुर्थांश शेष रहजाय तब उसमें पुराना गुड़। बायबिड़ंग प्रियंगुकेफूल । तज। इलायची। पत्रज नागकेसर इनसबको २टके भर डालकै मदिरा केयंत्र से इनका अर्क काढ़ १। टके भर प्रतिदिन ले तौ राजरोग। खास। कास। दूर होंय १९ यह दाख का आसव है और योगतरंगिणीमें लिखा है १॥ अथवा मृगांक १ रूपरस २ तामेश्वर ३ पारेकी भस्म ४ अभ्रक ५ इन सबको एक २ भाग ले फिर इकट्ठा मिलाय इनमें पृथक २ आगेलिखी हुई औषधियों के एक २ पुट दे प्रथम बायबिड़ंग को १ नागर मोथा १ कायफलको १ नर्गुंडको १ दसमूलको १ चित्रक को १ हल्दीको १ सोंठ को १ कालीमिरच को १ पीपलको १ देकर आधी २ रत्तीकी गोली बांधे एक गोली प्रतिदिन खाय तौ राजरोग। खांसी। फिया। गोला। इत्यादिजाय यह पंचामृत रस है और सार संग्रहमें लिखा है॥ अथवा बड़ेशंख की राख को गोमूत्र में सानकर बड़ी दो प्याली बनाकर उसमें पारा ५ टंक गन्धक ५ टंक इन दोनों की कजली करके भरै फिर कपरौटी कर गजपुट में फूंक दे फिर इस प्याली समेत को पीस १ रत्ती सहत के साथ खाय तौ राजरोग जाय २१॥ यह रसार्णव में लिखा है। अथवा गीले थूहर की लकड़ी ऽ। सेंधानौन १। कालानौन १। साम्हरनौन १। बैंगन १ सेर चित्रक २। इनसबको इकट्ठा कर महीन पीस बड़े सरावेमें रखकै गज पुट से फूंक दे फिर इसमें से १ मासे भोजन के पीछे जलसे ले तौ तत्काल भोजन पचै और राजरोग। खास। बवासीर। जाय और आम तत्काल भस्महोय शूलजाय यह

क्षुद्रादिक खार है २२ यह रसराज लक्ष्मी ग्रंथ में लिखा है ॥

अथवा शंखकी राख को नींबूके रस में बुझाकै उस राखमें से १ टके भर ले उसमें चव्य १० टंक जवाखार १० टंक पांचोनौन १० टंक भुनी हींग १० टंक सोंठ १० टंक कालीमिरच १० टं० पीपल १० टं० पारा १० टं० सोधीगंधक १० टंक सोधासिंगीमुहरा १० टं० पहिलै पारे और गन्धककी कजली करै फिर कजली में ये सब मिलावै फिर नीबू के रस में चने के प्रमाण गोली बांधे १ गोली प्रतिदिन लवंग के साथ खाय तौ राज रोग संग्रहणी शूल गोला ये सब दूर होंय यह शंखवटी योग तरंगिणी में लिखी है ॥

अथ अगस्त हड़ की विधि ॥

दसमूल । कौंचकेबीज । शंखाहूली । कचूर । खरैटी । गजपीपल । लटजीरा । पीपलामूल । चित्रक । भारंगी । पुष्करमूल ये सब औषधि दो २ टके भर और बड़ीहड़ १०० लेकै इन औषधियों को जवकुट कर २० सेर पानी में औषधि और हड़ें मिला कै औटावै जब पानी चतुर्थांश रहे तब उसे उतार उसमें से हड़ निकाल कर उनकी गुठली निकाल उन हड़ोंको पीसै और १०० टके भर गुड़की चासनी करै उसी चासनी में हड़का चूर्ण मिलाकै ८ टके भर गौका घृत मिलावै फिर १ टं० नित्य खाय तौ राजरोग । शोषरोग । खांसी । स्वास । हिचकी । विषमज्वर । संग्रहणी । बवासीर । अरुचि । पीनस इतने रोगों को यह अगस्त हरीतकी दूर करकै शरीर को पुष्ट कर क्षुधाको बढ़ाय कोष्ट को शुद्ध करै है यह अगस्त हड़की विधि वृन्द में लिखी है—इति अगस्त हड़विधि २४ ॥

अथवा १०० टके भर अड़ूसे का काढ़ाकर उसका चतुर्थांश जुदा छाने फिर उस काढ़े में १०० टके भर गुड़की चासनी बनावै और उसमें ८ टके भर तिलका तेल और ८ टके भर गौका घृत मिलावै फिर उस चासनी में १०० बड़ी हड़के

बक्कलका महीन चूर्ण मिलावै फिर पीपल २॥ टं० पीपलामू २॥ टं० कालीमिरच २॥ टं० पुष्करमूल २॥ टं० चव्य २ टं० चित्रक २॥ टं० सोंठ २॥ टं० इनसबको महीन पीस इस चासनी में डाले फिर इन सबको इकट्ठा कर १। प्रमाण नित्य खाय तौ रारोग निश्चय दूर होय और बवासीर। खांसी। स्वरभेद। सूजन आम्लपित्त। पांडुरोग। उदररोग। मन्दाग्नि। नपुंसकता ये सब इस औषधि से जाते हैं यह औषधि चरकमें लिखी है २५—इति राजरोग शोषरोग क्षयीरोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण॥

अथ कास रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

मुखमें धुआं और धूलजाने से और रूखा अन्न खाने से और भोजन के कुपथ्य से मलमूत्र और छींकके रोकने से चिकनाई और भूनी आदि के ऊपर जलपीनेसे खांसी उत्पन्न होती है वह खांसी हृदय की प्राण पवन से मिलै है और प्राण पवन कंठ के उदान पवन से मिल उन दोनों पवनों को बिगाड़ै है तब बिगड़ी पवन उसके शब्दको कांसीके फट बासनके समान करके मुखमें से वेग विलम्ब से निकालै है तब मनुष्य उसको खांसी कहते हैं वह खांसीका रोग ५ प्रकार का होता है बातका १ पित्तका २ कफ का ३ चोट लगनें का ४ क्षयीरोग का ५ और अनुक्रम से एक २ की अपेक्षा दूसरा बलवान जानिये॥

अथ खांसी का पूर्व्व रूप॥

कंठमें कांटे से पड़ कर खुजली चलै भोजन किया न जाय तब जानना कि खांसी होगी॥

अथ वातकी खांसी का लक्षण॥

हृदय। कनपटी। मांथा। उदर। पसली। इन सब में शूल होय मुख उतर जाय और बल पराक्रम स्वर ये क्षीण हो जांय और ग्रास खाते में कंठ दूखे। रूखा खांसे। टूटास्वर बोले ये लक्षण वातकी खांसीके हैं॥

अथ पित्तकी खांसी के लक्षण॥

हृदय में दाह। और ज्वर होय। मुख सूखे और कड़ुआ रहै तृषायुक्त होय और कड़ुआ २ वमन करै और शरीर पीला। होजाय ये लक्षण होंय तौ पित्तकी खांसी जानिये॥

अथ कफ की खांसी के लक्षण॥

कफसे मुख लिपा रहै। मस्तक दूखे। भोजन में अरुचि। शरीर भारी। कंठमें खुजली चलै। कफकी गांठें थूकै। ये लक्षण होंय तौ कफकी खांसी जानिये॥

अथ क्षतज खांसी की उत्पत्ति लक्षण॥

बहुत स्त्री संग करने से। बोझ उठाने से। मार्ग चलने से युद्ध करनेसे। घोड़े हाथीके दौड़ानेसे। रूखा भोजन करने से। बात हृदय में जाकर खांसी को प्रगट करै है॥ प्रथम रूखा खांसे फिर रुधिर थूकै। कंठ बहुत दूखे। शूल होय सन्धि २ में पीड़ा होय। ज्वर। श्वास। तृषा। होय। स्वर घों घों बोलै और कबूतर की भांति बोला करै ये लक्षण होंय तौ क्षतजकी खांसी जानिये॥

अथ क्षयीरोग से उपजी जो खांसी उसका लक्षण॥

कुपथ्य और विषमाशन आदिकरै और बहुत मैथुन कर मल मूत्र को रोकै। बहुत सोवै उस मनुष्य के मन्दाग्नि होकर बात पित्त कफ तीनों के कोपसे क्षयी रोग की खांसी उत्पन्न होती है वह खांसी शरीर को क्षीण करकै ज्वर। दाह मोहको करै है तब यहप्राण का नाश करै है। रूखा खांसे दुर्ब्बल होता जाय। शरीर का रुधिर और मांस सूख जाय राद थूकै तब असाध्य जानिये॥

अथ खांसी का असाध्य लक्षण॥

बात पित्त कफ इन तीनों की खांसीसाध्य और क्षतज रोग और क्षयी रोग की खांसी असाध्य और बूढ़े मनुष्य की भी खांसी असाध्य जानिये॥

अथ खांसी रोग का यत्न ॥

लवंग ५ टं० कालीमिरच ५ टं० बहेड़े काछिलका ५ टं० खैरसार ५ टं० इन सब को महीन पीस बबूलके छिलके के काढ़े में २ रत्ती प्रमाण गोली बांधे १ या २ या ३ गोली ७ दिन तक खाय तौ खांसी जाय १ यहलवंगादि की गोली लोलिम्बराज में लिखी है। अथवा पारा १ टं० शोधीगन्धक २टं० पीपल ३टं० हड़कीछाल ४ टं० बहेड़े का छिलका ४ टं० काकड़ासिंगी ५ टं० इनसब को महीन पीस बबूलकीछाल के काढ़े की २ पुट देकै १। टके भरकी गोलीबांधे १ गोली नित्यखाकर ऊपरसे सोंठ का काढ़ा पिये तौ खांसी अवश्य जाय २ यह रस समूहग्रन्थ और योग चिन्तामणि ग्रन्थ में लिखा है ॥ अथवा कालीमिरच २॥ टं० पीपल २॥ अनार काछिलका १० टं० गुड़ २॥ टके भर जवाखार १ टं० इन सब को महीन पीस चने के प्रमाण गोली बांधे २ तथा ४ गोली नित्यखाय तो खांसीजाय ३ अथवा पीपल पुष्करमूल। हड़कीछाल। सोंठ। कचूर। नागरमोथा इनसब को महीन पीस गुड़में ३ रत्ती प्रमाण की गोली बांधे १ वा २ गोली खाय तौ खांसी जाय ४ ॥ अथवा सोंठके काढ़े से खांसी जाय ५ अथवा अदरक के रसमें सहत मिलाकै खाय तौ खांसी जाय ६ ॥ अथवा कटेली गिलोय। सोंठ। पुष्करमूल। इनसब को बराबर लेके इस में अडूसा मिलाय काढ़ा कर पिये तौ खांसी जाय ॥ यह क्षुद्रादिककाढ़ा है ७ ॥ अथवा छोटी कटेली का भरता कर उसके रसमें पीपल का चूर्ण मिलाय प्रतिदिन पिये तौ खांसी जाय ८ ॥ अथवा हड़कीछाल २॥ टं० सोंठ २॥ टं० कालीमिरच २॥ टंक पीपल २॥ टं० अमलबेत २॥ टं० चव्य २॥ टं० चित्रक २॥ टं० जीरा २॥ टं० डांसरा २॥ टं० तज ४ मा० पत्रज ४ मा० नागकेसर ४ मा० इनको महीनपीस ऽ। गुड़में २॥ टं० के प्रमाणगोलीबांधे १ गोली प्रभात खायतौ खांसी। खास जाय ९ ॥ अथवा लवङ्ग २॥ टं० पीपल २॥ टं०

जायफल २॥ टं० कालीमिरच ५ टं० सोंठ ८ पैसेभर इनसबकी बराबर मिश्री ले फिर सबको महीन पीस २॥ टं० जलसे खाय तौ खांसी। ज्वर। प्रमेह। अरुचि। स्वांस। मन्दाग्नि। संग्रहणी इन सब रोगों को यह चूर्ण दूर करै है १०—इति लवंगादि चूर्ण ॥ अथवा सिंगरफ। कालीमिरच। नागरमोथा। सोंधासिंगीमोहरा इन सब को बराबर ले महीनपीस जंभीरी के रस में अथवा अदरक के रसमें मूंगके प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तौ स्वांस और खांसी जाय ११ ॥ अथवा कालीमिरच। नागरमोथा। कूट। बच। सोंधासिंगीमुहरा इन सबको बराबर ले अदरक के रसमें महीन पीस मूंग प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खायतौ स्वांस। सूल। कफ के रोग सूतिकारोग। संग्रहणी इन सबरोगों को यहगोली दूर करै है १२ ॥ अथवा बंग १ टं० पीपल २ टं० हड़का छिलका ३ टं० बहेड़े का छिलका ४ टंक अडूसा ५ टंक भारंगी ६ टं० इन सब की बराबर खैरसार ले फिर सबको महीन पीस बबूलके बकल के काढ़ेकी २ पुटदे और सहत से चने प्रमाण गोलीबांधे १ गोली नित्य खाय तौ स्वांस खांसी क्षयी ये सब रोग जाय १३—इति कास कर्त्तरी ॥

अथवा भीमसेनीकपूर १। टं० कस्तूरी १। टं० लवंग १। टं० मिरच २॥ टं० पीपल २॥ टं० बहेड़ेकीछाल २॥ टं० कुलीजन २॥ टं० अनारका छिलका १। टं० इनसबकी बराबर खैरसार इसमें मिलावै फिर महीन पीस पानी से चनेके प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तौ खांसी जाय १४—इति कपूरादि गुटिका॥ ये सब यत्न वैद्य रहस्यमें लिखे हैं॥ अथवा आकके फूल के मध्यकी फूली और उसकी बराबर मिरच इन दोनों को महीनपीस १ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तौ खांसी जाय १५ ॥ अथवा आक के फूल के बीच की फूली और उसकी बराबर लवंग ले के १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तौ खांसी जाय यह चक्रदत्त में

लिखा है १६ ॥ अथवा पसर कटेली के पंचांग में ४ सेर पानी डाल काढ़ा निकाल उस काढ़े में १०० बड़ीहड़ पकावै जब उबल जांय तब उतार कै शीतल कर उनकी गुठली निकाल पीसडाले फिर १०० टके भर पुराने गुड़की चासन करै उस चासनी में वह हड़ों का चूर्ण मिलावे पीछे ये औषधि डालै सो लिखते हैं सोंठ १ टके भर कालीमिरच १ टं० पीपल १ टं० तज १ टं० पत्रज १ टं० नागकेसर १ टं० इलायची १ टं० इन सब को महीन पीस उस चासनी में डालै फिर आधसेर सहत मिला कै एक रस कर १ टके भर नित्यखाय तौ सब प्रकार की खांसी जाय १७॥ यह भृगु हरीतकी है ॥

अथ कटेली का अवलेह ॥

४ सेर कटेली का काढ़ा करै और उस काढ़े में ४ सेर मिश्री की चासनी कर ये औषधि डालै गिलोय १ टके भर चव्य १ टं० चित्रक १ टं० नागरमोथा १ टं० काकड़ासिंगी १ टं० सोंठ १ टं० पीपल १ टं० धमासा १ टं० भारंगी १ टं० कचूर १ टं० इन सबको महीन पीस उस चासनी में मिलावै फिर १ सेर सहत और ऽ। बंशलोचन डाल कै १ टकेभर नित्यखाय तौ सब प्रकार की खांसी जाय १८ इति कटेली का अवलेह यह भावप्रकाश में लिखा है ॥ अथवा अड़ूसे के काढ़े में सहत डाल पिये तो खांसी जाय। १९ अथवा आकका पल। मैनसिल। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। इन सब को बराबर ले गुड़में गुटका बनाकर हुक्के में पिये तौ खांसी अवश्य दूर होय॥ २०॥ अथवा पारा। शोधीगन्धक। सिंगरफ। शोधासिंगी मुहरा। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। भुना सुहागा। इन सबको बराबर ले महीन पीस पारे और गन्धक की कजली में मिलाकर उस कजली को भांगरे के रसमें १ दिन खरल करै फिर बिजौरे के रसमें ३ दिन खरल करै फिर इसकी आध

रत्ती की गोली करै १ गोली नित्य १० दिन तक खाय तौ खांसी। क्षयी। संग्रहणी। सन्निपात। मृगी इन रोगों को यह रस दूर करै है ॥ २१ ॥ इति आनन्द भैरव रस—इति खांसी रोग के उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्ण ॥

अथ हिचकीरोग की उत्पत्ति लक्षण ॥

गरम। बादी। भारी रूखी। सीली। आदि वस्तु खानेसे और मुखमें रजकेजानेसे। खेदकरने से। मार्ग चलने से मल मूत्र के रोकने से भूखे रहने से। इतनी बातों से मनुष्य के हिचकी। श्वांस खांसी उत्पन्न होती है ॥

अथ हिचकी का स्वरूप ॥

वायु दोनों पसली और आंतों को दुख देती ऊर्द्ध मुखमें होकर बड़े शब्द सहित प्राण का नाश करने वाला मुखमें से भयंकर शब्द निकाले है उसको मनुष्य हिचकीकहैं हैं सो वहवात कफसे मिल कर ५ प्रकार की हिचकी को करै है एक तौ अन्नजा। २ यमला ३ क्षुद्रा ४ गंभीरा ५ महती ॥

अथ हिचकी का पूर्व्व रूप ॥

कंठ और हृदय भारी रहै मुखकषैला होय। कोख में अफरा होय तौ जानिये कि इसके हिचकी पैदा होगी ॥

अथ अन्नजा हिचकी का लक्षण ॥

अन्न बहुत खाय। पानी बहुत पिये। उससे वात कोपित होकर ऊर्द्धगामी हो मनुष्य के अन्नजा हिचकी को पैदा करै है ॥

अथ यमला हिचकी का लक्षण ॥

ठहर २ कर दो २ हिचकी आवै। सिर और कन्धों को कपावे उसको यमला हिचकी कहिये २॥

अथक्षुद्रा हिचकी का लक्षण ॥

ठहर २ कर मन्द कंठ और हृदय की संधिसे चले उसको क्षुद्रा हिचकी कहिये ३ ॥

अथ गंभीरा हिचकी का लक्षण ॥

नाभिसे भयंकर उठै और पीड़ा बहुत होय और अनेक उपद्रव करै उसको गंभीरा हिचकी कहते हैं ४ ॥

अथ महती हिचकी का लक्षण ॥

सर्व मर्म्म स्थानों में पीड़ा करती हुई और सब शरीर को कंपाती हुई चलै उसको महती हिचकी कहते हैं ५ ॥

अथ हिचकी का असाध्य लक्षण ॥

हिचकी चलते हुए जिसका शरीर कांप उठे और ऊंची दृष्टि होजाय और अंधेरी आजाय और भोजन में अरुचि होय छींक बहुत आवै ये दोनों गंभीरा और महती हिचकी असाध्य जानिये ॥

अथ हिचकी का यत्न ॥

प्राणायाम के करने से किसी प्रकारसे भयभीत होनेसे भयंकर बात के सुन्ने से बात और कफको घटाने वाली वस्तु के खाने से हिचकी दूर होय है १ ॥ अथवा बकरी के दूधमें सोंठ को पकाय सोंठ सहित दूध पिये तौ हिचकी जाय २ ॥ अथवा बिजौरे के रसमें जवकासत्तू और सेंधानौन मिलाके खाय तौ हिचकी जाय ३ ॥ अथवा सोंठ पीपल सहतसे चाटे तौ हिचकी जाय ४ ॥ अथवा मक्खी की बीठ दूधमें पीस नासले तौ हिचकी जाय ५ ॥ अथवा गुड़ और सोंठ। पानी में पीस नास लै तौ हिचकी जाय ६ ॥ अथवा कांस की जड़ के रस में सहत मिलाय नास ले तौ हिचकी जाय ७ ॥ अथवा मोर के पंख की राख सहत से चाटै तौ हिचकी जाय ८ ॥ अथवा बिजौरे की केसर को सेंधानौन। मिलाकर खाय तौ हिचकी जाय ९ ॥ अथवा पुष्करमूल जवाखार। कालीमिरच ये सब बराबर ले महीन पीस २ ॥ टं० गरम जलके साथ ले तौ हिचकी जाय १० ॥ अथवा हल्दी। और उड़दों को पीस निर्धूम अंगार पर रख हुक्के में धुआं पिये तौ भयंकर भी हिचकी जाय यह वैद्यविनोद

में लिखा है ॥ ११ ॥ अथावा सनकीछालका चूर्ण कर उसका हुक्का पिये तौ हिचकी जाय ॥ १२ ॥ अथवा सोंठ । कालीमिरच । पीपल । जवासा । कायफल । कबेलस । पुष्करमूल । काकड़ासिंगी । इन सबको बराबर ले महीन पीस २॥ टंक सहत केसाथ चाटै तो हिचकी खांसी । स्वांस जाय १३ ॥ अथवा पित्तपापड़ा । पीपल । ये दोनों २॥ टं० और गुड़ ५ टं० इनका काढ़ा दे तौ हिचकी जाय १४ ॥ अथवा १० टंक असाखूके काढ़े को छान कर पिये तौ हिचकी तत्काल दूर होय १५ ॥ यह वैद्य रहस्य में लिखा है ॥ अथवा मुलहटी १। टंक सहत के साथ चाटै तौ हिचकी जाय १६ ॥ अथवा पीपल १। टंक मिश्री के साथ खाय तौ हिचकी जाय १७ ॥ अथवा दूधमें घृतडाल गरम २ पिये तौ हिचकी जाय १८ ॥ यह सुश्रुत में लिखा है ॥ अथवा बिजौरे का रस । सहत और कालानोन मिला कर खाय तौ हिचकी निश्चय दूर होय १९ ॥ यह वैद्य सर्व्वस्व में लिखा है ॥ अथवा कैथ और आमले का रस सहत मिला कर पिये तौ हिचकी और स्वांस जाय २० ॥ यह कासीनाथ पद्धति में लिखा है अथवा इलायची १ दालचीनी २ नागकेसर ३ कालीमिरच ४ पीपल ५ सोंठ ६ यह वृद्धि क्रम से ले महीन पीस घृत मिलावै और इन सबकी बराबर मिश्री मिलाय २॥ टंक जल से ले तौ हिचकी । अजीर्ण । बवासीर । स्वांस । खांसी इन सबरोगों को दूर करै २१ ॥ यह एलादि चूर्ण वृन्द में लिखा है ॥ इति हिचकी रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ स्वास रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जिन वस्तुओं के खाने से हिचकी पैदा होय उन्हीं वस्तुओं के खाने से स्वास रोग होता है वह ५ प्रकार का है एक तौ महा स्वास १ ऊर्द्ध स्वास २ छिन्न स्वास ३ तमक स्वास ४ क्षुद्र स्वास ॥ ५ ॥

अथ स्वास रोगका पूर्व्व रूप ॥

हृदय दूखे। शूलहोय। अफराहोय मलमूत्र उतरै नहीं मुख में रसोंका स्वाद आवै नहीं कनपटी दूखे तौ जानिये कि स्वास रोग होगा ॥

अथ स्वास रोग की उत्पत्ति ॥

सब शरीर में फिरती जो वात वह कफसे मिल सब नसों को रोकै है तब वह बात फिरने से बन्द होकर स्वास को प्रगट करै है ॥

अथ महा स्वास का लक्षण ॥

जब मनुष्य स्वास युक्त होकर थककै ऊंचे प्रकार मस्त बैल के समान निरन्तर स्वास ले और जिनका ज्ञान नष्ट होगया हो और नेत्र तरतराट करैं और स्वास लेते में मुख और नेत्र फट जांय और मुख से बोला न जाय और दुर्बल होजाय और स्वास का शब्द दूर सुनाई दे ये लक्षण होंय तौ महा स्वास जानिये यह स्वास वाला तत्काल मरजाय ॥

अथ ऊर्द्ध स्वास का लक्षण ॥

ऊर्द्ध स्वास ले नीचे आवै नहीं कफसे मुख भरजाय ऊंची दृष्टि होय नेत्र तरतराट करैं इस स्वास से दुखी होकर नेत्र भ्रमता मोह ग्लानि होय यह लक्षण होंय तौ ऊर्द्ध स्वास जानिये यह मनुष्य को मार डालै है ॥

अथ छिन्न स्वास का लक्षण ॥

सर्व्व शरीर के पांचों पवन से पीड़ित मनुष्य टूटा स्वास ले अथवा दुखित होकर स्वास नहीं ले और जिसके मर्म्म स्थान टूट कर अफरा हो आवै और प्रस्वेद होकर नेत्र फटजांय और स्वास लेते समय नेत्र लाल होजांय चैतन्यता जाती रहै शरीर का वर्ण और का और होजाय वह प्राणी तत्काल मरजाय ३ ॥

अथ तमक स्वास का लक्षण ॥

शरीर की पवन उलटी चलै नासिका को रोकै है तब कण्ठ और सिर पकड़ कर कफको प्रकट करै है तब यह शब्द कंठ में जाकर घुर घुर शब्द करै है फिर प्राण नाशक स्वास प्रकट करै है तब मनुष्य स्वास के वेग से ग्लानि को प्राप्त होता है और जब इसकी अग्नि रुकजाय है तब वह मनुष्य स्वास लेते समय मोह को प्राप्त होय है और कफ भी छूटे है तब दुखी होकर मुख से कफ निकल जाय तब वह दो एक घड़ी सुख पावै है और उससे बोला भी नहीं जाता है और जब वह सोवै तब स्वास होआवै नींद आवै नहीं बैठे भी चैन पड़े और गरमी सुहावै नेत्रों पर सूजन होय ललाट में पसीना आवै। लुहारकी धौंकनी के सदृश स्वासले मेहकी पवन और शीतल वस्तु से और मधुर खाने से बढ़ै ये लक्षण होंय तौ तमक स्वास का लक्षण जानिये—यह स्वास याप्य है ॥ ४ ॥

अथ क्षुद्र स्वासका लक्षण ॥

रूखी वस्तु खानेसे खेदसे कोठे की पवनसे क्षुद्रस्वास प्रकट होता है तब वह मनुष्य को बहुत दुःख देय नहीं और मनुष्यों के खान पान की गति रोकै नहीं और इन्द्रियों को पीड़ा करै नहीं ये लक्षण क्षुद्र स्वास के जानिये ५ ॥ यह क्षुद्रस्वास बलवान पुरुष के होय तौ साध्य है और तमक स्वास कष्ट साध्य है और महास्वास छिन्न स्वास ये प्राणके हरने वाले हैं ॥

अथ स्वास रोग का यत्न ॥

नौन मैं तेल डाल सुहाता २ हृदय को सेकैतौ स्वास दबै १ अथवा अदरकका रस सहत में मिलाय चाटे तौ स्वास जाय २ अथवा अदरक का रस और सहत दोनों आधसेर मिलाय १। भर नित्य खाय तौ स्वास कास जाय ३ ॥ अथवा दसमूल। कचूर। रास्ना। पीपल। सोंठ। पुष्करमूल। भारंगी। काकड़ा सिंगी। गिलोय। चित्रक। ये सब बराबर ले २॥ टंक भर

कानित्य काढ़ा ले तौ कास। स्वास। पसलीका शूल निश्च जांय ४॥ अथवा पेठे की जड़ का चूर्ण १ टंक गरम जल लेतौ स्वास कास निश्चय जाय ५ अथवा हल्दी। कालीमिरच दाख। पीपल। रास्ना। कचूर इन सबको बराबर ले महीन पीस १। टंक गुड़ या तेलके साथ खाय तौस्वासका रोग निश्चय जाय ६ अथवा ऽ। भारंगी को औटाके रस निकाले उसमे १०० टकेभर गुड़ की चासनी करे उस चासनी के पकने में हड़की छालका ऽ। चूर्ण डालै फिर चासनी ठंढी होय तब ६ टकेभर सहत डाले फिर सोंठ १। तज १। पीपल १। पत्रज १। नागकेसर १। जावखार २ टंक महीन पीस उस चासनी में मिलावै फिर १ पैसे भर नित्य खाय तौ स्वास। खांसी। बवासीर। गोला। क्षयी। उदर के रोगये सब जांय ७ यह भारंगी का अवलेह है ये सब यत्न भाव प्रकास में लिखे हैं अथवा पारा २॥ टं० शोधीगन्धक २॥ टं० शोधासिंगीमुहरा २॥ टं० सुनासुहागा। २॥ टं० मैनसिल २॥ टं० कालीमिरच २॥ टं० सोंठ २॥ टं० पीपल २॥ टं० पहले पारे और गन्धक की कजलीकरै उसमें ये औषधि मिलावै फिर अदरक के रसकी १ पुट दे के १ रत्ती नित्य खाय तौ स्वास जाय ८—इति स्वास कुठार रस ॥

अथवा धतूरे के बीज १ से बढाकर ५ तक ३० दिन खाय तौ स्वास रोग जाय। अथवा पारा १। गन्धक आधा भाग। इन के बराबर तामेश्वर ले फिर इन तीनों को ग्वार के पट्ठे के रस में खरल करै फिर इस को तामेकी डिबिया में धर वालूके यंत्र में १ दिन पचाकर सिद्ध कर २ रत्ती प्रमाण पान में रखकर खाय तौ स्वास रोग जाय १०—इति सूर्य्यावर्त्त रस यह बैद्यविनोद में लिखा है ॥

अथवा काकड़ासिंगी। सोंठ। पीपल। नागरमोथा। पुष्करमूल। कचूर। कालीमिरच। इन सबको बराबरले और सब की बराबर मिश्री ले फिर महीनपीस २॥ टं० प्रमाण। गिलोय अड़ूसा

ीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठ। इनके काढ़ेके साथ स चूर्ण को लेतौ खास रोग जाय ११ यह चक्र दत्त में है ॥ अथवा पीपल। पुष्करमूल। हड़की छाल। सोंठ। कचूर। कमल गट्टे। इन सबको बराबर ले चूर्ण कार इन के बराबर गुड़ में चने प्रमाण गोली बांधे १ या २ या ३ गोली नित्य खाय तो खास जाय १२ अथवा पारा। गन्धक। शोधासार। सोंठ। कालीमिरच। पत्रज। नागकेसर। नागरमोथा। बायबिडंग सम्हालू। कबीला। पीपला मूल ये सब पारा। गन्धक सार इन तीनों से दूनी २ ले फिर इन सबको महीन पीस जल पीपल के रसमें ३ पुट दे फिर इसकी चने के प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तौ खास कास। बवासीर। भगन्दर। हृदय और पसली का शूल। संग्रहणी। उदररोग। प्रमेह मात्र इन सब रोगों का यह महो दधि रस दूर करै है १३—इति महोदधिरस-यह सर्व्व संग्रह में लिखा है

अथवापारा। शोधीगन्धक। सार। सुहागा। रास्ना। बायडंग। त्रिफला। देवदारु! सोंठ। कालीमिरच। पीपल। गिलोय। कमलगट्टे। शोधासिंगीमुहरा। पहले पारे और गन्धक की कजली करै फिर इनसब को बराबर ले महीन पीस कजली में मिलाकै सहत से १ तथा २ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तौ खासजाय १४—इतिअमृतार्णव रस यह वैद्य रहस्य में लिखा है

अथवा पारा और गन्धक बराबर ले इनकी कजली कर चौराई के रसमें ५ दिन खरल करै फिर वज्रमूसी में रख कर वालुका यंत्र में पकावै १ दिन पीछे इसमें से २ रत्ती पान में खाय तौ खास हिचकी दूर होय १५ यह मेघ डम्बर रस है और रुद्र दत्त ग्रन्थ में लिखा है ॥

इति श्री मन्महाराजा धिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप
सिंहजी बिरचिते अमृतसागर नाम ग्रंथे रक्तपित्त। राज-
रोग। क्षयीरोग। शोषरोग। कासरोग हिचकी।
स्वासरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणं
नाम पंचमस्तरंग: ॥ ५ ॥ * ॥

* * *

अथ स्वर भेद रोग को उत्पत्तिलक्षण यत्न ॥

मनुष्य के बहुत बोलने से विष आदि के खाने से उच्चस्वर के पढने से। कंठमें किसी प्रकार की चोट लगने से कोप को प्राप्त हुआ जो बात पित्त कफ सो कंठ के स्वर की बहने वाली जो नसें तिनमें रह कर स्वर भंगको करै हैं वह स्वर भंग छः प्रकारका है बातका १ पित्त २ कफका ३ सन्निपात का ४ शरीर के भंगपने का ५ क्षयीरोग का ६ ॥

अथ बातके स्वर भंग का लक्षण ॥

जिस के नेत्र मुख। मलमूत्र काले होंय। टूटे शब्द बोले गधेका सा शब्द होय तौ बात का-स्वर भंग जानिये १ ॥

अथ पित्त के स्वर भंग के लक्षण ॥

जिसके नेत्र मुख मलमूत्र पीला होय और बोलने के समय गले में दाह होय तौ पित्तका स्वर भंग जानिये २ ॥

अथ कफ के स्वर भंग का लक्षण।

सदाही कंठ कफ से रुका रहै और मन्द२ आधा बोला जाय रात्रि में बढ़जाय तौ कफका स्वर भंग जानिये॥ ३

अथ सन्निपात के स्वर भंग के लक्षण ॥

जिसमें। बात। पित्त। कफ के सब लक्षण मिलैं उस को सन्निपात का स्वरभंग कहिये यह असाध्य है ॥ ४

अथ क्षयीरोग के स्वर भंग के लक्षण ॥

बोलते हुए मुख में धुआं निकलै तौ क्षयीरोग का स्वर भंग जानिये यह भी असाध्य है ॥

अथ शरीर के मोटे पनसे उपजाजो स्वरभंग उसका लक्षण

गले में बोले शब्द सुनाई न दे और देरसे बोले गला जले तृषा अधिक लगै। जिसके ये लक्षण होंय उसके शरीर के मोटे पन का स्वरभंग जानिये ६ यह भी अच्छा नहीं॥२

अथ स्वरभंग का यत्न॥

बात का स्वरभंग होय तौ नौन तेल की वस्तु खाने से जाय १॥ पित्त का स्वरभंग घृत और सहतके खाने से जाय २॥ कफ का स्वरभंग खारी कड़वी वस्तु और सहत आदि केखानेसेजाय ३ अथवा गलेका। तालूका। मसूढ़े का। रुधिर निकालने से स्वरभंगजाय ४॥ अथवा। गरम जलके पीनेसे बात का स्वरभंग जाय॥५॥ अथवा। घृत गुड़के खाने से बातका स्वरभंग जाय॥६॥ गरमदूधके पीनेसे पित्तका स्वरभंग जाय॥७॥ अथवा कटेली १०० टके भरले और इससे आधा पीपलामूल और इससे आधी चित्रक और चित्रक को बराबर दसमूल ले इनको १ मन पानी में औटावै जब ४ सेर पानी रहजाय तब छान कर उस पानी में १०० टके भर पुराने गुड़की पतली चासनी करै फिर उस चासनी में ये सब औषधि महीन पीस डालै और १ सेर सहत डालै फिर २टके तथा ३। भर नित्य खाय तौ सब प्रकार का स्वरभंग स्वास। कास मन्दाग्नि। गलेका रोग। अफरा। मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगों को यह दूर करै है यह कटेली का अवलेह है और भाव प्रकाश में लिखा है इति॥ अथवा अजमोद। हल्दी। चित्रक। जवाखार आंमला। येसब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक घृत और सहत के साथ ले तौ भयंकर भी स्वरभंगजाय॥९॥ अथवा हड़कीछाल। बच। पीपल। महीन पीस गरम जल से ले तौ मेद के क्षयी रोग का स्वरभंग जाय॥१०॥ यह वैद्य विनोदमें लिखा है॥ अथवा बहेड़े की छाल। पीपल। सेंधानौन। आंमला इन सबको महीन पीस गौके मट्ठे में अथवा गोमू मेंले तौ स्वरभंग जाय ११॥ यह वृन्दमें लिखा है॥ अथवा

जायफल। पीपल। खील। बिजौरेकीकेसर। ये सब महीन पीस सहतके साथ चाटै तौ स्वरभंग जाय और स्वर अत्यन्त सुन्दर सूक्ष्म हो जाय ॥१२॥ यह जायफल का अवलेह है और सर्व्व संग्रह में लिखा है॥ अथवा कुलींजन मुखमें रक्ख कर उसका रस पीये तौ स्वरभंगजाय॥ १३ ॥ अथवा चव्य। अमलबेत। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। डासरा। पत्रज। तज। जीरा। चित्रक। इलायची। इनसबको बराबर ले महीन पीस २ टं० पुराने तिवरसे गुड़मेंले तौ स्वरभंग। पीनस। कफरोग। अरुचि ये सब जाँय॥ १४ ॥—इति चव्यादि चूर्ण॥

अथवा पारेकीराख। तामेश्वर। सार। इनतीनोंकोबराबर ले फिर इनमें कटेली केफलोंकेरसकी २१ पुटदे फिर उसकी गोली मूंगप्रमाण बांधे १ गोली मुखमें रक्खे तौ स्वरभंग दूर होय यह गोरख नाथ जी की गोली है॥ १५॥ अथवा ब्राह्मी बच। हड़ कीछाल। अडूसा। पीपल येसब बराबरले महीन पीस २टं० सहत के साथ १४ दीन लेतौ स्वरभंग जाय और उसका स्वर किन्नर का सा होय॥ १६॥ यह यत्न वैद्यरहस्य में लिखाहै—इति स्वरभंग रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण॥

अथ अरोचक रोगकी उत्पत्तिलक्षण यत्न॥

शोचसे। क्रोधसे। मोहसे। अतिलोभसे। डरनेसे। और चित्तके रोकनेवाले भोजनसे और बुरे प्रकार के रूप देखने से और बुरीगन्ध के सूंघनें से मनुष्य के बात। पित्त। कफ ये तीनों अरुचि नामरोग को उत्पन्न करैं हैं वह अरुचि पाँच प्रकार की है बातकी १ पित्तकी २ कफकी ३सन्निपातकी ४ शोकादिककी ५॥

अथ बातकी अरुचि का लक्षण॥

खट्टा। कषैलामुखहोय। हृदयमें शूलहोय। भोजन से रुचि जाती रहै तौ बात की अरुचि जानि ये॥ १॥

अथ पित्तकी अरुचि का लक्षण ॥

कड़ुआ। खट्टा। गरम। बिरस। सलोनापन जिसके मुखमें होय और शरीर में दाह। और मुखमें शोषहोय तौ पित्तकी अरुचि जानिये ॥ २ ॥

अथ कफकी अरुचि कालक्षण

मुखमीठाहोय। अरुचिहोय। शरीरभारीरहै। बद्धकोष्टहोय लारगिरै। शरीरमें स्थान २ पर पीड़ा होय तौ कफ की अरुचि जानिये ३ ये सब लक्षण मिले होंयतौ सन्निपातकी अरुचि जानिये४ ॥

अथ शोकादिक की अरुचिका लक्षण ॥

पेटमें क्षुधा रहै और मुख से खाया न जाय तौ शोक की अरुचि जानिये ५ ॥

अथ अरुचि का स्वरूप ॥

मुखमें अन्न काग्रास लेनेमें पुरुषको कुछभी स्वाद न आवै तौ जानिये कि अरुचि का रोग है ॥

अथ भक्त द्वेष का लक्षण ॥

भोजनका चिन्तवन करै अथवा भोजन के देखनेसे अन्नरुचै नहीं तौ उसको भक्तद्वेष जानिये ॥

अथ भक्त द्वेष का यत्न ॥

भोजन के पहले सेंधानौन और अदरक खाय तौ क्षुधालगे और कंठ जीभ शुद्ध होजाय १ और सहत को अदरक कारस मिलाकै पियेतौ अरुचि स्वास कासजाय २ अथवा पक्की इमली का सरबत मिश्री डालके करै उसमें इलायची लवंग भीमसेनी कपूर का प्रतिवासदे फिर उस सरबत कोपिये अथवा कुल्ल करै तौ अरुचि जाय ३ ॥ अथवा राई। जीरा। भुनीहींग। सोंठ सेंधानौन इनसबको महीन पीस अनुमान माफिकगौके मट्ठे में डालकर पिये तौ अरुचि जाय और क्षुधा बढ़ै ४ ॥ अथवा गौके दही को वस्त्र में छानकै उसमें मिश्री। इलायची। भीमसेनी कपूर। लवंग। कालीमिरच अनुमान माफिक महीनपीस मिला

कै पियेतौ अरुचि तत्काल जाय ५—इति शिखरणीकी क्रिया ॥

अथवा अनारदाना २ टके भर मिश्री ८ टं० सोंठ १ टं० काली मिरच १। टं० पीपल १। टं० तज २॥ टं० पत्रज २॥ टं० नागकेसर २॥ टं० इनसबको महीनपीस २॥ टं० प्रमाण जलसे नित्य लेतौ अरुचि जाय इति दाड़िमादि चूर्ण ६ ॥ अथवा लवंग। कङ्कोल मिरच। खस। चन्दन। तगर। कमलगट्टे। कालाजीरा। नेत्रवाला। अगर। नागकेसर। पीपल। सोंठ। चित्रक। इलायची। भीमसेनी कपूर। जायफल। वंसलोचन। येसब बराबर ले और इनसे आधी मिश्री ले फिर महीनपीस १ टं० नित्य जल के साथ ले तौ अरुचि मन्दाग्नि क्षीणता बद्ध कोष्ट खांसी हिचकी राजोरोग संग्रहणी अतीसार प्रमेह इनसब रोगोंको यह लवंगादि चूर्ण दूर करै है ७ यहसब यत्न भाव प्रकाशमें लिखेहैं अथवा बंसलोचन। डोड़ेकेबीज। अनारदाना। जीरा ये सब धेले २ भर ले और पीपलामूल। चव्य। चित्रक सोंठ। कालीमिरच अजमोद। डांसरा। अमलबेत। असगन्ध। अजवाइन। कैथ। ये भी धेले २ भर और मिश्री ४। टके भर ले इन सबको महीन पीस २॥ टं० प्रति दिन जलके साथ ले तौ अरुचि स्वास खांसी शूल वमन रक्तपित्त इन सब रोगोंको यह दूर करैहै—इति वृहदेलादिकं चूर्ण ॥ यह सार संग्रह में लिखा है ॥

अथवा जवाखार। सज्जी। भुनासुहागा। पांचौनौन। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। त्रिफला। सार। भीमसेनीकपूर। लवङ्ग चव्य। चित्रक। अनारदाना। डांसरा। अदरक। येसब बराबर ले महीन पीस अजवाइन के अर्कको ३ पुट दे फिर नीबू के रसको ५ पुट दे फिर अमलवेत केरसको ३ पुट दे फिर इस रसकी चने प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तौ अरुचि मन्दाग्नि गोली प्रमेह खांसी और कफके रोगों को नाना अनोपान सेयह अग्नि कुमार रसदूर करैहै ९—इति अग्नि कुमार रस ॥

अथ छर्दिरोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

बहुत चिकनी और दुर्गंधित वस्तु खानेसेपेटमें कृमिकेपड़

नेसे खेदकरनेसे भयसे अजीर्णसे आमके दोषसे तृषा लगनेसे दुर्गन्धि की वस्तु देखनेसे स्त्रीके गर्भ रहनेसे अति शीघ्र भोजन करनेसे बात पित्त कफ दुष्टहोकर अङ्गोंमें पीडा करके मुखके द्वारा सब खाया पिया निकालदे है इसको मनुष्य छर्द्दि कहते हैं वह छर्द्दि पांच प्रकार की है बातकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ सूगली वस्तु आदि देखने की ५ ॥

अथ छर्द्दि का पूर्व्व रूप ॥

हृदयसे खारीऔर खट्टा २ प्रथमही गिरै और डकार नहीं आवै लार गिरने लगे और खारी मुख होजाय अन्नपान के ऊपरसे रुचि जाती रहै तब जानना कि वमन होगी ॥

अथ वातकी छर्द्दि का लक्षण ॥

हृदय और पसली में पीड़ा होय। मुख शोष होय मस्तक और नाभि दूखे। श्वास और स्वरभेद होय। डकार का शब्द ऊंचाहोय। वमन में झाग आवै वमन का रंगकाला और कषैला होय और बहुत वेगसे वमन थोड़ी हो दुःख बहुत पावै ये लक्षण बातकी छर्द्दि के जानिये १ ॥

अथ पित्त की छर्द्दि का लक्षण ॥

मूर्छा। तृषा। मुखशोष होय। मस्तकगरम रहै। तालू और नेत्रों में गरमी रहै। अंधेरा और घूमनी आवै। और गरम। खारा। लाल। वमन करै तो पित्तकी छर्द्दि का लक्षण जानिये २ ॥

अथ कफकी छर्द्दि का लक्षण ॥

तन्द्रा और मुख मीठा होय। कफडालै। निद्रा आवै भोजन में अरुचि होय। शरीर भारी रहै। चिकना। मीठा। ठंढा। और कफयुक्तछर्द्दि रोमांच होंय ये लक्षण होय तौ कफकी छर्द्दि जानिये ॥

अथ सन्निपात की छर्द्दि का लक्षण ॥

शूलहोय। अन्नपचै नहीं। अरुचि। दाह-तृषा-श्वास। प्रमेह। ये सब सदैव अधिक रहैं और सलौना। खट्टा। नीला। ठंढा।

गरम लार बमन करै तौ सन्निपात की छर्दि जानिये ४ ॥

अथ सूगली वस्तु के देखने से उपजी जो छर्दि उसका लक्षण ॥

उतक्लेद होकर छर्दि करने लगजाय ५ ॥

अथ छर्दि रोग का यत्न ॥

धनिया । सोंठ । दशमूल इनका काढ़ा ले तौ बात की छर्दि जाय ॥ १ ॥ अथवा घृत में सेंधानौन डालकर पिये तौ बातकी छर्दि जाय २ ॥ अथवा मूंग । आमला । इनदोनों को औटाय रस निकाल घृत और सेंधानोंन डालपिये तौ बातकी छर्दि जाय ३ अथवा उड़द । मूंग । मसूर । जौ इनके आटे की रबा कर उस में सहत डालकर पिये तौ पित्त की छर्दि जाय ॥ ४ ॥ अथवा आंवले के रसमें चन्दन और सहत मिलाकै पियेतौ पित्तकी छर्दि जाय ॥ ५ ॥ अथवा गिलोय । नीवकीछाल । पटोल त्रिफला । इनका काढ़ाकर सहत डालपिये तौ पित्तकी छर्दि जाय ॥ ६ ॥ अथवा पित्तपापड़े के क्वाथ में सहत डालपिये तौ पित्तकी छर्दि जाय ७ ॥ अथवा मक्खी की बीठ । मिश्री । चन्दन सहत मिलाकै चाटै तौ पित्तकी छर्दि जाय ॥ ८ ॥ अथवा खीलोंका सत्तू घृत मिश्री सहत मिलाय खाय तौ पित्तकी छर्दि जाय ९ ॥ अथवा मसूर का सत्तू मिश्री मिलाय खायतौ पित्तकी छर्दि जाय ॥ १० ॥ अथवा अनार के रसमें सहत मिलाय पिये तौ पित्त की छर्दि जाय ॥ ११ ॥ अथवा चांवल के पानी में सहत मिलाय पिये तौ पित्त की छर्दि जाय ॥ १२ ॥ अथवा इलायची । नागरमोथा । नागकेसर । चांवल की खील । गौरीसर । चन्दन । बङ्गफली । बेरकीमींगी । लवंग । पीपल । इनसबको बराबर ले महीनपीस १ टं० तथा २॥ टं० भर सहतसे चाटै तौ त्रिदोष की छर्दि जाय ॥ १३ ॥ अथवा पीपल की छाल को जलाय पानी में बुझाय वह पानी पिये तौ छर्दि जाय ॥ १४ ॥ अथवा बेरकी मींगी आंवले की मींगी । पीपल । मक्खी की बीठ । इनका काढ़ा

कर उसमें सहत मिश्री मिलाय पियेतौ छर्हिं जाय ॥ १५ ॥ ये सब यत्न बैद्य बिनोद में लिखे है ॥ अथवा जामन और आंबके पत्ते पानी में औटाय उस पानी में खीलका। आटा डाल सहत मिलाय पिये तौ भयंकर भी छर्हिं जाय ॥ १६ ॥ अथवा खूगली बस्तु से उपजी जो छर्हिं सो अच्छी बस्तु के दिखाने से जाय ॥ १७ ॥ और आमसे उपजी जो छर्हिं सो लंघन करने से जाय ॥ १८ ॥ ये यत्न भाव प्रकाश में हैं ॥ अथवा केसर १ मासे इलायची २ मासे सिंगरफ ३ मासे इनको सहत से चाटै तौ छर्हिं जाय ॥ १९ ॥ इति छर्हिं रोग के उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ तृषा रोग के उत्पति लक्षण यत्न ॥

भयसे। खेदसे। निर्बलता से। बढ़ा जो पित्त वह बात से मिल तालू में जाकर रोगको उत्पत्ति करता है और जलको ले जाने वाली नसों को रोक कर बाल। पित्त कफ यह तीनों ७ प्रकार की तृषा को करै हैं। बातकी १ पित्तकी २ कफकी ३ शस्त्रादिक के चोटकी ४ निर्बलता की ५ आमकी ६ भोजन करने की ७ ॥

अथ तृषा रोग का स्वरूप ॥

बारम्बार जलपिये और तृप्ति होय नहीं पानी पीने की मन में इच्छाही बनी रहै तब जानिये की तृषारोग है ॥

अथ बात की तृषा का लक्षण ॥

मुख उतर जाय। कनपटी और सिर में पीड़ा हो। आवै नासिका रुकजाय। मुख से रसका स्वाद जाता रहै। ठंढा पानी पीनेसे तृषा बढ़ै तब जानिये कि बात की तृषा है १ ॥

अथ पित्त की तृषा का लक्षण ॥

मूर्छा होय। भोजन प्यारा लगै नहीं। दाहहोय। शरीर में तापहोय। मलमूत्र नेत्र पीले होंय। ये लक्षण पित्तकी तृषा के जानिये ॥ २ ॥

अथ कफ की तृषा के लक्षण ॥

जठराग्नि को कफ रोके है तब वह अग्नि की गर्मी जलकी लेजाने वाली नसों को सुखाय कफकी तृषा को उपजावै है तब मनुष्य इस तृषा से पीड़ित होकर नींद और शरीर के भारी पनेको प्राप्त होता है और मुख मीठा और शरीर सूखता जाय तब जानिये कि इसके कफकीतृषा है ॥ ३

अथ शस्त्रादिक की चोटसे उपजी तृषा का लक्षण ॥

शस्त्रादिक के लगने से शरीर के रुधिर निकालने से अति पीड़ा होती है उससे तृषा लगै है ॥ ४ ॥

अथ क्षीणता की तृषा के लक्षण ॥

हृदय दूखे । कम्प होय । मुखसूखे । शरीर में सून्यता होय । तृषा बहुत लगै । पीते २ तृप्ति न होय और येही लक्षण आम की तृषा के भी जानिये ॥ ५ ॥

अथ भोजन उपरांत तृषा लगे उसका लक्षण ॥

बहुत चिकना खट्टा सलौना भारी अन्न खाया होय तब तत्काल तृषा लगै है ॥ ६ ॥

अथ तृषा का उपद्रव ॥

मुखका स्वर बैठजाय । कंठ । गला । तालू सूखे और ज्वर मोह । स्वास । खांसी । ये होंय तौ वह तृषावाला मरजाय ॥

अथ तृषा रोग का यत्न ॥

बात की तृषा वाले को गरम अन्न और अच्छा जलदे तौ तृषा जाय ॥ १ ॥ अथवा दही और गुड़ मिलाके खाय तौ बात की तृषा जाय ॥ २ ॥

अथ पित्तकी तृषा का यत्न ॥

सोने रूपे का बुझाया पानी पिये तौ पित्तकी तृषा जाय ३ ॥ अथवा मिश्री के ठंढे सरबत से पित्तकी तृषा जाय ४ ॥ अथवा धनिये को रात्रि में भिजो कर प्रातःकाल घोट मिश्री मिला कर पिये तौ पित्त की तृषा जाय ॥ ५ ॥ अथवा अनार के सरबत में मिश्री मिलाकर पिये तौ पित्त की तृषा जाय ॥

अथवा शीतल स्थान में रहने और भीगा वस्त्र पहरने से पित्त की तृषा जाय ॥ ७ ॥ अथवा कपूर । चन्दन । अगर ये लगाने से पित्त की तृषा जाय ॥ ८ ॥

अथ कफ की तृषा का यत्न ॥

तीखी कड़वी गरम वस्तु खाने से कफ की तृषा जाय है ९ ॥ अथवा जीरा । सोंठ । कालानोन । इनका चूर्ण जलसे ले तौ कफको तृषा जाय ॥ १० ॥ अथवा सुन्दर मद्य के पीने से कफ की तृषा जाय ११ ॥

अथ छीणता की तृषा का यत्न ॥

सांठे के रससे तृषा दूर होय है ॥ १२ ॥ अथवा बड़का अंकुर । मुलहटी । खील । कमलगट्टा । इनको महीन पीस गोली कर मुखमें रक्खे तौ तृषा जाय ॥ १३ ॥ अथवा सेमर के गोंद को मुख में रक्खे तौ तृषा जाय ॥ १४ ॥ अथवा बिजोरेकीजड़ । कैथ । अनारकीजड़ । चन्दन । लोधकीजड़ । इनको जलमें महीन पीस सिरमें लेप करे तौ तृषा दाह शोष ये सब जांय १५ ॥

अथ शस्त्रप्रहारसे उपजी जो तृषा उसका यत्न ॥

बकरेका रुधिर पीने से यह तृषा जाय ॥ अथवा बकरे के शोरवे में सहत मिलाके खाय तो शस्त्रप्रहार की तृषा जाय १७ ॥ अथवा खीर में मिश्री मिलाके खाय तौ यह तृषा जाय ॥ १८ ॥

अथ आम की तृषा का यत्न ॥

बच और बेलके काढ़े से आमकी तृषा जाय ॥ १९ ॥

अथ दुर्व्बल मनुष्य की तृषा का यत्न ॥

दूध के पीने से इसकी तृषा जाय ॥ २० ॥ तृषा से दुःखित हो पुरुष मोह को प्राप्त होकर प्राण छोड़ देहै इससे मनुष्य जलकी तृषा को रोकै नहीं थोड़ा २ सदैव पिये ये यत्न वैद्यबिनोद और भावप्रकाश में लिखे हैं — इति तृषा रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्ण ॥

अथ मूर्च्छा । मोह । भ्रम । तन्द्रा । निद्रा । सन्यास रोगके उत्पत्तिलक्षण यत्न ॥

क्षीण पुरुष के बहुत कुपथ्य करने वाले के मलमूत्र रोकने से चोट लगने से पुरुष की बाहर वाली जो नेत्र कर्ण आदि इन्द्री हैं उनमें बात पित्त कफ घुसकर संज्ञा करने वाली नसों को तत्काल अन्धकार प्राप्त करैं हैं तब मनुष्य को काष्ट की भांति पृथ्वी परडाल देते हैं उसके कुछ सुख दुःखका ज्ञान नहीं रहता है उसको बैद्य मोह और मूर्च्छा कहे हैं वह मूर्च्छा छः प्रकार की है । बातकी १ पित्तकी २ कफकी ३ रुधिरकी ४ मद्यकी ५ विषकी ६ फिर उसी मूर्च्छा में पित्त होता है वह मुख्य और प्रधान है ॥

अथ मूर्च्छा का सामान्य स्वरूप ॥

कुपथ्य के सेवन करने वाले और हीन पराक्रम और क्षीण और मद्यादिक का पीने वाला ऐसे पुरुषके अज्ञानका हेतु जो तमोगुण पित्त वह बढ़कर ज्ञानरूप जो सतोगुण और रजोगुण तिसको आच्छादन कर दसों इन्द्रियों के स्थान में रहने वाले जो बात पित्त कफ वे ज्ञानकी करने वाली नसोंको आच्छादन कर सुख दुःख और नासका हरने वाला ऐसा अज्ञान कारण जो तमोगुण सो बढ़ वेग से मनुष्य को काष्ट की भांत पृथ्वीपर डालदे है उसको वैद्य मूर्च्छा कहे हैं २ ॥

अथ मूर्च्छा का पूर्व्व रूप ॥

हृदय दूखे जंभाई आवै मनमें ग्लानि होय संज्ञा घट जाय तब जानिये कि इस पुरुष के मूर्च्छा का रोग होगा अथवा काला और लाल दीखकर फिर अन्धकार में प्रवेश होकर ज्ञानहोय तदनन्तर शरीर कांपै अंगमें हड़ फूटन होय हृदय दूखे शरीर क्षय होजाय लाल और काली छाया दीखै येलक्षण जिसकेहोंय उसके बायकी मूर्च्छा जानिये ॥

अथ पित्त की मूर्च्छा का लक्षण ॥

आकाश जिसको लाल और हरा पीला दीखै फिर मूर्च्छा होकर पसीने आवैं फिर ज्ञान होकर तृषालग शरीर

ठंढा प्रस्वेदों से युक्त होय और लाल पीले जिसके नेत्र होंय मुखसे टूटे अक्षर निकलें शुद्ध बोला न जाय शरीर की कान्ति पीली होजाय तो पित्तकी मूर्च्छा जानिये १ ॥

अथ कफ की मूर्छा का लक्षण ॥

मेघकी घटा युक्तसा आकाश जिसको दीखै फिर उसको मूर्छा आवै और देरमें ज्ञान होय और शरीर ठंढे पसीनेसे भर जाय और लार बहुत गिरे तौ कफ की मूर्छा जानिये ३ और सब लक्षण मिले होंय तौ सन्निपात की मूर्छा जानिये यह मूर्छा मृगी के तुल्य है सूगली वस्तु देखे विनाही होती है ॥

अथ रुधिर की मूर्छा का लक्षण ॥

मनुष्य को रुधिर की दुर्गन्धि आकर पृथ्वी और आकाश अन्धकार युक्त दीखै और सर्व्वत्र रुधिर की बास आवै निश्चल दृष्टि होय और श्वास अच्छी प्रकार नहीं आवै फिर मूर्छा होय तौ रुधिरकी मूर्छा जानिये इसी प्रकार चम्पे के फल आदि के सूंघने सेभी मूर्छा होतीहै यह इसका स्वभावहै ॥

अथ मद्यकी मूर्छा का लक्षण ॥

अधिक मद्य पीकर मनुष्य बहुत बकै और पीछे से सोजाय फिर संज्ञा जातीरहै और पृथ्वीपर हाथपैर पटकै जब तक शरीर में मद्यका अमल रहै शरीर कांपै। बहुत सोवै प्यास अधिक लगै ये लक्षण मद्यकी मूर्छा के जानिये ॥

अथ विषकी मूर्छा के लक्षण ॥

जिसने विष खाया होय उसका शरीर कांपै और नींद बहुत आवै। संज्ञा जातीरहै। मुख काला पड़जाय अतीसार होय भोजन में रुचि जाती रहै ये लक्षण विषकी मूर्छा के जानिये ॥ ७ ॥ तमोगुण और पित्तकी आधिक्यता से मूर्छा होती है ॥

अथ भ्रम का लक्षण ॥

रजोगुण और बात पित्त जब मिले हैं तब भ्रम होय है ॥

अथ तन्द्रा का लक्षण ॥

तमोगुण और वात कफ जब मिलै हैं तब तन्द्रा होती है और आखेनेत्र खुले रहते हैं ॥

अथ निद्रा का लक्षण ॥

तमोगुण और कफ मिलने से मनुष्य का चित्त खेद युक्त होता है और दसों इन्द्रियां भी खेद युक्त होकर अपने २ विषय को ग्रहण नहीं करैं तब पुरुष सोवै है ॥

अथ संन्यास का लक्षण ॥

हृदय में रहते जो वात पित्त कफ ये तीनों दोषोंसे वाणी देह मनकी चेष्टा को ग्रहण कर निर्ब्बल पुरुष को काष्ट को भांत मूर्च्छित करै हैं उसको संन्यास कहिये ॥

अथ मूर्छा का यत्न ॥

तिल आदिके सेकने से वात की मूर्च्छा जाय ॥ १ ॥

अथ पितकी मूर्छा का यत्न ॥

शीतल सर्बत आदि से पितकी मूर्च्छा जाय २ ॥ चमत्कारी मणिके धारण से मूर्च्छा जाय ॥ ३ ॥ कपूर चन्दन आदि शीतल वस्तुके लेपसे मूर्च्छा जाय ॥ ४ ॥ अथवा बेरकीमींगी शीतलचीनी। खस। नागकेसर। ये चारों ५ टंक ले फिर शीतल जलमें भिगोय सरबत कर इसमें सहत मिश्री मिलाय पियै तौ मूर्च्छा जाय ५॥ अथवा मीठे अनार के सर्बतमें मिश्री मिला कै पियै तो मूर्च्छा जाय ॥६॥ अथवा दाख के सर्बत मेंमिश्री मिलाकर पियै तौ मूर्च्छा जाय ७ ॥ अथवा साबन जलमें घोलकर अंजन करै तौ मूर्च्छा जाय ८॥ अथवा सिरसके बीज पीपल कालीमिरच सेंधानौन। ये सब गोमूत्रमें पीस अंजन करै तो मूर्च्छा जाय ॥ ९ ॥ अथवा मैनसिल। बच लहसन इन तीनों को गोमूत्र में पीस अंजन करै तौ मूर्च्छा जाय १० ॥ अथवा मैनसिल। महुआ। सेंधानौन। बच। कालीमिरच। ये सब बराबर ले जलमें महीन पीस नासदे तौ मूर्च्छा जाय ॥ ११ ॥

अथ रुधिर की मूर्छा का यत्न ॥

सब शीतल यत्नों से यह मूर्च्छा जाय है ॥ १२ ॥

अथ मद्य की मूर्छा का यत्न ॥

सर्व शीतल यत्नों से यह भी मूर्च्छा जाय है १३ ॥ मद्य की मूर्च्छा में और थोड़ीसी मद्य पिवे तौ मद्य की मूर्च्छा जाय ॥ १४ ॥

अथ विषकी मूर्छा का यत्न ॥

बिषकीमूर्च्छा वाले को मैंढ़ल कीअथवा नीले थोथे की अथवा फिटकरी की वा गरमपानी पीपल आदि की किसी प्रकार बमन कराने से बिषकी मूर्च्छा जाय ॥ १५ ॥ अथवा पीपल । सारापारा । तामेश्वर । खस । नागकेसर । ये सब बराबर ले इसमें से १ रत्ती के प्रमाण शीतल जल से देतौ सर्व्व प्रकार की मूर्च्छा जाय ॥ १६ ॥

अथ घूमनीका यत्न ॥

घमासे के काढ़े में घृत मिलाकर पिये तौ घूमनी जाय १७ ॥ अथवा आमला हड़के काढ़े में घृतडालकर पिये तो घूमनी जाय ॥ १८ ॥ अथवा सोंठ । पीपल । सोंफ । हड़कीछाल ये सब टके२ भर ले और ६। टकेभर गुड़ लेके पांच२ टं० की गोलियां बनावै एक गोली नित्य खाय तौ घूमनी जाय ॥ १९ ॥

अथ तन्द्रा का यत्न ॥

सेंधानौन । कपूर । सरसों । मैनसिल । पीपल । महुए के फूल इनको घोड़े के झागसे महीन पीस अंजनकरै तौ तन्द्रा जाय और अतिनिद्रा भी दूर होय ॥ २० ॥ अथवा सहजने के बीज सेंधानौन । सरसों । कूट । इन को बकरेके मूतमें महीन पीस नासदै तौ तन्द्रा और अति निद्रा दोनों जांय ॥ २१ ॥ अथवा कालीमिरच । सहजनेकेबीज । सोंठ । पीपलये सब बराबर ले अगस्त के रसमें महीन पीस नासदे तौ तन्द्रा जाय ॥ २२ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा सोंठ के रसमें सहत और मिश्री मिलाकर पिये तौ मूर्च्छा जाय ॥ २३ ॥ अथवा

कौंचकीफली लगाने से मूर्च्छा जाय ॥ २४—इति मूर्च्छा । भ्रम तन्द्रा संन्यास । रोगके उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥ * ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीसवाई प्रताप सिंह जी विरचिते अमृतसागर नामग्रन्थे स्वरभेद अरोचक छर्दि । मूर्च्छा
आदि भेदसंयुक्त उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणोनाम
षष्ठस्तरङ्गः ६ ॥ ॥ * ॥ * ॥ ॥ * ॥

अथ मदात्यय रोग की उत्पत्तिलक्षण यत्न ।

जो गुण विषम ज्वरमें है वही मद्य पीनेमें भीहैं बुरे प्रकार अत्यन्त कुपथ्य के साथ जो पुरुष बहुत मद्य पिये उसके मदात्यय को आदिले बहुतसे रोग उत्पन्न होते हैं इसलिये मद्य अच्छे प्रकार से पीना योग्य है इसको अच्छे प्रकार पिये तो अमृत का सा गुणकरै और बुरे प्रकार पिये तौ रोगों को उत्पन्न करै है और विषके सदृश मार डालती है इसमें दृष्टांत है कि जैसे मनुष्य समय पर अच्छे प्रकार प्रमाण का भोजन करता है वह भोजन अमृत के तुल्य गुण दायक है और शरीर को नीरोग्य करता है और उसी अन्न को पशुकी सदृश थोड़े बहुत का ज्ञान न रक्खकर खाय तौ वहीभोजन बासोको आदि ले अनेक रोगों को उपजावै है और तत्काल मारै है ऐसे ही मद्य और विष ये दोनों प्राण के हर्त्ता हैं परन्तु इसको युक्ति पूर्वक सेवन करै तौ येदोनों अमृत की तुल्य गुण करैं हैं और सर्व रोगमात्रको दूर कर सदैव पुरुषको तरुण रक्खे हैं ॥

अथ विधिसे मद्य पीने क फल ॥

प्रात समय शौचादिक कर स्नान संध्या से निवृत्त हो २ टके भर रीति से मद्य पिये और मध्यान्ह समय सचिक्कण भोजन केसाथ ४ टके भर पिये और सायंकाल को पहर भर रात्रिको भोजनके समय ८ टके भर मद्यपिये तौ यह मद्य अमृतकासा गुण करकै क्षुधा को अधिक करै है रोग को समीप नहीं आनेदेती और अच्छे भोजन के साथ प्रसन्न चित्त होकर पिये तौ जैसा

मद्यमें गुण कहा है वैसाही गुण कर हैं सो वह लिखते हैं ॥ काम बढ़ावे चित्त प्रसन्न रक्खे और तेज। बुद्धि। पराक्रम स्मृति। हर्ष। सुख। भोजन। निद्रा इन सबको मद्य बढ़ावै है और अन्यथा पिये तौ मदात्यय को आदि ले अनेक रोगों को उत्पन्न करै है सोभी लिखते हैं ॥ बकने लगै स्मरण जातारहै वाणी और शरीरकी चेष्टा विक्षिप्तकीसी करने लगै आलस्य आवै नहीं अन कहने की बातें कहै और काष्ट के सदृश पड़ा रहै अगम्या गमन करै वड़ों को नमाने अभक्ष्य भोजन करै संज्ञा जाती रहै गुप्त बात को प्रकट करदे और रोगोंको उपजा कर शरीरकी निर्बलता करै है यह अयोग्य रीतिसे होता है और जैसे मनुष्य पिये हैं सो प्रकार लिखते हैं॥ भोजन बिना किये पिये बार बार पियासी करै क्रोधकरपिये भयकर पिये तृषायुक्त होकरपिये खेदयुक्त हो पिये मलमूत्रके वेगयुक्त होकर पिये बहुत खटाईके साथपिये निर्व्वलता में पिये किसी प्रकार की गरमी से पीड़ित होकर पियेतौ उसपुरुष के मदात्यय को आदि ले बहुत रोग होते हैं ॥

अथ वात के मदात्यय रोग का लक्षण ॥

हिचकी और स्वासहोय। मस्तक कांपै। पसलीमें शूल होय निद्राआवै। बहुत बकै ये लक्षण होंयतौ वात का मदात्यय जानिये ॥ १ ॥

अथ पित्तके मदात्यय का लक्षण ॥

तृषा बहुत लगै। दाह और ज्वर होय। पसीना। मोह अतीसार होय। घूमनी आवै। शरीर का हरित वर्ण होजाय तौ पित्त के मदात्यय के लक्षण जानिये ॥ २ ॥

अथ कफ के मदात्यय के लक्षण ॥

बमन और अरुचि होय। सलौना और खट्टा अच्छा लगै तन्द्रा होय। शरीर भारी रहै। ये लक्षण होंय तौ कफ का मदात्यय जानिये ॥ ३ ॥ और यह सब लक्षण मिले होंय तौ सन्निपात का मदात्यय जानिये ॥ ४ ॥

अथ परमद का लक्षण ॥

पीनस। मस्तक दर्द। अंगों में पीड़ा होय। शरीर भारी रहै। मुख का स्वाद जतारहै। मल मूत्र रुक जाय। तन्द्रा अरुचि तृषा होय। ये लक्षण होंय तौ परमद जानिये ५ ॥

अथ पानाजीर्ण का लक्षण

अत्यन्त अफरा। वमन। दाह और अजीर्ण होय ये लक्षण होंयतौ पानाजीर्ण जानिये ॥ ६ ॥

अथ पानविभ्रम का लक्षण ॥

हृदय दूखै। अंगोंमें पीड़ा होय। कफ थूकै। मुखमे धुआं निकलै मूर्छा। ज्वर। वमन। और मस्तकमें दर्द होय। मिठाई और मद्यमें रुचि न होय। ये लक्षण होंय तौ पानविभ्रम जानीये ॥

अथ मदात्यय का असाध्य लक्षण ॥

नीचे का ओष्ट लटक जाय। शरीर ऊपर से ठंढा लगै भीतर दाह होय और मुख में तेल की वास आवै। जीभ ओष्ट। दांत। काले होंय। और नेत्र। नीले पीले और लाल होजांय हिचकी। ज्वर। वमन। पसली में शूल। खांसी। घूमनी ये लक्षण होंय तौ मदात्यय असाध्य जानिये ॥

अथ मदात्यय परमद पानाजीर्ण विभ्रम आदिका यत्न ॥

दारू की विधिमे निकाले हुए सुन्दर आसवके सेवन से बात का मदात्यय जाय यहां यह दृष्टान्त है कि अग्निके जलने वाले को अग्निहीसे तपावै तौ अच्छा होय अथवा बिजौरे की केसर अमलवेत। मीठाबेर। मीठाअनार। अजवाइन। जीरा। सोंठ इन तीनों कोमहीन पीस बिजौरादिक के रस की इनमें पुटदे फिर इस चूर्ण को अनुमान माफिक सुन्दर मद्य में डाल कर विधि पूर्वक पिये अथवा इसमें सेंधानौन मिलावे अथवा सत्तू के साथ मद्य पिये और पुरानी मद्यपिये अथवा कालानौन। सोंठ कालीमिरच। पीपल। इनको महीन पीस चूर्ण कर अनुमान माफिक मद्यमें मिलाय पिये तौ बात

का मदात्यय जाय २॥ अथवा चव्य। कालानोन। भुनीहींग। सोंठ। अजवाइन। इनको महीन चूर्णकर मद्यमें मिलाकै पिये तौ बातका मदात्यय जाय॥ ३॥ अथवा लवा तीतर मुर्गेका मांसभक्षण करने से बातका मदात्यय जाय॥ ४॥ अथवा सर्व गुणसम्पन्न यौवनवती १६ वर्षकी स्त्रीसे संभोग करै तौ बातका मदात्यय जाय॥ ५॥ यह यत्न भाव प्रकाश मेंलिखा है अथवा दाख। अनार। छुआरा। महुआ। इनको दारू मिश्री मिलाकैंपिये तौ बातका मदात्यय जाय॥ ६॥ अथवा गौका मट्ठा मिश्री मिलाकै पिये तौ बातका मदात्यय जाय॥ ७ यह सारसंग्रह में लिखा है॥

अथ पित्तके मदात्यय का यत्न॥

सर्वशीतल यत्नों से पित्तका मदात्यय जाय॥ अथवा शीतल जल में मिश्री और सहत मिलाकै पिये तौ पित्तका मदात्यय जाय॥ ९॥ अथवा मीठे अनार के रसमें मिश्री मिलाकै पिये तौ पित्तका मदात्यय जाय॥ १०॥ अथवा खरगोश। हरिण। लवा। इनका मांस खाय तौ पित्तका मदात्यय जाय ११॥ अथवा बकरे के शोरवे में साठी के चावल खाने से पित्तका मदात्यय जाय॥ १२॥

अथ कफके मदात्यय का यत्न॥

चन्दन। खस। इनके लेपसे कफका मदात्यय जाय॥ १३॥ अथवा जौ। गेहूं का पथ्यखाने से कफका मदात्यय जाय॥ १४॥ अथवा वमन और लंघन करनेसे कफका मदात्यय जाय॥ १५॥ अथवा कलानोन। जीरा। अमलबेत। तज। इलायची। कालीमिरच। मिश्री। इन सबको महीनपीस जलकेसाथलै तौ कफका मदात्यय जाय॥ १६॥

अथ सन्निपातके मदात्यय का यत्न॥

आमलेके रसमें पारे और गन्धक की १ टंक कजली मिलाकै पिये तौ सन्निपातका मदात्यय जाय॥ १७॥

अथ पान विभ्रम का यत्न ॥

दाख केसर्व्वतमें अथवा कैथके सर्व्वतमें अथवा अनारके सर्व्वतमें सहत मिलाकै पियेतौ पानविभ्रम जाय ॥ १८ ॥ यह वृन्द में लिखा है ॥

अथ धतूरे के फलके मद का यत्न ॥

पेठेके रसमें गुड़ मिलाकै पियेतौ धतूरेका मद जाय १९ अथवा दूध में मिश्री डालकर पियेतौ धतूरे और भंगका मद जाय २०॥

अथ भंग के मदका यत्न ॥

कपास की जड़का रस अथवा बैंगनकीजड़ कारस अथवा पतला मट्ठा अथवा घृत अथवा नींब का रस मिश्रीके सर्व्वत में मिलाकै पिये तौ धतूरे और भंगका मदजाय ॥ २१ ॥

अथ बिषके मदका यत्न ॥

निबौली की मींगी और नीलाथोथा १ मा० इन दोनों को पीसकर कांजी के पानी में मिलाय पिये तौ सर्व्व बिषभावका मदजाय ॥ २२ ॥ यह यत्न वैद्योपचार ग्रंथ में है—इति मदात्यय परमद पानाजीर्ण पानविभ्रम धतूरा भंग बिषमद इन सबकी उत्पति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ दाह रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न

दाह ७ प्रकार का है पित्त का १ दुष्ट रुधिर के बढ़ने का २ शस्त्रादिक से निकला जो रुधिर उससे पूर्ण हुआ जो कोष्ट उसका ३ मद्यादिक के पीनेका ४ तृषा के रोकनेका ५ धातु क्षय का ६ मर्म्म की चोट लगने का ७ ॥ इति ॥

अथ पित्तके दाह का लक्षण ॥

जिस में पित्तज्वर के सब लक्षण मिलैं उसे पित्त का दाह जानिये ॥ १ ॥

अथ रुधिर के दुष्टपनेसे उपजा जो दाह उसका लक्षण ॥

सब शरीर में दाह लगजाय और सब देह में धुआंसा निकलै और शरीर की तामेकीसी आकृति होय और तामे

के रंग सदृश नेत्र होंय। मुखमें रुधिर कीसी गन्धआवै औ
सब अंग अग्नि की भांत जलें ये लक्षण होंय तौ दुष्ट रुधि
का दाह जानिये ॥ २ ॥

अथ शस्त्रादिक से निकला जो रुधिर उस्से पूर्ण हुआ जो कोष्ठ उसके
दाहकालक्षण ॥

रुधिर से कोष्ट भरजाय और दाह लगजाय वह असाध्य है
और मर जाय ॥ ३ ॥

अथमद्यादिक के पोने के दाह का लक्षण ॥

हृदय की पवन पित्त और रुधिर सेमिल सब त्वचा में प्राप्त
होकर सब शरीर में भयंकर दाह करे है ॥ ४ ॥

अथ पित्तके रोकनेके दाह का लक्षण ॥

तृषाके रोकने से शरीर का जल और धातु क्षीण होता है
तब शरीर में गर्मी बढ़ कर शरीर को दग्ध करे है त
उसका चित्त मन्द होता है और गला तालू सूखकर जीभ
कोबाहर निकाल कर कांपने लगै है ॥ ५ ॥

अथ धातुक्षयके दाह का लक्षण ॥

धातु क्षय के दाह से मूर्छा और तृषा होकर मुख क
स्वर बैठ जाय शरीर की सामर्थ्य जाती रहै तो यह दाह
असाध्य है ॥ ६ ॥

अथ मर्म्म की चोट लगने के दाह का लक्षण ॥

सिरसे पेड़ू को आदि ले मर्म्म स्थान में चोट लगने से जो
दाह उत्पन्न होय वह असाध्य जानिये ॥

अथ दाह का असाध्य लक्षण ॥

शरीर ठंढा हो जाय भीतर दाह होय तो वह मनुष्य
मर जाय ॥

अथ दाह का यत्न ॥

१००० बार का अथवा १०० बार का धोया घी शरीर के
मर्द्दन करै तौ शरीर का दाह जाय ॥ १ ॥ अथवा जव के
सत्तू में मिश्री मिलाके खाय तौ दाह जाय॥ २ ॥ अथवा

आमले के पानी में कपड़ा भिजोकर ओढ़ै तौ दाह जाय ॥ ३ ॥ अथवा खस और रक्तचन्दन घिसकर शरीर के लेपन करै तौ दाह जाय ४ ॥ अथवा केले के पत्तों की वा कमल की पंखड़ियोंकी सेज पर सोवै तौ दाह जाय ॥ ५ ॥ फवारा चादर आदि जल क्रीड़ा करने से दाह जाय ॥ ६ ॥ अथवा खसखाने में रहनेसे भी दाह जाता रहै ॥ ७ ॥ अथवा शीतल जल के पीनेसे दाह जाता है ॥ ८ ॥ अथवा उपवन आदि शीतल स्थानमें रहनेसे दाह जाता है ९ ॥ अथवा चन्दन। पित्तपापड़ा। खस। कमलगट्टा। धनियां। सौंफ। आंवला। इनका २॥ टंक भरका काढ़ा कर उसमें सहत मिश्री मिलाकै पिये तौ दाह दूर होय ॥ १० ॥ ये सब भाव प्रकाश में लिखे हैं ॥

अथ रुधिर के विगड़ने के दाह का यत्न ॥

उसके फस्त लगवादे तौ बिगड़े रुधिर का दाह दूर होय ११ ॥ अथवा पारा शोधीगन्धक। भीमसेनी कपूर। चन्दन। खस। नागरमोथा। ये सब बराबर ले पीछे। पारे औरगन्धक की कजली करै उस कजली में ये औषधि डालै पीछे इसको जल से गोली बांधे १ गोली मुख में रख कर चूसे तौ शरीर के भीतर का दाह जाय यह दाहके दूर करने का रस है १२ अथवा पारा १ तोला तामेश्वर १ तोला अभ्रक १ तोला शोधीगन्धक १ तोला प्रथमपारे और गन्धक की कजली करै फिर ये सब औषधि उसमें मिलावै फिर इसमें नागरमोथे के रस की १ पुट दे फिर पीपल के रसकी १ पुट दे फिर मीठे अनारके रसकी १ पुट दे फिर बड़के अंकुरों को १ पुट दे फिर चन्दन के रसकी १ पुट दे फिर सहदेई के रसकी १ पुट दे पीछे दाख के रसकी ७ पुट दे फिर छायामें सुखाय चने प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तौ दाह। अम्लपित्त। मूत्रकृच्छ्र। प्रदर। प्रमेह इन सब रोगों को यह चन्द्रकला रस दूरकरै है ॥ १३ ॥ इति दाह रोग ॥

अथ उन्माद रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ।

विरुद्ध भोजन से। अपवित्र भोजन से। दुष्ट भोजन से और देवता गुरु। ब्राह्मण। तपस्वी। राजा इनके तिरस्कारसे और किसी प्रकार के भय और हर्षसे भी और धतूरा भंगआदिके खानेंसे। मनुष्योंका चित्त बिगड़ैहै फिर वह बिगड़ा हुआ चित्त वात। पित्त। कफ इन तीनोंसे मिल कर पुरुष को मद युक्त करदे है अर्थात् मनुष्य को दङ्गल में कर देता है उसको लौकिकमें हौलदिली कहते हैं वह हौलदिली वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ सन्निपातसे ४ मनकेदुःखसे ५ विषखानेसे ६ छः प्रकार से होती है ॥ ६ ॥

अथ उन्माद का स्वरूप ॥

क्षीण पुरुष के विरुद्ध भोजन करनें के पीछे वात पित्त कफ दुष्ट होकर बुद्धको नष्ट करै हैं फिर उसके हृदय में पीड़ा कर कै मनके लेचलनें वाली नसों को मोहित करै हैं तब मनुष्य का चित्त डामाडोल होकर थिर नहीं रहता इसको हौलदिली कहते हैं ॥

अथ उन्माद का पूर्व्व रूप ॥

बुद्धिस्थिर रहै नहीं शरीर का पराक्रम जाता रहै ये लक्षण होंय तो जानिये कि पुरुषके उन्माद होगा ॥

अथ वातके उन्माद का लक्षण ॥

रूखो और ठंढो अधिक वस्तु खाने और अधिक जुलाब लेनें और धातुकी क्षीणतासे वात बढ़ैहै फिर वह वात हृदय को बिगाड़कर बुद्धि और स्मरण को तत्काल नष्ट करै हैं तब मनुष्य बिनाही कारण हंसै गावै नाचै अथवा हाथ मुखसे बन्दर की सी चेष्टा करनें लग जाय और रोनेंलग जाय शरीर कठोर और काला लाल पड़जाय और भोजन पचने के पीछे ये रोग अधिक बढ़ै। ये लक्षण होंय तो वात का उन्माद जानिये ॥

अथ पित्त के उन्माद का लक्षण ॥

अजीर्णमें भोजन करनेसे और कड़ुआ। खट्टा। गरम भोजन

से पित्त बढ़कर मनुष्य के हृदय को बिगाड़ कर उन्माद को करै है तबवह पुरुष किसीकी बात को माने नहीं और नंगा होकर सबको मारने लगै और शरीर गरम होजाय और शीतलवस्तु खानेकी इच्छारहै और शरीर पीला होजाय ये लक्षण होंय तौ पित्त का उन्माद जानिये ॥ २ ॥

अथ कफके उन्माद का लक्षण ॥

क्षुधा मन्द होय और बहुत खाय। काम करनेंमें आलस्य आवै। उसका पित्त कफसे मिलकर मर्म्म स्थानोंको बंधावैहै तब पुरुषकी बुद्धि और स्मरणको नाश करकै उसके चित्तको बिगाड़ उन्मत्त करदेहै तबवह पुरुषकम बोलताहै और क्षुधा जाती रहै। स्त्रियाँ प्यारी लगैं एकान्त स्थान अच्छालगै। नींद अधिक आवै। छर्दि होय। बल जाता रहै। नखादिक स्वेत होजांय। ये लक्षण होंय तौ कफ का उन्माद जानिये ३ ॥ और येसम्पूर्ण मिलेलक्षण होंय तौ सन्निपातका उन्माद जानिये ॥ ४ ॥

अथ मनके दुःखके उन्माद का लक्षण ॥

चोरों के भयसे। राजके भयसे। प्रबल शत्रुके भयसे। और भयानक कर्म्मकेभय से। अथवा धनपुत्रादिक के नाशसे अधिक मैथुन से जब पुरुष के चित्तमें चोट लगै है तब उस पुरुषके मनमें चोट लग कर मनकोबिगाड़ कर उन्मत्त करदे है तब वह पुरुष जो चाहता है वही अस्तव्यस्त बकता है और संज्ञा जाती रहै। और गाने हंसनेलगजाय। ये लक्षण होंय तौ मनके दुक्ख का उन्माद जानिये ॥ ५ ॥

अथ बिष खाने के उन्माद का लक्षण ॥

लालनेत्रहोंय। शरीरकाबल और सब इन्द्रियों की कान्ति जातीरहै। गरीबहोजाय। मुख काला पड़जाय। ये लक्षणहोंय तौ बिषखानेका उन्माद जानिये यह उन्माद वालामरजाय ॥ ६ ॥

अथ उन्माद मात्र का असाध्य लक्षण ॥

कै तौ नीचा या ऊंचाही मुख रक्खे और शरीर का बहु

सोचजातारहै निद्राआवै नहीं। जागाही करै ये लक्षण होंय तौ वह पुरुष मरजाय ॥ ७ ॥

अथभूतादिक के लगने से उपजा जो उन्माद उसका लक्षण ॥

जिस पुरुषके भूतादिक लगा होय उस पुरुषकी बाणी मनुष्य कीसी नहोय किन्तु बिचित्र होय और उसका पराक्रम और शरीर की चेष्टा और उसके ज्ञान विज्ञान भी विचित्र होंय ये लक्षण होंय तौ भूतादिक के लगने का उन्माद जानिये १ ॥

अथ जिसके शरीर में किसी देवता का प्रबेश हुआ होय उसके उन्माद का लक्षण ॥

सब बातोंसे वह संतुष्ट और पवित्र रहै और अच्छे पुष्पादिककी माला धारण करै सुन्दर अतर सूंघाकरै और नेत्रबन्दन होंय और बिना पढ़ा हुआ संस्कृत बोलै और शरीर में तेज बढ़ै और जो मांगे उसको बर दे और ब्राह्मण बनजाय जिसमें ये लक्षण होंय उसके देवता के प्रबेश का उन्माद जानिये २ ॥

अथ जिसके शरीर में असुरने प्रबेश किया होय उसके उन्मादका लक्षण ॥

पसीना आवै और ब्राह्मण गुरु देवता इनमें दोष निकालै कुटिल दृष्टिहोय। किसी प्रकार का भय न होय खोटे मार्ग में दृष्टि होय किसी प्रकार तृप्तिहोय नहीं भोजनादिक में दुष्टात्मा होय। ये लक्षण जिसमें होंय उसके असुर लगा हुआ जानिये ॥ ३ ॥

अथ गन्धर्व लगने से उपजा जो उन्माद उसका लक्षण ॥

दुष्टात्मा होय और पुलिन बनमें रहने से चित्त प्रसन्नरहै आचारमें मग्नरहै गाना और नाचना सुहावै। थोड़ा बोलै ये लक्षणहोंय तौ गन्धर्व लगा जानिये ४ ॥ और यही यक्षग्रह का लक्षण जानिये ॥ ५ ॥

अथ जिसके शरीर में पितृ दोषहोय उसका लक्षण ॥

डाभके ऊपर पिण्ड २ धराकरै। सतोगुणीहोय। तर्पण किया करै। मांस गुड़ और खीर के भोजन में रुचि रहै ये लक्षण होंय तौपितृ दोष जानिये ॥ ६ ॥

अथ सती का दोष जिसके होय उसका लक्षण ।

मन निश्चल रहै नहीं । सन्तानादिक का अवरोध करै । सतीकी वार्त्ता सुहावै । बोलैनहीं । बोलै तौ बरदे और पवित्र रहै अच्छी वस्तुओं में मन रहै । ये लक्षण होंय तौ सतीका दोष जानिये ॥ ७ ॥

अथ क्षेत्रपाल के दोषका उन्माद ।

मुख नासिका में रुधिर चलै श्मशानकी भस्म मस्तकमें लगावै खोटास्वप्न होय । उदरमें पीड़ारहै । और सन्धि २ में पीड़ा रहै । चित्त स्वस्त रहै नहीं ये लक्षणहोंय तौ क्षेत्रपाल का दूषण जानिये ॥ ८ ॥

अथ बीजासणी देवी के दोष से उपजा जो उन्माद उसका लक्षण ॥

पक्षाघात होय । शरीर और रुधिर सूखजाय । मुख और पैर टेढ़े होजांय । शरीरक्षीण होजाय । स्मरणादिक जाता रहै ये लक्षण होँय तौ बीजासणी का दोष जानिये ॥ ९ ॥

अथ कामण के दोष से उपजा जो उन्माद उसका लक्षण ॥

कन्धा और मस्तक भारीहोय । मन स्थिर न रहैसर्व्व अंग क्षीण होजांय । नासिका और हाथ पैरों में दाहहोय । वीर्य्य नाश होय । शरीर के आठों अंग में सुईकेसे चमके चलते रहैं । शरीर सूखजाय ये लक्षण होंय तौ कामण के दोषका उन्माद जानिये ॥ १० ॥

अथ शाकिनी डाकिनीके लगनें से उपजा जो उन्माद उसका लक्षण ॥

सब अंगों में पीड़ाहोय । नेत्र बहुतदूखें । मूर्च्छा होय । शरीर कांपै । रोवै । बकै । भोजन में अरुचि होय । हंसे स्वरभंग होय ।शरीरका बल और क्षुधा जातीरहै घूँसनो आवै । ज्वरभीहोय ये लक्षण होंय तौ साकिनी डाकिनी का दोष जानिये ॥ ११ ॥

अथ कुगति से मरा पुरुषजो प्रेत होय उस्से उपजा जो उन्माद तिसका लक्षण ।

सवेरे ही घरमें से उठ २ भागे खोटा वचन कहै बहुत

बकै। शरीर कांपै रोवै और खाय पिये नहीं बुरे प्रकार श्वास लिया करै। मनमें आवै सो खाय। ये लक्षण होंय तौ प्रेत का दोष जानिये ॥ १२ ॥ ॥

अथ जिसके राक्षस लगा होय उसके उन्माद का लक्षण ॥

मांस खानें और रुधिर पीनेमें जिसकी रुचि रहै। बहुत दुष्टता से बोलै। बहुतसा शूरपना बढ़ जाय क्रोध बहुत होय रात्रिमेंअकेला फिरै। अपवित्र रहै। ये लक्षण होंय तौ राक्षस लगा जानिये ॥ १३ ॥

अथ ब्रह्मराक्षस जिसके लगा होय उसके उन्माद का लक्षण ॥

देवता ब्राह्मण गुरू इनसे शत्रुता रक्खे। वेद और वेदान्त का जानने वाला आप होजाय औरअपने शरीर को आपही दुःखदे और मारै नहींये लक्षण होंय तौ ब्रह्मराक्षस लगा जानिये ॥ १४ ॥

अथ पिशाच लगने के उन्माद का लक्षण ॥

ऊंचे हाथ रक्खे। शरीर कृश होजाय। कुछका कुछ मिथ्या बकै शरीर में दुर्गन्ध आवै। अपवित्ररहै। अति चंचल होजाय बहुत खाय। उद्यानमें मनरहै। भ्रमै बहुत रोवै ये लक्षण होंय तौ पिशाच लगा जानिये ॥ ॥ १५ ॥

अथ उन्माद का असाध्य लक्षण ॥

नेत्र कटेसे होजांय। डोला करै। मुखमें झागआवै। निद्रा बहुत आवै। गिर गिर पड़ै कांपै ये लक्षण होंय तौ असाध्य जानिये ॥ और पूर्णिमा में अधिक रोग होंय तौ देवता का दोष जानिये ॥ और सायंकालको कोई लगै तो असुर का दोष जानिये ॥ पड़वा को विकल होय तौ यक्षका दोष जानिये ॥ रात्रिमें ये लक्षण होंय तौ पिशाचका दोष जानिये ॥

अथ इन सबके लगने का प्रकार लिखते हैं।

जैसे मनुष्यादिकों का प्रतिबिम्ब दर्पणादिक में प्रवेश करै है तैसेही प्राणीमात्र में शीतोष्ण घुसजायहै और

जैसे आतशी सोसे में सूर्य्य की किरण प्रवेश कर अग्नि को उत्पन्न करै है तैसे ही मनुष्यादिकों के शरीर में भूत प्रेतादिक प्रवेश कर जाय हैं और दीखते नहीं परन्तु चेष्टादिकों से जान पड़ते हैं ॥

अथ उन्माद को आदिले इन सबका यथा यत्न ॥

घृतादिक के पीने से बात का उन्माद जाय ॥ १ ॥ अच्छे जुलाब के लेनेसे पित्त का उन्माद जाय ॥ २ ॥ बमन के करने से कफ का उन्माद जाय ॥ ३ ॥ और लिंग और गुदा में पिचकारी देने से उन्माद जाय इसको बस्तिकर्म्म कहते हैं ॥ ४ ॥ अथवा लौनिये के रसमें बराबर का गुड़ मिलाय गौका मट्ठा मिला के पिये तौ उन्माद जाय ५ ॥ अथवा करैटी की डालियों का रस निकाल पिये तौ उन्माद जाय ॥ ६ ॥ अथवा कडुए तेलका मर्द्दन करकै धूपमें बैठै तौ उन्माद जाय ७ ॥ अथवा कोई अद्भुत वस्तु दिखावै वा किसी इष्ट मित्रका नाम सुनावै तौ उन्माद जाय ॥ ८ ॥ अथवा गरम घृत वा गरम तेल या गरम जलको स्पर्श करावै तौ उन्माद जाय ॥ ९ ॥ अथवा कौंचकी फली का स्पर्श करावै तौ उन्माद जाय १० ॥ अथवा कोड़े की मार मारै तौ उन्माद जाय ॥ ११ ॥ अथवा शस्त्रसे सर्पसे। सिंहसे। वा रोकनेसे किसी प्रकारसे डरपावै तौ उन्माद जाय ॥ १२ ॥ जिस प्रकारसे चित्त ठिकाने आवै सो सर्व दुःखसे प्राणका रखना भलाहै इस कारण ये यत्न अच्छे हैं अथवा कूट। असगन्ध। सैंधानौन। अजमोद। दोनोंजीरे। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। पाढ़। संखाहूली। सबको। बराबर ले और इन सबको बराबर बच ले फिर सबको महीन पीस उसमें ब्राह्मीके रसको १० पुटदे फिर छायामें सुखाय २ ॥ टं० प्रमाण घृत। सहत के साथ इस सारस्वत चूर्णको १५ दिनले तौ सर्व्व प्रकार का उन्माद जाय और यह चूर्ण सर्व्व बातके विकार और प्रमेह को दूरकर बुद्धिको बढ़ाकै कविता

शक्ति करैहै यह चूर्ण ब्रह्माजीका बनाया है—इति सारस्वत चूर्णम्॥ अथवा त्रिफला।पित्तपापड़ा। देवदारु।सालिपर्णी। जवासा। तगर। हल्दी। दारुहल्दी। इन्द्रायणकीजड़। गौरीसर। चन्दन।पद्माक।कूट कमलगट्टे। इलायची। कटेली। मंजीठ। पत्रज। निसोत।बाय बिड़ंग। रुदन्ती। नागकेसर। मुलहटी। पृष्टपर्णी।चमेलीके फूल। ये सब औषधि धेले २ भरले फिर इन औषधियों को ४ सेर जलमें कूट डाले और इसमें १ सेर गौका घृत डालकर मधुरी आंचमें पकावै जब वह जल भस्म होजाय और घृतमात्र रहजाय तब उतारले फिर ५ टं० प्रतिदिन भोजनके साथ खाय तौ उन्माद। मृगीरोग।पाण्डु रोग ये सब जांय—इति कल्याण घृत॥१४॥ अथवा सोंठ।कालीमिरच।पीपल। हींग।वच।सिरसकेबीज।सेंधानोन।सरसों।इन सबको बराबर लेके गोमूत्रमें महीन पीस अंजन करैतौ उन्माद जाय १५॥यह यत्न बैद्यविनोदमें है॥अथवा सोंठ।अजमोद। हल्दी। दारुहल्दी। सेंधानोन। वच। मुलहटी। कूट। पीपल।जीरा।ये सब बराबर ले गोमूत्र में महीन पीस २॥टं० ले घृतकेसाथ खाय तौ उन्माद जाय॥और उसकी जिह्वामें सरस्वती आय बसे—इति बिस्वाद्य चूर्ण १६॥ यह भावप्रकाश में लिखाहै॥ अथवा ब्राह्मीकारस पेठे कारस अथवा पीपलामूल का रस। अथवा संखाहूलीकारस १० टं० पिये तौ उन्माद जाय॥१७॥ अथवा वच।कूट। संखाहूली।धतूरे की जड़।ये सब बराबर लेके इसमें ब्राह्मी के रस की ७ पुट दे फिर काले धतूरे के बीज के तेल की ५ पुट दे फिर इसको नास देतौ उन्माद दूर होय १८॥ यह बैद्य रहस्य में लिखा है अथवा सिरसकेफूल। मंजीठ। पीपल।सरसों।वच।हल्दी।सोंठ।इनसबको बराबर ले बकरे के मूत में महीन पीस गोली बांधले फिर एकगोली घिसकर अंजन करै तौ उन्माद जाय॥१९॥ यह योग

रत्नावली में है अथवा भुनी हींग। कचानौन । सौंठ कालीमिरच। पीपल। ये सब बराबर दो २ टके भरले फिर ४ सेर गौका घृत और घृतसे चौगुना गौकामूत्र ले फिर इन सबको इकट्ठा कर मधुरी आंचसे पकावै जब उसमें से गोमूत्र जल जाय और घृतमात्र रह जाय तब उतार ५ टं० भोजनके समय ले तौ उन्माद दूर होय २०॥ इति उन्माद रोगकी उत्पत्ति का लक्षण यत्न संपूर्ण॥

अथ भूतादिक के उन्माद के मंत्र तंत्र सर्वशास्त्रके अनुसार लिखते हैं॥

प्रथम भूतादिक का जो यत्न करै वह आप पवित्र हो अपनी रक्षा करकै यत्न करै कालीमिरच। पीपल। सेंधानौन। गोरोचन। इनको महीन पीस सहत में अंजन करै तौ भूत प्रेत जांय॥ १॥ ज्वरके प्रकरण में भूत ज्वरके ऊपर श्री नृसिंहजी का दिव्य मंत्र लिखा है उससे भूत प्रेतादिक के सब उन्माद दूर होंय हैं सो देख लीजो अथ उड्डीस में इनका साबरमंत्र महादेव जीने लिखाहै सो लिखते हैं-ओं नमो भगवते नारसिंहाय अतुलवीर पराक्रमाय घोर रौद्र महिषा सुर रूपाय त्रैलोक्य डम्बराय रौद्र क्षेत्र पालाय हो हो० क्रो क्रो० क्रमित ताड़य २ मोहय २ द्रुभि २ क्षोभय आभि २ साधय २ क्रौं हृदये आभक्षय प्रीति ललाटे बन्धय क्रौं हृदयेस्तंभय २ किलि २ ईं क्रौं डाकिनीं प्रच्छादय २ साकिनीं प्रच्छादय २ भूतं प्रच्छादय २ अभूति अदूति स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय २ ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय२ आकाशं प्रच्छादय २ सिंहिनी पुत्रं प्रच्छादय २ एते डाकिनीं गृहं साधय २ साकिन गृहं साधय २ अनेन मंत्रेण डाकिनी साकिनी भूत प्रेत पिशाचादि एकाहिक द्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पञ्चमिक वातिक पैत्तिक श्लेष्मिक सन्निपात केसरी डाकिनी ग्रहादि मुंच २ स्वाहा गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाच इस मंत्र से २१ बार मोरपंख से अथवा लोहेकी वस्तु,

से अथवा छप्परके पानीसे झाड़ादे तौ भूतादिक के सब उन्माद दूर होंय २ ॥

अथ डाकिनी साकिनी के बकरने का मंत्र ॥

ओं नमो आदेश गुरुको ओं नमो जय २ नृसिंह तीन लोक चौदह भुवन में हाथचाव होठचाव नयन लाल २ सर्ववैरी पछाड़ मार भक्तनकी प्रणराख आदेश २ पुरुषको ॥ इसमंत्र की क्रिया ॥ यह मंत्र पढ़ रोगीको बैठाय मंत्र से पानी मंत्र आप पवित्र हो उस रोगी को पिलावै फिर उसे पूछै तौ साकिनी डाकिनी निश्चय बोले ॥ ३ ॥

अथ डाकिनी बकराने का मंत्र ॥

ओं नमो चढ़ो २ शूरवीर धरती चढ़ पाताल चढ़ि पग पाली चढ़ा कौन २ वीर चढ़ा हनुमन्तवीर चढ़ा धरती चढ़ो पग पाणा चढ़ी एड़ी चढ़ो एड़ी चढ़ी मुरवेचढ़ी मुरवे चढ़ो पीड़री चढ़ो पीड़री चढ़ों गोड़ा चढ़ी गोड़ाचढ़ी जांघ चढ़ी जांघ चढ़ी कटिचढ़ो कटिचढ़ी पेट चढ़ी पेटचढ़ो पेटसेधरणिचढ़ी धरणिसे पांसल्यांचढ़ी पांसल्यांसे हिये चढ़ी हियेसे छाती चढ़ो छाती से खवाचढ़ो खवासे कंठचढ़ी कंठ से मुखचढ़ी मुखसे जिह्वाचढ़ी जिह्वासे कानों चढ़ी कानों से आंखों चढ़ो आंखोंसे ललाट चढ़ी ललाटसे सीसचढ़ी सीससे कपाल चढ़ी कपालसे चोटीचढ़ी हनूमान नारसिंह करबारामा चल्यां वीर समद वीर दीठवीर आगियावीर सोसत्ता वीर ये वीर चल्याइस मंत्र से बकरावै तौ उस पुरुष में वह निश्चय आयबोले ॥ ४ ॥

अथ डाकिनी के चोट लगने का मंत्र ॥

ओं नमो महाकाया योगिनी योगिनी पार साकिनी कल्प तृतीयदृष्टियोगिनी सिद्धरुद्राय कालदंडेनसाधय २ मारय २ चूरय २ अपहर २ साकिनी सपरिवारंनमः ओं ग्रिं ॥ ६ ॥ ओं क्रीटं क्रो क्रोटफट स्वाहा ॥ इसमंत्रकी क्रिया पवित्र होकर ७ वार गूगलको मंत्रितकर ओखलीमें डाल मूसलसे कूटे तौ

वह चोटैं डाकिनीके लगें औरइस मंत्रसे सिर मूडे तौ डाकिनी कामाया मूड़ा जाय और इसी मंत्रसे उड़दों को पढ़कर डाले तो उसके घर आय बोलै और जलने लगै और उन्हीं उड़दों को पढ़ कर आंखों पर छोड़ै तौ वह खेल उठै ॥ १५ ॥

अथ डाकिनी के दोष दूर होने का झाड़ा ॥

मोरकेपंखसे अथवा लोहेकी छुरीसे दीजिये। ओं नमो आदेश गुरूका डाकिनी सिहारी किसने मारी जती हनुमन्तने मारी कहां जाय इनको किनदेखी जती हनुमन्तने देखी सातवें पाताल गई सतावें पाताल से कौन पकड़लाया जती हनुमन्त पकड़ लाया एक तालदे एक कोठा तोड़ा दो तालदे दो कोठे तोड़े तीनतालदे तीन कोठे तोड़े चार तालदे चार कोठे तोड़े पांचतालदे पांच कोठे तोड़े। छःतालदे छः कोठे तोड़े सातवां कोठा तोड़ देखेतौ कोने में खड़ी है डाकिनी सिहारी भूत प्रेत चला जती हनुमन्त तेरे झाड़े से चला ओं नमो आदेश गुरूका गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ ६

अथ डाकिनी के दूर होने का यंत्र ॥

७	७	९	८
ऽ	५	४	६
४	॥।	ऽ	११
७।	५	१॥	॥

इस यंत्रको अच्छे पानी में घोल पिलावै तो डाकिनी दूर होय ॥

१ऽ	६६	१	५
७	४	७	९१
ऽ	=	०।	०।०
९	१	ऽ	४०

इस यंत्रको बालक के गले में बांधे ॥

अथ प्रत्यक्ष हाज़रायत लिखते हैं॥

हाजरायत के मंत्र। ओंनमः कामाख्यायै सर्व्व सिद्धायै अमुककर्म्म कुरु २ कुरु स्वाहा अस्य मंत्रस्य वन्हिकं ऋषिः जगतीछंदः कामाख्याः देवता प्रणवः शक्तिः अव्यक्तकीलकं अमुक कर्म्मसि जपे बिनियोगः। ओं अंगुष्ठाभ्यांनमः कामाख्यायै तर्ज्जनीभ्यांनमः स्वाहासर्व सिद्धिदायै मध्यमाभ्यां वषट् अमुक कर्म्म अनामिकाभ्यां हुं कुरु २ कनिष्टिकाभ्यां वौषट् स्वाहा करतलकर पृष्टाभ्यां अस्त्रायफट्। ओं नमो हृदयाय॥ कामाख्यायै शिरसे स्वाहा सर्व्व सिद्धिदायै शिखायै वषट् अमुककर्म्म कवचायहुं कुरु २ नेत्रत्रया वौषट् स्वाहा अस्त्राय फट्॥

अथ ध्यानं॥

योनिमात्र शरीराय कंजुवासिनि कामदा। रजस्वला महातेजा कामाक्षीध्येयतां सदा॥ अस्यमंत्रस्य सहस्रं जपः गुड़हल के फूलोंकी १००० आहुति सेढ़लकी राखकर रक्त रुईमें मिलाके उसकी बत्ती करनी उसबत्ती को तेलमें दीपकमेंधरै उसदीपक की पूजाकरै दीपक के आगे ८ वर्ष का अथवा १० वर्षका बालक पवित्र शुद्धवंश देवता गणका स्थापन करना और आपभी पवित्र होकर सेढ़ल के फूल के ऊपर इस मंत्र के संकल्पका जलडाले और दीपकके आगे यह यंत्र लिख यंत्र की पूजा करै और यह यंत्र बालक के दिखावै और उसकी हथेली में सेढ़ल की राख का तेलमें सान कर मसले फिर उसे पूछै जो वह देखे सो सत्य २ समाचार सब कहै॥ यह यंत्र हाजरायत का है॥

१	८	३	८	त
५	६	३	६	र
७	२	८	क	र२
७	४	५	४	लो

अथवा आठ दश वर्ष की पवित्र कुलकी देवतागण कन्या को बैठावै उसे दीखै सो कहै दशांश तर्पण दशांश ब्राह्मण भोजन—इति हाजरायत की विधि संपूर्ण॥ ७॥

यह सत्य हामरावत है सर्व्व उड्डीसमें लिखो है ॥ अथवा नींबके पत्र । बच । हींग । सांप की कांचली । सरसों इनकी धूनीदे तौ डाकिनी भूतादिक सर्व्व दोष जांय ॥ ८ ॥ अथवा कपासका काकड़ा । मोरकी चन्द्रिका । कटेली । शिवकानिर्माल्य । नकछा । तज । कूड । बैलका दान्त । मार्जार की बिष्टा । तुष । बच । केश । सर्पकीकांचली । गौका सींग । हाथी का दान्त । हींग । कालीमिरच । इनसबको बराबरले कूटकार इसकी धूनी देतौ सब प्रकार के भूतादिक के दोष दूर होंय । यह माहेश्वर धूप है और चक्रदत्तमें लिखोहै ९ ॥ अथवा पीपल कालीमिरच । सेंधानौन । गोरोचन । इनको सहत में पीस अंजन करै तौ सर्व्व भूतादिक के दोष दूरहोंय ॥ १० ॥ अथवा कणगचकीजड़ । दारुहल्दी । सरसों । कूट । हींग । बच । मंजीठ । त्रिफला । सोंठ । कालीमिरच । पीपल । प्रियंगुके फूल इनको बराबर ले बकरे के मूत्र में पीस नास दे अथवा अंजनकरै तौ सर्व्व भूतादिकके दोषजांय ११ ॥ अथवा गोरख । गोखरू बिनौले अथवा काकड़ेको गोमूत्रमें पीस नास लेतौ ब्रह्मराक्षस का दोष नाश ॥ १२ ॥ अथवा संखाहूली की जड़ को चावल के पानी में अथवा घृतमें पीस उसको नासदे तौ भूतादिक का दोष जाय १३—इति भूतादिक के उन्माद की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ मृगी रोगकी उत्पत्ति लक्षण ॥

चिन्ता और शोकादि करिकै क्रोधको प्राप्त हुआ जो बात पित्त कफ वह हृदय की नसों में घुस स्मरण मात्रका नास कर मृगीके रोगको प्रगट करैहै वह मृगीरोग वात पित्त कफ सन्निपात इनभेदों से चार प्रकार का है ॥

अथ मृगी का पूर्व्व रूप और लक्षण ॥

हृदय कांपै और सूना होजाय । पसीना आवै और ध्यान लगजाय मूर्छा होय ध्यान जाता रहै निद्रा आवै नहीं ये लक्षण होंय तौ जानिये कि इसके मृगी रोग होगा और उसको

सर्व्वत्र अन्धकारही दीखै स्मरण जाता रहै और हाथ पैर आदि सब अंगोंको पृथ्वीपर पटकाकरै तब जानिये कि मृगी रोग हुआ ॥ १ ॥

अथ बातकी मृगी का लक्षण ॥

कम्प होय। दान्त चाबै। मुखमें झाग आवै। स्वास होय काला पीला देखै ये लक्षण बातकी मृगीके हैं २ ॥

अथ पित्तकी मृगी का लक्षण ॥

मुखमें पीला झाग आवै और शरीर की त्वचा और मुख पीला होजाय ये लक्षण पित्तकी मृगीके जानिये ३ ॥

अथ कफकी मृगी के लक्षण ॥

मुखमें स्वेत झाग आवै। शरीर कीत्वचा मुख नेत्र ये सब स्वेत पड़ जांय शीत लगै। रोमांच होंय और स्वेतही स्वेत दीखै ये लक्षण कफकी मृगीके हैं ॥ ४ ॥

अथ सन्निपात की मृगी के लक्षण ॥

पीछे कहेहुए सब लक्षण होंय तौ सन्निपात की मृगी के जानिये ॥ ५ ॥

अथ मृगी का असाध्य लक्षण ॥

जिसका शरीर बहुत फड़कै और क्षीण होजाय भौंह चढ़ी रहैं नेत्रों की प्रकृति और होजाय वह मृगी वाला मर जाय ६ ॥

अथ मृगी का समय ॥

बारहवें दिन आवै तौ बायुकी जानिये और १५ वें दिन आवै तौ पित्तकी जानिये १ महीनेमें आवै तौ कफकी जानिये यहां दृष्टान्त लिखते हैं। जैसे इन्द्रके जल बरसाने से सभी वस्तु उपजें हैं परन्तु जो गेहूं चना आदि पृथ्वी पर शरदही ऋतुमें उत्पन्न होते हैं तैसेही शरीर में ये रोग रहते तौ सदैव हैं परन्तु जब उनका समय आताहै तभी कोप करते हैं ७ ॥

अथ मृगी का यत्न ॥

तिलकेसाथ लहसन खायतौ वातकीमृगीजाय १ दूधकेसाथ सतावर खाय तौ पित्तकी मृगीजाय २ ब्राह्मीका रस सहत के साथ खाय तौ कफकी मृगीजाय ३ अथवा राई सरसों खाय वा गोमूत्र में पीस शरीर में लेप करै तौ मृगीजाय ॥ ४ ॥ अथवा तेल १ सेर सहजने कारस ४सेर ग्वारकेपट्ठे कारस ४ सेर चिड़चिड़े कारस ४ सेरनीबकीछालकारस १ सेर गोमूत्र ४ सेर इनसब में तेल मिलाकर पकावै जब वह सब रस जल जाय और तेलमात्र रहजाय तबतेलको बासनमें जुदारक्खे उसतेल का मर्दन करै तौ मृगीजाय ॥ ५ ॥ अथवा मैनसिल और नीलकंठ नीलटांचकीबीठ अथवा कबूतर कीबीठ इन दोनों को महीन पीस अंजनकरै तौमृगीजाय ॥ ६ ॥ अथवा पारा। मारीअभ्रक। सार। धोयी गन्धक। माराहुआ मैनसिल। मारी हरतार। रसौत। ये सब बराबर ले फिर इनको गोमूत्रमें १ दिन खरल करै फिर लोहेके पात्रमें इनसे दूनीगन्धक मिलाय ऊपर धरकै अग्निसे पकाले १ पहर के पीछे उतार कर ठंढी करै १ रत्ती प्रतिदिन ७ दिनतक खाय तौ मृगी जाय॥ ७॥ अथवा सोंठ। कालीमिरच। पीपल। कालानौन। भुनीहींग। इनको बराबरले महीन पीस २॥ टंक पेठे के रसमें ७ दिन पियेतौ मृगी जाय अथवा बच और कूटको महीन पीस २॥ टं० के प्रमाण ब्राह्मी के रसमें वा संखाहूलीके रसकेसाथ अथवा पुराने गुड़ के साथ १५ दिन पिये तौ मृगीजाय ९ अथवा गौकाघृत १ सेर पेठे का रस १८ सेर मुलहटीके काढ़े का पानी २ सेर इन तीनोंको पकावै जबदोनों रस जल जांय और घृत मात्र रहजाय तब इस घृत। को खाय तौ मृगी जाय ॥ १० ॥ अथवा सहजनेकीछाल। कूट नेत्रबाला। जीरा। लहसन। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। हींग इन सबको पैसे २ भरले और तेल ऽ॥ बकरे का मूत्र २ सेर इन सबको मधुरी आंचसे

पकावै जबसब जलजाय और तेल मात्र रह जांय तब इसको नासदे तौ मृगीजाय ॥ ११ ॥ यह सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा पीपल । पीपलामूल । चव्य । चित्रक । सोंठ त्रिफला । वायबिड़ंग । सेंधानौन । अजवाइन । धनियां । जीरा । इन सबको बराबरले महीन पीस २ ॥ टंक प्रमाण पानीके साथले तौ मृगी । संग्रहणी । उन्माद । ववासीर इन सबको यह दूर करै है ॥ १२ ॥ अथवा पुष्य नक्षत्र के दिन कुत्तेका पित्ता निकाल अंजन करै अथवा घृतके साथ इसको धूपदे तौ मृगीजाय १४ यह योगतरंगिणी में लिखा है अथवा वचका चूर्ण २ ॥ टंक दूधके साथ अथवा सहतके साथ १ महीने पियेतो मृगीजाय ॥ १५ ॥ यह भी योगतरंगिणी में है ॥ अथवा नौले की विष्टा बिलावकी विष्टा कागलेकी बीठ इनकी धूनी देतौ मृगी जाय ॥ १६ ॥ यह चक्रदत्तमें लिखा है—इति मृगी रोगका लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंहजी विरचिते
अमृतसागर नामग्रन्थे मदात्यय उन्माद मृगी उनके सर्व्वभेद संयुक्त
उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणं नाम सप्तमस्तरङ्गः ॥ ७ ॥ * ॥

अथ वातव्याध रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

कषैली । कड़वी । तीखी । वस्तु केखानेसे । खलके भोजन से । रूखी वस्तु के खानेसे । खेदसे । शीतल भोजनसे । अधिक मैथुनसे । धातुके क्षीण पने से । मलमूत्रके रोकनेसे । शोच और भयसे अधिक रुधिरके निकलवानेसे मांसके क्षीण पनेसे । अधिक वमन । और विरेचनसे ॥ आमके दोष से वृद्धावस्था से मनुष्यों के वर्षा ऋतुमें तृतीय प्रहर अथवा पहरभरके लड़के मनुष्योंकी खाली नसोंमें बलवान वायु घुसके कोपित होकर सबअंगोंमें अथवा एक २ अंग में नाना प्रकारके ८४ रोगों को उत्पन्न करैहै वेह ८४ रोग लिखते हैं ॥ शिरोग्रह

१ अल्पकेस २ अधिकजंभाई ३ डाढामुड़ै नहीं ४ जीभ हलै
नहीं ५ बकाई खाता बोलै ६ हौले बोलै ७ गूंगापन होय
८ खोटा ही बोलै ९ बहुत बकै १० जीभका स्वाद जाता
रहै ११ बहरा होजाय १२ कानों में भुन्नाटे का शब्द होय
१३ त्वचा में स्पर्श का ज्ञान जाता रहै १४ अर्दित रोग १५
कन्धा मुड़ै नहीं १६ भुजासूखजाय १७ भुजा मुड़ै नहीं १८
चर्वित रोग १९ बिस्वाची रोग २० ऊर्द्ध वात २१ और डकार
बहुत आवै २२ अफरा होय २३ प्रत्याध्मानरोग २४ । अष्ठीला
रोग २५ प्रत्यष्ठीला रोग २६ तूनी २७ प्रतितूनी २८ अग्नि की
बिषमता २९ आटोप रोग ३० पसलीमें शूल ३१ पीठमें शूल ३२
बहु मूत्रता ३३ मूत्र रुकजाय ३४ मल गाढ़ा होय ३५
मल उतरै नहीं ३६ गृध्रसी रोग ३७ कलाय खंजता रोग ३८
खोड़ापना ३९ पंगुता रोग ४० क्रोष्ट शीर्षक पैरका रोग ४१
खल्ली रोग ४२ बात कंटक रोग ४३ पैर की सूजन ४४ पैरच-
लन ४५ आक्षेप रोग ४६ दंडक रोग ४७ बाता क्षेपक रोग
४८ पित्ताक्षेपक रोग ४९ दंडापतानक रोग ५० अभिघातक
क्षेप ५१ अन्तरायाम ५२ बाह्यायाम ५३ धनुर्वात ५४ कुब्जक
५५ अपतंत्र ५६ अहान ५७ पक्षाघात ५८ आखलागिक ५९
कम्प ६० स्तम्भ ६१ व्यथा ६२ तोद ६३ अस्फुरन ६४ रूक्षता
६५ कालापन ६६ लोलापन ६७ शीतलपन ६८ रोमांच ६९
अंगम ७० अंगविभ्रम ७१ नसों का संकोच ७२ अङ्गशोष ७३
डरपना ७४ मोहपना ७५ उन्मादपन ७६ नींद नहीं आवै
७७ पसीना नहीं आवै ७८ बलकी हानि ७९ वीर्य्य का नाश
८० स्त्री धर्म्म का नाश ८१ गर्भ का नाश ८२ बिना श्रमके
श्रम ८३ अन्ननाश ८४ ॥

अथ बात व्याधि के सब रोगों का लक्षण और यत्न ॥

पहिले सामान्य यत्न लिखते हैं ॥ मीठी सलौनी चिकनी गरम वस्तु । आसवा । इनके खानें से और तेलके मर्द्दन से औषधियों के सेवन से सामान्य बात रोग दूर होता है ॥

अथ शिरोग्रह का लक्षण ॥

बातरुधिर से मिल कर मस्तक की नसों को रूखी करै है फिर उनमें बहुतसी पीड़ा करकै नसों को काली करदे है वह रोग असाध्य है ॥

अथ शिरोग्रह का यत्न ॥

दशमूल का काढ़ा कर रस निकालै और बिजौरे का रस निकालै फिर इस रस में तेल पका कर उस तेल का मर्द्दन करै तो शिरोग्रह दूर होय॥२॥ अथवा कूट। अरण्डकी जड़। धतूरे की जड़। सहजनें की जड़। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। सिंगीमुहरा ये सब औषधि बराबर ले काढ़ा कर अनुमान माफिक तेल डालकर मधुरी आंचसे पकावै जब तेलमात्र रह जाय तब उसको उतार मर्द्दन करै तो शिरोग्रह जाय ३ ॥

अथ अल्पकेशोकी चिकित्सा ॥

देशीगोखुरू। तिलके फूल। इनको बराबर ले और इन को बराबर सहत और घृतले उसमें इन दोनों को महीन पीस केशों के लेप करै तौ केश बहुत बढ़ैं ॥ १ ॥ अथवा मुलहटी। नीलेकमलकीजड़। मुनक्कादाख। इनको तेल। घृत दूधमें महीन पीस लेपकरै तौ केश बहुत लम्बे होय॥ २ ॥ और इन औषधियों से छछूंदर का भी दोष दूर होय॥

अथ जंभाई का लक्षण ॥

मुखके एक श्वासको प्रथम मुखमें पीजाय फिर वह श्वास उलटा काढ़दे फिर आलस्य और निद्रा संयुत आवै उसको जंभाई कहते हैं ॥

अथ जंभाई बहुत आवै उसका यत्न॥

सोंठ। पीपल। कालीमिरच। अजमोद। सेंधानौन। इनको जुदा अथवा इकट्ठा महीन पीस गरम पानी से ले तौ जम्हाईका रोग जाय॥ १ ॥ अथवा कडुआ तेल मर्द्दन करै अथवा मीठा भोजन करै अथवा ताम्बूल खाय तौ जंभाई का रोग जाय ॥२॥

अथ हनुग्रह रोग का लक्षण ॥

दांतनकी फाड़से जीभको बहुत घिसे और चबेना के खाने से अथवा किसी प्रकार की चोटसे डाढ़की जड़में रहती जो वायु सो कोपित होकर मुखको फटाही रक्खे अथवा बन्दही रक्खे तब पुरुष को बोलने और खाने की बड़े कष्टसे सामर्थ होती है उसको वैद्य हनुग्रह रोगकहते हैं ॥ २ ॥

अथ हनुग्रह रोग का यत्न ॥

जिसका मुख मिचगया हो उसको चिकनी वस्तु से सेककर पसीना दिवावै तो मुख खुल आवै और जिसका मुखफटा रह जाय उसको शीतल वस्तु से आराम होता है ॥ २ ॥ और जिसकी डाढ़ मुड़ै नहीं उसको पीपल । अदरक चबवाय कर थुकवावै तौ रोग दूर होय ॥ ३ ॥ अथवा गरम पानी के कुल्ले करवावै तो रोग दूर होय ॥ ४ ॥ अथवा तेल में लहसन को तलकर सेंधानौन लगाकै खाय तौ हनुग्रह रोग जाय ॥ ५ ॥ अथवा उड़द के बड़ोंमें लहसन । सेंधानौन । अदरक । हींग । मिलाकैतेलमें सेककै खायतौ हनुग्रह रोग जाय ॥ ६ ॥ अथवा प्रसारणी तेलके मर्दनसे इतने रोग जांय सो तेल लिखते हैं खीपका पंचाङ्ग १०० टके भर ले कूटकर १६ सेर पानीमें औटावै जब चतुर्थांश रहजाय तब उतार छान उसपानी में तिलका तेल १०० टके भर और मट्ठा १०० टके भर और कांजीका पानी १०० टके भर और तेलसे चौगुना गौका दूध डाले और चित्रक । पीपलामूल । मछुआ । सेंधानौन । बच । सोंफ । देवदारु । रास्ना । गजपीपल । छार छबीला । रक्त चन्दन । अरण्ड कीजड़ । खरेटीकी जड़ । सोंठ इन सब औषधियों को टके २ भर ले काढ़ा कर काढे का रस उसतेल में डालै और १ सेर खीपकारस डालकर मधुरी आंचसे पकावै जब सब रस जलजाय और तेल रहजाय तब तेलको उतारले पीछे इसतेलको मर्दनकरै अथवा नासदे अथवा खिलावै अथवा इसका सेक करै तौ सर्व्ववात विकार

पंगुलता। जिह्वास्तंभ अर्द्दितरोग। बंकाईकारोग। स्कन्धस्तंभ पीठशूल। गृध्रसी। खोड़ा। चापला। मन्नुबात। इतने बातके रोगोंको यह तेल दूरकरै है — इति प्रसारणी तैलं॥ १॥

अथ जिह्वा स्तम्भ का लक्षण॥

बाणीकी लेचलने वाली जो नसें उनमें रहती जो पवन सो कोपित होकर जीभको स्तम्भित करै है तब वह जीभ जलके पीनेमें और बोलनेमें समर्थ नहीं होहै इसको जिह्वास्तंभ रोग कहते हैं॥

अथ जिह्वा स्तम्भ का यत्न॥

मीठारस। नोन। खटाई चिकनी गरम इन वस्तुओं से जीभको यथायोग्य मर्द्दन करै अथवा सुहाता २ गरम पानी से कुल्ले करै तौ जिह्वास्तंभ कारोग दूर होय

अथ गूंगा पन गिनगिना बकाई खाने का लक्षण॥

कफ करकै संयुक्त जो बायु वह धमनी नाड़ी को लेचलने वाली जो नसें उनको आच्छादितकर मनुष्यों के गूंगापन और नाक मेंही बोलना और बकाई खाकर बोलना इतने रोगोंको करै है

अथ गूंगा और गिनगिना और बकाई खाकर बोले इन सबका यत्न॥

गौकाघृत १ सेर सहजनेकीजड़ १ टंकेभर बच १ टं० सेंधानौन १ टं० धवईकेफूल १ टं० लोध १ टं० इन सबको पीसकै बकरीके ४ सेर दूधमें १ सेर घृतडालै फिर यह औषधमिलाय मधुरी आंचमें पकावै जब दूध और औषधि जलजाय और घृत मात्र रहजाय तब उसे काढ़कै उस घृत को सरस्वती मंत्रसे विधि पूर्व्वक सेवन करै तौ गूंगापन गिनगिनापन बकाईखाना ये सब रोग दूरहोंय और बुद्धि स्मृति मेधाकान्ति बहुत बढ़ै १ इति सारस्वतं घृतं॥

अथ सर स्वती मंत्रः॥

ॐ क्लीं ऐं क्लीं ओं सरस्वत्यै नमः यह सरस्वतीमंत्र सिद्ध है इसको इन अक्षरोंको बराबर सहस्र जपकरै तौ यह मंत्र सिद्ध

होय इस मंत्र से यह घृतखाय अथवा माल कांकुनी का तेल खाय तौ सर्वरोगजांय और उसकी बुद्धि तत्काल चमत्कारी होजाय ॥ २ ॥ अथवा । हल्दी । कूट । पीपल । सोंठ । जीरा । अजमोद । मुलहटी । मजुआ । सेंधानौन । इनको बराबर ले महीन पीस २॥ टं० मक्खनके साथ नित्य २१ दिन तक ले तौ सर्व्वरोग दूर होंय औ वह पुरुष श्रुतिधर होय १००० श्लोक नत्य कंठ करै— इति कल्पका अवलेह ॥

अथ प्रलाप और वाचाल रोगका लक्षण ॥

अपने कुपथ्य से कुपित जो बायु सो अर्थ रहित कुछ का कुछ बचन बोले तौ प्रलाप रोग जानना । और अर्थ सहित खोटा शब्द मुखसे बोलेउसे बाचाल कहते हैं ॥

अथ प्रलाप वाचाल का यत्न ॥

तगर । पित्तपापड़ा । कुटकी । नागरमोथा । असगन्ध । ब्राह्मी । दाख । अगर । दसमूल । शंखाहूली । इन सब को बराबर ले जव कुटकर इनका काढ़ादे तौ प्रलाप और बाचाल रोग दूर होंय ॥

अथ जीभके रसाज्ञान का लक्षण ॥

मधुर रस आदिले छः रसों के खाने में जीभ का यथार्थ ज्ञान जाता रहै उसको रसाज्ञान रोग कहते हैं ॥

अथ रसाज्ञान रोग का यत्न ॥

सोंठ । कालीमिरच । पीपल । सेंधानौन । अमलबेत । चूका । इन औषधियों को महीन पीस एक रस कर जीभ के अच्छे प्रकार लेपकरै तौ रसाज्ञान का दोष दूर होय ॥ १ ॥ अथवा ब्राह्मी । पलासपापड़ा । राई । कालाजीरा । पीपल । पीपला मूल । चिचक । सोंठ । इनको महीन पीस जीभके बारम्बार लेप करै अथवा इनका काढ़ा कर कुल्लेकरै तौ रसाज्ञान दोषदूर होय ॥ १ ॥ अथवा अदरक खायतौ रसाज्ञान दोषदूर होय २ ॥

अथ शरीर की त्वचा शून्य होगई होय उसका लक्षण ॥

जिस पुरुष को शीतोष्ण कोमल कठिनता का ज्ञान जाता रहै उसके त्वचा शून्य पनेका रोग जानिये ॥

अथ त्वचा शून्य का यत्न ॥

त्वचा शून्य वाले का रुधिर निकलवावै तौ यह रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा नौन । धमासा । इन दोनों को तेल में मिलाकै शरीर में मर्दन करै तौ यह रोग जाय ॥ २ ॥

अथ अर्दित रोग का लक्षण ॥

ऊंचे से गिरती हुई भारी वस्तु को ऊंचामुख कर हाथों से ग्रहण करै अथवा कड़वी वस्तु बहुत खाय। अथवा बहुत हंसे। जंभाई ले अथवा माथेपै बहुत बोझ उठावै अथवा विषम स्थान में सोवे उस पुरुष के सिर नासिका और ओष्ठ ठोढ़नेत्र इन स्थानों में रहती जो वायु वह पुरुष के मुख में अर्दितरोग को उत्पन्न करै है तब पुरुष का मुख आधा टेढ़ा हो जाय और कन्धा मुड़ै नहीं और सिर हाला करै अच्छे प्रकार बोला और देखा ना जाय और कन्धे डाढी दांतों में पीड़ा रहै जिस में ये लक्षण होंय उसको अर्दित रोग कहिये सो वात पित्त कफ इन भेदों से तीन प्रकार का है॥

अथ वातके अर्दित रोग का लक्षण ॥

लार बहुत पड़ै। शरीर में पीड़ा अधिक होय। शरीर कांपै अत्यन्त फड़के। डाढ़ी मुड़ैनहीं। ओष्ट सूजजांय। ये लक्षण होंय तौ वायु का अर्दित रोग जानिये ॥

अथ पित्त के अर्दित रोग का लक्षण ॥

मुख पीला होजाय। ज्वर हो आवै। तृषा बहुत होय तौं पित्त का अर्दित जानिये ॥

अथ कफके अर्दित रोग का लक्षण ॥

मोह बहुत हो। गला कन्धा और सिर में सूजन होय और ये तीनो मुड़ैं नहीं तौ कफका अर्दित जानिये ॥

अथ अर्द्दित का असाध्य लक्षण ॥

क्षीण पुरुष के निमेष नहीं लगै और उस पुरुष से बोला न जाय और शरीर कांपते हुए तीन वर्ष होनये होंय तौ अर्द्दित रोग असाध्य जानिये ॥ १ ॥

अथ अर्द्दित रोग का यत्न ॥

अर्द्दित रोगवाले को चिकना खवावै और नारायण और विषगर्भ तैल आदिका मर्द्दन करावै और गरम वस्तु का सेवन करावै दाह दिवावै गरम औषधियों से पसीना दिवावे। सिर में बायका तेल डालै इतनी वस्तुओं से अर्द्दित रोग जाता है ॥

अथ बायके अर्द्दित रोग का यत्न ॥

दशमूल के काढ़े से बायका अर्द्दित रोग जाय ॥ बिजौरे के रससे बायका अर्द्दित जाय ॥ २ ॥ अथवा खरैटी। पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। सोंठ। इनके काढ़े से बाय का अर्द्दित जाय ॥ ३ ॥ उर्द्द के बड़ोंमें हींग। अदरक। लहसन मिलाके खाय और ऊपर से मांसका शोरवा पिये तौ बाय का अर्द्दित जाय ॥ ४ ॥

अथ पित्त के अर्द्दित का यत्न ॥

घृत का वस्तिकर्म्म करै अथवा दूध का सेवन करै तौ पित्त का अर्द्दित दूर होय ॥ १ ॥

अथ कफ के अर्द्दित का यत्न ॥

वमन कराने से कफका अर्द्दित जाय ॥ १ ॥ अथवा तिलके तेलमें लहसन मिलाके खाय तौ सब प्रकार का अर्द्दित तत्काल जाय ॥ २ ॥

अथ मन्यास्तम्भ का लक्षण ॥

दिनके सोने से। बहुत बैठे रहने से। बिकार को प्राप्त हुआ जो कफ सो। बातसे मिल कान्धे को मुड़ने न दे उसको मन्यास्तम्भ कहते हैं ॥

अथ मन्यास्तम्भ का यत्न॥

दशमूलके काढ़े से। अथवा पंचमूल के काढ़े से मन्यास्तम्भ जाय ॥ १ ॥ अथवा तेल का मर्द्दन करके ऊपर से अरण्डके पत्ते बांधे तौ मन्यास्तम्भजाय ॥ २ ॥ अथवा कुक्कुट के अण्डे के रस में सेंधानौन और घृत मिलाय कन्धों के मर्द्दन करै तो मन्यास्तंभ जाय ॥ ३ ॥

अथ बाहुशोष का लक्षण ॥

कन्धों में रहती जो बायु वह कोपित होकर भुजा को सुखाकर स्तम्भित करदे उसको बाहुशोष कहते हैं ॥ १ ॥

अथ बाहुशोष का यत्न ॥

पीछे जो कल्याण घृत उन्माद रोग में लिखा है उसके सेवन से बाहुशोष रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा खरैटी के काढ़े में सेंधानौन मिलाकर पिये तौ बाहुशोष और मन्यःस्तम्भ रोगजांय २ ॥

अथ अपबाहुक रोग का लक्षण ॥

कन्धों में रहती जो बाय सो कुपित होकर उसके बांधने वाले कफको सुखाय नसों को खेंच अपबाहुक नाम रोग को उत्पन्न करै है ॥

अथ अपबाहुक रोग का यत्न ॥

शीतल जलकी नास दे तौ अपबाहुक रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा गुग्गुलसोई जड़ी की जड़का काढ़ाकर उसमें गुग्गुल मिलाकर नासदे तौ अपबाहुक रोग जाय ॥ २ ॥ अथवा उर्द्द के पानी की नास दे तौ अपबाहुक रोग जाय ॥ ३ ॥ अथवा उर्द्द । अलसी। जौ। कूठ। रेखा। कटेली गोखुरू। अरलू कौंचकी जड़। कपास। सनकाबीज। कुलत्थ। वेरकी जड़। सांठी की जड़। खीप की जड़। रास्ना। खरैटी की जड़। गिलोय। कुटकी। इनको तेलमें पका कर उस तेलका मर्द्दन करै तौ अपबाहुक रोग जाय ॥ ४ ॥—इति भाष सेनं ॥

अथ विश्वाची रोग का लक्षण ॥

हाथकी अंगुलीके नीचे खुजली होय। और भुजा के पीछे खुजली होकर भुजाको निकम्मी करदे उसको बिश्वाची रोग कहते हैं ॥ १ ॥

अथ विश्वाची रोगका यत्न ॥

दशमूल। खरैटी। उड़द। इनका काढ़ाकर उसमें तेल मिलाकै पिये तौ बिश्वाची रोग जाय ॥

अथवा उड़द। सेंधानौन। खरैटी। रास्ना। दशमूल। हींग वच। सोंठ इनको महीन पीस पानी में औटावै फिर पानी में तेल। डालकर तेलको पकावै जब पानी जलजाय और तेल रहजाय तब उतार तेलका मर्द्दन करै तौ बिश्वाची बाहुशोष। अपबाहुक। पक्षाघात। इनको यह माषादि तेल दूर करै है ॥ २ ॥

अथ ऊर्द्ध वात रोग का लक्षण ॥

कुपथ्य के सेवनसे अधो वायु कुपित हो मुखके कफ से मिल बारंबार डकार बहुत ले तौ ऊर्द्ध वात रोग कहिये ॥ १॥

अथ ऊर्द्ध वात का यत्न ॥

सोंठ १०मा० बिधारा १०मा० हड़कीछाल ५मा० असगन्ध १ मा० भुनी हींग १ मा० सेंधा नौन १ मा० निसोत ५ मा० इन सबको बराबर चित्रक ले महीन चूर्ण कर २॥ टं० गरम जल के साथ ले तौ ऊर्द्ध वात रोग जाय ॥ १ ॥

अथ आध्मान रोग का लक्षण ॥

सम्पूर्ण पेटमें अफरा और पीड़ा अधिक होय और अधोवायु रुक जाय उसको प्रत्याध्मान रोग भी कहते हैं ॥

अथ आध्मान रोग का यत्न ॥

इस रोग में लंघन करावै। पाचन और क्षुधा बढ़नेकी औषधि दीजे। वस्तिकर्म्म करावै। अथवा पीपल २॥ टं० निसोत १० टं० मिश्री १० टं० इन को चूर्ण कर २॥ टं० सहत के साथ खाय तौ अफरा जाय ॥ १ ॥ यह नारायण

चूर्ण है ॥ अथवा वच । कूट । सौंफ । भुनी हींग । सेंधानौन ये सब बराबर ले इनको चूर्ण कर काँजीसे महीन पीस गरम कर सुहाता २ पेट पर लेप करे तौ अफरा दूर होय । २ ॥ अथवा महानाराचरस से अफरा जाय सो लिखते हैं । हड़कीछाल १ । टं० किरमालाकीगिरी १ । टं० आमला १ । टं० दात्यूणी १ । टं० कुटकी १ । टं० निसोत १ । टं० नागरमोथा १ । टं० थूहरकादूध २ । टं० इन सबको महीन पीस ४ सेर पानी में औटावै जब पानी का अष्टमांश रहजाय तब जमालगोटे का छिलका १ । टं० भर उतार महीन वस्त्र में बांध सनैः २ जमालगोटे को पचावै जब पानी जलजाय तब उसे काढ़ ले पीछे जमालगोटा ८ भाग सोंठ १ भा० कालीमिरच २ भा० पारा १ भा० शोधीगन्धक १ भा० पहिले पारे और गन्धक की कजली करै उसमें ये औषधि मिलाय १ पहर खरल करै फिर १ रत्ती प्रमाण की गोली बांधे १ गोली नित्य शीतल जलसे ले तौ अफरा । शूल । आनाह । प्रत्याध्मान । उदावर्त्त । गोला और उदरके रोगोंको यह महानाराच रस दूर करै है । इसके खाने से दस्त होचुकें तब मिश्री मिलाकर दही खवावै फिर चांवल दहीमिलाय अनुमान माफिक उसमें सेंधानौन डाल थोड़ासा खवावै तौ आध्मान रोग जाय ॥

अथ प्रत्याध्मान का लक्षण ॥

पसली । और हृदय में तौ अफरा न होय परन्तु नाभि से ले के पेट तक अफरा होय उसको प्रत्याध्मान कहिये ॥

अथ प्रत्याध्मान का यत्न ॥

लंघन करावै और पाचनादिक दीजिये । बस्तिकर्म्म कराइये तौ प्रत्याध्मान जाय ॥

अथ वातष्ठीला का लक्षण ॥

नाभि के नीचे पवनकी गांठि पत्थरसी बंधजाय वह गांठि मलमूत्र को रोक दे उसको वातष्ठीला कहते हैं ॥

अथ प्रत्याष्ठीला का लक्षण ॥

नाभि के नीचे पवन की गांठ पाषान के सदृश बंध कर मल मूत्र को रोक दे और उसस्थान पर पीड़ा अधिक करै उसको प्रत्याष्ठीला कहते हैं

अथ इन दोनों का यत्न ॥

भुनीहींग। पीपलामूल। धनियां। जीरा। बच। चव्य। चित्रक। पाढ़। कचूर। अमलवेत। कालानोन। सेंधानौन। सांम्हरनौन। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। जवाखार। सज्जी। अनारदाना। हड़कीछाल। पुष्करमूल। डांसरा। झाऊकीजड़ इन सबको बराबर ले महीन पीस अदरकके रसकी ३ पुट दे फिर इस चूर्ण को छाया में सुखाय २॥ टंक गरम पानी के साथ ले तो वातष्ठीला प्रत्याष्ठीला सब जांय ॥ १ ॥

अथ तूनी रोग का लक्षण ॥

मल मूत्र के स्थान में रहने वाली जो पवनवह गुदा लिंग में पीड़ा करै है उसको तूनी कहते हैं ॥

अथ प्रतितूनी का लक्षण ॥

गुदा और लिंगमें रहती जो पवन वहगुदा लिंगमें पीड़ा कर पेड़ू में पीड़ा करैहै उसको प्रतितूनी कहते हैं ॥

अथ इन दोनों का यत्न ॥

इन दोनों को तेलकी बस्ति दे तो दोनों तूनी प्रतितूनी रोगजांय१॥ अथवा सोंठ। पीपल। कालीमिरच। भुनीहींग। जवाखार। सज्जी। सेंधानौन। इनको। महीन पीस २॥ टं० गरम पानी से ले तो तूनी प्रतितूनी रोग जांय २॥

अथ त्रिकशूल का लक्षण ॥

कमर के तीनों हाड़ोंमें और वांसेके हाड़ में शूल होय उसको त्रिकशूल रोग कहते हैं ॥

अथ त्रिकशूल का यत्न ॥

वालूरेत से सेक करावै। अथवा बरने उपलेकी राख से सुहाता २ सेक करावै तो त्रिकशूल जाय ॥ मोटा

अथवा गूल्ही बोलीकी जड़का छिलका। असगन्ध। काऊका बक्कल । गिलोय । सतावर। गोखुरू। रासा। निसोथ सोंफ। कचूर। अजवाइन। सोंठ इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर शोधा गूगल और गूगल से चौथाई घृत ले सबको एक रसकर ५ मासे नित्य दारू के अथवा गरम पानी वा मांसके शोरुवेके साथ खाय तौ त्रिकशूल। और जानुग्रह। भुजास्तंभ। सन्धिगतवाय। हाड़ टूटगया होय। खोड़ापन। गृध्रसी। पक्षाघात इन सब रोगोंको यह त्रयोदशांग गूगल दूर करै है—इति त्रयोदशांगगूगल ॥

अथ वस्तिवात का लक्षण ॥

पेड़ू की पवन कुपित होकर मूत्रको अच्छे प्रकार उतरने न दे और रोगों को उत्पन्न करै उसको वस्तिवात रोग कहते हैं ॥ १ ॥

अथ इसका यत्न ॥

खरैटीकी जड़का बक्कल। और उसी की बराबर मिश्री मिलाय २॥ टं० गौके दूध के साथ खाय तौ बारम्बार मूतने का रोग जाय ॥ अथवा त्रिफले का चूर्ण करै उसके बराबर सार मिलाय ४ मा० सहत के साथ ले तौ मूत्रका रोगजाय ॥ २ ॥

अथ मूत्ररुकगया होय उसका यत्न ॥

जवाखार ५ मा० मिश्री के साथ ले तौ मूत्रबंध छूटै ॥ अथवा पेठे के बीज। तिवरसी के बीज। इन दोनों को पानी में पीस २ मासे जवाखार डाल कर मिश्री के साथ पिये तौ मूत्रबन्ध छूटै ॥ २ ॥ अथवा चीनिया कपूर की बत्ती लिंगमें देवा भगमें दे तौ मूत्रबन्ध छूटै ॥ ३ ॥

अथ गृध्रसी रोग का लक्षण ॥

पहले कूलेमें पीड़ा होय। पीछे अंग में पीड़ाहोय फिर पैरोंको स्तम्भित करदे और पैर बहुत हौले २ उठें उसको गृध्रसी रोग कहते हैं ॥ वह दो प्रकार का है एक वात का दूसरा वातकफ का वातके में तौ पीड़ा अधिक होय और

फिर टेढ़ा होजाय। और पैर जंघा और सन्धि २ फड़क २ कर स्तम्भित होजांय और बातकफकीगृध्रसी में शरीर भारी रहै अग्निमन्द होजाय तन्द्रा आवै। लार बहुत पड़ै ॥

अथ गृध्रसी का यत्न ॥

वमन कराने से। बस्तिकर्म्म से गृध्रसी रोग जाय ॥ २ ॥ शरीर को जड़के जुलाब से निराम कर फिर बस्ति कर्म करै ३ ॥ अथवा अरण्ड का तेल। और गोमूत्र मिलाकर १ महीने तक पिये तौ गृध्रसी रोग जाय। अथवा तेल। घृत। अदरक का रस। बिजौरे का रस। चूक। गुड़। ये अनुमान माफिक मिलाय १ महीने तक पिये तौ गृध्रसी रोग जाय ५ ॥ और इससे कटि। और जंघाकी पीड़ा त्रिकशूल। गोला। उदावर्त्त ये भी रोग जाते हैं ॥ अथवा अरण्डीकी मींगी को दूधमें खीर कर १ महीने तक खाय तौ गृध्रसी रोग। पोते का शूल दूर होय ॥ ७ ॥ अथवा अरण्ड की गिरी। कटेली। इनका काढ़ा कर इसमें तेल मिलाय पिये तौ गृध्रसी पोतों का शूल दूर होय ॥ ८ ॥ अथवा बिड़नौन। कालानौन। इनको महीन पीस गोमूत्र और अरण्ड के तेल में मिला कै पिये तौ कफबाय की गृध्रसी जाय ॥ ९ ॥ अथवा अडूसा। दाल्यूणी। किरमाला की गिरी इन का काढ़ा कर उस में अरण्ड का तेल मिला कर पिये तौ गृध्रसी रोग जाय ॥ १० ॥ अथवा निर्गुण्डी के पत्तों के काढ़े से गृध्रसी रोग जाय ॥ ११ ॥ अथवा रास्ना ५ टके भर गूगल इन दोनों को पीस कर घृतमें ४ मासे की गोली बांधे १ गोली नित्यखाय तौ गृध्रसी रोग जाय ॥ १२ ॥ अथवारास्ना। गिलोय। किरमालाकीगिरी। देवदारु। गोखुरू अरण्ड और सांटी की जड़। सोंठ। इनका काढ़ा कर दे तौ गृध्रसी रोग पेड़ू और पसली का शूल इतने रोगों को यह रास्नादिक काढ़ा दूर करै है ॥ १३ ॥ इति रास्नादिक क्वाथः ॥

अथ खोड़ा पंगुला रोग के लक्षण ॥

कटिमें रहती जो बात वह जांघकी नसोंको पकड़ एक

पैरको स्तंभित करदे उसको खोड़ा कहते हैं और कटिमें रहती जो बात वह जांघ की नसों को ग्रहण कर दोनों जांघ का नाश करै और चलने नदे उसको पंगुता कहते हैं ॥

अथ इन दोनों का यत्न ॥

जुलाब के लेनेसे और औषधियों के गरम पसीने से जोग राज आदि गुग्गुलके खाने से। तैलादिक के मर्द्दनसे। बस्ति कर्म्मसे। येदोनों रोगजांय ॥

अथ कलाप खंज रोग का लक्षण ॥

चलते में शरीरकंपे औरलंगड़ा सा दीखे तौ जानना कि नसोंने अपना ठिकाना छोड़ दिया है उसको कलापखंज रोग कहते हैं ॥

अथ इस का यत्न ॥

विषगर्भादिक तैल के मर्द्दन से यह रोग जाय ॥

अथ क्रोष्ट शीर्षरोग का लक्षण ॥

बात और रुधिरके बिकार से पैरों में सूजन होय पीड़ा अधिक होय औरस्यारके मस्तक के सदृश कठोर होय उसको क्रोष्टशीर्षरोग कहते हैं ॥

अथ इस का यत्न ॥

गिलोय २॥ टं० त्रिफला १० टं० इनदोनों का काढ़ा कर उस में २॥ टं० गुग्गुल मिलाय १ महीने तक पिये तौ यह रोगजाय ॥ १ ॥ अथवा ऽ। दूध १० टं अरण्डका तेल डालकर पिये तौ यह रोग दूर होय ॥२॥ अथवा। निघारे का चूर्ण २॥ टं० गौके ऽ। दूधके साथ पिये तौ यहरोग जाय ॥ ३॥ अथवा किशोर गुग्गुल के सेवन से यह रोग दूर होय ॥ ४॥

अथ पैर दूखने का यत्न ॥

तैल का मर्द्दन करकै ऊपर से पिसी सोंठ का मर्द्दनकरै फिर उसके ऊपर तेल चुपड़ अरण्डके पत्ते गरमकर बांधदे तौ पैर दूखने से बंदहोंय अथवा कौंचके बीज २॥ टं० दही के साथ ७ दिन अथवा १४ दिन ले तौ पैर दूखना बंदहोय ॥

अथ खल्ली का यत्न ॥

कूट । सेंधानौन । इनका काढ़ा करै इस काढ़े के रस में तेल और अमलबेत के रस को डालकर तेल को मधुरी आंच से पकावे जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय तब इस तेल का मर्द्दन करै तो खल्ली रोग जाय ॥

अथ वात कंटक रोग का लक्षण ॥

ऊंचे नीचे स्थानपर पैर रखनेमें पीड़ा होय पीछे रखनेमें पीड़ा हो आवै उसको वात कण्टक रोग कहते हैं ॥

अथ इसका यत्न ॥

टखने में पछने से रुधिर निकलवावै तो वात कण्टक रोग जाय । अथवा अरण्ड का १ टं० तेल १ महीने तक नित्य पिये तो यह रोग जाय ॥ २ ॥

अथ पाद दाह का लक्षण ॥

वात पित्त रुधिर ये तीनों मिल पैरों के तलुओं में दाह करै उसको पाद दाहरोग जानिये ॥ १ ॥

अथ पाद दाह का यत्न ॥

मसूर की दाल को महीन पीस औटावै फिर अत्यन्त ठंढा कार उसमें आटा सान पांच सात बार पतला लेप करै तो ाद दाह जाय ॥ १ ॥ अथवा मक्खन को पैरों के तलुओं में र्द्दन बार अग्नि से तपावै तो यह रोग जाय ॥ २ ॥ अथवा ंडो को गौके दूध में लेपकरै तो अत्यन्त भी दाह जाय ॥ ३ ॥

अथ पाद हर्ष का लक्षण ॥

जिसके दोनो पैर झंझनाहट कर सो जांय और कोई कार दाबने से जाग उठें उसको पाद हर्ष रोग जानिये १

अथ इस का यत्न ॥

कफ और बात का दूर करने वाला यत्न करे तो यह रोग ाय ॥ १ ॥

अथ पैरों की हड़ फूटन का यत्न ॥

तिल । साम्हरनौन । हल्दी । ये बराबर ले इन को धतूरे

के बीज के पानी में पीसे और इन तीनों के बराबर गौका मक्खन ले फिर इनको पकावै और पकतेही में चौगुना गौका मूत्र डालै ये सब जल जांय और घृत मात्र रहजाय तब वह घृत पैरों के तलुओं के मर्द्दन करै तो पैरों की फूटन जाय ॥

अथ पित्त सहित वातके आक्षेप रोग का लक्षण ॥

पित्त के स्थान जो उदरादिक उनमें रहती जो वात उसको स्तंभित कर दण्डकी भांत करदे अथवा कफमें मिली जो वाय सो धमनी नाड़ी में रहके शरीर को स्तम्भित करदे वह कष्ट साध्य है ॥

अथ केवल वायु के आक्षेप का लक्षण ॥

हाथ पैर मस्तक पीठ गांठ इनको स्तंभित करदे और वायु इन में पीड़ा भी करै तो यह असाध्य है ॥

अथ चोट लगने से उत्पन्न जो वात उस के आक्षेप के लक्षण ॥

जिस स्थान में चोट लगी हो उसे उत्पन्न जो वायु वह उसके सहज साध्य जानिये ॥

अथ इस का यत्न ॥

खरैटी की जड़। दसमूल। जव। बेलकी जड़। कुल इन सब का अष्टावशेष काढ़ा करतेल मिलाय मधुरी आं से पचाय तेल तैयार करै और ये औषधियां और मिला सो लिखते है। सेंधानौन। अगर। राल। देवदारू। मंजी पद्माक। कूट। इलायची। कड़। पचज। तगर गौरीसर सतावर। असगन्ध। सोंफ। सांठीकीजड़ यह तेलके प्रमा माफिक डाल पकावै फिर इस महा बला तेलका मर्द्दन क तौ सब प्रकारके आक्षेप के रोग हिचकी। स्वास। अंत्रवृद्धि क्षीणता। टूटाहाड़। खेद इन सब रोगों को यह महाब तेल दूरकरै है ॥

अथ अन्तरायां रोग का लक्षण ॥

पैरकी अंगुली टखना पेट हृदय गला इनमें रहती जो व

वह बड़ी नसों के समूह को शरीर के भीतर पकावै है फिर उस के नेत्र फटकर निश्चल से होजांय हैं और डाढ़ मुड़ै नहीं। पसली टूटीसी होजांय। कफगेरै। शरीर कमान की भांत टेढ़ा होजाय। जिसमें ये रोग होंय उसको अंतरायां रोगजानिये ॥

आय बाह्यायां रोग का लक्षण ॥

बहुत बादी वस्तु खाने से कुपित हुआ जो बात सो शरीर की सब नसें कन्धे पीठ इनको सुखाय शरीर को कमान के सदृश टेढ़ा करदे है और उसके हृदय और जांघको वह बात तोड़ डाले है ये जिसमें लक्षण होंय उसके बाह्यायां रोग कहिये और जो अर्दित रोग का यत्न पीछे लिखा है वही इस रोग का भी जानना चाहिये ॥

अथ धनुस्तम्भ का लक्षण ॥

कमान के समान शरीर हो जाय और शरीर का वर्ण और का और हो जाय सब खिंच जाय देह शिथल होजाय चैतन्यता जाती रहै पसीना आवै उसको धनुस्तम्भ रोग कहते हैं यह रोग वाला १० दिन जिये ॥

अथ कुब्जक रोग का लक्षण ॥

कोपको प्राप्त जो बात सो हृदय को ऊंचा करके हृदय में पीड़ा अधिक करै उसको कुब्जक रोग कहते हैं—अथ इन तीनों रोगों का दूर करने वाला प्रसारणी तैल इसी प्रकरण में लिखा है उससे धनुस्तंभ बाह्यायां अन्तरायां वातव्याधि सर्व्व प्रकार की दूर होय है ॥

अथ अपतंत्र रोगका लक्षण ॥

बादी वस्तु के सेवनसे कोप को प्राप्त हुई जो बात वह अपने स्थान को छोड़ कर हृदय में जाकर सिर और कनपटी में पीड़ा करै हैं और कमान की भांति शरीर को नवायदे हैं और वह मोह को प्राप्त होकर बड़े कष्ट से ऊंचेको श्वास ले और नेत्र फट या मिच जांय और कंठ कबूतर के

सदृश होजाय संज्ञा जाती रहै जिसके ये लक्षण होंय उसके अपतंत्र रोग जानिये ॥

अथ अपतंत्र रोगका यत्न ॥

कालीमिरच। सहजनेके बीज। बायबिडंग। अफीम। मऊआ ये सब बराबर ले महीन पीस नास ले तौ अपतंत्र रोग जाय १ अथवा हड़की छाल। बच। राल। सेंधानौन। अमलबेत इन को महीन पीस २॥ टं० घृत के साथ अथवा अदरक के रसके साथ ले तौ अपतंत्र रोग जाय ॥ २ ॥

अथ अपतानक रोगका लक्षण ॥

नेत्र फटेसे होजांय। संज्ञा जाती रहै। कंठ में कफ बोलै संज्ञा होआवै। तब चैन पड़ै और अज्ञान आवै तब और भी मोह होय यह भयंकर रोग है और यह स्त्री के गर्भपात से होता है और पुरुष के बहुत रुधिर निकलने से होय है अथवा भारी चोट लगने से होय यह रोग असाध्य है॥

अथ इनका यत्न ॥

दसमूल के काढ़े में पीपल डालके पिये तौ अपतानक रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा तेलके मर्दन से जाय ॥ २ ॥ अथवा रूखीवस्तु की नास ले तो यह रोग जाय ॥ ३ ॥ अथवा घृतके पीनेसे यह रोग जाय ॥ ४ ॥ अथवा स्नेह की वस्तु लेनेसे यह रोग जाय ॥ ५ ॥

अथ पक्षाघात का लक्षण ॥

किसी कारण से कुपित बात होकर मनुष्य के आधे शरीर को पकड़ सब शरीर की नसों को सुखादे है और आधे शरीर की नसों को तो अत्यन्तही ढीली करदे है अथवा सब शरीर की नसों को अत्यन्त ढीली और निकम्मी करदे है उन नसों का ज्ञान जाता रहै ये लक्षण होंय तो उसको पक्षाघात रोग कहते हैं और दहिना अंग अथवा बायां अङ्ग निर्जीव होजाय वह पक्षाघात दो प्रकार का है एक तो पित्तबात का दूसरा कफ बात का शरीर के बाहर

और भीतर दाह और मूर्छा होय तौ पित्त बात का पक्षाघात जानिये ॥ और शरीर के भीतर और बाहर शीत लगै सूजन होय शरीर भारी रहै। तौ कफबात का पक्षाघात जानिये ॥

अथ पक्षाघात का साध्य लक्षण ।

केवल बात से पक्षघात हुआ होय तौ कष्टसाध्य जानिये ॥

अथ पक्षाघात का असाध्य लक्षण ॥

गर्भिणी अथवा प्रसूत स्त्री के पक्षाघात होय तौ असाध्य जानिये ॥ अथवा । बालक । वृद्ध । क्षीणपुरुष । घाववाले के जिसका रुधिर निकल गयाहो उसके शून्य शरीरवाले के पक्षाघात होय तौ असाध्य जानिये ॥

अथ पक्षाघात का यत्न ॥

उड़द । कौंचकेबीज । अरण्डकीजड़ । खरैटीकी जड़ इन का काढ़ा कर उसमें भुनीहींग । सेंधानोन । मिला कर पिये तौ पक्षाघात जाय १ ॥ अथवा पीपलामूल । चित्रक । पीपल । सोंठ । रास्ना । सेंधानोन उड़द । इनका काढ़ा कर इस काढ़े के रस में तेल पकावै जब रस जल जाय और तेल मात्र रह जाय तब मर्दन करै तौ पक्षाघात जाय ॥ २ ॥ इति ग्रंथ कारि तैल ॥ अथवा उड़द । कौंच के बीज । अतीस । अरण्डकीजड़ । रास्ना । सौंफ । सेंधानौन । इनको महीन पीस काढ़ा कर इस काढ़े में तेल पकावै जब रस जल जाय और तेल रह जाय तब मर्दन करै तौ पक्षाघात रोग जाय ॥ ३ ॥ इति माषादितैलं ॥ ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा कौंच के बीज । खरैटी कीजड़ । अरण्डकी जड़ । उड़द । सोंठ । सेंधानौन । इनका काढ़ा कर छान कै पिये तौ पक्षाघात जाय ॥ ४ ॥ यह वैद्यविनोद में है अथवा मडुए का रस ५ टं० गूगल ५ टं० बीजाबोल ५ टं० बकरी की मेंगनी ५ टं० कटेली का रस ५ टं० इनकोमहीन पीसशरीर के लेप करै फिर कमर बराबर गढ़ा खोद गढ़े में अग्नि

जलाय खाखकरै और गढ़े के आस पास और नीचे आकके पत्ते डाले फिर उस पक्षाघात के लेप किये हुए मनुष्य को उस गढ़े में बैठावै जब उसके पसीना आजाय तौ पक्षाघात उसी दिन जाता रहै ॥

अथ निद्रा नास रोग का यत्न ॥

भुनी भंग का चूर्ण । महीन पीस रात्रि में अनुमान माफिक सहत से चाटै तौ निश्चय निद्रा आवै और अतीसार संग्रहणी भी जाय और क्षुधा अधिक लगै ॥ १ ॥ अथवा पीपला मूल का चूर्ण । गुड़के साथ ले तौ नष्ट हुई भी निद्रा आवै ॥ २ ॥ अथवा काग लहरी कीजड़ शिरसे बांधे तौ निद्रा आवै ॥ ३ ॥ अथवा कोमल हाथों से पैर की पिंडली दाबै तौ निद्रा आवै ॥ ४ ॥ अथवा बैंगन के भरते में सहत मिलाय के खाय तौ निद्रा तत्काल आवै ॥ ५ ॥ अथवा अरण्ड का तेल । और अलसी का तेल । इन दोनों को बराबर ले कांसी की थाली में खूब घिसकर अंजन करै तौ निद्रा अधिक आवै अथवा बकरी के दूध से पैर के तलुए धोवै तौ निद्रा आवै और तलुओं का दाह अच्छा होय ॥ ७ ॥ अथवा कस्तूरी को स्त्री के दूध में महीन पीस अंजन करै तौ बहुत दिनकी गई हुई भी निद्रा आवे ॥ ८ ॥ अथवा सोंफ और भंग को महीन पीस बकरी के दूध में गरम सुहाता २ लेप करै तौ निद्रा आवै ॥ ९ ॥ ये सब यत्न वैद्य रहस्य में लिखे हैं ॥

अथ सर्व्वाङ्ग में वात होय उसका लक्षण ॥

सर्व्व अंगमें कोप को प्राप्त हुआ जो वात सो संपूर्ण अंगमें पीड़ा करै ॥

अथ इस का यत्न ।

विष गर्भ आदि तेलोंसे सर्वांग वात जाय ॥ १ ॥

अथ सातों धातुओं में प्राप्त हुई जो वात उसका पृथक् २ लक्षण औरयत्न

त्वचा को शून्य और पीली करकै शरीर को दाब औ पीड़ा करै ॥

अथ रुधिर में प्राप्तहुआ जो वात उसका लक्षण ।

शरीर में पीड़ा अधिक होय वरण और से और होजाय शरीर कृश और भारी होय । अरुचिहोय । मुखपर कील होय । भोजन पचै नहीं ॥ २ ॥

अथ माँस में प्राप्त हुआ जो वात उसका लक्षण ॥

शरीर भारी होय । पीड़ा होय । स्तंभित होय ॥ ३ ॥

अथ मेद में प्राप्त हुआ जो वात उस का लक्षण ॥

शरीर में फोड़े करै ॥ ४ ॥

अथ हाड़ों में रहता जो कुपित वात उस का लक्षण ।

संधि २ में पीड़ा होय मांस गलजाय निद्रा आवै नहीं ५ ॥ और मज्या में वात हाड़की वातके समान जानिये ॥ ६ ॥

अथ वीर्य्य में प्राप्त हुआ जो वात उस का लक्षण ॥

स्त्रीसंग करै तो वीर्य्य तत्काल गिरै । गर्भ को विगाड़े अथवा न विगाड़े ॥ ७ ॥

अथ इन सब का यत्न ॥

रस में विगड़ी वातवाले के तेल कामर्दन करे और रक्त में विगड़ी वायु वाले के शीतल लेप करै ॥ अथवा जुलाब दे के वा रुधिर निकलवाके शान्तकर दे ॥ १ ॥ मांसमेदा में रहती जो वात उसको जुलाब से शांतकरिये ॥ ३ ॥ हाड़ोंकी विगड़ी वायु वालेको चिकनी वस्तु खिलाने से और लगाने से शान्तकरिये ॥ ४ ॥ और मज्या में विगड़ी जो वात वहभी चिकनी वस्तु के खाने और लगाने से अच्छी होय ॥ ५ ॥ वीर्य्य में विगड़ी जिसकी वात वह पुष्टताकी औषधि खाने से अच्छा होय ६ ॥

अथ कोष्ट में प्राप्त हुआजो वात उसका लक्षण ॥

उदर में रहती जो दुष्ट वायु वह मल मूत्र को रोक कर हृदय रोग । गुल्म । ववासीर । पसलीकाशूल । इनसब को उपजावै है ॥ ॥

अथ इस का यत्न ॥

पाचनादिक औषधि से इस का यत्न करना। अथवा दूध पिलाइये॥

अथ आमाशयमें रहती जो वात उस का लक्षण ॥

हृदय। पसली। पेट। नाभि। इनमें। पीड़ा। होय तृषालगै। डकारबहुत आवै। विषूचिका और खांसी होय॥ कंठ। मुख सूखजाय। श्वास होय॥

अथ इस का यत्न ॥

दीपन और पाचन की औषधि दीजै लंघन और वमन करावै जुलाब करावै। खाने को पुरानी मूंगचावल दे अथवा रोहिष। हड़कीछाल। कचूर। पुष्करमूल। बेलगिरी। गिलोय। देवदारु। सोंठ। बच। अतीस। पीपल। बायबिड़ंग ये सब बराबर ले इनका काढ़ा करदे तौ आमाशय की बायुजाय॥

अथ पक्वाशय में रहने वाली जो वायु उसका लक्षण ॥

आंतबोले। पेट में शूल और अफराहोय। मलमूत्र कष्टसे उतरे। पीठ में पीड़ा होय॥

अथ गुदामें रहै जो दुष्ट वात उस का लक्षण ॥

मलमूत्र पवन से रुकजाय। पेटमेंशूल और अफराहोय पथरी का रोग होजाय जांघोंमें पीड़ाहोय॥

अथ इस का यत्न ॥

बस्ति कर्म्म से यह रोग जाय॥

अथ हृदय में प्राप्तहुई जो वात उसका यत्न ॥

गिलोय। मिरच। इनदोनों को महीन पीस गुन गुने जल से पिये तौ यह बातजाय ॥ १ ॥ अथवा देव दारु और सोंठ को महीन पीस गुन गुने जल से पिये तौ यह बात जाय॥ २॥ अथवा असगन्ध बहेड़े कीछाल को महीन पीस गुड़ में मिलाय खाय तौ यह बातजाय ॥ ३ ॥

अथ कर्णादिक में प्राप्त जो वात उस का लक्षण ॥

वह कर्णादिक इन्द्रियों का नास करै है ॥

अथ इसका यत्न ॥

सेक और तेलादिक के मर्द्दन से यह बात जाय ॥

अथ शरीर की नसों में प्राप्त जो बात उसका लक्षण ॥

नसोंमें शूल होकर नस इकट्ठी होजांय ॥

अथ इस का यत्न ॥

फस्द खोलने से यह रोग जाय ॥

अथ संधि में प्राप्त हुआ जो बात उस का लक्षण ॥

सन्धि २ में पीड़ा होकर संधियों को बिगाड़ दे ॥

अथ इस का यत्न ॥

सेक और तेल के मर्द्दन से यह बातजाय ॥ अथवा इन्द्रायण की जड़ । और । पीपल २ ॥ टं० गुड़ में खाय तौ सन्धिगत बात जाय ॥

अथ बात व्याधि का सामान्य यत्न ॥

अथ नारायण तेल की विधि ॥

असगन्ध । खरैटीकीजड़ । बेलगिरी । पाटल । दोनों कटेली । गोखुरू । गंगेरन कीछाल । नीबकीछाल अरलू । साठीकीजड़ । खीप । अरनी इनसब औषधियोंको १० टके भरले और १६ सेर पानी में डाल धीरे२ पचावै जब चतुर्थांश काढ़ा रहजायतब इस में ४ सेर तिलका तेल और तेलसे चौगुना गौका दूधडालै फिर इसको मधुरी आंचसे पकावै और पकतेही में कूट १ टके भर । इलायची २ टं० भर । रक्तचन्द २ टं० बच २ टं० छड़ २ टं० सिलाजीत २ ट सेंधानौन २ टं० असगन्ध २ टं० खरैटी २ टं० रास्ना २ टं० सोंफ २ टं० इन्द्रायण २ टं० सालिपर्णी २ टं० पृष्ट पर्णी २ टं० माषपर्णी २ टं० मुद्गपर्णी २ टं० ये सब बराबर ले इसमें मिलाय मधुरी आंच से पकावे जब सब रस जल कर तेलमात्र रहजाय तब उतार छानले फिर इसतेलको मर्द्दन करै अथवा बस्ति कर्म्मकरै तौ पक्षाघात । हनुस्तंभ । मन्यास्तंभ । गलग्रह । बधिरता । गति भंग । कटिग्रह । गात्रशोष ।

नष्टशुक्र । विषमज्वर । अंत्रवृद्धि । शिरोग्रह । पार्श्वशूल । गृध्रसी । और सम्पूर्ण बातरोग । इस नारायण तेलसे दूर होते हैं— इति नारायण तैलं ॥

अथ जोगराज गूगल की विधि ॥

सोंठ । पीपल । चव्य । पीपलामूल । चित्रक । भुनीहींग । अजमोद । सरसों । दोनों जीरे । सम्हालू । इन्द्रजव । पाढ़ । बायबिडङ्ग । गज पीपल । कुटकी । अतीस । भारंगी । बच । मरुआ ये सब औषधि चार २ मासे ले और सब औषधियों से दूना त्रिफला ले फिर इन सब औषधियों को एकत्र कर चार २ मासे भरकी गोली बनावै और घृत के चिकने बासन में धर रक्खे फिर रास्नादिक के काढ़ेसे एक गोली ले सो काढ़ा लिखते हैं ॥ रास्ना । सांटीकीजड़ । सोंठ । गिलोय । अरण्डकीजड़ । इनके काढ़े से योगराज गूगल ले तौ बातके सब रोगजांय ॥ और किरमाला पंचक के काढ़े से ले तौ कफके रोग जांय ॥ और दारुहल्दी के काढ़े के साथ ले तौ प्रमेह के रोग जांय ॥ और गोमूत्र से ले तौ पांडुरोग जांय ॥ सहत के साथ ले तौ बात और रक्तके रोग जांय ॥ और पुनर्नवादि काढ़े से ले तौ सब उदर के रोग जांय ॥ और गूगल का सेवन करनेवाला खटाई आदि खाय नहीं ॥ इति योगराज गूगल की विधि ॥ अथवा लहसन का रस १टके भर उसमें बराबर का तेल मिलाय अनुमान माफिक सेंधानोनडाल पिये तौ बायके सब रोग जांय ॥ अथवा दूध के साथ वा घृत के साथ अथवा मांस के शोरवे के साथ लहसन १४ दिन तन खाय तो सब प्रकार की बात जाय विषमज्वर । शूल । गोला । अग्निमन्दता । फिया । सिरका रोग । वीर्य्यरोग । इनको यह लहसन पूर्व्वोक्त औषधियों के योग से दूर करै है— इति लहसन कल्पः ॥ अथवा रास्ना । धमासा । खरैटीकीजड़ । अरण्ड कीजड़ । देवदारु । कचूर । बच । अड़सा । हड़कीछाल । चव्य । नागरमोथा । सांटीकीजड़ । गिलोय ।

बिधारा। सोंफ। गोखुरू। असगन्ध। अतीस। किरमाला कीगिरी। सतावर। पीपल। सहजननेकाछिलका। धनिया। दोनों कटेली। ये सब बराबर ले इनका काढ़ाकरै इसके साथ जोग राजगूगल लेतौ सबप्रकारके बात बिकार जांय॥ इति महारास्नादि क्वाथः॥ यह भाव प्रकाश में लिखा है अथवा थूहर अरण्ड। बकायन। सम्हालू। सहजना। कनेर इनसबके पत्तोंका रस और रस से चौथाई तेल डालकर पकावै फिर इसमें सोंठ डाले जब ये सब जल जांय और तेल मात्र रहजाय तब इसतेल का मर्द्दन करै तौ सब प्रकार की बात जाय—इतिअष्टाङ्गतैलं॥

अथ विषगर्भ तैलं॥

धतूरेकीजड़। निर्गुण्डी। कड़वीतूंबीकीजड़। अरण्डकी जड़। असगन्ध। पवांड। चित्रक। सहजनेकीजड़। कागलहरी। कलिहारीकीजड़। नींबकीछाल। बकायन की छाल। दसमूल। सतावर। चिरपोटन। गौरीसर। बिदारीकन्द। थूहरकापत्ता आककापत्ता। सनाय। दोनोंकनेरकीछाल। आंधीझाड़ा। सीप ये सब औषधि तीन २ टके भर ले और इन औषधियों की बराबर कालेतिलका तेल ले और इतनाही अरण्ड का तेल ले और इसमें चौगुना पानी डाले फिर सब औषधि कूटकर इसमें मिला कर मधुरी आंच से पकावै जब ये सब औषधि जल समेत जलजांय और तेल मात्र रहजाय तब उतार ले फिर इसमें सोंठ। मिरच। पीपल। असगन्ध। रास्ना। कूट। नागरमोथा। वच। देवदारु। इन्द्रजव। जवाखार। पांचोंनौन। नीलाथोथा। कायफल। पाढ़। भारंगी। नोसादर। गन्धक। पुष्करमूल। सिलाजीत। हरताल ये सब औषधि धेले २ भर ले और सिंगीमुहरा १ टके भर ले इन सबको महीन पीस तेल में डालै फिर इस तेल को मर्द्दन करै तौ सब वातके रोग दूर होंय और कुब्जि। भृकुटी। पीठ। जांघ। और सन्धि २ को सूजन और

ध्रसी रोग। सिरकारोग। हड़फूटन। कर्णशूल। गण्डमाला इन सब रोगों को यह विषगर्भ तैल दूर करै है—इति विषगर्भतैलं ॥

अथ लक्ष्मी बिलास महासुगन्धि तैलं ॥

मजीठ। देवदारु। चीढ़। कटेली। बच। तज। पत्रज। शोधी गन्धक। कचूर। हड़कीछाल। बहेड़े कीछाल। आमला। नागरमोथा ये सब टके २ भर ले पीस औटाय रस काढ़ ले फिर इस रसमें १ सेर तेल डालकर मधुरी आंचसे पकावै जब रस जल कर तेलमात्र रहजाय तब इस तेलमें छड़। मूर्व्वा। मेढ़ल। चम्पे कीजड़। तज। पीपलामूल। नेत्रबाला। कालानौन। ये सब दो दो टके भर ले और लोहबान। वेर। नख। असगन्ध। नखछड़ ये सब दो २ टकेभर ले और इलायची। लवंग। चन्दन। जायफल की कली। कङ्कोल। नागकेसर ये सब पैसे २ भर और कस्तूरी २ टं० लेकर सबको महीन पीस तेलमें मधुरी आंचसे पकावे जब सब रस और औषधि जल कर तेलमात्र रहजाय तब इस में २ टं० कपूर पीस कर डाले फिर इसका मर्द्दन करै तौ सब प्रकार के बातके रोग और सब प्रमेह सूजन गोला इन सबको यह तैल दूर करै है—इति लक्ष्मी विलास महासुगन्ध तैलं ॥ यह चक्रदत्त में लिखा है ॥ अथवा सोंठ ७ टके भर और इस के बराबर एक लहसन की पोटी ले सोंठ को महीन पीस बराबर के घृत में भूनले फिर लहसन को पीस उसमें मिलाय चोखा सहत ७ टके भर इसमें डाले फिर इन सबको एक रसकर एक टके भर नित्य खाय तौ पक्षाघात। हनुस्तंभ। कटिभंग। भुजों की पीड़ा। और सब बायु के रोगइनको यह लहसन दूर करै है ॥ १ ॥

अथ विजय भैरव तेल की विधि ॥

मालकांगनी। असालू। कालाजीरा। अजवाइन। मेथी तिल ये सब बराबर ले और तेल की घानी में इनका तेल

निकलवाके उसतेलका मर्द्दन करै तौ सब बात के रोग जांय ॥ १ ॥ इति विजय भैरवतैलं ॥ अथवा पारा । गन्धक । हरताल । मैनसिलये सब बराबर ले तीन दिनतक कांजीमें मर्द्दीन पीसेफिर एक हाथ कपड़े में इनचारों का लेपकरै फिर उसकपड़े की बत्तीकर उसपर सूत लपेटे फिर उसपर चौगुना तिलका तेल डालकर उसबत्ती को नीची कर जलादे उसके नीचे लोहे का पात्र रक्खे उस में जो टपके का तेल पड़े उसे जुदे पात्र में भरले फिर इस विजय भैरव तेल का मर्द्दन करै तौ सर्व्व प्रकार की बात का रोग जाय इति विजयभैरव तैलं ॥

अथ विजय भैरव रस ॥

हड़कीछाल २ टके भर । चित्रक ३ टके भर इलायची । तज पत्रज । नागरमोथा । ये चारोंपैसे २ भर ले और सम्हालू ५ ट० नागकेसर २ ॥ ट० सोंठ १० ट० कालीमिरच १० ट० पीपल १० ट० पीपलामूल १० ट० शोधासिंगीमुहरा १० ट० सार १० ट० कालीमिरच १० ट० पारा १० ट० शोधीगन्धक ५ ट० पहले पारे और गन्धक कोकजली करैफिर उस कजलीमें ये सबऔषधिडालै फिर इनसब औषधियों में पुरानातिवरसा गुड़ ५० टकेभर मिलाके एकरस करै फिर घृतमें इसकी बेर के प्रमाण गोली बनावै उन गोलियों को घृतके बासन में रक्खे फिर १ तथा २ वा ३ गोली नित्य दोमहीने तक खाय तौ कफ के और पित्तके सब रोग जांय ॥ और इस रस को ४ महीने तक सेवन करै तौ बायुके सब रोग जांय ॥ और १ वर्ष सेवन करै तौ सर्व रोग जाय ॥ और दोवर्ष सेवन करै तौ वृद्धता दूर होकर तरुण होजाय ॥ और तीनवर्ष सेवन करै तौ आयुर्बल बढ़ै शरीर नीरोग रहै इति विजय भैरव रस ॥

अथ वातारि रस ॥

पारा १ भा० शोधीगन्धक २ भा० त्रिफला ३ भा० चित्रक ४

मा० घोघागूगल ५ मा० इन सबको अरण्डके तेलमें १ दिन तक खरल कर फिर इसमें हिंग्वाष्टक चूर्ण डाले और १ दिन खरल कर फिर इसकी गोली २॥ ट० प्रमाण बांधे फिर लवंग सोंठ। अरण्डकी जड़के काढ़े से नित्य प्रति १ महीने तक ले ब्रह्मचर्य्य में रहै तौ सब प्रकार की बात जाय ॥ और साधारण बात तौ इसके ७ दिन सेवन करनेही से दूर होय—इति बातारि रसः ॥

अथ समीर पन्नग रसः ॥

घोघीगन्धक। घोघासिंगीमुहरा। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। पारा। ये सब बराबर ले फिर पारे और गन्धक की कजली करै कजली में ये सब औषधि डाले और आंगरे के रसकी ७ पुट दे फिर इसकी १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे १ गोली अदरक के रस से लेतौ सब प्रकार की बात जाय ॥ १ ॥ इति समीर पन्नग रसः ॥

अथ समीर गज केसरी रसः ॥

नवीनचोखी अफीम। कुचला। कालीमिरच। ये सब बराबर ले फिर इन सबको महीन पीस १ रत्ती प्रमाण गोली पान के रसमें बांधे १ गोली प्रभातही खाकर ऊपर से पान चाबै तौ सब प्रकार की बात जाय और सूजन। बिशूचिका। मृगी। येसब जांय ॥ इति समीर गज केसरी रसः ॥ यह सब बैद्य रहस्य में लिखे हैं ॥

अथ वृद्ध चिन्तामणि रसः ॥

खुरासानीअजवाइन। जीरा। अजमोद। काकड़ासिंगी। असगन्ध। ये सब बराबर ले महीन पीस १ मासे प्रमाण गरम जलके साथ ले तौ सब प्रकारको बात दूर होय और स्वास। खांसी। प्रलाप। अतिनिद्रा। अरुचि। ये सब जांय इति वृद्ध चिन्तामणि रसः ॥

अथ अमृत नाम गुटिका ॥

चित्रक २ टके भर हड़कोछाल २ ट० पारा १ ट० गन्धक

१ ट० सोंठ १ ट० मिरच १ट० पीपल १ट० पीपलामूल १ ट० नागरमोथा १ ट० जायफल १ ट० विधारा १ ट० इलायची ५ ट० अभ्रक ५ टंक शोधासिंगी मुहरा ५ टं० गुड़ ८ टंकभर प्रथम पारे और गन्धक की कजली करै फिर इन सब औषधियों को महीन पीस गुड़ समेत कजली में मिलावै फिर इसमें जलभांगरेकी १ पुट दे फिर १ तथा २ तथा ३ रत्ती के प्रमाण गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तौ सब प्रकार की बात। कोढ़। प्रमेह। मृगी। क्षयी। स्वास। सूजन। आमबात। पांडुरोग। बवासीर। इन सब रोगों को यह रस दूर करै है इति अमृत नाम गुटिका यह योग तरंगिणी में है ॥

अथ रस राक्षस रसः ॥

शोधीगन्धक। शोधापारा। इन दोनों को बराबर ले कजली करै फिर इसमें दूधिया के रसको १ पुट दे फिर तुलसी के रसको १ पुटदे फिर बावची के रसको १ पुटदे फिर मोर सिखाके रसकी १ पुट दे फिर मुलहटी के रसकी १ पुट दे फिर बाराहीकन्द के रसको १ पुट दे फिर बड़फली के रसकी १ पुट दे इस का रस सुखाय पारे और गन्धक की कजली को कुक्कुट के अंडेमें भरै और अण्डे को शोध ले फिर अंडे को कपड़ोटी कर ७६ अंडों को सुखाले फिर उन अंडों को गजपुट में पकावे इसी प्रकार तीन बार करै फिर इसमेंसे १ रत्ती खाय तौ सब प्रकार की बात जाय और यह क्षुधा को बहुत करै है—इति रस राक्षस रस यह रसार्णव में है ॥

अथ बङ्गेश्वर रसः ॥

शोधापारा। शोधीगन्धक। इनको कजली करै और दोनों से आधी शोधी हरताल डाले और इन सबकी बराबर रांग डाले फिर इनको आक के दूधमें ७ दिन खरल करै फिर सुखाय कांचकी आतसी सीसे में कपड़ौटी कर उसमें भरदे

फिर सीसेको बालुका यंत्र में १२ पहर पकावै फिर शीतल करकै काढ़ै उसमें से आधी रत्ती प्रमाण पान में खायतौ सब प्रकार की बात उन्माद क्षीणता मन्दाग्नि कोढ़ व्रण विषमज्वर ये सब जांय॥ इति बंगेश्वर रस यह योग तरंगिणी में है॥

अथ हरताल गुटिका॥

शोधीहरताल। शोधीगन्धक। पारा। सिंगरफ। सुहागा। सोंठ। मिरच। पीपल। ये सब बराबर ले पारे और गन्धक की कजली कर ये सब औषधि मिलावै फिर अदरक के रस को १ पुट दे फिर मूंग प्रमाण गोली बांधे १ गोली प्रभातही खाय तौ सब प्रकार की बात और सूतिका रोग। मन्दाग्नि।संग्रहणी शीतज्वर। ये सब रोग जांय-इति हरताल गुटिका यह रस रत्नप्रदीप में है॥

अथ लहसन पाक की बिधि॥

लहसन १ पैसेभर लेके उसको महीन जीरासा कतरले फिर १ पैसेभर दूध और धेलेभर पानी में चढ़ाकर आंच दे जब दूध लहसन में सूख जाय तब उसको खरल करै जब लुगदी बंध जाय तब धेले भर घृत डाल आंचदे जब सुर्खीपन हो आवै तब उतारले और घृत अधिक रहै सो काढ़डालै फिर २ पैसे भर मिश्री की चासनी करै उसमें कस्तूरी आधीरत्ती लवंग ४ रत्ती, जायफल १ मा० दालचीनी १ मा० सुवर्ण का तबक १ मा० ये सब औषधि पीस चासनीमें मिलावै फिर वह लहसन डाल चारगोली बांधे १गोलीप्रभातही खाय और बहुत बातहोय तौ दूसरी गोली सायंकाल के समय खाय तौ बातजाय और पथ्यसे रहकर यह गोली २१ दिनतक खाय और अधिक खाय तौ ४९ दिन खाय और गोली सिवाय बनानी होय तौ इसीहिसाबसेउस लहसन की तोलके माफिक औषधि बढाले इस लहसन पाकके खानेसे सब प्रकार कीबात दूर होय शरीर पुष्ट होयक्षुधा बढ़ै इति

लहसनपाक—इति वात व्याधि रोग के ८४ भेदों समेत उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्ण ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी
विरचिते अमृतसागर नाम ग्रन्थे वात व्याधिके ८४ भेदों समेत
उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणो नाम अष्टमस्तरङ्गः ॥ * ॥

अथ ऊरुस्तम्भ रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

शीतल । गरम । पितलानी । रूखी । भारी । चिकनी इन वस्तुओं के खाने से और दिनके सोने और रात्रि के जागने से अधिक क्षुधा से अथवा अजीर्ण में पीछे कही हुई वस्तु खाने से पुरुष की वात कोपित होकर पित्तको विगाड़ जंघाओं को स्तंभित और शून्य करदेहै मानों जंघा अंगमें हैंही नहीं हलने चलने नदे उसको ऊरुस्तंभ रोग कहते हैं ॥

अथ ऊरुस्तम्भ रोगका पूर्व्वरूप॥

निद्रा बहुत आवै । ध्यानलगजाय कुछज्वरांश रोमांच कहिं जंघाओं में पीड़ा ये लक्षण होंय तौ जानिये कि ऊरुस्तंभ रोग होगा इस रोग को धन्वन्तरि जीने सुश्रुत में महा वात व्याधिरोग कहा है इसका लक्षण लिखते हैं दोनों पैर सो जांय और उनमें पीड़ा होय बड़ कष्टसे उठें दोनों जंघाओं में पीड़ादाह और धरती में पैर धरतेही पीड़ा होय शीतल स्पर्श को न जाने चला न जाय काष्टकीसी जंघा होजांय टूटीसी दीखें ये लक्षण होंय तौ वातव्याधि रोग जानिये इसी को ऊरुस्तंभ भी कहते हैं ॥

अथ ऊरुस्तम्भका असाध्य लक्षण ॥

जिस ऊरुस्तंभ रोग वाले के दाह और पीड़ा होय शरीर कांपै वह मरजाय ॥ १

अथ ऊरूस्तम्भ का यत्न ॥

त्रिफला । पीपलामूल । सोंठ । कालीमिरच । पीपल । इनको महीन चूर्णकर २ ॥ टंक नित्य सहतसे खायतौ ऊरूस्तंभ रोग जाय १ अथवा सोंठ । पीपल । सिलाजीत । गूगल ये सब ५ मासे गोमूत्र के साथ नित्य पिये तौ यहरोग जाय ॥ २ ॥ अथवा दशमूल के काढ़े के साथ गूगल खाय तौ रोग जाय ३ ॥ यह भाव प्रकाश में लिखा है ॥ अथवा भिलावा १ । टंक गिलोय १ । टं० देवदारु १ । टं० सोंठ १ । टं० हड़कीछाल १ । टं० मांटीकीजड़ १ । टं० दशमूल २ । टं० इनका काढ़ा ले तौ यह रोग जाय ४ अथवा १ । टं० गूगलको गोमूत्रके साथ १५ दिन ले तौ यह रोगजाय ५ ॥ अथवा सहत सरसों बामी की मट्टी इनको महीन पीस मर्द्दन करै तौ ऊरूस्तम्भ जाय ६ अथवा बचका चूर्ण २ ॥ टंक गरम पानी से ले तौ यह रोग जाय ॥ ७ ॥ और ऊरूस्तम्भ वाला इतनी वस्तु न करै रुधिर कढ़ावै नहीं वमन विरेचन और बस्ति कर्म्म न करै यह वैद्यरहस्य में है अथवा खस । या नींबू का रस गुड़ के साथ अथवा सहल के साथ पिये तौ ऊरूस्तम्भ जाय ॥ ८ ॥ अथवा चव्य । हड़ की छाल । चित्रक । देवदारु । कणगचकेफूल । सरसों इनका चूर्ण कर २ ॥ टं० सहत के साथ लेतौ ऊरूस्तम्भ जाय ॥ ९ ॥ यह सर्व्वसंग्रह में है—इति ऊरूस्तंभ रोग ॥

अथ आमवात रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

मन्दाग्नि वाला पुरुष कुपथ्य करकै चिकना अन्न खाय और परिश्रम न करै ऐसा जो पुरुष उसके वात करके प्रेरित जो कच्चे अन्नका रस वह कफका स्थान जो हृदय उसमें प्राप्त होकर कच्चाही रस वात करिकै नसों में जाय प्राप्त होकर नसों के छिद्रोंको रोककै अग्नि को मन्दकर हृदय को भारी कर दे है और कफ वात कुपित होकर कोष्ठ और त्रिकसन्धि में प्रवेश कर शरीर को स्तंभित करदे है उसको आम वात कहिये ॥

अथ लक्षण ॥

अंगमें हड़फूटन। अरुचि। तृषा। आलस्य। शरीरभारी ज्वर ये होंय और अन्नपचे नहीं अंग सुन्न पड़जाय। जिसमें ये लक्षण होंय उसको आमवात कहिये ॥

अथ बाहु बढ़े हुएका लक्षण ॥

कोपको प्राप्त हुआ जो आमवात वह सर्व रोगों में कष्टसाध्य होता है और इसका दोष लिखते हैं हाथ पैर सिर और टांगों में त्रिक और जंघाओं की संधियों में प्राप्तहोकर पीड़ा युक्त सूजन करै है और उन स्थानों में बिच्छू के लगने कीसी बहुत पीड़ा होय अग्निमन्द होय लारपड़े उत्साह जाता रहै। मुखका स्वाद औरका और होजाय दाहहोय। मूत्र बहुत उतरे कुक्षि में कठिनता होकर शूल होय निद्रा आवैनहीं वमन होय तृषा अधिक लगे भ्रम और मूर्छा होय मल उतरे नहीं। शरीर जड़ होजाय। आन्त्र बोला करै। अफरा होय। और बात व्याधि के कहे हुए और भी उपद्रव होंय और जिसमें पित्त अधिक होय उसमें दाह होय। पीलाई को लिये होय और बाताधिक्य में शूल होय और कफाधिक्य होय। भारी पनहोय। खुजलीहोय। एक दोष का साध्य२ दोषका कष्ट साध्य और सर्वदेहमें विचरने वाला सन्निपात का सोथ;असाध्य जानिये ॥

अथ यत्न ॥

अरण्ड के बीज को दूध में पकाय खीर खाय तौ आमवात और गृध्रसी रोग जाय ॥

अथ महा रास्नादि क्वाथ ॥

रास्ना। अरंडकीजड़। अडूसा। धमासा। कचूर। दारुहल्दी। खरैटी। नागरमोथा। सोंठ। अतीस। हड़कीछाल। गोखुरू। सहजना। चव्य। दोनोंकटेली। इनको बराबर ले और रास्ना तिगुनी ले फिर इनको जवकुट कर ५ टं० का काढ़ा नित्य दे तौ इतने रोग दूर होंय पक्षाघात॥ अर्दित।

कम्प। कुबड़ापन सन्धि २ की बात। पैरकी पीड़ा। गृध्रसी। हनुग्रह। ऊरुस्तंभ। वातरक्त। बवासीर। वीर्य्य का दोष। स्त्रीकावंध्यापन इन सब रोगों को यह काढ़ा दूरकरै है इति महारास्नादि क्वाथः ॥

अथ अजमोदादिक चूर्ण ॥

अजमोद। कालीमिरच। पीपल। बायबिडंग। देवदारु। चित्रक। सोंफ। सेंधानौन। पीपलामूल। ये सब औषधि टके २ भर ले सोंठ १० टकेभर बिधारा १० ट० हड़कीछाल ५ ट० इनसबको महीन पीस और सबकी बराबर गुड़ले फिर इसकी २॥ टंक भर की गोली बांधे और नित्य गरम पानी से ले तौ आमवात। शूल। गृध्रसी। गोला। प्रतूनी। कटि। पीठ। जंघा। और हड़फूटन। सूजन। इन सब रोगों को यह चूर्ण दूर करै है ॥ इति अजमोदादि चूर्ण ॥ और योगराज गूगल जो पीछै बात ब्याधि में लिखाहै उससे भी आमवात को रोग दूर होय है ॥

अथ सोंठ पाक ॥

सोंठ ८ टकेभर गौकाका घृत १ सेर दूध ४ सेर ले फिर सोंठको महीन पीस घृत में मकराके दूधमें पकाय खासार करले फिर ५० टके भर खांड़की चासनी कर उस चासनी में घृत से मकरोई सोंठ मावे सहित डाले फिर इसमें सोंठ १ टके भर नागकेसर १ टके भर डाले फिर इसकी गोली १ टके भरकी बांधे एक २ गोली दोनों समय खाय तौ आम बातको दूरकर शरीर को पुष्ट कर पराक्रम करै है ॥ ४ ॥ इति शुंठीपाकः ॥

अथवा मेथी ८ टके भर सोंठ ८ टकेभर इनदोनोंको महीन पीस गौके ४ सेर दूध में पकावै और इन दोनों को घृत में मकरोकर मावा करै फिर ४ सेर पक्की मिश्री की चासनी करै उसमें यह मावा डालै और मिरच १ टके भर चित्रक १ ट० पीपल १ ट० सोंठ १ ट० पीपलामूल १ ट० धनियां १ ट०

सोंफ १ ट० जायफल १ ट० कपूर १ ट० तज १ ट० पत्रज १ ट० नागरमोथा १ ट० इन सबको महीन पीस चासनी में डाले फिर सब को एक रस कर टके २ भर की गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तौ आमवात। वातव्याधि। विषमज्वर प्रदर इन सब रोगों को दूर कर वीर्य्य की वृद्धि करै है ५ ॥—इति मेथी पाकः ॥

अथवा लहसनका रस २॥ टं० गौका घृत २॥ टं० इन दोनों को मिलाय नित्य पिये तौ आमवात जाय ॥ ६ ॥ अथवा सेंधानौन ५ टं० हड़कोछाल ५ टं० पुष्करमूल ५ टं० सहुआ ५ टं० पीपल ५ टं० इन सबको महीन पीस फिर अरण्ड का तेल १ सेर सोंफ का अरक १ सेर कांजी २ सेर दही का मट्ठा ४ सेर इन सब को औषधि समेत इकट्ठा कर कढ़ाई में चढ़ाय नीचै मन्द २ आंच दे जब सब रस जल जाय और तेल मात्र रहजाय तब उतार ले फिर २॥ टं० इसमें से नित्य खाय अथवा लगावै तौ आमवात जाय॥ और क्षुधा की वृद्धि होय ७—इति वृहत्सैंधवादितैलं ॥ अथवा पारा। आंवलीगन्धक। सोंठ। कुटकी। त्रिफला किरमाला की गिरी ये सब बराबर ले और हड़कोछाल अन्य औषधियों से तिगुनी ले प्रथम पारे और गन्धक की कजली करै फिर ये सब औषधि मिलावै फिर इस में से १ मासे प्रमाण सोंठ। और अरण्ड की जड़के काढ़े से लेतौ आमवात रोग तत्कालजाय ८—इति आंब वातारि रसः ॥ और दही। दूध। गुड़। मछली। मांस। उर्द की वस्तु, इतनी वस्तु, आमवात वाला न खाय ॥ यह भावप्रकाश में लिखा है ॥

अथवा गूगल १ सेर हड़कोछाल का चूर्ण १ सेर आमले का चूर्ण १ सेर बहेड़े की छाल का चूर्ण १ सेर ये सब औषधि ४ सेर पानी में डाल पीछे कढ़ाई में पकावै जब जल का चतुर्थांश रह जाय तब उतार ले फिर अग्नि के ऊपर चढ़ाय कुछ गाढ़ा करले पीछे इस में सोंठ २॥ टं० मिरच २॥ टं०

पीपल २॥ टं० त्रिफला २॥ टं०नागरमोथा २॥ टं० देवदारु २॥ टं० शोधेगन्धक २॥ टं० शोधा जमालगोटा १०० पहले पारे और गन्धक की कज्जली करै फिर कज्जली में ये सब औषधि मिलावै फिर ये सब गूगल के रसमें मिलाकर १ मासे गरम जलके साथ ले तौ आम बात को तत्काल दूरकर क्षुधा की वृद्धि कर धातु को बढ़ावै। मुख सूजै नहीं। और बात के रोग भगंदर। सूजन। शूल। बवासीर इन सब रोगों को यह दूर करै है—इति ब्याधिसार्दूल गूगल ९॥

अथवा हड़कीछाल। सेंधानोन। निसोत। इन्द्रायणकीजड़ सोंठ। इन्द्रायण के फलकी मीगी इन सब को महीन पीस लोह के पात्र में जलभरकर उसमें ये औषधि डाले फिर मधुरी आंच से पकाय छोटे बेरके प्रमाण गोली बांधे १ गोली गरम पानीसे ले ऊपर से बहुत घृत डाल चावल खायतो आमवात जाय १०—इति आम बातारि गुटिका॥ ये सब वैद्यरहस्य में लिखे हैं॥

अथवा सोंठ। कालीमिरच। पीपल। त्रिफला। नागरमोथा। बायबिडंग। चव्य। चित्रक। बच। इलायची। पीपलामूल। भाऊकीजड़। देवदारु। तुम्बुर। पुष्करमूल। कूठ। दोनों हल्दी सोंफ। जीरा। सोंठ। पचज। धमासा। कालानौन। जवाखार। सज्जी। गज पीपल। सेंधानौन ये औषधि बराबर ले फिर इन औषधियों को महीन पीस गूगल में मिलावै फिर इसको २॥ टं० घृत अथवा सहत के साथ नित्य खाय तो आमवात। उदावर्त्त। बवासीर। कृमिरोग। बिषमज्वर। उन्माद। अफरा। कोढ। सूजन। पाण्डुरोग इन सबको यह दूर करै है धन्वन्तरजी ने इस का नाम द्वात्रिंशक गूगल धरा है॥११॥ यह बीर सिंहावलोकन में है अथवा शोधागूगल १ सेर कडुआतेल ८ टकेभर त्रिफला ३ सेर २४ सेर पानी में त्रिफला डालकर औटावै जब पानी का चतुर्थांश ६ सेर रह जाय तब इस पानी को छान फिर अग्नि पर चढ़ाकर गाढ़ा

करले फिर इसमें गूगल। तेल। सोंठ २॥ टं० मिरच २॥ टं० पीपल २॥ टं० त्रिफला २॥ टं० नागरमोथा २॥ टं० देवदारु २॥ टं० गिलोय २॥ टं० निसोत २॥ टं० दात्यूणी २॥ टं० बच २॥ टं० जिमीकन्द २॥ टं० पारा २॥ टं० शोधीगन्धक २॥ टं० धतूरे के बीज ४ टं० इन सबको महीन पीस उस त्रिफले के जल के खलमें मिलाके एक जीव करै फिर इस में से १ मासे नित्य गरम जलसे ले तौ क्षुधा बढ़ै धातु को बढ़ावै शरीर को नीरोग करै और आमबात। मधवाय। कटि कीबात। भगंदर। पैरोंकीबात। जांघकीबात। पथरी। मूत्र कृच्छ्र इन सब रोगों को यह गूगल दूर करै है—इति सिंहनाद गूगल १२ यह योग तरंगिणी में है ॥

अथवा शोधीगन्धक ५ टं० तामेश्वर ५ टं० पारा २॥ टं० सार २ टं० इन सबको इकट्ठाकर अरंड के पत्तों के ऊपर डाले फिर इनको खरलमें पीस पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक सोंठ इनका काढ़ा कर उस काढ़े की १६ पुटदे और बहेड़े के रसकी २० पुट दे और गिलोय के रसकी १० पुटदे और इनसब औषधियों के बराबर भुनासुहागा डाले और सुहागे से आधा बिड़नौन डालै और बिड़नौन की बराबर कालीमिरच डालैऔर सोंठ। पीपल। त्रिफला। लवंग। ये सब मिरच के बराबर डालै फिर इनसब को महीन पीस एक रसकरै फिर १ मासे नित्य पृथक् २ अनोपान से खाय तौ सर्व्व रोग मात्र को यह रस दूरकर क्षुधा को बहुत बढ़ावै है और आमबातको दूर कर स्थूल पुरुष कोकृश और कृश पुरुष को पुष्ट करे है इसकी ४ रत्ती की मात्रा है जो कंठ तक भी भोजन किया होय उस कोभी तत्काल पचादे १३ इति वातेश्वर रसः—यह सार संग्रह में है ॥

और दही। मछली। गुड़। दूध। उर्द का आटा ये सब वस्तु आमबात वाला न खाय ॥ इति आम बातकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ पित्त व्याधि की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

कड़वा रस। खटाई। गरम वस्तु दाह करने वाली वस्तु तीक्ष्ण इनके खाने से और उपवास क्रोध और अधिक मैथुन करने से बहुत नोन के खाने से और घाम के सोने से प्यास भूख के रोकने से। खेद के करने से दूसरी वस्तु के करने से गर्मी का कोप होजाय है और भोजन की जीर्णता के समय शरदऋतु में। ग्रीष्मऋतु में। मध्याह्न में। अर्धरात्रि के समय पित्त कोप को प्राप्त होकर ४० रोगों को पैदा करै है उन का नाम और लक्षण ॥ तरुणाई में श्वेत बाल होजांय १ लालनेत्र रहैं २ मूत्रलाल होय ३ नेत्र पीले रहैं ४ मूत्रपीला उतरै ५ मलपीला होय ६ नख पीले होंय ७ दांत पीले होंय ८ शरीर पीला रहै ९ अंधेरी आवै १० सर्वत्र पीला दीखा करै ११ निद्रा थोड़ी आवै १२ मुख सूखै १३ मुखमें दुर्गन्धि आवै १४ मुख तीखा रहै १५ गरम श्वास निकलै १६ मुख खट्टा रहै १७ डकार में धुआं निकलै १८ वमनी आवै १९ इन्द्री शिथिल होजांय २० क्रोध बहुत होय २१ दाह होय २२ अतीसार रहा करै २३ गरमी सुहावै नहीं शीतलता सुहावै २४ किसी वस्तु से तृप्ति हो नहीं २५ सर्व्व वस्तु से अति प्रीति रहै २६ भोजन के पीछे जलन होय २७ क्षुधा बहुत लगै २८ नकसीर आदि होय २९ मल पतला होय ३० मल गरम उतरै ३१ मूत्र गरम उतरै ३२ मूत्र कृच्छ्र होय ३३ वीर्य्य की अल्पता होय ३४ शरीर गरम रहै ३५ पसीना बहुत आवै ३६ पसीने से दुर्गन्धि आवै ३७ हाथ पैरों में रोग बहुत होंय ३८ शरीर में हड़फूटन होय ३९ फोड़ा फुंसी बहुत होंय ४० ये ४० रोग गरमी के हैं ॥

अथ इन सब पित्त रोगों का सामान्य यत्न ॥

नीमकी छाल को आदि ले तिक्त वस्तु के खाने से और मिश्री को आदि ले मीठी वस्तु खाने से। चन्दन को आदि ले शीतल वस्तु के लगाने से। शीत पवन से। शीतल छाया

के रहने से। रात्रिमें सोने से। खसके पंखे की पवन से चन्द्रमा की चांदनीसे। तहखाने के रहने से दूध के पीनेसे। जुलाब के लेनेसे रुधिर के निकलवाने से। इतनी बातों के करने से पित्त रोग दूर होंय॥ इति पित्त व्याधि की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण॥

भारी। मीठो। बहुत चिकनी दही आदि शीतल वस्तुओं के खानेसे। और दिनके सोने से बहुत बैठा रहने से इतनी वस्तुओं से कफ का कोप होता है प्रभात समय और भोजन के पीछे बसन्तऋतु में कफका कोप होता है॥

अथ कफ के २० रोगों का लक्षण॥

मुख मीठा रहै १ मुख कफसे लिपटा रहै २ लार पड़ै ३ निद्रा बहुत आवै ४ कंठमें घूंघर शब्द होय ५ कड़वे रसकी इच्छा रहै ६ गरम वस्तु की इच्छा रहै ७ बुद्धिकी जड़ता होय ८ चैतन्यता थोड़ी रहै ९ आलस बहुत आवै १० भूख लगे नहीं ११ मन्दाग्नि होय १२ दिशा बहुत जाय १३ मल श्वेत होय १४ मूत बहुत उतरै १५ मूत्रश्वेत होय १६ वीर्य की आधिक्यता होय १७ निश्चल होय १८ शरीर भारी होय १९ शरीर ठंढा रहै २० ये कफ के बीस रोग हैं॥

अथ कफके २० रोगों का समान्य यत्न॥

रूखो। कषैलो। गरम। कड़वो। वस्तु के खानेसे स्वेद और कुल्ला और वमन के करनेसे पसीना आने से लंघन करने से तृषा रोकने से। हुक्का पीनेसे। कुस्तीलड़नेसे। जलक्रीड़ासे। चित्रक के खाने से। नास लेने से। मार्ग चलने से। मैथुन करने से। जागने से इतनी वस्तु के करने से कफ के २० रोग जाते हैं॥ इति कफव्याधि की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

इतिश्री मन्महाराजाधिराज राजराजेन्द्र श्रीमहाराज सवाई प्रताप
सिंह जी विरचिते अमृतसागर नामग्रंथे ऊरुस्तंभ आमवात
पित्तव्याधि कफ व्याधि आदि रोगों के भेद संयुक्त उत्पत्ति
लक्षण यत्न निरूपणं नाम नवमस्तरङ्गः॥ * ॥

अथ वात रक्त की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

नोंन। गरमबस्तु। सड़ामांस। खली। बड़ीमूली। कुलत्थ। उर्द्द। बहुत तरकारी। मांस। मछली। दही। विरुद्धबस्तु। इन सबके खानेसे। और आसव और कांजीके पीनेसे। क्रोधसे दिनके सोने से। हाथी। घोड़ा। ऊंटके दौड़ानेसे इन बस्तुओं से सुकुमार और सुखी पुरुषके बात रक्त का रोग कोपको प्राप्त होता है ॥

अथ बातरक्त का स्वरूप ॥

सब शरीर में रुधिर दग्ध होजाय फिर वह रुधिर दुष्ट होकर दोनों पैरों में इकट्ठा होने लगे ॥

अथ वातरक्त का पूर्व्व रूप ॥

पसीना बहुत आवै। अथवा आवै नहीं। शरीर काला पड़ जाय शरीर में स्पर्श का ज्ञान होय नहीं थोड़ीसी चोट में पीड़ा बहुत होय। सन्धि २ सिथिल होजाय आलस्य बहुत आवै शरीर में फुन्सी होजांय। घोंटू। जंघा। कटि। हाथ। पैरों की सन्धि में पीड़ा होय शरीर भारी रहै। सुन्न होजाय। शरीर में दाह होय। वर्ण और का और होजाय। शरीरमें लालचटें पड़ जांय ये लक्षण होंय तो जानिये कि बात रक्त होगा ॥

अथ वाताधिक वातरक्त का लक्षण ॥

पैरों में शूलादिक बहुत होंय और फड़कें। सूजन होय रूखे और काले होंय और २४ नाड़ी और अंगुली के मध्य में संकोच होय। शरीर जकड़बन्दहो और कांपै और शरीर सूखासा दीखे ये लक्षण होंय तो बाताधिक का बात रक्त जानिये ॥

अथ रक्ताधिक वातरक्त का लक्षण ॥

जिसमें सूजन होय। पीड़ा बहुत होय। ललाई सहित हो और चिमचिमी और खुजली होय। ये लक्षण होंय उसके रक्ताधिक बात रक्त कहिये ॥

अथ पित्ताधिक वातरक्त का लक्षण ॥

जिसमें। दाह। मोह सूजन होय। पकजाय। गरम बहुत होय ये लक्षण होंय उसको पित्ताधिक वात रक्त कहिये॥

अथ कफाधिक वातरक्त का लक्षण ॥

शरीर सिथिल और भारी चिकना होजाय। शून्य और ठंढ़ा होय। खुजली चलै ये लक्षण जिसमें होंय उसको कफाधिक वातरक्त कहिये और जिसमें ये सब लक्षण मिले होंय उसको सन्निपात का वातरक्त कहिये १॥

अथ वातरक्त हाथोंमें होय उसका लक्षण ॥

जैसे पैरके तलुवे में होय है तैसेही हथेली के ऊपरफुन्सी आदि होंय हैं पीछे सब शरीर में होय॥ २॥

अथ बातरक्त का असाध्य लक्षण ॥

पैरके तालू से लेकै घोटू तक फुन्सी होंय और बलमांस अग्नि ये सब नष्ट होजांय तौ बातरक्त असाध्य जानिये और इसको १ वर्ष का याप्य कहिये॥

अथ वातरक्त का उपद्रव ॥

नींद आवै नहीं। रुचिजाती रहै। स्वास होय मांसगलजाय मस्तक पीड़ा। मूर्छा। तृषा। ज्वर। मोह। हिचकी। ये होंय शरीर कांपै। अंगुली गलिजांय। विसर्प होय। फुन्सी पकजाय। पीड़ाहोय। घूमनी आवै। अंगुलियां टेढी होजांय। फोड़ामें दाह होय। ये इसके उपद्रव हैं॥

अथ वातरक्त का यत्न ॥

बातरक्त वाले के जोंक लगायकै अथवा सिंगी लगाय के अथवा पचका करकै अथवा फस्त करिकै रुधिर कढ़ाइये परन्तु रुधिर ऐसे अनुमान माफिक कढ़ाइये जहां ताईं वायु बढ़े नहीं और दिन में सोना। क्रोध। खेद। मैथुन न करै कड़वी। गरम। भारी। रूखी और खटाई इतनी वस्तु, बातरक्तवाला न खाय पुरानाजव। पुरानागेहूं। और पुराना धान इतनी वस्तु, खाय अथवा लवा। तीतर। बटेर। अरहड़

चना । मूंग । मसूर । कुलत्थ । धनियाँ । पिरपोटन । बथुआ । लूणाख्य । चोलाई । बकरीकादूध । और घृत इतनी वस्तु का खाना योग्य है अथवा गूगल १। टं० गिलोयके काढ़े से ले अथवा अरण्डका तेल २॥ टं० गिलोय के काढ़े में डाल कर पिये तौ बातरक्त जाय अथवा मंजिष्ठादिक काढ़े से बातरक्तजाय सो लिखते हैं मंजीठ । त्रिफला । कुटकी । बच । दारुहल्दी । गिलोय । नीबकी छाल ये सब बराबर ले जवकुट कर २॥ टं० का काढ़ा नित्य ले तौ बातरक्त । कोढ़ । पामा । फोड़ा इन सब रोगों को यह दूर करै है १ एक मण्डल तक ले इति लघुमंजिष्ठादिक क्वाथः ॥

अथवा गिलोय । बावची । पवाड़ । नीमकीछाल । और हड़कीछाल । हल्दी । अडूसा । सतावर । नेत्रबाला । खरैटी । मुलहटी । सहुआ । गोखुरू । पटोल । खस । मंजीठ । रक्तचन्दन । ये सब बराबर ले फिर जवकुट कर २॥ टंक का काढ़ा नित्य ले तौ बात रक्त कोढ़ । पामा । दाह इन रोगों को यह काढ़ा दूर करै है इति गुड़ूच्यादि क्वाथः ये सब भावप्रकाश में हैं ॥

अथवा शोधा भैंसागूगल १ सेर हड़कीछाल १ सेर बहेड़ेकीछाल १ सेर आमला १ सेर गिलोय ३२ टके भर इन सब को जवकुट कर ६४ सेर पानी में औटावै जब आधापानी रह जाय तब उतार कर छान ले फिर कढ़ाई में औटाके गाढ़ा करै फिर पारा २॥ टं० वायविडंग २॥ टं० निसोत २॥ टं० गिलोय २॥ टं० दात्यूणी २॥ टं० पहले पारे और गन्धककी कजली करै फिर कजली में ये औषधि महीनपीस मिलाय उस गूगल में डालै फिर सब को एक रस कर ४ मासे अथवा ८ मासे मंजिष्ठादिक काढ़े से नित्य ले तौ बात रक्त । फोड़ा । फुंसी । व्रण । खांसी । गोला । कोढ़ । सूजन । उदर केरोग पांडुरोग । प्रमेह मन्दाग्नि इन सब रोगों को यह दूर करै है और इसका खाने वाला खेद न करै धूप में न रहै अग्निके पास बैठे नहीं

खटाई खाय नहीं मैथुन करै नहीं मार्ग चलै नहीं नोन और तेल खाय नहीं ॥ ३ ॥ इति किशोर गुग्गुलः ॥

अथवा १ सेर भिलावे ऐसे भारी ले जो जल में डूब जांय उनका मुंह खार से घिस १६ सेर पानी में डाल औटावै इस औटते पानी में गिलोय २ सेर जब कुटकर डाले जब इस पानी का चतुर्थांश रह जाय तब इस में गिलोय २॥ टं० बावची २॥ टं० नीबकीछाल २॥ टं० हड़कीछाल २॥ टं० आमला २॥ टं० हल्दी २॥ टं० नागरमोथा ५ टं० तज ५ टं० इलायची ५ टं० सोंठ ५ टं० नागकेसर ५ टं० पितपापड़ा ५ टं० पचज ५ टं० नेत्रबाला ५ टं० खस ५ टं० चन्दन ५ टं० गोखुरू ५ टं० कचूर ५ टं० रक्तचन्दन ५ टं० इनको महीन पीस डाले भिलावे समेत एकजीव कर अच्छे बासनमें रखै। फिर इसमें से ५ टं० नित्य उठके खायले तौ बातरक्त। कोढ़। बवासीर विसर्प। पामा। बाल और रुधिरके सब विकार इतने रोगों को यह दूर करै है। इसका खाने वाला धूपमें रहना अग्नि के पास रहना न करै। और खटाई मांस न खाय तेल लगावै नहीं। मार्ग चलै नहीं इतनो वस्तु न करै ॥ ४॥ इति अमृत भल्लात का अवलेह ॥

अथवा अलसी वा अरंडी को दूधमें पीस हाथ पैरों में लेप करै तो बातरक्त जाय ॥ ५ ॥ अथवा गौरीसर। राल। मोम। मंजीठ ये सब बराबर ले तेल में पकावै फिर इसका मर्दन करै तौ बातरक्त जाय ६ अथवा अरण्ड की जड़। गिलोय अडूसा इनका काढ़ा कर उसमें गूगल ४ मासे अरण्ड का तेल २॥ टं० डाल के पिये तौ बात रक्त। अर्शी। मघवाय खास। और फोड़ा। इन सबको यह दूर करै है यह वैद्यरहस्य में लिखा है अथवा हरिताल के चोखपन ले उनको साठी के रस में दो दिन खरल करै फिर उसको गाढ़ा कर टिकड़ी कर सुखाले फिर साठीके राख के बीच में उस हरिताल की टिकड़ी को ठीकरेमें धरै फिर उस ठीकरेको चूल्हे पर चढ़ाय

५ दिन रात मधुरी आंच दे फिर स्वांग शीतल होजाय तब काढ़े जो वह हरिताल स्वेत निकले और पूरी तोल उतरे तो इसमें से १रत्ती गुड़ आदि काढ़े के साथ खे तो वातरक्त और १८ प्रकार के कोढ़ फिरंग वाय। विसर्प। पामा। फोरा इन सब को यह दूर करै है और इसका खानेवाला। नोन। खटाई। कड़ुआ रस। धूप में तथा अग्नि के पास बैठना इतनी बातें छोड़ दे और सेंधानोन। सोंठारस खाय॥ ८॥ इति तालकेश्वर रस यह हरिताल की क्रिया भाव प्रकाश में लिखी है॥ इति वात रक्त की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ शूल रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ आम ५ वातकफ ६ कफ पित्त ७ वातपित्त इन भेदों से शूल आठ प्रकार का है॥

अथ वात के शूल की उत्पत्ति लक्षण॥

खेदसे। घोड़े आदि के दौड़ाने से। अति मैथुन करने से। बहुत जागने से। जलादिका के अत्यन्त पीने से। मटर। मूंग। अड़हर। कोदों। और सूखी वस्तु इनके अधिक खाने से अजीर्ण में भोजन करने से। चोट लगने से। कसैली तीखी कड़वी। भीजाअन्न। विरुद्ध वस्तु। सूखा मांस। इनके खाने से। और मल मूत्र मैथुन के रोकने से। अधो वायु और मल के रोकनेसे। लंघन करनेसे। बहुत हंसनेसे। इतनी वस्तुओं से वायु बढ़ कर हृदय दोनों पसली। सब। सन्धि। इन स्थानों में शूल चलावे संध्या समय बदली और शीतकाल में बहुत शूल होय वारंवार थंभ जाय और फिर होने लगे। मलमूत्र रुकजाय। शूल चलै। पीड़ा बहुत होय इति वायु शूल की उत्पत्ति लक्षण॥

अथ पित्त के शूल की उत्पत्ति लक्षण॥

खारी और मिरच आदि बहुत तीक्ष्ण वस्तु। गरम वस्तु, तिल। खल। कुलत्थ। खटाई। इनके खानेसे क्रोध और खेद और मैथुन के करने से मदिरा और आसवके पीने से धूप

के सेवन से इतनी वस्तुओं से पित्त कुपित होकर शूल को प्रगट करै है तब तृषा। दाह। नाभि में पसीना। मूर्च्छा। भ्रम। क्रोध ये होंय और मध्यान्ह। अर्द्ध रात्रि। ग्रीष्मऋतु। शरदऋतु। इतने समय में अधिक शूल होय तौ जानियेकि पित्त का शूल है।

अथ कफ के शूलकी उत्पत्ति लक्षण ॥

अनूप देश के मांस मछली पेड़ा आदि दूध की वस्तु मैदा की वस्तु। इन वस्तुओंके खानेसे। औगांडेके चूसनेसे। मधुर रसके पीने से। इतनी वस्तुओं से कफ कोप को प्राप्त होकर शूलको उत्पन्न करै है॥ हृदय दूखे। वमनसी आवै। खांसी और पीड़ा। भोजनमें अरुचि पेट में पीड़ा। मथवाय। शरीर भारी। भोजन करते में पीड़ा ये सब होंय और मल उतरै नहीं। और वसन्तऋतु में प्रभात समय बहुत होय तब जानिये कि कफका शूल है॥

अथ सन्निपात के शूल का लक्षण ॥

जो लक्षण पीछे कहे वह सब मिलैं तब सन्निपात का शूल कहिये॥

अथ आम के शूल का लक्षण॥

अफरा। और पेट में गुड़ गुड़ शब्द होय। हृदय कटा जाय वमन आवै शरीर भारी होजाय। लार गिरै। कफके शूल के सब लक्षण मिलैं तौ आमको शूल कहिये॥

अथ वायु कफ के शूल का लक्षण॥

पेड़ू हृदय। कंठ। दोनों पसलियों में शूलहोय उसको वातकफ का शूल कहिये॥

अथ कफ पित्त के शूल का लक्षण॥

कुक्षि। हृदय। नाभि। इनमें शूल होयतो कफ का शूल जानिये

अथ शूल रोग का उपद्रव॥

पीड़ा। तृषा। मूर्छा। अफरा। शरीर भारी। अरुचि। कास श्वास ये होंय तो शूलका उपद्रव जानिये॥

अथ शूलका भेद परिणाम शूल है उसका लक्षण ॥

जितने भेद शूल के हैं उतने ही परिणाम शूल के हैं यही उसकी उत्पत्ति है इसमें इतना विशेष है कि जो कुपित्त वात है वह कफपित्त से मिल शूलको करै है

अथ इस का लक्षण ॥

भोजन पचे के पीछे शूल उपजै उसको परिणाम शू कहिये ॥

अथ अंगद्रव शूल का लक्षण ॥

भोजन कियाहुआ कभी पच जाय और कभी न पचै ॥

अथ जरत्पित्त शूल का लक्षण ॥

जो भोजन पचने के समय शूल होय उसको जरत्पित्त शूल कहिये ॥

अथ शूल रोग का यत्न ॥

शूल रोगवाले को वमन करावै और औषधियों से पसीना लिवावै पाचन दीजिये वस्तिकर्म कराइये सज्जीखार आदि का चूर्ण और क्रव्याद रस दीजिये गरम १ कुलत्थ का सेक करिये और रेतको गरम कर पानी डाल उसे सिझाय कपड़े में धर पोटरी बनाय सेक करावै अथवा काकड़ा सिंगी। कुलत्थ। तिल। जौ। अरण्डकीजड़। अलसी। साटीकीजड़। लहसनके बीज। इनको कांजी में गरम कर जहां शूल होय वहांउसकासेक करावै तौशूलजाय॥१॥ अथवा तिलोंकोपीस कांजी में गरम कर थोड़ा सा तेल डाल कपड़े की पोटरी से उसका सेक करावै तौ तत्काल शूल जाय ॥ २॥ अथवा मैंढल को कांजी में पीस नाभि के लेप करै तौ शूल जाय ॥ ३॥ अथवा सोंठ। अरण्डकीजड़। इनका काढ़ा देतौ शूल जाय ॥ ४॥ अथवा सोंठ। और हड़के काढ़े में। हींग। काला नौन डाल कर पिये तौ शूल जाय ॥ ५॥ अथवा गुड़को औटाय उसमें जवाखार डाल कर पिये तौ शूल जाय ॥ ६॥ अथवा कांसा। रूपा। तांबा इनके पात्रमें जल भर तिसके

ऊपर उस पालको फेरै तौ शूल जाय ॥ ७ ॥ अथवा पित्त का शूल होय तौ जुलाव से दूर होय ॥ ८ ॥ अथवा गुड़ और हड़कीछाल को पीस घृत मिलाय खाय तौ पित्तका शूल जाय ॥

अथ कफके शूल का यत्न ॥

आमले का चूर्ण सहत में चाटै तौ कफका शूल जाय ॥ ९ ॥ अथवा नीमकी छाल का काढ़ा कर उसमें दारू डाल पिये तौ कफका शूल जाय ॥१०॥ अथवा जवाखार। सेंधानौन कालानौन । साम्हरनौन। पीपल। पीपलामूल । चव्य । चित्रक । सोंठ । भुनीहींग। इनको बराबर ले चूर्णकर २ ॥ टं० गरम पानी से ले तौ कफका शूल जाय ॥ ११ ॥ जो यत्न कफशूल के हैं वेही आमशूल के जान लेना ॥ अथवा राई। और त्रिफला। सहत। घृत से ले तौ सब शूल दूर होंय १२ ॥

अथवा दारुहल्दी। चोख। कूठ। सौंफ। हींग। सेंधानौन इन सबको कांजीमेंपीस गरमकर सुहाता लेपकरै तौ शूल जाय ॥१३ अथवा बेलकीजड़। अरण्डकीजड़। चित्रक। सोंठ। भुनीहींग। सेंधानौन इन सबको महीन पीस चूर्ण कर २ ॥ टं० गरमपानी से ले तौ शूल दूर होय ॥ १४ ॥ अथवा पक्के पेठे के टुकड़े कर धूपमें सुखावै पीछे उन टुकड़ों को पीतल के पात्र में धर चूल्हे पर चढ़ाय आग लगाय युक्ति से कोयला करै राख न होने पावै पीछे इन कोयलों को पीस उसमें २ मासे सोंठ का चूर्ण मिलाय जलसे पिये तौ असाध्य भी शूल का रोग जाय ॥ १५ ॥ इति कूष्माण्डक्षारः ॥ ये सर्व यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं ॥ अथवा अजवाइन। सेंधानौन। भुनीहींग। जवाखार। कालानौन। हड़कीछाल। ये सब बराबर ले इनको महीन चूर्ण कर २॥ टं० गरम पानी के साथ ले तौ वायुका शूलजाय १६ ॥ अथवा कालानौन १ टं० जीरा ३ टं० कालीमिरच ४ टं० इन्हें महीन पीस अमलबेत के रसकी ७ पुट दे पीछे बिजौरे के रस की ७ पुट दे फिर

इसको ५ मासे की गोली बांधे प्रतिदिन १ गोली गरम जलसे लै तौ बायु का शूल जाय १७ अथवा सोंठ। हड़कीछाल। पीपल। निसोत। कालानोन ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस १। ट० गरम जलसे ले तौ शूल। अफरा। बवासीर। आमबात। इन सब रोगों को दूर करै है॥ १८॥ इति पंचसमं चूर्णम्॥

अथवा सोंठ के काढ़े में अरण्डका तेल डाल कालानोन। भुनीहींग। इनको मिलाय पियेतो तत्काल शूल जाय १९॥ अथवा शंखका चूर्ण। कालानोन। भुनीहींग। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। ये सब बराबर ले चूर्ण कर २॥ ट० गरम जलसे लेतौ तत्काल शूल जाय॥ २०॥ अथवा मोधासिंगी सुहरा। चित्रक। सोंठ कालीमिरच। पीपल। जीरा भुनीहींग। ये सब बराबर ले इनको महीन पीस इसमें आंगरे के रसकी ३ पुट दे पीछे इसकी गोली चने प्रमाण बांधै १ गोली गरम जल से ले तौ शूल तत्काल जाय॥ २१॥ अथवा शंखकी भस्म कनागचकी जड़। भुनीहींग। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। पांचोंनोन। ये सब बराबर ले महीन पीस गरम जलके साथ २॥ ट० ले तौ शूलका रोग जाय॥ २२॥ इति शूल नाशनं चूर्णम्॥

अथवा चित्रक। भुनीहींग। पाढ़। सोंठ। कालीमिरच। पीपल पाँचोंनोन। जीरा। धनिया। कूड। अजवाइन। पीपलामूल। ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस जंभीरीके रसको ५ पुट दे पीछे इसकी गोली बांधै १ गोली प्रति दिन गरम जल से लेतो शूल हृदयशूल। पशुलियोंका शूल। अरुचि और ८० प्रकार की बाय। आमकाशूल इनसबको तत्काल यह गोली दूरकरै २३॥ इति चित्रकादि गुटिका॥

अथवा हड़कीछाल। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। कुचला। शोधीगन्धक। भुनीहींग। सेंधानोन। ये सब बराबर ले पीछे उन्हें महीन पीस चने प्रमाण गोली बांधै १ गोली प्रतिदिन

गरमजलसे लेतौ शूल। संग्रहणी। अतीसार। अजीर्ण। मन्दाग्नि इन सब रोगोंको यह दूर करै है ॥ २४ ॥ इति शूलनाशक गुटिका ॥

अथवा कूट २॥ टं० सोंठ २॥ टं० कालानौन १। टं० भुनीहींग १। टं० इन्हें महीन पीस सहजने की जड़के रसमें अथवा लहसन के रस में गोली बांधे १ गोली प्रति दिन खाय तो शूल तत्काल जाय २५ ॥ इति कूटादि गुटिका ॥

अथवा त्रिफला। सार। मुलहटी। महुआ इन सबको बराबर ले महीन पीस १। टं० सहत घृत में चाटै तो त्रिदोष की शूल जाय ॥ २६ ॥ अथवा सोधापारा १० टं० सोधासिंगी मुहरा १० टं० कालीमिरच १० टं० पीपल २० टं० सोंठ २० टं० भुनीहींग १० टं० पांचौनौन ५ टके भर अम्लीकाखार ८ टके भर जंभारी का रस और शंख को ७ बेर दग्ध कर पीछे उस शंखका चूर्ण ८ टके भरले पीछे सबको इकट्ठा कर नींबू के रस में ५ दिन खरल करै पीछे इसको १। टं० गरम जलसे ले तौ शूल तत्काल जाय ॥ २७ ॥ इति शूलदावानल ॥

हीरा कसीस ऽ॥ लाहौरी फिटकरी ऽ। सेंधानौन ऽ। कलमी सोरा ऽ२ सेर इन्हें पीस टोकलीयंत्र में इन को चुवाय चीनी के बासन में रख छोड़ै पीछे प्रति दिन १ मा० ले और लेते समय जीभमें घृत लगाले और दांतसे लगनेन पावे तौ शूल। क्षिया। उदरके रोग। बवासीर। अजीर्ण। वायु के रोग इन सब को यह दूर करै है ॥ २८ ॥ इति शंखद्राव ॥

अथवा सोधीगन्धक से आधा सोधापारा इनदोनों के बराबर सोधा कांटक बेधी तांबे का पत्र इन तीनों को खरल में डाल कर मर्दन करै एक दिन पीछे इस का गोलाकर हांडी में नोन भर उस के बीच इस गोले को धर पकावे ३ दिन अग्नि दे पीछे उस को स्वांग शीतल होने के पीछे १ रत्ती नागरबेल के पत्ते से खवावै तो तत्काल शूल मात्र दूर होंय ॥ २९ ॥ इति शूल गज केसरी रसः ॥

अथवा जीरा । सोंठ । भुनीहींग । कालीमिरच । बच । येसब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० गरम जल से ले तौ शूलजाय ३० ॥ अथवा । त्रिफला १ टकेभर । शोधीगन्धक ५ टं० सार २॥ टं० इन को महीन पीस एक रसकर २॥ टं० सहत और २॥ टं० घृत इन दोनों के साथइस को तीन महीने तक खेलौ शूल सांच वात के बिकार फोड़ा ये सब दूरहोंय ३१ इति गन्धक रसायनम् ॥

अथवा गुड़ १ टं० आमला १ टं० हड़कीछाल १ टं० मंडूर १ टं० इन सबको महीन पीस २॥ टं० सहत और घृतके साथ खायतौ शूल । अन्नद्रव । जरत्पित्त । अम्लपित्त । परिणाम । शूल इन सब को दूर करै है ३२ ॥ इति गुड़ाद्यं मण्डूरम् ॥

अथवा वायविडंग । चित्रक । चव्य । त्रिफला । सोंठ । कालीमिरच । पीपल ये सब बराबर ले और इनसबकी बराबर मंडूर ले और मंडूरकी की बराबर गुड़ले और सबसे १० गुना गोमूत्र ले फिर इनको कढ़ाई में भर मधुरी आंचसे पकावै फिर इनका एक पिंडा बनाकर चिकने बासन में भर रक्खे फिर २॥ टं० भोजन के पहले ले तौ शूल । पंक्तिशूल कामलारोग । पांडुरोग । सूजन । मन्दाग्नि । बवासीर । संग्रहणी । कृमिरोग । गोला । उदररोग । अम्लपित्त । इनसबको यह दूरकरै है ३३ ॥ इति तारामण्डूरः ॥ अथवा हड़कीछाल । सुहागा । सोंठ । भुनीहींग । कालीमिरच । चित्रक । शोधीगन्धक । सेंधानौन ये सब बराबर ले और इन सबकी बराबर कुचिलाले फिर इन सबको महीन पीस एक रसकर १ माशे जलके साथ ले तौ शूल । अफरा । बद्धकोष्ठ । गोला । खांसी । कफकेरोग । अजीर्ण । मन्दाग्नि इन सबको यह दूर करै है ३४ ॥ इति शूलगजकेसरी गुटिका ॥ अथवा कागच की जड़ । भुनी हींग । भुना सुहागा । सोंठ । ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० गरमपानीसेले तौ महाशूल दूर होय ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं ॥ ३५॥ अथवा निसोत

वायविड़ंग। सहजने की फली। कबेला। हड़ की छाल। ये सब बराबर ले महीन पीस घोड़े के मूत्र में पकावै फिर २॥ टं० मदिरा के साथ लेतौ वायु का शूल जाय—यह चक्रदत्त में है ३६॥ अथवा भुनी हींग। अमलबेत। पीपल। कालानौन। अजवाइन। जवाखार। हड़कीछाल। सेंधानौन ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० मदिरा के साथ ले तौ वातका शूलजाय॥ ३७॥ अथवा कालानौन। अमलबेत। जीरा ये सब एक एक से दूना ले महीन पीस बिजौरे के रस में गोलीबांधे फिर एक गोली गरम जलसे ले तौ शूल जाय ॥ ३८॥ इति सौवर्चलादि गुटिका॥ अथवा बिजौरे की जड़ २॥ टं० महीन पीस घृत से पिये तौ वात का शूल दूर होय ॥ ३९॥ इति बीजपूरादि योगः॥ यह सब सर्व्वसंग्रह में हैं॥ अथवा भुनीहींग। अमलबेत। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। अजवाइन। कालानौन। सेंधानौन। ये सब बराबर ले महीन पीस बिजौरे के रसमें गोली बांधे फिर १ गोली गरम पानी से ले तौ शूल जाय॥ ४०॥ इति हिंग्वादि गुटिका॥

अथवा सोंठ। कालीमिरच। पीपल। कालानौन। इन को बराबर ले महीन पीस बिजौरे के रस की तीन पुट देके सुखाले फिर २॥ टं० सहत में चाटै तौ त्रिदोष का शूलजाय ॥ ४१॥ अथवा शंखकीभस्म। कालानौन। भुनीहींग। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० गरम जलसे ले तौ शूल जाय॥ ४२ अथवा हल्दी। सहजने कीछाल। सेंधानौन। अरण्डकीजड़। भैंसागूगल। सरसों। सोयोकेदाने। सोंफ। असगन्ध। मड़ुआ इन सब को बराबर ले महीन पीस कांजी के पानी में रोटी कर उसको पका कै पेट के ऊपर उसका सेक करै तौ पेट का शूल जाय॥ ४३॥ अथवा कौड़ीकीराख। घोंघासिंगी सुहरा। सेंधानौन। सोंठ। कालीमिरच पीपल ये सब बराबर ले महीन पीस

नागरवेल के रसमें १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे फिर एक गोली नित्य खाय तौ शूल जाय ॥ ४४ ॥ इति शूलगज केसरी रसः ॥

अथवा पारा। शोधीगन्धक। अभ्रक। तामेश्वर। अमलवेत शोधासिंगीमुहरा। येसब बराबर ले महीन पीस अदरक के रस में ३ रत्ती प्रमाण की गोली बांधे १ गोली जलसे ले तौ वात का शूल जाय ॥ इत्यग्निमुखरसः ॥ अथवा बड़े शंख को २१बार गरमकर नीबूके रसमें बुझावे फिर उसका चूर्ण करै फिर इसमें इमलीका खार१ टकेभर और कचनोन१ टं० बिड़नोन १ टं० सोंठ ६ मा० कालीमिरच ६ मा० पीपल ६मा० भुनी हींग १ टं० सोधासिंगी मुहरा५टं० शोधीगन्धक १ टं० पारा १ टं० इन सब को महीन पीसे फिर पारे और गन्धक की कजली करै उसमें ये औषधि मिलाकै एक रस कर छोटे बेर के प्रमाण गोली बांधे १ गोली लवंग के काढे के साथ ले तौ शूल तत्काल दूर होय ॥ ४६ इति शंख वटी रसः ॥

अथवा सीप की भस्म २॥ टं० गरम जलके साथ पिये तो भोजन के पीछे शूल होता हुआ बन्द होजाय ॥ ४७ ॥ अथवा शोधापारा १ टकेभर शोधीगन्धक १ टं० शोधासिंगी मुहरा १ टं० कालीमिरच १ टं० पीपल १ टं० काकड़ासिंगी १ टं० भुनीहींग २ टं० पांचोंनोन ८टं० इमलीका खार ८टं० जंभीरी के रसमें बुझाई हुई शंखकी भस्म८टं० प्रथमपारे और गन्धक की कजलीकरै पीछे उस कजली में ये सब औषधि मिलाय नींबूकेरसमें एक रस कर १ टं० प्रमाण की गोली बांधे १ गोली जलसेलेतौ शूल। अजीर्ण। उदरके रोग। मन्दाग्नि। इन सबको दूर करै—इतिशूल दावानल रसः ॥ ये सब यत्न सर्व्वसंग्रह में लिखे हैं ॥

अथ पसली के शूल का यत्न ॥

सिंगीमुहरा। हरताल। हींग। राई। नौसादर । मैनसिल। लहसन। बच। एलुआ। इनको बराबरले महीनपीस

गरम जलसे गरम २ सुहाता लेप करै तौ कुक्षि शूल जाय ॥ इति आठ प्रकार के शूल । परिणाम । शूल अन्नद्रव । बातरक्त । जरत्पित्त । पित्तका यत्न संपूर्ण ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज राजराजेन्द्र श्रीसवाई प्रतापसिंह जी बिरचिते
अमृतसागर नामग्रंथे बात । रक्त शूल । परिणाम ॥ अन्नद्रव । जरत्पित्त
की उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणं नाम १० दशमस्तरङ्गः ॥ * ॥

अथ उदावर्त्त रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जो मनुष्य १३ बेगों का धारण करै उसके उदावर्त्त का रोग उत्पन्न होय है वह १३ बेग लिखते हैं अधोबायु १ मल २ मूत्र ३ जम्हाई ४ अश्रुपात ५ छींक ६ डकार ७ वमन ८ मैथुन ९ क्षुधा १० तृषा ११ श्वास १२ निद्रा १३ इन बेगों को जो मनुष्य रोकै उसके उदावर्त्त रोग उत्पन्न होय ॥

अथ अनुक्रम से अधोबायु आदि दे १३ बेगों का लक्षण ॥

अधोबायु के रोकने से जो रोग उत्पन्न होंय सो लिखते हैं अधोबायु को जो रोकता है उसके मलमूत्र रोकने के रोग अफरा । उदरमें अधिक बात के रोग । ये लक्षण होंय तौ अधोबायु के रोकने का उदावर्त्त जानिये ॥

अथ मल रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

पेटमें गुड़ गुड़ाशब्द रहै । शूलहोय । पेड़ू में पीड़ा होय मल उतरै नहीं । डकार बहुत आवै । मल मुखमें निकल आवै । ये लक्षण होंय तौ मल रोकने का उदावर्त्त जानिये ॥

अथ मूत्र रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

पेड़ू और इन्द्री में शूलहोय । मूत्र कष्टसे उतरै । मस्तक में पीड़ाहोय । पीड़ा से शरीर सीधा होय नहीं । पेड़ू में अफरा होय । तौ मूत्र रोकने का उदावर्त्त जानिये ॥ ३ ॥

अथ जम्हाई रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

जिस से । कन्धा । गला । रुकजाय । मस्तकके बिकार होंय

जंभाई बहुत आवै। बायु के विकार होंय। नेत्र। नासिका कान। इनमें पीड़ा बहुत होय ये लक्षण होंय तौ जंभाई रोकने का उदावर्त्त रोग जानिये ॥ ४ ॥

अथ अश्रुपात रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

आनन्द अथवा शोकके अश्रुपातों को रोकै तौ उसका माथा भारी रहै। नेत्रके रोग होंय। पीनस होय ॥ ५ ॥

अथ छींक रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

कन्धा मुड़ै नहीं। माथे में शूल होय। आधासीसी होय। सब इन्द्री दुर्ब्बल होजांय ॥ ६ ॥

अथ डकार रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

कंठ और मुख भोजनसे भरादीखे। अधिक मोह शरीरमें व्यथा और बायु के बहुत बिकार होंय पवन निकलै नहीं ७ ॥

अथ छर्दि के रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

शरीर में खुजली और चकत्ते पड़जांय। अरुचि होय। मुख ऊपर झांईं पड़जांय सूजन। पांडु रोग। ज्वर कोढ़ होय हृदय दूखे। विसर्परोग होय ॥ ८ ॥

अथ शुक्र रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

पेड़ू। गुदा। पोते। इन्द्री इनमें पीड़ा और सूजन होय मूत्ररुक जाय वीर्य्य और रुधिर इन्द्री में से गिरने लगै। पथरी का आकार होय नेत्र का बिकार होय ॥ ९ ॥

अथ क्षुधा रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

तन्द्रा। हाड़ों में फूटन। अरुचि। छिनाग्रन के श्रमी होय शरीर क्षीण पड़जाय। दृष्टिमन्द होजाय ॥ १० ॥

अथ तृषारोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

कंठ मुख सूखे। थोड़ा सुनै। हृदय में पीड़ा होय ११ ॥

अथ श्वास रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

दौड़ने से श्वास होआवै उसको रोकै जिसके यह लक्षण होंय उसका हृदय दूखे मोह बहुत होय। पेट में गोले का रोग होय ॥ १२ ॥

अथ निद्रा रोकने के उदावर्त्त का लक्षण ॥

जंभाई बहुत आवै। अंग में हड़फूटन होय नेत्र और माथा भारी रहै। तन्द्रा होय ॥ १३ ॥

अथ उदावर्त्त की उत्पत्ति ॥

कोष्ठ में रहै जो वायु वह रूखे कषैले कडुए भोजन से कुपित हो उदावर्त्त रोग को करै है ॥

अथ उदावर्त्त का सामान्य लक्षण ।

जहां वायुकाऊर्द्ध भ्रम होजाय। उसको उदावर्त्त कहिये॥

अथ उदावर्त्त का विशेष लक्षण ॥

कफ और मेद को ले चलने वाली जो नसें वे अधो वायु और मलमूत्र को ऊंचा ले जाकर मलको सुखा दे हैं और हृदय और पेडू में शूल चलावै शरीर भारी रहै। अरुचि होय। अधोवायु और मलमूत्र अत्यन्त कष्ट से उतरै। श्वास खांसी। पीनस। दाह। मोह। तृषा। ज्वर। वमन। हिचकी। मस्तकका रोग। हौलदिली। थोड़ा सुनै। और बातके बहुत से रोग होजांय। और तृषा करकै पीड़ितहो। शरीर क्षीण पड़जाय। शूल बहुत चलै। मलको वमन करै ऐसा उदावर्त्त वाला नर जाय ॥

अथ क्रम करके उदावर्त्त का यत्न ॥

अधोवायु के रोकने से उपजा जो उदावर्त्त उसको स्नेह पान करावै तौ उदावर्त्त जाय ॥

अथवा इन औषधियों से पसीना दिवावै अथवा वमन करावै तौ उदावर्त्त जाय २ ॥

अथ मल रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

इनको जुलाबदे और शूलके दूर करने वाली औषधिदे और ऐसाही अन्नदे तेलका मर्द्दन करै बस्ति कर्म्म कराइये ३ ॥

अथ मूत्र रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

जवाखार १ टं० वच १ टं० इनको पानी में महीन

पीस पिलावै तौ यह उदावर्त्त जाय ॥ ४ ॥ अथवा कटेली और अर्जुन वृक्षकी जड़का काढ़ा ले तौ मूत्र रोकने का उदावर्त्त जाय ५ ॥ अथवा तिवरसी का बीज पानी में पीस सेंधानोन डालकर पिये तौ मूत्र रोकने का उदावर्त्त जाय ६ ॥ अथवा मिश्री ऊखका रस । दूध दाख इनका सर्वत पिवे तौ मूत्र रोकने का उदावर्त्त । मूत्रकृच्छ्र पथरी का रोग ये सब जांय ॥ ७ ॥

अथ जम्हाई रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

स्नेह के पीने । अथवा मर्द्दन करने । अथवा पसीना लेने से यह रोग और अन्य भी बात के रोग जांय ॥ ८ ॥

अथ अश्रुपात के रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

ऊंचे प्रकार से रुदन कर अश्रुपात डाले तौ यह रोग जाय ॥ ९ ॥ अथवा सुखपूर्व्वक अच्छे प्रकार सोवै तौ यह रोग जाय ॥ १० ॥ अथवा मनोहर कथा को सुनै तौ यह रोग जाय ॥ ११ ॥

अथ छींक रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

कालीमिरच । राई । नक छिकनी । आदिकी नास ले अथवा सूर्य्य को देखकर छींकले तौ उदावर्त्त जाय ॥ १२ ॥ अथवा तेल मर्द्दन करावै अथवा पसीना लिवावे तौ यह रोग जाय ॥ १३ ॥

अथ डकार के रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

तेल के मर्द्दन और प्रस्वेद से यह रोग जाय ॥ १४ ॥

अथ छर्द्दि रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

इस रोग वाले को वमन । और लंघन करावै । और जुलाब दीजै । तेलका मर्द्दन करावै । वस्ति कर्म्म करावै नास सुंघावै तौ यह रोग जाय ॥ १५ ॥

अथ शुक्रके रोकने से उपजा जो उदावर्त्त रोग उसका यत्न ॥

सुन्दर १६ वर्ष की स्त्री से संभोग करावै तौ यह रोग जाय ॥ १६ ॥ अथवा तेलको लगावे या मदिरा पिलावै वा

कूकरी का मांस खिलावै। अथवा सांठी के चावल खिलावै बस्ति कर्म्म करावै तौ रोग जाय ॥ १७ ॥

अथ क्षुधा रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

चिकना। गरम। हलका। रुचिकारी हित। भोजन करावै और सुगन्ध पुष्पों की माला धारण करावै तौ यह रोग जाय ॥ १८ ॥

अथ तृषा रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

शीतल क्रिया सर्व्व हितकारी चादर फुआरा आदि जल क्रीड़ा करावै और शीतल जलमें मोलसेनी कपूर डाल उसको शनैः २ पान करै तौ यह रोग जाय ॥ १९ ॥

अथ श्रम स्वास रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

विश्राम कर उसका खेद दूर करै अथवा शोरुए के साथ चावल खिलावै तौ यह रोग जाय ॥ २० ॥

अथ निद्रा रोकने के उदावर्त्त का यत्न ॥

गरम दूध में मिश्री डाल सुहाता २ रुचि पूर्व्वक पिये अथवा सुखसे सोवे। अथवा मनोहर कथा सुने तौ यह रोग जाय २१ ॥

अथ रूखी वस्तु आदि खानेसे उत्पन्न उदावर्त्त का यत्न ॥

हींग। सहत। सेंधानोंन। इनको महीन पीस बत्तीकर घृत में चुपड़ जब तक सुहाय तब तक गुदामें धरै तौ यह उदावर्त्त जाय ॥ २२ ॥—इति हिंग्वादि फलवर्त्तिः ॥

अथवा मैनफल। पीपल। कूट। बच। सरसों। गुड़। इनको दूध में पीस इनको बत्ती कर गुदामें सुहाती रुई रक्खे तौ उदावर्त्त जाय ॥ २३ ॥—इति मदन फलादिफलवर्त्तिः ॥

अथवा खांड़ १। टं० निसोत २॥ टं० पीपल ५ टं० इनका चूर्ण कर भोजन के पहले २ टं० सहत के साथ ले तौ गाढ़ा दुखरा मल उतरता होय वह बन्द होय और उदावर्त्त जाय २४ ॥—इति नाराच चूर्ण ॥

अथवा सोंठ। मिरच। पीपल। पीपलामूल। निसोत दात्यूणी। चित्रक। इन सबको बराबर ले महीन पीस १ टंका

गुड़के साथ प्रभातही जलसे ले तौ उदावर्त्त किधा । गोला । सूजन । पांडुरोग ये दूर होंय ॥ २५ ॥—इति गुडाष्टकम् ॥

अथवा सूखीमूली । सांठीकीजड़ । पीपल । पीपलामूल । चव्य । चित्रक । सोंठ । दशमूल । किरमलाकीगिरी इन औषधियोंको घृत में पकाय फिर इस घृत को खाय तौ सब प्रकार के उदावर्त्त जांय २६॥ इति शुष्क मूलकाद्यं घृतं ॥ यह सब यत्न भाव प्रकाश में है ॥

अथ शोधा जमालगोटा । पारा । शोधीगन्धक । भुनासुहागा सोंठ । मिरच । पीपल । ये सब बराबर ले प्रथम पारे और गन्धक की कजली करै फिर ये सब औषधि कजली में मिलाय ४ रत्ती अथवा १मासे मिश्री के साथ ले तौ उदावर्त्त । अफरा उदरके रोग । गोला इन सबको दूर करै है २७ ॥—इति नाराचरसः ॥ यह वैद्य रहस्य में है ॥

अथवा निसोत । थूहर के पात तिलको आदिले गरल यत्न के सेवन से उदावर्त्त जाय ॥ २८ ॥ अथवा निसोत । दास्यूंनी तज । थूहर । संखाहूली । किरमाला । कनौंवा । कलागवकी जड़ । सेंधव । इन सबको बराबर ले जवकुटकर १ टं० का काढ़ा करै उसमें २॥ टं० तेलडाल नित्य ७ दिन तक पिये तौ उदावर्त्त । उदररोग । अफरा । विषरोग । गोला । इनको यह दूर करै —इति उदावर्त्त रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ अनाह रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

उदर में आमके या मलके बढ़ने से अथवा अधोवायुके रोकने से अथवा शरीर में दुष्ट पवन के बढ़ने से मनुष्यों के उदर में अनाह नाम अफरा रोग होता है उसमें तृषा । पीनस । सिरके संपूर्ण विकार । उदरशूल होंय शरीर भारी रहै हृदय दूखै डकार न आवै । ये लक्षण होंय तौ आमका अफरा कहिये १ ॥

अथ मल बढ़ने के अफरा का लक्षण ॥

शरीर जकड़ बन्द होय और दिशाके समय कटि और पीठ

में पीड़ा होय मूर्च्छा होय मलकी छर्दि करै। श्वास और विसूचिका होय। और पीछे कहे हुए लक्षण भी होंय तौ मल बढ़नेका अफरा जानिये ॥

अथ अफरे का यत्न ॥

जो उदावर्त्तका यत्नपीछे लिखाहै वही अफरेकाभी जानना परन्तु कुछ विशेष है सो लिखते हैं निसोत २ भा० पीपल ४ भा० बहेड़ेकीछाल ५ भा० इनको महीन पीस एनसबकी बराबर गुड़ मिलाय १ टं० प्रमाणगोली कर पीछे १गोली नित्यजलके साथ १५ दिन तक ले तौ अफरेका रोग जाय १॥ अथवा सोंठ। कालीमिरच। पीपल। सेंधानोन। सरसों। धमासा। कूट। मेढ़ल ये सब बराबर ले महीन पीस गुड़ में मिलाय पकावे फिर उस को अंगुठे बराबर मोटीबत्तीकर उस में घृत लगाय गुदा में धरै तौ अफरा। उदावर्त्त। उदररोग पेडू का रोग। गोले का रोग दूर होय ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं इति आनाह नाम अफरारोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ गुल्म रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

मिथ्याहार और मिथ्या बिहार के कुपथ्य से बात पित्त कफ दुष्ट होकर पुरुष अथवा स्त्री के पेट से ले पेडू तक गोले के सदृश एक गांठ को उत्पन्न करै है वह गोला बात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ रुधिर ५ इन भेदोंसे ५ प्रकार का है कोष्ठ के बिषै जिसस्थान में गुल्महोताहै वह स्थान लिखते हैं दोनों पसली में हृदय में नाभि में पेडू में ॥

अथ गुल्म का सामान्य लक्षण ॥

हृदय और पेडू के बीच में गांठ होय और फिरै अथवा न फिरै गोल होय और बढ़ती जाय उस को गुल्म कहते हैं इस रोगमें अरुचि होय मलमूत्र दुहरा उतरै बायु बढ़ै और आंत बोलै। अफरा। होय। पवन की ऊर्द्ध गति होय जिस में ये लक्षण होंय उसको गुल्मरोग कहते हैं ॥

अथ बाय गोले की उत्पत्ति लक्षण॥

रूखे अन्न के खाने से विषमासनसे। मूत्ररोकनेसे। शोचकरनेसे। चोटलगने से। मलके छीणपने से। लंघन करने से। विरुद्धचेष्टासे बलवान के साथ युद्ध करने से बायुगोला उत्पन्न होता है॥

अथ बायु के गुल्म का लक्षण॥

जो गोले के स्थान में पीड़ा घटै बढ़ै और अधोबायु की प्रवृत्ति अच्छी तरह से होय नहीं मल उतरै नहीं मुख और गला सूखे शरीर की कांतिकाली होजाय। शीतज्वरहोय। हृदय। कुक्ष। पसली। सिर इन सब में पीड़ा होय और हृदय में भोजन पचे पीछे पीड़ा अधिक होय और भोजन करने के पीछे थोड़ी होय और रूखे कषैले कड़ुए रससे पीड़ा बढ़ै ये लक्षण होंय उस को बात का गुल्म कहिये॥

अथ पित्त के गोले की उत्पत्ति॥

कड़ुआ। तीखा। खट्टा। गरम। इनरसों के सेवन से क्रोध के करने और मद्य के पीने से अग्नि और धूप के सेवन से आम के बढ़ने से चोट के लगने से रुधिर के बिगड़ने से इनवस्तुओं से पित्त का कोप होता है॥

अथ पित्त के गोले का लक्षण॥

ज्वर। तृषा। शरीर में पीड़ा। शूल। दाह। भ्रम। गोले के हाथ लगने में अधिक पीड़ा और भोजन के पचने के समय बहुत प्रस्वेद होय। ये लक्षण होंय तौ पित्तका गोला जानिये॥

अथ कफके गोले की उत्पत्ति॥

ठंढो। भारी। चिकनो। इन वस्तुओं के खाने से और बैठे रहने दिनमें सोने इन वस्तुओं से कफका गोला उत्पन्न होय है और ये सब कारण मिलैं तौ सन्निपात उत्पन्न होता है॥

अथ कफके गोले का लक्षण॥

जिसमें शीतज्वर शरीर में पीड़ा होय कड़ुआ खट्टा

वमन खांसी भोजन में अरुचि ये लक्षण होंय तौ कफका गोला जानिये ॥

अथ स्त्री धर्म्म रूप जो रुधिर उस्से उत्पन्न जो गुल्म उसका लक्षण ॥

यह रुधिर का गुल्म स्त्री का कच्चा गर्भ गिरपड़ै कुपथ्य भोजन से प्रथम गर्भ के ऋतु समय अथवा ऋतु बिना भी उस स्त्री के वायु रुधिरको ग्रहणकर गोले को उत्पन्न करै है उस गोले में अति पीड़ा और दाह होय और पित्त के गोले के सम्पूर्ण लक्षण मिलैं और वह अंग बिनाही सब पेट में फिरै और शूल होय और गोले में गर्भ के संपूर्ण लक्षण मिलैं उसको रुधिर से उपजा गोला जानिये परन्तु उस स्त्री का दसवां महीना व्यतीत होचुके तब वैद्य उस गोले का उपाय करै ॥

अथ गुल्म रोगका असाध्य लक्षण ॥

जिस मनुष्य का गोला फिरै अथवा न फिरै और पीड़ा अधिक और शरीर में दाह होय पथरी कीसी गांठजैसी होय वह गांठ मलको बिगाड़ शरीर को दुर्बल कर अग्नि के बलको नष्ट कर दे उस गोले को त्रिदोष का जानिये वह असाध्य है ॥ १ ॥

अथ गोलेका और असाध्य लक्षण ।

गोला क्रम से बढ़ै शूल चलै । कछुए की समान कठोर होय शरीर दुर्ब्बल होजाय । भोजन में रुचि जाती रहै । कड़ुआ खट्टा वमन करै । ज्वर । तृषा तन्द्रा । पीनस । अतीसार । हृदय । नाभि और हाथपैरों में सूजन होय तृषा अधिक लगै इस गोले वाले मनुष्य को असाध्य जानिये ॥

अथ गोले का यत्न ॥

गरम दूध में अरण्डी का तेल, और हरका चूर्ण डाल नित्य पिये तौ जुलाब लगकर गोला जाय १ ॥ अथवा तेल के मर्दन से गोला जाय अथवा सज्जी । कूट । जवखार । केवड़ेकाखार इनका चूर्ण कर इनमें अरण्ड का तेल मिलाय पिये तौ वातका गोला जाय ॥

अथ पित्तके गोले का यत्न ॥

निसोत के चूर्ण का सेवन करावै अथवा । त्रिफले का सेवन करावै । अथवा केले की मिश्री के साथ अथवा सहत के साथ दे तौ पित्तका गोला जाय ॥ ४ ॥

अथ वात के गोले का यत्न ॥

यही कफकाभी जानलेना । अथवाभुनीहींग । पीपलामूल । धनियाँ । जीरा । बच । चव्य । चित्रक । पाढ़ कचूर । अमलवेत । कालानौन । साम्हरनौन । सेंधानौन । जवाखार । सज्जी । अनारदाना । हड़कीछाल । पुष्करमल । डासरा । झाऊकी-जड़ । ये सब बराबर ले महीनपीसइसमें अदरक के रसकी ७ पुट दे फिर बिजौरे के रसकी ७ पुट दे फिर २॥ टं० नित्य ले तौ गोला । अफरा । बवासीर । उदावर्त्त । उदर रोग । इन सबको यह दूर करै है ॥ ६ ॥ इति हिंग्वादि चूर्णम् ॥

अथवा सज्जी ४ मा० गुड़ ४ मा० इनको मिलाय नित्य खाय तौ गोला जाय ॥ ७ ॥ अथवा पलासका खार थूहर का खार आंधीझाडे का खार । अमली का खार । आक का खार तिलका खार । जवाखार । सज्जी । इनको महीन पीस १। टं० अथवा २॥ टं० प्रमाण गरम जल के साथ लै तौ गोला और शूल के रोग को दूर करै है ॥ ८ ॥ इति क्षाराष्टकम् ॥

अथवा साम्हरनौन । कचनौन । जवाखार कालानौन सुहागा सज्जी ये सब बराबर ले महीन पीस इनको थूहर के दूध में १ दिन भिजोय रक्खै फिर धूपमें सुखावै फिर तीनदिन आक के दूध में भिजोवै फिर धप में सुखावै फिर आक के पत्तोंमें लपेट मट्टी के बासन में धर गजपुट में पकाले फिर सोंठ । कालीमिरच । पीपल । त्रिफला । अजवाइन । जीरा । चित्रक इनको उन खारों की बराबर ले महीन पीस उनमें मिलावै फिर इसको २ टं० प्रमाण गरम जलसे ले तो गोला अजीर्ण सूजन । उदर के सब रोग मन्दाग्नि उदावर्त्त फिया इन सबको दूर करै है ॥ ९ ॥ इति वज्रक्षार चूर्णम् ॥

अथवा ग्वार के पट्ठे का गूदा ले उसमें सोंठ। कालीमिरच। पीपल। सेंधानौन। इनको महीन पीस मिलाय २॥ टं० प्रमाण घृत के साथ नित्य खाय तौ गोला फिया सब दूर होंय १० अथवा ग्वार के पट्ठे के १ मन गूदे में २०० टके भर गुड़ डालै और सोंठ २॥ ट० मिरच २॥ ट० पीपल २॥ ट० तज २॥ ट० पत्रज २॥ ट० चव्य २॥ ट० इलायची २। ट० कचूर २। ट० त्रिफला २। ट० चित्रक २। ट० नागकेसर २। ट० आककीजड़ २। ट० अजमोद २। ट० जीरा २। ट० देवदारु २। ट० वेरकाछिलका २। ट० असगन्ध २। ट० रास्ना २। ट० विधारा २। ट० इन्द्रजव २। ट० इनको महीन पीस ग्वार के पट्ठे के रसमें डालै फिर इनको एक रस कर चिकने बासन में भर २१ दिन पृथ्वी में गाढ़ फिर निकाल कर २। टके भर खाय तौ गोला उदावर्त उदर के विकार विषूचिका गृध्रसी श्वास खांसी पांडुरोग वात के सब विकार इन को यह दूर करै है ॥ ११ ॥ इति ग्वारके पट्ठे का आसव ये सब यत्न भाव प्रकाश में है ॥

अथवा थोरा १। टं० अदरक १। टं० इनको नित्य खाय तौ गोला जाय ॥ १२ ॥ अथवा सीप की भस्म १। ट० गुड़ ४ मा० नित्य खाय तो गोला जाय ॥ १३ ॥ इति सीप प्रयोगः ॥

अथवा लहसन २। टके भर दूध में खीर करकै नित्य खाय तौ गोला जाय ॥ १४ ॥ अथवा अरण्डकी जड़ चित्रक। सोंठ पीपलामूल। वायबिडंग। सेंधानौन। भुनीहींग। इनका काढ़ा दे तौ गोला अफरा शूल जाय ॥ १५ ॥

अथवा अजवाइन १६ मा० जीरा ५ टं० धनियां ५ टं० कालीमिरच ५ टं० कुड़ाकीछाल ५ टं० अजमोद ५ टं० कालाजीरा ५ टं० भुनीहींग ६ टं० जवाखार ८ टं० सज्जी ८ टं० पांचौनोन ८ टं० निसोत ८ टं० हाल्यूनी १० टं० कचूर १० टं० पुष्करमूल १० टं० वायबिडंग १० टं० अनारदाना १० टं० हड़की छाल १० टं० चित्रक १० टं० अमलबेत १० टं० सोंठ १० टं० इन

सब को महीन पीस बिजोरे के रसकी १० पुटदे फिर१ टं० प्रमाण कीगोली बांधे १ गोली घृत केसाथ अथवा दूधके साथ नित्य खाय तौ पित्त के गोले को दूर करै और मद्यके साथ ले तौ बायु के गोले को दूर करै और हृदय के रोग संग्रहणी। शूल। कृमि। बवासीर इतने रोगों को यह गोली दूर करै है ॥—इति कांकायन गुटिका ॥

अथवा लवणभास्कर चूर्ण जो पीछे लिखा है उसके खाने से गोले का रोग जाय ॥ अथवा पीपल। भारंगी। पीपलामूल। देवदारु। कणगचकी जड़। तिल इनका काढ़ा ले तौ गोले का रोग जाय ॥ १७ ॥ अथवा तिलौंका काढ़ा ले तौ गोला जाय ॥ १८ ॥ अथवा भारंगी। गुड़। घृत पीपल। तिल। सोंठ। मिरच। इनका काढ़ा ले तौ गोले का रोग जाय ॥ १९ ॥ इति कणादिक्वाथः ॥

अथवा मैनसिल। हरताल। रूपामक्खी। आमलासार गंधक। तामेश्वर। पारा ये सब बराबर ले पहले पारे और गन्धककी कजली करै फिर उसकजली में ये सब औषधिडाले फिर पीपलके काढ़ेके रसमें १ दिन खरल करै फिर थूहरके दूध में १ दिन खरल करै फिर एक टंक प्रमान सहत मे अथवा गोमूत्र में ले तौ गोला और शूल का रोग जाय ॥ २० ॥ इति विद्याधररसः ॥

अथवा पारा। शोधीगन्धक। भुनासुहागा। त्रिफला। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। शोधीहरताल। शोधासिंगी मुहरा।। तामेश्वर। शोधाजमालगोटा। ये सब बराबर ले पहले पारे और गन्धक की कजली करै फिर उसकजली में यह औषधि पीस मिलावै फिर इसमें भांगरे के रसकी ३ पुट और तीन दिन तक खरल करै फिर इसकी १ रत्ती प्रमा गोली बांधे १ गोली अदरक के रसमें ले तौ गोला जा ॥ २१ ॥ इति गुल्मकुठार रसः ॥ ये सब यत्न बैद्यरत्न लिखे हैं ॥

अथवा हाथ में फलादि लिखावै तौ गोले के सर्व रोग जांय ॥ २२ ॥ अथवा भुनीहींग। अनारदाना। बिड़नौन ये सब बराबर ले बिजौरे के रसमें खरलकरै फिर २॥ टंक मद्यके साथ नित्य ले तौ बाय गोला जाय ॥ २३ ॥

अथवा सज्जी। कूट। जवाखार। येसब बराबरले महीन पीस २॥ टंक तेल के साथ पिये तौ गोला जाय २४ ॥

अथ योनिमें शूल होता हो उसका यत्न ॥

त्रिफला। निसोत। दाल्यूणी। दसमूल। येसब पृथक् २ टंके भर ले फिर इनको जवकुट कर ५ टंक का काढ़ा कर छान उसमें अरण्ड का तेल डाल घृत मिलाय दूधसेपिये तौ योनिका शूल जाय ॥ २५॥ इति त्रिफलक स्नेहा ॥ यह योगतरंगिणीमें लिखा है ॥

अथवा १ टंक अजवाइन को महीन पीस ५ टंक गुड़में मिलाय मट्ठे के साथ नित्य ले तौ गोला जाय क्षुधा लगै। मलमूत्र उतरै ॥ २६ ॥ यह वृन्द में लिखा है ॥ अथवा अजवाइन। भुनीहींग। सेंधानौन। जवाखार। कालानौन। हड़कीछाल। यह सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० दारू के साथ नित्य ले तौ गोला शूल जाय ॥ २७ ॥ अथवा भुनी हींग १ भा० सेंधानौन २ भा० पीपलामूल ४ भा० कंकोल मिरच ५ भा० अजवाइन ६ भा० हड़कीछाल ७ भा० अनारदाना ८ भा० आमकीजड़का छिलका ९ भा० चित्रक १० भा० सोंठ ११ भा० फिटकरी १२ भा० इन सबको महीन पीस २॥ टं० नित्य पानी से ले तौ गोला। अरुचि। हृद्रोग। अफरा। बवासीर वात के सब बिकार। इनको यह दूर करै है ॥ २८ ॥ इति हिंगुद्वादशकं चूर्णम् ॥

अथवा बच। हड़कीछाल। भुनीहींग। सेंधानौन। अमलबेत। जवाखार। अजवाइन। इनको बराबर ले महीन पीस २॥ टं० गरम पानी से ले तौ शूल और गोला दूर होय ॥ २९ ॥ इति वचाद्यं चूर्णम् ॥

अथवा २५ बड़ी हड़ों को १६ सेर जल में पकावै और जलही में दात्यूणी १६ टके भर त्रिफला इनको डाल मधुरी आंच से पकावे जब जल का चतुर्थांश रह जाय फिर उसमें हड़ों समेत १६ टके भर गुड़ डाल फिर औटावै जब आधा रह जाय तब इसमें पीपल १ ट० सोंठ १ ट० घृत ४ ट० सहत ४ ट० तज १ ट० पत्रज १ ट० नागकेशर १ ट० इलायची १ ट० इन सबको एक रस कर अवलेह करै फिर १ ट० भर नित्य खाय तौ जुलाब लगै और गोला। संग्रहणी। पाण्डुरोग सूजन। विषमज्वर। कोढ़। बवासीर। अरुचि। फिया हृद्रोग ये सब रोग जांय ॥ ३० ॥ इति दन्तीहरीतकी ॥

अथवा शंखद्राव से भी गोला जाय अथवा बड़ी पक्की जम्हीरी २०० ले उसका रस लेके घृत के चिकने बासन में रक्खे फिर भुनीहींग २ ट० सेंधानौन १ ट० सोंठ १ ट० कालीमिरच १ ट० कालानौन ४ ट० अजवाइन १ ट० सरसों ६ ट० इन सब औषधियों को महीन पीस उस रस में डाल फिर दो दिन घूरे में गाड़ रक्खे फिर १ टके भर प्रति दिन खाय तौ गोला। फिया। विद्रधि। अष्ठीला। बात कफ का अतीसार। पसली का शूल। हृदयरोग बद्धकोष्ठ। जहर। उदररोग। बात कफ का रोग। ये सब दूर होंय ३१—इति जम्हीरीद्राव: यह यत्न भावप्रकाश में लिखा है अथवा नदी कुड़ा। आक। सहजना। कटेली। थूहर। बेल। बकायन। आंधीझाड़ा। कदम्ब। अडूसा। इन सबका खार और साम्हर नौन बराबर ले और इसमें अनुमान माफिक भुनीहींग डाल फिर इनको २॥ ट० गरम पानी से ले तौ गोला। शूल। उदर के रोग। ये सब जांय ३२—इतिनादेईक्षार यह योग सतक में है ॥

अथवा सोंफ। करागचकी जड़। तज। दारुहल्दी। पीपल। इनका काढ़ा दे और तिल। गुड़। सोंठ। मिरच। भुनीहींग। भारंगी। ये सब औषधि काढ़े में डाल औटाकर देतौ रुधिर

का गोला और जो धर्म्म जाता रहा हो उसको यह दूर करैहै ३३ ॥ अथवा जवाखार । सोंठ । कालीमिरच । पीपल । इनको औटाकै पिलावै तौ रुधिर का गोला जाय ३४ ॥ अथवा पारा १ मा० बंगकी भस्म १ मा० सोधीगन्धक ४ मा० तालेश्वर ४ मा० इन सबको दो दिन तक आकके दूधमें खरल करै फिर इसको गोला कर सरवे में धर गज पुट में पकावै फिर इसको ठंढाकर निकाल कै २ रत्ती प्रमाण इसके खायले तो गोला । फिया । उदर के रोग ये सब दूर करै ॥ ३५ ॥ इति बंगेश्वर रसः ॥

मछली का मांस । रूखीतरकारी । दाल । मठा । फल । गोले वाला इतनी वस्तु खाय नहीं । यह सर्व्व संग्रह से लिखा है ॥

इति गुल्म रोगके उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ यकृत प्लीह रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

यकृतप्लीह ये दोनों शरीर के अंग हैं दाहिनी पसलीमें यकृत रहै है हृदय के नीचे और बाईं पसली में प्लीह रहै इसको लौकिक में फिया कहैं हैं सो ये दोनों रुधिर से उत्पन्न होय हैं और रुधिर की लेचलने वाली नसों में इनका मुख्य ठिकाना है ॥

अथ प्लीह रोग की उत्पत्ति लक्षण ॥

जो मनुष्य गरम वस्तु अथवा दही आदि कफकारी वस्तु बहुत खाय उसके रुधिर और कफ ये दोनों बढ़कर मन्दज्वर । और मन्दाग्नि करै है और कफपित्त का जिस में लक्षण होय उसके शरीर का बल जाता रहै शरीर पीला पड़जाय उसको फिया कहते हैं वह फिया वात । पित्त । कफ । रुधिर इन भेदों से चार प्रकार का है ॥

अथ वात के फिया का लक्षण ॥

उदर में नित्य अफरा उदावर्त्त और पीड़ा रहै तौ वात का फिया जानिये ॥

अथ पित्त के फिया का लक्षण ॥

ज्वररहै। तृषाबहुतलगै। दाह। मोहहोय। शरीर पीला होजाय। तो पित्तका फिया जानिये २ ॥

अथ कफके फिया का लक्षण ॥

सबइन्द्री शिथिल होजाय। भ्रमहोय। शरीरकारंग और का और होजाय। मोह होय। शरीर भारी रहै। उदर लालहोजाय यह लक्षण कफ और रुधिर के फिया का जानिये ३। और त्रिदोष का फिया होय तौ असाध्य जानिये और यही लक्षण यकृत रोग का भी जानना ॥

अथ फिया का यत्न ॥

जवाखार ऊटनी के दूध के साथ ले तौ फिया जाय १ अथवा सीपकी भस्म दही के साथ खाय तौ फिया जाय २ अथवा १ टं० पीपल दूध के साथ नित्य खाय तौ फिया जाय ३॥ अथवा आकके पत्तों की राख नोन मिलाय मट्ठे के साथ पियेतौ फिया जाय ४॥ अथवा भुनीहींग। कालीमिरच। पीपल। सोंठ। कूट। जवाखार। सेंधानोन ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० बिजोरे के रस से प्रति दिन ले तौ फिया जाय ५। अथवा छीले केलाव में भिजोई हुई पीपल २॥ टं० ले तो फिया गोला जाय ६॥ अथवा शंख को भस्म ४ मा० जम्भीरी के रसकेसाथ ले तौ फिया जाय ७॥ अथवा बांये हाथकीफस्द खुलवावै तौ फिया जाय ८ दाहिने हाथकीफस्द खुलवावै तौ यकृत जाय ९॥ अथवा पक्के आमके रसमें सहत को मिलाके पिये तौ फिया जाय १०॥ अथवा अजवाइन। चित्रक। जवाखार। पीपलामूल। दात्यूणी। पीपल मदिरा के साथ नित्य पिये तौ फिया जाय॥ ११॥ ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं अथवा सेंधानोन ५ टं० जलमें औटाय नित्य पिये तौ फिया जाय॥१२॥ यह वैद्य रहस्य में है॥ अथवा जवाखार। वायविडंग। पीपल। कचनारकी जड़ अमलवेत। ये बराबर ले महीनपीस २ टं० नित्यगरम जलके साथ ले

तौ फिया जाय ॥१३॥ अथवा पीपल। सांठ। हाल्यूणी ये सब बराबर ले और इनसे दूनी हड़की छाल ले सबको महीन पीस गुड़ के साथ पानी सेले तौ फिया जाय १४ ॥ अथवा बायबिडंग। इन्द्रायणकीजड़ ॥ सेंधानौन। चित्रक ये बराबर ले और इन से दूनी देवदारु ले और तिगुनी सोंठ ले और सांठी कीजड़। बायबिड़ंग बराबर ले निसोत चौगुनी ले इन का महीन पीस १। टं० गरम पानी के साथ लेतौ फिया जाय ॥ १५ ॥ अथवा सहजने कीजड़। सेंधानौन। चित्रक। पीपल इन का काढ़ाकर पिये तौ फिया जाय ॥ १६ ॥ अथवा भिलावा। हड़कीछाल। जीरा। ये सब बराबर लेइन्हें महीन पीस इन में बराबर का गुड़ मिलाय ५ टं० नित्य ७ दिन तक खाय तौ फिया जाय ॥ १७ ॥ अथवा लहसन। पीपलामूल। हड़कीछाल ये बराबर ले महीन पीस २॥ टं० गोमूत्र के साथ लेतौ फिया जाय ॥ १८ ॥ ये चक्रदत्त में लिखा है ॥ अथवा रोहिषकीजड़। हड़कीछाल। ये बराबर ले महीन पीस २॥ टं० गोमूत्रके साथ ले तौ फिया और उदर के रोग प्रमेह। बवासीर कफकेरोग। कोढ़ ये सबजांय ॥ १९ ॥ यह योगतरंगिणी में है ॥ अथवा साम्हरनौन। हल्दी। राई। इन तीनों का एक २ टके भर ले और १०० टकेभरमट्ठे का चिकनेबासनमें भर ५ दिन तक रक्खे फिर ५ टकेभर ३ दिन तक पिये तौ फिया जाय २०॥ इति तक्रसन्धानम् यह भाव प्रकाश में है ॥

अथवा १०० टके भर रोहिष और ४ सेर बेरकीजड़ को कूट कर १६ सेर पानी में इन दोनों को औटावै जब पानी चौथाई रहजाय तब उतार छान ले फिर उस पानी में १ सेर गौका घृत डाले और बकरी का दूध ४ सेर डाले। सोंठ २ टं० कालीमिरच २॥ टं० पीपल २॥ टं० त्रिफला २॥ टं० भुनीहींग २॥ टं० अजवाइन २॥ टं० सांठीकीजड़ २॥ टं० तुम्बुरू २॥ टं० बायबिड़ंग २॥ टं० कालानौन २॥ टं० अनारदाना २॥ टं० देवदारु २॥ टं० इन्द्रायणी की जड़ २॥ टं०

जवाखार २॥ ट॰ पुष्करमूल २॥ ट॰ आजरहकी जड़ २॥ ट॰ बच २॥ ट॰ चव्य २॥ ट॰ इन सबको महीन पीस घृतमें मधुरी आंच से पकावै जब ये औषधि और दूध जल जांय और घृतमात्र रह जाय तब उसको अमृतबान में छान के भर रक्खे फिर इस घृतमें से ३ टकेभर पथ्य के साथ खाय तो फिया प्लीहोदर। कुक्षशूल। पसलीकाशूल। अरुचि। बद्धकोष्ट। पाण्डु रोग। छर्दि। अतीसार। विषमज्वर। इन सब को ये दूर करै है २१ इति महारोचकं घृतं यह चक्रदत्त में है॥

अथवा चित्रक १०० टकेभर ले उस का काढ़ाकर उस में कांजी का पानी २०० टकेभर और दही का मट्ठा ४०० टकेभर पीपलामूल १ टकेभर। चव्य १ ट॰ चित्रक १ ट॰ सोंठ १ ट॰ तालीसपत्र १ ट॰ जवाखार १ ट॰ सेंधानौन १ ट॰ दोनों जीरा २ ट॰ दोनोंहल्दी २ ट॰ कालीमिरच १ ट॰ इन सबको महीन पीस चित्रक के काढे में मिलावै पीछे इस में १ सेर घृत मिलावै जब पानी आदि सब जलजांय घृतमात्र रहजाय तब इसे उतार छानकर अमृत बान में भर रक्खे फिर उस का सेवन करै तो फिया। गोला। उदररोग। अफरा। पाण्डु रोग। अरुचि। विषमज्वर। पेड़ूकाशूल। सूजन। मन्दाग्नि। इन रोगों को यह दूरकर बल को बढ़ावै है २२॥ इति चित्रकाद्यं घृतं यह वृन्द में लिखा है॥

और जो फिया का यत्न है वही यकृत का भी जानना। अथवा जवाखार। वायविड़ंग। पीपल। कनागच कीजड़। इन के काढ़े से यकृत फिया दोनों जाँय २३॥ इति फिया यकृत रोग की उत्पत्ति लक्षण॥

अथ हृद्रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

बहुत। गरम और भारी। बहुत खट्टी। कषैली। बहुत तीखी इन वस्तुओं के खाने से बहुत श्रम के करनें से। भारी चोट के लगने से। बहुत पिटने। और अति चिन्ता करने से मलमूत्र के रोकने से इन बातों से हृदय का रोग उत्पन्न

होता है सो वह रोग वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ कृमि ५ इन भेदों से पांच प्रकार का है ॥

अथ हृद्रोग का सामान्य लक्षण ।

अन्न खाने का रस जो प्रथम हृदय में जाय उस रस को वात पित्त कफ बिगाड़ कर हृदय में पीड़ा करै है उस को वैद्य हृद्रोग कहते हैं ॥

अथ वात के हृद्रोग का लक्षण ॥

हृदय में पत्थर और कुल्हाड़े कीसी चोटलगे यह लक्षण होय तो वातका हृद्रोग जानिये १ ॥

अथ पित्तके हृद्रोग का लक्षण ॥

तृषा बहुत लगै दाह होय हृदय दूखै कंठ से धुआं निकले मूर्च्छा होय शरीर शीतल होजाय पसीना आवै मुख सूख जाय ये लक्षण जिस में होंय उस को पित्त का हृद्रोग जानिये २ ॥

अथ कफ के हृद्रोग का लक्षण ।

हृदय भारी रहै मुख में से कफ बहुत निकलै भोजन से रुचि जाती रहै शरीर जकड़ासा होजाय । मुख मीठा रहै मन्दाग्नि होय । हृदय में कफ जम जाय ये लक्षण होंय तौ कफ का हृद्रोग जानिये ॥ ३ ॥ और ये सब लक्षण मिले होंय तौ सन्निपात का हृद्रोग जानिये ४ ॥

अथ कृमि के हृद्रोग का लक्षण ॥

आंतों में कृमि होंय । पीछे कुपथ्य का करने वाला मनुष्य तिल दूध गुड़ आदि ले मीठी वस्तु खाय तब उसके मर्म्म स्थानों में पीड़ा होय हृदय दूखै हृदय सड़जाय तब उसकी आत्मा बहुत दुखपावै ये लक्षण जिस में होय और मन में खेदहोय । थूकैबहुत । हृदय में शूलचलै । भोजन में अरुचि होय । नेत्रकाले पड़जांय शरीर सूखजाय यह कृमि के हृद्रोग का लक्षण जानिये ५ ॥

अथ हृद्रोगके उपद्रव ॥

सब इन्द्रियों का ज्ञान जाता रहै शरीर में पीड़ा होय। घुमेर आवै शरीर सूखजाय ॥

अथ हृद्रोग का यत्न ॥

बहेड़े के वृक्ष की छाल का चूर्ण २ टं० प्रति दिन दूध अथवा घृत अथवा गुड़ के पानी के साथ पिये तो हृद्रोग जीर्णज्वर। रक्तपित्त। इनको दूर करै १ ॥ अथवा हड़कीछाल बच। रास्ना। पीपल। सोंठ। कचूर। पुष्करमूल ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० जल के साथ ले तौ हृद्रोग दूर होय २॥ अथवा हिरन के सींग को पुट पाक करै और गौ के घृत के साथ खाय तौ हृद्रोग शूल मात्र दूर होय ३ ॥ इति हिरन के सींग का पुट पाक ॥

अथवा। खरैटी। गंगेरनकी छाल। काहू वृक्ष का बकला मुलहटी। ये औषधि बराबर ले महीन पीस २॥ टं० का काढ़ाकर नित्यले तौ हृद्रोग। वातरक्त। रक्तपित्त। इनसब को दूर करै ४ ॥ यह भावप्रकाश में लिखा है ॥ अथवा कूट॥ बायबिडंग। इनको महीन पीस २॥ टंक गोमूत्र के साथ ले तौ हृदय के कृमि गिरि पड़ैं और हृद्रोग जाय ॥ ५ ॥ अथवा गंगेरन की जड़। और काहू वृक्ष का बकला पुष्करमूल। इनको महीन पीस २॥ टं० दूध के साथ अथवा सहतके साथले तौ हृद्रोग। श्वास। कास। छर्दि। हिचकी इनको दूर करै ॥६॥ अथवा हड़कीछाल। बच। रास्ना। पीपल सोंठ। कचूर। पुष्करमूल। इन का चूर्णले तौ हृद्रोग जाय ७ ॥ इति हरीतक्यादि चूर्णम् ॥

अथवा दसमूल के काढ़े में अरण्डका तेल। और साम्हरनौन डालके पिये तौ हृद्रोग जाय ॥८॥ अथवा पुष्करमूल। सोंठ। कचूर। हड़कीछाल। जवाखार। ये सब बराबर ले इनका काढ़ाकर इसमें घृत डाल पिये तौ वातका हृद्रोग जाय ९ ॥ यह सब वैद्य रहस्य में है ॥ अथवा भुनीहींग

वच । बायबिड़ंग । सोंठ । पीपल । हड़कीछाल । चित्रक जवाखार । कालानौन । पुष्करमूल । ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टंक सहत के साथ ले तौ हृद्रोग । स्वास । कास । राजरोग । हिचकी ये सब रोग दूर होंय १० ॥ अथवा भुनी हींग । सोंठ । चित्रक । कूट । जवाखार । हड़कीछाल । वच बायबिड़ंग । कालानौन । पारा । पुष्करमूल । ये सब बराबर ले महीन पीस १ टं० जलके साथ ले तौ हृदय । अजीर्ण बिसूचिका । ये सब दूर होंय ११ ॥ यह रस प्रदीप में है ॥ इति हृद्रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

इति श्री मन्महाराजा धिराज राजेन्द्रश्रीसवाईप्रातापसिंहजी बिरचिते
अमृतसागर नामग्रंथे हृद्रोगकीउत्पत्ति लक्षण यत्न
निरूपणंनाम एकादशमस्तरङ्गः ॥ * ॥

अथ मूत्र कृच्छ्र रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

खेदके करने से तीक्ष्ण वस्तु और रूखी वस्तु के खाने से । और मद्य को पीने से । नाचने से । दुष्ट घोडे के चढ़ने से । नदीके जीवों के मांस खानेसे । भोजन पर भोजन करने से । अजीर्ण से । इन कारणों से मनुष्य के मूत्र कृच्छ्र रोग उत्पन्न होता है वह ८ प्रकार का है । बातका १ पित्त का २ कफका ३ सन्निपातका ४ चोटलगने का ५ मलके रोकने का ६ शुक्र के रोकनेका ७ पथरीका ८॥

अथ मूत्र कृच्छ्रका सामान्य लक्षण ॥

कोपको प्राप्त हुए जो बात पित्त कफ वह आप अपने ही कारण से पेट में प्राप्त हो मूत्रके मार्ग में बहुत पीड़ा करके बड़े कष्ट से टीस चलकर मूत्र उतरै है और मूत्र बन्द होने से तौ कम और मूत्र करने में अधिक पीड़ा होय उसको मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ॥

अथ बात के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

घाघों । और पेडू की संधि में । और पेडू और इन्द्री में

पीड़ा अधिक होय और थोड़ा २ बार बार मूते ये लक्षण जिसमें होंय उसको बात का मूत्र कृच्छ्र जानिये १ ॥

अथ पित्त के मूत्र कृच्छ्र का लक्षण ॥

पीला और लाल और गरम मूत्र बहुत कष्ट से टीस चलकर उतरै उसको पित्तका मूत्र कृच्छ्र कहिये ॥ २ ॥

अथ कफके मूत्र कृच्छ्र का लक्षण ॥

पेड़ू और लिंग ये दोनों भारी होय और दोनों में सूजन होय और मूत्र में झाग आवै और मूत्र कष्ट से उतरै ये लक्षण जिसमें होंय उसको कफका मूत्रकृच्छ्र कहिये ३ और ये सब लक्षण जिसमें होंय उसको सन्निपात का मूत्र कृच्छ्र कहिये ४ ॥

अथ चोट लगने के मूत्र कृच्छ्र का लक्षण ॥

मूत्र को ले चलने वाली नसों में किसी प्रकार चोट लगने से मूत्र रुकजाय और बायु के मूत्र कृच्छ्र का लक्षण इस मूत्रकृच्छ्र के लक्षण से मिलै तौ मनुष्य मरजाय ॥ ५ ॥

अथ मल रोकने के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

जो पुरुष मलकी बाधा को रोकै उसके बायु कुपित होकर पेड़ू और पेट में अफरा करै और इन्द्री स्थान में पीड़ा अधिक करै मूत्र बहुत कष्ट से उतरै ये लक्षण होंय तो मलका मूत्र कृच्छ्र जानिये ॥ ६ ॥

अथ वीर्य्य के रोकने के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

वीर्य्य के रोकने से मूत्र का मार्ग रुक जाय तौ पुरुष के पेड़ू और लिङ्ग में शूल होय वीर्य को लिये बड़े कष्ट से मूत्र उतरै तौ वीर्य रोकने का मूत्रकृच्छ्र कहिये ॥ ७ ॥

अथ पथरी के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण ॥

पथरी और शर्करा नाम रेत ये दोनों अण्ड में रहै हैं इन्ही से मूत्रकृच्छ्र होता है वह पथरी पित्त करके पची बायु करके रूखी कफ से रहित पथरी का रूप होय निकल मूत्र को रोकै है ॥

अथ शर्करा का उपद्रव ॥

हृदय में पीड़ा होय। शरीर कांपै। कोखमें शूलचले। मन्दाग्नि और मूर्छाहोय। ये लक्षण होंय तौ मनुष्य मर जाय ॥ ८ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्र का यत्न ॥

गोखरू। किरमाला की गिरी। डाभकी जड़। कांस की जड़। जवासा। आमला। पाषाणभेद। हड़की छाल ये सब बराबर ले जवकुट कर २॥ टंक का काढ़ा कर सहत मिलाय प्रतिदिन ले तौ मूत्रकृच्छ्र और पथरी का असाध्य भी रोग जाय॥ १ ॥ इतिगोक्षुरादिक्काथ: ॥

अथवा इलायची। पाषाणभेद। शिलाजीत। पीपल। गोखरू। तिवर्षीका बीज। सेंधानोन। केसर ये सब औषधि बराबर ले महीन पीस इक्कीस टंक चावल के पानी के साथ अथवा पुराने गुड़के पानी साथ प्रति दिन ले तौ मूत्रकृच्छ्र जाय ॥ २ अथवा दूध में पुराना गुड़ अथवा मिश्री डाल कुछ गरमकर पिये तौ मूत्रकृच्छ्र जाय ॥ ३ ॥

अथ चोट लगने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न ॥

आंवला के रसमें सहत मिलाय पीवै अथवा ऊख के रस में सहत डाल पीवै तौ मूत्रकृच्छ्र जाय ॥ ४ ॥

अथ मल रोकने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न ॥

गोखुरू का काढ़ा कर सहत जवाखार मिला पीवै तौ मूत्रकृच्छ्र जाय ॥ ५ ॥ अथवा त्रिफला ५ टं० बेर की जड़ की छाल ५ टं० इन दोनों को रात्रि में भिगौ प्रभातही उसी पानी में पीस सेंधानोन डाल पीवै तौ मूत्रकृच्छ्र जाय ॥ ६ ॥ अथवा जवाखार ५ मासे। मिश्री ५ मासे इन्हें पीस जल से ले तौ मूत्र कृच्छ्र निश्चय जाय ॥ ७ ॥ अथवा मुनक्कादाख ५ टं० मिश्री १० टं० दही का मट्ठा १० टं० यह तीनों मिलाय पीवै तौ मूत्र कृच्छ्र जाय ॥ ८ ॥ अथवा गोखरू की जड़ समेत काढ़ा कर सहत मिश्री मिलाय पीवै तौ मूत्र

कृच्छ्र जाय ॥ ९ ॥ ये यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा गिलोय । सोंठ । आंवला । असगन्ध । गोखरू । ये सब बराबर ले इन्हें जवकुट कर २॥ टं० का प्रति दिन काढ़ा कर पीवै तौ मूत्रकृच्छ्र जाय ॥ १० ॥ अथवा पक्के नींबू का रस गौके कच्चे दूध में डाल प्रति दिन इच्छा पूर्वक पीवै तौ स्त्री की योनि दोष से उत्पन्न जो रोग और दाह प्रमेह मूत्र कृच्छ्र इन को दूर करै है ॥ ११ ॥ अथवा हड़कीछाल । गोखरू । किरमाला की गिरी । पाषाणभेद । धमासा । अडूसा । ये सब बराबर ले जवकुट कर ५ टंक का काढ़ा कर सहत डाल प्रति दिन पिये तौ दाह संयुक्त मूत्रकृच्छ्र बद्धकोष्ट इन को दूर करै ॥ १२ ॥ इति हरीतक्यादि क्वाथः ॥

अथ कष्ट से रुधिर मूतता हो उसका यत्न ।

डाभकीजड़ । काशकीजड़ । दूबकीजड़ । सरकंडेकी जड़ । ऊखकीजड़ । इनका काढ़ा कर देतौ रुधिर मूतना अच्छा होय ॥ २३ ॥ इति तृण पंचकम् ॥

अथवा पक्के पेठे के रस में मिश्री मिलाय पीवे तौ मूत्र कृच्छ्र जाय ॥ १४ इति कूष्माण्डरसः ॥

अथवा कटेली के रसमें सहत डाल पीवै तौ मूत्र कृच्छ्र जाय ॥ १५ ॥ अथवा २८ टके भर गोखरू को अष्टगुणित जल में औटाय अधौटा कर पीछे छान इसमें गूगुल । ७ टकेभर डाल फिर पकावै फिर इसमें सोंठ १ टके कालीमिरच १ टं० पीपल १ टं० हड़कीछाल १ टं० बहेड़े कीछाल १ टं० आवला १ टं० नागरमोथा १ टं० इन सबको महीन पीस गूगुल में डालै पीछे इनको एक जीव कर ५ मासे प्रति दिन जलसे ले तौ मूत्र कृच्छ्र । मूत्राघात । प्रमेह । प्रदर । वातरक्त । वीर्य्य दोष इनको दूर करै है ॥ १६ ॥ इति गोखुरादि गूगुल ॥

अथवा जीरा १ टके गुड़ १ टं० प्रति दिन खाय तौ मूत्र कृच्छ्र जाय ॥ १७ ॥ अथवा जवाखार २ टं० गौके मट्ठे से पीवै तौ मूत्रकृच्छ्र पथरी दोनों जांय ॥ १८ ॥ इति जवाखार तक्रयोगः ॥

अथवा पारा १ भाग सोधी गन्धक ४ भाग इन दोनों की कजली करै पीछे इस कजली को बड़ी कौड़ी में भरै और भुने सुहागे को जल से पीस कौड़ी के मुखमें लगावै पीछे उस कौड़ी को कुल्हाड़ेमें धर गजपुट में फूंकदे शीतल होने के पीछे उस कौड़ी को कुल्हाड़े में से काढ महीन पीस ४ रत्ती प्रमाण और २१ मिरच पीस मिलाय घृत के साथ खाय तौ मूत्रकृच्छ्र जाय ॥ १९ ॥ इति लघु लोकेश्वररसः ॥ यह सर्व्व यत्न भावप्रकाश और वैद्यरहस्य में लिखे हैं ।

अथवा निरूह बस्ति वा उत्तर बस्ति के करने से मूत्रकृच्छ्र जाय २० ॥ अथवा । सतावरि । कासकी जड़ । डाभकी जड़ । गोखरू । बिदारीकन्द । सालरकी जड़ । किसोरा इन का काढ़ा कर सहत और मिश्री मिलाय पिये तौ मूत्रकृच्छ्र जाय २१ यह चक्रदत्त में लिखा है ॥ अथवा । तिवरसी का बीज मजुआ । दारुहल्दी । इनका काढ़ा कर पिये तौ पित्तका मूत्र कृच्छ्र जाय २२ ॥ अथवा केले के रस में गोमूत्र डाल पिये तौ कफ का मूत्रकृच्छ्र जाय २३ ॥ अथवा इलायची को महीन पीस जलसे ले तौ कफका मूत्रकृच्छ्र जाय २४ ॥ अथवा मूंगे का चूर्ण १। टंक चांवल के पानीसे पिये तौ कफका मूत्रकृच्छ्रजाय २५ ॥ अथवा गोखुरू । सोंठ । इनका काढ़ा ले तौ कफ का मूत्र कृच्छ्रजाय २६ ॥ यह वृन्दमें है ॥ अथवा । बड़ीकटेली । पाढ । मुलहटी । मजुआ । इन्द्रजव इनका काढ़ा कर पिये तौ सन्निपात का मूत्र कृच्छ्र जाय २७ ॥

अथ शुक्र के रोकने के मूत्र कृच्छ्र का यत्न ॥

शिलाजीत सहतमें मिलायकै खाय तौ शुक्र रोकने का मूत्रकृच्छ्रजाय २८ ॥ यह चक्रदत्त में है ॥ अथवा उत्तम स्त्री से संग करै तौ यह मूत्रकृच्छ्र जाय २९ ॥ अथवा खरैटीकी जड़ का काढ़ा ले तौ सम्पूर्ण मूत्रकृच्छ्र जांय ३० ॥ अथवा गोखुरू का पंचांग १०० टके भर ले उसको कूट अठगुने पानी में औटावै जब चतुर्थांश रहै तब उसमें ५० टकेभर मिश्री की अवलेह

कीसी चासनी करै इस में सोंठ २ ट० पीपल २ ट० इलायची २ ट० जवाखार २ ट० केसर २ ट० काहू इलाबकल २ ट० तिवरसी का बीज २ ट० वंशलोचन ८ ट० इन सब औषधियों को महीन पीस इस चासनी में डाले फिर १ टकेभर प्रति दिन खाय तौ मूत्रकृच्छ्र । दाह । बद्ध कोष्ट । पथरी । रुधिरका मूतना । मधुप्रमेह । इन सब को दूर करै ३१ ॥ इतिगोखुरावलेहः॥ यह सब यत्न सर्व्व संग्रह में लिखे हैं ॥ इति मूत्रकृच्छ्र की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ मूत्राघात रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

मनुष्य मूत्र कृच्छ्र और मूत्राघात में आशंका करै हैं सो इस का भेद लिखते हैं ॥ मूत्रकृच्छ्र में बहुत कष्ट और मूत्र बन्ध में थोड़ा और मूत्राघात में मूत्र बन्ध तौ बहुत परन्तु मूतने में पीड़ा थोड़ी होती है इतना भेद है ॥

अथ मूत्राघात की उत्पत्ति लक्षण ॥

कुपथ्य करके कोपको प्राप्त हुआ जो बात पित्त कफ तिन करकै मूत्राघात होय है सो मूत्राघात रोग १३ प्रकार का है बात कुण्डलिका १ अष्ठीला २ वातबस्ति ३ मूत्राघात ४ मूत्रजठर ५ मूत्रोत्सङ्ग ६ मूत्रक्षय ७ मूत्रग्रंथी ८ मूत्रशुक्र ९ उष्णबात १० मूत्रसाद ११ बिड्घात १२ बस्तिकुण्डलिका १३ ॥

अथ बात कुण्डलिका का लक्षण ॥

रूखी बस्तु के खाने से मलमूत्र और शुक्रके धारणसे बात पेडू में जाकर पीड़ा करै और मूत्रकी नसोंमें जाय बिचरै और कोपित होजाय तब कफ मूत्रके छिद्रको रोकै और इन्द्री के मुखमें बातकुण्डलके आकार होय रहै तब पुरुष थोड़ा २ मूते और मूतनेमें पीड़ा बहुत होय यह लक्षण होंय उसे बात कुण्डलिका रोग कहते हैं यह असाध्य है इस रोग वाला पुरुष मरजाय १ ॥

अथ अष्ठीला का लक्षण ॥

पेडू में अफरा होय गुदाकी पवन चले नहीं गुदामें पवन

की गांठ पत्थरसी होजाय उस स्थान में पीड़ा बहुत होय और वह पवन मल मूलको रोक दे तौ अष्ठीला का लक्षण जानिये २ ॥

अथ वात बस्ति का लक्षण ॥

जो पुरुष मूत्र के वेग को रोकै उसके पवन पेड़ू में जाके मूत्र की नसों के मुख को रोक दे मूत्र उतरने दे नहीं पेड़ू और कुक्ष में पीड़ा करै उसको वात बस्ति रोग कहते हैं यह रोग कष्ट कारी है ॥ ३

अथ मूत्रातीत रोग का लक्षण ॥

मूत्र को बहुत बार रोकै और देर तक मूत्र करै नहीं तब पुरुष के मूत्र मन्द उतरै इस को मूत्रातीत कहते हैं ४ ॥

अथ मूत्रजठर रोग का लक्षण ॥

जो पुरुष मूत्र के वेगको रोकै तिसको गुदाकी अपान वायु उदर को पवन से भर कर नाभि के नीचे अफरा रोग को करके बहुत पीड़ा करै उसको मूत्र जठर रोग कहते हैं ५॥

अथ मूत्रोत्सङ्गका लक्षण ॥

पेड़ू अथवा लिङ्ग की नसों में आया जो मूत्र उसको करै नहीं तब उस पुरुष के मूत्र के द्वारा पीड़ा सहित अथवा बिन पीड़ा थोड़ा रुधिर उतरै उसको मूत्रोत्सङ्ग रोग कहते हैं ॥ ६ ॥

अथ मूत्र क्षय का लक्षण ॥

जिस पुरुष का खेद करके शरीर रूखा पड़ जाय उस के पेड़ू में रहने जो वात पित्त कफ वह पीड़ा और दाह सहित मूत्रको नाश करै है उसको मूत्र क्षय रोग कहते हैं ॥ ७ ॥

अथ मूत्रग्रंथि रोग का लक्षण ॥

पेड़ू के बीच में गोल और स्थिर और छोटी आंवले के प्रमाण बहुत कड़ी वाय की गांठ अकस्मात् उपज आवै उसको मूत्रग्रंथि कहते हैं ॥ ८ ॥

अथ मूत्रशुक्र रोग का लक्षण ॥

मूत्र का वेग लग रहा हो और मैथुन करने को स्त्री के

पास जाय तब उसकी बायु शुक्र को स्थान से भ्रष्ट करै है मूत्र के पहले अथवा मूत्र के पीछे अरने उपले के राख के पानी के सदृश गिरे उसको मूत्रशुक्र कहते हैं ॥ ९ ॥

अथ उष्णवात रोग का लक्षण ॥

स्त्री के संगसे। खेदसे। धूपमें रहनेसे। पुरुष की पेड़ू में रहते जो बात पित्त वह पेड़ू। इन्द्री। गुदाको दग्ध करै हैं तब हल्दी के सदृश मूत्र उतरै अथवा रुधिर लिये बड़े कष्ट से मूत्र उतरै उसको उष्णवात कहते हैं ॥ १० ॥

अथ मूत्रसाद रोग का लक्षण ॥

पुरुष के कुपथ्य करके पेड़ू में रहता जो वायु सो पित्त और कफको बिगाड़ै है तब उसके मूत्र बहुत कष्ट से उतरै पीला अथवा लाल। सुपेद। बहुत गाढ़ा। गरम गोरोचन के सदृश। चूनेकी राख सदृश थोड़ा उतरै। शरीर सूख जाय उसको मूत्रसाद कहते हैं ॥ ११ ॥

अथ बिड़बिघात रोग का लक्षण ॥

जो पुरुष बहुत रूखा अन्न खाय सो दुर्बल हो मल सहित मूतै और उसके मूत्रमें मलकीसी गन्ध आवै और बहुत कष्ट से मूत्र उतरै उसको बिड़बिघात रोग जानिये ॥ १२ ॥

अथ बस्तिकुण्डल रोग का लक्षण ॥

बहुत जल्दी दौड़नेसे। लंघन करने से। बहुत खेदसे पेड़ू में किसी प्रकारकी चोट लगनेसे। पेड़ू में गांठ पड़ जाय तब उठते पीड़ा होय और गांठ बड़ी हुई हलै नहीं। गर्भ कीसी भांति रहैं। शूल होय। फड़के। दाह अधिक होय। उस गांठ को हाथ से दाबै तो मूत्र की बूंद उतरै और बहुत पीड़ा होय तब मूत्रकी धार निकलै और शस्त्रकी चोट लगने कीसी पीड़ा होय इसको बस्तिकुण्डल कहते हैं यह असाध्य है ॥ १३ ॥ यह रोगवाला मर जाय ॥

अथ मूत्राघात रोग का यत्न ॥

नरसल की जड़। डाभकीजड़। कासकी जड़। सांटी की

जड़। खरैटी की जड़। इनका काढ़ा करै फिर सहत डाल ठंढाकर पिये तौ मूत्राघात जाय ॥ १ ॥ अथवा कपूर को जलसे महीन पीस वस्त्र में उसका लेप कर उसकी बत्ती करै फिर उस वत्ती को इन्द्री में धरै तौ यह रोग जाय ॥ २ ॥ अथवा धनियां। गोखुरू इन दोनों का काढ़ा कर इस काढ़े में घृत पकाय खाय तौ मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्र शुक्रदोष ये तीनों जांय ॥ ३ ॥ इति धान्य गोक्षुर घृतं ॥

और जितना यत्न मूत्रकृच्छ्र और पथरी का है उतना ही मूत्राघात का जान लीजिये ॥ ४ ॥ यह भावप्रकाश में लिखा है अथवा तिवरसी का बीज ५ टं० धनिया ५ टं० इन्हें रात्रि में भिजोय फिर प्रातःकालही उसी पानी में पीस छान १ टं० सेंधा नोन डाल कर पिये तौ मूत्राघात जाय ५ ॥ अथवा पाटल वृक्ष काखार २॥ टं० कालानोन १। टं० यह दोनों मदिरा के साथ पिये तौ मूत्राघात जाय ६ ॥ अथवा। मद्यमें खट्टे अनारका रस और इलायची। डाल कर पिये तौ यह रोग जाय ७ ॥ यह वृन्द में लिखा है। अथवा सिलाजीत का सेवन करै तौ मूत्राघात जाय ८ ॥ अथवा कौंचके बीज ५ टं० खरैटी १० टं० पीपल १ टं० तालमखाना १। टं० मिश्री १० टं० मुनक्कादाख १० टं० इनको महीन पीस गरम दूधमें सहतघृत डाल पिये तौ शुक्र के रोकने का मूत्राघात जाय ॥ और यह प्रयोग वंध्या के पुत्र उत्पन्न करने वाला है ८ ॥ यह सर्व्व संग्रह में लिखा है ॥ अथवा चित्रक ऽ। गौरीसर ५ टं० खरैटी १० टं० दाख ऽ≈ इन्द्रायण की जड़ ५ टं० त्रिफला ५ टं० बड़ा आंवला १०० इन का १६ सेर पानी में काढ़ा करै जब इसका चतुर्थांश रह जाय तब उतार कर छान ले पीछे इस काढ़े में ४ सेर घृत डाल कर पकावै जब औषध और पानी जल जाय और घृत मात्र रहजाय तब छान ले फिर इसमें वंशलोचन ऽ≈ डाल कर ऽ≈ प्रति दिन ले तौ सर्व्व प्रकार के वीर्य्य के दोषों को दूर करै है और स्त्रीके गर्भ करै है और मूत्राघात। प्रदर

योनि के दोष। मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगों को दूर करै है ९॥ इति चित्रकाद्यंघृतं । यह चरक में लिखा है॥

अथवा त्रिफला के काढ़े में गुड़। दूध डालकर पिये तौ मूत्राघात जाय १०॥ अथवा पाढ़ल। अरलू। नीमकीछाल। हल्दी। गोखुरू। पलाशका वक्कल। ये सब बराबर ले इनका काढ़ाकर उस में गुड़ डालकर पिये तौ मूत्राघात जाय ११॥ अथवा सुन्दर चतुर स्त्री से मैथुन करै तौ मूत्राघात जाय १२ ये सब आत्रेय में लिखे हैं—इति मूत्राघात की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण॥

अथ मूत्ररोध रोग का लक्षण॥

जो यत्न मूत्रघात और मूत्रकृच्छ्र के हैं वेही इसके भी जान लीजिये और कुछ विशेष हैं सो लिखते हैं ककड़ी के बीज। त्रिफला। सेंधानोन। ये सब बराबर ले महीनपीस ५ टं० गरम जलके साथ पिये तौ मूत्ररोध जाय १॥ अथवा तिलके काकड़े को जलाके खार निकाल २ टं० दही और सहत के साथ ले तौ मूत्र के चार रोग जांय २॥

अथ मूत्र बहुत गरम उतरै उसका यत्न॥

चमेली की जड़ को बकरी के दूध में पीस कर पिये तौ यह रोग जाय ३॥ अथवा कमल की जड़ को गोमूत्र में पीस उस में तिल मिलाय पिये तौ मूत्र रोध जाय—इति मूत्र रोध का यत्न सम्पूर्ण॥ यह आत्रेय में लिखा है॥

अथ अश्मरी रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अश्मरी को लोक में पथरी कहते हैं यह पथरी रोग चार प्रकार का है बातका। पित्त का। कफ का। वीर्य्य के रोकने का इन चारों में जो कफ मिला है वह यमरूप है॥

अथ पथरी की उत्पत्ति॥

पेड़ू में रहती जो बायु सो पेड़ू के वीर्य्य। मूत्र। पित्त कफ इनको सुखाय क्रमसे पथरी को उत्पन्न करै है यहां यह

दृष्टान्त है कि जैसे गौके पित्त में गो रोचन बढ़ जाय वैसेही मनुष्य के पथरी पड़ जाय है ॥

अथ पथरी का पूर्व्व रूप ॥

पथरी का रोग सन्निपात से उत्पन्न होता है पथरी वाले पुरुष के मूत्र में मस्त बकरे कीसी गन्ध आवै पेड़ू में अफरा होय पीड़ा बहुत होय मूत्र बहुत कष्ट से उतरे ज्वर और भोजन में अरुचि होय यह पथरी के पूर्व्व रूप का लक्षण है ॥

अथ पथरी रोग का सामान्य लक्षण ॥

नाभि में मूत्र की नसों में पेडू में पीड़ा बहुत होय मूत्र की धार बंधी गिरै नहीं और मूत्र का मार्ग रुक जाय जब यह पथरी मूत्रके मार्ग से सरकजाय तब उस पुरुष को सुख होय मूत्र अच्छे प्रकार पीला उतरै और जब वह कोप को प्राप्तहोय तब बड़ी पीड़ा सहित रुधिर मिला मूत्र उतरै ॥

अथ अधिक वात वाली पथरी का लक्षण ॥

जिस में मूल के समय अधिक पीड़ा होय दांतों को चाबें मूत्र करते में कांपै। इन्द्री और नाभि में पीड़ा होय मूतते पुकार उठे और मल करदे मूत्र बूंद २ उतरै पथरी का रंग काला होय और पथरी में कांटे से होय उसको वात की पथरी कहते हैं ॥ १ ॥

अथ कफ पित्त की पथरी का लक्षण ॥

पेडू अग्नि के समान ऐसी जलै मानो पक गया है और पथरी बदाम के छिलके के समान और पीली लाली सुपेदाई लिये हो ये लक्षण होंय तौ कफ पित्त की पथरी जानिये २ ॥

अथ कफ की पथरी का लक्षण ॥

पेड़ू में पीड़ा बहुत होय और पेड़ू शीतलभारी हो और उसकी पथरी चिकनी और गीली और सुपेद कुकुट के अण्डेकी बराबर हो जिस में यह लक्षण होंय उसको कफकी पथरी कहिये ॥ ३॥

अथ शुक्र के रोकने की पथरी का लक्षण ॥

जिस पुरुष को मैथुन करने की इच्छा होय और वह शुक्र को रोकै किसी प्रकार जाने न दे उसके शुक्र की पथरी उत्पन्न होती है इन्द्री और पोते के बीचमें वह पवन वीर्य्य को सुखाय पथरी करै फिर वह पथरी पेडू में पीड़ा करै मूत्र महाकष्ट से उतरै पोते सूज जांय उसका वीर्य्य जाता रहै और इन्द्री में पीड़ा करै तौ इन्द्री के द्वारा शुक्र निकलै अथवा वह इन्द्री पीड़ित करै तब बात उस पथरी के निकट महीन शुक्र के रेत के सदृश टुकड़े कर दे तब इसको सर्करा कहते हैं ४ ॥

अथ पथरी का उपद्रव लिखते हैं ॥

शरीर दुर्बल होकर पीला होकुक्ष में शूल चलै अरुचि होय शरीर पीला होजाय मूत्राघात होय और नाभि सूज जाय मूत्ररुक जाय ये इसके उपद्रव हैं ॥

अथ पथरी रोग का यत्न ॥

सोंठ । अरणी । पाषाणभेद । कूट । बरणा । गोखरू । अरण्डकी छाल । किरमालाकीगिरी । ये सब बराबर ले जवकुटकर ५ टं० का काढ़ाकर उसमें भुनी हींग । जवाखार । सेंधानौन । ये तीनों डाल पथरी वाला पिये तौ पथरी और मूत्रकृच्छ ये दोनों जांय और यह कोष्ट की बात । उपदंश । बवासीर । इनको भी दूर करै है और दीपन पाचन है इति सुंठ्यादिक्वाथः ॥

अथवा इलायची । पीपल । मडुआ । पाषाणभेद । पित्तपापड़ा । गोखुरू । अड़ूसा । अरंडकीजड़ ये सब बराबर ले जवकुट करइनका काढ़ा करकै उस में सिलाजीत डालकर पिये तौ पथरी और मूत्रकृच्छ को दूर करै है ६ ॥ इति एलादि क्वाथः ॥

अथवा पेठे के रसमें भुनीहींग । जवाखार डालकर पिये तौ पेडू की पीड़ा और पथरी जाय ७ ॥ अथवा अरणी की छाल । पाषाणभेद । सोंठ । गोखुरू । इनका काढ़ा कर जवा

खार डाल पिये तौ पथरी जाय ॥ ८ ॥ अथवा गोखुरू के चूर्ण में ५ ॥ टंक सहत मिलाय भेड़ के दूध में पिये तौ पथरी जाय ॥ ९ ॥ अथवा बरणा की जड़ का काढ़ा कर उसमें गुड़ डाल कर पिये तौ पथरी का रोग और पेड़ का शूल दूर होंय ॥ १० ॥ अथवा अदरक का रस जवाखार । हड़कीछाल । मलयागिरचन्दन । इनका काढ़ा कर दही डाल कर पिये तौ पथरी जाय ॥ ११ ॥ अथवा बरणा का बक्कल १०० टके भर ले उसमें चौगुना पानी डाल औटावै जब चतुर्थांश रह जाय उसमें १०० टके भर गुड़ की चासनी कर चिकने बासन में धरै उसमें सोंठ १ टके पेठे के बीज १ टं० बहेड़े की मींगी १ टं० बथूए के बीज १ टं० सहजने के बीज १ टं० दाख २ टं० इलायची १ टं० हड़कीछाल १ टं० बाय बिड़ंग १ टं० इनका चूर्ण कर उसमें डाल एक रसकर प्रति दिन खाय तौ पथरी का रोग जाय ॥ १२ ॥ इति बरणादि गुड़ का अवलेह ॥

अथवा मंजीठ । तिवर्षी का बीज । जीरा । सौंफ । आंवला बेरकीमींगी । सोधीगन्धक । आवलासार । मैनसिल । ये सब बराबर ले महीन पीस १। टंक प्रति दिन सहत के साथ खाय तौ पथरी निश्चय जाय ॥ १३ ॥ अथवा २। टके भर कुलत्थ काढ़ा कर उसमे सेंधानौन २ मासे घरफी का रस २ मासे मिलाय पिये तौ पथरी जाय ॥ १४ ॥ यह सब भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा हल्दी का चूर्ण ५ टं० गुड़ १० टं० इनको १ मासे कांजी में डाल पिये तौ पथरी जाय ॥ १५ ॥ अथवा कालानौन । दूध । तिलेठी की राख । ये सब मदिरा में मिलाय ३ दिन पिये तौ पथरी जाय ॥ १६ ॥ यह चक्रदत्त में लिखा है ॥ अथवा तिलेठी की राख २॥ टं० सहत ५ टंक इनको दूध के साथ १५ दिन पिये तौ पथरी निश्चय झड़ पड़ै ॥ १७ ॥ अथवा गोपाल काकड़ी की जड़ २ टंक ले उसको रात में भिगो रक्खै प्रातही उसी पानी में पीस ७ दिन

पिये तौ पथरी इन्द्री द्वारा झड़ पड़ै १८ ॥ यह राजमार्तण्ड में लिखा है ॥ अथवा कुलत्थ। सेंधानौन। वायविडंग। सार। मिस्री। सांठीकारस। जवाखार। पेठेकारस। तिलकाखार। पेठेकेबीज। गोखुरू। इन सब का काढ़ा कर इसमें गौका घृत पकाय १ टके भर नित्य खाय तौ पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात शुक्रबन्ध इन सब रोगों को यह दूर करै ॥ १९ ॥ इति कुलत्थाद्यं घृतम् ॥ यह वृन्द में लिखा है ॥

और मूंग। जव। गेहूं। चांवल। दूध। घृत। टेड़स। सेंधानौनये इस रोग में पथ्य हैं इति अश्मरी नाम पथरी रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ प्रमेह रोग की उत्पत्ति लक्षण ॥

अधिक बैठने और बहुत सोने और नवीन पानी के पीने बकरा भेड़ का मांस और गुड़ आदि बहुत मिठाई और बहुत दही और कफ कारी वस्तु इनके खाने और श्रम और बहुत मैथुन करने। धूप के रहने। विरुद्ध और गरम भोजन के करने। बहुत मदिरा के पीने से कडुवा रस के खाने इन वस्तुओं के करने से पुरुष के प्रमेह रोग उत्पन्न होता है ॥

अथ कफ पित्त वायु के प्रमेह का संप्राप्ति नाम जन्म ॥

पेडू में प्राप्त जो मेदा और मांस और शरीर का जल तिनको कफ दूषित करके कफ प्रमेह को करै है ॥ ऐसेही पित्त गरम वस्तु से कोप कर पेडू में प्राप्त जो मेदा। मांस जल तिनको दूषित कर पित्त के प्रमेह को करै है ॥ ऐसेही वायु भी अपनी अपेक्षा आप सा क्षीण जो कफ पित्त तिनको पेडू में प्राप्त कर और शुद्ध जो मांस को स्नेह उसको और शरीर के जल पेडू की नसों के मुख में प्राप्त कर वायु के प्रमेह को करै है कफ के १० प्रमेह साध्य हैं क्योंकि सामान्य यत्न से जांय हैं और पित्त के ६ प्रमेह याप्य हैं अर्थात् यत्न से दबे रहैं इसका विषम यत्न है क्योंकि दोष दूष्य के विष-

अपने से ऐसा दोष दूषित है और दूष्य रस मांसादिक है शीतल मधुरादिक पित्तहारी द्रव्य हैं और रसमांस मेद इनको शीतल मधुरादिक पित्त हारी द्रव्य उपजावैं हैं और वायके ४ प्रमेह असाध्य हैं वे जांय नहीं क्योंकि मज्जा को आदि ले वे गंभीर धातु हैं और सर्व शरीर व्यापी हैं और शरीर के विनाश कारी हैं इस कारण वायु का प्रमेह असाध्य है ॥

अथ बीस प्रकार का जो प्रमेह तिनका नाम ॥

उदक प्रमेह १ इक्षु प्रमेह २ सान्द्र प्रमेह ३ सुरा प्रमेह ४ पिष्ट प्रमेह ५ शुक्र प्रमेह ६ सिकता प्रमेह ७ शीत प्रमेह ८ शनैः प्रमेह ९ लाला प्रमेह १० ये दशतो कफके प्रमेह हैं ॥ और क्षार प्रमेह १ नील प्रमेह २ काला प्रमेह ३ हारिद्र प्रमेह ४ मांजिष्ट प्रमेह ५ रक्त प्रमेह ६ ये छः पित्तके प्रमेह हैं और वसा प्रमेह १ नील प्रमेह २ काम प्रमेह ३ हस्ती प्रमेह ४ ये चार वायु के हैं ॥ ये २० प्रमेह वाग्भट्ट सुश्रुत चरक भाव प्रकाश आदि के मतसे हैं ॥ और आत्रेय जीके मतसे विशेष हैं सो लिखते हैं ॥ लूप प्रमेह १ तक्र प्रमेह २ पिच्छिका प्रमेह ३ शर्करा प्रमेह ४ घृत प्रमेह ५ अतिमूत्र प्रमेह ६ ॥

अथ प्रमेह का पूर्व रूप ॥

दांत तालू जीभ इनमें मैल अधिक होय हाथ पैर में दाह और देह चिकनी होय तृषा बहुत लगै मुंहमीठा रहै ये लक्षण होंय तौ जानिये कि इसके प्रमेह होगा ॥

अथ प्रमेह का सामान्य लक्षण ॥

बहुत ठंढा और पतला मूत्र होय तब जानिये कि इसके प्रमेह होगा ॥

अथ कफके १० प्रमेह क्रमसे लिखते हैं ॥

उदक प्रमेह का लक्षण ॥

निर्म्मल सपेद और बहुत शीतल गंध रहित जलके सदृश कुछ एक भदरंगा और चिकना मूते उसको उदक प्रमेह कहते हैं १ ॥

अथ इक्षु प्रमेह का लक्षण ॥

सांठे के रसके समान मीठा होय उसको इक्षु प्रमेह कहते हैं ॥ २ ॥

अथ सान्द्र प्रमेह का लक्षण ॥

जैसे बासी पानी बासन में धरा हुआ ठंढा होता है वैसाही मनुष्य मूते तौ उसको सान्द्र प्रमेह कहते हैं ॥ ३ ॥

अथ सुरा प्रमेह का लक्षण ॥

जिनके मूत्र में दारूकीसी बास आवै और उसका मूत्र ऊपर तौ निर्म्मल होय और नीचे मटरंगा होय उसको सुरा प्रमेह कहते हैं ॥ ४ ॥

अथ पिष्ठ प्रमेह का लक्षण ॥

चावल आदि के चूरन के पानी के सदृश सुपेद कष्ट पूर्व्वक और मूतते हुए रोमांच होय उसको पिष्ठ प्रमेह कहते हैं ५ ॥

अथ शुक्र प्रमेह का लक्षण ॥

वीर्य्य सहित मूते उसको शुक्र प्रमेह कहते हैं ॥ ६ ॥

अथसिकता प्रमेह का लक्षण ॥

जिसके मूत्रमें बालू के कणों के समान कफ की फुटक आवै उसको सिकता प्रमेह कहते हैं ॥ ७ ॥

अथ शीत प्रमेह का लक्षण ॥

बारबार बहुत शीतल मूते उसको शीतप्रमेह कहते हैं ॥ ८ ॥

अथ शनैः प्रमेह का लक्षण ॥

शनैः२ निपट मन्द मूतै उसको शनैः प्रमेह कहते हैं ॥ ९ ॥

अथ लाला प्रमेह का लक्षण ॥

लारकी तांत सहित मूते उसको लाला प्रमेह कहते हैं ॥ १० ॥ ये दश कफके प्रमेह हैं ॥

अथ पित्त के ६ प्रमेह में प्रथम क्षार प्रमेह का लक्षण ॥

जिसके मूत्र में खारकीसी गन्ध और वर्ण होय और खार के पांनी के सदृश मूतै उसको क्षार प्रमेह कहिये ॥ १ ॥

अथ नील प्रमेह का लक्षण ॥

जिसका मूत्र नील के रंग के समान उतरै उसको नील प्रमेह कहिये ॥ २ ॥

अथ काल प्रमेह का लक्षण ।

स्याही के समान काला मूतै उसको काल प्रमेह कहिये ॥ ३ ॥

अथ हारिद्र प्रमेह का लक्षण ।

हल्दी के रंग के समान कडुवा दाहको लिये मूतै उसको हारिद्र प्रमेह कहिये ॥ ४ ॥

अथ मांजिष्ट प्रमेह का लक्षण ॥

मंजीठके पानी के रंग सदृश मूतै और दुर्गन्ध बहुत आवै उसको मांजिष्ट प्रमेह कहिये ॥ ५ ॥

अथ रक्त प्रमेह का लक्षण ॥

रुधिर के समान दुर्गन्ध युक्त बहुत मूतै उसको रक्तप्रमेह कहिये ॥ ६ ॥ ये पित्त के प्रमेह हैं ॥

अथ वायु के ४ प्रमेहों में प्रथम वसा प्रमेह का लक्षण ॥

शुद्ध मांस का जो घृत उसको और उसके रंग को लिये मूतै उसको वसा प्रमेह कहिये ॥ १ ॥

अथ मज्जा प्रमेह का लक्षण ॥

हाड़ की मज्जा को लिये और उसके रंग के सदृश बार बार मूते उसको मज्जा प्रमेह कहते हैं ॥ २ ॥

अथ क्षौद्र प्रमेह का लक्षण ॥

कसैला और सहत के सदृश मीठा और खारी जिसका मूत्र होय उसको क्षौद्र प्रमेह जानिये ॥ ३ ॥ जिस पुरुष के प्रमेह होय और वह यत्न न करै और प्रमेह बहुत दिनका होजाय और प्रमेह वाला कुपथ्य करै उसके मधु प्रमेह होय है यह असाध्य है ॥

अथ कफ के प्रमेह का उपद्रव ॥

अन्न पचे नहीं भोजन में अरुचि और छर्दि होय निद्रा खांसी बहुत आवै पीनस होय यह कफके प्रमेह के उपद्रव हैं ॥

अथ पित्त के प्रमेह का उपद्रव।

पेडू और इन्द्री में पीड़ा होय अण्डकोश फटने लगै ज्वर। दाह। तृषा। मूर्छा। अतीसार होंय खट्टी डकार आवै यह पित्त प्रमेह के उपद्रव हैं ॥

अथ बायु प्रमेह के उपद्रव ॥

जिस में उदावर्त्त रोग होय। शरीर कांपै हृदय दूखै सब रसों के खाने की इच्छा रहै पेट में शूल होय निद्रा आवै नहीं शरीर सूज जाय खांसी और श्वास होय ये बात प्रमेह के उपद्रव हैं ॥

अथ प्रमेह का असाध्य लक्षण ॥

बात। पित्त। कफ। के उपद्रव संयुक्त जिस पुरुष के प्रमेह होय उसको असाध्य जानिये वह मरजाय ॥ और प्रमेह की जो दशपीड़िका कही हैं तिन करकै संयुक्त जो पुरुष वह भी मरजाय ॥

अथ आत्रेय के मतके जो प्रमेह उनका नाम और लक्षण ॥

पूयप्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पीडिकाप्रमेह ३ शर्करा प्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्र प्रमेह ॥ ६ ॥

अथ पूय प्रमेह का लक्षण ॥

पीव के समान मूतै उस को पूय प्रमेह जानिये ॥ १ ॥

अथ तक्र प्रमेह का लक्षण ॥

जिसका मूत्र मट्ठे के समान उतरै और मूत्र में मट्ठे की सी बास आवै उसको तक्रप्रमेह जानिये ॥ २ ॥

अथ पिड़िका प्रमेह का लक्षण ॥

जिस के मूत्र में बीर्य्य की फुटक पड़ै उसको पीड़िका प्रमेह कहिये ॥

अथ शर्करा प्रमेह का लक्षण ॥

जिस का मूत्र मिश्री के सदृश मीठा होय और मिश्री के वर्ण के सदृश होय उसे शर्करा प्रमेह कहिये ॥

अथ घृत प्रमेह का लक्षण ॥

जिस के मूत्र का रंग घृत के सदृश होय उस को घृत प्रमेह कहिये ॥ ५ ॥

अथ अति मूत्र प्रमेह का लक्षण ॥

जिस पुरुष को रात्रि और दिन बहुत मूत्र उतरै और वह मनुष्य निर्बल पड़ जाय उसको अति मूत्र प्रमेह कहिये ॥ ६ ये आत्रेय के मत के प्रमेह हैं ॥

अथ प्रमेह वाले पुरुष के दश जाति की पिड़िका होय हैं- तिनका नाम लिखते हैं ॥

शराबिका १ कच्छपिका २ जालिनी ३ बिनता ४ अलजी ५ मसूरिका ६ सर्बपिका ७ पुत्रिणी ८ बिदारिका ९ बिद्रधि ॥ १० ॥

अथ पीड़िका का लक्षण ॥

शरीर के ढूगा आदि जोपुष्ट स्थान तिन के मर्म्म स्थान के बिषे १० सन्धि में उपजैं उसको पीड़िका कहिये ॥

अथ शराबिका का लक्षण ॥

फुनसी ऊपर तो ऊंची और जिसके बीचमें गाढ़ा होय उस को शराबिका कहिये ॥ १ ॥

अथ कच्छपिका का लक्षण ॥

पीछे कहे जो शरीर के पुष्ट स्थान तिन में सरसों के प्रमाण दाह को लिये कछुआ के आकार जो फुनसी होय उस को कच्छपिका कहते हैं ॥ ॥ २ ॥

अथ जालिनी का लक्षण ॥

जिस फुनसी में दाह बहुत होय और वह मांस के समूह में होय उस को जालिनी कहिये ॥ ३ ॥

अथ बिनता का लक्षण ॥

जिस फुनसी के भीतर पीड़ा होय और वह फुनसी बड़ी होय और पीठ पीछे अथवा उदरमें होय उसे बिनता कहिये ॥ ४ ॥

अथ अलजी का लक्षण ॥

जो फुनसी लाल और काली होय बहुत फाटे पीड़ा अधिक होय उसको अलजी कहिये ॥ ५ ॥

अथ मसूरिका का लक्षण ॥

जो फुनसी मसूर के प्रमाण होय और मसूर हीकासा रंग होय उसको मसूरिका कहिये ॥ ६ ॥

अथ सर्षपिका का लक्षण ॥

जो फुनसी सरसों के प्रमाण होय और सरसोंही कासा रंग होय उसको सर्षपिका कहिये ॥ ७ ॥

अथ पुत्रणी का लक्षण ॥

जो फुनसी उठतेही बड़ी उठे उसको पुत्रिणी कहिये ॥ ८ ॥

अथ बिदारिका का लक्षण ॥

जो फुनसी बिदारी कन्द के सदृश गोल होय और कड़ी होय और वैसाही रंग होय उसको बिदारिका कहिये ॥ ९ ॥

अथ बिद्रधि का लक्षण ॥

बिद्रधि रोग ६ प्रकार का है उसके लक्षण पीछे लिखे हैं सो यहां भी जान लीजिये दश पीड़िका प्रमेहवाले रोगीके होय है और जिस का मेद दुष्ट होय उसके बिना प्रमेहभी होय हैं १ ॥

अथ १० पीड़िका का उपद्रव ॥

तृषा । खांसी । मांसकासंकोच । हिचकी । मन्दज्वर बिसर्प्प । मर्म का रोकना । ये इनके उपद्रव हैं ॥

अथ पीड़िका का असाध्य लक्षण ॥

गुदा । हृदय । मस्तक । कन्धा । मर्म स्थान । इन स्थानों में मंदाग्नि वाले के फुनसी होय तो असाध्य जानिये ॥ कई आचार्य्यों के मत से स्त्री के प्रमेह रोग नहीं होता क्योंकि स्त्री के महीने के महीने स्त्री धर्म होता है उससे शरीर के सब रोग जाते रहैं हैं ॥

अथ प्रमेह जाता रहा हो उसका लक्षण ॥

जिसका मूत्र निर्मल होय और पतला पानी के समान होय कडुवा और तीखा होजाय उसका प्रमेह गया जानिये ॥

अथ रक्तपित्त रक्त प्रमेह का भेद ॥

जिसके शरीर का वर्ण हल्दी के समान होजाय और मूत्र रुधिर के समान उतरै उसके रुधिर प्रमेह जानिये या रक्तपित्त का कोप जानिये ॥

अथ प्रमेह रोग का यत्न

सांवां। गेहूं। चना। अड़हर। कुलत्थ। जव। मूंग। मोठ। सांठी। चावल। प्रमेह वाला इतनी वस्तु पुरानी खाय॥ और तीखा कसेला। हरिण का मांस। प्रमेह वाले को ये कुपथ्य हैं। गुड़ को आदि ले मीठी वस्तु दूध। घृत। तेल। मट्ठा। मदिरा। खटाई। सांठी का रस। पिसा अन्न। अनूपदेश का मांस प्रमेहवाला इतनी वस्तु न खाय॥

अथ कफ के १० प्रमेह वाले को यह काढ़ा योग्य है ॥

नागर मोथा। हड़कोशल। लोध। कायफल इनको बराबर ले जवकुट कर ५ टंक का काढ़ा प्रति दिन सहत डाल ले तौ पित्तकफ के प्रमेह जांय॥ १॥ अथवा खस। लोध। कौह का बक्कल। रक्तचन्दन। इनको बराबर ले जव कुटकर ५ टंक का काढ़ा प्रति दिन सहत डाल ले तौ पित्त का प्रमेह जाय॥ २॥ यह यत्न भावप्रकाश में है॥

अथ जलप्रमेह का यत्न ॥

धववृच्छ का बक्कल। कदंब का बक्कल। रक्तचन्दन। सालर वृच्छ का बक्कल। इनका काढ़ा ले तो जल प्रमेह जाय॥ ३॥

अथ रक्त प्रमेह का यत्न ॥

बासी पानी में दाख का सर्बत करै उस में मुलहटी सुपेद चन्दन डाल कर पिये तौ रक्त प्रमेह जाय॥ ४॥

अथ चार प्रमेह का यत्न ॥

सुन्दर स्त्री के संभोग करने से चार प्रमेह जाय ॥ ५ ॥

अथवा धवहक्षकाबक्कल। काहूकाबक्कल। अडूसे का बक्कल। कसेरू। केले के भीतर का सुपेद बक्कल। कमल की जड़। दाख इन सब का काढ़ा दे तौ खार प्रमेह जाय ॥ ६ ॥

अथ तक्र प्रमेह का यत्न ॥

लोध। काहू का बक्कल। खस। नीब के पत्ते। आंवला। रक्तचन्दन। इन सब का काढ़ा करकै गुड़ डाल पिये तौ तक्रप्रमेह और पीड़िका प्रमेह यह दोनों जांय ॥ ७ ॥

अथ शुक्र प्रमेह का यत्न

दूब। मूर्व्वा। डाभ की जड़। कासकीजड़। दाल्यूणी। मंजीठ। सालर का बक्कल। इनका काढ़ा ले तो शुक्र प्रमेह और रुधिर प्रमेह ये दोनों जांय ॥ ८ ॥

अथ घृत प्रमेह का यत्न ॥

त्रिफला। किरमाला की गिरी। और खसी की जड़। मूर्वा सहजने के पत्ते। नीबकेपत्ते। केले का सुपेद बक्कल। मुनक्का दाख इनका काढ़ा दे तौ घृत प्रमेह जाय ॥ ९ ॥

अथ इक्षु प्रमेह का यत्न ॥

कूट। पित्त पापड़ा। कुटकी। मिश्री। इनका काढ़ा दे तौ इक्षु प्रमेह जाय ॥ १० ॥ अथवा अरणी की जड़। पाढ़ल। धमासा। अरलू। छीलाकी जड़। इनका काढ़ा ले तौ इक्षु, प्रमेह जाय ॥ ११ ॥

अथ पित्त प्रमेह का यत्न ॥

कमलकी जड़। काहूका बक्कल। इन्द्रजव। धवका बक्कल। अमली का बक्कल। आंवला। निबौली। इनमें मिश्री डाल पिये तौ पित्त का प्रमेह जाय ॥ १२ ॥ अथवा बाय बिड़ंग। लाल। काहू का बक्कल। कायफल। कदम्बका बक्कल। लोध विजय-सार। इनका काढ़ा लेतौ पित्तका प्रमेह जाय॥ १३ ॥ सर्व्व प्रमेह मात्र और मूत्रग्रह को यह दूर करै है ॥ अथवा दारुहल्दी। और बड़की छाल। हल्दी। काहूकाबक्कल। ये सब बराबरले महीन पीस इनकी बराबर मिश्री मिलाय ५ टंक सहत के साथ खाय तौ सब प्रकार के प्रमेह जाय ॥ १४

अथ मधुप्रमेह का यत्न ॥

बड़की जड़का बक्कल । अरलूकी जड़का बक्कल । चारोली । आंमला । पीपल । किरमाला । इन सब की जड़ का बक्कल । मुलहटी । नीबकी छाल । पटोल । बड़का छिलका । दाल्यूली । मेढ़ासिंगी । चित्रक । कलागच की जड़ । इन्द्रजव । त्रिफला । सोधा भिलावा । सोंठ । काली मिरच । तज । पत्रज । इलायची । ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० सहत के साथ ले तौ मधु प्रमेह जाय ॥ १५ ॥ अथवा बड़की जटा को आदि ले इन औषधियों का काढ़ा दे अथवा इनका तेल वा घृत करै सो तेल का तौ मर्दन करै और घृत को खाय तौ मधु प्रमेह जाय इति न्यग्रोधाद्यं चूर्णम् ॥ अथवा सोधी सोना मक्खी । पाषाण भेद । सोधा सिला जीत । चन्दन कचूर । पीपल । बंस लोचन । ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० ले १० टं० सहत मिलाय गौके दूध के साथ प्रति दिन पिये तौ मधु प्रमेह और मूत्रका अवरोध इन दो को यह दूर करै है यह सब यत्न आत्रेय में लिखे हैं ॥

अथ चन्द्र प्रभा गुटिका लिखते हैं ॥

कचूर १ टं० बच १ टं० नागर मोथा १ टं० चिरायता १ टं० देवदारु १ टं० हल्दी १ टं० अतीस १ टं० दारु हल्दी १ टं० पीपला मूल १ टं० चित्रक १ टं० धनिया १ टं० त्रिफला १ टं० चव्य १ टं० गजपीपल १ टं० जवाखार १ टं० सज्जी १ टं० सेंधानौन १ टं० कालानौन १ टं० साम्हरनोन १ टं० सार ५ टं० मिश्री २ टं० सोधा सिलाजीत ४ टं० सोधा गूगल ४ टं० इन सब को महीन पृथक् २ पीसे फिर सबको मिलाय एकरस करै फिर पारा १ टं० सोधी गन्धक १ टं० अभ्रक १ टं० ले फिर पारे और गन्धक की कज्जली करै ये सब औषधि इस में मिलावे फिर ४ मासे सहत और घृतके साथ ले तौ सर्व्व प्रमेह मात्र बवासीर क्षयी वीर्य्य का दोष नेत्र और दांत का रोग खांसी पाण्डु रोग । पादशूल ।

उदर का रोग। मूत्र कृच्छ्र। मूत्रा घात। फिया। कोढ़। इन सब को यह दूर करै है ॥ १८ ॥ इति चन्द्र प्रभा गुटिका ॥ अथवा त्रिफला ४ टं० जीरा ४ टं० धनिया ४ टं० दालचीनी २ टं० लवङ्ग २ टं० नागकेसर २ टं० तुख्म लैभ्रा के बीच २ टं० कौंचके बीज ४ टं० छोटी इलायची २ टं० इन सबको महीन पीस एक रसकर फिर इनको मिश्री और घृतमें मिलाय १ टं० भरका लड्डू बांधै १ लड्डू प्रभात खाय तौ प्रमेह मात्र दूर होंय ॥ १९ ॥ इति प्रमेहारि चूर्णम् ॥

अथ मधु प्रमेह का यत्न ॥

शोधापारा। शोधीगन्धक। काहूका बक्कल। मिश्री इनको बराबर ले खरल में महीन पीस सालर की जड़की ३ पुट दे फिर खरलकर फिर इसकी १ मासे प्रमाण की गोली बांधे १ गोली नित्य खाय तो मधु प्रमेह जाय ॥ २० ॥ अथवा लोध १ टं० सहतसे अथवा खरेटीके काढ़ेके साथ लेतौ प्रमेह जाय २१ अथवा गिलोय सत। त्रिफला। सार ये तीनों मिलाय १ टं० सहत मिलाय खायतौ प्रमेह जाय २२ ॥ अथवा मिश्री। सिंघाड़ा। रेवत चीनी। ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० जलसे नित्यले तो बहुत दिवस का भी प्रमेह जाय ॥ २३ ॥ अथवा वङ्गेश्वर रस १ रत्ती सहत से और इस के ऊपर पक्के गूलर के फलका चूर्ण सहतसे ले तौ असाध्य भी प्रमेह जाय ॥२४॥ अथवा पक्के गूलर का फल १ टं० सेंधानौन के साथ खाय तौ असाध्यभी प्रमेह जाय २५ ॥

अथ वङ्गेश्वर रसकी क्रिया लिखते हैं ॥

रांगाचोखा ऽ। गलावै गलती समय ऽ= पारा डाले पीछे इसको थालीमें पतलीपापड़ी जमावै फिर उसका छोटा २ टुकड़ा करजुदा रक्खै पीछे पांच २ सेरका बड़ा २ गोबरके दो ऊपला पाथ एक ऊपले के ऊपर २ सेर कसेर का चूर्ण बिछावै और युक्तिसे उसमें मेहदी का १ सेर चूर्ण मिलावे पारा और रांग के टुकड़ों को युक्ति सेधरऊपर दूसरा ऊप-

ला धरै पीछे उसे यन्त्रसे निर्वातस्थानमें फूंक दे फिर ठंढा कर जब उसका फूल सपेद होजायपूरी तोल उतरै तब काढ़ले यह वंगेश्वर की क्रिया है ॥ यह पृथक २ अनोपान से सर्व रोग मात्रको दूर करै है ॥ २६ ॥ इति वङ्गेश्वर रसकी क्रिया ॥

अथ सुपारी पाक लिख्यते ॥

दखणी सुपारी ८ टके भर महीन पीस गौके ८टके भर घृत में भून ३ सेर गौके दूधमें उसका खिलावा मावाकरै पीछे इस मावेमें नागकेशर ५ टं० नागरमोथा ५ टं० चंदन ५ टंक सोंठ ५ टं० कालीमिरच ५ टंक पीपल ५ टंक आंवला ५ टंक कोयले का बीज ५ टं० जायफल ५ टं० लवङ्ग ५ टं० धनियां ५ टं० चारोली ५ टं० तज ५ टंपत्रज ५टं० इलाइची ५टं० दोनों जीरा १० टं० सिंघाड़ा ५ टं०वंसलोचन ५टं० इन सब को महीन पीस मावेमें मिलावै पीछे ५० टकेभर मिश्री की चासनीकरै उस चासनीमें सब औषधियोंसमेत उसमावे को डालै पीछे उसकी १टं० प्रमाणकी गोलीबांधै १ गोली प्रभात और १ संध्या समै खायतौ प्रमेह । जीर्णज्वर । अम्लपित्त बवासीर। मंदाग्नि। शुक्रके दोष। और प्रदर। इनको यह दूर कर शरीरको पुष्टकरै है ॥ २७ ॥ इति सुपारी पाकः ॥

अथ गोखुरू पाक ॥

गोखुरू ऽ॥ सेरले महीन पीस गौके १ सेर घृत में भकरोवै फिर ५ सेर गौके दूध में इसका खिलवा मावा करै उस मावेमें बेलगिरी २॥ टं० कालीमिरच २॥ टं० जायफल २॥ टं० समुद्रशोष २॥ टं० इलाइची ॥ टं० भीमसेनीकपूर २॥ टं० पत्रज २॥ टं० दालचीनी २॥ टं० हल्दी २॥ टं० कूट २॥ टं० तालमखाना २॥ टं० अफीम २॥ टं० इन औषधियों से आधी भांग ले इन्हें महीन पीस उस मावेमें डालै पीछे ४ सेर मिश्री की चासनी करै इस पानी में औषधियों समेत मावा मिलावै पीछे ५ टं० प्रमाण की गोली बांधे १ गोली नित्य संध्या

खाय तौ प्रमेह को दूर कर वीर्य्य स्तंभ है। स्त्रियों को बहुत प्रसन्न करै ॥२८॥ अथवा चित्रक। सोधी गन्धक। सोंठ। काली मिरच। पारा। सोधा सिंगी मुहरा। त्रिफला। नागरमोथा। ये सब बराबर ले पहिले पारे और गन्धक की कजली करै पीछे इस कजली में ये औषधि महीन पीस मिलावै फिर इसमें भांगरे के रसकी एक पुट दे फिर खरल करै पीछे १ टं० प्रमाण की गोली बांधे १ गोली नित्य प्रभात समय खाय तौ अठारह प्रकार का कोढ़ जाय ॥ २९ ॥ इति पंचानन गुटिका ॥ ये यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं अथवा भीमसेनी कपूर १ मासे कस्तूरी १ मा० अफीम ४ मा० जावित्री ४ मा० इन सब को नागर वेल के पत्तों के रसमें पीसे पीछे १ रत्ती प्रमाण की गोली बांधे पीछे १ गोली नित्य दूध मिश्री के साथ ले तो प्रमेह मात्र दूर होंय और वीर्य्य स्तम्भ होय ॥ ३० ॥

अथ घृत प्रमेह का यत्न ॥

गिलोय। चित्रक। पाढ़ कुड़ा की छाल। मुनीशींग। कुटकी। कूट। ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० घृत में ले तो घृत प्रमेह जाय ॥ ३१ ॥ अथवा आंवला। हल्दी। यह बराबर ले ५ टंक रात में भिजोय प्रभात ही उसी पानी में पीस सहत मिलाय प्रति दिन पिये तौ प्रमेह मात्र जाय ॥ ३२ ॥ अथवा पारा। सोधी गन्धक। सार। सोधी सोना मक्खी। सोंठ। मिरच। पीपल। त्रिफला। सिलाजीत। बेर की मींगी। हल्दी। कैथ। ये सब बराबर ले प्रथम पारे और गन्धक की कजली करै फिर उसमें ये औषधि महीन पीस मिलावै फिर भांगरे के रसकी २१ पुट दे फिर १। टं० प्रति दिन खाय तौ प्रमेह मात्र दूर होंय ॥ ३३ ॥ इति मेघनाद रसः ॥

अथवा पारा अभ्रक बराबर ले आंवले के रसमें ७ दिन खरल करै पीछे १ रत्ती नित्य खाय तौ प्रमेह मात्र जाय ३४ इति हरिशंकर रसः ॥

अथवा इलायची । भीमसेनी कपूर । भारंगी । जवफल । गोखुरू । सालरकीवक्कल । मोचरस । पारा । अभ्रक । बंगसार । ये सब बराबर ले इन्हें खरल में महीन पीस २ रत्ती नित्य सहत से ले तौ प्रमेह भागजाय ३५ ॥ इति प्रमेह कुठार रसः ॥

अथवा । बकायन के बीज ५ टं० चावल के पानी में पीसे उस में गौका घृत मिलाय प्रति दिन पिये तौ बहुत दिनका भी प्रमेहजाय ॥ ३६ ॥ यह यत्न सर्व्व संग्रह में लिखा ॥ इति प्रमेह हरण यत्न सम्पूर्णम् ॥

अथ आत्रेय के मत से प्रमेह पिड़िका का लक्षण और यत्न लिखते हैं ॥

पित्त की पिडिका पीली अथवा । लालहोय । दाह और ज्वरहोय । बायुकी पिड़िका काली होय शरीर कांपै । मूतते समय शूल होय । पुरुष बिकल होजाय कफकी पिड़िका सुपेद अदरंगी शीतल होय बिलम्बसेपके । इनन लिखेहो यह सब लक्षण जिसमें होंय उसको सन्निपात की पीड़िका कहते हैं ॥

अथ पीड़िका का यत्न ॥

धव । काह्न । कदम्ब । बेर । शीशों । नीम इनके वक्कलका काढ़ा कर उसके पानी से उस पीड़िका को धोवै तौ पीड़िका अच्छी होय ॥ १ ॥

अथ इन्द्री के ऊपर राद पड़गई हो उसका यत्न ॥

काह्न । कदम्ब । इनका वक्कल और तेंदू की अतरछाल इन के काढ़े से धोवै तौ इन्द्री की राद अच्छी होय ॥ २

अथ इन्द्री के ऊपर वायु की पीड़िका होय उसका यत्न ॥

भांगरेकारस । तुलसीकापत्र । पटोलकापत्र । इन को कांजी से पीस लेप करै तौ पीड़िका जाय ॥ ३ ॥

अथ पित्त की पीड़िका का यत्न ।

मुलहटी । कूट । रक्तचन्दन । खस । रोहिष । गेरू । कमलगट्टा । ये दूध में पीस पित्त की फुनसियों के लेप करै तौ दाह जाय ॥ ४ ॥

अथ इन्द्री की फुनसी पकजाय उसका यत्न ॥

शीतल जल से १०० बार के धोये मक्खन का लेपकरै तौ उसका दाह दूरहोय ५ ॥ अथवा कदंब। काहू। दाडिम। खैर। आंवला इन के पत्तों को गरम जलसे पीस लेपकरै तौ फुनसियों की शान्तिजाय ॥ ६ ॥ अथवा। त्रिफले के पानी के धोने से दाह जाय ॥ ७ ॥ अथवा। कांजी। मट्ठा। शीतलजल। इन के धोने से दाहजाय ॥ ८ ॥ यह यत्न आत्रेय में लिखा है ॥

अथ रसरत्नाकर का यत्न ॥

कपास की सींगी भैंस के मट्ठे में ७ दिन खरल कर फिर उसमेंसे २ मासे नित्य खाय तौ लाला प्रमेह जाय ॥ १ ॥

अथ मूत्र प्रमेह का यत्न ॥

मारा हुआ पारा। बंग। अथवा। बंगेश्वर। सार। अभ्रक इन सबको बराबर ले सहत में एक दिन खरल करै फिर १ मासे सहत से नित्य खाय तौ बहु मूत्र प्रमेह जाय ॥ २ ॥ इति तालक रसः ॥ इस रसके लेने के पीछे पके गूलर के फलका २॥ टं० चूर्ण ऊपर से ले तौ बहु मूत्र प्रमेह जाय ॥ ३ ॥

अथवा। पंचवक्त्र रस २ मासे ले तौ मूत्रप्रमेह जाय ॥ ४ ॥ यह यत्न रसरत्नाकरमें हैं इति प्रमेह और प्रमेहपीड़का रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्णम् ॥ * ॥ ॥ * ॥ * ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज राजराजेन्द्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी
विरचिते अमृत सागर नाम ग्रंथे मूत्र कृच्छ्र मूत्राघात अश्मरी
शर्करा प्रमेह इन सब रोगों के भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षण
यत्न निरूपणं नाम द्वादशमङ्गः ॥ १२ ॥ * ॥

अथ मेद रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

बहुत ऐस आराम के करने और बैठे रहने दिनके सोने से और कफ कारी वस्तु, और मधुर अन्न घृत को आदि

जो चिकनी वस्तु के खाने से मेद बढ़ै है तब पुरुष कुछ काम नहीं करसक्ता क्योंकि और जो हाड़। मज्जा। वीर्य्य आदि धातु हैं वे मेद के बढ़ने से पुष्ट होंय नहीं और पुरुष निकम्मा होजाय ॥ १ ॥

अथ मेद के और दोष लिखते हैं ॥

जिसके मेदहोय उसके क्षुद्र। श्वास। तृषा। मोह। ये होंय कराहता सोवै शरीर में पीड़ा होय। छींक और पसीना आवै शरीर में दुर्गन्ध होय मैथुनकरने को सामार्थ्य होय नहीं ये मेद वाले के लक्षण हैं ॥

अथ मेद का स्थान ॥

प्राणीमात्र के उदर में मेद रहता है इसकारण मेद उदर को बढ़ावै और दीप्यमान करै है क्योंकि मेद करकै ढका है मार्ग जिसका ऐसो जो वायु सो कोष्ठही में विचर कर अग्नि को देदीप्तकर भोजनही की वासना रक्खे तब मनुष्य के बहुत खाने से अनेक भयंकर रोग बहुत दिनों में उत्पन्न होंय फिर उदर में रहती जो अग्नि और पवन उससे स्थलहुआ जो वह मेद वाला पुरुष उसको दग्ध करे ॥ फिर मेदके बहुत बढ़ने से पेटमें रहती जो बात पित्त। अग्नि। वह बहुत विकारों को उत्पन्न कर उस पुरुष को मारे है ॥

अथ स्थूल का लक्षण ॥

मेदमांस जब बहुत बढ़ैतब पुरुष के चूतड़। उदर स्तन बढ़ के थल २ हालै और पुरुष का बल। मांस। उत्साह जाता रहै उसको स्थूल कहते हैं पीछे स्थूल पुरुष के विसर्प भगन्दर। विषमज्वर। अतीसार। बवासीर। पामा आदि भयंकर और भी रोग होंय हैं ॥

अथ मेदवाले रोगी का तत्र।

पुराना चावल। मूंग। कुलत्थ। कोदों यह खाय और लिखना। बस्तिकर्म्म। खेद। चिन्ता। कुश्ती। मार्ग चलना सहत और जबका खाना। जागना। खारा रस। अरण्डके

पत्तों की तरकारी। हींग। चावल का माड़। इतनी वस्तु इस रोग वाले को खाना योग्य है॥ अथवा गिलोय। त्रिफला इनके काढ़े से मेद रोग जाय॥ १॥ अथवा गिलोय। त्रिफला। इनके काढ़े में सार औ सहत मिलाय पीवै तौ मेद रोग जाय २॥ अथवा गरम अन्न खाय चावल का माड़ पियै तौ मेद रोग जाय॥ ३॥ अथवा बासी ठंढे पानी में सहत डाल पीवै तौ मेद रोग जाय॥ ४॥ अथवा सोंठ। मिरच। पीपल। चित्रक। त्रिफला। नागरमोथा। वायबिड़ङ्ग। इनके काढ़े में गूगल डाल पीवै तौ यह रोग जाय॥ ५॥ अथवा पीपल। सहत से प्रति दिन खाय तौ मेद रोग जाय॥ ६॥ अथवा बड़वानल रस। पारा। तामेश्वर। सार। बीजाबोल। इन्हें बराबर ले महीन पीस कूटकर भांगरे के रस में ३ दिन खरल करै पीछे २ रत्ती प्रमाण प्रति दिन सहत से चाटै तौ मेद रोग जाय॥ ७॥ इति बड़वानल रसः॥

अथवा धतूरे के पत्तों के रसका मर्द्दन करै तौ मेद रोग जाय॥ ८॥ यह वैद्यरहस्य में है॥ अथवा चव्य। जीरा। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। भुनीहींग। कालानोन ये सब बराबर ले महीन पीस जवके सत्तू के साथ २॥ टंक प्रति दिन खाय तौ मेद रोग जाय॥ ९ यह चक्रदत्त में है अथवा वायबिडंग। सोंठ। जवाखार। पीपल। सार इन्हें महीन पीस उसमें १ टंक जव। और आंवला का चूर्ण मिलाय सहत से ले तौ यह रोग जाय॥ १०॥ अथवा बेरके पत्तों का कांजी के पानी में डाल और इसमें भारगी का रस और शिलाजीत डाल कर पिये तौ मेद रोग जाय॥ ११॥ अथवा गिलोय। इलायची। कुड़ाकी छाल। आमला। यह सब अनुक्रम से एक से एक अधिक ले और इन सब के बराबर गूगल ले इनको एक रस कर पीछे १। टंक सहत के साथ ले तौ मेद रोग और भगन्दर सब जांय॥ इति अमृत गूगल॥ १२॥ यह चक्रदत्त में है॥ अथवा त्रिफला। निसोत

मूर्व्वा । अतीस । चित्रक अडूसा । नीबका बक्कल । किरमालाकीगिरी । पीपलामूल । दोनों हल्दी । गिलोय । इन्द्रायण । पीपल । कूठ । सरसों । सोंठ ये सब बराबर ले इन का काढ़ा कर उसमें तुलसीका रस अनुमान माफिक डालै फिर इसमें तेल पकावै फिर इस तेल का मर्द्दन करै अथवा बदलदे बस्ति कर्म्म करै तौ मेद और कफके रोग दूर होंय ॥ १३ इति त्रिफलाद्यं तैलं ॥ यह चक्रदत्त में है ॥ इति मेद रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ देह में पसीने से दुर्गंधि आती होय उसका यत्न ॥

अडूसे के पत्तों के रसमें शंखका चूर्ण मिलाय लेप करै तौ शरीर की दुर्गंधि जाय १ ॥ अथवा बेलके पत्तों में शंख का चूर्ण मिलाय लेप करै तौ शरीर की दुर्गन्धि जाय ॥ २ ॥

अथ कांख में बास आती हो उसका यत्न ॥

नीबू के पत्तों के रसका लेपकरै तौ कांख की दुर्गन्धि जाय १ ॥ अथवा हल्दी को अधजलीकर पानीमें पीस कर लेपकरै तौ कांख की दुर्गन्धि जाय ॥ २ ॥ अथवा नागकेसर । सिरस का बक्कल । लोध । खस । हड़की छाल । इनको पानी में पीस उबटन करै तौ शरीर की दुर्गंधि जाय ॥ ३ ॥ अथवा बेरके पत्तों को जलमें महीन पीस शरीर के मर्द्दन कर स्नानकरै तौ शरीर की दुर्गंधि जाय ॥ ४ ॥ ये यत्न भाव प्रकास में लिखे हैं ॥

अथ शरीर की दुर्गन्धि दूर होने का उबटना ॥

ताम्बूल । हड़कीछाल । कूठ । इनको पानी में पीस शरीर के मर्द्दन करै तौ शरीर की दुर्गन्धि जाय ५ यह वृन्दमें है ॥

अथ स्त्री का अच्छा रंग करने का लेप ॥

हड़कीछाल । लोध । नीब के पत्ते । अनार का छिलका । आंब का बक्कल । इनको जलमें महीन पीस शरीर के लेप करै तौ शरीर की कान्ति होय ॥ ६ ॥ यह काशीनाथ पद्धति में लिखा है ॥

अथ कांख की दुर्गन्धि दूर करने का दूसरा यत्न ॥

कूठ । दोनों हल्दी । इन को गौके मूत्र अथवा गोबरमें पीस

लेप करे तौ कांखकी दुर्गन्धि जाय और इस्से कोढ़भी जाय ॥ ७ ॥ यह चक्र दत्तमें है ॥

अथ शरीर की दुर्गन्धि दूर होने का यत्न॥

कुलत्थ । कूठ । छारछबीला । चन्दन । भुनेजवकाचूर्ण । तज । बच इनको जलसे महीन पीस शरीर के लेप करै तौ शरीर की दुर्गन्धि जाय ८ ॥ यह सार्ङ्गधरमें है ॥

अथ कार्श्य रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

कार्श्य रोग को लौकिक में क्षीण कहते हैं बादी और रूखे अन्न के खाने से । लंघन । मैथुन । खेद । इन सबके करने से । भयसे । धनपुत्रादिक के नष्ट होने के शोच से इन कारणों से पुरुष के कार्श्य रोग उत्पन्न होता है ॥

अथ कार्श्य रोग का लक्षण ॥

कूला । उदर । कन्धे । ये सूख जांय । नसें निकल आवैं । हाड़ चमड़ा शरीर में बाकी रहिजाय । शरीर दुर्ब्बल हो जाय यह लक्षण होंय तौ क्षीणता का रोग मनुष्य के जानिये ॥

अथ मनुष्य अत्यन्त क्षीण पड़ जाय उसके इतने रोग होंय ॥

संग्रहणी । अफरा को आदिले और भी रोग होंय और बहुत से पुरुष देखने को दुर्ब्बल होते हैं उनके शरीर में मेद का भाग तौ थोड़ा और वीर्य्य का भाग बहुत होय वे मैथुन बहुत करैं और बंधेज भी बहुत रहैं और स्त्रियों के गर्भ स्थित करदें और कोई देखने में तौ शरीरके पुष्ट और बलहीन और मैथुनादिक में सामर्थ्य रहित उनको क्षीण कहते हैं उनके शरीर में मेदका भाग तौ बहुत और वीर्य का भाग थोड़ा होता है इससे उनको भी क्षीणही कहिये ॥

अथ कृश नाम क्षीणता का यत्न ॥

जितनी बलकारी और बन्धेज की औषधि हैं और जितने पुष्टकारी घृत दूध मांस आदिक पदार्थ हैं उनसे क्षीणता का रोग दूर होता है ॥ १ ॥ और इसके यत्न पुष्टाई के ग्रंथ की समाप्ति में लिखे हैं ॥

अथ क्षीणता का असाध्य लक्षण ॥

जिस पुरुष के स्वतः स्वभावसे क्षीणता और मन्दाग्नि होय और सदा शरीर दुर्बल रहै उसका यत्न नहीं है ॥ ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ इति कार्श्य नाम रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ उदर रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

सब उदर रोग ८ प्रकार के हैं सो वे मन्दाग्नि वाले पुरुष के निश्चय उत्पन्न होंय हैं और अजीर्ण से अनन्त रोग उपजें हैं ॥ ऐसी २ वस्तुओं के खाने से उदर रोग होता है और दोषों का समूह और मल और आम का संचय कोष्ट में होय तौ पुरुष के उदर रोग होता है ॥

अथ उदर रोग की उत्पत्ति ॥

कुपथ्य से संचय को प्राप्त हुआ जो बात पित्त कफ सो जलके लेचलने वाली नसों को रोकै है और हृदय की पवन अग्नि गुदा की पवन इनको बहुत दूषित कर ८ प्रकार के उदर रोग को उत्पन्न करै है ॥

अथ उदर रोग का सामान्य लक्षण ॥

पेट में अफरा होय चलने फिरने की सामर्थ्य जाती रहै शरीर दुर्बल होय। मन्दाग्नि होय। शरीर में सूजन और हाड़ों में हड़फूटन होय मल मूत्र अच्छे प्रकार उतरै नहीं शरीर में दाह होय ये लक्षण होंय तौ जानिये कि इसके उदर रोग है ॥

अथ आठ प्रकार के उदर रोग लिखते हैं

बात का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ फिया का ५ मल बन्ध होने का ६ चोट लगने का ७ जलोदर का ८ ॥

अथ वातोदर का लक्षण ॥

जिस पुरुषके पैर हाथ नाभिमें सूजन होय। कोख। पसली। कटि। पीठ। और सन्धि २ में पीड़ा होय रूखा खांसे। शरीर भारी रहै। मल उतरै नहीं। शरीर की त्वचा। नख। नेत्र

काले पड़ जांय। पेट में पीड़ा। और अफरा होय। पेट बोला करै ये लक्षण होंय तौ बात का विकार जानिये ॥ १ ॥

अथ पित्तोदर का लक्षण ॥

जिस में ज्वर। मूर्छा। दाह। तृषा। ये होंय मुख कडुवा रहै घुमेर अतीसार ये सब रोग होंय और शरीर की त्वचा पीली हरी होय। शरीर में पसीना आवै। और दाह होय। धुए का लिये डकार आवै। त्वचा का स्पर्श कोमल होय। त्वचा पकीसी होजाय ये जिसमें लक्षण होंय तिसके पित्तका उदर रोग जानिये ॥ २ ॥

अथ कफोदर रोग का लक्षण ॥

जिसके शरीर में पीड़ा होय। सोवै बहुत। सूजन होय शरीर भारी रहै। हिया दूखै। भोजन में अरुचि होय। देर में पचै। शरीर ठंढा रहै। और पेट बोला करै ये लक्षण जिसमें होंय उसे कफोदर कहिये ॥ ३ ॥ और जिसमें ये सब लक्षण मिले होंय उसे सन्निपात का उदर रोग कहिये ॥ ४ ॥

अथ दुष्योदर का लक्षण ॥

जिस पुरुष का शत्रु किसी प्रकार सिंह का नख अथवा मूछ का बाल और किसी दुष्ट जानवर का मल मूत्र रुधिर वीर्य्य अथवा जहर किसी में मिलाय वा अन्नपान में खिलाय दे उसको दूष्योदर उत्पन्न होता है सो उसके शरीर का रुधिर। बात। पित्त। कफ येसब कोपित होकर दूष्योदर सन्निपात का भयंकर उदर रोग को उत्पन्न करै है फिर वह उदर रोग वर्षाऋतु में कोपित होकर पुरुषको बहुत दुःखित कर मूर्छित करै मृत्यु तुल्य करदे उसको दूष्योदर कहिये ॥ ५ ॥

अथ प्लीहोदर अर्थात् फिया का लक्षण ॥

गरम वस्तु के खाने और गरम वस्तु के पीनेसे दुष्ट हुआ जो रुधिर सो कफ से प्लीह को बढावै है पीछे बढ़ा फिया बांई पसली में उदर के रोगों को उत्पन्न करै है इस्से पीड़ित

मनुष्य के मन्दाग्नि जीर्णज्वर होय बल जाता रहै ये लक्षण होंय तौ प्लीहोदर कहिये ॥ ६ ॥

अथ मलके बद्धगुदोदर का लक्षण ॥

जो पुरुष बिना सोधा अन्न खाय उसमें बाल। कांकर। रेत। धूल ये मिले होंय उसके दोषों को लिये मलका संचय होय तब वह पुरुष के कष्ट से थोड़ा गुदा के द्वारा मल उतरै और उस पुरुष का हृदय। नाभि बढ़ जाय उसको वैद्य बद्ध गुदोदर कहते हैं ॥ ७ ॥

अथ छतोदर का लक्षण ॥

जो पुरुष पाषाण को आदि ले रेत से मिला अन्न खाय उस पुरुष की आंतों को काटि अन्न जलके सदृश होकर गुदा के द्वारा निकलै और उसकी गुदा रात्रि दिन बहा करै और उसकी पेड़ू बढ़ै और पेड़ू में पीड़ा होय उसको छतोदर कहते हैं ॥ ८ ॥ छतोदर और बद्ध गुदोदर एकही हैं ॥

अथ जलोदर का लक्षण ॥

घृत को खाय बस्तिकर्म्म कराय जुलाब ले वमन करके सीतल जल जो पुरुष पिये उसको जलकी बहने वाली जो नसें सो दूषित हो और स्नेह करके लिपी जो वही नसें तिनमें जलोदर को उत्पन्न करै है और उस शीतल जलसे उत्पन्न हुआ जो जलोदर सो नाभि के ओर पास गोल और चिकना होय पानी की मसक समान बहुत बढ़ै तब मनुष्य उससे बहुत दुखी होय और उसका शरीर कांपै ये लक्षण होंय उसको जलोदर कहिये ९ ॥

ये सब आठों उदर रोग उत्पन्न होतेही कष्टसाध्य हैं और बलवान पुरुष के जलोदर तत्काल होय सो साध्य है ॥

अथ उदर रोगों का असाध्य लक्षण ॥

बद्ध गुदोदर होय तौ एक पक्ष उपरान्त असाध्य जानिये और जलोदर असाध्यही है ॥ अथवा पसुलियों में शूल चले

नेत्रों के ऊपर सूजन होय और इन्द्री बांकी होय और जिसके शरीर की त्वचा गलजाय शरीर का रुधिर मांस सब जाता रहै अग्निमन्द होजाय वह पुरुष असाध्य जानिये ॥

अथ पुनः असाध्य लक्षण ॥

पशुलियों में शूल चलै पशली टूटीसी होजाय अन्नसे रुचि जाती रहै शरीर में सूजन होय और अतीसार होय और उदर खाली होय भरासा दीखै तौ उदर रोग असाध्य जानिये ॥

अथ बातोदर का यत्न ॥

दशमूल के काढ़े में अरण्ड का तेल डाल पिये तौ बातोदर जाय ॥ १ ॥ अथवा त्रिफले के रसमें गोमूत्र डाल पीवै तौ बातोदर जाय २ ॥ अथवा कूट। दात्यूणी। जवाखार। पाढ़। काला नौन। सेंधानौन। साम्हर नौन। बच। सोंठ ये सब बराबर ले महीन पीस ५ ट० गरम जलसे ले तौ बातोदर जाय ॥ ३ ॥ इति कूटादि चूर्णम् ॥

अथवा इकड़िया लहसन १०० टके भर ले उसको पीस १६ सेर पानी में औटावै औटतेही में सोंठ १ ट० कालीमिरच १ ट० पीपल १ ट० सांठीकीजड़ १ ट० कालानौन १ ट० बिड़नौन १ ट० त्रिफला ३ ट० दात्यूणी १ ट० सहजनेका बक्कल १ ट० अजवायन १ ट० गजपीपल १ ट० निसोत ६ ट० इन्हें महीन पीस उस लहसनके काढ़े मे डालै और इसमें तेल २ सेर डाल मधुरी आंचसे पकावै जब सब रस और औषधि जलजांय तेल मात्र रह जाय तब उतार बासनमें भर राखै पीछे ५ टंक प्रातः काल अपनी अग्नि के माफिक पीवै तो सब उदर के रोग मूत्रकृच्छ्र। उदावर्त्त। अंत्रवृद्धि। पार्श्व शूल। आमशूल। अरुचि। क्रिया। अष्ठीला। हड़फूटन येसब बायुके रोग महीना भर सेवन करने से जांय ॥ ४ ॥

अथ पित्तोदर का यत्न ॥

जुलाब के लेने से पित्तोदर जाय ॥ ५ ॥

अथ कफोदर का यत्न ॥

निसोत का चूर्ण २॥ टं० ऊटनी के दूध में डाल और अरण्ड का तेल ५ टं० और पीपल। पीपलामूल। चित्रक ये सब औषध अधेले भर डाल उस दूध को एक महीने गरम कर पियै तौ कफोदर जाय ॥ ६ ॥

अथ सन्निपात के उदर रोग का यत्न ॥

सोंठ। त्रिफला। इनका काढ़ा कर उसमें दही और तेल अथवा घृत डाल पकावै पीछे उस तेल अथवा घृत को खाय तो सन्निपात का उदर रोग जाय ॥ ७ ॥ अथवा गरम दूध में अरंड का तेल और गोमूत्र डाल पीवै तो वायु का उदर रोग जाय ८ ॥ अथवा मट्ठे में कालानौन पीपल डाल पीवै तो वातोदर जाय ॥ ९ ॥ अथवा मिश्री। कालीमिरच ये जल से पीवे पितो त्तोदर जाय ॥ १० ॥ अथवा अजवायन। झाऊ की जड़। जीरा। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। इन को महीन पीस ५ टं० गरम पानी के साथ ले तौ कफोदर जाय ॥ ११ ॥ अथवा। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। जवाखार। सेंधानौन इन्हें महीन पीस ५ टं० गरम पानी से पिये तौ सन्निपात का उदर रोग जाय ११ ॥

अथ नारायण चूर्ण ॥

अजवाइन। झाऊ का बक्कल। धनिया। त्रिफला। पीपल। कालाजीरा। अजमोद। पीपलामूल। वाय विडंग ये सब बराबर ले और दात्यूणी एक औषधि के हिस्से से त्रिगुणित ले और निसोत एक औषधि के भाग से दूनी ले इन्द्रायण एक औषधि के भाग से दूनी ले थूहर का दूध सब से चौगुना ले इन सब को महीन पीस थूहर के दूध की १ पुट दे फिर सुखाय २॥ टं० गरम पानी से ले तौ उदर और वायु के रोगों को दूर करै और इसको बेर के बक्कल के काढ़े के साथ ले तौ वायु के रोगों को दूर करै और दारू से ले तौ अफरा जाय मठा से ले तौ बद्धकोष्ट जाय। दाड़िम के रस के

साथ लेतौ बवासीर जाय और गरम पानी से ले तौ अजीर्ण जाय और यह चूर्ण भगंदर। पाण्डु। खांसी। स्वास। क्षयी। संग्रहणी। कोढ़। मन्दाग्नि। और बिषमाच को दूर करै ॥ १३ ॥ जैसे भगवान का सुदर्शन चक्र दैत्यों को मारै वैसे ही यह नारायण चूर्ण रोगों को दूर करै है ॥ इति नारायण चूर्णम् ॥

अथवा थूहर का दूध। दात्यूणी। त्रिफला। वाय विड़ंग। कटेली। चित्रक। कूकर भांगरा। ये सब दो सेर ले और इससे चौगुना पानी डालै और सेर १ गौका घृत डालै मधुरी आंच से पकावै जब ये सब जल जांय और घृत मात्र रहजाय तब उतार पात्र में भर रक्खे फिर इस में से २॥ टं० ले तौ जुलाब लग जाय और उदर के रोगों को दूर करै ॥ १४ ॥ इति नाराच घृतम् ॥ अथवा सांठी की जड़। दारुहल्दी। पटोल। कुटकी। हड़की छाल नीमकीछाल। देवदारु। सोंठ। गिलोय। ये सब बराबर ले इनको जवकुट कर ५ टं० का काढ़ा प्रति दिन गोमूत्र और गूगुल डाल पिये तौ कफोदर पसली का शूल। स्वास। पाण्डु रोग ये सब जांय १५ ॥ इति पुनर्नवादि क्वाथ: ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा अजवाइन १४ टं० भुना सुहागा २ टं० इनका चूर्ण कर २। टं० गरम जलसे ले तौ उदर के सब रोग जांय ॥ १६ ॥ अथवा पीपल। ५ टं० ले और उसको थूहर के दूध में १७ दिन तक भिजो रक्खे फिर छाया में सुखाय महीन पीस ४ मासे जल से एक दिनके अन्तरसे ले और इसके ऊपर मट्ठा चावलखाय तौ उदर का रोग जाय ॥१७॥ इति उदरामयहरं चूर्णम् ॥ अथवा पीपल १००० ले उसमें थूहर के दूध की ७ पुट दे अथवा हड़के चूर्णमें थूहर के दूध की ७ पुटदे फिर उसमें से १। टं० गोमूत्र के साथले तौ सब उदरके रोग जांय ॥ १८ ॥

अथवा दात्यूणी। पीपल। सोंठ। ये सब बराबर ले और इन सब से दूना चूख ले और इनसे चौथाई विड़नोन

ले फिर इनको महीन पीस १ टं० गरमपानी से ले तौ फिया। गोला। मन्दाग्नि। पाण्डुरोग। उदररोग इन सबको दूर करै है ॥१९॥ अथवा आकके पत्तों में सेंधानोन डाल मटकी में भर उसके मुंहको बन्द कर फूंकदे फिर उसको पीस ५ टं० प्रति दिन मट्ठे से अथवा ग्वारके पट्ठे से ले तौ उदर के रोग जांय २० ॥ अथवा गुड़। और हड़। वा गुड़। और पीपल इनको २॥ टं० नित्य खाय तौ उदर रोग। सूजन। पीनस। खांसी। अरुचि। जीर्णज्वर। बवासीर। संग्रहणी। कफ। और वायु के रोग इन सब को यह दूर करै है २१ ये सब यत्न वैद्य रहस्य में हैं ॥

अथ जलोदर का यत्न ॥

नीलाथोथा। गन्धक। पीपल। हड़कीछाल। ये सब बराबर ले इनको महीन पीस थूहर के दूध में ५ दिन खरल करै फिर १ माशे प्रति दिन गरम जलसे ले तौ जलोदर रोग जाय और इसके ऊपर चावल खाय और अमिली का सरबत पिवे २२ ॥ इति उदरारिरसः॥ यह योगतरंगिणी में है ॥

अथवा सोंठ। कालीमिरच। पीपल। पांचौन। सज्जी ये सब बराबर ले इन सबकी बराबर थोथा जमालगोटा ले इन सब में दात्यूणी के रसकी ३ पुट दे फिर बिजौरे के रसकी ३ पुट दे खरल कर फिर छाया में सुखावै फिर आधरत्ती प्रमाण उसमें से खाय तौ उदररोग। फिया गोला। अफरा। शूल। बवासीर इन सबको दूर करै और इसके नेत्र में आंजनें से सर्पका विष दूर होता है २३ ॥ इति उदयभास्कर रसः ये रस, रत्न प्रदीप में है ॥ अथवा आकका दूध २ टकेभर कुड़ाकीछाल १ टं० थूहरका दूध ६ टं० निसोत १ टं० हड़कीछाल १ टं० कबीला १ टं० इन सबको महीन पीस इकट्ठा कर ५ सेर पानी में घृत समेत अग्नि के ऊपर चढ़ाय मधुरी आंचसे पकावै जब पानी आदि सब जल जांय और घृत मात्र रह जाय तब उतार बासन में भर रक्खे फिर इस घृतको जितनी बून्द खाय उत-

नेही दस्त जुलाब में आवैं तब उदररोग । सूजन । भगंदर । गोला इन सबको यह घृत दूर करै ॥ २४ ॥ इति बिन्दुघृतम् ॥ यह बैद्य बिनोद में है ॥ इति उदर रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी बिरचिते अमृतसागर नामग्रंथे मेद रोग । कार्श्य रोग । क्षीणरोग । उदररोग । आदि के भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणं नाम त्रयोदशस्तरङ्गः ॥ * ॥ * ॥

अथ शोथ नाम रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जो पुरुष वमन । विरेचन । और ज्वरादिक से अथवा लंघनादिक से दुर्ब्बल होय उसके खारी । खट्टी । तीखी । भारी वस्तु और दही और कच्ची । खोटी वस्तु । साक और विरुद्ध वस्तु । गेहूं के मैदाकी विष का मिला अन्न इनके खाने से । और ववासीर के रहने से । पेटमें आम होय । और जुलाब लेने से । और चोट के लगने से । कच्चे गर्भ के पड़ने से । जुलाबादि पांच कर्म करै उस में कुपथ्यके करने से उस दुर्ब्बल मनुष्य के शोथ का रोग होता है सो वह शोथ का रोग ९ प्रकार का है बात का १ पित्तका २ कफका ३ बात पित्तका ४ बात कफका ५ कफ पित्तका ६ सन्निपातका ७ चोट लगनेका ८ विषका ९ ॥

अथ शोथ का पूर्व्व रूप ॥

शरीर में बात रहै और तान कर सोने से नस में पीड़ा होय । शरीर भारी रहै । यह लक्षण होंय तो जानिये कि इसके शोथ का रोग होगा ॥

अथ शोथ का सामान्य लक्षण ॥

अपने कारण से दुष्ट हुए जो बात रक्त पित्त वे शरीर की जो बाहर की नसें उनमें कफ को प्राप्त कर शरीर की जो

त्वचा। मांस। उसके समूह को बहुत फुला दे हैं इस कारण से इसको शोथ का रोग कहते हैं सो वह शोघ का रोग शरीर को भारी करै और मनमें आवै नहीं होजाय और शोथमें उष्णता होय नसें निकल आवैं रोमांच होय शरीर का वर्ण और का और हो जाय ये लक्षण होंय तौ शोथ का रोग जानिये। अथवा कालो सूजन होजाय तौ वह सेकादिक करने से अच्छो होय और दिन में सूजन बहुत होय तौ बातकी सूजन कहिये ॥ १ ॥

अथ पित्त की सूजन का लक्षण ॥

शरीर की त्वचा कोमल और गन्ध युक्त पीली और ललाई लिये होय शरीर घूमे ज्वर होय पसीना बहुत आवै तृषा लगै मद हो शरीर का स्पर्श सुहावै नहीं नेत्र लाल होंय शरीर की त्वचा में दाह बहुत होय ये लक्षण होंय तो पित्त की सूजन जानिये ॥ २ ॥

अथ कफ की सूजन का लक्षण ॥

जिस सूजन में शरीर भारी रहै और त्वचा पीली होय नोंद अधिक आवे अग्निमन्द होय सूजन ऊंची नहीं होय भोजन से रुचि जाती रहै रात्रि में बढ़जाय ये लक्षण जिस में होंय उसे कफकी सूजन कहिये ॥ ३ ॥ और २ दोषों के जिस में लक्षण मिलें होंय उसे दो दोषों की सूजन कहिये ॥ ४ ॥ और जिस सूजन में सर्व दोषों के लक्षण मिलें उसको सन्निपात की सूजन कहिये ॥ ५ ॥

अथ चोट लगने से उपजी जो सूजन उसका लक्षण ॥

शस्त्रादिक के लगने से अथवा शीत पवन लगने से अथवा दही के खाने से अथवा भिलावा के लगने से अथवा कोंचलगने से अथवा विषीकन्द आदि के लगने से उपजी जो सूजन सो वह एक जगह की सूजन सब शरीर में फैल जाय और उस में दाह बहुत होय लाल हो आवै और पित्त के सर्वलक्षण सब में होय उसे शस्त्रादिक के लगनेकी सूजन जानिये ६ ॥

अथ विषैले जानवर से उपजी सूजन का लक्षण ॥

बिषैले जानवर के मूत्र के स्पर्श करने से अथवा दांत के लगने से अथवा दांत के काटने से नख के लगने से बिषैले जानवर के मल मूत्र वीर्य्य के स्पर्श करने से विष वृक्ष के पवन के स्पर्श करने से ज़हर के खाने से अथवा लगने से सूजन होय ॥

अथ इन सबका लक्षण ॥

जिस सूजन में पीड़ा बहुत होय शरीर में बहुत फैलै दाह होय तब जानिये यह विषकी सूजन है ॥ ७ ॥

अथ सूजन का उपद्रव ॥

स्वास तृषा छर्दि होय शरीर दुर्बल होजाय ज्वर होय भोजन से रुचि जाती रहै ये इसके उपद्रव हैं इस उपद्रव वाले का यत्न कीजिये नहीं ॥

अथ सूजन का कष्टसाध्य लक्षण ॥

पेड़ू से ले स्तनों तक सूजन होय तो कष्टसाध्य है और सर्व शरीर में होय वह असाध्य है ॥

अथ सूजन का पुनः असाध्य लक्षण ॥

पुरुष के तो प्रथम पैर से ले मुख के ऊपर तक सूजन चढ़ै स्त्री के प्रथम मुख के ऊपर होय पैर तक आवै वह असाध्य है इसका यत्न नहीं है और प्रथम पेड़ू में होय और फिर सर्वत्र फैलै दोनों को असाध्य जानिये ॥ १ ॥

अथ शोथ रोग अर्थात् सूजन का यत्न ॥

सोंठ। सांठी की जड़। अरण्ड की छाल। पीपल। पीपलामूल। चव्य। चित्रक। इनका काढ़ा ले तो वायु का शोथ जाय १॥ अथवा पटोल। त्रिफला। नीब की छाल। दारुहल्दी। इनका काढ़ा गूगल डाल ले तो पित्त की सूजन जाय और तृषा ज्वरको भी यह काढ़ा दूर करै है ॥ २ ॥

अथ कफकी सूजन का यत्न॥

पीपल अथवा हड़को थूहर के दूध में भिगोय ३ दिन पीछे

इन्हैं सुखाय महीन पीस २॥ टं० नित्य १० दिन ले तौ कफ और सन्निपात की सूजन जाय ॥ ३ ॥

अथ भिलावे की सूजन का यत्न ॥

तिल और गीली मट्टी भैंस के दूध में अथवा मक्खन में पीस लेप करै तौ भिलावा की सूजन दूर होय ॥ ४ ॥ अथवा मुलहटी कालातिल । भैंसका दूध इनको मक्खन में पीस लेप करै तो भिलावे की सूजन जाय ॥ ५ ॥ अथवा साल वृक्ष के पत्तों को पीस लेप करै तो भिलावे की सूजन जाय ॥ ६ और बिषकी सूजन का यत्न विषके प्रकरण में लिखैंगे ॥

अथ शोथ रोग का सामान्य यत्न ॥

हड़की छाल । हल्दी । भारंगी । गिलोय । चित्रक । दारु हल्दी । सांटी की जड़ । देवदारु । सोंठ । इनका काढ़ा लें तौ उदर । पैर । मुंह इन की सूजन तुरन्त दूर होय ॥ ७ ॥ इति पथ्यादि क्वाथः ॥

अथ पोते की सूजन का यत्न ॥

त्रिफले के काढ़े में गोमूत्र डाल पीवै तो पोतेकी सूजन जाय ८ ॥ अथवा विषखपरे की जड़ । देवदारु । सोंठ । इनके काढ़े से सूजन जाय ॥ ९ ॥ अथवा दात्यूणी । निसोत । सोंठ । कालीमिरच । पीपल । चित्रक । इनका काढ़ा ले तौ सूजन जाय ॥ १० ॥ अथवा सोना मक्खी । विषखपरा । नीवकी छाल । गोमूत्र इनका काढ़ा ले तो सूजन जाय ॥ ११ ॥ अथवा सांटी की जड़ । दारु हल्दी । सोंठी । सहजने की ज़ड़ । सरसों । इन्हैं कांजी के पानी में पीस गरम कर लेप करै तौ सब प्रकार की सूजन साच दूर होय ॥ १२ ॥ अथवा गुड़ । अदरक । वा गुड़ । सोंठ । अथवा गुड़ और हड़कीछाल । अथवा गुड़ । पीपल । इन्हैं महीन पीस २॥ टं० से १ टके भर तक नित्य बढ़ती १ महीने भर ले तो सूजन पीनस । कंठ रोग । स्वास । खांसी । अरुचि । जीर्णज्वर । बवासीर । संग्रहणी । कफ बायु के विकार इन सबको यह दूर करै ॥ १३ ॥

अथवा पीपल। सोंठको महीन पीस इनकी बराबर गुड़ मिलाय खाय तो सूजन आंव अजीर्ण शूल इनको दूर करै है॥ १४॥ अथवा गुड़ ३ टं० सोंठ ३ टं० पीपल ३टं० मंडूर १टं० तिल १ टं० इन सब को महीन पीस इनको एक जीव करै पीछे २॥ टं० प्रति दिन खाय तौ सर्व प्रकार की सूजन जाय॥ १५॥ अथवा सूखी मूली। सांटीकी जड़। दारुहल्दी रास्ना। सोंठ इनका काढ़ा कर काढ़े के रसमें तेल पकावे पीछे इस तेल का मर्द्दन करै तो शूल संयुक्त सूजन जाय॥ १६॥ ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं॥

अथ सूजन के दाह के दूर करने का लेप॥

बहेड़े की मींगी को पानी में पीस लेप करै तो सूजन का दाह दूर होय॥ १७॥ अथवा सांटीकी जड़। दारुहल्दी। गिलोय। पाढ़। सोंठ। गोखरू ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस २॥ टं० गोमूत्र से पीवै तो सर्व प्रकार की सब शरीर में फैली हुई सूजन और इसी आठ प्रकार के उदर रोग और व्रण मात्र जांय॥ इति पुनर्नवादि चूर्णम्॥

अथवा सांटी की जड़। हड़की छाल। नीबकी छाल। दारुहल्दी। कुटकी। परवर। गिलोय। सोंठ इनका काढ़ा कर गोमूत्र डाल पीवै तो सर्वाङ्ग शोथ। खांसी श्वास। उदर रोग पांडु रोग इन सबको यह दूर करै है॥ १८॥ इति पुनर्नवादि क्वाथः॥ इति शोथनाम सूजनरोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ अंड वृद्धि रोगकी उत्पति लक्षण यत्न॥

अण्ड वृद्धि ६ प्रकार की है॥ बायु की १ पित्त की २ कफकी ३ रुधिर की ४ मेदकी ५ मूत्र की ६ अंत्र वृद्धि एक प्रकार की बायु की॥

अथ अंड वृद्धि का सामान्य लक्षण॥

अधोगामी जो पवन सो अपनेही कारण से कुपित होय अंड कोश में और जांघों की संधियों में प्राप्त हो उन में ही

बिचरती हुई सूजन और शूल को करै और पीछे उन दोनों अंडकोश और उनकी खाल के भंडारे को बहने वाली जो नसैं तिन में वह दुष्ट पवन प्राप्त हो उन नसों को पीड़ित करै और उन दोनों अंड कोश और उनके भंडारों को बढ़ाय दे है उसे वैद्य अंड वृद्धि कहै हैं ॥

अथ वायु की अंड वृद्धि का लक्षण ॥

बायु करके भरी जैसी लुहार की धमनी उसका सा स्पर्श होय और रूखी होय और बिना कारण ही उसमें पीड़ा होय उसको बायु की अंड वृद्धि कहिये ॥ १ ॥

अथ पित्त की अंड वृद्धि का लक्षण ॥

जिसका रंग पके गूलर के फल के समान होय और जिस में दाह और पाक होय उसे पित्त की अंड वृद्धि कहिये ॥ २ ॥

अथ कफ की अंड वृद्धि का लक्षण ॥

जो अंड वृद्धि शीतल भारी चिकनी होय और उसमें खुजली चलै कड़ी होय और उसमें पीड़ा थोड़ी होय तो कफ की अंड वृद्धि जानिये ॥ ३ ॥

अथ रुधिर के दोष की अंड वृद्धि का लक्षण ॥

काली होय फोड़े जिस में बहुत होंय और पित्त की अंड वृद्धिके लक्षण मिलें उसे रक्त दोष की अंड वृद्धि कहिये ॥ ४ ॥

अथ मेद की अंड वृद्धि का लक्षण ॥

सब कफके से जिसमें लक्षण होंय और कोमल ताड़ के फल सदृश होय उसे मेदकी अंड वृद्धि कहिये ॥ ५ ॥

अथ मूत्र रोकने की अंड वृद्धि का लक्षण ।

जो पुरुष मूत्र के बेगको रोकै और मार्ग चले उसके मशक के सदृश कोमल अंड कोश बढ़ैं और उसमें पीड़ा होय और मूत्र कष्ट से उतरै उसे मूत्र रोकने की अंड वृद्धि कहिये ॥ ६ ॥

अथ अंत्र वृद्धि की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जिन वस्तुओं से बायु कोप को प्राप्त होय ऐसा तो भोजन

कर और शीतल जलमें स्नान करै मल मूत्र के वेग को रोकै युद्ध में रहै भारको उठावै मार्ग चलै अंगों को तोड़ै और कोई भयंकर वस्तु को करै इन कारणों से पवन संकुचित होय शरीर की छोटी आंतों के अवयवों को अपने स्थान से नीचे प्राप्त कर पेडू और जांघकी संधि में अफरा करै पीछे मनुष्य अंड कोश को हाथ से भीचे तब वह अंड कोश बोलि के अपने स्थान में बैठ जाय और फिर किसी तरह अफरा होय तब बाहर निकल आवे और जिस पुरुष के बायु का संचय बहुत होय उसके आंतों का अवयव मिलि अंत्र वृद्धि को करै है। वह अंत्र वृद्धि बायु की वृद्धि के तुल्य है यह रोग असाध्य है ॥ १ ॥

अथ अंड वृद्धि का यत्न ।

दूध में अरंड का तेल डाल १ महीने तक पीवै तौ बायु की अंड वृद्धि जाय ॥ १ ॥ अथवा गूगल अरंड का तेल ये दोनों गोमूत्रमें मिलाय पीवै तौ पित्तकी अंड वृद्धि जाय ॥ २ ॥ अथवा रक्तचंदन । महुआ । कमलगट्टा । खस । कमल की जड़ । ये सब बराबर ले पीछे इन्हें दूध में महीन पीस अंड कोश में लेप करै तो पित्त की अंड वृद्धि दाह पीड़ा इनको यह लेप दूर करैहै ॥ २ ॥ अथवा सोंठ । कालीमिरच । पीपल । त्रिफला । इनका काढ़ा ले उसमें जवाखार । सेंधानोन । डाल पीवै तो कफकी अंड वृद्धि जाय ॥४॥ अथवारूखी कड़वी तूंबी का सुहाता २ लेप करै और अरंड के पानी का तरेड़ा दे तो सर्व प्रकार की अंड वृद्धि जाय ॥ ५ ॥ अथवा बारंबार जोंक लगाय कै उस जगह का रुधिर कढ़वाया करै तो रक्त के कोप की अंड वृद्धि जाय ॥ ६ ॥ अथवा जुलाबसे रक्त की अंड वृद्धि जाय ॥ ७ ॥ अथवा मिश्री । सहत पानीमें मिलाय पीवै तो रक्त के कोपकी अंडवृद्धि जाय ॥ ८ ॥ अथवा शीतल द्रव्य के लेप से रक्त और पित्त की अंड वृद्धि जाय ॥९॥ अथवा तुलसी के पत्तों को सिझाय इसका सुहावता लेपकरै तो मेदकी अंड वृद्धि जाय ॥ १० ॥

अथ गोसा उतर गया होय उसका यत्न ॥

भेड़का घृत कांसी की थाली में मथै उस में राल मिलावै पीछे और मथै फिर थोड़ा सिंगी मुहरा मिलावै फिर इस का गोसे के मर्दन करै तो गोसा अच्छा होजाय ॥ ११ ॥

अथ अंड वृद्धि की औषधि ॥

खैर का गूदा १५टं० वच १० टं० सोंठ १५ टं० गौका दूध ८ पैसे भर इन में सालव मिश्री ८ पैसेभर मिलाय ४ टं० नित्य २१ दिन तक अंडों के लेप करै तो अंड वृद्धि जाय ॥ १२ ॥ अथवा अंडों की सीमनि को पशुलयों के नीचे महीन शस्त्र से बेधै तो मूत्र की अंड वृद्धि जाय ॥ १३ ॥ ये सर्व यत्न भावप्रकाशमें हैं ॥ अथवा रास्ना। मुलहटी। गिलोय। अरंड की जड़। किरमाला की गिरी। गोखुरू। पटोल। अडूसा। इनका काढ़ा कर अरण्ड का तेल डाल पीवै तौ अंड वृद्धि जाय ॥ १४ ॥ अथवा हड़कीछाल। चिरायता। धनियां। ये सब पैसे भर लवंग पौन पैसे भर सोना मक्खी १ टं० इन सबकी बराबर मिश्री ले और मिश्री की बराबर सहत मिलाय प्रति दिन २॥ टं० खाय तौ निश्चय अंड वृद्धि जाय ॥ १५ ॥ यह वैद्यरहस्य में लिखा है ॥ इति अंड वृद्धि अंत्रवृद्धि की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ बध्म रोग जिसे लौकिक में बद कहें हैं उसकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

बहुत भारी और कफ कारी वस्तु खाय अथवाभारी अथवा पित्तकारी मांस खाय मिथ्या विहार स्त्री संगादिक से कुपित हुई जो पित्त संयुक्त वायु सो पेडू और जांघों की संधि में सूजन को लिये गांठ को उत्पन्न करै है और वह गांठ ज्वर शूल को करै और अंगों में पीड़ा करै है उसको वैद्य बध अथवा बद कहें हैं ॥

अथ बद का यत्न ॥

हड़की छाल। पीपल। सेंधानौन। ये सब बराबर ले महीन पीस इन्हैं अरण्ड के तेल में भूनै पीछे २। टंक इस

में से खाय तौ बद रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा जीरा । आक वृक्ष का बक्कल । कूठ । गेहूं । बेर के पत्ते । इन्हैं कांजी के पानी में महीन पीस बद के लेप करै तौ बद का रोग जाय ॥ २ ॥ यह भावप्रकाश में है ॥ अथवा तत्काल का मारा जो कागला उसके भीतर का मल ले उसे थोड़ा गरम कर बद के बाँधै अथवा लेप करै तौ तत्काल बद अच्छी होय ॥ ३ ॥ यह वैद्य रहस्य में है ॥ अथवा कुंदुरू को सेंड़ के दूध में पीस लेप करै तौ बद अच्छी होय ॥ ४ ॥ इति बद रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ गलगंड १ गंडमाला २ अपची ३ ग्रंथि ४ अर्बुद ५ इन सब रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जिस पुरुष के गले में अंडशी सी कठोर सूजन होय लटके और बड़ी होय अथवा छोटी उसे वैद्य गलगंड रोग कहैं हैं ॥

अथ गलगंड का सामान्य लक्षण ॥

वायु और कफ ये दोनों गले में दुष्ट होंय और गले के बीच मेद को पकड़ शनैः शनैः अंड की तरह अपने चिन्ह को लिये लिच पिचाय देय हैं उसे गलगंड कहिये सो गलगंड ३ प्रकार का है वात का १ कफ २ मेद का ॥ ३ ॥

अथ वायु के गलगंड का लक्षण ॥

जिसमें पीड़ा बहुत होय और गले की नसें काली होंय अथवा लाल होंय और उसमें कठोरता होय और देर से बढ़ै और पकै नहीं और कुछ विरस हो जाय और उसका तालू और गला सूखै ये लक्षण जिसमें होंय उसे वायु का गलगंड कहिये ॥ १ ॥

अथ कफ के गल गंड का लक्षण ॥

गले में अंडकोश की भांति लटकती हुई सूजन स्थिर रहै और भारी होय । उसमें खुजली बहुत होय और वह शीतल होय । देर से बढ़ै और देर से पकै उसमें पीड़ा

कम होय। और उसका मुख मीठा होय तालू और गला कफसे लिपासा रहै उसे कफ का गलगंड कहिये ॥ २ ॥

अथ मेद के गलगंड का लक्षण ॥

जो गलगंड चिकना कोमल पीला होय और उसमें खुजली और पीड़ा होय। और गलेमें घिया की भांति लटके उस की जड़ थोड़ी होय। और रोगी की देह के अनुमान माफिक घटै बढ़ै और उसका मुख चिकना होय वह गले में ही बोले ये लक्षण होंय तौ उसको मेद का गलगंड कहिये ॥ ३ ॥

अथ गलगंड का असाध्य लक्षण ॥

जिसके स्वास कठिनतासे आवै और सब शरीर कोमल होय स्वर अच्छा निकले नहीं। और वह १ वर्ष नांघि जाय भोजन से रुचि जाती रहै। और शरीर क्षीण पड़ जाय। तौ वह गलगंड वाला मरजाय ॥ ४ ॥

अथ कंठमाला का लक्षण ॥

जिसके गले में अथवा कांख में अथवा कंधों में अथवा पेड और जांघों की संधि २ में बेर अथवा आंवले के प्रमाण मेद कफ की बहुतसी गांठ पड़ जांय उसे बैद्य गंडमाला का रोग कहैं हैं ॥ ५ ॥

अथ अपची का लक्षण ॥

और जो वही गंडमाला बहुत दिनों की होजाय और उसमें ये लक्षण होंय कि गांठ पकि जाय और बहने लग जाय बहुत बढ़ जाय उसे अपची कहिये ॥ ६ ॥

अथ अपची का असाध्य लक्षण ॥

पसली में शूल होय। खांसी। ज्वर। और बमन होय ये लक्षण होंय तौ असाध्य जानिये ॥ ७ ॥

अथ ग्रंथि जिसे गांठि कहैं हैं उसका लक्षण ॥

बात पित्त कफ ये रुधिर मांस मेद और नसों को दूषित करैं और गोल ऊंची सूजन को लिये गांठ को पैदा करै है

उसे वैद्य ग्रंथिरोग कहैं हैं ॥ सो यह गांठें ५ प्रकार की हैं बायु की १ पित्त की २ कफ की ३ मेद की ४ नसों की ५ ॥

अथ बायु की गांठ का लक्षण ॥

प्रथम वह गांठ त्वचा को खैंच कर बड़ी होय पीछे उस में चटके चलें व्यथा बहुत होय और जब वह फूटे तब निर्मल रुधिर निकले ॥ १ ॥

अथ पित्त की गांठ का लक्षण ॥

जिसमें आग सी बले और खिचाव और जलन अधिक होय लाल अथवा पीला जिसका रंग होय और जो फूटै तौ उसमें से बहुत बुरा रुधिर निकलै उसे पित्त की गांठ कहिये ॥ २ ॥

अथ कफ की गांठ का लक्षण ॥

वह गांठ शीतल होय और उसका वर्ण आरसी सा होय थोड़ी पीड़ा होय खुजली जिसके बहुत होय पत्थर के सदृश गांठ होय देरमें बढ़े और वह फूटै और भदरंगी राद और रुधिर निकले ये लक्षण होंय तो कफकी गांठ कहिये ॥ २ ॥

अथ मेद की गांठ का लक्षण ॥

शरीर के सदृश वह गांठ बढ़े घटे और चिकनी होय और बड़ी होय और उस में खुजली चले पीड़ा बहुत होय और जब वह फूटै तब खल और घृत के सदृश मल निकलै उसे मेदकी गांठ कहिये ॥ ३ ॥

अथ नसों की गांठ का लक्षण ॥

वह गांठ निर्बल पुरुष के खेद से उपजे नसोंको संकोचित करै बायुकी गांठ को उपजावै ऊंची और गोल होय और उस में पीड़ा होय और कोमल होय अथवा कड़ी होय पीड़ा भी नहीं होय और वह गांठ मर्मस्थान में होय तो निश्चय असाध्य है या कष्ट साध्य है ॥ ४ ॥

अथ मर्मस्थान लिखते हैं ॥

गला माथ कन्धे शरीर की संधि हृदय गुदा का निकट पीठ ये मर्मस्थान हैं ॥

अथ अर्बुद रोग की उत्पत्ति ।

जो पुरुष मांस बहुत खाता होय और अन्नादिक थोड़ा खाय उसके वायु पित्त कफ दुष्ट होय रुधिर और मांस को बिगाड़ उसके शरीर में अथवा शरीर के एक देश में बड़ी गोल स्थिर जिसमें थोड़ी पीड़ा होय और जिसकी जड़ थोड़ी देरसे बढ़ै पकै नहीं ऐसी मांस की गांठको करै उसको बैद्य अर्बुद रोग कहैं हैं सो वह अर्बुद रोग २ प्रकारकाहै ॥ एक तो रक्तार्बुद २ माँसार्बुद ॥

अथ रक्तार्बुद का लक्षण ॥

अपने कारण से दुष्ट हुआ जो पित्त सो रुधिर और नसोंको संकुचित कर उन में पीड़ा कर और उनके मांस का पिंडकर मांस के अंकुरों से उसको ढकै और बढ़ावै पीछे उसे कुछेक पकाय रुधिर संयुक्त निरंतर बहुत बहावै उसे रुधिर का अर्बुद कहिये यह असाध्य है रक्तका नाश होने से यह शरीर में और उपद्रव। पांडु रोग आदि को करै है इसे रक्तार्बुद कहिये ॥ १ ॥

अथ मांसार्बुद की उत्पति संयुक्त लक्षण ॥

जिस पुरुष को मूका घूंसा को आदि लै किसी तरहकी शरीर में चोट लगै उस जगह का मांस दुष्ट होकर उस जगह सूजन करै और उस सूजन में पीड़ा नहीं होय और उस सूजन का देहके वर्ण सदृश रंग होय चिकनी होय पकै नहीं पत्थर के सदृश कठोर और स्थिर होय उसे मांसार्बुद कहिये यह भी असाध्यहै ॥२ ॥

अथ अध्यर्बुद का लक्षण ॥

जो अर्बुद मर्मस्थान में उपजे अथवा नसों में उपजे और वह छोटी भी होय उसे अध्यर्बुद कहिये ॥ ३ ॥

अथ अर्बुद रोग पकै नहीं उसका कारण ॥

यह कफ और मेद के अधिक पने से पकै नहीं इसीसे यह असाध्य है ॥ ४ ॥

अथ गलगंड को आदिले कहे हुए रोगों का अनुक्रम से यत्न ॥

सरसों। सहजने के बीज। सनके बीज। अलसी। जव। मूली के बीज। इन्हें बराबर ले खट्टे मट्ठे में महीन पीस लेप करै तो गलगंड गंडमाला गांठ इन सब रोगों को तत्काल दूर करै १ अथवा सरसों। गलकुंभी की राख। इन दोनों को तेल में पीस लेपकरै तो गलगंड जाय॥ २॥ अथवा शंखाहूली को जल से पीस छान प्रात समय १५ दिन पीवै ऊपर से बहुत सा गौका घृत खाय तो गलगंड रोग जाय॥ ३॥ अथवा कुटकी को महीन पीस उसको पके घिया के फल में रात्रि में भिगोय राखे पीछे उसी जलसे उसे महीन पीस छान ७ दिन पीवे तो गलगंड रोग जाय॥ ४॥ अथवा। गिलोय। नीमकी छाल। कूड़। तुनकीछाल। पीपल। दोनों खरैटी। देवदारु। ये सब बराबर ले इनके काढ़े के रसमें तेल पकावै पीछे इस तेल को ५ टं० नित्य १५ दिन पीवै तो गलगंड जाय॥ ५॥ इति अमृतादि तैलं॥

अथवा जव मूंग पटोल कड़वी वस्तु रूखा अन्न वमन रुधिर का कढ़ाना ये सब गलगंड को अच्छे हैं॥ ६॥ अथवा जलकुंभी। सेंधानोन। पीपल। इन्हें महीन पीस प्रात समय सोंठ डाल पीवै तौ गंडमाला जाय॥ ७॥ अथवा बरना की जड़के काढ़े में सहत डाल पीवैतौ गंडमाला जाय॥ ८॥ अथवा कचनार का बक्कल ५ टकेभर सोंठि १ टं० पीपल १ टं० मिरच १ टं० हड़की छाल ५ टं० बहेड़े की छाल ५ टं० आंवला ५ टं० बरणा कीछाल २॥ टं० तज १ टं० पत्रज १ टं० इलायची १ टं० इन्हें महीन पीस इन की बराबर इन में सोधा गूगल मिलाय सब को एक रस कर ४ मासे प्रभातही जलसे नित्य ले तौ गलगंड अर्बुद गांठ गोला कोढ़, भगंदर पृथक् २ अनेपानसे इन रोगों को यह दूर करै है॥ ९॥ इति कांचनार गूगल।

अथवा वायबिड़ंग की जड़ का काढ़ा कर उस में जल भांगरे का रस डाल पीछे अनुमान माफिक तेल डालमधुरे

आंच से पकावै जब रस जलजाय तेल मात्र रहजाय तब इस में सिंदूर डाल उतार ले पीछे इस का लेप करै तौ कंठमाला जाय॥ १० ॥ इति चक्रमर्द तैलं॥

अथवा। बिरमिटी का पंचांग ले जल में महीन पीस अनुमान माफिक उस में तेल डाल। मधुरी आंच में पकावै जब रस जलजाय तेल मात्र रहै तब इस का मर्दन करै तौ कंठमाला जाय॥ ११ ॥ इति गुंजा तैलं ॥

अथ अपची का यत्न ॥

सरसों। नींब के पत्ते। भिलावा। इन्हैं काली बकरी के मूत्र में महीन पीस लेप करै तौ अपची जाय॥ १२ ॥ अथवा रक्त चन्दन। हडकोछाल। लाख। बच। कुटकी। इन्हें पानी में पीस इस पानी में तेल पकावै पीछे इसका मर्दन करै तो अपची रोग जाय॥ १३ ॥ इति चन्दनादि तैलं ॥

अथवा। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। बाय विड़ंग महुआ। सेंधानोन। देवदारु। इन्हैं पानी से महीन पीस इसमें तेल डाल मधुरी आंचसे पकावै जब पानी जल जाय तेलमात्र रह जाय तब इस तेल की नास ले तो अपची जाय ॥ १४ ॥ इति सुंठ्यादि तैलं ॥

अथ गांठि का यत्न ॥

मूली का खार शंख का चूर्ण इन्हैं पानी में पीस लेप करै तो गांठि अर्बुद इनको दूर करै है॥ १५ ॥ और जात्यादि घृत आगे व्रण रोग में कहा है उस्से गांठि आदि व्रणमात्र सब जांय॥

अथ अर्बुद रोग का यत्न॥

हलदी। लोध। पतंग। धमासा। मैनसिल। इन्हैं सहत में महीन पीस लेप करै तो मेदका अर्बुद रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा मूली का खार। हल्दी। शंख का चूर्ण। इन्हैं जलमें महीन पीस लेप करै तो अर्बुद जाय ॥ २ ॥ अथवा कूठ। खारी नौन। बड़का दूध। इन्हैं महीन पीस लेप करै और ऊपर

वड़के पत्ते ७ दिन बांधे तो अर्बुद जाय ॥ ३ ॥ अथवा सहजने की जड़। और सहजने के बीज। सरसों। तुलसी के पत्ते लो। कनेर का बक्कल। इन्द्रजव। ये सब बराबर ले पीछे मट्ठे से महीन पीस लेप करै तो अर्बुद जाय ॥ ४ ॥ ये सब भाव प्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा लाल अरंड की जड़। कोले की जड़। इन दोनों को चांवल के पानी में पीस लेप करै तो गलगंड जाय ॥ ५ ॥ अथवा किरमाला की जड़। चावल के पानी में पीस लेप करै तो कंठमाला जाय ॥ ६ ॥ अथवा सम्हालू की जड़ जल से पीस लेप करै तो कंठमाला जाय ७ ॥ अथवा सरसों। शूकर की विष्टा। इन्हैं बराबर ले पीछे कड़ुआ तेल मिलाय महीन पीस ठिकरे में धरै फिर लेप करै तो कंठमाला जाय ॥ ८ ॥ ये सब यत्न वैद्य रहस्य में लिखे है ॥ इति गलगंड गंडमाला अपची अर्बुद रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्ण ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंहजी
विरचिते अमृतसागर नाम ग्रंथे शोथ रोग अण्डवृद्धि अंत्र वृद्धि ब्रध्न
नाम बद गलगंड कंठमाला अपची ग्रंथि नाम गांठि अर्बुद
इन सब रोगों के भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षण यत्न निरू
पणं नाम चतुर्दशस्तरङ्गः ॥ १४ ॥ ॥ * ॥ * ॥

अथ श्लीपद रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जिसके पेडू और जांघों की सन्धि में बहुत सूजन होय और बैठे पीड़ा बहुत करै और वह पीड़ा ज्वर को करै पीछे वह सूजन उस जगह से बढ़ के क्रम से पैर तक आवै इसे वैद्य श्लीपद कहै हैं और कई एक आचार्य्य हाथ कान आंखे ओष्ट नाक इनमें भी सूजन होय तो उसे भी श्लीपद कहै हैं ॥ सो श्लीपद रोग ४ प्रकार का है वायु का १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ॥ ४ ॥

अथ वायु के श्लीपद का लक्षण ॥

काला और रूखा होकर फटि जाय और जिसमें पीड़ा बहुत और ज्वर होय ॥ १

अथ पित्त के श्लीपद का लक्षण ॥

पीला जिस का रंग होय और दाह ज्वर को लिये होय कोमल जिसका स्पर्श होय उसे पित्तका श्लीपद जानिये ॥ २

अथ कफ के श्लीपद का लक्षण ॥

चिकना पीला और स्थिर होय सुपेदाई लिये होय तो कफका जानिये ये तीनों श्लीपद कफकी आधिक्यता से उत्पन्न होय हैं क्योंकि बिना कफ भारीपन और बड़ापन नहीं होता ॥ ३ ॥

अथ सन्निपात के श्लीपद का लक्षण ॥

जिस श्लीपद में छिद्र बहुत होंयटपकने लगजाय और बांबी की तरह होय वह श्लीपद सन्निपात का जानिये वह असाध्यहै ४ ॥

अथ श्लीपद का यत्न ॥

इस रोग वाले को लंघन । लेप । स्वेद । जुलाब रुधिर का कढ़ाना गरम वस्तु का खाना ये सब अच्छे हैं ॥ १ ॥ अथवा सरसों । सहजने की जड़ । देवदारु । सोंठि । इन्हें गोमूत्र में पीस लेप करै तो श्लीपद जाय ॥ २ ॥ अथवा सांटी की जड़ । सोंठ । सरसों । इन्हें कांजीमें पीस लेप करै तो श्लीपद जाय ३ ॥ अथवा धतूरे की जड़ । अरंड कीजड़ । सम्हालू की जड़ । सांटी की जड़ । सहजने की जड़ । सरसों इन्हें पानी में महीन पीस लेप करै तो श्लीपद जाय ४ ॥ अथवा सहदेई को तालफल के रस में पीस लेप करै तो श्लीपद जाय ५ अथवा साखोटक वृक्षके बक्कल के काढ़े में गोमूत्र डाल पीवै तो श्लीपद जाय ॥ ६ ॥ अथवा हल्दी और गुड़ ये दोनों बराबर ले महीन पीस एक रस कर गोमूत्र से पीवै तो श्लीपद दाह कोढ़ इनको दूर करै है ७ ॥

अथवा सांटी की जड़। त्रिफला। पीपल। ये सब बराबर ले महीन पीस २॥ टं० सहतसे लेतो बहुत दिनों का भी श्लीपद जाय ॥ ८॥ अथवा बड़ी हड़के चूर्ण में अरंड का तेल मिलाय उसमें गोमूत्र डाल १५ दिन पीवे तो श्लीपद जाय ॥ ९ ॥ ये सब यत्न भाव प्रकाश में है ॥ अथवा भद्रायरा पीपल। सोंठ। कालीमिरच। बायबिडंग। इन्हें पानी में महीन पीस पीछे अनुमान माफिक तेल मिलाय मधुरी आंचसे पकावै जब पानी जलजाय तेलमात्र रहजाय तब उतार ले पीछे इसका मर्द्दन करै तो श्लीपद रोग जाय ॥ १० ॥ अथवा धतूरे के बीजों को एकसे बढ़ता बीस तक खाय उसके ऊपर शीतल जल पीवे तो श्लीपद जाय ॥ ११ ॥ ये सब भाव प्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा मंजीठ । महुआ । रास्ना । जाल सांटीकी जड़। इन्हें कांजी में महीन पीस लेप करे तो पित्तका श्लीपद जाय ॥ १२ ॥ अथवा अंगूठे के ऊपर की नसों का रुधिर कढ़ावै तो पित्तका श्लीपद जाय ॥ १३ ॥ अथवा कसोंधी की जड़ २॥ टं० ले गऊके घृत के साथ पीवे तो श्लीपद जाय ॥ १४ ॥ अथवा पीपल। त्रिफला। देवदारु। इन्हे महीन पीस २॥ टं नित्य कांजी के पानी में ले तो श्लीपद अजीर्ण वायु के रोग फिया इन सब रोगों को यह दूर कर भूख को बहुत बढ़ावै है १५ ॥ इति पिप्पल्यादि चूर्ण ॥ यह वृन्द में हैं इति श्लीपद रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ विद्रधि रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

हाड़ों में रहती जो वायु पित्त कफ सो शरीर की त्वचा रुधिर मांस मेद इन्हें बिगाड़ शनैः पुरुष के भयंकर सूजन को पैदा करै है वह सूजन गोल होय और पीड़ा को लिये होय और बहुत गहरी और बड़ी होय ये जिस में लक्षण होय उसे वैद्य विद्रधि रोग कहते हैं सो रोग ६ प्रकार का है वायु का १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ चोट लगनेका ५ रक्तविद्रधि ६ ॥

अथ बायुकी बिद्रधि का लक्षण ॥

वह सूजन काली अथवा लाल होय ज्वर एक में थोड़ी होय और उठते ही पकने लगि जाय ये लक्षण होंय तौ बायु की बिद्रधि कहिये ॥ १ ॥

अथ पित्तकी बिद्रधि का लक्षण ॥

वह सूजन पके पर गूलर के फल सदृश होय और काली होय ज्वर दाह को लिये होय और वह तुरन्त पकि जाय ये लक्षण होंय तो पित्तकी बिद्रधि कहिये ॥ २ ॥

अथ कफकी बिद्रधि का लक्षण ॥

पाडु वर्ण होय शीतल और चिकनी हो और जिसमें पीड़ा थोड़ी होय बहुत दिनों में पके उसको कफकी बिद्रधि जानिये ॥ ३ ॥

अथ सन्निपात की बिद्रधि का लक्षण ॥

जिस सूजन में नाना प्रकार के वर्ण और जिस में नाना प्रकार के स्राव और वह सूजन गलाकी घाँटी के निकट होय और बिषम होय कभी तो घटे कभी बढ़े बड़ी होय और उसका पकना बिषम होय कभी तो जल्दी पके कभी देर से पके तो सन्निपात की बिद्रधि जानिये ॥ ४ ॥

अथ चोट लगने की बिद्रधि का लक्षण ॥

जिस स्थान में चोट लगै वहां जो बायु सो पित्त संयुक्त हो रुधिर को बिगाड़ै पीछे उस स्थानमें सूजनको करै और ज्वर तृषा दाह होय और उस बिद्रधि में पित्त के भी लक्षण मिले होंय उसको चोट लगने की बिद्रधि कहिये ॥ ५ ॥

अथ रक्त बिद्रधि का लक्षण ॥

सूजन काली होय और उसमें फोड़े बहुत होंय और पीड़ा दाह ज्वर ये भी हों और पित्त की बिद्रधि के जिस में सर्व लक्षण मिलें उसको रक्तकी बिद्रधि कहिये ॥ ६ ॥

अथ साध्य असाध्य जानने के लिये अन्तर बिद्रधि का लक्षण ॥

पृथक २ अथवा मिले हुए बायु पित्त कफ ये कुपथ्य से कोप

को प्राप्त हो शरीर में एक गांठि गोला के आकार बांबी की भाँति ऊंची उत्पन्न करै है उसको वैद्य अन्तर विद्रधि कहै हैं वह अन्तर विद्रधि १० प्रकार की है गुदा के विषे होय है १ पेडू के मुख में २ नाभि में ३ कूख में ४ पेडू और जांघ की संधि में ५ हृदय और तृषाकी ६ फीया में ७ हृदय में ८ नाभिकी दाहिनी ओर ९ तृषा के स्थान में १० ॥

अथ गुदा की विद्रधि का लक्षण ॥

गुदा में विद्रधि होय तो पवन अच्छी तरह सरै नहीं वा पवन रुक जाय ॥ १ ॥ पेडू के मुख में विद्रधि होय तो उसके मूत्र कृच्छ्र का रोग हो ॥ २ ॥ नाभिमें विद्रधि होय उसके हिचकी बहुत आवैं और पेट में अफरा रहै ॥ ३ ॥ कोख में विद्रधि होय तो उस जगह वायु का कोप होय ॥ ४ ॥ पेडू और जांघ की सन्धि में विद्रधि होय तो कटि में पीड़ा बहुत होय ॥ ५ ॥ हृदय और तृषा के स्थान के बीच विद्रधि होय तो पसलियों का संकोच होय और उस जगह पीड़ा बहुत होय ॥ ६ ॥ फीया में विद्रधि होय तो श्वास नहीं आवै ॥ ७ ॥ हृदय में विद्रधि होय तो सब अंगों में पीड़ा होय सब अङ्ग रुक जांय और खांसी होय ॥ ८ ॥ और नाभि की दाहिनी ओर विद्रधि होय तो श्वास का रोग होय ॥ ९ ॥ और तृषा के स्थान में विद्रधि होय तो जल बहुत पीवै धापै नहीं ॥ १० ॥

अथ विद्रधि का साध्य लक्षण ॥

नाभि के ऊपर जो विद्रधि पक के फूटे उसकी राद ऊपर जाय है और नाभि के नीचे को जो विद्रधि पकके फूटे उसकी राद नीचे जाय है जो विद्रधि की राद नीचे जाय सो तो प्राणी जीवै और जिस विद्रधि की राद फूट कर ऊपर जाय वह प्राणी मर जाय ॥ १ ॥

अथ पुनः असाध्य लक्षण ॥

हृदय नाभि पेडू में विद्रधि होय सो अच्छी नहीं और

स्थानों में होय सो अच्छी और विद्रधि कच्ची वा पक्की या दग्ध होगई होय उसको सूजन की तरह देख लीजिये ॥

अथ भीतर की विद्रधि का असाध्य लक्षण॥

अफरा वमन हिचकी तृषा बहुत होय पीड़ा अधिक होय ये लक्षण होंय तो वह प्राणी मर जाय ॥

अथ विद्रधि का कष्टसाध्य लक्षण ॥

बिद्रधि कच्ची होय और वायु की होय बड़ी होय अथवा छोटी होय वा मर्म्म स्थान में होय तौ कष्टसाध्य जानिये ॥ और जो बिद्रधि सन्निपात की होय और हृदय। नाभि पेडू में होय और वह मूंठी प्रमाण होय तौ असाध्य जानिये और मूठी प्रमाण मांस और रुधिर का गोला भी होय है सो बिद्रधि तौ पक जाय और गोला पकै नहीं यही इस में भेद है ॥ १ ॥

अथ विद्रधि का यत्न ॥

सर्व बिद्रधि नाच में जोंक लगाय उसका रुधिर कढ़ावे तौ बिद्रधि अच्छी होय ॥ १ ॥ अथवा जुलाब से पित्त की बिद्रधि जाय ॥ २ ॥ अथवा बिद्रधि पकी न होय तौ उसका सूजन का सा यत्न करै ॥ ३ ॥ अथवा अरण्ड की जड़ का काढ़ा कर उसमें तेल अथवा घृत पकाय उससे सुहाता २ सेक करै तौ वायु की बिद्रधि जाय ४ ॥ अथवा जव। गेहूं। मूंग। इनका चूर्ण घृतसे पकाय लेप करै तौ वायु की बिद्रधि बिना पकी भी अच्छी होय ५ ॥ अथवा असगन्ध। रुस। महुआ। रक्तचन्दन। इनको दूधसे महीन पीस इसमें घृत मिलाय गुन गुना कर लेप करै तौ पित्त की बिद्रधि जाय ॥ ६ ॥ अथवा ईंट का रेत लोहे की मैल गोबर इन्है महीन पीस गोमूत्र में सिझाय इसका सुहाता २ सेक करै अथवा लेप करै तौ कफकी बिद्रधि जाय ॥ ७ ॥ अथवा दशमूल के काढ़े में तेल अथवा घृत डाल उसका तरेड़ा दे तो बिद्रधि के व्रणकी सूजन और उसका शूल जाय ॥ ८ ॥ अथवा

रक्तचन्दन। मंजीठ। हल्दी। मजुआ। गेरू इन्हैं दूधमें सिझाय लेप करै तौ रुधिर की औ चोट लगनेकी विद्रधि जाय ॥ ९ ॥ अथवा कालाजीरा। इन्द्रायण की जड़। तोड इनका काढ़ा २॥ टं० ले तौ कोष्ट की उपजी बिद्रधि जाय ॥ १० ॥ अथवा सहजने की जड़ का रस सहत मिलाय पीवै तौ अंचकी विद्रधि जाय ॥ ११ ॥ अथवा सहजने की जड़ के काढ़े में सेकी हींग। सेंधानोन डाल प्रभातही पीवै तौ अंचकी विद्रधि जाय ॥ १२ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ इति विद्रधि रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ व्रणशोथ रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

व्रणशोथ रोग ६ प्रकार का है वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ रुधिर के दुष्टपने का ५ किसी तरह लकड़ी आदि की चोट लगने का ६ इन कारणों से प्रथम व्रण होय पीछे व्रण में शोथ होय ॥

अथ व्रणशोथ का लक्षण ॥

वायु का शोथ व्रण विषम पकै पित्त का व्रण तत्काल पकै कफ का व्रण देरसे पकै रुधिर और चोट लगने काभी तत्कालही पकै ॥

अथ व्रणशोथ नहीं पका होय उसका लक्षण ॥

उस व्रण शोथ में गरमी और सूजन थोड़ी होय और कड़ा होय और उसका त्वचा के सदृश वर्ण होय और उस में पीड़ा कम होय ये लक्षण होंय तो जानिये कि व्रणशोथ कच्चा है ॥

अथ पके व्रणशोथ का लक्षण ॥

सूजन अग्नि की तरह जलै और खार की तरह पकै और चेंटी और छुरीकी तरह काटै और दंडकी तरह मारै और हाथ से पीड़ित होय मानो सुई करकै बेधी नही सी होय और उस में दाह बहुत होय उसका रंग और सा होजाय अंगुली के दबाने से पीड़ित होय मानो आसन और सोने

के विषय शांति को प्राप्त होय और उसमें बीछूके काटनेकी सी पीड़ा होय और वह सूजन गाढ़ी होय जितने उसके पकने के यत्न करै फूटै नहीं और उस सूजन में ज्वर। तृषा। अरुचि होय ये लक्षण जिसमें होंय तौ जानिये कि यह सूजन पक गई॥

अथ व्रणशोथ पक गया होय उसका लक्षण॥

उस व्रण में पीडा होय नहीं ललाई थोड़ी होय बहुत ऊंचा न होय और उसकी सूजन में तह पड़ जांय और पीड़ा होय खुजलाय बहुत चले सर्व उपद्रव जाते रहैं पीछे वह सूजन न जाय त्वचा फटने लगै और उसमें अंगुली लगने से पीड़ा होय राद निकले ये लक्षण होंय तौ जानिये कि व्रणशोथ पक गया है उसमें भी वायु बिना पीड़ा नहीं पित्त बिना पकना नहीं कफ बिना राद नहीं इस कारण पकने के समय ये तीनों ही होंय हैं॥

अथ परिपाक अवस्था में और भी मतान्तर का लक्षण॥

उसके यत्न करने में ढील करै तौ पित्त बढ़ कर कफ को ग्रहण कर रुधिर को पकाय दे वह पका रुधिर राद को करै अथवा राद को काढ़ै नहीं उसका दोष लिखते हैं॥ जैसे तृणों के समूह को पवन से प्रेरित अग्नि दग्ध करै है तैसेही उसकी राद काढ़े नहीं तौ उसके शरीर के मांस के और नसोंको यह राद खाय जाय है॥

अथ व्रण के कच्चे पक्के के ज्ञान के अर्थ वैद्यके गुण दोष लिखते हैं॥

जो कच्चे और पक्के हुए व्रण को जाने सो तो वैद्य और उसको जाने नहीं सो वैद्य नहीं वह चोर की वृत्ति करने वाला वैद्य चोर है॥ १॥ और जो वैद्य फोड़े को या व्रण को कच्चा फाड़े और पक्के को फाड़े नहीं और जिसे कच्चे पक्के का ज्ञान होय नहीं उसे चांडाल जानिये॥ २॥ इति व्रणशोथ कीउत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथ व्रण रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ।)

वह व्रण ८ प्रकार का है वायु पित्त कफ के दोषों का १ शस्त्रादिक के लगने का २ वायु पित्त कफका ३ रुधिर का ४ वायु पित्त का ५ वायु कफका ६ कफ पित्त का ७ सन्निपात का ॥ ८ ॥

अथ वायु के व्रण का लक्षण ॥

व्रण स्थिर और कठिन होय मन्द स्रवै पीड़ा बहुत होय अधिक फरकै काला होय ये लक्षण होंय उसको वायु का व्रण कहिये ॥ १ ॥

अथ पित्त के व्रण का लक्षण ॥

तृषा मोह ज्वर होय गीलापन दाह पीड़ा होय फटने से दुर्गन्धि लिये राद निकले ये लक्षण होंय उसे पित्त का व्रण कहिये ॥ २ ॥

अथ कफ के व्रण का लक्षण ॥

जिस में अधिक आलस्यपना होय भारी और चिकना होय जिसमें पीड़ा कम होय पीला वर्ण देर से पकै ये लक्षण होंयउसे कफ का व्रण कहिये ॥ ३

अथ रुधिर के व्रणका लक्षण ॥

व्रण लाल होय और उसमें रुधिर बहुत निकले ॥ ४ ॥ जिस व्रण में वायु पित्त के लक्षण होंय उसे वायु पित्त का कहिये ॥ ५ ॥ जिस में वायु कफ के लक्षण होंय उसे बात कफ का जानिये ॥ ६ ॥ जिसमें कफ पित्त के लक्षण होंय उसे कफ पित्त का कहिये ॥ ७ ॥ जिसमें सर्व लक्षण मिलें उसे सन्निपात का कहिये ॥ ८ ॥

अथ शुद्ध व्रण का लक्षण ॥

जीभ के नीचे पैंदे के सदृश जिसकी कांति होय अति कोमल और निर्मल चिकनी होय पीड़ा होय नहीं अच्छी जिस की व्यवस्था होय और उस में राद आदि निकले नहीं तब जानिये यह व्रण शुद्ध हुआ ॥ ९ ॥

अथ दुष्ट व्रण का लक्षण ॥

जिस में राद रुधिर की दुर्गन्धि निकला करै और सूजन और स्थिर पना रहै उसे दुष्ट व्रण कहिये ॥ १० ॥

अथ अंकुरित शुद्ध व्रण का लक्षण ॥

जिस व्रण का पीला अथवा धूसरा वर्ण होय और राद आदि और अंकुर निकलने लगि जांय उसको अंकुरित व्रण जानिये ॥ ११ ॥

अथ अच्छी तरह व्रण भरता होय उसका लक्षण ॥

जिस व्रण में अंकुर शुद्ध निकलैं और गांठ न होय और सूजन होय उसे भले प्रकार व्रण भरा जानिये ॥ १२

अथ व्रण के सुख साध्यादिक लक्षण ॥

वह व्रण मर्मस्थान में नहीं होय त्वचा और मांस में होय और तरुण और बुद्धिमान और पथ्य से चलता होय ऐसे पुरुष के होय शीतकाल में होय तो व्रण सुख साध्य है १३ ॥ वायु पित्त कफका तो व्रण होय और वह मेद मज्जा और मस्तक की गूदी के सदृश स्रवै तो वह अच्छा होय १४ ॥ और शस्त्रादिक की चोट से उत्पन्न जो व्रण उसमें जो वसामेद मज्जा और मस्तक की गूदी के सदृश मैल निकले तो वह व्रण अच्छा होय ॥ १५ ॥ कोढ़ी और विषखाने वाला और मधु प्रमेह वाले पुरुषों के व्रण होय सो कष्ट से अच्छे होय ॥ १६ ॥

अथ पुनः व्रणका असाध्य लक्षण ॥

जिस व्रण में बहुत दाह होय और व्रण बाहर से शीतल होय और उस पुरुष का मांस रुधिर सूख गया होय श्वास खांसी अरुचि ये होंय बूढ़ा होय और उस व्रण में राद रुधिर भी निकला करै मर्म स्थान में होय तो ऐसा व्रण अच्छा नहीं होय वैद्य अपना यश चाहे तो यत्न न करै ॥ १७ ॥

अथ आगन्तुक व्रण अर्थात् तलवार आदि शस्त्रादिक के लगने से उत्पन्न जो घाव उसकी व्रण संज्ञा है उसकी उत्पत्ति लक्षण ॥

तलवार सेल तीर छुरी गोली बाण फरसा आदि किसी

शस्त्र के किसी अंग में लगने से नाना प्रकार की आकृति के व्रण होंय हैं सो वह आकृति छः प्रकार की है सोलिखते हैं छिन्न १ भिन्न २ विद्ध ३ क्षत ४ पिच्चित ५ घृष्ट ६ ॥

अथ भिन्न ब्रणका लक्षण ॥

जो पुरुष तलवार को आदि लेशस्त्र करके टेढ़ा कटा होय अथवा सीधा कटा होय और घाव बड़ा होय और मनुष्य के शरीर को पृथ्वी पर डाल दे उसको वैद्य छिन्न व्रण कहैं हैं १ ॥

अथ भिन्न व्रण का लक्षण ॥

बरछी सेल तीर छुरी तलवार को आदि ले जिस के लागे उसका कोठा किसी तरह कट जाय उस कटे कोठे से रुधिर चलै तब रुधिर से उदर भर जाय तब ज्वर दाह को करै है पीछे वह रुधिर इन्द्री गुदा मुख नासिका के द्वारा निकलै और मूर्छा स्वास तृषा अफरा अरुचि इन्हें पैदा करै और मल मूत्र रुक जांय पसीना आवै नेत्र लाल होजाय मुख में रुधिर की बास शरीर में दुर्गन्धि आवै हृदयपशुली में शूल होय जिस में ये लक्षण होंय उसको भिन्न व्रण कहिये ॥ २ ॥

अथ विद्ध व्रण का लक्षण ॥

जिस पुरुष के भीतर शस्त्र की नोक लगै और उसका अंग कट जाय उसे वैद्य विद्ध कहै हैं ॥ ३ ॥

अथ जिस घाव में तीर आदि रह गये होंय उसका लक्षण ॥

जो घाव काला और सूजन संयुक्त होय फुनसियों को लिये होय और उस घाव का मांस बुदबुदे के समान ऊंचा होय और उसमें पीड़ा होय उसघावको शस्त्र समेतजानिये ॥

अथ कोष्ट में तीर रह गया होय उसका लक्षण ॥

शरीर की सातों त्वचा और शरीर की नसों को नांघि कर पीछे उन नसों को विदीर्ण करै और कोष्ट के विषे रहा जो वह शस्त्र सो अफरे को करै और व्रण के मुख में अन्न और मल मूत्र को ले आवै तब जानिये इसके कोष्ट में शल्य है ॥ ५ ॥

अथ असाध्य कोष्ठ में रहै रुधिर और मल उसका लक्षण ॥

कोष्ट में रहता जो रुधिर सो पीला होकर शरीर को पीला करै हाथ पांव मुंह शीतल होंय और उसको नाक की श्वास शीतल चले नेत्र लाल होंय ये लक्षण होंयतौ उसे असाध्य कोष्टका रक्त मल जानिये यह असाध्य है ॥ ६ ॥

अथ क्षत ब्रण का लक्षण ॥

जिसमें अति छिन्न अति भिन्न के लक्षण नहीं मिलैं दोनों के लक्षण मिले होंय वह बृण विषम है ॥ ७ ॥

अथ पिच्चित ब्रण का लक्षण ॥

जो अंग मुद्गर किवाड़ आदि किसी भारी बस्तु से पिचल जाय और हाड़ों मेंव्रण होजाय उसको पिच्चित बृण कहिये ॥ ८ ॥

अथ घृष्ट ब्रण का लक्षण ॥

जिसके ईंट पत्थर भीत आदि किसी तरह की रगड़ से शरीर का चाम घिसि जाय और शरीर से दूर होजाय और उस में चेप निकला करै और दाह होय उसको घृष्ट ब्रण कहिये ९ ॥

अथ जिसके मांस नस मर्मस्थान में चोट लगी होय उसका सामान्य लक्षण ॥

जिसके भ्रम । प्रलाप होय । गिरिपड़ै । मोह होय । चैतन्यता जातो रहै ग्लानि और दाह होय अंग शिथिल होजाय । पीड़ा बहुत होय । मांस के जल सदृश जिसका रुधिर होय और सर्व इन्द्रियों का धर्म जाता रहै और पीछे कहेजो ५ मर्मस्थान उसमें चोट लगै उसका भी यह लक्षण कहिये ॥ १ ॥

अथ मर्मस्थान नस संधि हाड़ ये ब्रण से बिन्ध गये होंय ॥
तिनका पृथक् २ लक्षण ॥

इन्द्र का धनुष और सावन की बीरबहूटी के सदृश जिस में रुधिरनिकले उसे क्षत बृण कहिये वह बृण बायु के अनेक रोगों को करै है और तीर तलवार आदि शस्त्र करकै नस बंध जाय उस्से उपजा जो ब्रण तिस्से शरीर कुबड़ा हो जाय

अंग २ में पीड़ा होय चला जाय नहीं और बहुत काल पीछे उसमें अंकुर आवैं तब जानिये कि नस बिंध जाने का ब्रण है इस ब्रण में सूजन बहुत होय बल जाता रहै और संधि २ में घाव लगे होंय तौ संधि का हिलना जाता रहै और उसमें पीड़ा होय रात दिन चैन पड़ै नहीं उसको हाड में शस्त्रादिक से उत्पन्न ब्रण जानिये और मर्मस्थान में चोट लगने से ब्रण होंय तिस का शरीर का वर्ण पीला होय और ब्रण स्पर्श सहै नहीं ॥

अथ ब्रण के १६ उपद्रव लिखते हैं ॥

बिसर्प रोग १ पक्षाघात २ सिर घूमै नहीं ३ अपतान ४ प्रमेह ५ उन्माद ६ ब्रण में पीड़ा ७ ज्वर ८ तृषा ९ कन्धा नवै नहीं १० खांसी ११ वमन १२ अतीसार १३ हिचकी १४ श्वास १५ कांपनी १६ ये ब्रण के उपद्रव हैं ॥

अथ अग्नि दग्ध की उत्पत्ति लक्षण ॥

प्रथम अग्निदग्ध २ प्रकार का है एक तौ तैलादिक से दग्ध हुआ १ दूसरा लोह अग्नि आदि से दग्ध २ पुनः अग्नि दग्ध ४ प्रकार का है ॥ प्लुष्ट १ दुर्दग्ध २ सम्यक दग्ध ३ अति दग्ध ४ ॥

अथ प्लुष्ट दग्ध का लक्षण ॥

अग्नि से दग्ध हुआ जिसका वर्ण औरसा होजाय उसको प्लुष्ट कहिये ॥ १ ॥

अथ दुर्दग्ध का लक्षण ॥

जिसमें दाह पीड़ा और फोड़े होजांय और बहुत दिनों में मिटैं उसको दुर्दग्ध कहिये ॥

अथ सम्यक दग्ध का लक्षण ॥

जिसके अंग का तांबे का वर्ण होय और वह दृढ़ होय और जिसमें दाह और पीड़ा होय और फैले नहीं उसको सम्यक दग्ध कहिये ॥ ३ ॥

अथ अति दग्ध का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा । मांस सब दग्ध होजाय और इससे शरीर पृथक् होजाय और नसैं स्नायु हाड़ संधि ये सब दग्ध होजांय और उसमें पीड़ा होय दाह । ज्वर । तृषा । मूर्छा होय और जिसमें अंकुर देर से आवै वर्ण औरसा होजाव ये लक्षण अति दग्ध के कहिये ॥ ४ ॥

अथ इन दोषों से उत्पन्न जो व्रण उसका यत्न ॥

इसके मुख्य यत्न ११ प्रकार के हैं सो क्रम से लिखते हैं ॥ और सुश्रुत चरक में व्रण के यत्न ६० प्रकार के हैं ॥ प्रथम तो लेप पीछे और औषधियों के जल से गुनगुना तरेड़ा २ बांस की लकड़ी से अंगूठा समान उसके पसीना लिवावै ३ किसी तरह रुधिर कढ़ाना ४ औषधियों की पट्टी बांध उसके पसीना लिवावै ५ उसै पकाना ६ शस्त्रादिक से चीर देना ७ व्रण को अंगूठे से दाब उसकी राद काढ़ना ८ व्रण का शोधना ९ उसके अंकुर लाना १० उसको त्वचा के वर्ण सदृश कर देना ॥ ११ ॥

अथ बायु की सूजन दूर करने का लेप ॥

बिजौरे की जड़ । छड़ । देवदारु । सोंठ । रास्ना । अरलू । ये सब बराबर ले इन्हैं जल से महीन पीस गुनगुना लेप करै तौ वह सूजन दूर होय ॥ १ ॥

अथ पित्त की सूजन का लेप ॥

मऊआ । रक्तचन्दन । दूब । आंवला । कमलकी जड़ । खस । नेत्रवाला । पद्माख । ये सब बराबर ले जल से महीन पीस शीतल ही लेप करै तौ पित्त की सूजन जाय ॥ २ ॥ अथवा बड़ । गूलर । पीपल । पाकड़ । बेतकीजड़ । इनका वक्कल ले इन्हैं जल से महीन पीस इसमें औषधियों से दसवां हिस्सा घृत मिलाय लेप करे तौ पित्त की सूजन जाय ॥ ३ ॥

अथ कफ की सूजन का लेप ॥

अजमोद । बावचो । मेढ़ासींगी । मंजीठ । राल । असगन्ध ।

सतावर । इन्हें जलमें पीस गुनगुना लेप करै तो कफकी सूजन जाय ॥ ४ ॥ अथवा । पीपल । पुरानी खस । सहजने का बक्कल । रेत । हड़ की छाल इन्हें गोमूत्र से महीन पीस गुनगुना लेप करै तो कफकी सूजन जाय ॥ ५ ॥ और रात में लेप करिये नहीं ॥

अथ औषधियों के जल से गुनगुना तरेड़ा दे सो अनुक्रम से लिखते हैं ॥

हड़ के बक्कल । को औटाय इसका सुहाता उस सूजन के दाह पर तरेड़ा दे तो दाह तत्काल दूर होय ॥ ६ ॥ अथवा बायु के दूर करने वाली औषधि के काढ़े के जलका उसपर तरेड़ा दे अथवा तेल का तरेड़ा दे अथवा मांस के रस का तरेड़ा दे अथवा गरम २ घृतका अथवा गरम २ कांजी का तरेड़ा दे तो बायुकी सूजन दूर होय ॥ ७ ॥

अथ पित्तकी सूजन दूर करनेका तरेड़ा ॥

शीतल औषधियों के काढ़े का तरेड़ा दे और दूध घृत खांड़ सांठे के रस के तरेड़े से पित्तकी सूजन जाय ॥ ८ ॥

अथ कफकी सूजन का तरेड़ा ॥

कफको दूर करने वाली औषधियों का गरम २ तरेड़ा दे तो कफकी सूजन जाय ॥ ९ ॥ रक्त पित्त और सूजन का यत्न एक ही है और व्रणकी सूजन को अंगूठे आदिसे मसल कर पसीना लिवावै जो व्रणकड़ा होय उसे अंगूठा अथवा बांसकी साफ लकड़ी से शनैः २ मसलवावै तो वह ढीला पड़ अच्छा होजाय ॥ और उसका वर्ण औरसा हो जाय काला होय पीड़ा बहुत होय ऐसी व्रणकी सूजन के अथवा किसी बिषैले जानवर के काटने की सूजन के जोंक लगाय उसका रुधिर कढ़ाय डाले अथवा पछना दिवाय रुधिर कढ़ाय दे यहएकहीयत्नसब यत्नोंकी बराबर है ॥

अथ कच्चे व्रण के पकाने की औषधि ॥

दशमूल । खरैटी । रास्ना । असगंध । खोप । अरंडकी जड़ अथवा इसका फल । निर्गुंडी । सांठा । सहजना । पीपल ।

सेधानौन। सोंठि। सनके बीज। कपास के बीज। अलसी। कुलत्थ। तिल। जौ। सरसों। मूली के बीज। सोंफ। नींब के पत्ते नागरबेल के पत्ते। गुलाब के पत्ते। आदि गरम कर इन्हें महीन पीस बांधे अथवा इनके काढ़े का तरेड़ा दे तो वायु के व्रण की सूजन जाय १॥

अथ व्रण के शोथ के दूर करने का लेप॥

सांटी की जड़। देवदारु। हल्दी। सोंठ। सहजने का बक्कल। सरसों इन्हें खटाई से महीन पीस कुनकुना कर लेप करै तो सर्व प्रकार के व्रण शोथ दूर होंय ॥ २॥

अथ व्रण के पकने की विधि॥

व्रण लेपादिक करके पकै नहीं तो सनकी जड़। सहजने का फल। तिल। सरसों। अलसी। जौ। गेहूं। नींब के पत्ते। इन्हें सिझाय व्रण के बांधे तो व्रण पक जाय ॥ ३॥

अथ पके व्रण में चीरा देने की विधि॥

जिस व्रण में राद पड़गई होय उसके चतुर वैद्य के शस्त्रों से तीन चीरा दिवाय उसकी राद कढ़वाय दे पीछे मल्हम आदि लगावै तो व्रण अच्छा होय ॥ ४॥

अथ इतने मनुष्य के चीरा नहीं लगावे॥

बालक के वृद्ध के जिनसे चीरा सहा जाय नहीं क्षीण पुरुष के भय वाले के स्त्री के मर्मस्थान में इनके चीरा दीजै नहीं उनके औषधियों से भेदन कर उसकी राद कढ़ाय अच्छा कीजे सो भेदन औषधि लिखते हैं॥ कणागच की जड़। चित्रक। दात्यूणी। भिलावा। कनेर। कबूतर की बीठ। गीध की बीठ। इनमें किसी का लेप करै तो व्रण आपही फूट राद निकल अच्छा होय ५॥ अथवा खारीनोन। जवाखार। सज्जी। आंधी झाड़े का खार इनमें से किसी का लेप करे तो व्रणकी राद निकल जाय॥ ६॥ अथवा व्रण कड़ा होय तो हाथी दांत को जल में घिस उसकी बूंद व्रण पर धरै तो सूजन दूर होय उसकी राद निकल जाय ॥ ७॥

अथ पीड़न लिखते हैं ॥

जिसमें राद पड़ गई होय और मर्मस्थान में होय ऐसे व्रण के चीरा दीने नहीं ये औषधि लगाय उसकी राद काढ़ डालिये तौ वह व्रण अच्छा होय सो औषधि लिखते हैं ॥ जव । गेहूं । उड़द । इन्हैं महीन पीस पानी से गुन गुना करै और व्रण के मुख में से राद काढ़ डाले पीछे उसके मल्हम आदि लगावै तौ वह व्रण अच्छा होय ॥ ८ ॥

अथ व्रण का शोधन ॥

जो व्रण कच्चा होय तौ पटोल के पत्ते अथवा नींब के पत्ते इन्हैं सिझाय इनके पानी से व्रणको धोवै तौ व्रण अच्छा होय ९ ॥ अथवा दशमूल के काढ़े से व्रण धोवै तौ वायु का व्रण अच्छा होय ॥ १० ॥ अथवा गूलर के बक्कल के काढ़े से व्रण धोवै तौ व्रण अच्छा होय ॥ ११ ॥ और किरमाला के बक्कलके काढ़े से धोवै तौ कफका व्रण अच्छा होय ॥ १२ ॥ और पीपल । गूलर । बड़ । बेल । इनके बक्कल के काढ़े से व्रण की सूजन और उपदंश को धोवै तौ व्रण अच्छा होय ॥ १३ ॥ अथवा तिल । सेंधानौन । मुलहटी । नींबकेपत्ते । दोनों हल्दी । निसोत । नागरमोथा । इन्हैं बराबर ले जलसे पीस इनका लेप करै तौ व्रण पकके उसकी राद निकस जाय ॥ १४ ॥ अथवा नीबके पत्ते । तिल । दारूहल्दी । निसोत । सेंधानोन इनमें सहत मिलाय महीन पीस लेप करै तौ दुष्टव्रण अच्छा होय ॥ १५ ॥ अथवा नीब के पत्तों को सिझाय बांधे तो दुष्ट व्रण अच्छा होय ॥ १६ ॥ अथवा हड़ । निसोत । सेंधानोन ॥ दारूहल्दी । कलिहारी कीजड़ । सहतमें इन्हैं पीस इनकीबत्ती व्रण में दे तो दुष्ट व्रण अच्छा होय ॥ १७ ॥ अथवा व्रण का मुख स्वच्छ होय ॥

नीब के पत्तों के रस आदि औषधियों की बत्ती दे तौ व्रण अच्छा होय ॥ १८ ॥ अथवा नींब के पत्ते । घृत सहत दारुहल्दी । मऊआ । इनकी बत्ती कर व्रण में दे तो व्रण

अच्छा होय ॥ १९ ॥ अथवा। तिलों को औटाय उसकी बत्ती दे तो व्रण अच्छा होय ॥ २० ॥

अथ व्रण के रोपण नाम अंकुर ल्याने का यत्न ॥

जिन व्रणों की राद निकल गई होय और व्रण भरै नहीं उसको नींब के पत्ते औटाय उस पानी से धोवै फिर सहत मिलाय तेल का फाहा उस पर धरै तो व्रण भर जाय ॥ अथवा असगंध। कायफल। मुलहटी। मंजीठ। धवई केफूल। इन्हें महीन पीस व्रणके बांधै तो व्रण भर अच्छा होय ॥ २२

अथ व्रण में दाह शूल होय उनके दूर करने का लेप

जौ का आटा। सहत। तेल। घृत। ये सब मिलाय थोड़ा गरम कर लेप करै तो व्रण का दाह शूल जाय ॥ २३ ॥

अथ व्रण के कृमि दूर होने कालेप

कणगचकी जड़। नीब की छाल। निर्गुंडी। इन्हैं महीन पीस लेपकरै तो व्रण के कृमि जांय ॥ अथवा लहसन कालेप करै तो व्रणके कृमि जांय ॥ अथवा हींग। नीब की छाल का लेप करै तो व्रण के कृमि मरैं ॥ २४ ॥

अथ व्रण में छूत पड़ि उसमें खाजपीड़ा होय कृमि पड़ गये होंय उसकी धूनी ॥

नीबकेपत्ते। बच। हींग। घृत। नोन। सरसों इन्हैं इकट्ठा घृत में महीन पीस इन की धूनी दें तो व्रण की छूत खाज कृमि जांय ॥ २५ ॥ ये सब यत्न भाव प्रकाश के हैं ॥

अथ व्रण के भरनेकी मल्हम

कडुआ तेल २॥ पैसे भर पानी २॥ पैसे भर इन दोनों को कांसी की थाली में १ दिन तक हाथ से मथ पीछे इसमें राल ५ पैसे भर महीन पीस मिलावै नीलाथोथा २॥ टं० मिलावे बिरोजा १। टं० मिरच १। टं० महीन पीस इसमें मिलाय पीछे इन्हैं महीन पीस हाथ से मथ व्रण के लगावै तो व्रण तत्काल भर आवै ॥२६ ॥

अथ आगंतुक ब्रण अर्थात् तलवार आदि शस्त्रादिक के लगने से उत्पन्न जो ब्रण उसका यत्न ॥

जिन मनुष्यों के तलवार को आदि ले शस्त्रों की नाना प्रकार की धार के लगने से त्वचा फटि जाय अथवा त्वचा की नाना प्रकार की आकृति हो जाय तो उसे अच्छा चतुर साथिये के पास निर्वात स्थान में पाट के सूतसे सिवाय पीछे उन टांकों के ब्रण के स्थान में गेहूं की मैदा में पानी घृत मिलाय पकाय ले जब पानी जल जाय घृत मात्र रहजाय तब उसकी लोई बनाय सुहाता २ सेंक करै तो वह ब्रण तत्काल अच्छा होय ॥१॥ अथवा कुटकी । मोम । हल्दी । मुलहटी । कणगच कीजड । और कणगचकेपत्ते । और फलपटोल । चमेली और नीब के पत्ते इन्हैं घृत में डाल पकावै जब पानी जल जाय घृत मात्र आय रहै तब इस घृत का सुहाता २ सेंक करै तो यह ब्रण तत्काल अच्छा होय ॥ २ ॥ ये यत्न वैद्य रहस्य में लिखे हैं ॥ अथवा शस्त्रादिकों से जिसका रुधिर बहुत निकल गया होय उसके बायु की पीड़ा होय आवे उसके दूर करने के वास्ते घृतपान कराइये और जिसका खड्गादिक करके गात्र छिन्न होजाय उसके गंगेरन की जड़का रस उस में भर दे तो वे ब्रण तत्काल भर जांय और अच्छे होंय ॥ ३ ॥ इस ब्रण वाले को शीतल यत्न सब अच्छे हैं । और शस्त्र लगते जिस के रुधिर आमाशय में जाय तो उस पुरुष को वमन करावे तो अच्छा होय और पेड़ू में रुधिर जाय तो वह जुलाब से अच्छा होय ॥ बांस की छाल । अरंड का बक्कल । गोखुरू । पाषाणभेद । इनका काढ़ाकर उसमें सेंकी हींग सेंधानौन डाल पीवै तो कोठे का रुधिर निकल वहै अच्छा होय ॥ ४ ॥ अथवा । जव । कुलत्थ । सेंधानोन । रूखा अन्न इनका खाना अच्छा है ॥ ५ ॥ अथवा । चंबेली के पत्ते । नींबकेपत्ते । पटोल । कुटकी । दारुहल्दी । मौलसिर । मंजीठ । हड़कीछाल । मोम । नीला थोथा । सहत । कणगच

के बीज। ये सब बराबर ले इनकी बराबर गौ का घृत ले और इन से अठगुना पानी ले इन्हैं मधुरी आंच से पकावै जब पानी जलजाय घृत मात्र रह जाय तब इस घृत की बत्ती कर ब्रण के लगावै तो गंभीर को आदि ले सब ब्रण अच्छे होंय ॥ ६ ॥ इति जात्यादि घृतम् ॥

अथवा। चमेली। नींब। पटोल। किरमाला। इन के पत्ते। मोम। महुआ। कूट। दारुहल्दी। हल्दी। कुटकी। मंजीठ। पद्माख। बड़ की छाल। लोध। तज कमलगट्टे। गौरीसर। नीलाथोथा। किरमाला की गिरी ये सब बराबर ले इन का काढ़ा कर इन के रस में मधुरी आँच से तिलका तेल पकावै जब काढ़े का रस जल जाय तेल मात्र रहजाय तब उस तेल को उतार अच्छे बासन में धर रक्खे पीछे इस तेल की बत्ती कर किसी तरह से ब्रण के लगावै तो ब्रण तत्काल भर अच्छा होय ॥ ७ ॥ इति जात्यादि तैलं ॥

अथवा। चित्रक। लहसन। हींग। सरपुंखा जो गौड़ देश में प्रसिद्ध है और कलिहारी जड़ी की जड़। सिंदूर। अतीस। कूट। कडुआ तेल इन औषधियों के माफिक पानी डाल मधुरी आंचसे पकावै जब पानी जल जाय तेल मात्र रहजाय तब इस तेल को बासन में भर रक्खे पीछे इसको कपड़े की बत्ती आदि से किसी तरह ब्रणके लगावै तौ ब्रण मात्र दुष्टब्रण नाड़ी ब्रण इन को यह तैल तत्काल दूर करे है ॥ ८ ॥ इति बिपरीत मल्ल तैलं ॥

अथवा गिलोय। पटोल की जड़। त्रिफला। बायबिडंग। इन्हैं बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर गूगल मिलाय एक जीव कर २॥ टंक पानी से नित्य खाव तौ ब्रणमात्र वात रक्त। गोला। उदर रोग। सूजन इनकौ यह दूर करै है ॥ ९ ॥ इति अमृतादि गूगल ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं ॥

अथ ६ प्रकार के अग्निदग्ध का अनुक्रम से यत्न ॥

अग्नि से किसी तरह जल गया होय उसको अग्नि से

तपावै तौ वह पुरुष तत्काल अच्छा होय ॥ १ ॥ अथवा उस पुरुष के अगर को आदि ले गरम औषधियों का ऊपर लेप करै तौ वह अच्छा होय ॥ २ ॥ यह लुष्ट का यत्न है ॥

अथ दुर्दग्ध का यत्न ॥

औषधियों के घृत को अथवा इसी घृत को गरम कर पीछे उसे ठंढा कर लेप करे तौ दुर्दग्ध अच्छा होय ॥ ३ ॥

अथ सम्यक् दग्ध का यत्न ॥

तवाखीर । बड़ की जड़ । रक्तचन्दन । रसौत । गेरू । गिलोय इन्हैं घृतसे महीन पीस लेप करै तौ सम्यक् दग्ध अच्छा होय ॥ ४ ॥

अथ अति दग्ध का यत्न ॥

बुरे मांस को दूर कर पीछे सांठी चांवल तेंदू इन्हें घृतमें महीन पीस लेप करै ऊपर गिलोय का पत्ता बांधै तौ अति दग्ध अच्छा होय ॥ ५ ॥ अथवा मोम । महुआ । लोध । राल । मंजीठ । रक्तचन्दन । मूर्वी. ये सब बराबर ले महीन पीस गौके घृत में पकावै पीछे इस घृत का लेप करै तौ अति दग्ध अच्छा होय और सर्व शरीर में मांस और हो आवै ॥ ६ ॥ इति सिक्थादि घृतं ॥

अथवा पटोल के पंचांग का काढ़ा कर उसमें कड़ुआ तेल पकावै जब काढ़े का रस जल जाय तेल मात्र रह जाय तब उतार उस तेल को लगावै तौ अग्नि के जरे का दाह और व्रण और फोड़े सब अच्छे होंय ॥ ७ । ये सर्व यत्न भावप्रकाश में हैं ॥ अथवा पुराना गीला खाने का चूना उसको दही के पानी में पीस जरे ऊपर लगावै तौ वह अच्छा होय और तेल का जला होय तौ उसके फफोले भी दूर होंय ॥ ८ ॥ अथवा जौ को जलाय तिलों के तेल में पीस पीछे जले ऊपर लेप करै तौ अच्छा होय ॥ ९ ॥ अथवा भुने जीरेको महीन पीस उसकी बराबर मोम । राल । घृत । मिलाय लेप करै तौ अग्नि का जला तत्काल अच्छा होय ॥ १० ॥

अथ तेल आदि मे जला होय उसका यत्न ॥

अथवा तिलका तेल ऽ। भर और खाने का चूना गीला पुराना ४ पैसे भर उसको हाथ से एक पहर मसल राब सा कर रूई के पहल से उसके लगावै तौ जला हुआ तत्काल अच्छा होय ११ ॥

अथ व्रणग्रंथि रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

बिना छिद्र ही शरीर से निकलता जो दुष्ट रुधिर उसे पवन शोष कर गांठ को उत्पन्न करै है उस गांठ में दाह खुजाल बहुत होय उसको व्रणग्रंथि कहिये ॥ १२ ॥

अथ व्रणग्रंथि का यत्न ॥

कबीला । बायबिडङ्ग । तज । दारुहल्दी । इन्हैं जल से महीन पीस और उसमें तिल का तेल डाल मधुरी आंच से पकावै जब पानी जल जाय तेल मात्र रह जाय तब इस तेल का लेप करै तौ व्रणग्रंथि जाय ॥ १३ ॥ इति व्रणग्रंथि व्रण रोग अग्निदग्ध की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ भग्न रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

हाड़ के टूटने को भग्न कहिये सो दो प्रकार का है ॥ कांड का १ संधि का २ कांडका तो नल कपाल पहुंचा आदि के और संधि का ६ प्रकारका है उत्पिष्ट १ विश्लिष्ट २ बिवर्त्तित ३ तिर्य्यक्गति ४ क्षिप्त ५ अध ६ ॥

अथ प्रथम कहे के माफिक किसी स्थान की शरीर की संधि टूट गई होय उसका सामान्य लक्षण ॥

उठते पसारते इकट्ठा करते संधि में पीड़ा बहुत होय और उस जगह स्पर्श सुहावै नहीं तौ जानिये कि सन्धि टूटी है ॥

अथ उत्पिष्ट संधि टूटने का लक्षण ॥

हाड़ों की संधि टूटी होय उस जगह चारों ओर सूजन बहुत होय और पीड़ा होय तो जानिये कि उत्पिष्ट संधि टूटी है ॥

अथ बिश्लिष्ट संधि टूटने का लक्षण ॥

इस जगह सूजन होय और रात्रि में पीड़ा सूजन अधिक होय उसको बिश्लिष्ट संधि टूटी जानिये ॥ २ ॥

अथ बिवर्तित संधि टूटी का लक्षण

पसलियों में पीड़ा बहुत होय और उस स्थान में सूजन पीड़ा रहा करै तौ बिवर्तित संधि टूटी जानिये ॥ ३ ॥

अथ तिर्य्यक्गति संधिटूटी का लक्षण ॥

उस जगह सूजन होय पीड़ा बहुत होय तौ तिर्यक् गति संधि टूटी जानिये ॥ ४ ॥

अथ क्षिप्त संधि टूटी का लक्षण

जांघों में कभी थोड़ा कभी बहुत बिषम शूल होय उसको क्षिप्त संधि टूटी जानिये ॥ ५ ॥

अथ अधः संधि टूटी होय उसका लक्षण ॥

जो संधि नीचे को टूटी होय इसके नीचे पीड़ा होय उसे अधः संधि जानिये ॥ ६ ॥

अथ संधि विना नल कपाल बलय के हाड़ टूट गये हों उसका लक्षण ॥

नरसल कीसी भांति बे हाड़ छिद्र २ लियें हैं, सूखे होंय उसे नल कहिये ॥

अथ हाड़ टूटना १२ प्रकार का है सो लिखते हैं ॥

कर्कट १ अश्वकर्ण २ बिचूर्णित ३ पिच्चित कहिये चंचित किया ४ अस्थिछल्लिका ५ कांडके विषयभग्न ६ अतिपातित ७ मज्जागत ८ प्रस्फुटित ९ वक्र १० छिन्न ११ द्विधाकरना १२ जैसे इन के नाम हैं तैसेही लक्षण जान ले ॥

अथ हाड़ टूटा होय उसका लक्षण ॥

अंग शिथिल होजाय और उस जगह स्पर्श सुहावै नहीं और वहां शरीर फरकै और शरीर में पीड़ा और शूल होय रात दिन कभी भी चैन पड़ै नहीं ये लक्षण होंय तब जानिये कि इसका किसी प्रकार से हाड़ टूटा है ॥

अथ भग्न रोग का कष्ट साध्य लक्षण ॥

अग्नि मंद होजाय कुपथ्य करा करै वायु का शरीर होय और जिसमें ज्वर अतीसारादिक भी होंय वह भग्न रोगी कष्टसे बचे ॥

अथ भग्न रोग का असाध्य लक्षण ॥

अथ जिसका मस्तक फटगया होय कटि टूटगई होय और संधि खुलि जाय जांघ पिसिजाय और ललाट का चूर्ण हो जाय स्तन की जगह टूट जाय हृदय गुदा कनपटी माथा फटि जाय वह असाध्य जानिये ॥

अथ पुनः असाध्य लक्षण ॥

हाड़को अच्छे प्रकार बांधे पीछे कड़ा बांधे और वह बुरी तरह बंधि जाय और उस में चोट आय जाय और मैथुनादिक करै तो वह हाड़ टूटना असाध्य होजाय ॥

अथ शरीर में स्थान २ के हाड़ोंमें चोट लगी होय उसका चिन्ह ॥

कंठ तालू कनपटी कन्धे सिर पैर कपाल नाक आंख इन स्थानों में किसी तरह की चोट लगै तो उस जगह के हाड़ नवजांय और पसुंवा पीठ आदि के लम्बे हाड़ हैं सो टेढ़े होजांय कपाल को आदि ले जो गोल हाड़ हैं सो फटि जांय दांत आदि छोटे हाड़ टूट जांय ॥

अथ भग्न रोग अर्थात् हाड़ सन्धि का टूटना उसका यत्न ॥

प्रथम चोट आदि किसी तरहसे हाड़ और सन्धि टूटी जानै तो उसी समय उस जगह शीतल पानी डालै पीछे बुद्धिमान मनुष्य उसके औषधियों का सेक करै अथवा पट्टी बांधे और उस जगह जो इलाज करै सो शीतल करै और जो बुद्धिमान पुरुष होय सो पट्टी शिथिल नहीं बांधे और बहुत कड़ी भी नहीं बांधे अच्छी तरह साधारण बांधे शिथिल बांधने से अच्छी तरह हाड़ स्थिर मिले नहीं और गाढ़ा बांधने से त्वचा में सूजन पीड़ा होय और चमड़ी

पकजाय इसी से पट्टी साधारण ही बांधना योग्य है ॥ १ ॥ हाड़ संधि को टूटी जगह गांठ दब से बांधे औषधियों को गीलीकर अथवा चोटकी जगह गीली प्याज लगावै तो हाड़ संधि टूटी अच्छी होय २ ॥ अथवा मंजीठ। मलुआ इन दोनों को ठंढे पानी से महीन पीस टूटे हाड़ पर लेप करै तौ अच्छा होय ॥ ३ ॥ अथवा सौवार का धोया घृत उस में साँठी चांवल पीस लेप करै तो अच्छा होय ॥ ४ ॥ अथवा बेर। पीपल की लाख। गेहूं। काहू वृक्षका बक्कल। ये घृत में पीस ५ टं० दूध से पीवै तौ सन्धि और हाड़ टूटा अच्छा होय ॥ ५ ॥ अथवा लाख काहू का बक्कल। असगन्ध। खरैटी गूगल। ये सब बराबर ले इन को एक जीव कर २॥ टं० दूध के साथ ले तो अच्छा होय ६ ॥ अथवा गेहूं को ठीकरे में धर अधजला करले पीछे उन्हैं महीन पीस ५ टं० ले १० टं० सहत के साथ नित्य ७ दिन तक चाटै तो टूटा हाड़ अच्छा होय ७ ॥ अथवा मैदा लकड़ी। आंवला। तिल। इन्हैं ठंढे पानी से महीन पीस उस जगह लेप करै और इस में घृत भी मिलावे तौ टूटा हाड़ और टूटीसन्धि अच्छी होय ८ ॥ और मनुष्य के मांस को चाखो खिलाई अनुमान माफिक ले सहतसे उसको चटावै तौ टूटाहाड़ टूटी संधि अच्छी होय ९ ॥ और चोट वालेको मांसका सोरुवा दूध घृत पुष्टाई की औषधि दे तौ ये सब अच्छी और इतनी वस्तु उसको अच्छी नहीं नोन कड़वी वस्तु, खार। खटाई। मैथुन। तावड़ा। रूखा अन्न बालक को और तरुण को चोट शीघ्र अच्छी होय वृद्ध और रोगी को चोट शीघ्र अच्छी होय नहीं ॥ १० ॥ अथवा लाख २॥ टं० दूध से १५ दिन पीवे तो टूटा हाड़ अच्छा होय ॥ ११ ॥ अथवा पीली कौड़ियों का चूना २ तथा ३ रत्ती औटाय दूध से पीवे तो टूटा हाड़ जुड़ै ॥ १२ ॥ ये सर्व यत्न वैद्य रहस्य में हैं ॥

अथवा बेरका बक्कल। त्रिफला। सोंठ। मिरच। पीपल इन

सबकी बराबर गूगल डाल सब को एक जीव कर २॥ टं० नित्य १५ दिन दूध से लै तो शरीर वज्र का होजाय ॥ १३ ॥ अथवा बेर का बक्कल २ टं० महीन पीस सहतसे १ महीना भर लेतो शरीर वज्र का होय ॥ १४ ॥ यह योग तरंगिणी में है॥

अथमुद्गर आदि किसी तरहकी चोटलगी होय उसके अच्छे होने को औषधि

मेथी। मैदा लकड़ी। सोंठ। आंवला इन्हें गोमूत्रमें महीन पीस चोटपै लेप करै तो चोट अच्छी होय ॥ १५ ॥ इति भग्न रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ नाड़ी व्रण की उत्पत्ति लक्षण ॥

जो अज्ञान वैद्य या सथिया व्रण को कच्चा जान उसका यत्न करै नहीं और उसकी राद काढ़ै नहीं वह राद नसों में घसि जाय॥ पीछे उनके स्थानों को बिगाड़ दे फिर वह किसी तरह बाहर निकले नहीं और राद के अधिक प्रभाव से वह राद नाड़ियों में नल कीसी भांति जैसे नल में जल बढ़ै तैसे नाड़ियों में राद बढ़ै इस कारण इस रोग का नाम नाड़ी व्रण है ॥ १ ॥ वह नाड़ी व्रण रोग ५ प्रकार का है वायु का १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ४ शस्त्रादिक की चोट लगने का ॥ ५ ॥

अथ वायु के नाड़ी व्रण का लक्षण ॥

कठोर महीन जिसका मुख होय और शूल होय और जिसके मुह में राद रहै रात में बहुत रहै ये लक्षण होंय उसे वायु का नाड़ी व्रण कहिये ॥ १ ॥

अथ पित्त के नाड़ी व्रणका लक्षण ॥

जिस में तृषा। ज्वर। दाह। ये होय गरम पीली जिसमें राद निकलै उसको पित्त का नाड़ी व्रण कहिये ॥ २ ॥

अथ कफ के नाड़ी व्रण का लक्षण ॥

जिसव्रण के मुखमें रुधिर को लिये अधिक बदरंगी सुपेद राद निकले और उसमें खाज आवै और पीड़ा भी होय रात में बहुत होय ये लक्षण होंय उसे कफका नाड़ी व्रण कहिये ३ ॥

अथ सन्निपात के नाड़ी व्रण का लक्षण ॥

जिस व्रणमें राद । ज्वर । श्वास । मूर्छा । होय मुख सूखे और जिस रादकी गति गंभीर होय और जिसका अन्त मिले नहीं ऐसी राद निकले वह नाड़ी व्रण कालरात्रिकी समान है मानो मारही डालै ये लक्षण सन्निपात के नाड़ी व्रण का कहिये ४ ॥

अथ शस्त्रादिकों की चोट से उत्पन्न जो नाड़ी व्रण उसका लक्षण ॥

जिसके शरीर में तीर गोली इत्यादि लगे होंय और वे किसी तरह शरीरमें रह जांय उसको वैद्य या सथिया काढ़े उससे उस जगह व्रण पड़ जाय और उस व्रण में झाग समेत रुधिर राद निकला करै किसी तरह शरीर हलनेसे पीड़ा रहै उसे शस्त्रादिक की चोटलगने का नाड़ी व्रण कहिये ॥ ५ ॥

अथ नाड़ी व्रणका असाध्य कष्ट साध्य लक्षण ॥

त्रिदोष का नाड़ी व्रण अच्छा नहीं होय ॥ १ ॥ और चार प्रकार का नाड़ी व्रण अच्छा सो वैद्य के यत्न से अच्छा हो जाय ॥ २ ॥

अथ नाड़ी व्रण का यत्न ॥

सूक्ष्ममुख के व्रण में जो राद निकला करै तो उसको थूहर के दूध । अथवा आक के दूध में दारु हल्दी भिगोय उसको घिसि बत्ती कर उस व्रण के मुख में दे तौ वह व्रण भर जाय ॥ १ ॥ अथवा किरमाला की जड़ हल्दी । मंजीठ । इन्हें सहत में महीन पीस उसको बत्ती कर व्रण में युक्ति से वैद्य दे तौ व्रण अच्छा होय ॥ २ ॥ अथवा चंमेली के पत्तों का रस । आक की जड़ । किरमाला की जड़ । दात्यूणी । सेंधानौन । जवाखार । इन्हैं महीन पीस इनकी बत्ती व्रण के मुख में युक्ति से दे तो व्रण भर कर अच्छा होय ॥ ३ ॥ अथवा जात्यादि घृत वा जात्यादि तेल सेती नाड़ी व्रण जाय है ॥ ४ ॥ अथवा त्रिफला । सोंठ । मिरच । पीपल और इनकी बराबर सोधा गूगल ले इन्हें

महीन पीस एक जीव कर २॥ टं० नित्य ४९ दिन शीतल जल से ले और पथ्य से रहै तौ सब प्रकार के नाड़ी व्रण जांय ॥ ५ ॥ अथवा गूगल सिंदूर इन दोनों को महीन पीस इन्हैं यत्न से व्रण में भरै तौ नाड़ी व्रण अच्छा होय ॥ ६ ॥ ये भाव प्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा आंधीझाड़े के बीज। तिल इन्हैं महीन पीस यत्न से नाड़ी व्रण के लेप करै तौ बायु का नाड़ी व्रण अच्छा होय ॥ ७ ॥ अथवा तिल। मंजीठ हाथी का दांत। हल्दी इन्हैं महीन पीस पित्त के व्रण के लेप करै तौ नाड़ी व्रण जाय ॥८॥ अथवा तिल। मुलहठी। दात्यूणी। नींब की छाल। तथा पत्ते। सेंधानौंन इन्हैं महीन पीस लेप करै तौ नाड़ी व्रण जाय ॥ ९ ॥ अथवा तिल। सहत घृत। इकट्ठा कर लेप करै तौ घाव का व्रण अच्छा होय ॥ १० ॥ अथवा सहत की बत्ती अथवा नौन की बत्ती से दुष्ट व्रण अच्छा होय ११ ॥ अथवा सज्जी। जवाखार। कबीला। मेहंदी। सुहागा। सुपेद खैर सार ये बराबर ले इन्हैं गौ के घृत में महीन पीस १ दिन पीछे व्रण में भरै तौ व्रण के कृमि मर जांय और खाज जाती रहै और व्रण भर अच्छा होय ॥ १२ ॥—इति स्वर्जिका घृतं ॥ यह चक्रदत्त में लिखा है ॥

अथवा सम्हालू के पत्तों के रस में तेल पकाय उस तेल की बत्ती व्रण में दे तौ व्रण अच्छा होय १ ॥ इति निर्गुंडी तैलं—यह वृन्द में है ॥

अथ सुपेद मलहम की विधि।

राल १ पैसे भर। सुपेद मोम २ पैसे भर। मुरदासंग १ पैसे भर। इन्हैं महीन पीस पीछे गौ का घृत ६ पैसे भर गरम कर उसमें मोम पिघलाय शुद्ध कर पीछे वह औषधि भी मोम के घृत में उसी समय डालै पीछे उसको कांसे की थाली में जल डालि उस पानी में मोम सहित सब औषधि डालि हाथ से खूब १०८ बार धोवै पीछे व्रण के लगावै तौ व्रण अच्छ

होय ॥ १४ ॥ अथवा शोधा पारा । आंवलासार । गन्धक ये सब बराबर ले और इन दोनों की बराबर मुरदासंग ले और इन तीनों की बराबर कबीला ले और इन में थोड़ा नीला थोथा डालै और इन सब से चौगुन गौकाघृत मिलावै और नींब के पत्तों का रस अनुमान माफ़िक डालै पीछे इन सब को घृत में खूब दो दिन तक पीसे फिर व्रण के लगावै तौ व्रण मात्र सब अच्छे होंय ॥ १५ ॥ यह वैद्य रहस्य में है ॥ अथवा सुपेद मोम । मस्तंगी । गोंद । मैढ़ल । नीला थोथा । सुहागा । सज्जी । सिंदूर । कबीला । मुरदासंग । गूगल । कालीमिरच । सोनगेरू । इलायची । बेर । सुपेदा । सिंगरफ । शोधी गन्धक । ये सब बराबर ले मोम बिना सब को इकट्ठा पृथक् २ महीन पीस और मोम को गौके घृत में अग्नि के ऊपर तपाय शुद्ध कर ले पीछे सब औषधि इस मोम में मिलाय खूब महीन खरल में २ दिन महीन पीस एक जीव करै तो सब शस्त्र व्रण और दुष्ट व्रण भी इस के लगाने से अच्छे होंय ॥१६॥ ये वैद्य कुतूहल में लिखे हैं ॥ अथवा नीलाथोथा । मुरदासंग । सुपेदा खैरसार । सिंदूर सिंगरफ । मोम । केसर । गौका घृत ये सब बराबर ले पीछे गौके घृत को गरम कर नीचे उतार इस में पहिले नीलाथोथा पीसडाले पीछे उसी समय इस में मोम डालै फिर पिघलाय ले फिर इस में ये औषधि महीन पीस डाल इन सब को एक जीव कर कांसे की थाली में बहुत सा जल डालै उस में मोम सहित ये सब औषधि डालै हथेली से १ दिन तक अच्छी तरह मर्दन करै पीछे इस मलहम को व्रणमात्र के लगावै तो व्रण मात्र और चांदा आदि सब अच्छे होंय ॥ १७ ॥ यहभी वैद्यकुतूहल में है ॥ अथवा सिंदरफ ३ पैसे भर सुपेद मोम ३ पैसे भर सज्जी १ पैसे भर नींबके पत्तों की टिकड़ी कर गौके घृत में पकावै और मोम घृत में पिघलाय ले मुरदासंग १ पैसेभर

ले पीछे इन्हैं महीन पीस एक जीव कर ब्रण के लगावै तौ ब्रण मात्र अच्छे होंय ॥ १८ ॥

अथ शरीर में हाथ पांव आदि फटि २ बेवांई सी पड़ जांय उसके अच्छे होने की मलहम ॥

राल १ पैसेभर। कत्था १ पैसेभर। कालीमिरच १ पैसेभर। गौका घृत २ पैसेभर। चंबेली का तेल ४ पैसेभर। इन सब औषधियों को महीन पीस लोहके करकुले में मलहम करले पीछे इस को लगावै तो हाथ पैर आदि का फटना निश्चय अच्छा होय १९ ॥

अथ नींब की मलहम ॥

नींबके पत्तों का रस १ सेर काढ़ै पीछे गौका घृत पाव ऽ। भरकरछुलेमें चढ़ाय उसको गरमकरै जब गरम होय तब उस में राल ४ पैसे भर डाल उसे पिघलावै जब वह पत्तों का रस उस में सूखजाय और गाढ़ा हो जाय तब कत्था १ पैसेभर। नीलाथोथा १ पैसे भर। मुरदासंग १ पैसे भर इन्हैं महीन पीस उसमें डाल एक जीव कर पीछे कपड़ेमें लगाय ब्रण के ऊपर लगावै तो ब्रण निश्चय अच्छा होय २० ॥

अथ ब्रणके स्थान की त्वचा का वर्ण अच्छे करने की औषधि ॥

मैनसिल। मंजीठ। लाख। दोनों हल्दी। ये बराबर ले इन्हैं घृत सहत में महीन पीस त्वचा के लेप करै तौ ब्रण की त्वचा का शरीर का सा वर्ण होय ॥ २१ ॥ इति नाड़ी ब्रण रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी
विरचिते अमृत सागर नाम ग्रंथे श्लीपद विद्रधि ब्रणशोथ शरीर ब्रण
वायु पित्त कफादि और शस्त्रादि के आगंतुक ब्रणअग्नि दग्ध
ब्रण ग्रन्थि भग्न नाड़ी ब्रण इन सर्व रोगों के भेद संयुक्त
उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणं नाम पंचदश-
स्तरङ्गः ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

* * *

अथ भगन्दर रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

गुदा के आस पास चारों ओर दो दो अंगुल में फुनसी होंय और फूटै तब वहां पीड़ा होय और उस जगह फुनसी बहा करैं उसको भगंदर कहिये और भग गुदा और वस्तिके बीच यह होय है भगकी सी तरह यह रोग होय है इस वास्ते इसे बैद्य भगंदर कहै हैं सो भगंदर पांच प्रकार का है बायुका १ पित्त का २ कफका ३ सन्निपात का ४ शस्त्रादिक की चोट लगने का ॥ ५ ॥

अथ बायु के शतयोनिक भगन्दर का लक्षण ॥

जो पुरुष कषैला और रूखा बहुत भोजन करै उसकी बायु कोप को प्राप्त होय गुदाके पास फुनसी करै और आलस्य कर पुरुष उसका यत्न करै नहीं तब वह फुनसी पकै और उस जगह पीड़ा बहुत करै और वह फूटै तब उस में राद आदि मल मूत्र बीर्य्य ये भी निकला करै और उस में चलनी के सदृश सौ छिद्र होजांय इस्से इसको शतयोनिक भगन्दर कहते हैं ॥

अथ पित्त के उष्ट्रग्रीव भगन्दर का लक्षण ॥

गरम वस्तु के खाने से पित्त कुपित्त होय है तब गुदा के चौगिर्द दो अंगुल की जगह में लाल फुनसी तत्काल पकि जांय और उस में गरम २ राद निकलै और वह फुनसी ऊंटकी गर्दन के सदृश ऊंचीहोय उसको पित्त का उष्ट्रग्रीव भगन्दर कहै हैं ॥ २ ॥

अथ कफ के परिस्रावी भगन्दर का लक्षण ॥

उसमें खुजली बहुत चलै और गाढ़ी राद निकलै और पीड़ा थोडी रहै वह फुनसी सुपेद होंय स्रवा करै उस को परिस्रावी कफका भगन्दर कहिये ॥ ३ ॥

अथ सन्निपात के शम्बूकावर्त्त भगंदर का लक्षण ॥

उस फुनसी में बहुत प्रकार की तो पीड़ा होय और बहुत प्रकार के वर्ण होंय और वह स्रवा करै और वही

फुनसी मुनक्कादाख के सदृश होय और शंखकी भीतरली नाभि के सदृश होय उसे सन्निपात का शम्बूकावर्त्त भगन्दर कहिये ॥ ४ ॥

अथ शस्त्रादिक की चोट लगने के भगन्दर का लक्षण ॥

गुदाके पास कांटे आदि लगे होंय अथवा वहां खुजलाने से नखादिक लगिजांय अथवा वहां के बाल बनाने में छूरा की धारलगि जाय तब वहां फुनसी होय और वह फुनसी फूटे तब उसकी राद के चेप से वहां और फुनसी हो जांय और वे जांय नहीं और खवाही करें उसे उन्मार्ग संज्ञिक शस्त्र की चोट लगने का भगन्दर कहिये ॥ ५ ॥

अथ भगन्दर का कष्टसाध्य लक्षण ॥

भगन्दर तौ सबही कठिनता से अच्छे होंय परंतु सन्निपात का और चोट लगने का भगन्दर अच्छा होय नहीं ॥

अथ भगन्दर का यत्न ।

गुदा की जगह भगन्दर उपजा जाने तब वैद्य जोंक आदि लगाय उस जगह का रुधिर तत्काल कढ़ाय डालै तौ वे फुनसी पकें नहीं अथवा उस जगह फुनसी उपजी जाने तौ वहां सांटी की जड़ । गिलोय । सोंठ । मुलहठी । बड़के कोमल पत्ते इन्हैं महीन पीस सुहाता २ गरम लेपकरै तौ भगन्दर की फुनसी अच्छी होंय ॥ १ ॥ अथवा तिल। नींबका बक्कल । मऊआ । इन्हैं महीन पीस शीतल जलसे लेप करै तो पित्त का भगन्दर अच्छा होय ॥ २ ॥ अथवा चमेली के पत्ते । बड़के पत्ते । गिलोय । सोंठ । सेंधानौन इन सबको मट्ठे में महीन पीस भगन्दर के लेप करै तौ भगन्दर अच्छा होय॥ ३॥ अथवा हल्दी । आकका दूध । सेंधानौन । गूगल । नीब के पत्ते इन्हैं औटाय इन में अनुमान माफिक तेल डाल पकावै जब जलमात्र जल जाय और तेल मात्र आय रहै तब इस तेल का मर्द्दन करै तौ भगन्दर जाय॥ ४॥

अथवा गूगल। त्रिफला। पीपल इन्हें बराबर ले महीन पीस १। टंक जल से ले तौ शोथ। गोला। बवासीर। भगन्दर इनको यह दूर करै है ५॥—इति नवकार्षिक गूगल॥

अथवा बहुत चतुर बैद्य वा सर्घियों से चीरा दिवावै और मलहम आदि लगाय व्रण का यत्न करै तौ भगन्दर अच्छा होय॥ ६॥ भगन्दर वाला इतनी बस्तु करै नहीं खेद। मैथुन। युद्ध। घोड़े की सवारी और नवीन अन्नका भोजन और भगन्दर अच्छा होगया होय तौभी १ बर्ष तक इतनी बस्तु करै नहीं॥ यह भाव प्रकाश में लिखा है॥ अथवा रसौत। दोनों हल्दी। मंजीठ। नीब के पत्ते। निसोत। तेजबल। दारूहल्दी। इन्हैं महीन पीस भगन्दर के लेप करै और इन्हीं से उसे धोवै तौ भगन्दर अच्छा होय॥ ७॥ अथवा कुत्ते का हाड़। केंचूआ इन्हैं गधेके रुधिर से महीन पीस लगावे तौ भगन्दर अच्छा होय॥ ८॥ अथवा बिलाई के हाड़ की राख कुत्ते के हाड़ की राख इन्हैं लोहे के पात्र में गौके घृत से घिसि लेप करै तौ भगंदर जाय॥ ९॥ अथवा बिलाई के हाड़ को त्रिफले के रस से महीन पीस भगंदर के लेप करै तौ भगंदर जाय॥ १०॥

अथ रूपराज रसकी बिधि॥

पारा १ भाग तांबे का मैल ४ भाग इन दोनों को इकट्ठा कर काग लहरी के रस से ५ दिन खरल करै पीछे इन्हैं तांबे के संपुट में धरै उसके आस पास और ऊपर रेत से हांडी भरै फिर उसके नीचे लकड़ियों की ८ प्रहर आंच दे फिर स्वांग शीतल होने पर संपुट को उसमें से काढ़ फिर उन्हैं काढ घृत सहत में डबोवे पीछे उन्हैं पक्की मूसी में धर उसकी अंधमसी कर धौंकनी से खूब धौंकावे जब वह चक्र खाय फिरै तब उसमें से काढ़ ले तब वह रस सिद्ध होय पीछे इस रस में से ३ रत्ती सहत से ले तो भगंदर निश्चय

अच्छा होय ऊपर से त्रिफले का काढ़ा पीवे और पथ्यसे रहै ११ ॥—इति रूपराज रसः ॥

अथ रवि सुन्दर रस ॥

पारा १ भाग आमला सार गन्धक २ भाग लेके इन दोनों को खरल में कजली करै फिर ग्वार के पट्ठे के रसमें खरल करे पीछे इसका गोला कर तांबे के संपुट में धरे और उस संपुट को हांडी के चारों ओर आस पास राख भर बीच में धरे पीछे उसके नीचे १ दिन तक अग्नि लगावै फिर स्वांग शीतल होने पर उसको काढ़े फिर उसमे जंभीरी के रसकी ७ पुटदे पीछे उसे १ रत्ती सहत और घृत से चाटै तो भगंदर जाय ऊपर से मूसली । लहसन पीवै इसके खानेके ऊपर मीठा आहार । दिन में सोना । मैथुन और शीतल भोजन करै नहीं ॥ १२ ॥ इति रवि सुन्दर रसः ॥

यह रस सिंधु में लिखा है ॥ इति भगंदर रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्ण ॥

अथ उपदंश रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

हथरस के करने से और इन्द्री में किसी तरह नख और दांत के लगने से अथवा स्त्रियों की भग के ऊपर कठोर बालों के उपाड़ने से अथवा योनि का छिद्र महीन होने से स्त्रियों की योनि दूषित होने से अथवा लिंगेन्द्री को धोवैं नहीं इस कारण से अथवा स्त्री पुरुष से मैथुन बहुत करै इन कारणों से पुरुष की लिंगेन्द्री के विषय ५ प्रकार का उपदंश होय है ॥ और नाना प्रकार का कुपथ्य करै तौ यह रोग होय है सो उपदंश ५ प्रकार का है वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ और लिंगेन्द्री में किसी तरह नख दन्तादिक की चोट लगने का ॥ ५ ॥

अथ वायु के उपदंश का लक्षण ।

लिंगेन्द्री के विषय गरमी कर पीड़ा होय और बेवाई

के सदृश फटि जाय और वह फड़के और उस जगह काली फुनसी होय तौ जानिये कि बायु का उपदंश है ॥ १ ॥

अथ पित्त के उपदंश का लक्षण ॥

उस जगह पीली फुनसियां होजांय और उन में चेप बहुत निकलै और कंठ में दाह होय अथवा फुनसियां लाल होंय तो पित्त का उपदंश जानिये ॥ २ ॥

अथ कफ के उपदंश का लक्षण ॥

जिस में खाज बहुत होय और सुपेद फुनसियां होंय और गाढ़ी राद स्रवै उसे कफ का उपदंश कहिये ॥ ३ ॥ और ये सब लक्षण जिसमें मिलें उसे सन्निपात का उपदंश जानिये ॥ ४ ॥

अथ उपदंश का असाध्य लक्षण ॥

जो लिंगेन्द्री का मांस बिखर जाय उसमें कृमि पड़िजांय इन्द्री गलि जाय। अंडकोश अवशेष रह जाय वह उपदंश असाध्य जानिये ॥ ५ ॥ अथवा उपदंश वाला यत्न करै नहीं और विषय करता रहै उसके समय पाय लिंगेन्द्री बिषे सूजन हो आवै और इन्द्री पकि जाय और उसमें कृमि पड़ि जांय और इन्द्री गलि जाय वह पुरुष मर जाय ॥

अथ लिङ्गार्श का लक्षण ॥

जिस पुरुष की लिंगन्द्री के बिषय धानके अंकुर सदृश ऊपर हो जांय वा कुक्कुट की शिखा सदृश होजांय और लिंगेन्द्री में और उसकी सन्धिकी नसों में पीड़ा बहुत होय और उसकी सन्धि और इन्द्री चूने लगै इसे लिंगार्श कहिये ॥ १ ॥

अथ उपदंश का यत्न ॥

जोंक लगाय के उस जगह का रुधिर कढ़ावै और उसको पकने दे नहीं तो उपदंश जाय ॥ १ ॥ अथवा साटी की जड़। गिलोय। सोंठि। मुलहठी। बड़के कोमल पत्ते इन्हैं औटाय

इनके पानी से लिंगेन्द्री को धोवै तो उपदंश जाय ॥ २ ॥ अथवा लिंगेन्द्री की फस्त खुलवावै तो उपदंश जाय ॥ ३ ॥ अथवा बड़के कोमल पत्ते। मडुआ का बक्कल। जामन का बक्कल। लोध। हड़की छाल। हल्दी य सब बराबर ले इन्हें जल में महीन पीस लिंगेन्द्री के लेप करै तौ सब व्यथा जाय ४ ॥ अथवा लिंगेन्द्री पकिजाय और इन्हीं औषधियों से धोवै तो उपदंश जाय ॥ ५ ॥ अथवा त्रिफले के काढ़े से धोवै अथवा भांगरे के रस से धोवै अथवा कमल के पानी से धोवै अथवा लेप करै तो उपदंश जाय ॥ ६ ॥ अथवा सहंजने के वृक्ष के बक्कल का चूर्ण अथवा दाल्यूणी के बक्कल का चूर्ण महीन पीस लिंगेन्द्री के लेप करै तौ उपदंश जाय ॥ ७ ॥ अथवा सुपारी को पानी में घिस लगावै तो उपदंश जाय ॥ ८ ॥ अथवा कड़ाही में त्रिफले को जलाय उसकी राख कर सहत से उपदंश पै लेप करै तो यह रोग दूर होय ॥ ९ ॥ अथवा पटोल। नींबकी छाल। त्रिफला। चिरायता। खैरसार। बिजैसार। गूगल ये बराबर ले पीछे इन्हैं औटाय पीवै तो उपदंश जाय ॥ १० ॥ अथवा चिरायता। नींबकी छाल। त्रिफला। पटोल। कणगचकी जड़। आंवला। खैरसार। बिजयसार इनके काढ़े के पानी में घृत पकावै जब पानी जल जाय घृत मात्र रह जाय तब इस घृतका लेप करै अथवा भोजन में खाय तो उपदंश जाय ॥ ११ इति भूनिंबादि घृतं ॥

अथवा जो घृत कोढ़ और व्रण के यत्न में लिखा है सो घृत लगावै अथवा भोजन में खाय तो उपदंश जाय ॥ १२ ॥ अथवा जुलाब के लेने से उपदंश जाय ॥ १३ अथवा जंगीहड़ ८ पैसे भर सुपेद कत्था १ पैसे भर नीलाथोथा १ पैसे भर इन्हैं महीन पीस पीछे १०० पक्के नींबू के रसमें खरल करै यह रस सुखाय दे पीछे इसकी गोली १ माशे भर की करै १ गोली नित्य १५ दिन दही के साथ ले और पथ्यसे रहै तो

उपदंश निश्चय जाय ॥ १४ ॥ अथवा नीलाथोथा १ भाग कत्था २ भाग मुरदासंग २ भाग सुपारी की राख २ भाग इन्हैं महीन पीस उपदंश के चांदी में इनको बुरकावै तौ उपदंश जाय ॥ १५ ॥ अथवा पारा । गन्धक । हरताल । सिंदूर मनसिल । इन्हैं तांबे के पात्र में तांबे के घोटे से घृत में पीस ३ दिन पीछे इसे लगावै तो उपदंश जाय ॥ १६ ॥ अथवा अपस्मार दूर होने का यत्न जो पीछे लिखा है उस लिंगार्श का यत्न वैद्य करै ॥ इति उपदंश रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्ण ॥ ये सब भाव प्रकाश में लिखे हैं ॥

अथ शूक रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जो मूर्ख पुरुष बिना बिचारे मूर्ख के कहने से लिंगेन्द्री के पट्टी लेपादिक करि बढ़ाया चाहै उस पुरुष के अठारह प्रकार के लिंगके बिषे शूक रोग उत्पन्न होय हैं सो अठारह प्रकार ये हैं सर्षपिका १ अष्ठीलिका २ ग्रथित ३ कुम्भिका ४ अलजी ५ मृदित ६ संमूढ़ पीडिका ७ अवमंथ ८ पुष्करिका ९ स्पर्शहानि १० उत्तना ११ शतयोनक १२ त्वक्पाक १३ शोणितार्बुद १४ मांसार्बुद १५ मांसपाक १६ विद्रधि १७ तिलकालक १८ ॥

अथ सर्षपिका का लक्षण ॥

जिस के किसी तरह से लिंग में कफ रक्त करके सरसों सदृश फुनसी हो जांय उसे सर्षपिका नाम शूक रोग कहिये ॥ १ ॥

अथ अष्ठीलिका का लक्षण ॥

किसी तरह पुरुष के लिंग के बिषे कड़ी और टेढ़ी पीड़ा को लिये वायु करके फुनसियां होंय उसे अष्ठीला शूक रोग कहिये ॥ २ ॥

अथ ग्रथित का लक्षण ॥

किसी तरह लिंगेन्द्री बिषे कफ से फुनसी हो जांय उसे ग्रथित नाम शूक रोग कहिये ॥ ३ ॥

अथ कुम्भी के शूक रोग का लक्षण ॥

किसी कारण से रक्त पित्त से जिसके लिंग में जामन की गुठली के सदृश फुनसी हो जांय उसे कुम्भीका शूक रोग कहिये ॥ ४ ॥

अथ अलजी शूक रोग का लक्षण ॥

जिसकी इन्द्री में प्रमेह की फुनसी होजांय उसे अलजी कहिये ॥ ५ ॥

अथ मृदित शूक रोग का लक्षण ॥

जिसकी इन्द्री किसी तरह मसल गई होय और उसमें बायु करके पीड़ा हो आवै उसे मृदित कहिये ॥ ६ ॥

अथ संमूढ़ पीड़िका शूक रोग का लक्षण ॥

जिसके दोनों हाथों से इन्द्री पीड़ी गई होय उसके फुनसी होय आवें उसे मूढ़ पीड़िका कहिये ॥ ७ ॥

अथ अवमंथ शूक रोग का लक्षण ॥

जिसके किसी कारण से लिङ्ग के बिषे कफ रुधिर के दुष्टपने से बड़ी और बहुत फुनसियां होय आवें और उनमें पीड़ा होय रोमांच हो आवैं उसे अवमंथ शूक रोग कहिये ॥ ८ ॥

अथ पुष्करिका शूक रोग का लक्षण ॥

जिसकी सुपारी के ऊपर पित्त रुधिर के कोप से फुनसियां बहुत होंय उसे पुष्करिका शूक रोग कहिये ॥ ९ ॥

अथ स्पर्श हानि शूक रोग का लक्षण ॥

जिसकी इंन्द्री किसी कारण से हाथ आदि का स्पर्श सहै नहीं उसको स्पर्शहानि शूकरोग कहिये ॥ १० ॥

अथ उत्तमा शूक रोग का लक्षण ॥

जिस पुरुष के अजीर्ण से मूंग उड़द के सदृश रक्तपित्त के कोप से लिङ्ग के बिषय लाल फुनसी होजांय उसे उत्तमा शूक रोग कहिये ॥ ११ ॥

अथ शत योनक रोग का लक्षण ॥

जिसके लिंग के विषे किसी कारण से वात रुधिर के कोप से छिद्र अधिक पड़ि जांय उसे शतयोनक कहिये ॥ १२॥

अथ त्वक्पाक शूक रोग का लक्षण ॥

जिसकी इन्द्री वायु पित्त कफ करकै पकिजाय और उस में दाह होय और पीड़ा से शरीर में ज्वर होय आवे उसे त्वक्पाक शूक रोग कहिये ॥१३ ॥

अथ शोणितार्बुद शूक रोग का लक्षण ॥

जिसकी इन्द्री में काली लाल फुनसी हो आवैं और वहां पीड़ा होय उसको शोणितार्बुद कहिये ॥ १४ ॥

अथ मांसार्बुद शूक रोग का लक्षण ॥

जिसकी इन्द्री का मांस बिखर जाय और वहां पीड़ा अधिक होय तौ उसे सर्व दोष के कोप का मांस पाक कहिये ॥ १५ ॥

अथ बिद्रधि शूक रोग का लक्षण ॥

जिसके लिंग में सन्निपात के कोप से फुनसियां उठै उसे बिद्रधि शूक रोग कहिये ॥ १६ ॥

अथ तिलकालक शूक रोग का लक्षण ॥

जिसकी इन्द्री में काले और नाना प्रकार के रंग को लिये और विष को लिये ऐसी फुनसी होंय और पकने लग जांय और उस में राद पड़ै इन्द्री गलि जाय यह सन्निपात के कोप से होय है इसे तिलक लक शूक रोग कहिये ॥ १७॥

अथ शूक रोग का असाध्य लक्षण ॥

मांसार्बुद १ मांस पाक २ बिद्रधि ३ तिलकालक ४ ये चार अच्छे नहीं होंय ॥ १ ॥

अथ शूक रोग का यत्न ॥

अठारहों शूक रोगों का विष दूर करने वाला यत्न कीजै १ अथवा लिंगेन्द्री के जोंक लगाय दुष्ट रुधिर कढ़ाय डालिये तौ शूक रोग जाय ॥१॥ और इन्द्री के अच्छा

जुलाब दे तौ शूक रोग जाय ॥ २ ॥ अथवा लघु भोजन से शूक रोग जाय ॥ ३ ॥ अथवा त्रिफले के काढ़े से गूगल खाय तौ शूक रोग जाय ॥ ४ ॥ अच्छी औषधियों के लेप और सेक से शीतल यत्न से यह रोग जाय ॥ ५ ॥ अथवा दारुहल्दी । तुलसी । मुलहठी । धमासा इन्हें तेल डाल पकावै उससे औषधि सीझि जांय तब इस तेलका मर्दन करै तौ शूक रोग जाय ॥ ६ ॥ अथवा खरैटी के तेलका मर्दन करै तौ शूक रोग जाय ॥ ७ ॥ यह सर्व संग्रह में लिखा है ॥ इति शूक रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्ण ॥

अथ कुष्ठ रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

विरुद्ध अन्न पान के खाने पीने से पतली चिकनी भारी वस्तु के खाने से और धूपमें रहने से श्रम करने से वमनऔर मल मूत्रके वेगके रोकनेसे बहुत अग्निके तापनेसे बहुत भोजन के करने से शीत उष्णके नहीं गिननेसे श्रमके करनेसे भय के लगने से और धूप भय श्रम से दुखित हुआ जो पुरुष और तत्काल इसके ऊपर शीतल पानी पीने और अजीर्ण में भोजन करने से और वमन जुलाब आदि में कुपथ्य करने से नवीन जलके पीने से दही मछली बहुत नोन बहुत खटाई और उड़द । मूली । पिसाअन्न । तिल । हल्दी । गुड़ इनके बहुत खाने से दिनके सोने से ब्राह्मण के शाप से और अनेक प्रकार के अधिक खाने से स्त्री संगसे दिनके सोने से और अनेक प्रकार के पापों के करने से मनुष्यों का वायु पित्त कफ और सातों धातु दुष्ट होंय उसके शरीरके रुधिर मांस के जलको दूषित करैं और १८ प्रकारके कोढ़ के कारण प्रगट करै हैं ॥

अथ अठाहर प्रकार के कोढ़ों का नाम ॥

कपाल १ उदुम्बर २ मंडल ३ ऋक्षजिह्व ४ पुंडरीक ५ सधुम कहिये विभूति ६ काकण ७ एककुष्ट ८ गजचर्म ९ चर्मदल १० विचर्चिका ११ पामा १२ दाद १३ विस्फोटक १४ वैपादिक १५ किटिभ १६ अलस १७ शतारु १८ ॥

अथ कुष्ठ रोग का पूर्वरूप ॥

पहिले व्रण होंय, वे व्रण कोमल, होंय अथवा खरदरा बहुत जिनका स्पर्श होय अथवा रूखा होय अथवा व्रणोंमें दाह होय खुजली चले वा त्वचा सूख जाय व्रणों से पीड़ा होय व्रण ऊंचा होय और शूल बहुत होय और तत्काल उसकीउत्पत्ति होय और बहुत दिन तक रहै और कुपथ्य तौ थोड़ा करै परंतु कोप बहुत होय और बायु के होने से रोमांच होंय और उसमें रुधिर काला निकले जिसमें ये लक्षण होंय तौ जानिये कि इसके कोढ़ होगा १ ॥

अथ कोढ़ का सामान्य लक्षण ॥

पूर्व्वजन्म के पाप से मनुष्यों की कुबुद्धि से बिकूर्च्चित होकर कुपथ्य कर पीछे उन कुपथ्यों से कोप को प्राप्त हुआ जो बायु। पित्त। कफ। से शरीर की नसों में प्राप्त होय त्वचा रुधिर और मांस दूषित करै और शरीर की त्वचा का स्वरूप और साही करदे उसको वैद्य कोढ़कहै हैं १ और बायु शरीर में बहुत कोप कर कपाल कुष्टको पैदा करैहै शरीर में कफ कोप को प्राप्त होय तब मंडल नाम कोढ़को करै ॥ बायु पित्त शरीर में कोप को प्राप्त हुआ होय तौ बिचर्चो और ऋक्षजिह्व नाम कोढ़ को पैदा करै है ॥ और बायु। कफ। शरीर में कोप को प्राप्त होकर गजचर्म और किटिभ कुष्ट सिधम अलस कुष्ट बिपादिका इनको पैदा करैहै ॥ पित्त। कफ शरीर में कोप को प्राप्त होकरदाद शतरुषी पुण्डरीक बिसफोटक कोढ़ पांव चर्मदल कोढ़ इन को पैदा करै है ॥ और सब बायु। पित्त। कफ शरीर में कोप को प्राप्त होकर काकण नाम कोढ़ को पैदा करैहै १ ॥

अथ सात महा कुष्ठ के मध्ये कापालिक कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी शरीर की त्वचा काली लाल और फटी रूखी औरकठोर और सूखी होय और उसमें पीड़ा बहुत होय

उस कोढ़ को वैद्य कापाल नाम कोढ़ कहै हैं ॥ यह कोढ़ विषम है दूर से जाय २ ॥

अथ औदुम्बर कुष्ठ का लक्षण ॥

जिसकी शरीर की त्वचा में दाह और ललाई बहुत होय और खुजली बहुत चलै रोम २ में पीड़ा होय और शरीर की त्वचा गूलर के फल सदृश होजाय उसे औदुम्बर कोढ़ कहिये ३ ॥

अथ मण्डल कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा सुपेद और लाल होय और वह स्थिर रहै चिकनी और ऊंची होय गोली रहा करै उसे मण्डल नाम कोढ़ कहिये ४ ॥

अथ सिध्म नाम विभूति कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा सुपेद तांबे के सदृश होय और त्वचा सूक्ष्म होय उसमें खुजली चलै और महीन २ त्वचा उतर जाय और वह विभूति मुख्य हृदय में बहुत होय घिया के फूल के सदृश होय उसे वैद्य सिध्म नाम विभूति कोढ़ कहैं हैं ५ ॥

अथ काकण नाम कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा रेशम के सदृश होय बीच में काली अन्त में लाल ऐसी होय और वह पकै नहीं जिसमें पीड़ा बहुत होय उसे काकण नाम कोढ़ कहैं हैं सो सन्निपात के कोप से उपजै है यह अच्छा होय ॥ ६ ॥

अथ पुण्डरीक नाम कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा सुपेद ललाई को लिये होय कमल की पांखड़ी सदृश होय वह कफ के कोप से होय है उसे वैद्य पुण्डरीक कोढ़ कहैं हैं ॥ ७ ॥

अथ ऋक्ष जिह्व नाम कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा रुधिर पर्य्यन्त में लाल होय और जिसमें काली भी होय उसे ऋक्ष जिह्व कोढ़ कहै हैं ॥ ८ ॥

अथ ११ क्षुद्र कोढ़ हैं तिनमें एक कुष्ट नाम कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में पसीना नहीं आवै बड़ा जिसका स्थान होय मछली के टूक सदृश होय उसे एक कुष्टनाम कोढ़ कहै हैं ॥ १ ॥

अथ गजचर्म्म का लक्षण ॥

हाथी के चर्म सदृश जिसकी त्वचा बदरंगी होय उसे गजचर्म्म कोढ़ कहिये ॥ २ ॥

अथ चर्मदल कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा शूल को लिये लाल होय और जिस खुजली चलै और जिसमें फोड़े फटे से होंय और हाथ का स्पर्श न सहा जाय उसे चर्मदल कोढ़ कहिये ॥ ३ ॥

अथ बिचर्च्चिका कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में फुनसी खाज को लिये होंय और काली होंय और उनमें चेप निकले और हाथ पैर में होंय उसे बिचर्च्चिका कोढ़ कहिये ॥ ४ ॥

अथ पामा नाम कोढ़ का लक्षण ॥

जिसके शरीर में छोटी २ और बहुत फुनसी होंय और जिनमें चेप निकले खाज होय और लाल फुनसी होंय और दाह होय उसे पामा नाम पांव कोढ़ कहिये ॥ ५ ॥

अथ दाद नाम कोढ़ का लक्षण ॥

जिसमें खाज होय और फुनसियां लाल होंय त्वचा से ऊंची होंय ये लक्षण होंय तो दाद नाम कोढ़ कहिये ॥ ६ ॥

अथ दाद के भेद कच्छ दाद का लक्षण ॥

जिसके हाथ पैर कांछ कटिमें जो फुनसियां होंय और जिसमें दाह होय उसे कच्छदाद कोढ़ कहिये ॥ ७ ॥

अथ बिस्फोटक नाम कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में फोड़े काले और लाल और छोटे २ होंय उसे बिस्फोटक नाम कोढ़ कहिये ॥ ८ ॥

अथ किटिभ नाम कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में सूखे व्रण के स्थान माफिक लाल खरदरा कठोर स्पर्श होंय उसे किटिभ नाम कोढ़ कहिये ॥ ९ ॥

अथ वैपादिक कोढ़ का लक्षण ॥

जिसमें खुजली चलै दाह और पीड़ा को लिये पैरही में होय उसे वैपादिक कोढ़ कहिये ॥ १० ॥

अथ अलसक नाम कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में लाल खुजली को लिये फुन्सी होंय उसे अलसक कोढ़ जानिये ॥ ११ ॥

अथ शतारु नाम कोढ़ का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा में फुन्सियां लाल काली दाह को लिये होय उसे शतारु नाम कोढ़ कहिये ॥ १२ ॥—अथ शरीर की सात धातुवों में प्राप्त हुये जो कोढ़ तिनका पृथक् २ लक्षण ॥

अथ रस धातु में प्राप्त हुआ जो कोढ़ उसका लक्षण ॥

त्वचा में स्थित जो कोढ़ उसकी त्वचा का स्वरूप औरसा होय और त्वचा रूखी होय और सूख जाय रोमांच होय पसीना बहुत आवे ये लक्षण होंय तौ रस धातु में प्राप्त हुआ कोढ़ जानिये ॥ १३ ॥

अथ रुधिर में प्राप्त हुआ जो कोढ़ उसका लक्षण ॥

जिसमें खाज होय और राद निकले तब जानिये रुधिर में प्राप्त हुआ कोढ़ है ॥ १४ ॥

अथ मांस में प्राप्त हुए कोढ़ का लक्षण ॥

जो कोढ़ पुष्ट बहुत होय और मुंह बहुत सूखै और फुन्सियां कठोर होंय और उनमें पीड़ा होय ये लक्षण होंय तो मांस में प्राप्त हुआ कोढ़ जानिये ॥ १५ ॥

अथ मेद में प्राप्त हुए कोढ़ का लक्षण ॥

हाथ नष्ट हो जांय कुहनी आय रहें चला जाय नहीं सब अंग टूटने लगि जांय थोड़ी चोट सर्वत्र फैल जाय मुंह

सूखै फुन्सियां कठोर और उनमें पीड़ा होय ये लक्षण होंय उसे मेद में प्राप्त हुआ कोढ़ जानिये ॥ १६ ॥

अथ हाड़ मींगी में प्राप्त हुए कोढ़ का लक्षण ॥

नाक गलि जाय नेत्र लाल हो जांय और उस व्रण में कृमि पड़ि जांय कंठ का स्वर घोंघों हो जाय और व्रण में पीड़ा होय तब जानिये हाड़ मींगी में प्राप्त हुआ कोढ़ है ॥ १७ ॥

अथ वीर्य्य में प्राप्त हुआ जो कोढ़ उसका लक्षण ॥

जिसके माता पिता के वीर्य्य में कोढ़ के दोष बहुत होंय उससे हुई जो सन्तति सो भी कोढ़ी होंय ॥ १८ ॥

अथ कोढ़ का साध्यासाध्य लक्षण ॥

जो कोढ़ बायुकफ का होय और त्वचा रुधिर मांस में रहता होय सो तो साध्य जानिये और जो कोढ़ मेद में जाय प्राप्त होय और कृमि पड़िजांय और दाह होय आवै मन्दाग्नि होय जाय और त्रिदोष का होय सो असाध्य जानिये और शुक्र में प्राप्त हुआ जो कोढ़ सो भी असाध्य जानिये ॥

अथ कोढ़ का असाध्य लक्षण ॥

कोढ़ बिखर जाय औ चूने लगिजाय स्वर घोंघों हो जाय और उसे बमन बिरेचन करने दे नहीं ॥ १ ॥

अथ कुष्ठ का भेद एक श्वित्र भी है उसकी उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जो कोढ़ की उत्पत्ति है वही श्वित्रकी भी उत्पत्ति है श्वित्र भी लाल होय चुवै नहीं कोढ़ चुवे इसमें यही भेद है और श्वित्र का भेद एक किनास है यह लाल होय है पुनः श्वित्र दो प्रकार का है एक तो बायु पित्त कफ का १ दूसरा व्रण का ॥ २ ॥

अथ श्वित्र कोढ़ का साध्यासाध्य लक्षण ॥

महीन होय काले बाल में होय एक दोष का होय नवीन उत्पन्न होय नहीं अग्नि से उपजा होय ऐसा श्वित्र

कोढ़ साध्य जानिये इसमें और लक्षण होंय तो श्वित्र असाध्य जानिये ॥

अथवा कुष्टी के मिलाप से कुष्ट जैसे और मनुष्यों के जाय लगै तैसेही और भी ये रोग जाय के लगे हैं ॥ इन रोग वालों का प्रसंग करै अथवा इकट्ठा भोजन करै अथवा इकट्ठा सोवै तो अथवा आपसमें बस्त्र पहिरे अथवा आपस में किसी बस्तु का लेप करै तो इतने रोग उसके जांय लगै सो रोग लिखते हैं श्वास १ कोढ़ २ ज्वर ३ राजरोग ४ नेत्ररोग ५ शीतला आदि ले ये उड़के लगैं हैं ॥

अथ पुनः कोढ़ का असाध्य लक्षण ॥

गुह्य और मुख हाथों पर होय सो जाय नहीं ॥

अथ कोढ़ रोग का यत्न ॥

हड़कीछाल । कणगचकी जड़ । सरसों । हल्दी । चाव । बावची । सेंधानोन । बायविड़ंग ये सब बराबर ले इन्हैं गोमूत्र में महीन पीस कोढ़ के लेप करै तो कोढ़ दूर होय १ ॥ इति पथ्यादि लेप ॥

अथवा बावची को महीन पीस अदरक के रसकी उसमें पुट दे पीछे इस कोढ़ के ऊपर उबटन करै तो कोढ़ जाय २ ॥ अथवा ब्रह्माजी ने मार्कण्डेय जीको बताया जो प्रयोग सो कोढ़ को आदिले और भी रोगों को दूर करै है सो यहां लिखते हैं ॥ नींबके फूल के समय तो नींबके फूलले और फल बक्कल और जड़ पत्ते ले ये पंचांग ले और दोनों हल्दी । त्रिफला । सोंठि । काली मिरच्च । पीपल । ब्राह्मी । गोखुरू । सोधा भिलावा । चित्रक । वाय विड़ंग । सार । वाराही कन्द । गिलोय । बावची । किरमाला । मिश्री । कूट । इन्द्रजव । पाढ़ । खैरसार यह बराबर ले इन्हैं महीन पीस नागरमोथे के रस की पुटदे पीछे नींब के पंचांग के रसकी ७ पुटदे पीछे भांगरे के रसकी ७ पुटदे फिर इसे छाया में सुखाय महीन पीस चूर्ण करले पीछे अच्छा दिन

देख के कोढ़वाले को सहत के साथ अथवा खैरसार के काढ़े के साथ प्रभात समय गरम पानी से अधेला भरके प्रमाण जुलाब दे पीछे थोड़ा २ टके भर तक बढ़ाता जाय और घृत समेत इसके ऊपर हलका भोजन करे तौ इतने रोगों को दूर करै ब्यौची उदुंबर पुण्डरीक कापाल दाद किटिभ अलसक शतारु बिस्फोटक ये सब जाति के कोढ़ हैं और बिसर्प रोग भगंदर श्लीपद बात रक्त और ब्रण मात्र प्रमेह मात्र प्रदर बिषमात्र उदर के रोग इतने रोगों को यह निंव पंचकावलेह दूर करै है ॥ ३ ॥ इति निंब पंचकावलेहः ॥

अथवा बावची ५ ट० भर सोधा गूगल ५ ट० भर सोधी सोना मक्खी ३ ट० भर सार २। ट० भर गोरख मुण्डी ३ ट० भर त्रिफला ३ ट० भर कणगच १ ट० भर खैरसार ५ ट० भर गिलोय २ ट० भर निसोत २ ट० भर नागरमोथा २ टका भर बायबिडंग १ ट० भर हल्दी १ ट० भर तज १ ट० भर नींबका पंचांग ५ ट० भर चित्रक २ ट० भर इन सब को महीन पीस २ ट० प्रमाण सहत घृत के साथ गोली करै पीछे प्रभातही १ गोली गोमूत्र से ले तौ कोढ़ मात्र और बातरक्त पांडुरोग उदर रोग प्रमेह गोसा आदि रोगों को यह दूर करै है और यह वृद्धताको दूर कर तरुणता को करै है इति स्वयंभुव गूगल ॥

अथवा चित्रक। त्रिफला। सोंठि। मिरच। पीपल। जीरा। कलौंजी। बच। सेधानौन। अतीस। कूठ। चब्य। इलायची। जवाखार। बायबिडंग। अजमोद। नागरमोथा। देवदारु ये सब बराबर ले और इन सब की बराबर सोधागूगल ले पीछे इन सब को महीन पीस एक जीव करैं घृत से ४ मासे भर की गोली करै १ गोली भोजन के समय खाय तो कोढ़ मात्र कृमि ब्रणमात्र संग्रहणी बवासीर गृद्धसी गोला आदि को यह दूर करै है ॥ इति किशोर गूगल ॥

अथवा २ सेर शोधाभिलावा १६ सेर पानी में औटावै पीछे औटते में गिलोय २ सेर कुटि कर डालै जब इस पानी का चतुर्थांश रस रहै तब उतार उसमें गौका घृत १ सेर और गौ का दूध४सेर डाले पीछे मिश्री १ सेर डालै सहत ऽ॥ डाल पीछे मधुरी आंच से पकावै ये सब ठंढी होय तब इस को आंचपर से उतार ये औषधि डालै बावची २ टं० पवांर के बीज २ टं० नींबकीछाल २ टं० हड़कीछाल २ टं० आंवला २ टं० सेंधानौन २ टं० नागरमोथा २ टं० तज २ टं० इलायची २ टं० नागकेसर २ टं० पित्तपापड़ा २ टं० पत्रज २ टं० नेत्र बाला २ टं० खस २ टं० चन्दन २ टं० गोखुरू २ टं० कचूर २ टं० रक्त चन्दन २ टं० ये सब औषधि महीन पीस उस रसमें मिलाय एक जीव करै पीछे इसै १ टं० भर प्रातही जल के साथ नित्यले तो सर्व कुष्ट मात्र बात रक्त बवासीर आदि को यह दूर करै है और इस अमृत भल्लातक का खानेवाला इतनी वस्तु करै नहीं खेद न करै धूप में रहै नहीं अग्नि के पास न जाय खटाई मांस दही खाय नहीं तेल न लगावै मार्ग चले नहीं ॥ ६ ॥

इति अमृत भल्लात कावलेहः ॥

अथवा नींबका बक्कल। गौरीसर। मंजीठ। कुटकी। त्रायमाण। त्रिफला। नागरमोथा। पित्तपापड़ा। बावची। जवासा। बच। खैरसार। रक्तचन्दन। पाढ़। सोंठि। भारंगी। अडूसा। चिरायता। कुड़ाकी छाल। निसोत। इन्द्रायनकी जड़। मूर्बा। बायविडंग इंद्रजव। चव्क। मानपात। गिलोय। बकायन। पटोल। दोनोहल्दी। पीपल। किरमाला की गिरी। सतोन्य बेद। सोधीचित्र मिटी। मंजीठ। करिहारी की जड़। रास्ना। सांटी की जड़। दात्यूणी। सोधा जमालगोटा। भांगरा। कटमला। अंकोट। शाखेटक ये सब औषधि पृथक् २ टं० भर ले इन्हैं जवकुट कर १६ सेर पक्के पानी में औटावै जब इसका चतुर्थांश रहै तब उतार

छान ले पीछे १००० सोधा भिलावा १६ सेर पानीमें औटाय ले जब इस का भी चतुर्थांश रहै तब जुदा रक्खै पीछे इन दोनों को इकट्ठा मिलाय ले पीछे इन दोनों के रस में १०० ट० भर गुड़ की चासनी में ये औषधि डालै सोंठि १ ट० भर मिरच १ ट० पीपल १ ट० त्रिफला ३ ट० नागरमोथा १ ट० बायबिड़ंग १ ट० चित्रक १ ट० सेंधानोन १ ट० चन्दन १ ट० कूट १ ट० अजमोद १ ट० तज १ ट० पत्रज १ ट० नागकेसर १ ट० इलायची १ ट० भर ये सब औषधि महीन पीस अवलेह में डाल इनको एक जीव करै पीछे अच्छा दिन देखि २ ट० भर नित्य खाय तो सर्व कोढ़ मात्र ववासीर व्रण मात्र कृमि रोग रक्तपित्त उदावर्त कासश्वास भगंदर इन रोगों को यह दूर करै है और आमबात को दूर कर पुष्टई को करै है और शरीर की परम कांति को करै है भूख को बढ़ावै है इसका खाने वाला खटाई आदि कुपथ्य करै नहीं गरम वस्तु खाय नहीं—इति भल्लातकावलेह: ॥

अथवा मंजीठ। त्रिफला। कुटकी। बच। दारुहल्दी। नीँब की छाल। गिलोय इन्हैं बराबर ले जवकुट कर ५ ट० का काढ़ा नित्य ले तो कोढ़ मात्र बात रक्तबिसर्प बिस्फोटक इन्हैं दूर करै है ॥ ८—इति लघुमंजिष्ठादि क्वाथ:

अथवा मंजीठ। बावची। पवांड़। नींबकीछाल। हड़की छाल। हल्दी। आंवला। अड़ूसा। सतावरि। खरैटी। गंगेरनकीछाल। मुलहठी। मऊआ। कटली। पटोल। खस। गिलोय। रक्तचन्दन ये सब बराबर ले इन्हैं जवकुट कर ५ ट० भर का काढ़ा करले तौ कुष्टमात्र बात रक्त इनको यह दूर करै है ॥ ९—इतिमध्य मंजिष्ठादि क्वाथ:

अथवा मंजीठ। इन्द्रजव। गिलोय। नागरमोथा बच। सोंठ। हल्दी। दोनोंकटली। नींबकी छाल। पटोल। कूट। कुटकी। भारंगी। बायबिड़ंग। चित्रक। मूर्बा। दवदारु।

जलभांगरा। पीपल। त्रायमाण। पाढ़। सतावरि। खैर-सार बिजयसार। त्रिफला। चिरायता। बकायन। किरमालाकी गिरी। निसोत बावची। रक्तचन्दन। बरना दाल्यूणी धाखोट। अडूसा। पित्त पापड़ा। गौरीसर। अतीस। जवासा। इन्द्रायण की जड ये सब बराबर ले जौकुट कर। ५ टं० का काढ़ा नित्य ले तौ अठारह प्रकार के कोढ़ सात बातरक्त रुधिर बिकार मात्र बिसर्परोग त्वचा का शून्यपना इन सब रोगों को दूर करै है॥ १०॥ इति वृहन्मंजिष्ठादि क्वाथः॥

अथवा कालीमिरच। निसोत। नागरमोथा। हरताल। मैनसिल। देवदारु। हल्दी। दोनोंछड़। कूट। रक्तचन्दन। इन्द्रायनकी जड़। कलौंजी। आककादूध। गोबर का रस। ये सब औषधि धेले २ भर ले सिंगीमुहरा १ पैसे भर कडुआ तेल १ सेर पानी ४ सेर गोमूत्र ८ सेर ले पीछे इन सबको मधुरी आंच से औटावै जब ये सब जल आदि जल जांय तेल मात्र आय रहै तब उतार छानले पीछे इसका मर्दन करै तौ सर्व कुष्टमात्र को यह दूर करै है ११॥ इति लघुमरिचादितैल॥

अथवा कालीमिर्च। निसोत। दाल्यूणी। आकका दूध। गोबरकारस। देवदारु। दोनोंहल्दी। छड। कूट। रक्तचन्दन। इन्द्रायनकी जड़। कलोंजी। हरताल। मैनसिल। कनेरकी जड़। चित्रक। कलिहारी की जड़। नागरमोथा। बायबिड़ंग। पवांड़। सिरसकी जड। कुड़ाकी छाल। नींब की छाल। सतोन्य की छाल। गिलोय। थूहर का दूध। किरमाला की गिरी। खैरसार। बावची। बच। मालकांगुनी। ये सब औषधि २ टके भर सिंगीमुहरा ४ट० कड़ुवा तेल ४ सेर गोमूत्र १६ सेर ले इन सबको इकट्ठा चढ़ाय मधुरी आंचसे पकावै जब गोमूत्र आदि सब जल जाय तेल मात्र रह जाय तब उतार छान ले पीछे इस तेलका मर्दन

करै तो कोढ़ मात्र को दूर करै है ॥ और इसका मर्दन यौवनपने को करै है और यह मनुष्य घोड़ा हाथी आदि के वायु मात्र के रोग दूर करै है १२ ॥ इति मरिचादि तैलं ॥

अथवा हरताल का चोखा पत्र कर चित्रक के रस से १ दिन खरल करै पीछे सांटीके रस सेएक दिन खरल करै पीछे इसकी टिकड़ी कर अच्छी तरह सुखावै फिर इस हरताल को सांटीके पंचांग के खारके बीज में धर चूल्हे पै चढ़ावै और इस हरताल का धुवां निकलने दे नहीं फिर उसकी टिकड़ी को उस सांटी के खारके बीच खूब दाब दे पीछे उसके नीचे निरन्तर एक रात दिन तक मधुरी आंच दे अथवा ४ दिन तक दे फिर स्वांग शीतल हुई उस टिकड़ी को खार में से अच्छे प्रकार चतुर मनुष्य काढ़े वह हरताल तोल में पूरी उतरै निर्धूम और सुपेद होय फिर इस में से २ रत्ती मनुष्य खाय उसके ऊपर मरिचादिक क्वाथ ले तौ अठारह प्रकार के कोढ़ वात। रक्त उपदंश फिरंग वायु इनको यह हरताल दूर करै है और इसका खाने वाला नोन खटाई कड़ुआ रस खाय नहीं धूप में सोवै नहीं और नोन बिना नहीं रहा जाय तौ सेंधानोंन खाय और मीठा बहुत खाय ॥ १३ ॥ इति हरताल की विधि ॥ इसी को तालकेश्वर रस कहै हैं ॥

अथवा पारा। शोधीगन्धक। तामेश्वर। सार। गूगल। चित्रक। शिलाजीत। कुचला। बच। अभ्रक ये सब बराबर और कणगच के बीज एक औषधि के भाग से चौगुनाले प्रथम पारे गन्धक की कजली करै फिर कजली में सब औषधि मिलाय एक जीव करै पीछे इसमें से २ टं० सहत घृत के साथ नित्य खाय ऊपर से चांवल दूधही खाय तौ गलत कुष्ट जाय और शरीर उसका महा सुन्दर कामदेव के सदृश हो जाय ॥ यह रस खाय तौ स्त्री संग करै नहीं १४ ॥ इति गलत्कुष्टारि रसः ॥

अथ बिभूति का यत्न।

कूठ। मूली के बीज। सरसों। हल्दी। केसर इन्हैं सिरस के जल में पकाय लेप करै तौ बहुत दिन की भी बिभूति जाय॥ १५॥ अथवा केले का खार। हल्दी। दारुहल्दी। मूलीके बीज। हरताल। देवदारु। शंखका चूर्ण ये सब बराबर ले इन्हें नागर बेलि के पत्तों के रस में महीन पीस लेप करै तौ बिभूति दूर होय॥ १६॥

अथ चर्मदल कोढ का यत्न॥

अमचूर में किंचित् सेंधालौन डाल जल मे तांबे के पात्र में तांबे के घोटे से खूब पीस लेप करै तौ चर्मदल कोढ़ जाय ॥ १७॥

अथ पांव का यत्न॥

जीरा १ टं० भर सिंदूर ५ टं० इन दोनों को कड़ुये तेल में खूब पीस पकाय इनका लेप करै तौ पांव अच्छी होय॥ १८॥ अथवा मजीठ। त्रिफला। लाख। कलिहारी की जड़। हल्दी। आंवलासार गन्धक। इन्हैं बराबर ले महीन पीस धूप में खूब गरम करै फिर इनका लेप करै तौ पांव अच्छी होय॥ १९॥ अथवा पारा दोनों जीरा। दोनोंहल्दी। कालीमिरच। सिंदूर। आंवलासारगन्धक। मैनसिल। ये बराबर ले पीछे पारे गन्धक की कजली कर इस कजली में ये औषधि महीन पीस गौके घृत में १ दिन खरल करै पीछे इसका मर्दन करै तो पांव दूर होय॥ २०॥ अथवा पारा आंवलासार गन्धक। नीलाथोथा। कत्था। मेंहदी। खुरासानी अजवाइन। मोम। मालकांगनी। ये सब बराबर ले पीछे पारे गन्धक की कजली कर और मोम को घृत में जुदा पिघलावै पीछे ये औषधि पृथक पीस कजली में मिलावै पीछे सब औषधि गौ के घृत में इकट्ठी कर १ दिन तक पीस पीछे इसका मर्दन करै तो पांव आदि रुधिर के सब रोग जांय॥ २१ अथवा सोधी आंवलासार गन्धक

२ टं० नीलाथोथा ३ मासे इन दोनों को पानी से महीन पीस गोली बांधे पीछे इस गोलीको महीन कपड़े में बांध पोटली करै और इस पोटली को गेहूं की अलोनी तीन ३ या ४ चार बाटी में सेकै फिर महीन पीस घृत में चुपड़ खवावै अथवा इसकाबूरे से चूरमा कर ५ दिन खाय तो पांव आदि रुधिर के सब बिकार जांय ॥ २२ ॥ अथवा सेंधानोन । पवांड़केबीज । सरसों । पीपल इन्हैं कांजी केपानी में महीन पीस लेप करै तो पांव की खुजली दूर होय २३ ॥

अथ कच्छ दाद की औषधि ॥

आक के पत्तों का रस और हल्दी के काढ़े का रस इन में सरसों का तेल पकावै पीछे इस तेल का मर्दन करै तो कच्छदाद जाय ॥ २४ ॥ इति अर्क तैलं ॥

अथवा मैनसिल । हीरा कसीस । आंवलासार गन्धक-सेंधानोन । सोनामक्खी । पत्थर फोड़ा । सोंठि । पीपल । करिहारी । कनेर । बायबिड़ंग । चित्रक । दाल्चणी । नींबकेपत्ते ये सब औषधि अधेला २ भर ले इन्हैं जल में महीन पीस इनके पानी में कड़ुवा तेल २ सेर पकावै और उसी में आक और थूहर का दूध आध २ पाव डाल और गोमूत्र ४ सेर डालै पीछे इसको मधुरी आंच से पकावै ये सब जलि जांय तेल मात्र आय रहै तब इसका मर्दन करै तो असाध्य भी कच्छ दाद जाय और पांव खुजली और रुधिर के भी सब रोग जांय ॥ २५ ॥ इति कच्छ राक्षस नाम तैलं ॥

अथ दाद का यत्न ॥

कूट । बायबिड़ंग । पवांड के बीज । तिल । सेंधानोन । सरसों ये सब बराबर ले इन्हैं खटाई से महीन पीस लेप करै तो दाद कोढ़ दूर होय ॥ २६ ॥ अथवा दूब । हड़की छाल । सैंधानोन । पवांड के बीज । कनेर की छाल ये सब बराबर ले पीछे इन्हें कांजी में अथवा मट्ठे में महीन पीस लेप करै तो दाद कच्छ दाद खाज जांय ॥ २७ ॥

अथ श्वित्र नाम कोढ़ का यत्न।

बहेडे की छाल। हड़की छाल। काठूमर। बावची। इन का काढ़ा कर ले तो श्वित्र नाम कोढ़ जाय २८॥ अथवा हरताल। मैनसिल। चिरमिटी। चित्रक इन्हैं गोमूत्र में महीन पीस लेप कर तौ श्वित्र नाम कोढ़ जाय॥ २९॥ ये सब यत्न भाव प्रकाश में हैं॥ अथवा हल्दी ८ टके भर गौ का घृत ६ ट० गौका दूध ४ सेर मिश्री ५ ट० सोंठि १ ट० कालीमिरच १ ट० पीपल १ ट० तज १ ट० नागकेसर १ ट० वायबिड़ंग १ ट० निसोत १ ट० त्रिफला ३ ट० केसर १ ट० नागरमोथा १ ट० ले पीछे इन्हैं महीन जुदा पीस घृत में मकरोय हल्दी और दूध में उसका खेरवा मावा करै पीछे इस मावे समेत खांड की चासनी कर उस में सब औषधि डालै पीछे इसकी गोली टका भर की बांधे १ गोली नित्य खाय तो कोढ़ खुजली फोड़े को दाद इन रोगों को यह दूर करै है॥ ३०॥ इति हरिद्रा खण्ड॥

अथ हरताल मारने की विधि॥

तबकिया हरताल चोखी ले उसमें दसवां हिस्सा सुहागा मिलाय उसकी बाफता के कपड़े में चार पोटली करै पीछे वह पोटली जंभीरी के रसके बीच में धर दोलिका यंत्र कर उसके नीचे २ प्रहर अच्छी गाढ़ी आंच दे औटावै पीछे इसी तरह कांजी के पानी में औटावै पीछे फिर पेठके पानी में औटावै पीछे तेल में औटावै और इसी तरह त्रिफले के पानी में औटावै फिर पेठके पानी में औटावै पीछे इस हरताल को किसी तरह की खटाई में धोयले फिर इसे छिलके के बक्कल के रस में २ दिन रात्रि दिन खरल करै पीछे धूप में सुखाय इसका गोला करै फिर गोले को सकोरे के संपुट में खूब यत्न से मिलाय सरवे को खाम दे पीछे गजपुट में अरने ऊपले की आंच दे शीतल होने के पीछे उस में से संपुट को काढ़ै पीछे हरताल को काढ़ बकरी के दूध से १

दिन खरल कर पीछे फिर इसका गोला कर धूप में सुखावै फिर पलास की ४ सेर राख पक्की हांडी में भरै और उसके बीच में हरताल का गोला धर खूब राख मुहतक दाबि भरै पीछे उस हांडी को चूल्हे पर चढ़ाय नीचे आंच दे उसका धुवां निकलने दे नहीं इसी तरह अनुक्रम से मन्द मध्य और अत्यन्त गाढी ३२ पहर आंच दे पीछे स्वांग शीतल हुए पर हरताल को काढ़ै हरताल सुपेद निकलै निर्धूम तोल को परी पीछे इस पुराने गुड के साथ १ रत्ती खाय ऊपर चने की रोटी साठी चावल गौ का घृत ये २१ दिन खाय और नोन खटाई खाय नहीं तो १८ प्रकार के कोढ़ बात रक्त फिरंग वायु इनको यह हरताल दूर करै है ॥ ३१ ॥ इति हरताल मारण विधिः ॥

अथवा पारा २ टं० सोधीगन्धक २ टं० हरताल २ टं० मैनसिल २ टं० बावची ५ टं० धमासा २ टं० सिंदूर २ टं० दोनों हल्दी ५ टं० इन सब को गौ के घृत से खूब महीन पीस लेप कर २ पहर धूप में बैठै फिर स्नान करै तौ कोढ़ दाद खाज ३ दिन में दूर होय ॥ ३२ ॥ अथवा छीलकी जड़ के सूखे बक्कल २५ टके भर की राख कर उसको नवीन पक्की अच्छी हांडी में भर उसके बीच तबकिया चोखी हरताल २५ मासे भर यत्न से धर गाड़ दाब दे फिर उस हांडी के ऊपर सरवा ढक पीछे उस हांडी को चूल्हे पर चढ़ाय उसके नीचे १ पहर तक अत्यन्त अग्नि से जलावै फिर स्वांग शीतल होने पर नये वस्त्र से छान ले फिर इस राख को २ रत्ती प्रमाण ले पिसा हुआ जीरा १ मासे ले इन दोनों को एक कर पक्के नागर बेल के पत्तों के साथ शीतलजल से खाय इस के ऊपर चने की अलोनी रोटी एक मंडल तक खाय इसके खाने वाला पवन धूप खाय नहीं इस विधि से रहै तौ अठारह प्रकार के कोढ़। बातरक्त। वणमाच पीड़िका। बात व्याधि। इन सब रोगों को यह दूर करै है ॥ ३३

अथ दाद का यत्न ॥

पवांड़ के बीज। बावची। सरसों। तिल कूठ। दोनों हल्दी। नागरमोथा ये सब बराबर ले इन्हें मट्ठे में खूब महीन पीस लेप करै तौ दाद कंडू ब्योची ये सब दूर होंय ॥ ३४ ॥

अथ कोढ़ के दूर होने का लेप ॥

नीलाथोथा। सुहागा ये दोनों २ टंक बावची ५ टंक इन तीनों को महीन पीस जलभांगरे के रसकी इस में ७ पुट दे फिर इसका लेप करै तौ कोढ़ जाय ॥ ३५ ॥ ये सर्व यत्न बैद्य रहस्य में लिखे हैं ॥

अथ महा लेप ॥

पारा १ टके भर शंखकाखार १ ट० ओंगीझाड़े का खार १ट० तिलोंका खार १ट० सांठीकाखार १ट० हड़का खार १ ट० अड़ूसेकाखार १ट० पटोलकाखार। अरण्यकाखार। जवाखार। सुहागा। सज्जी। नौसादर। आंवलासार। गन्धक पांचौ नौन। कूट। सोंठि। कालीमिरच। पीपल। डासरेकी जड़। आक की जड़। नीलाथोथा। कलिहारी की जड़। हल्दी। जिमीकन्द। गोरखमुंडी का खार। काहू का खार। पीपल का खार। राई। सरसों। सिंदूर। शिलाजीत पापड़ाखार। कबीला। लोध। थूहरकी जड़। आमकी जड़। चित्रक। आकके पंचाङ्गका खार। ये सब औषधि पृथक् २ एक टके भर ले फिर इन सब औषधियों को महीन पीस इकट्ठा कर गोमूत्र में मिलाय तांबे के बड़े पात्र में रक्खे फिर इसमें इतनी बस्तु और डालै भैंस। घोड़ा। बकरा। हाथी। ऊंट इनका मूत्र नीबू का रस। जम्हीरी का रस। बिजौरे का। रस नारंगीका रस। चनेकाखार। सहंजनेकारस। राई के संयोग की सातों धातुकी कांजी ये सब उसके अनुमान माफिक डालै फिर उसका मुह ढांकि २१ दिन अच्छे प्रकार से धर रक्खै फिर इसका लेप करै तौ सर्व कोढ़

घाव दूर होंय और गंडमाला। बिसर्प। बवासीर। व्योची। बायु के सब रोग १ महीने में ये सब रोग जांय ॥ ३६ ॥ यह रस सारसंग्रह में लिखा है ॥ इति कोढ़ रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी
विरचिते अमृतसागर नाम ग्रन्थे भगन्दर उपदंश लिङ्गार्श के
रोग कोढ़ इन सब रोगों के भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षण यत्न
निरूपणं नाम षोडश स्तरङ्गः ॥ * * * * * * * ॥

अथ शीतपित्त उदर्द कोढ़ उत्कोढ़ इन रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

शीतल पवन के स्पर्श करने से कफ और पवन दुष्ट होय पित्त सहित अनेक कारण करके दुष्ट होय त्वचा में और बाहर बायु और कफ करके शीत पित्तादिक के रोगों को पैदा करै है ॥

अथ शीत पित्तादिक का पूर्व्व रूप ॥

तृषा लगै। अरुचि होय। बमनसी आवै। देह में पीड़ा होय। शरीर भारी होय। नेत्रलाल होजांय। ये लक्षण होंय तौ जानिये कि शीत पित्तादि का रोग होगा ॥

अथ शीत पित्त उदर्द का लक्षण ॥

जैसे कीड़े के काटे से चकत्ते होआवैं तैसे त्वचा के ऊपर चकत्ते बहुत होजांय और उन में खुजली होय और पीड़ा बहुत होय और छर्दि और ज्वर होय दाह लगि जाय तौ जानिये कि शीत पित्त है और इसी को उदर्द कहिये बायु की अधिकता होय तौ शीत पित्त जानिये कफ की अधिकता होय तौ उदर्द जानिये यह शिशिर ऋतु में बहुत होय है ॥

अथ कोढ़ उत्कोढ़ का लक्षण ॥

बमन को रोकै तौ पित्त कफ दुष्ट होय लाल २ खुजली को लिये चकत्ते शरीर में कर दे उसे कोढ़ कहिये वह

थोड़ी देर रहै और यही बहुत देर रहै तौ उत्कोढ़ कहिये ॥

अथ शीत पित्त उदर्द कोढ़ उत्कोढ़ रोग का यत्न ॥

औषधियों से वमन कराय दे तौ शीत पित्त उदर्द दूर होय ॥ १ ॥ अथवा पटोल । नींबकी छाल । अडूसा । त्रिफला गूगल । पीपल इनका काढ़ा दे तौ शीतपित्त उदर्द जाय ॥ २ ॥ अथवा जुलाब दे तौ यह रोग जाय ॥ ३ ॥ अथवा कडुवे तेल का मर्द्दन करै और शरीर को गरम पानी से धोवै तौ शीत पित्त उदर्द जाय ॥ ४ ॥ अथवा त्रिफला सहत से खाय तो शीत पित्त उदर्द जाय ॥ ५ ॥ अथवा मिश्री के संयोग से कुटकी का जुलाब ले तो शीतपित्त उदर्द जाय ६ ॥ अथवा गुड़ आंवला खाय अथवा अजवाइन । सोंठ । कालीमिरच । पीपल । जवाखार इनका चूर्ण २ टं० ७ दिन गरम पानीसे ले तो शीत पित्त उदर्द जाय ॥ ७ ॥ अथवा अदरक का रस पुराना गुड खाय तो शीत पित्त उदर्द जाय ॥८॥ अथवा सरसों । हल्दी । पवांडके बीज । तिल इन सबको कडुवे तेल में महीन पीस लेप करै तो शीत पित्त उदर्द जाय ॥ ९ ॥ अथवा अजमोद ५ टं० गुड़ ५ टं० इन दोनों को इकट्ठा कर ५ दिन वा ७ दिन नित्य खाय तो शीतपित्त उदर्द जाय ॥१० ॥ अथवा बकायन का बकला १ टं० महीन पीस गौके घृत के साथ पीवे तो शीत पित्त उदर्द जाय ॥ ११ ॥ अथवा रुधिर कढ़ाइये तो शीतपित्त उदर्द जाय ॥ १२ ॥ आंवले को और नीबके कोमल पत्तों को घृत में तल १ टं० प्रमाण मनुष्य १५ दिन खाय तो फोड़े का रोग पित्ती कृमि शीतपित्त खुजली के रोग गरमी का रोग इन्हें दूर करै है ॥ १३ ॥ अथवा छीली अदरक के छोटे २ टूक १ सेर करै और गौका घृत २ सेर ले उसका और गौका दूध २२ सेर ले उसका मावा कर उसमें अदरक के टूक घृत से चुपड करि डाले पीछे उस मावे के

नीचे आंच दे उसका खरा मावा करै और मिश्री १ सेर की चासनी पतली अवलेह कीसी कर उसमें मावे को डाल और ए औषधि महीन पीस डालै सो लिखते हैं पीपला मूल। मिरच। सोंठ। चित्रक। बायबिडंग। नागर मोथा। नागकेशर। तज। इलायची। पत्रज। कचूर ये सब औषधि। पृथक् २ एक २ ट० भर ले इन्हें महीन पीस मिश्री की चासनी में डालै पीछे इसको नित्य १ ट० भर प्रभात और संध्या को खाय तौ शीतपित्त। उदर्द कुष्ट राजरोग। रक्तपित्त। खांसी। अरुचि वायु का गोला। उदावर्त। सूजन खुजली। कृमि रोग। उदरके रोग इन रोगों को यह अवलेह दूर करै है और बल वीर्य को बढ़ावै है और शरीर को पुष्ट करै है ॥ १४ ॥ इति आर्द्रक अवलेहः ॥ यह भाव प्रकाश में लिखा है ॥

अथवा सेंधानोन। घृत सें महीन पीस शरीर के मर्दन करै पीछे लाल कामली ओढ़ै तो पित्ती का रोग जाय ॥ १५ ॥ अथवा गौका घृत। गेरू। सेंधानोन। कुसुम्भ के फूल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस शरीर के उबटन करै तो पित्ती दूर होय ॥ १६ ॥ अथवा। चिरायता। अडूसा। कुटकी। पटोल। त्रिफला। रक्तचन्दन। नींबकीछाल। इनका काढ़ा ले तो पित्ती रोग। फोड़ा। दाह। ज्वर। मुखशोख। तृषा के रोग। वमन इन सब रोगों को यह काढ़ा दूर करै है ॥ १७ ॥ अथवा अरने उपले की राख शरीर के मर्दन करै तौ पित्ती जाय ॥ १८ ॥ अथवा फिटकड़ी। नागरबेल के पत्तों के रसमें पीस शरीर के मर्दन करै तो पित्ती जाय ॥ १९ ॥ अथवा लहसन १ ट० भर खाय अथवा त्रिफला ५ ट० भर महीन पीस सहत से चाटै तो पित्ती जाय ॥ २० ॥ ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं ॥ अथवा मेथीदाना १ ट० भर काली मिरच १ ट० भर हल्दी १ ट० भर इन सब को महीन पीस पीछे इन को अदरक के रसकी ३ पुट दे पीछे गोली २ ट०

प्रमाण की कर १ गोली नित्य खाय तो पित्ती के सर्व विकार दूर होंय ॥ २१ ॥ यह वैद्यरहस्य में लिखा है ॥ इति शीतपित्त उदर्द कोढ़ उत्कोढ़ रोग ये पित्ती के भेद हैं तिनकी उत्पति लक्षण यत्न ॥

अथ अम्लपित्त की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

नोन खटाई गरम वस्तु के खाने से पित्त है सो कोप को प्राप्तहो अम्लपित्त को पैदा करै है सो अम्लपित्त रोगतीन प्रकार का है बायुका १ कफका २ कफबायुका ३ ॥

अथ अम्लपित्त का लक्षण ॥

अन्न पचै नहीं बिना खेद किये श्रम होय बमनसी आवै कड़वी खट्टी डकार आवै शरीर भारी होय हृदय कंठमें दाह होय भोजन में अरुचि होय ये लक्षण होंय उसे अम्लपित्त कहिये ॥ १ ॥ यह अम्लपित्त दो प्रकार का है एकतो ऊर्द्ध्वगामी सोतो मुख में ही होकर जाय एक अधोगामी गुदा द्वारा होय जाय है ॥

अथ ऊर्द्ध्वगामी अम्लपित्त का लक्षण ॥

जो बमन करै सो हरा या पीला काला लाल अत्यन्त निर्मल मांसके जल सदृश होय और अम्लपित्त कफ से मिला होय तो बहुत चिकना छांदै और कड़वा सलोना तीखा छांद ॥ १ ॥

अथ अधोगामी अम्लपित्त का लक्षण ॥

उसके मल में नाना प्रकार के बर्ण होंय और तृषा दाह मूर्छा मोह होय हृदय दूखै बमनसी आवै शरीर में चकत्ते हो आवैं अग्नि मन्द होजाय रोमांच होय पसीना आवै शरीर पीला होजाय ये लक्षण होंय तब जानिये अधोगामी अम्लपित्त है २ ॥

अथ भोजन किये पीछे अम्लपित्त का लक्षण होय सो लिखते हैं ।

भोजन करै अथवा भोजन नहीं करै तो तीखा और खट्टा बमन करै और शरीर में खाज होय चकत्ते पड़ जांय

और डकार बहुत आवै और कंठ कूख में दाह शिर में पीड़ा हाथ पैरों में दाह भोजन में अरुचि ज्वर होय ये लक्षण होंय तब जानिये इस के अम्लपित्त का रोग है ॥ १ ॥

अथ अम्लपित्त में और भी दोषों का मिलाप होय सो लिखते हैं ॥

अम्लपित्त में बायु और कफका मिलाप होय तौ बैद्य इहको प्राप्त होय है ॥

अथ दोष भेद ॥

जिसमें कम्प होय प्रलाप मूर्च्छा शरीर में चिमचिमाहट होय और शरीर में पीड़ा और शूल होय अंधेरी घुमेर मोह और हर्ष होंय तबजानिये अम्लपित्त में बायुका मिलाप है १ ॥ अथवा कफ यूंके शरीर भारी रहै अरुचि होय शरीर में शीत लागै बमन होय अग्नि और बल जाता रहै शरीर में खुजली चलै और नींद बहुत आवै ये लक्षण होंय तब जनिये अम्लपित्त में कफ मिला है ॥

अथ अम्लपित्त का साध्यासाध्य लक्षण ॥

अम्लपित्त का रोग नवीन उपजा होय सो तो साध्य यत्न से जाय और यही बहुत दिन का होय और पथ्य में चलै नहीं सो असाध्य जानिये ॥ १ ॥

अथ अम्लपित्त का यत्न ॥

अम्लपित्त रोगवाले को पटोल। नींब की छाल। अडूसा ये सब बराबर ले इनका काढ़ा कर इस्से बमन करावै तो अम्लपित्त जाय ॥ १ ॥ अथवा मेढ़ल। सहत। सेंधानोन इनसे बमन करावै तो अम्लपित्त जाय ॥ २ ॥ अथवा जुलाबसे अम्लपित्त जाय ॥ ३ ॥ अथवा निसोत। सहत। आंवला इन का जुलाब दे तो अम्लपित्त जाय ॥ ४ ॥ अथवा ऊर्द्ध गामी अम्लपित्त होय उसे जुलाब बमन करावै और अधोगामी अम्लपित्त होय उसे जुलाब दीजै अथवा जौ अथवा गेहूं का सत्तू अथवा चांवल का सत्तू मिश्री के संयोग से खाय तो अम्लपित्त जाय ॥ ६ ॥ अथवा जव। अडूसा। आंवला। तज।

पत्रज । इलायची इनका काढ़ा कर सहत डाल पीवै तो तत्काल अम्ल पित्त जाय ॥ ७ ॥ अथवा गिलोय । नींबकी छाल । पटोल इनका काढ़ा कर सहत डाल पीवै तो महा भयंकर भी अम्लपित्त जाय ॥ ८ ॥ अडूसा । गिलोय । पित्त पापड़ा । चिरायता । नींबकी छाल । जलभांगरा । त्रिफला । कुलत्थ इन्हैं शीतल जल से ले तो अम्लपित्त जाय ॥ ९ ॥ यह अम्लपित्त चूर्ण है—इति अम्लपित्त रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्ण ॥

अथ विसर्प रोग की उत्पति लक्षण ॥

नोंन खटाई और गरम वस्तु के खाने से बिसर्प रोग पैदा होय है सो फैला हुआ बिसर्प रोग सात प्रकार का है वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ बात पित्त का ५ बात कफ का ६ कफ पित्त का ७ ॥

अथ बिसर्प रोग का लक्षण ॥

नोंन खटाई गरम वस्तु को आदि ले जो पीछे लिखी हैं तिनके बहुत खाने से वायु पित्त कफ कोप को प्राप्त होय शरीर के रुधिर मांस आदि सातों धातु को बिगाड़ शरीर में छोटी बड़ी फुन्सियों के मण्डल को फैलाय देय हैं इसी से वैद्य इस रोग का नाम बिसर्प कहे हैं ॥ १ ॥

अथ वायु के बिसर्प का लक्षण ॥

शरीर में कुपथ्य के करने से वायु कोप को प्राप्त होय शरीर में कई जगह छोटी बड़ी फुन्सियां पैदा करैं तब फुन्सियां शरीर में फैल जांय और उनमें पांव रोग के सदृश पीड़ा खुजली बहुत होय ॥ १ ॥

अथ पित्त के बिसर्प रोग का लक्षण ॥

कुपथ्य से पित्त कोप को प्राप्त होय तब शरीर में छोटी बड़ी फुन्सियां हों और उसमें पित्तज्वर के सब लक्षण मिलें और वे फुन्सियां जल्दी बहुत फैल जांय और बहुत लाल होंय ॥ २ ॥

अथ कफके बिसर्प रोग का लक्षण ॥

कुपथ्य से कोप को प्राप्त होय शरीर में छोटी बड़ी फुन्सियों को फैला दे फिर उनमें खुजली बहुत होय और वे फुन्सियां चिकनी होंय और कफ ज्वर के सब लक्षण उसमें मिलैं ॥ ३ ॥

अथ सन्निपात के विसर्प रोग का लक्षण ॥

कुपथ्य के करने से सन्निपात कोप को प्राप्त होय शरीर में छोटी बड़ी फुन्सियों को पैदा कर शरीर में तत्काल फैलाय दे और उन फुन्सियों में पीछे कहे सब लक्षण मिलें और सन्निपात ज्वर के भी सब लक्षण होंय ॥ ४ ॥

अथ बात पित्त के विसर्प का लक्षण ॥

जिसके शरीर में बात पित्त कुपथ्य के करने से कोप को प्राप्त होंय शरीर में छोटी बड़ी फुन्सियों को पैदा करें वे शरीर में फैल जांय तब अग्न्याख्य नाम उन फुन्सियों को कहिये अग्नि सदृश उसका रूप होय और वायु पित्त ज्वर के जिसमें लक्षण मिलें और छर्हि मूर्छा अतीसार तृषा भ्रम ये भी जिसमें होंय और शरीर के हाड़ टूटैं अंधेरी आवै अरुचि होय सब शरीर अग्नि के सदृश जले जिस स्थान में होय उसको काला नीला अथवा लाल करै मर्म स्थान में फैल जाय उसका अंग बहुत पीड़ा को प्राप्त होय संज्ञा जाती रहैं नीद आवे नहीं यह बिसर्प रोग असाध्य जानिये शरीर में चैन पड़ै नहीं मन देह सब बिगड़ जाय शरीरका ज्ञान जाता रहै यह बिसर्प रोग अत्यन्त असाध्य है ॥ ५ ॥

अथ बात कफ के बिसर्प रोग का लक्षण ॥

वायु कफ कुपथ्य करने से कोप को प्राप्त होय शरीर में छोटी बड़ी फुन्सियों को पैदा कर फैलाय दे उन फुन्सियों को ग्रंथाख्य नाम कहिये वे गांठ सदृश होय हैं और कफ करिकै रुकी थकी जो पवन सो कफको बहुत प्रकार भेदन करै पीछे त्वचा मांस नसों में प्राप्त हुआ जो रुधिर उसे

और शीत को करै छोटे बड़े गोल भारी खरदरे चकत्तों कीमाला को पैदा करै उसमें बहुतसी पीली लाल ज्वर को लिये फुन्सी होंय और श्वास। खांसी। मुखशोष हिचकी। वमन। भ्रम। मोह। शरीर का रंग औरका और। मूर्छा। अंग में हड़ फूटन। मन्दाग्नि ये भी जिसमें होंय तो जानिये कि वायु कफ का बिसर्प रोग है ॥ ६ ॥

अथ कफपित्त के विसर्प रोग का लक्षण ॥

कफपित्त अपने कारण से कोप को प्राप्त हो शरीर में छोटी बड़ी फुन्सियों को पैदाकर फैलाय दे उन फुन्सियों को वैद्य कर्द्दम नाम महा भयंकर बिसर्प रोग कहै हैं उसमें ये लक्षण होंय ज्वर। शरीर में पीड़ा। अंग में हड़ फूटन। प्रलाप। भ्रम ये होंय। भूख जाती रहै। हाड़ २ टूटै। तृषा होय। शरीर भारी रहै। आंव पड़ै। इन्द्रियां पकि जांय। अंग २ में पीडा होय फुन्सियां सब शरीर में फैल जांय बहुत लाल चिकनी काली सूजन को लिये भारीहोंय देर में पकैं गंभीर जसका कफ हो औरदाह बहुत होय राद बहुत निकले। कांपै शरीर की नसैं निकली रहैं और जिस में मुर्दा कीसी दुर्गन्ध आवै ये लक्षण होंय उसे कर्द्दम नाम बिसर्प रोग कहिये ॥ ७ ॥

अथ शस्त्रादिक के घाव के उपजे विसर्प का लक्षण ॥

शस्त्रादिक की चोट लगनेसे कोप को प्राप्त हुई जो वायु सो रुधिर समेत पित्तको दुष्ट कर कुलत्थके समान शरीरमें फुन्सियों को पैदाकरै फिर उन फुन्सियों के फोड़े होजायं और उसमें सूजन और ज्वर होय रुधिर काला होय ८॥

अथ बिसर्प रोगका उपद्रव ॥

ज्वर। अतीसार। वमन। तृषा। मांस बिखर जाय। बुद्धि ठिकाने नहीं रहै। अरुचि होय। अन्न पचै नहीं ये इसके उपद्रव हैं ॥

अथ बिसर्प रोग का साध्यासाध्य लक्षण ॥

वायु पित्त कफ का बिसर्प और अग्नि से उपजा जो बिसर्प और मर्मस्थान में उपजा जो विसर्प सो असाध्य जानिये ॥ १ ॥

अथ बिसर्प रोग का यत्न ॥

जुलाब । वमन । औषधियों का सेवन रुधिर कढ़ाना ये सब बिसर्प रोग को अच्छे हैं ॥ १ ॥

अथ वायु के विसर्प रोग का यत्न ॥

रास्ना । कमलगट्टा । देवदारु । रक्तचन्दन । मऊआ । खरैटी इनको बराबर ले पीछे दूध या घृत से महीन पीस लेप करै तौ बिसर्प रोग जाय ॥ १ ॥

अथ पित्त के विसर्प रोग का यत्न ॥

किसेरा । सिंगारा । कमलगट्टा । जलका सिवार । रक्तचन्दन इन्हें महीन पीस धोये घृत या शीतल जल से लगावै तो बिसर्प रोग जाय ॥ २ ॥

अथ कफ के विसर्प रोग का यत्न ॥

त्रिफला । कमलगट्टा । खस । लजालू । कनेरकीजड़ । नरसलकी जड़ । जवासा । इन्हें जल से महीन पीस लेप करै तो कफ का बिसर्प रोग जाय ॥ ३ ॥

अथ दशांग लेप ॥

तगर । सिरसकी जड़ । मुलहटी । रक्त चन्दन । इलायची । कूठ । दोनों हल्दी । नेत्रवाला इन्हें जलसे महीन पीस गौका घृत डाल लेप करै तो सब प्रकार के विसर्प जांय ॥ ४ ॥ अथवा चिरायता । अडूसा । कुटकी । पटोल । त्रिफला । रक्तचन्दन । नींबकीछाल ये सब बराबर ले इन्हें जवकुट कर २ टं० का काढ़ा दे तो विसर्प । दाह । ज्वर । सूजन । खुजली । फोड़े । वमन इतने रोगों को यह काढ़ा दूर करै है ॥ ५ अथवा कचनार । सतौन्य का बक्कल । करिहारी की जड़ । थूहर का दूध । आकका दूध । चित्रक । जलभांगरा ।

हल्दी। सिंगीमुहरा ये सब बराबर दो टके भर और गौका मूत्र २ सेर पानी २ सेर तिलोंका तेल १ सेर ले पीछे इन्हे इकट्ठा कर इसके नीचे मधुरी आंच दे जबसर्व रस जलजाय तेल मात्र रह जाय तब इसका मर्द्दन करै तो विसर्पफोड़ा व्योची इनको यह तेल दूर करै है ॥ ६ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं ॥ अथवा बड़कीजटा। नागर मोथा। केले के मध्य का गर्भ इनको धोये घृत से लेप करै तो बिसर्पऔर गांठ दूर होंय ॥ ७ ॥ अथवा सिरस के बक्कल को सौ बार धोये घृत से महीन पीस लेप करै तो बिसर्प रोग और गांठ इनको दूर करै है ॥ ८ ॥ कोढ़ फोड़ा शीतला ये सब जोंक के लगाने से निश्चय जांय ९ ॥ ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं—इति बिसर्प रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ स्नायु रोग अर्थात् बाला रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

दुष्ट जल के पीने और दुष्ट अन्न के खाने से कोप को प्राप्त हुई जो वायु सो हाथ पैरों में फफोले अथवा सूजन कोकरे पीछे उस फफोले को वह वायु फफोले को फोड़ कर उस जगह प्राप्त होय वही पित्तसी नसों को सुखाय तांत सदृश के डोरा को वह कुपित हुई वाय करै है ॥ सो तांत सदृश डोरा काढ़ि सांति को पीड़े के बांधने से शनैः शनैः बाहर निकल पड़े और वह टूट जाय तौ कोप को प्राप्त होयऔर वह बाहर निकलआवै तो वह जाता रहे और वही और शरीर में होजाय अथवा हाथ में ॥

अथ बाला का यत्न ॥

५ टं० हींग को शीतल जल से ३ दिन खाय तो बालाका रोग कभी होय नहीं अथवा गौका घृत ५। भर नित्य तीन दिन पीवै तो बाला का रोग जाय ॥ २ ॥ अथवा निर्गुंडी कारस ३ दिन ४ पैसे भर नित्य पीवै तो बाला का रोग जाय ॥ ३ ॥ अथवा कलांजी की जड शीतल जलसे ७ दिन पीवै तौ बाला का रोग जाय ४ ॥ अथवा अरंड की जड़ का रसगौके

घृत से ७ दिन तक पीवै तो बाला का रोग जाय॥५ अथवा अतीस। नागरमोथा। भारंगी। सोंठि। पीपल। बहेड़े की छाल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस २ टं० नित्य ७ दिन गरम पानी से लें तो बाला का रोग जाय॥ ६॥ अथवा सहजने की जड़। और पत्ते इन्हें कांजी के पानी से पीस सेंधानोन मिलावै पीछे उसे बाला ऊपर बांधै तो बाला का रोग जाय। ७ अथवा कांटे वाली जाती की कंका जड़ को जल से पीस बाला ऊपर ७ दिन बांधै तौ निश्चय बाला का रोग जाय॥ ८॥ ये सब यत्न भाव प्रकाश में हैं॥

अथवा कूट। सोंठि। सहजनेकीजड़ इन्हें पानी सेमहीन पीस बाला के ऊपर लेप करै अथवा इन औषधियों कोपीवै तो बाला कारोग जाय॥९॥ अथवा धतूर के पत्ते तेल लगाय बाला ऊपर बांधै तो बाला का रोग जाय॥ १०॥ अथवा बबुल के बीज को कांजी से सिझाय बाला के ऊपर बांधै तो बाला का रोग जाय ११॥ अथवा बाला के मन्त्र से बाला जाय सो मन्त्र लिखते हैं॥ बिरूप नाम बावन के पूत ब्रत काढ़ि किये बहुत पाकफूटै पीड़ा करै बिरूप नाथ की आज्ञा फुरै इस मंत्र से बाला ऊपर गुड़ को ७ बार मंत्रित कर बाला वाले को खिलावै तो बाला जाय॥१२॥ ये यत्न वैद्य रहस्य में हैं॥ अथवा कबूतरकी बीठ को सहत से गोली बांध७ दिन निगलाय दे तो बाला कभी भी निसरै नहीं॥ १३॥ यह वैद्यरहस्य में लिखा है॥ अथवा सहत में सज्जी पीस लेप करै तो बाला का रोग जाय॥ १४॥ इति बालारोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न॥

अथबिस्फोटक रोग की उत्पत्तिलक्षण यत्न॥

कड़ुवी बस्तु और खटाई गरम बस्तु रूखी खारी बस्तु के खाने से अजीर्ण से धूप में रहने से भोजन ऊपर भोजनकरने से शीत उष्ण वर्षा ये जहां बहुत होंय अथवा नहीं होंय अथवा इन की बिपरीततासे कोप को प्राप्त हुए बायु पित्त

कफ ये दोष से शरीर की त्वचा में प्राप्त होय शरीर के रुधिर और मांस और हाड़ को दूषित करै है शरीर में भयंकर फोड़े को पैदा करै है और पहिले ज्वरको उपजावै इसे बिस्फोटक रोग कहिये १ ॥

अथ बिस्फोटक रोग का लक्षण ॥

ज्वर को लिये फोड़े में आगसी जलै ऐसा फोड़ा पकै तौ फोड़ै रक्त पित्त से उपजै शरीर में सर्वत्र होंय अथवा कहीं होंय उसे बिस्फोटक कहिये ॥ २ ॥

अथ वायु के विस्फोटक का लक्षण ॥

मथवायु होय फोड़े में पीड़ा बहुत होय ज्वर और तृषा हड़फूटन होय वर्ण काला होय ये लक्षण होंय तो वायु का बिस्फोटक जानिये ॥ १ ॥

अथ पित्त के बिस्फोटक का लक्षण ॥

ज्वर दाह फोड़े में पीड़ा होय जल्दी फूटै और पकि आवै तृषा लगै फोड़े के पीले लाल वर्ण होंय ये लक्षण होंय तो पित्त का बिस्फोटक जानिये ॥ २ ॥

अथ कफ के बिस्फोटक का लक्षण ॥

छर्द्दि अरुचि होय देरसे पकै उसे कफ का बिस्फोटक जानिये ॥ ३ ॥

अथ बातपित्त के बिस्फोटक का लक्षण ॥

बहुत पीड़ा होय और बात पित्त के लक्षण मिलते होंय उसे बातपित्त का बिस्फोटक जानिये ॥ ४ ॥

अथ बायु कफ के बिस्फोटक का लक्षण ॥

शरीर भारी होय खुजली चलै तो वायुकफका जानिये ५॥

अथ पित्तकफ के बिस्फोटक का लक्षण ॥

खुजली दाह ज्वर छर्द्दि होय तो कफ पित्तका जानिये ६॥

अथ सन्निपात के बिस्फोटक का लक्षण ॥

फोड़े के बीच में गढ़े होंय और ऊंचे भी होंय और फोड़े गाढ़े होय थोड़ा पकैं फोड़े में दाह होय ललाई

बहुत होय तृषा मोह मूर्छा होंय फोड़ों में पीड़ा और ज्वर प्रलाप होय शरीर कांपै ये लक्षण होयं उसे सन्निपात के लक्षण का कहिये ये असाध्य हैं ॥ ७ ॥

अथ रुधिर के बिस्फोटक का लक्षण ॥

जिसमें पित्त के फोड़े के सब लक्षण होंय फोड़े का चिरमिटी के सदृश वर्ण होय रुधिर निकले दाह होय यह रोग यत्न से भी अच्छा नहीं होय ॥

अथबिस्फोटक के उपद्रव ॥

तृषा श्वास । मांस का संकोच और उसमें दाह होय । हिचकी आवै । ज्वर होय । मर्म स्थल में फोड़े फैल जांय ये इसके उपद्रव हैं ॥

अथ बिस्फोटक का साध्यासाध्य लक्षण ॥

एक दोष का साध्य दो दोष का कष्ट साध्य त्रिदोष का और जिसमें बहुत उपद्रव होंय सो असाध्य ॥

अथ बिस्फोटक रोग का यत्न ॥

बिस्फोटक रोग वाले को लंघन और वमन कराइये और जुलाब दीजे और पुरानी शालि चावल जौ गेहूं मूंग मसूर अरहड़ ये अच्छे हैं ॥ १ ॥ अथवा दशमूलका काढ़ा रास्ना । दारुहल्दी । खस । कटेली । गिलोय । धनिया । नागरमोथा इनका काढ़ा दे तौ वायु का बिस्फोटक जाय १ ॥ दाख । कुंभेर । छुहारा । पटोल । नींब की छाल । अडूसा । कुटकी । चांवलकी खील । जवासा इनका काढ़ा दे तो पित्त का बिस्फोटक जाय २ ॥ अथवा चिरायता । बच । अडूसा । त्रिफला इन्द्रजव । कुड़ाकी छाल । पटोल इनका काढ़ा सहत मिलाय दे तो कफ का बिस्फोटक जाय ॥ ३ ॥ अथवा चिरायता । कुटकी । नींब की छाल । मुलहटी नागरमोथा । पटोल । पित्तपापड़ा । खस । त्रिफला । कुड़ा की छाल इनका काढ़ा दे तो सब प्रकारका बिस्फोटक जाय ॥ ४ ॥ अथवा । चांवल । कुड़ाकी छाल इन्हें जल से महीन पीस फोड़े के

ऊपर लेप करे तो बिस्फोटक जाय ॥ ५ ॥ अथवा गिलोय। पटोल। चिरायता। अडूसा। नींब की छाल। पित्तपापड़ा। खैरसार इनका काढ़ा दे तो बिस्फोटक रोग का ज्वर जाय ॥ ६ ॥ अथवा चन्दन। नागकेसर। गौरीसर। चौराई की जड़। सिरसा का बक्कल। चंबेली के पत्ते इन्हें जल से महीन पीस फोड़ों के ऊपर लेप करे तो बिस्फोटक जाय ॥ ७ ॥ अथवा कमलगट्टा। रक्तचंदन। लोध। खस। गौरीसर। इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो बिस्फोटक जाय ॥ ८ ॥ अथवा जियातोता की मींगी जल से महीन पीस लेप करे तो बिस्फोटक काखोलाई गले की गांठ कान की गांठि और फोड़ा फुनसी मात्र को यह लेप दूर करे है ॥ ९ ॥ ये सर्व यत्न भाव प्रकाश में हैं ॥ अथवा दशांग लेप किशोर गूगल इससे भी ये रोग जाय हैं ॥ १० ॥ इति बिस्फोटक रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अथ फिरंग रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जो फिरंग रोग उपदंशवायु का भेद है सो बहुत गरमी वाली स्त्रियों के संग से अथवा उसका संग किसी और ने किया होय सो जहां मूते वहां यह भी मूते ॥ अथवा उस का किसी तरह भोजनादिक में संग करे तो वायु अपने कारण से कोप को प्राप्त हो इस रोग को प्रकट करे अथवा जो क्षीण पुरुष होय और मैथुन बारंबार करे तब वह अत्यन्त क्षीण होय तब इसके बंधेज रहै नहीं और वायु की नाना प्रकार की शरीर में पीड़ा होय तब इसके वायु पित्त कफ ये सब अत्यन्त कोप को प्राप्त होंय और यह आगंतुक नाम फिरंग वायु को करै सो फिरंग वायु तीन प्रकार की है शरीर की मध्य नसों में धंस जाय ॥

अथ शरीर कीत्वचा के बाहर होय उसका लक्षण ।

लिङ्गेन्द्री के ऊपर फुनसी और फटने आदि चिन्ह होंय

और वहां थोड़ी पीड़ा होय सो तो सुख साध्य है यह यत्न करने से मिट जाय ॥ १

अथ शरीर की संधियों में और नसों में धंसि जाय उसका लक्षण ॥

शरीर में कौड़ी के काटने कीसी चटें पड़ जांय मोरियां जांघ पीठ इन में बहुत पीड़ा और सूजन होय सो कष्ट साध्य है २ ॥

अथशरीर के बाहर होय उसका लक्षण ॥

ये सब कहे लक्षण होंय और बहुत दिन तक रहैं सो महा कष्ट साध्य है ॥ ३ ॥

अथ फिरंग बायु का उपद्रव ॥

शरीर क्षीण पड़जाय बल जाता रहे नाक गलि जाय अग्नि मन्द हो जाय मांस रुधिर सूखि जाय हाड़ मात्र रह जांय ये इसके उपद्रव हैं ये अच्छे नहीं ॥ १॥

अथ फिरंग बायु का यत्न ॥

रसकपूर के साधने की और खाने की बिधि ॥ रसकपूर ४ रत्ती ले उसे गेहूं के आटे में पानी से उसन उसके बीच रसकपूर को धर उसकी गोली करे पीछे लवंग को महीन पीस उसके चूर्ण में गेहूं के चूनकी गोली रसकपूर समेत लपेटे पीछे उस गोली को शीतल जल से निगल जाय दांत लगावे नहीं इसके ऊपर कत्थे चूने बिना नागरबेल के पत्ते चाबे इसके ऊपर नौन खटाई खाय नहीं खेद करे नहीं धूप में रहे नहीं इसी तरह ३ दिन करे तो फिरंग बायु जाय ॥ १ ॥

अथ संप्रसारण गुटिका ॥

पारा १ टं० खेरसार १ टं० अकरकरा २ टं० सहत ३ टं० इन सब को महीन पीस एक जीव करे पीछे इनकी ७ गोली कर १ गोली नित्य प्रभात शीतल जल से ले तो फिरंग बायु जाय और इसके ऊपर नौन खटाई खाय नहीं ॥ २ अथवा पारा २ टं० आंवलासार गन्धक २ टं० चांवल २

इन तीनों को खरल में महीन पीस कजली करे पीछे इनकी ७ पुड़ियां करे पीछे १ पुड़िया की नित्य इन्द्री के धूनी दे तो फिरंग बायु जाय ॥ ३ ॥ अथवा पीले फूल की खरेटी के पत्तों का रस १ टं॰ पारा १ टं॰ इन दोनों को दोनों हाथ में मसले पारा और वह रस हाथों में जब तक दीखे तब तक चरावे पीछे हाथों को कुछ तपाय ले जहां तक पसीना आवे इसी तरह ७ दिन करे तो फिरंग बायु जाय और नौन खटाई खाय नहीं ४ ॥ अथवा नींब के पत्ते ८ टं॰ हड़की छाल ७ टं॰ आंवला ७ टं॰ हल्दी १ टं॰ पारा इन सब को महीन पीस ४ मासे शीतल जल से नित्य ७ दिन ले तो बाहर भीतर की फिरंग बायु जाय ॥ ५ ॥ अथवा चोखी चोबचीनी का चूर्ण ४ मासे ले सहत से १५ दिन चाटै तो यह रोग जाय इसके ऊपर नोन खटाई खाय नहीं और नोन खायतो सेंधानोन खाय ॥ ६ ॥ अथवा १ टं॰ पारे को कसेरू के रस में खरल करै फिर इसमें गुगल ५ टं॰ अकरकरा ५ टं॰ त्रिफला ५ टं॰ ये सब महीन पीस और सहत ५ टं॰ गौका घृत ५ टं॰ मिलाय इस चूर्ण को नित्य २१ दिन तक ५ टं॰ खाय अथवा इसका मर्दन करे तो फिरंग बायु जाय इसके ऊपर नोन खटाई खाय नहीं ७ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाशमें हैं ॥ अथवा जुलाबसे अथवा रुधिर के कढ़ाने से फिरंग बायु जाय ॥ ८ ॥ अथवा पारा। सिंगरफ। नीलाथोथा। हीराकसीस। शोधीआंवलासार गन्धक। ये सब बराबर ले इन्हें खरल में एक जीव करे इसका भुरका दे अथवा इसका लेप करे तो फिरंग बायु जाय ॥ इति सूतक का लेप ॥

अथवा १०० बार के धोये घृत का लेप करे तो फिरंग बायु जाय ॥ १० ॥ अथवा नीलाथोथा। मोम। इन दोनोंको घृत में पकाय इनका लेप करे तो फिरंग बायु जाय ११ ॥ अथवा कड़ुआ तेल १ टं॰ मोम ५ टं॰ कबीला। बेरमे दोनो

धेले भर ले सिंदूर २ टं० सोरा २ टं० मुरदासंग २ टं० इन सब को महीन पीस पीतल के पात्रमें मधुरी आंच से पकावे पीछे हाथों से माथ डब्बी में भर रक्खे फिर इसकी काजली दे तो फिरंग के फोड़े उपदंश इनको यह मलहम अच्छा कर है ॥ १२ ॥ इति मल हर मलहम ॥

अथवा सिंदूर आधपाव ऽ= गौका घृत १ सेर इन दोनों को मथ शरीर के लेप करे पीछे पराल को शरीर में लपेटे इसी तरह ३ दिन करै इसके ऊपर खीर खाय तो व्रण मात्र विस्फोटक फिरंग के चकत्ते ये सब सूख जांय ॥ १३ ॥ अथवा पारा। सीसा ये सब बराबर ले फिर इन दोनों को खरल में काजली करे और गेहूं का तुष। कच्चीइमली। नींबके पत्ते। धूमसा ये सब बराबर ले नीबू के रससे खरल करे पीछे २ टं० भर की गोली बांधे वस्त्र से शरीर को ढांक कर १ गोली की धूनी ले इसी तरह ७ दिन करे तो सब प्रकार का विस्फोटक जाय ॥ १४ ॥ इसके ऊपर खीर २१ तथा १४ दिन खाय अथवा त्रिफला। खैरसार। आंबिली। ये सब बराबर लेइन्हें पानीमें औटाय मुख को धोवे पीछे धूनी लेते । फिर गवायु जाय ॥ १५ ॥ अथवा कालाजीरा। कूट। ये दोनोंतीन २ टं० ले और पुराना गुड़इनसे तिगना ले इन्हें कूटि इनकी १५ गोली करे फिर १ गोली प्रभात और एक संध्या समय खाय तो फिरंग बाय जाय ॥ १६ ॥ और इसके ऊपर गेहूं की रोटी घृत से चुपड़ खाय ॥ इति फिरंग गज केसरी रसः ॥

अथवा सिंदरफ ६ मा० सुहागा १० मा० अकरकरा १० मा० मोम १० मा० इन्हें महीन पीस इनकी गोली १ रत्ती प्रमाणकी करे पीछे १ गोलीको बेरकी कोंपलमें ७ दिन धूनी दे तो फिरंग बाय जाय ॥ १७ ॥ अथवा सहंजने का बक्कल। बड़का बक्कल। काहूका बक्कल इनका काढ़ा ले तो ७ दिन में फिरंग बायु जाय ॥ १८ अथवा सिंदरफ ४ मा० मैनसिल ४ मा०

इन्हें महीन पीस बेरकी लकड़ी की अग्निमें २ मा० को निर्वात स्थान में कपड़ा उढाय धूनी दे तो फिरंग वायु जाय ॥ १९ ॥ इति हिंगुलादि धूम गुदा कोढ ॥

अथ रसकपूर मुख आया होय उसका यत्न ॥

पीपलका बक्कल। गूलरका बक्कल। छोटे बड़े लस का बक्कल। बड़का बक्कल। चेनका बक्कल। इनका काढ़ा कर उसके कुल्ले करे तो मुख की सूजन दूर होय ॥ २० ॥ अथवा जीरा ५ टं० खैरसार २ टं० इन्हें जल से पीस छाले के लगावे तो मुख पाक जाय ॥ २१ ॥ इति फिरंग रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्णम् ॥

अथ मसूरिका नाम शीतला की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

कड़वी वस्तु। नोन की खारी वस्तु। विरुद्ध वस्तु को खाने से भोजन के ऊपर भोजन करने से बहुत शाकादिक और तेल साग मांस के खाने से दुष्ट पवन के सेवन से दुष्ट ग्रह के आने से देश में शीतला के उपद्रवों से इन कारणों से शरीर के विषय रुधिर को ये दुष्ट करैं मसूर की आकृति फुन्सियों को पैदा करैं हैं सो मसूरिका नाम रोग १४ प्रकार का है ॥

वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ रुधिर का ४ सन्निपात का ५ चर्मज ६ रोमांतिक ७ और सातों धातु गत रसगत ८ रक्तगत ९ मांस गत १० मेद गत ११ अस्थित १२ मज्जा गत १३ शुक्र गत ॥ १४ ॥

अथ वायु की मसूरिका का लक्षण ॥

उसकी फुनसियां काली और रूखी होय पीड़ा बहुत होय कड़ी होंय ये लक्षण होंय तो वायु की मसूरिका जानिये ॥ १ ॥

अथ पित्त की मसूरिका का लक्षण ॥

जिसकी फुनसियां लाल पीली काली दाह को लिये

होंय और पीड़ा बहुत होय और शीघ्र पकैं ये लक्षण होंय तो पित्त की मसूरिका जानिये ॥ २ ॥

अथ रुधिर की मसूरिका का लक्षण ॥

जिसमें अतीसार और ज्वर बहुत होय और पित्त के भी लक्षण होंय उसे रुधिर की मसूरिका कहिये ॥ ३ ॥

अथ कफ की मसूरिका का लक्षण ॥

जिसमें फुनसिया सुफेद और चिकनी बड़ी होंय जिन में खुजली आवे और मन्द पीड़ा होय देर से पकैं ये लक्षण होंय उसे कफ की कहिये ॥ ४ ॥

अथ सन्निपात की मसूरिका का लक्षण ॥

जिसमें फुनसियां नीली और चपटी होंय और फैल जांय और बीच में खाड को लिये होंय पीड़ा बहुत होय राद पड गई हो देर से पके और बहुत होय ये लक्षण होंय उसे सन्निपात की मसूरिका कहिये ॥ ५ ॥

अथ रसमें प्राप्त हुई जो मसूरिका उसका लक्षण ॥

त्वचा में प्राप्त हुई जो मसूरिका सो पानी के बुदबुदे सदृश होंय और इन में स्वल्प दोष होय और वे फूटें तब उन में पानी निकले ॥ ६ ॥

अथ रुधिर में प्राप्त हुई जो मसूरिका उसका लक्षण ॥

वे फुन्सियां लाल होंय और तत्काल पकें त्वचा में हो जाय और यही दुष्ट हुई साध्य नहीं है और येही फूटी हुई रुधिर को बहावे हैं ॥

अथ मांस में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण ॥

वे फुन्सियां कठोर और चिकनी होंय देर से पकें त्वचा में हो जांय गात्र में शूल चले और खुजली होय दाह मूर्छा तृषा ये होंय ॥ ८ ॥

अथ मेद में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण ॥

वे फुनसियां मण्डल के आकार और कोमल और कुछ एक ऊंची होंय और उन में भयंकर ज्वर होय वे फुन्सियां बड़ी और चिकनी होंय और शूल को लिये होंय

और जिन में मोह और अप्रीति ताप होय तो उनमें कोई एक मनुष्य जीवे ॥ ९ ॥

अथ हाड़ में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण ॥

फुनसियां छोटी और गात्र के समान रूखी चपटी कुछ एक ऊंची होंय और उनमें मोह होय पीड़ा और अप्रीति बहुत होय ॥ १० ॥

अथ शुक्र में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण ॥

फुनसियां प्रथमही पकीसी दीखें और चिकनी होंय जिन में बहुत पीड़ा अप्रीति दाह उन्माद ये भी होंय ऐसे लक्षण होय तो जीवे नहीं ॥ ११ ॥

अथ चर्म्म में उपजी मसूरिका का लक्षण ॥

चर्म में उपजी जो मसूरिका सो कंठ का रोक और अरुचि तन्द्रा प्रलाप और अप्रीति को करै हैं ये बहुत यत्न करने से अच्छी होंय हैं ॥ १२ ॥

अथ रोमांतिका नाम रोग में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण ॥

प्रथम ज्वर होय पीछे रोम २ में कफ पित्त से फुनसियां होंय वे कुछ एक ऊंची होंय और इस में खांसी अरुचि होय तो रोमांतिका कहिये ॥ १३ ॥

अथ मसूरिका का साध्य लक्षण ॥

त्वचा रक्त में मसूरिका होय और पित्त से उपजी होय अथवा कफ से उपजी होय अथवा कफपित्त से उपजी होय सो तो साध्य जानिये और ये बिना यत्नही अच्छी होंय ॥

अथ मसूरिका का असाध्य लक्षण ॥

जो सन्निपात से उपजी होंय और मूंगे के सदृश अथवा जामन के सदृश अथवा रुधिर के सदृश अथवा अलसी के फूल सदृश वर्ण होय इसके अनेक वर्ण हैं वह मसूरिका असाध्य है और जिस में ये लक्षण होंय सोभी असाध्य जानिये ॥

अथ मसूरिका का यत्न ॥

मसूरिका के प्रारंभ में सुपेद चन्दनको भिगोय ७ दिन लेपकरे तो मसूरिका थोड़ी निकले ॥

अथ वायुकी मसूरिका का यत्न ॥

दशमूल । रास्ना । आंवला । खस । धमासा । गिलोय । धनियां । नागरमोथा इनका काढ़ा दे तो वायु की मसूरिका जाय १ ॥ अथवा । मंजीठ । बड़के अंकुर । सिरस का बक्कल । गूगल का बक्कल । घृत मिलाय इन का लेपकरे तो वायुकी मसूरिका अच्छी होय ॥ २ ॥ अथवा गिलोय । महुआ । दाख । मूर्वा । दाड़िम का बक्कल इनका काढ़ा कर गुड़ डाल पीवे तो वायु की मसूरिका अच्छी होय पके नहीं ॥ ३ ॥ अथवा मसूरिका में शालिके चांवल मूंग मसूर मिश्री यह खाय नोन खाय नहीं खाय तो थोड़ा सेंधानोन खाय ॥ ४ ॥

अथ पित्तकी मसूरिका का यत्न ॥

पटोल की जड़ का काढ़ा ले । अथवा पानों का रस पीवे तो पित्त की मसूरिका अच्छी होय ॥ ५ ॥ अथवा नींबकी छाल । पित्तपापड़ा । पाढ़ । पटोल । दोनों चन्दन । खस । कुटकी । आंवला । अडूसा । इनका काढ़ा मिश्री मिलाय ले तो पित्त की मसूरिका जाय ॥ ६ ॥

अथ रुधिर को मसूरिका का यत्न ॥

इसमें रुधिर कढ़ावे तो रुधिर की मसूरिका जाय ॥ ७ ॥

अथ कफ की मसूरिका का यत्न ॥

अडूसा । चिरायता । त्रिफला । जवासा । पटोल । नींब की छाल इनका काढ़ा सहत डाल दे तो कफ की मसूरिका जाय ॥ ८ ॥

अथ सब मसूरिका मात्र का यत्न ॥

पाढ़ । पटोल । कुटकी । दोनों चन्दन । खस । आंवला । अडूसा । जवासा इनका काढ़ा मिश्री डाल दे तो सर्वमसूरिका मात्र अच्छी होय ॥ ९ ॥

अथ मसूरिका विषे कंठ में व्रण होगया होय उसका यत्न ॥

आंवला । मडुआ इनके काढ़े में सहत मिलाय कुल्ला करे तो कंठ के व्रण अच्छे होंय ॥ १० ॥

अथ मसूरिका में आखें चिपट गई होंय उसका यत्न ॥

मडुआ के पानी से अंड कोशका सेंक करे तो आंख खुले ११॥

अथ मसूरिका में नेत्रों में व्रण हुए होंय उसका यत्न ॥

मडुआ । त्रिफला । मूर्वा । दारुहल्दी । कमलगट्टा । खस । लोध । मंजीठ इनका लेप करे तो नेत्रों का व्रण अच्छा होय फिर उस जगह व्रण होय नहीं ॥ १२ ॥ अथवा बड़ का बक्कल गूलर का बक्कल । पीपल का बक्कल इनका नेत्रों के ऊपर लेपकरे तो नेत्र अच्छे होंय १३ ॥ अथवा अरने उपले की राखके लगाने से मसूरिका अच्छी होय १४ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥

अथ मसूरिका का भेद शीतला उसका स्वरूप ॥

प्रथम कभी विषम ज्वर बहुत होय कभी थोड़ा कभी शीत लगे कभी गरमी उसका भी नेम रहै नहीं पीछे मसूरिका के आकार फुनसियां निकलें वे बड़ी होजांय ज्वर के ३ दिन पीछे ७ दिन तक निकला करें और पीछे ढलें उसे शीतला कहिये ॥ वह शीतला सात प्रकार की है ॥

अथ शीतला का यत्न ॥

शीतला पकी होंय तो अरने उपलेकी राख नीचे बिछाइये १ ॥ अथवा नींबकी डाली से मक्खी उड़ाइये ॥ २ ॥ इसके ज्वर में शीतल जल पिलाइये ॥ ३ शीतला को मनोहर शीतल स्थान में स्थापिये पवित्र होय शीतला का पूजन कीजे और शीतला में बहुत औषधि का यत्न कीजे नहीं ॥ ४ ॥ अथवा शीतल जलसे हल्दी को पीवे तो उस के शीतला के फोड़े बहुत कम होंय ५ ॥ अथवा केले के जल से सुपेद चन्दन को अथवा अडूसे के रसमें मडुआ को अथवा सहत के साथ मडुआ को जो पुरुष बालक

को शीतला निकसने से पहले प्यावे तो उसके शीतला का कोई बिकार नहीं होंय ॥ ६ ॥

अथ शीतला वाले की रक्षा ॥

जिस घर में शीतला वाला रहे उस घरके द्वारमें नीवके पत्ते बांधिये ॥ अथवा चन्दन । अडूसा । नागर मोथा । गिलोय । दाख इन का काढ़ा दीजे तो शीतला का ज्वर जाय ॥ ७ ॥ अथवा जप होम दान ब्राह्मण भोजन शिव पार्वतीजी का पूजन श्रद्धा से कराइये ॥ ८ ॥ अथवा शीतला के आगे शीतला स्तोत्र पढ़ाइये सो स्तोत्र लिखते हैं ॥ स्कंदउवाच ॥ भगवन् देव देवेश शीतलायाः स्तवं शुभम् ॥ वक्तु मर्हस्य शेषेण बिस्फोटक भयापहम् ॥ १ ईश्वरउवाच ॥ वंदेहं शीतलां देवीं सर्वरोग भयापहम् ॥ यामासाद्य निवर्तेत बिस्फोटक भयंमहत् ॥ शीतले शीतले चेति योब्रूयाद्दाह पीड़ितः ॥ बिस्फोटक भयं घोरं च्छिप्रं तस्य बिनश्यति ॥ ३ ॥ यस्त्वा मुदक मध्येतु ध्यात्वा संपूजयेन्नरः ॥ बिस्फोटक भयंघोरं कुलेतस्य न जायते ॥ ४ ॥ शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसिदुस्तरान् ॥ बिस्फोटक विशीर्णानां त्वमेका ऽमृत वर्षिणी ॥ ५ ॥ गलगंड ग्रहारोगा येचान्येदारुणान्नृणाम् ॥ त्वदनुध्यान मात्रेण शीतले यांति संक्षयम् ॥ ६ नमंत्रं नौषधं किंचित् पाप रोगस्य विद्यते । त्वमेका शीतले धात्रि नान्यां पश्यामि देवताम् ॥७॥ मृणालतंतु सदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् य स्त्वांविचिन्तयेद्देवितस्य मृत्युर्नजायते ॥ ८ ॥ श्रोतव्यं पठितव्यं वैनरैर्भक्तिसमन्वितैः । उपसर्ग विनाशार्थं परंस्वस्त्ययनं महत् ॥ ९ ॥ शीतलाष्टकमेतद्धि नदेयं यस्यकस्यचित् ॥ किंतु तस्मै प्रदातव्यं भक्तिश्रद्धान्वितस्यचः ॥ १०–इतिस्कन्दपुराणे शीतला ष्टकं सम्पूर्णम् ॥ १ ॥

अथ शीतला का और भेद ॥

वायु कफसे उपजे उसे कोद्रवा कहिये कोदों कीसी आकृति होय वायु कफ की भी होजाय उसमें अंग अंग में

गरमी होय सब शरीर ददरासा होजाय यह ७ दिन में अथवा १२ दिन में औषधि विनाही अच्छी होय इसे लौकिक में बोदरी और भोरी कहैं हैं इसमें गरमी बहुत होय और शरीर में सरसों के आकार पीली २ फुनसियां होंय ये सब बालकों के होय हैं ये सब शीतलाओं के भेद हैं - इति मसूरिका नाम शीतला बोदरी भोरीको उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥ * ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी
बिरचिते अमृत सागर नाम ग्रन्थे शीतपित्त उदर्द कोठ उत्कोठ अम्ल-
पित्त बिसर्प पामा स्नायुक नाम वाला बोदरी भोरी इन सर्व
रोगों के भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणं नाम
सप्तदशस्तरङ्गः सम्पूर्णः ॥ १७ ॥ ॥ * ॥ ॥ *

अथ क्षुद्र रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

अजगल्लिका नाम फुनसी का लक्षण । वह फुनसी चिकनी होय शरीर के वर्ण सदृश होय जिसमें पीड़ा नहीं होय और मूंग प्रमाण होय यह कफ वायु से उपजे है ॥ १ ॥

अथ यव प्रच्छा फुनसी का लक्षणयत्न ॥

जव के आकार होय और कड़ी गठीली होय मांस में रहती होय यह कफ वायु से उपजे है ॥ २ ॥

अथ अंत्रालजा फुनसी का लक्षण ॥

वह फुनसी भारी और सूधी और ऊंची मण्डल सहित होय राद जिसमें थोड़ी होय यह कफ वायु से उपजे है ॥ ३

अथ विवृता नाम फुनसी का लक्षण ॥

फटे मुंह की होय जिसमें बहुत दाह होय पके गूलर के फल समान होय मण्डल के सहित होय ॥ ४ ॥

अथ कच्छपिका फुनसी का लक्षण ॥

पांच अथवा छः गांठि होंय वे भयङ्कर होंय कछुवासी ऊंची होंय यह कफ वायु से उपजे हैं ॥ ५ ॥

अथ बालमीक फुनसी का लक्षण ॥

कन्धे और कांख हाथ पैर गला इन स्थानों में कुपथ्य करने से बांमी के आकार जो गांठ होय पीछे वह बढ़े उसके अनेक मुख होंय उनके मुखों से राद निकले और पीड़ा होय और वे ऊंची होंय और बिसर्प रोगके माफिक फैल जांय इसका यत्न नहीं है ॥ ६ ॥

अथ इन्द्रवृद्ध नाम फुनसी का लक्षण ॥

कमल के बीच कर्णिका में कमल जो गट्टे का घर है उसके आकार फुनसियां चारों ओर बायु पित्त से होंय उसे इन्द्रवृद्ध फुनसी कहिये ॥ ७ ॥

अथ गर्द्दभिका फुनसी का लक्षण ॥

मण्डल के आकार गोल होय और ऊंची और लाल होय और उसमें पीड़ा होय यह बायु पित्त से उपजै है उसे गर्द्दभिका कहिये ॥ ८ ॥

अथ पाषाणगर्द्दभिका फुनसी का लक्षण ॥

यह डाढ़ी की सन्धि में सूजन को लिये या स्थिर कफ युक्त होय इसमें पीड़ा मन्द होय और चिकनी होय उसे पाषाण गर्द्दभिका फुनसी कहिये ॥ ९ ॥

अथ पनसिका फुनसी का लक्षण ॥

कान के बीच में होय उसमें पीड़ा बहुत होय और वह स्थिर होय यह बायु कफसे होयहै इसे पनसिका कहिये ॥ १०

अथ जालगर्द्दभिका फुनसी का लक्षण ॥

जो सूजन पहले थोड़ी होय और बिसर्प के सदृश फैल जाय और वह पके नहीं दाह ज्वर को करै उसे जालगर्द्दभिका फुनसी कहे हैं ॥ ११ ॥

अथ इरिवेल्लिका फुनसी का लक्षण ॥

जो मस्तक में गोल फुनसी होय और जिसमें ज्वर को लिये पीड़ा बहुत होय यह सन्निपात से होय है उसे इरिवेल्लिका कहिये ॥ १२ ॥

अथ कांखेलाई का लक्षण ॥

भुजों के एक देश में अथवा पसवाड़े के एक देश में अथवा कन्धों के एक देश में पीड़ा को लिये पित्त के कोप से काला फोड़ा होय उसे कांखेलाई कहै हैं और कई एक पाछने के दोष से कांख में फोड़े होंय उसे भी कांखेलाई कहै हैं ॥ १३ ॥

अथ अग्निरोहिणी फुनसी का लक्षण ॥

कांख के एक देश में जो मांस को विदीर्ण करने वाला फोडा भयंकर होय और उस फोड़े में दाह ज्वर भी होय और मानो उस फोड़े में अंगारा भर दिया है सो फोड़ा सात दिन में और बारह दिन में अथवा सोलह दिन में मनुष्य को मार डाले है इसे अग्निरोहिणी कहिये यह सन्निपात से उपजे है यह असाध्य है ॥ १४ ॥

अथ चिप्प नाम फुनसी का लक्षण ॥

बायु पित्त नख के मांस में रह कर के दाह और पाक को करै हैं तब यह चिप्प नाम फुनसी पैदा होय है ॥ १५ ॥

अथ कुनख रोग जिसका नख जाता रहा होय उसका लक्षण ॥

बायु पित्त कफ ये थोड़े कोप को प्राप्त होंय तब पुरुष के कुनख रोग को करै ॥ १६ ॥

अथ अनुशई फुनसी का लक्षण ॥

वह फुनसी गंभीर होय जिसका आरम्भ अल्प होय शरीर के वर्णसमान पैर के ऊपर होय कोप को प्राप्त होय जिसमें ये लक्षण होंय उसे अनुशई कहिये ॥ १७ ॥

अथ बिदारिका फुनसी का लक्षण ॥

वह फुनसी बिदारीकन्द के समान गोल हो कांख में सन्निपात से उपजो होय उसे बिदारिका फुनसी कहिये १८ ॥

अथ शर्करा नाम फुनसी का लक्षण ॥

कफ मेद बायु है सो मांस और नसों में प्राप्त होय

गांठों को सहत अथवा घृत अथवा बसा के समान करै और वह गांठ बढ़ी थकी होके मैले रुधिर को चलावे है और शरीर के मांस को सुखाय दे है उसे शर्करा कहिये ॥ १९ ॥

अथ शर्करार्बुद फुनसी का लक्षण ॥

वह दुष्ट गांठ होय उसमें नाना वर्ण का चेप बहुत निकला करै और उसकी नसैं रुधिर को श्रवाही करैं उसे शर्करार्बुद कहिये ॥ २० ॥

अथ व्याज का लक्षण ॥

जिसका पैर बहुत रूखा होय और फिरा करै उस की पगतली में जो बायु है सो व्याज को करै है ॥ २१ ॥

अथ कदर फुनसी का लक्षण ॥

पैर में अथवा हाथ में कांकरी चुंभी होय अथवा कांटा चुभा होय उस करके बेर कीसी ऊंची गांठ हो जाय उसे कदर कहिये ॥ २२ ॥

अथ खरवे का लक्षण ॥

दुष्ट कीचड़ के स्पर्श करने से पैर की अंगुली के नीचे खाज होय और उस जगह दाह और पीड़ा होय उसे खारवा कहिये ॥ २३ ॥

अथ इन्द्र लुप्त नाम लौकिक में उटीलागी कहें उसका लक्षण ॥

रोम २ में रहता जो पित्त सो बायु कफ करि के बढ़े हुए बालों को दूर करै है पीछे रुधिर सहित जो कफ है सो रोमों को उपजने से रोक दे उसे इन्द्रलुप्त अथवा चान्द्रला कहिये ॥ २४ ॥

अथ अरुंषिका इसी का भेद है उसका लक्षण ॥

केशों की भूमि में खुजली बहुत चलै और वह भूमि बायु के कोप करि के रूखी पड़ जाय इसे दारुण कहिये कफ और रुधिर मस्तक में कोप को प्राप्त होंय तब मनुष्य के अरुंषिका प्रगट करै ॥ २५ ॥

अथ यौवन अवस्था में सुपेद बाल होंय उसका लक्षण ॥

क्रोध से अथवा शोच से शरीर की गरमी शिर में जाय जाय तब पित्त केशों को सुपेद कर दे है ॥ २६ ॥

अथ लहसन का लक्षण ॥

काला और चिकना होय और उसमें पीड़ा नहीं होय गोल होय यह कफ रुधिर से उपजे है और यह शरीर के साथ पैदा होय है इसे लहसन कहिये ॥ २७ ॥

अथ मस्सों का लक्षण ॥

उसमें पीड़ा नहीं होय स्थिर और काला होय शरीर में उड़द समान ऊंचा होय यह वायु से होय है इसे मस्सा कहिये ॥ २८ ॥

अथ तिलका लक्षण ॥

काला और तिलके समान होय पीड़ा नहीं होय देहके बराबर होय ये वायु पित्त कफ की आधिक्यता से होय हैं और बहुत होय हैं उनको तिल कहिये ॥ २९ ॥

अथ न्यच्छ का लक्षण ॥

बड़ा अथवा छोटा होय काला अथवा सुपेद होय गोल और पीड़ा रहित होय उसे न्यच्छ कहिये ॥ ३० ॥

अथ लिंगवर्तिका का लक्षण ॥

लिंगेन्द्री के मसलने से अथवा उसके दाबने से अथवा वहां चोट लगने से लिंगेन्द्री में वायु है सो घूमती थकी लिंगेन्द्री के चमड़े को उथल दे और सुपारी के नीचे एक लम्बी पीड़ा को लिये गांठि कर दे वह वायु से उपजे है उसे लिंगवर्तिका नाम रोग कहिये ॥ ३१ ॥

अथ अवपाटिका रोग का लक्षण ॥

जिस स्त्रीकी योनिका मुंह बहुत सूक्ष्म होय उस स्त्री के साथ पुरुष संग करने जाय हर्ष से अथवा अपने शरीर के बल से बहुत संग करे तब उस पुरुष की लिंगेन्द्री की चमड़ी उतर जाय उसे अवपाटिका नाम रोग कहिये ॥ ३२ ॥

अथ निरुद्ध प्रकाश रोग का लक्षण ॥

लिंगेन्द्री में बायु आय के धंसे तब सुपारीकी चमड़ी में रहकर सुपारी की चमड़ी से लिंगेन्द्री को ढक मूत्र के मार्ग को रोक दे और वहां बायु से मिल पीड़ा करे तब उसे निरुद्ध प्रकाश नाम रोग कहिये ॥ ३३ ॥

अथ मणि नाम रोग का लक्षण ॥

निरुद्ध प्रकाश रोग के होने पीछे मूत्रकी धार सह न और विना पीड़ा चले और उस सोतेका मुंह चौड़ा होजाय उसे मणि नाम रोग कहिये ॥ ३४ ॥

अथ सन्निरुद्धगुद रोग का लक्षण ॥

जो मनुष्य मलकी बाधा के बेगको रोके उसके गुदा के बड़े मार्ग को बायु छोटा करदे तब छोटे मार्ग के प्रभाव से रूखा बिष्ठा बड़े कष्ट से उतरे उसे सन्निरुद्ध गुद रोग कहिये यह भयंकर है ॥ ३५ ॥

अथ वृषण कच्छू रोग का लक्षण ॥

जो मनुष्य स्नान नहीं करता होय उसके पोते में मैल बहुत हो जाय जिस में पसेव आय खुजली चले तब उस खुजलाने से फोड़े हो आवें पीछे उन फोड़ों में राद बहै तबउस जगह कफ और रुधिर के कोप से उपजा हुआ वृषण कच्छू रोग कहिये ॥ ३६ ॥

अथ गुदभ्रंश रोग का लक्षण ॥

मोड़ा निबाही और अतीसार इन दोनोंही से मनुष्य क्षीण पड़िजाय और उसका शरीर रूखा पड़िजाय और वह दुर्बल हो जाय तब उस पुरुष की गुदा बाहर निकल आवे उसको कांच कहिये ॥ ३७ ॥

अथ शूकर दंष्ट्र रोग का लक्षण ॥

जिसकी त्वचा पकिजाय और उसजगह पीड़ा बहुत होय दाहलगिजाय और लालजगह होय वहांखुजली बहुतचले और ज्वर हो आवे उसे शूकर दंष्ट्र रोग कहिये ॥ ३८ ॥

अथ क्षुद्र रोगों का यत्न ॥

अजगल्लिका को आदि ले जो फुन्सियां हैं इनको जोंक लगाय कर रुधिर कढ़ा डाले ॥ १ ॥ अथवा पके व्रण का जो यत्न पीछे लिखा है सो करिये तो यह रोग अच्छा होय २ ॥ अथवा फिटकरी । सौंफ । प्याज इन्हें शीतल जलसे महीन पीस लेप करे तो अजगल्लिका आदि फुन्सियां अच्छी होंय ३ ॥ अथवा मैनसिल । देवदारु । कूट इन्हें पानी से महीन पीस,लेप करे पीछे इसे शस्त्र से चीर राद काढ़ डाले पीछे जो मलहम कही उस्से ये निश्चय अच्छी होंय ॥ ४ ॥ अथवा सहंजना । देवदारु इन्हें जलसे पीस लेप करे तो बिदारिका फुन्सी अच्छी होय ॥ ५ ॥

अथ इरिवेलिका फुनसी का यत्न ॥

जो पित्त के विसर्प का यत्न है सो इसका भी यत्न है ६ ॥

अथ पनसिका फुनसी का यत्न ॥

प्रथम नींब के पत्ते बांध इसे पकावे पीछे मैनसिल । कूट । हल्दी । तिल इन्हें महीन पीस इनका लेप कर इसे पकावै पीछे चिरादे इसकी राद काढ़े फिर मलहम लगावे तो पनसिका अच्छी होय ॥ ७ ॥

अथ पाषाणगर्दभिका फुनसी का यत्न ॥

प्रथम जोंक लगाय रुधिर कढ़ाना अथवा गरम लेप कर इसे पकावे पीछे व्रण के यत्न से इसका यत्न करे ॥ ८ ॥

अथ वाल्मीक फुनसी का यत्न ॥

इसे पकाय चिरा दीजे पीछे नोन । चित्रक इनका लेप करे पीछे इसकी राद काढ़ डाले फिर अर्बुद रोग का यत्न कर इसे भरे ॥ ९ ॥ अथवा जोंकआदि से इसका रुधिर कढ़ाइये ॥ १० ॥ अथवा कुलत्थ की जड़ । गिलोय । नोन । किरमाला की जड़ । दात्यूणी । निसोत इन्हें पानी से महीन पीस गरम कर इसमें थोड़ा घृत मिलाय लेप करे तो यह पकि जाय पीछे चिरा दे और इसका मुरदा

मांस काढ़ि डाले व्रण के अच्छे होने की मलहम से यह अच्छा होय ॥११॥ अथवा मैनसिल। इलायची। रक्तचन्दन। कूट। चंबेली के पत्ते। भिलावां। मट्ठा। नींब के पत्ते। इनमें तेल पकाय पीछे यह तेल इस में लगावे तो वाल्मीक फुनसी सूजन संयुक्त अच्छी होय इति मनःशिलादि तैलम् ॥ १२ ॥

अथ कांखीलाई और अग्नि रोहिणी इन दोनों का यत्न ॥

प्रथम जलौका से रुधिर कढ़ाइये अथवा जो पित्त के विसर्प का यत्न सोई इसका यत्न कीजिये ॥ १३ ॥ अथवा देवदारु मैनसिल। कूट इन्हें बराबर ले महीन पीस जल से कुछ एक गरम कर इसका लेप करें अथवा इसकी सुहाती २ गरम कांखीलाई के पोड़ी बांधे तो कांखीलाई अच्छी होय ॥ १४ ॥

अथ अवपाटिका का यत्न ॥

चिकनी वस्तुओं से शनैः शनैः सुहाता २ सेंक करे तो अवपाटिका अच्छी होय ॥ १५ ॥

अथ निरुद्ध प्रकाश का यत्न ॥

चूका के रसमें तेल को पकाय इस तेल का सेंक करे अथवा सूकर के घृत का सेंक करे तो निरुद्धप्रकाश अच्छा होय ॥ १६ ॥

अथ संनिरुद्ध गुदा का यत्न ॥

गरम सुहाता तेल का सेंक करे अथवा वायु के दूर करने वाले तेल का सेंक करे तो संनिरुद्ध गुदा का रोग जाय ॥ १७ ॥

अथ वृषण कच्छू रोग का यत्न ॥

राल। कूट। सेंधानोन। सरसों। इन्हें जल से महीन पीस उबटना करे तो वृषणकच्छू रोग अच्छा होय ॥ १८ ॥

अथ गुदभ्रंश के कांच रोग का यत्न ॥

गौका घृत आदि ले चिकनी वस्तुओं का सुहाता सेंक

करे तो गुदभ्रंश जाय ॥ १९ ॥ अथवा कमलिनी के कोमल पत्ते सुखाय उसमें मिश्री मिलाय ॥ २ ॥ टंक नित्य खाय तो कांच निकलनी बन्द होय ॥ २० ॥

अथवा चूहे के मांस का घृत कांच के लेप करे तो कांच निकलनी बन्द होय ॥ २१ ॥ अथवा डांसरा । चित्रक । लूणख्या । बेलकी गिरी । पाढ़ । जवाखार । ये सब बराबर ले इनका महीन चूर्ण कर २ ॥ टंक गौ के मट्ठे से नित्य ले तो गुदभ्रंश जाय ॥ २२ ॥ अथवा मूसे का मांस और दशमूल इसमें पानी डाल इसका क्वाथ करे पीछे इस क्वाथ में तेल पकाय फिर इस तेल का मर्दन करे तो गुदभ्रंश कांच का रोग गुदशूल और भगन्दर रोग जांय ॥ इति मूषक तैलम् ॥ २३ ॥

अथवा छछूंदर के तेल को मूषक के तेल की तरह करउस का लेप करे तो गुदभ्रंश का रोग जाय ॥ २४ ॥ अथवा लूणख्याका रस । बेरकीजड़ का रस । दही । मट्ठा इसमें सोंठ और जवाखार घृत डाल पकावे पीछे इस घृत को ५ टंक नित्य खाय तो गुदभ्रंश का रोग जाय ॥ २५ ॥ इति चांगेरी घृतं ।

अथ शूकरदंष्ट्र रोग का यत्न ॥

जलभागरे कीजड़ । हल्दी । इन्हें महीन पीस जल से जहां सूकर का काटा होय वह इसका लेप करे तो शूकर की डाढ़ का बिष अच्छा होय ॥ २६ ॥

अथ ऊलप नाम खार का यत्न ॥

पटोल । मैनशिल । नींबू । गोरोचन । काली मिरच । तिल । कटेली का रस । कांजी । इनमें कडुआ तेल पकावे इसका खरवे में मर्दन करे तो खरवा अच्छा होय ॥ २७ अथवा कणगच के बीज । हल्दी । हीरा कसीस । मजुआ गोरोचन । हरताल । ये सब बराबर ले इन्हें सहत से महीन पीस लेप करे तो खरवा अच्छा होय ॥ २८ ॥

अथ व्याऊ का यत्न ॥

गरम तेलका सुहाता सेंक करैतो ब्याऊ अच्छी होय॥ २९ ॥ अथवा मोम । जवाखार । घृतमें मिलाय गरम २ ब्याऊ में भरै तो ब्याऊ अच्छी होय ॥ ३० ॥ अथवा राल । सेंधानोंन । सहत । घृत इन सबको कडुवे तेल में मिलाय मथै पीछे इसको ब्याऊ में भरै तो ब्याऊ अच्छी होय ॥ ३१ ॥ अथवा सहत । मोम । गेरू । घृत । गुड़ । गूगल । राल इन्हें महीन पीस एक जीव कर ब्याऊ में भरै तो ब्याऊ अच्छी होय ॥ ३२ ॥ अथवा धतूरे के बीज । जवाखार इन्हें कडुवे तेल में पकाय मर्दन करै तो ब्याऊ अच्छी होय ॥ ३३ ॥

अथ कदर का यत्न ॥

जिसके पैर में कांटा कंकरी चुभी होय उसके आटण पड़ जाय तब उस आटण को गरम तेल से सेके अथवा आक का दूध गुड़ मिलाय बांधे तो कदर जाय ॥ ३४ ॥

अथ तिल का यत्न ॥

सरसों । सज्जी । हल्दी । केसर इन्हें जलसे महीन पीस उबटना करै पहले छुरी आदि से उसको रगड़े तो शरीर का तिल जाय ॥ ३५ ॥

अथ मस्से का यत्न ॥

सज्जी । चूना । साबुन इन्हें जलसे पीस मस्सों के लगावै तो मस्से दूर होंय ॥ ३६ ॥

अथ जचुमणि नाम लहसन का यत्न ॥

लहसन को पाछने से रगड़े पीछे सरसों । हल्दी । कूट सज्जी । जवाखार । केसर इन्हें पानी से महीन पीस उबटन करे तो लहसन जाय ॥ ३७ ॥

अथ चेप नाम रोग का यत्न ॥

इस रोग में जोंक आदि से रुधिर कढ़ावे अथवा सुपारी की राख । पीली कौड़ी की राख । कत्था । कबीला । मुरदासंग नीलाथोथा । इनको बुरके तो चेप जाय ॥ ३८ ॥

अथ कुनख रोग का यत्न ॥

सार १ मासे नित्य सहत से खाय अथवा कुटकी का साधन करे तो कुनख रोग जाय ॥ ३९ ॥

अथ मस्सा तिल लहसन इनका दूसरा यत्न ॥

सिंदरफ । भुना नीलाथोथा । ये दोनों १ पैसेभर लें और सिंदूर १ टंक राल ७ टंक इन सब को गौके ६ टके भर घृतमें कांसे की थाली में लोहे के घोटे से अथवा तांबे के घोटे से घोट कर ३ दिन रगड़े जब वह जल सदृश होजाय तब इसका लेप करे तो मस्सा लहसन खारबा फोड़ा खुजली ये सब जांय ॥ ४० ॥ अथवा कालीजीरी २॥ टंक नौसादर ५ टं० सीपका चूर्ण ७ टं० नीला थोथा २ टके भर ले इन सब को महीन पीस अरणी के रसकी ३ पुट दे पीछे जलभांगरे के रसकी ३ पुट दे इन्हें धूप में सुखावे पीछे गौ के बछड़े के मूत्र से इसकी गोली बांधे पीछे उसीके मूत्रसे गोली को घिस लगावे तो तिल मस्सा लहसन ये सब जांय ॥ ४१ ॥

अथ खुजली का यत्न ॥

लोहेके पात्र में लोहेके घोटे से आंवलासार गन्धक १मा० पारा २ मा० नीलाथोथा ३ मा० ले गौके घृत से खूब घोट कर पीछे लेप करे तो खुजली दूर होय ॥ ४२ ॥

अथ चेप का और यत्न ॥

लोहे के पात्र में हड़को हलदीके रससे रगड़ पीछे गरम कर लगावे तो चेप जाय ॥ ४३ ॥

अथ पलित अर्थात् यौवन अवस्था में बाल का सुपेद होना उसका यत्न ॥

लोहे का चूर्ण २॥ टं० आमकी गुठली २॥ टं० आंवला २ टं० बड़ी हड़ का चूर्ण २ टं० बहेड़ा २॥ टं० इन सब को महीन पीस लोहेके पात्र में भांगरे के रससे २ दिन भिगोय रक्खे पीछे सुपेद बालोंके लेप करे तो श्याम होंय ॥ ४४ ॥ अथवा केतकी कीजड़ अथवा । केवड़े की जड़ । सहंजनेका फूल । कनेरकी जड़ । लोहचूर । जलभांगरा । त्रिफला

इन सब को तेल में पकावे पीछे लोहेके पात्र में धर पृथ्वी में गाड़ रक्खे १ महीने पीछे उस तेल को सुपेद बालोंके लगावे तो सुपेद बाल काले होंय ॥ ४५ ॥ अथवा । त्रिफला । नींबके पत्ते । लोहचूर । जल भांगरेका रस । गाडरीके मूत्र में इने पीस सुपेद बालों के लगावे तो बाल काले होंय ॥ ४६ ॥ अथवा पापड़खार १ मासे सिंदूर १ मासे मुरदासंग १ मासे खाने का चूना ८ मासे इन्हे पानी से पत्थर में ३ घड़ी तक महीन पीसे जब इसका रंग नखके ऊपर काला आवे तब सुपेद केशों के लगावे तो काले केश होंय ॥ ४७ ॥ अथवा मोटा नया माजूफल लेके भूभलमें तब तक सेंकै जब तक फटै नहीं और उसे जलने दे नहीं ऐसी चतुराई से सेंके पीछे माजूफल १ मा० संगरासि १ मासे नीलाथोथा ४ रत्ती नौसादर ३ रत्ती लवंग २ रत्ती फटकड़ी ३ रत्ती लोहचूर १ मासे इन सबको आंवलेके पानीके रसमें लोहके पात्रमें लोहके घोटे से १ पहर रगड़े जब उसका रंग नखों पर आवे तब सुपेद केशों को आंवले के पानी से धोय केशों पर गाढ़ा लेप करे लेप ऊपर आवे नहीं पीछे सुपेद केशों को आंवले के पानी से धोय डालें तो केश काले होंय ॥ ४८ ॥ अथवा खानेका चूना वा अरहड़ की राख अथवा कौड़ियों की राख को सीसे मे रगड़े और इसमें थोडा गोपी चन्दन डाल १ मासे मुरदासंग डाले जब रगड़ते में नखों का रंग काला आवे तब इसका केशों पर लेप कर ऊपर से अरहड का पत्ता बांधे तो केश काले होंय ॥ ४९ ॥

अथ इन्द्रलुप्त जिसे लौकिक में ऊदरी लागी कहैं हैं उसका यत्न ॥

पटोल के पत्ते के रसमें कुटकी को पीस जहां बाल गये होंय तहां लेप करे तो बाल जमि आवे ॥ ५० ॥ अथवा गोखुरू । तिलों के फूल ये दोनों बराबर ले इन्हे सहत घृत में महीन पीस जहां बाल गये होंय वहां लेप करे तो बाल आवें ॥ ५१ ॥ अथवा हाथीदांत की राख बकरी के दूध के

साथ लगावे तो बाल होय आवें ॥ अथवा कमल की जड़ दाख तेल घृत दूध इन सब को महीन पीस लेप करे तो बाल होंय ५३ ॥ अथवा चंबेली के पत्ते । कणगच कीजड़ । चित्रक इन में तेल पकावे पीछे इस तेल का मर्दन करे तो बाल आवें ॥ ५४ ॥

अथ चेप का यत्न ॥

चिरोंजी करछुले में सज्जी जलाय लेप करे तो चेप का रोग जाय ५५ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ इति क्षुद्र रोगों की उत्पत्ति लक्षण ॥

अथ मस्तक के रोगों की उत्पत्ति लक्षण ॥

मस्तक के रोग ११ प्रकार के हैं वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ४ रुधिर का ५ क्षीणपने का ६ कृमिका ७ सूर्यावर्त्त का ८ अनन्त वात का ९ शंख नाम कनपटीदुखनेका १० अर्द्धाव भेदक ये ११ प्रकार के मस्तक रोग हैं सो मुख्य तो दुष्ट भोजन से होय हैं ॥

अथ वायु के शिरो रोग का लक्षण ॥

कारण बिनाही जिस के मस्तक में बहुत पीड़ा होय और रात्रि में अत्यन्त होय और औषधि के लेप अथवा सेंक करने से आराम होय तो जानिये वायु की पीड़ा है ॥ १ ॥

अथ पित्त के शिरो रोक का लक्षण ।

जिसका माथा अग्निके सदृश जले और शिरके टूक हुए जांय और नेत्रों में पीड़ा बहुत होय और शीत रात्रि में विशेष होय तो जानिये पित्त की पीड़ा है ॥ २ ॥

अथ कफके शिरो रोगका लक्षण ।

जिसका मस्तक कफ से लिपा रहै और भारी और ठंढा होय और आंख नासिका मुखमें सूजन होय और जिसका शिर जलै ये लक्षण होंय तब जानिये कफकी पीड़ाहै ॥ ३ ॥

अथ सन्निपात के शिरो रोग का लक्षण ॥

पीछे कहे हुए सब लक्षण होंय तो जानिये सन्निपात की पीड़ा है ॥ ४ ॥

अथ रुधिर के शिरो रोग का लक्षण ॥

पित्त के लक्षण कहे हैं सो सब होंय और मस्तक हाथ का स्पर्श सहै नहीं तब जानिये रक्त की पीड़ा है ॥ ५ ॥

अथ क्षीण पने से उपजा जो शिरो रोग उसका लक्षण ॥

शरीर का बल जाता रहै तब मस्तक खाली पड़िजाय शिर जले और बहुत पीड़ा होय तब जानिये क्षीणपने की पीड़ा है ॥ ६ ॥

अथ कृमि से उपजे शिरो रोग का लक्षण ॥

जिसका शिर बहुत पीड़ाको प्राप्त होय और फड़के और जिसकी नाक में रुधिर और राद बहुत निकसे और उस का शिर बहुत बढ़े ये लक्षण होंय तो कृमि की पीड़ा जानिये ॥ ७ ॥

अथ सूर्यावर्त्त रोग का लक्षण ॥

सूर्य के उदय के समय शिर में मन्द २ पीड़ा होय और ज्यों २ दिन बढ़ै त्यों २ दो पहर तक पीड़ाबढ़ै औरआंखों और भौं में पीड़ा बहुत होय और दो पहर पीछे पीड़ा मन्द होती जाय इसे सूर्यावर्त्त रोग कहिये ॥ ८ ॥

अथ अत्यन्त वात शिरो रोग का लक्षण ॥

वायु पित्त कफ ये तीनों दोष दुष्ट होने से कंधे और नेत्र और कनपटिओं में बहुत पीड़ा करे और डाढ़ों को हलने दे नहीं और कपोल में कम्प और नेत्र बिकार शिर में पीड़ा बहुत करें इसे अत्यन्त वात कहिये ॥ ९ ॥

अथ शंख नाम कनपटी दूखे उनका लक्षण ॥

पित्त रुधिर और वायु ये दुष्ट हो कनपटी में अत्यन्त पीड़ा करें और शरीर में दाह और कनपटी को लाल कर दे और शिर का टूक करे और गलेको रोक दे इसे शंख नाम शिर का रोग कहिये यह रोग वाला तीन दिन जीवे ॥ १० ॥

अथ अर्द्धाव भेदक शिरो रोग का लक्षण ॥

रूखी वस्तु के खाने से भोजन के ऊपर भोजन करने से पुरवैया पवन से बहुत मैथुन करने से मल मूत्र के रोकने से खेदके करने से बायु कुपित होय कफ को ग्रहण करै पीछे वह बायु कंधे कनपटी कान ललाट भौंह इन सबके आधे २ में बज्रके लगने कीसी पीड़ा होय उसे अर्द्धाव भेदक कहिये और यह पीड़ा नेत्र और कान में बहुत होने से मनुष्य को मार डाले ॥ ११ ॥

अथ बायु शिरो रोग का यत्न ॥

बायु के तेल का अथवा इसी तेलका मर्दनकरै और बायु को दूर करने वाली वस्तु को खाय तो बायु का शिरो रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा कूट । अरंड की जड़ । सोंठि । इन्हें मट्ठे में महीन पीस गरम कर मस्तक में लेप करै तो बायु की शिर पीड़ा जाय ॥ २ ॥ अथवा श्वास कुठार रसकी नास ले तो नाना प्रकार की शिर की पीड़ा जाय ॥ ३ ॥ अथवा उड़दके चून को उसन के रोटी करै उस रोटी को शिरमें १ पहर बांधें तो शिर की पीड़ा दूर होय ॥ ४ ॥

अथ शिरो बस्ति ॥

उड़द के चून को पानी में उसन १६ अंगुल अथवा ८ अंगुल की बाटी कर उसे गरम तेल से पूर्ण कर वह तेल १ पहर अथवा ४ घड़ी निश्चल स्थान में शिर के ऊपर रक्खे तो बायु का शिरो रोग डाढ़ कंधे नेत्र कान के रोगों को और मस्तक कांपता होय उसे यह शिरो बस्ति दूर करै है ५ दिन या सात दिन सेवन करै इति शिरोबस्तिः ॥ ५ ॥

अथ पित्त के शिरो रोग का यत्न ॥

चन्दन कमलगट्टे इन्हें शीतल जल से पीस लेप करै तो पित्तकी मस्तक पीड़ा जाय ॥ ६ ॥ अथवा सौ बार के धोये घृत का लेप करै तो पित्त की मस्तक पीड़ा जाय ७ ॥ अथवा श्वास कुठार रस कपूर । केसर । मिश्री । चन्दन इन्हैं

बकरी के दूध से पीस लेप करै तो पित्त की मस्तक पीड़ा जाय ॥ ८ ॥ अथवा सोंठि । और गुड़ । इन दोनों को पानी में पीस नास ले तो सर्व प्रकार की मस्तक पीड़ा जाय ॥ ९ ॥

अथ रुधिर की मस्तकपीड़ा का यत्न ॥

पित्त की मस्तक पीड़ा और इनका यत्न एकही है इस में रुधिर छुड़ाना बिशेष है ॥ १० ॥

अथ कफ की मस्तकपीड़ा का यत्न ॥

इस मस्तक पीड़ा में लंघन करना योग्य है अथवा कफ हारी औषधियों को पीस इनका गरम लेप करै तो यह रोग जाय ॥ ११ ॥

अथ सन्निपात की मस्तकपीड़ा का यत्न ॥

सन्निपात को दूर करने वाली औषधियों का लेप करै अथवा उन्हैं खाय तो यह मस्तक पीड़ा जाय ॥ १२ ॥

अथ षड्बिन्दु तैलं ॥

अरंडकीजड़ । तगर । सौंफ । जीवन्ती । सेंधानोन । रास्ना जलभांगरा । बायबिड़ंग । मुलहठी । सोंठ । तिलोंका तेल इन औषधियों से अठ गुना तेल ले चौगुना जलभांगरे का। रस ले और तेल से चौगुना बकरी का दूध ले पीछे इन सबको इकट्ठा कर कड़ाही में मधुरी आंच से पकावे जब जल सब जलि जाय तेल मात्र रहिजाय तब इस तेल के ६ बूंद की नाक में नास ले तो शिरके सर्व रोग और दांत के सर्व रोग जांय ॥ १३ ॥ इति षड्बिन्दु तैलं ॥

अथवा क्षीण पने से ऊई जो शिर पीड़ा उसको जो दूर करे ऐसा यत्न करने से मस्तक पीड़ा जाय ॥ १४ ॥

अथ कृमि से उपजी मस्तक की पीड़ा का यत्न ॥

सोंठ । मिरच । पीपल । किरमाला की जड़ । सहंजने का बीज ये सब बराबर ले इन्हें बकरी के मूत्र में महीन पीस नास ले तो मस्तक के कृमि जांय और मस्तक पीड़ा अच्छी होय ॥ १५ ॥

अथ सूर्यावर्त नाम आधा सीसी का यत्न ॥

दूध और घृत मिलाय नास ले तो आधा सीसी जाय ॥ १६ ॥ अथवा गुड़ और घृत मिलाय मालपुआ खाय अथवा खीर खाय अथवा तिलोंका सेंक करावे तो आधा सीसी जाय ॥ १७ ॥ अथवा जलभांगरे का रस बकरी का दूध ये बराबर ले इन्हें धूप में गरम करे पीछे इसका नास ले तो आधा सीसी जाय १८ ॥ अथवा सिंगीमुहरा । अफीम । लाक की जड़ । धतूरे की जड़ । सोंठि । कूट । लहसन । हींग इन्हें गोमूत्र में महीन पीस गरम कर मस्तक के लेप करै तो आधा सीसी जाय ॥ १९ ॥

अथ अर्द्ध मस्तक दूखै उसका यत्न ॥

उसको जुलाब दे तो अर्द्ध मस्तक दुखता बन्द होय २० अथवा गरम भोजन से यह अच्छा होय ॥ २१ ॥ अथवा वायबिड़ंग । कालातिल ये दोनो महीन पीस लेप करे तो यह अच्छा होय ॥ २२ ॥ अथवा मश्री । दूध । कच्चे नारियल का पानी ये सब मिलाय पीवे अथवा इसकी नास ले तो आधा सीसी अर्द्ध मस्तक का दूखना अच्छा होय ॥ २३ ॥

अथ अनन्त वायु शिरो रोग का यत्न ॥

आधासीसी का और इसका यत्नएकही है अथवा मस्तक की नास की फस्तलगावे तो यह अच्छा होय अथवा सहत का मालपुआ खाय तो अनन्त वात शिरका रोगजाय २४ ॥

अथ पथ्यादि क्वाथ लिख्यते ॥

हड़कीछाल । बहेड़ा । अंवला । हल्दी । गिलोय । चिरायता । नीबकीछाल । गुड़ ये सब बराबर ले इन्हें जवकुट कर इन का काढ़ा दे वा नास ले तो भौंह कनपटी की पीड़ा और नेत्र रोग आधासीसी ये रोग जांय ॥ २ ॥ इति पथ्यादि क्वाथः ॥

अथ कनपटी दुखती होय उसका यत्न ॥

दारुहल्दी । हल्दी । मंजीठ । गौरीसर । खस । कमलगट्टा इन्हें जलसे महीन पीस कनपटियों के लेप करे तो कनपटी अच्छी होय ॥ २६ ॥ अथवा सीतल जलसे शीतल औषधियों का लेप करे तो कनपटी अच्छी होय ॥ २७ ॥ अथवा मुलहठी उड़द । ये दोनों बराबर ले और इनका चौथा हिस्सा सिंगीमुहरा ले पीछे इन्हें महीन पीस सरसों प्रमाण मात्रा ले तो सब प्रकार की शिरकी व्यथा दूर होय ॥ २८ ॥ अथवा गिलोय सीपका चूना और नौसादर इनको महीन पीस नास ले तो सब प्रकार की शिरकी व्यथा जाय ॥ २९ ॥

अथ आधा सीसी का और यत्न ॥

मिश्री । केशर इन्हें घृत में सेंके पीछे इनकी नास लेतो आधासीसी कनपटी भौं नेत्र का दुखना ये सब रोग अच्छे होंय ॥ ३० ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥

अथवा सोंठ । मिरच । पीपल । पुष्करमूल । हल्दी । रास्ना । देवदारु । असगन्ध । इनका काढ़ा ले तो सब प्रकार के मस्तक के रोग जांय ॥ ३१ अथवा मिश्री और इससे आधी दाडिमकी कली ले इन्हें महीन पीस नास ले तो मस्तक की पीड़ा जाय ॥ ३२ ॥ अथवा कूट । अरंड की जड़ । इन्हें कांजी से पीस लेप करै तो मस्तक की पीड़ा जाय ॥ ३३ ॥ अथवा मुचकुन्द के फूलों का लेप करै तो मस्तक पीड़ा जाय ३४ ॥ अथवा देवदारु । तगर । कूट । खस । सोंठ । तिल इन्हें कांजी में घोट लेप करै तो मस्तक पीड़ा जाय ॥ ३५ ॥

अथ आधासीसी का यत्न ॥

मिश्री । मैनफल । इन्हें गोमूत्र में महीन पीस नास ले तो आधासीसी जाय ॥ ३६ ॥ अथवा ससा के शोरवे में मिरच डाल भोजन के साथ ७ दिन खाय तो आधासीसी आदि ले सब मस्तक के रोग जांय ॥ ३७ ॥ ये सब यत्न वैद्य

रहस्यमें हैं॥ अथवा रक्तचन्दन। लवंग। सोंठ इन्हें पानी में महीन पीस लेप करे तो मस्तक पीड़ा जाय॥ ३८॥ अथवा आमकीछाल का लेप करे तो मस्तक पीड़ा जाय॥ ३९॥ अथवा जलभांगरे का रस गौका मक्खन इन दोनों का लेप करे तो मस्तक पीड़ा जाय॥ ४०॥ अथवा पीपल। मिरच। लोध। यह सब बराबर ले महीन पीस इनकी ३ दिन नास ले तो आधाशीसी आदि मस्तक पीड़ा जांय॥ ४१॥

अथ कपाल के कीड़े का यत्न॥

कड़ुये ककोड़े के पत्तों के रस की नास ले तो कपाल के कीड़े जांय॥ ४२॥ अथवा पीपल। आंधीझाड़ा। सरसों। आक की डोंडी के बीज। इनका शीतल जल से लेप करे तो मस्तक पीड़ा जाय॥ ४३॥ ये यत्न वैद्य वल्लभ में हैं॥

अथ मस्तक के केश बढ़ने का यत्न॥

छाड़छबीला। कूट। कालातिल। गौरीसर। कमल गट्टे इन्हें सहत और दूध में महीन पीस लेप करे तो शिर के केश बढ़ें॥ ४४॥ अथवा चिरमिटी को महीन पीस जल भांगरे के रस में वह चूर्ण और तिलका तेल पकाय इस तेल में इलायची। छाड़छबीला। कूट। इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो केश बढ़ें॥ ४५॥ अथवा छड़। खरटी। मौलसिरी की छाल। आंवला। कूट। इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो केश बढ़ें॥ ४६॥

अथ मस्तक पीड़ा का और यत्न॥

लवंग १ मिरच ३ हींगचने प्रमाण इन तीनों की जल से नास ले तो मस्तक पीड़ा निश्चय जाय॥ ४७॥

अथ आधासीसी का मंत्र॥

अर्ध कपाली नाशय जा जारी पापिनी जा जारी हत्यारी न जाय तो तेरे गुरुकी आज्ञा हनुमन्त बीर की आज्ञा गरुड़ पंखड़ी की आज्ञा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाच इस मंत्र से मस्तक के शनैः शनैः २१ बार फूंक

दे तौ आधासीसी निश्चय जाय कृष्ण बदी १४ को शक्ति माफिक इस मंत्र का जप करे तौ यह मंत्र सिद्ध रहै ॥ ४८॥

अथ दूसरा मंत्र ॥

ओं नमो आधासीसी ह्रूं ह्रूं कारी पहर पचारी मुख मूंदि पाटले डारी अमुकारे सीस रहै मुख महेश्वर की आज्ञा फुरे ओं ठं ठं स्वाहा २१ बार इस मंत्र से अंगुली मस्तक के ऊपर फेरे तो आधासीसी जांय ॥ ४९ ॥ इति मस्तक रोग की उत्पति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ नेत्र के रोगों की उत्पति लक्षण यत्न ॥

नेत्र का मंडल दो अढ़ाई अंगुल प्रमाण है अथवा अपने अंगूठे के उदर प्रमाण है सो शार्ङ्गधर के मत से नेत्र मंडल में ९४ रोग हैं और कई एक आचार्यों के मत से ७८ रोग मुख्य हैं दृष्टि में तो १२ रोग हैं नेत्र में २ रोग हैं नेत्र की काली जगह में ४ रोग हैं नेत्र के सुपेद भाग में ११ रोग हैं नेत्र के मार्ग में ९ रोग हैं नेत्र की वा फणी में २ रोग हैं नेत्रकी सन्धि में ९ रोग हैं सब नेत्र में १७ रोग हैं ऐसे नेत्र के विषे ७८ रोग हैं ये चरक और सुश्रुत में लिखे हैं ॥ वायु के १० पित्त के १० कफ के १३ रुधिर के १६ सन्निपात २५ नेत्रके बाहर के २ ऐसे ७६ रोग हैं ॥

अथ नेत्र के रोगों की उत्पति ॥

धूप आदि से शरीरमें गरमी हुई होय पीछे नदी तालाव बावली आदि के जल में प्रवेश करने से या दूर के देखने से दिन के सोने से पसीने से नेत्रों में रजके पड़ने से नेत्रों में धुआं के जाने से छर्दि के रोकने से । बहुत बमन के करने से । गरम वस्तु के खाने से । कांजी । कुलत्थ । उड़द इनके खाने से अधोवायु । मल मूत्र इनके रोकने से ऋतु के विपरीतपने से । क्रोध । और बहुत मैथुन के करने से । अश्रु के रोकने से । सूक्ष्म वस्तु के देखने से इन वस्तुओं से नेत्रों के ७६ रोग पैदा होंय हैं ॥

अथ प्रथम दृष्टि रोग लिखते हैं ॥

अथ दृष्टि का लक्षण ॥

इस नेत्र मंडलके विषे काली जगह में मसूर की दालके प्रमाण एक माणसा है सो वह माणस्या पांच महा भूतों से उपजा है और वह अग्नि सदृश चमके और अविनाशी तेज स्वरूपसिद्ध है और वहनेत्र गोलमें चार पटलकरढका है पटल कहिये प्याजके छिलके सदृश झिल्ली जीरकके यह सब आंखि अच्छी दीखती हो रही है और वह दृष्टि निपट शीतल रूप है इसे बुद्धिमान दृष्टि कहैं हैं सो यह दृष्टि जल और रुधिर के आधार है इस दृष्टि के ४ पटल हैं प्रथम पटल तो तेज और जल के आश्रय है दूसरा पटल मांस के आश्रय है तीसरा पटल मेद के आश्रय है चौथा रुधिर तेज मांस मेद अस्थि इन पांचों के आश्रय है ॥

अथ प्रथम पटल में हुए रोग का लक्षण ॥

प्रथम नेत्र के पटल की दृष्टि में जो रोग रहैं हैं उस पुरुष को जो दीखै सो सांगो पांग यथार्थ दीखै नहीं क्योंकि पहिले पटल में दोष थोड़े रहैं हैं ॥ १ ॥

अथ दूसरे पटल में हुए रोग का लक्षण ॥

नेत्र के दूसरे पटल में प्राप्त जो दोष उससे मक्खी मच्छड़ केश इनका समूह दीखें नहीं दूर का निकट दीखें निकट का दूर दीखें दृष्टि भ्रमती रहै और बहुत यत्न से भी सुई का छिद्र दीखे नहीं क्योंकि दृष्टि है सो बहुत विह्वल होजाय है ॥ २ ॥

अथ तीसरे पटल में हुए जो दोष उनका लक्षण ॥

ऊंचा दीखे और नीचे का दीखे नहीं रूप का समूह दीखे मानो वस्त्र बीच आय गया है कान नाक नेत्र ये औरसे दीखे दृष्टिमें दोषबहुत आय रहा होय जो नीचे की सो वस्तु ऊपर दीखे और ऊपर की नीचे दीखें और नेत्र के पशलियों में दोष बहुत आय गया होय उसे निकटकी

बस्तु कोई दीखे नहीं और नेत्र के चारों ओर रहते जो दोष उसे आकुल ब्याकुल चकचौंधा दीखे और दृष्टि के मध्य रहते जो दोष उसे बड़ी बस्तु छोटी दीखे दृष्टि में स्थित जो दोष उस निकट की वस्तु एक की दो दीखे और बगल की जो दो बस्तु सो तीन दीखे और बगल में बहुत बस्तु होंय तो उनकी गिनती होय नहीं ये लक्षण तीसरे पटल के जानिये ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ पटल में हुआ जो दोष उसका लक्षण ॥

चौथे पटल में उपजा जो दोष उसे लौकिक में तिमिर कहैं हैं और इसे कोई वैद्य शास्त्र के आचार्य लिंग नाशक रोग कहैं हैं लिंग नाशक कहिये जिसके नेत्रों की तेजोमई पुतली नीली कांच सदृश हो जाय और जिसमें ये लक्ष होंय उस पटल में दोष बहुत हों चन्द्रमा सूर्य नक्षत्र आकाश बिजली ये निर्मल तेज हैं सो भी अच्छे दीखैं नहीं ये भ्रमते से दीखें इस दोष को तिमिर कहैं हैं अथवा इसे लिंगनाश कहिये और लौकिक में इसे नजला कहैं हैं और कोई २ मोतिया बिन्द भी कहैं हैं ॥ ४ ॥

अथ और शास्त्रों के मत से लिंगनाश मोतिया ॥
बिन्द का लक्षण ॥

यह लिंगनाश मोतिया बिन्द रोग ६ प्रकार का है वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ रुधिर का ५ परिम्लायिन का ६ परिम्लायिन कहिये रुधिर से मूर्च्छित हुये पित्त को ॥

अथ बायु के लिंगनाश का लक्षण ॥

जिसके वायुका लिंगनाश होय उसे संपूर्ण बस्तु भ्रमती सी और मलीनसी दीखें और सब बस्तु कुछ एक लाल दीखें और कुटिल अर्थात् बांकी दीखे तब जानिये इसके बायु का लिंगनाश है ॥ १ ॥

अथ पित्त के लिंगनाश का लक्षण ॥

जिसके पित्त का लिंगनाश होय उसको सूर्य चन्द्रमा नक्षत्र अग्नि इन्द्र का धनुष बिजली ये सब भ्रमते से दीखें और सब वस्तु नीली सी दीखे तब जानिये कि पित्त का लिंगनाश है ॥ २ ॥

अथ कफ के लिंगनाश का लक्षण ॥

कफ का लिंगनाश होय उसे चिकना और सुपेद दीखे और उस मनुष्य का नेत्र जल से भराही रहै ॥ ३ ॥

अथ सन्निपात के लिंगनाश का लक्षण ॥

जिसके सन्निपात का लिंगनाश होय उसे नाना प्रकार का आकार दीखे और नहीं अधिक अंग दीखे और तेज रूप सबवस्तु दीखे और पीछे कहे लक्षण भी होंय ॥ ४ ॥

अथ रुधिर मे उपजे लिंगनाश का लक्षण ॥

जिसके लिंगनाश होय उसको लाल और सुपेद हरी काली और पीली सब वस्तु दीखे ॥ ५ ॥

अथ परिम्लायिन मे उपजे लिंगनाश का लक्षण ॥

रक्त से मूर्छित हुआ जो पित्त उसे परिम्लायिन कहिये उससे उपजा जो लिंगनाश उसे दशोंदिशा पीलीही दीखें मानो सर्वत्र सूर्य ही हैं वृक्ष आदि सब वस्तु दग्ध हुई अग्नि सदृश दीखे ॥

अथ और लिंगनाश का स्वरूप ॥

वायु का लिंगनाश अरुण पीलाई को लिये और नीला होय ॥ १ ॥ और ऐसा ही पित्त का होय ॥ २ ॥ और कफ का सुपेद होय ॥ ३ ॥ और रुधिर का लाल होय ॥ ४ ॥ और सन्निपात का बिचित्र होय ॥ ५ ॥

अथ वायु को आदिले ६ प्रकार के लिंगनाश कहे हैं ॥
तिनके नेत्र के मण्डल का पृथक् २ स्वरूप ॥

वायु का नेत्र मण्डल अरुण चंचल और कठोर होय १ ॥ पित्त के नेत्र मण्डल में बिलोसा नेल कांसी के वर्ण सदृश

और पीला होय ॥ २ ॥ कफ का मण्डल बहुत चिकना होय और शंख या कुन्द के फूल के सदृश पीला और चंचल होय और उस नेत्र मण्डल में सुपेद बुंद होंय ॥ ३ ॥

अथ सन्निपात के नेत्र मण्डल का लक्षण ॥

इस नेत्र मण्डल में मूंगे के सदृश अथवा पद्म के पत्र सदृश नेत्र मण्डल होंय और पीछे जो लक्षण कहे हैं सो भी होंय ॥ ४ ॥

अथ रुधिर के नेत्र मण्डल का लक्षण ॥

यह नेत्र मण्डल लाल होय ॥ ५ ॥

अथ परिम्लायिन नेत्र मण्डल का लक्षण ॥

यह नेत्र भटरंगा कांच के सदृश पीला होय और यह मण्डल लाल रूखा मैला और नीला होय ॥ ६ ॥

अथ पित्त विदग्धदृष्टि का लक्षण ॥

जिसके शरीर में पित्त दुष्ट हुआ होय उस पुरुष की दृष्टि पीली हो जाय और उसको सब वस्तु पीलीही पीली दीखैं ॥ ७ ॥

अथ दुष्ट पित्त तीसरे पटल में जाय प्राप्त होय उसका स्वरूप ॥

उस पुरुष को दिन में दीखे नहीं और रात्रि में दीखे चन्द्रमा के शीतल पने से कुछ एक पित्त रात्रि में थोड़ा होय ॥ ८ ॥

अथ कफ विदग्ध दृष्टि का लक्षण ॥

जिसकी दृष्टि कफ करके विदग्ध होय उसे सब सुपेद दीखै यह रोग प्रथम द्वितीय पटल में होय है ॥ ८ ॥

अथ नक्तांध नाम रतौंधी का लक्षण ॥

तीसरे पटल में कफ आवै तब नक्तांध होय दिनमें दीखै रात्रि में दीखे नहीं इसे लौकिक में रतौंधी कहैं हैं ॥ ९ ॥

अथ धूम दर्शी रोग का लक्षण ॥

शोक या ज्वर से खेद से शिर में ताप जाय प्राप्त होय तब मनुष्य की दृष्टि है सो धुवां से व्याप्त होय और मनु

को सब वस्तु धुयें के सदृश दीखें उसे धूम दर्शी रोग कहिये ॥

अथ ह्रस्वजात्य रोग का लक्षण ॥

जो पुरुष कष्ट से बड़ी वस्तु को देखै और वह वस्तु दिन में छोटी दीखै और रात्रि में यथार्थ दीखै उसे ह्रस्वजात्य रोग कहिये ॥ ६ ॥

अथनकुलांध रोग का लक्षण ॥

जिस पुरुष की दृष्टि तो अच्छी तरह से दीखै और उस दृष्टि में दोष आय प्राप्त होय तब उसको रात्रि बिचित्र दीखै इसे नकुलांध कहिये ॥ ७ ॥

अथ गंभीर रोग का लक्षण ॥

जो पुरुष सीधा ले तो उसकी दृष्टि भीतर को घुस जाय और नेत्रमें पीड़ा चले इसै गंभीरनाल रोग कहिये ७॥

अथ विना कारण ही लिंगनाश होय उसका लक्षण ॥

जिसकी दृष्टि निर्मल अच्छी होय सो बिना कारणही काली हो जाय उसै बिना कारण लिंगनाश कहिये ॥ १ ॥
इति दृष्टि रोगः ॥

अथ नेत्र के मंडल में हुए जो रोग तिनका नाम और संख्या लिखते हैं ॥

ये चार रोग कृष्ण मण्डल में होय हैं ॥ सव्रण शुक्र १ ॥ अव्रण शुक्र २ अक्षिपाकात्यय ३ अजका जात ॥ ४ ॥

अथ सव्रण शुक्र का लक्षण ॥

नेत्रकी काली जगह में पुतलीके ऊपर दोष आया होय और उस दोष करके तारा ढकि जाय और वह बूंद नेत्र में गड़ि जाय और उसमें सुई कासा चभका चलै और गरम २ पानी नेत्र में से गिरा करे तो उसे सव्रण शुक्र कहिये ॥ १ ॥

अथ सव्रण शुक्र का असाध्य लक्षण ॥

वह बूंद दृष्टिके समीप गाढ़ी और पकी त्वचा में नह

होय और आंखों में बहुत पानी नहीं पड़ै और उस में पीड़ा कम होय और एक आंखि में होय सोतो कदाचित् अच्छी होय और इस से बिपरीत लक्षण होंय सो असाध्य जानिये ॥ २ ॥

अथ अव्रण शुक्रका लक्षण ॥

जिसकी काली पुतली के तारे पर शुक्र की बूंद आई होय और वह बूंद हाले चले और शंख या चन्द्रमा या कुन्द के फूल या आकाश अथवा बादल के सदृश होय उसे अव्रण शुक्र कहिये यह साध्य है ॥

अथ अव्रण शुक्र साध्य है फिरअवस्था भेद करिके इसके कष्टसाध्य लक्षण लिखते हैं ॥

जिसके नेत्र का मांस बिखर जाय और वह बूंद आड़ी होय और वह नसों में ऊंडी होय और भदरंगी होय और दूसरे पटल में होय चारों ओर लाल होय और बहुत दिनों का होय ऐसा अव्रण शुक्र भी असाध्य जानिये इस का यत्न कीजे नहीं ॥ ३ ॥

अथ इसका और असाध्य लक्षण ॥

जिसके नेत्र में आंसू गरम उतरें और नेत्रमें फुन्सियां होंय और पुतलियों के ऊपर शुक्रकी बूंद मूंग के समान होय और तीतर के पंख सदृश बर्ण होय सो व्रण शुक्र भी असाध्य जानिये ॥ ४ ॥

अथ अक्षिपाकात्यय नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्रकी सुपेद जगह सब सूज जाय और अश्रुपात भी बहुत होंय और उस जगह पीड़ा भी बहुत होय और वह नेत्र दोषों से पकि जाय इसे अक्षिपाकात्यय रोग कहिये यह भी असाध्य है ॥ ५ ॥

अथ अजका जात नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसकी आंखि बकरे की मेंगनी सदृश हो जांय और उस में पीड़ा चले और लाल रहै और लालही जिसमें

आंसू आवैं इसे अजका जात नेत्र रोग कहिये ॥ ६ ॥ ये चारों कृष्ण मण्डल के रोग हैं ॥

अथ नेत्र के शुक्ल भाग में उपजे जो रोग तिनकेनाम और संख्या लिखते हैं ॥

नेत्रके शुक्लभागमें ११रोग हैं प्रस्तार्म १ शुक्लार्म २ रक्तार्म ३ अधिमांसार्म ४ स्नाय्वर्म ५ शुक्ति ६ अर्जुन ७ पिष्टक ८ शिराजाल ९ शिरापीड़िका १० बलासग्रथित ११ ये कफ करके हुये नेत्र के शुक्लभाग में होंय हैं ॥

अथ प्रस्तार्म नेत्र रोग का लक्षण ॥

नेत्र के सुपेद भाग में गरमी को लिये बड़ा और काला लाल चिन्ह होय उसको प्रस्तार्म नेत्र रोग कहिये ॥ १ ॥

अथ शुक्लार्म नेत्र रोग का लक्षण ॥

नेत्रका सुपेद और कोमल मांस बढ़े उसे शुक्लार्म नेत्र रोग कहिये ॥ २ ॥

अथ रक्तार्म नेत्र रोग का लक्षण ॥

नेत्र के सुपेद भाग में पद्म के सदृश कोमल जो मांस बढ़े उसे रक्तार्म रोग कहिये ॥ ३ ॥

अथ अधि मांसार्म रोग का लक्षण ॥

नेत्र के सुपेद भाग में बड़ा और कोमल पुष्ट कालजा समान चिन्ह होय उसे अधिमांसार्म रोग कहिये ॥ ४ ॥

अथ शुक्ति नाम नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिस नेत्र के शुक्ल भाग में काली और मांस के सदृश बूंद होंय उसे शुक्ति नाम रोग कहिये ॥ ५ ॥

अथ अर्जुन रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के शुक्ल भाग में शशा के रुधिर सदृश १ बूंद होय उसे अर्जुन नाम नेत्र रोग कहिये ॥ ६ ॥

अथ पिष्टक नाम नेत्र रोग का लक्षण ।

जिस नेत्रके शुक्ल भाग में बायु कफ के कोप करके पिसे आटे सदृश मांस ऊंचाहो उसे पिष्टक नाम रोग कहिये

अथ शिराजाल नेत्र रोग का लक्षण ।

जिस नेत्र के सुपेद भाग में नसोंके समूह कठिन और पीले हो आवें उसे शिराजाल नेत्र रोग कहिये ॥ ८ ॥

अथ शिरापिड़िका नाम नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिस नेत्र के सुपेद भाग में नसों से ढकी सुपेद फुनसियां होंय उसे शिरापिड़िका नाम नेत्र रोग कहिये ॥ ९ ॥

अथ बलास ग्रथित नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिस नेत्र के सुपेद भाग में काँसी के सदृश सुपेद अथवा कमल सदृश वर्ण और कठोरसा चिन्ह होय उसे बलासग्रथित नेत्र रोग कहिये ॥ १० ॥ इति नेत्र के शुक्ल भाग के ११ रोग सम्पूर्ण ॥

अथ नेत्र के मर्मस्थान में २१ रोग जो नीचे की और ऊपर की ॥
पंखड़ी में रहें तिन के नाम ॥

उत्संग पिड़िका १ कुम्भीका २ पोथकी ३ बर्त्मशर्करा ४ अर्शोबर्त्मा ५ शुष्कार्श ६ अंजन नामिका ७ बहुलबर्त्मा ८ बर्त्मबंध ९ क्लिष्टबर्त्मा १० वर्त्मकर्दम ११ श्याबबर्त्मा १२ प्रक्लिन्नबर्त्मा १३ अक्लिन्नबर्त्मा १४ वातहतबर्त्मा १५ बर्त्मार्बुद १६ अस्रस्तनिमेष १७ शोणितार्श १८ लगण १९ बिसबर्त्मा २० कुंचन ॥ २१ ॥

अथ उत्संग पिड़िका का लक्षण ॥

नेत्र के ढकने वाली वाफणी नाम काया उसमें फुनसी होय और उस फुनसी में मुह होय वह फुनसी लाल और बहुत ऊंची होय और रुधिर से उपजी और बड़ी होय और जिसमें खुजली चले ये लक्षण होंय उसे उत्संगपिड़िका कहिये ॥

अथ कुम्भीका पिड़िका का लक्षण ॥

जिसके नेत्र मार्ग के अन्त में कुम्भीका के बीज सदृश फुनसी होय और वह फुनसी फूट कर स्रवा करें और सूजन को लिये होय उसे कुम्भीका नाम नेत्र रोग कहिये ॥ २ ॥

अथ पोथकी नाम नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके कोये में लाल सरसों के समान फुनसी होंय और वह झरें बहुत खाज चले और पीड़ा होय उसे पोथकी पिड़िका नाम नेत्र रोग कहिये ॥ ३ ॥

अथ वर्त्म शर्करा पिड़िका नाम नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके कोये में तिबरसी ककड़ी के बीज सदृश फुनसी होंय और जिसमें पीड़ा कम होय उसे वर्त्मशर्करापिड़िका नाम नेत्र रोग कहिये ॥ ४ ॥

अथ अर्शोवर्त्मा नाम नेत्र रोग का लक्षण ॥

जो फुनसी चिकनी और कठोर होय उसे अर्शोवर्त्मा नेत्र रोग कहिये ॥ ५ ॥

अथ शुष्कार्श नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये में बड़े २ अंकुर दर्दरे भयंकर होंय उसे शुष्कार्श नाम नेत्र रोग कहिये ॥ ६ ॥

अथ अंजन नामिका नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये में फुनसियां दाह लिये होंय और लाल होंय और कोमल छोटी होंय और पीड़ा मन्द होय उसे अंजन नासिका नेत्र रोग कहिये ॥ ७ ॥

अथ बहुल वर्त्मा नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके कोये में चारों ओर एक वर्ण की बहुत सी फुनसियां होंय उसे बहुल वर्त्मा नेत्र रोग कहिये ॥ ८ ॥

अथ वर्त्म बन्धक नाम नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये में सूजन होय और उससे थोड़ी खुजली चले और थोड़ी पीड़ा होय और सूजन से नेत्र रुक जांय उसे वर्त्म बन्धक नाम नेत्र रोग कहिये ॥ ९ ॥

अथ क्लिष्टवर्त्मा नाम नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये का भाग अकस्मात लाल होय और मन्द पीड़ा होय उसे क्लिष्ट वर्त्मा नेत्र रोग कहिये ॥ १० ॥

अथ बर्त्म कर्दम नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र में पित्त संयुक्त कुपथ्य से रुधिर दग्ध होय और आंखि से कीचड़ बहुत बहै उसे बर्त्म कर्दम नेत्र कहिये ॥ ११ ॥

अथ श्याव बर्त्मा नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये के मार्ग में और बाहर काली सूजन होय और उस सूजन में पीड़ा होय और खुजली चलै और कीचड़ भी आवे उसे श्यावबर्त्मा नेत्र रोग कहिये ॥ १२ ॥

अथ प्रक्लिन्न बर्त्मा नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये के बाहर सूजन होय और उसमें पीड़ा नहीं होय और कीचड़ बहुत आवे उसे प्रक्लिन्न बर्त्मा नाम नेत्र रोग कहिये ॥ १३ ॥

अथ अक्लिन्न बर्त्मा नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसकी आंख धोये से खुले नहीं औ मिचीही रहै उसे अक्लिन्न बर्त्मा नेत्र रोग कहिये ॥ १४ ॥

अथ बातहतबर्त्मा नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके पलक अच्छी तरह मिचें नहीं और खुलेही रहैं और पीड़ा रहै अथवा नहीं रहै अथवा आंख मिची रहै उसे बात हत बर्त्मानेत्र रोग कहिये ॥ १५ ॥

अथ बर्त्मार्बुद नेत्र रोगे का लक्षण ॥

जिसके नेत्र भीतर कोा बैठि जांय और बायु से बाफणी जला करैउसै बर्त्मार्बुद रोग कहिये और उसे अस्रस्त निमेष कहिये ॥ १६ ॥

अथ शोणितार्श नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके कोये की बाफणी के मार्ग में उपजी फुनसी के कोमल अंकुर होंय तिन्हें दूर करने के वास्ते बांधकर सोवे अंकुर बढ़ा करे उसे शोणितार्श नेत्र रोग कहिये ॥ १७ ॥

अथ लगण नाम नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये के मार्ग में बेर प्रमाण गांठ होय

और वह गांठ पके नहीं और कड़ी होय और उसमें खुजली चले और नेत्र में कीचड़ आवे उसे लगण नेत्र रोग कहिये ॥ १८ ॥

अथ विषवर्त्मा नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये में बहुत छिद्र पड़ि जांय और कोये के ऊपर सूजन चढ़ जाय नेत्र में आंसू बहुत आवें उसे बिषबर्त्मा नेत्र रोग कहिये ॥ १९ ॥

अथ कुंचन नाम नेत्र रोग का लक्षण ॥

बायु पित्त कफ जिसके कोये के मार्ग को संकोचित कर लें और कोये को नेत्रों से उठने दें नहीं कोई बस्तु दीखे नहीं उसे कुंचन नाम नेत्र रोग कहिये ॥ २० ॥ इति नेत्र के कोयों का रोग संपूर्ण ॥

अथ नेत्र की बाफणी का रोग ॥

पक्ष्म कोप १ पक्ष्मशांन्ति २ ॥

अथ पक्ष्म कोप रोग का लक्षण ॥

जिसके कोये की बाफणी जाती रहै अथवा कोये में घुस जाय अथवा बाफणी में खुजली बहुत हो यह रोग बायु के कोपसे होय है और बहुत भयंकर है सूजन भी होय है यह असाध्य है ॥ १ ॥

अथ पक्ष्मशांति बाफणी के रोग का लक्षण ॥

नेत्र के कोये की बाफणी जाती रहै उसमें खुजली चले और जलती रहै यह पित्त के कोप में होय है ॥ २ ॥

अथ नेत्र की सन्धि में जो नव रोग होय हैं तिन का नाम ॥

पूपालस १ उपनाह २ पैत्तिक स्राव ३ कफ स्राव ४ सन्निपात स्राव ५ रक्त स्राव ६ पर्वणी स्राव ७ अलज ८ जंतु ग्रंथि ॥ ९ ॥

अथ पूपालस नेत्र संधि रोग का लक्षण ॥

नेत्र के मध्य पुतली के पास कोये के अन्त में जो सन्धि सो पीड़ा करे और पक कर सूज जाय औ उसमें कीचड़

राद के सदृश गाढ़ी बहुत आवे उसे पूपालस नाम नेत्र की सन्धिका रोग कहिये ॥ १ ॥

अथ उपनाह नाम नेत्र की संधि के रोग का लक्षण ॥

नेत्र की दृष्टि की सन्धि में बड़ी गांठ होय और पकै नहीं और उसमें खाज आवे और पीड़ा नहीं होय उसे उपनाह नाम नेत्र की सन्धिका रोग कहिये ॥ २ ॥

अथ पैत्तिकस्राव नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण ॥

जिसकी आंखि में पीड़ा बहुत होय और रोमांच होय आवे और आंखिमें खुजली होय नेत्र कड़ुवे होंय और शिर बलै और जिसके नेत्रकी सन्धि में अश्रुपात हल्दी के समान पीले बहुत आवें उसे पैत्तिक स्राव नेत्र की सन्धि का रोग कहिये ॥ ३ ॥

अथ कफस्राव नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र की सन्धि में सुपेद बदरंगे और चिकने आंसू आवें उसे श्लेष्मस्राव नेत्र की सन्धिका रोग कहिये ॥ ४ ॥

अथ सन्निपातस्राव नेत्र की संधि के रोग का लक्षण ॥

नेत्र की सन्धि में नासूर पड़ जाय और उसमें दुर्गंधि को लिये राद निकला करे उसे सन्निपात स्राव नेत्र की संधि का रोग कहिये ॥ ५ ॥

अथ रक्तस्राव नेत्र की संधि के रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र की संधि में गरम रुधिर बहुत निकलै उसे रक्त स्राव नेत्र की संधि का रोग कहिये ॥ ६ ॥

अथ पर्व्वणी नाम नेत्र की संधि के रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र की सन्धि तांबे के वर्ण समान लाल होय और महीन होय दाह और शूल को लिये होय गोल जिस का शोथ होय उसे पर्व्वणी नाम नेत्र की संधि का रोग कहिये ॥ ७ ॥

अथ अलजी नाम नेत्र की संधि के रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र की संधि तांबे के समान लाल होय और

महीन होय और दाह शूल को लिये होय जिसका शोथ गोल होय उसे अलजी नाम नेत्र की संधि का रोग कहिये इसका और पर्व्वणी का एकही लक्षण है ॥ ८ ॥

अथ जंतु ग्रंथि नाम नेत्र की संधि के रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र की संधि की गांठ में कृमि पड़जांय और उस्से बाफणी जाती रहै और उस जगह खुजाल आवै और उसके नेत्रों की संधि में अनेक महीन मार्ग होजांय और नेत्र में पीड़ा बहुत होय उसे जंतुग्रंथि नाम नेत्र की संधि का रोग कहिये ९ ॥ इति नेत्र संधि रोग सम्पूर्ण ॥

अथ नेत्र के समस्त रोगों की संख्या और उनके नाम लिखते हैं ॥

वायु का अभिष्यन्द १ पित्त का अभिष्यन्द २ कफका अभिष्यन्द ३ रक्त का अभिष्यन्द ४ वायु का अधिमंथ ५ पित्त का अधिमंथ ६ कफ का अधिमंथ ७ रक्त का अधिमंथ ८ सशोथ पाक ९ अशोथपाक १० हताधिमंथ ११ वातपर्याय १२ शुष्काक्षिपाक १३ अन्यतोवात १४ अम्लाध्युषित १५ शिरोत्पात १६ शिरोहर्ष १७ ॥ और नेत्र की स्यामता १ नेत्र की निरामता २ ॥

अथ नेत्र की वायु का अभिष्यन्द जिसे लौकिक में नेत्र पीड़ा कहैं हैं उसका लक्षण ॥

जिसकी आंख में पीड़ा बहुत होय और रोमांच होय आवैं आंखि में खुजाल आवै नेत्र कड़े होंय औ मस्तक जलै और अश्रु शीतल पड़ैं तब इसे वाताभिष्यन्द नेत्र का रोग कहिये ॥ १ ॥

अथ पित्त का अभिष्यन्द जिसे लौकिक में गरमी से नेत्र पीड़ा कहे हैं उसका लक्षण ॥

जिसके नेत्रों में दाह बहुत होय औ आंखि पकि जांय नेत्रों में शीतलता सुहावे और धुआंसा निकले और गरम आंसू पड़ैं और पीले नेत्र होंय तो पित्त का अभिष्यन्द नेत्र का रोग जानिये ॥ २ ॥

अथ कफ के अभिष्यन्द का लक्षण ॥

जिसकी आंखि में गरमी सुहावे और नेत्र भारी होंय उस पर सूजन होय और आंख में खुजाल आवे और कीचड़ बहुत आवै और नेत्र शीतल बहुत रहैं झड़ें बहुत इसे कफ का अभिष्यन्द रोग कहिये ॥ ३ ॥

अथ रक्ताभिष्यन्द जिसे लौकिक में रुधिर की
नेत्र पीड़ा कहैहैं उसका लक्षण ॥

जिसके नेत्र के कोये लाल होंय और जिसका आंसू तांबे के समान पड़े और नेत्रों में दाह होय और शीतलता सुहावै गरम आंसू पड़ें उसे रुधिर का अभिष्यन्द नेत्र रोग कहिये ॥ ४ ॥

अथ वायु के अधिमंथ जिसे लौकिक में बड़ी
नेत्र पीड़ा कहे हैं उसका लक्षण ॥

आंख दूखते में कुपथ्य करै तब आंखोंमें शूल बहुत चलै और ऐसे हूल चलें मानो फूटीसी जाय आधा शिर नीचे हो जाय मस्तक जलि उठै आंसू शीतल आवें तब जानिये वायु का अधिमंथ नेत्र का रोग है ॥ ५ ॥

अथ पित्त के अधिमंथ का लक्षण ॥

जिसकी आंखि दूखनी आई होंय वह गरम वस्तु और खटाई आदि कुपथ्य करै तब इसकी आंख में हूलें बहुत चलें मानें आंख मूल से फूटीसी जांय आंख में दाह होय और पकिजांय और शीतलता सुहावै आंसू बहें पीले नेत्र होंय तब जानिये पित्त का अधिमंथ नेत्र रोग है ॥ ६ ॥

अथ कफ के अधिमंथ का लक्षण ॥

जिसकी आंख में हूले बहुत चले मानें आंख फूटी जांय हैं और उसमें गरम सुहावे और आंखों में सूजन होय खाज आवे इसे कफ का अधिमंथ नेत्र रोग कहिये ॥ ७ ॥

अथ रक्त के अधिमंथ का लक्षण ॥

जिसकी आंख दूखती होंय और रुधिर बिगड़ै ऐसा

कुपथ्य करै उसकी आंखि में शूलैं बहुत चलैं मानों आंखि बैठीसी जांय और तांबे के वर्ण सदृश आंसू पड़ें और लाल जिसकी आंखे होंय और दाह होय पकि जाय गरम आंसू पड़े तब जानिये रक्त का अधिमंथ नेत्र रोग है ॥ ८ ॥ कफ का अधिमंथ ७ दिन में नेत्र को फोड़े वायु का अधिमंथ ६ दिन में नेत्र को फोड़े पित्त का अधिमंथ तत्काल नेत्र को फोड़ै है ॥ ९ ॥

अथ सशोथ पाक नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिस के नेत्र में आंसू आवैं और खाज होय और उसके नेत्र पके गूलर के फल समान पकिजांय और सूजन होय और नेत्रलाल होंय उसे सशोथपाक नेत्रकारोग कहिये ९ ॥

अथ अशोथ पाक नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र के ऊपर सूजन नहीं होय और खाज होय और पके गूलर के सदृश पकिजांय और नेत्र लाल होंय उसे अशोथपाक नेत्र का रोग कहिये ॥ १० ॥

अथ हताधिमंथ नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसको नेत्र से दीखे नहीं और उसमें पीड़ा बहुतहोय जैसे कमल सूखि जाय ऐसे नेत्र होजांय उसे हताधिमंथ नेत्र रोग कहिये ॥ ११ ॥

अथ बातपर्याय नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसकी भौं और नेत्रों में बारम्बार पीड़ा बहुत चले उसे बातपर्याय नेत्र रोग कहिये ॥ १२ ॥

अथ शुष्काक्षिपाक नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्रमुंदिजांय और जलें लाल होजांय और अच्छी तरह सूझै नहीं और रूखे होजांय उसे शुष्काक्षिपाक नेत्र रोग कहिये ॥ १३ ॥

अथ अन्यतोबात नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके कंधे शिर डाढ़ी कान भौंह आंख इनमें वायुकी पीड़ा बहुत चले उसे अन्यतोबात नेत्र रोग कहिये ॥ १४ ॥

अथ अम्लाध्युषित नेत्र रोग का लक्षण ॥

जिसके नेत्र काले और लाल हों पकि जांय और उनमें सूजन होय नेत्रों में पानी आवै उसे अम्लाध्युषित नेत्ररोग कहिये ॥ १५ ॥

अथ शिरोत्पात जिसे लौकिक में सबल वायु नेत्र रोग कहैं हैं तिस का लक्षण ॥

जिस की आंखों में पीड़ा होय अथवा पीड़ा नहीं होय अथवा जिसकी आंखों की नसें चारों ओर से तांबे के सदृश लाल होंय उसे शिरोत्पात नाम सबल वायु नेत्रका रोग कहिये ॥ १६ ॥

अथ शिरोहर्ष नेत्र रोग का लक्षण ॥

जो पुरुष अज्ञानतासे सबल वायु का यत्न नहीं करे उसकी आंखि में आंसू बहुत वार २ पड़ाही करें और उसे नेत्रों से किसी तरह भी दीखे नहीं इसे शिरोहर्ष नेत्र रोग कहिये ॥ १७ ॥

अथ रोग युक्त नेत्र का लक्षण ॥

नेत्रमें बहुत पीड़ा होय और ललाई रहे खुजली होय और शूल चलै तब जानिये इस नेत्रमें रोग रहैहै गया नहीं १॥

अथ निरोग नेत्र का लक्षण ॥

नेत्रमें कुछ भी पीड़ा नहीं रहै और कुछ भी खाज और सूजन होय नहीं और आंसू आदि आवें नहीं नेत्रों का अच्छा वर्ण होय और सब वस्तु महीन भी यथार्थ दीखे उसके नेत्र का रोग गया जानिये ॥ २ ॥ यह परीक्षा है जब तक नेत्रों में रोग रहै तब तक इतनी वस्तु करिये नहीं सो वस्तु लिखते हैं ॥ नेत्र रोग वाला सुरमा और काजल आदि लगावे नहीं घृत और कषैली खटाई आदि कुपथ्य और पान आदि गरम वस्तु गरिष्ठ भोजन खाय नहीं स्नान करे नहीं इति समस्त नेत्र रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ समस्त नेत्र रोगों का यत्न ॥

नेत्र के रोग वाले को लंघन और लेप और स्वेद कर्म और शिर की नस की फस्त छुड़ावे और जुलाब और आश्चोतन कर्म और इन्हें आदि ले और यत्न करे तो नेत्रों के विकार सब जांय ॥

अथ आंखि दूखने आई होंय उसका यत्न ॥

जिसकी आंखि दुखती होय उसके ३ दिन तक अंजनादिक कीजे नहीं क्योंकि ३ दिन तक नेत्र कच्चे रहैं हैं चौथे दिन पकि जांय तब नेत्र में अंजन औषधि करे तो वह नेत्र तत्काल अच्छे होंय ॥ १ ॥ हेमन्त और शिशिरऋतुमें तो अंजन मध्यान्ह में करिये ग्रीष्म और शरद ऋतु में मध्यान्ह के पहिले अंजन कीजे वर्षा ऋतु में बादल नहीं होय तब अंजन कीजे और बसन्त ऋतु में सदाही अंजन कीजे सुरमा आदि का अंजन करे तो नेत्र रोग कभी भी नहीं होय प्रथमतो बाईं आंखि आंजिये पीछे दाहिनी यह संप्रदायहै ॥

अथ आँख दूखने आई होंय उसका लेप ॥

हड़की छाल । सेंधानोन । गेरू । रसोत । ये सब बराबर ले इन्हें जल में महीन पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे तो सर्व नेत्रों के रोग जांय ॥ १ ॥

अथ नेत्रों के अच्छे होने का दूसरा लेप ॥

लोहेके पात्र में नीबूका रस डाले पीछे उस रसको कुछ एक गाढ़ा करे पीछे नेत्रों के ऊपर लगावे तो दुखते नेत्र अच्छे होंय ॥ २ ॥

अथ नेत्रों की पीड़ा को तत्काल दूर करने वाला लेप ॥

अफीम १ मासे फुलाई फिटकरी १ मासे लोध १ मासे इन्हें नीबके रसमें पीस लोहेकी कड़ाही में कुछ एक गरम करै पीछे नेत्रों के ऊपर लेप करे तौ नेत्र दुखना तत्काल अच्छा होय ॥ ३ ॥

अथ नेत्र के अच्छे होने का और लेप ॥

मुलहटी । गेरू । सेंधानोन । दारुहल्दी । रसौत यह सब बराबर ले इन्हें जल से महीन पीस नेत्र के ऊपर लेप करै तो नेत्र दूखने के सर्व रोग जांय ॥ ४ ॥

अथ नेत्र दूखने आए होंय तिनके अच्छे होने की पोटली ॥

पठानी लोध १ मासे । फुलाई फिटकरी १ मा० रसौत १ मा० मुलहटी १ मा० इन्हें महीन पीस ग्वार कोपट्ठे के रस में अथवा पोस्त के पानी में अथवा जल में १ मासे भर की पोटली करै पीछे दूखते हुए नेत्रों के ऊपर बार २ फेरै तो नेत्र अच्छे होंय ॥ ५ ॥

अथ नेत्र में वायु करके शूल चलता होय उसके अच्छे होने का सेंक ॥

पठानी लोध को महीन पीस कपड़े से छान कर घृत में भूने पीछे उसको गरम पानी से सेक करै तो नेत्र अच्छे होंय ॥ ६ ॥

अथ नेत्र रोग के अच्छे करने के वास्ते इस तरह इतने यत्न करै तो वैद्य ठगावै नहीं सो शारंगधर वाग्भट्टादिक के मत से लिखते हैं ॥

सेक १ आश्चोतन कर्म २ पीड़ाबन्धन ३ बिड़ाल कर्म नाम आंखों के ऊपर लेप करना ४ तर्पण नाम नेत्र में घृत रसादिक का डालना ५ पुटपाक ६ अंजन ७ मल कर्म ८ इस प्रकार नेत्र रोग का यत्न करिये अरण्ड के पत्ते की जड़ बक्कल इन्हें औटाय इनका जल काढ़ इस जलको बकरी के दूध में औटावै वह जल जलि जाय दूध आय रहै तब उस दूध को कुछ एक गरम आंखि के ऊपर १०० बार तरड़ादे तो वायु से दूखती आंखि अच्छी होय ॥ ७ ॥ अथवा दूध में थोड़ा सेंधानोन डाल गरम कर सुहाता २ आंखि के ऊपर तरड़ा दे तो वायु की आंखि अच्छी होय

८॥ अथवा हल्दी। दारुहल्दी। सेंधानोन। इन्हैं दूध में पकाय इस दूध का आंखि ऊपर तरेड़ा दे तो आंख अच्छी होय॥ ९॥

अथ गरमी से आँखि दूखनी आई होय उसका सेंक॥

पठानीलोध। मुलहटी। इन्हैं महीन पीस घृत में सेंकै पीछे बकरी के दूधमें इन्हैं पकावै फिर इस दूध को आंखि के ऊपर तरेड़ा दे तो गरमी से दूखती आंखि अच्छी होय॥ १०॥ और रुधिर के दुष्ट पने से आंखि दूखै उसका भी यही यत्न है॥ ११॥ अथवा त्रिफला। लोध। मुलहटी। मिश्री। नागरमोथा। इन्हैं शीतल जल से महीन पीस नेत्र के तरेड़ा दे तो रुधिर से दूखती आंख अच्छी होय १२॥

अथ आश्चोतन की विधि॥

आश्चोतन कर्म रात में करिये आंखि उघाड़ी राखै उस में औषधियों के रस की आठ बूंद डालिये शीतकाल में गरम डालिये उष्णकाल में शीतल डालिये वायु की आंखि दूखै तो गरम औषधि डालिये कफ की आंखि दूखै तो तीक्ष्ण और गरम औषधि का रस डालिये॥ १३॥

अथ वायु से आंखि दूखै उसका लेप॥

नीबके पत्तों का रस पानी डाल काढ़ उसमें लोध को पीस गरम करै पीछे उसका आंखि ऊपर लेप करै तो वायु के रक्तपित्त से दुखती आंखि अच्छी होय॥ १४॥

अथ रक्तपित्त और वायु से आंखि दूखै उसका यत्न।

स्त्री के दूध की आठ बूंद डाले तो गरमी से दुखती आंखि अच्छी होय॥ १५ अथवा वायु से आंखमें शूल चलें और यत्न से आराम नहीं होय उसके ललाट की नस का कुछ रुधिर कढ़ावे अथवा भौं के ऊपर दाह दे तो नेत्रों के शूल अच्छे होंय॥ १६॥ अथवा सहजने के पत्तों की पीड़ी अथवा नींब के पत्तों की पीड़ी नेत्र के ऊपर बांधे तो कफ के नेत्र के शूल जांय॥ १७॥

अथ गरमी से नेत्र में शूले चलें उसका यत्न ॥

आंवले को पानीसे पीस उसकी पेड़ीबांध अथवा बकायन के पत्तों की पीडी बांधे तो गरमी से उत्पन्न नेत्रके शूले जांय ॥ १८ ॥ अथवा त्रिफला । लोध इन्हें कांजी के पानी में पीस पीछे घृत में इन्हें तले फिर इसकी पीड़ी बांधे तो गरमी से और कफ से हुए नेत्रों के शूले जांय ॥ १९ ॥

अथ नेत्र में शूला और सूजन और खाज होय उसका यत्न ॥

सोंठ नीमके पत्ते इन में थोड़ा सेंधानोन मिलाय महीन पीस इनकी पीड़ी नेत्र के बांधे तो नेत्र की सूजन जाय और शूले ये सब जांय ॥ २० ॥

अथ नेत्र की गुहानी का यत्न ॥

नेत्र की गुहानी को घृत से सेंक फिर उस गुहानी को शस्त्र से फोड़ उसके ऊपर हरताल । तगर । सेंधानोन । ये सब बराबर ले इन्हें सहत से महीन पीस इनका लेप करे तौ गुहानी जाय ॥ २१ ॥

अथ नेत्र रोग के वास्ते तर्पण की विधि ॥

जिस जगह निर्वातस्थान होय तहां सूधा सुवाइये है उसके नेत्रके ऊपर चौगिर्द उड़द का चून महीन पीस पानी में उसन उसकी २ अंगुल की बाटी कीजै फिर उसमें घृत कुछ एक गरम सुहाता अथवा १०० बार धोया घृत अथवा दूध कीही १००बार गिनती का बोले इतनी बार राखै तो नेत्रके रोग बांकापन बाफणी जातीरही होय आंखिअच्छी तरह उघड़े नहीं तिमिर फूला मस्तक पीड़ा बायुशूले ये सबरोग तर्पण से जांयहैं यह तर्पण बादलों में उष्ण काल में चिन्तामें श्रम में करिये नहीं इति तर्पण बिधि २२ ॥

अथ नेत्रों का अंजन लिखते हैं ॥

शंखकीनाभि । बहेड़े कीमींगी । हड़ की मींगी । मैनसिल । पीपल । कूट । वच । ये सब बराबर ले इन्हें बकरीके

दूध में महीन पीस अंजन करै तो फूला तिमिर मांस की नेत्र में वृद्धि नेत्रों में काच आई होय पटल रतौंधी और नेत्रों के रोगों को यह अंजन दूर करै है॥ इति चन्द्रोदय गुटिका॥ २३ ॥

अथ लेखनी गुटिका लिखते हैं॥

कणगच के बीजों को महीन पीस उसमें के छलके रस की बहुत सी पुट दे पीछे उसकी गोली करिये फिर इस गोली को घिस पानी से अंजन करे तो फूला को आदि ले नेत्र के सब रोग जांय २४ ॥

अथ दन्त बर्त्ति लिखते हैं ॥

सूकरका दांत। गौका दांत। बकरी का। दांत। घोड़े का दांत। गधे का दांत। शंखकी नाभि। अनबिधा मोती। समुद्र का फेन ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस इनका अंजन करे तो सब प्रकार के फूले जांय ॥ २५ ॥ अथवा कमल गट्टे सहंजने के बीज। नागकेशर इन्हें महीन पीस अंजन करे तो नींद बहुत आती हो उसे नींद आवे नहीं ॥ २६ ॥ इति नींद बाधक अंजन ॥

अथ रोपणी गुटिका ॥

तिलों के फूल ८० पीपल के बीज ६० चमेली के फूल ५० मिरच १६ इन्हें महीन पीस गोली कर राखे पीछै गोली को पानी में घिस अंजन करे तो तिमिर। अर्जुन रोग। फूलामांस वृद्धि आदि ले नेत्र के सब रोग जांय॥ २७ ॥

अथ स्नेह की गुटिका ॥

रसोत। दोनों हल्दी। चमेली के फूल। अथवा नींब के पत्ते इन्हें महीन पीस गोबर के रस से अंजन करे तो रतौंधी जाय॥ २८॥ अथवा आंवलेके बीज। बहेड़े के बीज। हड़ के बीज इन्हें महीन पीस अंजन करे तो नेत्र के पानी को और वातरक्त के रोगों कोयह अंजन दूर करे है॥ २९ ॥

अथवा नीलाथोथा। सोनामक्खी। सेंधानौन। मिश्री। शंख की नाभि मैनसिल। गेरू। समुद्रका फेन। काली मिरच। ये सब बराबर ले इन्हें सहत में महीन पीस अंजन करे तो तिमिर नेत्र फूला कांच इनको यह अंजन दूर करे ॥ ३० ॥

अथ फूले के दूर होने का अंजन ॥

चीनिया कपूर को बड़के दूध में २ मासे तक अंजन करे तो फूला जाय ॥ ३१ ॥

अथ नींद नाशक अंजन ॥

कालीमिरच को महीन पीस घोड़े की लार से अथवा सहत से अंजन करे तो बहुत नींद जाती रहै ॥ ३२ ॥

अथ तन्द्राके दूर होनेका अंजन ॥

मूंगा। कालीमिरच। कुटकी। बच। सेंधानौन। ये सब बराबर ले इन्हें बछड़े के मूत्र में घिस अंजन करे तो तन्द्रा जाय ॥ २३ ॥

अथ रसांजन गुटिका ॥

रसौत। राल। चमेली के फूल। मैनसिल। समुद्र फेन। सेंधानौन। गेरू। काली मिरच। ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस सहत में अंजन करे तो नेत्र की खाज वा फखी जाती रही होय उसको यह अच्छा करे ॥ ३४ ॥

अथ मोतिया बिन्द के दूर होने का अंजन ॥

गिलोय का रस २॥ टं० सहत १ मासे सेंधानोन १ मा० इन सबको इकट्ठा कर महीन पीस अंजन करे तो मोतिया बिन्द और तिमिरधुन्ध आदि ले सब रोग जांय ॥ ३५ ॥

अथवा सांठीकीजड़। स्त्रीके दूध से घिस अंजन करे तो नेत्रों की खाज जाय ॥ सांठी की जड़ को सहत से घिस अंजन करे तो नेत्रों से पानी पड़ता बन्द होय सांठी की जड़ को घृत से रगड़ अंजन करे तो फूला जाय सांठी की जड़ को तेल से घिस अंजन करे तो तिमिर जाय सांठी की जड़को कांजी से घिस अंजन करे तो तिमिर जाय ॥ ३५ ॥

अथ नेत्रों में पानी पड़े उसके दूर होने का अंजन ॥

बबूल के पत्तों का काढ़ा कर रस काढ़े पीछे रसको और गाढ़ा करे फिर इसमें सहत मिलाय अंजन करे तो नेत्र से पानी पड़ना बन्द होय ॥ ३७ ॥ निर्म्मली के फलको पानी में घिस अंजन करे तो नेत्रका पानी बन्द होय ॥ ३८ ॥

अथ नेत्र के निर्म्मल करने का अंजन ॥

निर्मली के फल को सहत में घिस इसमें थोड़ा कपूर मिलाय अंजन करे तो नेत्र निर्मल होंय ॥ ३९ ॥

अथ जिसके नेत्र में मोतियाबिन्दु या काच आदि से सूझै नहीं उसके अच्छे होने का अंजन ॥

काले सांप के मांस का घृत और शंख की नाभि । निर्मली इन्हें महीन पीस नेत्रों में अंजन करे तो मोतिया विंदु आदि रोग जांय और इसे दीखने लगे ॥ ४० ॥ अथवा मुरगे के अंडे का छिलका । मैनसिल । काच । शंख की नाभि चन्दन । सेंधानोन ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस अंजन करे तो मोतिया विंदु फूला आदि नेत्र के रोग जांय ॥ ४१ ॥

अथ नेत्र के सब रोग दूर होने का अंजन ॥

कालीमिरच २ मासे पीपल २ मा० समुद्रका फेन २ मा सेंधानोन २ मा० सुरमा ३६ मा० इन्हें महीन पीस चित्रा नक्षत्र के दिन इसका अंजन करे तो फूली खाज काच आदि सब नेत्र के रोग जांय ॥ ४२ ॥ अथवा खापरे को महीनपीस उसको जल में डबोयदे पीछे उसका पानीलेता जाय उसे जुदा रक्खे बारबार का पानी ले और नीचे रहा जो खापरे का चूर्ण उसे ले नहीं और उस खापरे के पानी को जुदा पात्र में सुखाय दे उसकी पापड़ी करले पीछे उस पापड़ी को त्रिफले के रसकी ३ पुट दे पीछे इसपापड़ी का दशवां भाग कपूर मिलावे फिर इसको महीन पीस अंजन करे तो नेत्रों के सब रोग जांय ॥ ४२ ॥

अथ नेत्रके सब रोग दूर होने का और यत्न ॥

सुरमे को अग्नि से गरम कर त्रिफले के रस में ७ बार डबोवे पीछे स्त्री के दूध में इसी तरह ७ बार डबोवे पीछे गोमूत्र में इसी तरह बारंबार गरम कर सुरमे को डबोवे फिर स्त्री के दूध में ५ बार डबोवे पीछे इसको महीन पीस अंजन करे तो नेत्र के सर्व रोग जांय ॥ ४३ ॥

अथ नेत्र की दृष्टि करने वाली शलाका ॥

सीसेको अग्नि में गलाय २ त्रिफले केरस में १०० बार डबोवे पीछे इसीतरह जल भांगरेके रसमें ५० बार डबोवे पीछे इसी तरह सोंठि के रसमें ५० बार डबोवे पीछे इसी तरह घृतमें ५० बार डबोवे पीछे गोमूत्र में इसी तरह २५ बार डबोवे फिर इसी तरह सहत में २५ बार डबोवे फिर बकरी के दूधमें २५ बार डबोवे फिर इस सीसे की सलाका करे और सलाकाको नेत्रमें फेरे तो नेत्र के सब प्रकार के रोग जांय ॥ ४४ ॥

अथ नयनामृत का अंजन ॥

सोधे सीसे को गलाय उसीकी बराबर उसमें पारा मिलाय पीछे सुरमा और सीसा पारे की बराबर मिलाय इन सबका दसवां भाग भीमसेनी कपूर डालै पीछे इनसब को महीन पीस अंजन करै तो नेत्र के सबरोग जांय ॥ ४५ ॥

अथ सर्प आदि के विष के दूर होने का अंजन ॥

जमालगोटे की मींगी ले उसमें नींबू के रस की २१ पुट दे पीछे इसकी गोली कीजै फिर इसगोली को मनुष्य की लार में घिसि नेत्र में अंजन करै तो सर्प आदि के विष दूर होंय वह मनुष्य मराभी जीवै ४६ ॥ ये सब अंजन शारंगधर में लिखे हैं ॥

अथ आँखि दुखती होंय उसके अच्छे होने का शाह हजूरी का बताया नुक्सा ॥

अत्तार की दवा जंगीहड़ ये दोनों औषधि पानी में घिस

आंखों के ऊपर चौगिर्द लेप करै तो वायु पित्त कफ इन तीनों आजारों में किसी बिकार से आंखि दूखनी आई होय तो शीघ्र आराम होय यह नुस्खा अजमाया हुआ है ४७ ॥

अथ वाग्भट्ट के मतसे मोतिया बिंदु का यत्न ॥

कच्चे मोतिया बिंद का जाला शलाके से उतारिये नहीं पक्के का जाला उतार लीजे ॥ ४८ ॥

अथ पक्के मोतियाबिंदु का लक्षण ॥

नेत्र के तिल के ऊपर दही या मट्ठे समान बूंद आय जाय और उसको कुछभी दीखै नहीं और उस नेत्र में पीड़ादिक कुछ भी नहीं होय तब उस नेत्र का शलाकादिक से जाला उतारै और इतने मनुष्यों का जाला उतारिये नहीं पीनस रोग वाले का कान और नेत्र में जिसके शूल चले और श्रावण कार्तिक और चैत्र के महीने में जाला उतारिये नहीं और साधारण काल होय तब जुलाब दे शरीर को शुद्ध करै भोजन कर अच्छे निर्मल स्थान में बैठावै जहां पवनादिक नहीं होंय। मध्याह्न के पहले नेत्र के रोग को दूर करने वाले प्रवीण वैद्य के निकट नेत्र का जाला शलाका से लिवावै वैद्य है सो रोगी को पालथी मार बैठावै और रोगी के पीछे चतुर मनुष्य को बैठावै वह मनुष्य दोनों हाथों से रोगी को पकड़ै हलने दे नहीं इस तरह उसको बैठावै पीछे उसकी आंखि में वैद्य शलाका डालै अत्यन्त चतुरता से उसकी आंखि में शलाका को फेरै शलाका से नेत्र के प्रान्त भाग में जाले को फोड़ सब नेत्र के जाले को दूर कर उस जाले में से नेत्र के तिलके ऊपर की वह विकार की बूंद ढल पड़ै तब इस मनुष्य को सब वर्ण यथार्थ दीखैं शलाका के फेरने से पहले नेत्र को मुहकी बाफ से फूंक दे प्रस्वेद युक्त करले और वैद्य अपने अंगूठे से उस रोगी के नेत्र को मसल कोमल करले पीछे शलाका से जाला ले वैद्य

भी अपना हाथ और तरह हलने दे नहीं इस विधि से नेत्र का जाला ले पीछे रोगी को अच्छी बातों से प्रसन्न कर फिर उसको सुलाय दे पीछे उस रोगी की आंख के ऊपर घृत का फोहा बांधै और उस रोगी को सूधा सुलावै ऐसे स्थान में जहां पवन चकचोंध आदि आवै नहीं और रोगी का शिर आदि वा शरीर हलने न दे और रोगी को छींक खांसी डकार थूकना बहुत पानी का पीना दातन स्नान खेद आदि करने दे नहीं और उस रोगी को अधोमुख सोने दे नहीं अत्यन्त हलका भोजन करावे इत्यादिक गरिष्ट वस्तु खाने दे नहीं इस विधि से ७ दिन करै पीछे कुछ एक घृत डाल पतला हलका अन्नका हरीरा खवावै पीछे वायु को दूर करने वाली मिश्री को आदि ले खवावै इसी तरह १ मंडल तक रक्खै कुछ कुपथ्य करने दे नहीं पवन तेज और महीन वस्तु आदि को देखै नहीं और नेत्र में शीतलता होय ऐसी दूब आदि वस्तु देखने दे तो मोतियाबिंद आदि ले नेत्र के सब रोग जांय पीछे इसके शीतल चश्मा लगावै तो यह रोग कभी इसके होय नहीं यह मोतियाबिंदु का यत्न वाग्भट्ट में लिखा है ॥ ४९ ॥

अथ पांडु रोग के दूर करने वाला अंजन ॥

हींग को दड़घल के रसमें घिस नेत्र में अंजन करै तो पांडु रोग पीलिया जाय ॥ ५० ॥

अथ नारायणाञ्जन ॥

तुलसी और तुलसी के पत्तों का रस बराबर ले दोनों को कांसी के पात्र में डाल दोनों की बराबर स्त्री का दूध डाले पीछे इन तीनों को गजबेलि के घोटे से २ पहर रगड़े फिर कांसीहो के पात्र में तांबे के घोटे से २ पहर रगड़े पीछे इसका अंजन करै तो नेत्र का शूल और नेत्र का पाक तत्काल जाय ॥ ५१ ॥

अथ नयनामृत गुटिका ॥

सोंठ । हड़कीछाल । कुलत्थ । खापरा । फिटकरी । माजूफल ये सब बराबर ले और भीमसेनी कपूर । कस्तूरी अवेधमोती ये एक औषधि के तोल से आधी २ ले, पीछे इन सब को खरल में महीन पीस नीबू के रस में ५ दिन खरल कर पीछे इसकी गोली कर गोली को जल में घिसि अंजन करे तो तिमिर जाय और इस गोली को स्त्री के दूध से घिस अँजन करे तो फूला पटल जाय और सहत से अंजन करे तो नेत्र से जल गिरना बन्द होय गोमूत्र से अंजन करे तो रतोंधी जाय और केले के रस से अंजन करे तो नेत्र को मांस वृद्धि जाय ॥ इति नयनामृत वटी ॥ ५२ ॥

अथ नेत्रों की बाफणी जाती रही होय उनके आने का अंजन ॥

आंधीझाड़ा अर्थात् अपामार्ग के पत्तों को गोमूत्र में पीस पीछे उससे आधा खापरा ले फिर इन दोनों को खरल में पीसे फिर इन दोनों के बीच जस्त का महीन पत्र कर धरे कपड़ मिट्टी कर सुखाय अरने उपले में गजपुट की फूंक दे फिर स्वांग शीतल होने पर काढ़े फिर महीन पीस अंजन करै तो नेत्र की बाफणी आवे ॥ ५३ ॥

अथ शीतला के फूले दूर होने का अंजन ॥

गधे की डाढ़ को महीन पीस अंजन करे तो शीतला के फूले जांय ॥ ५४ ॥

अथ सबल वायु के दूर होने का अंजन ॥

आंवलासार गन्धक से मारे तांबे को महीन पीस अंजन करे तो सबल वायु पटल आदि ले नेत्र के सब रोग जांय ५५ ॥ ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं ॥

अथ फूला धुन्ध इनके दूर होने का यत्न ॥

चोखा नीलाथोथा ५ टंक फुलाई फिटकड़ी ५ टं० भिगोये पीपल के बीज ५ टं० मिश्री ५ मासे इन्हे महीन पीस कजलो

कर नेत्र में अंजन करे तो फूला ढलका धुन्ध ये सब जांय ॥ ५६ ॥

अथ चन्द्रोदय गुटिका ॥

शंखकीनाभि। बहेड़े की मींगी। हड़की छाल। मैनसिल। पीपल। मिरच। कूट। बच ये सब औषधि बराबर ले इन्हें बकरी के दूध में महीन पीस गोली कर फिर गोली को घिस अंजन करे तो तिमिर नेत्र के मांस की वृद्धि पटल कांच रतौंधी फूला ये सब दूर होंय ॥ ५७ ॥

अथ चन्द्रप्रभाव गुटिका ॥

हल्दी। नींबकेपत्ते। पीपल। मिरच। बायबिडंग। नागरमोथा। हड़कीछाल। ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस बकरी के मूत्र में ३ दिन खरल करे फिर इसकी गोली कर छाया में सुखाय फिर इस गोली को गोमूत्र से घिसि अंजन करे तो तिमिर को दूर करे जल से घिसि अंजन करे तो नेत्र के कांच को दूर करे सहत से घिसि अंजन करे तो पटल को दूर करे स्त्री के दूध से घिसि अंजन करे तो फूले को दूर करे इति चन्द्रप्रभावर्ति ॥ ५८ ॥

अथ द्वादशामृत हरीतकी ॥

हड़कीछाल १ भाग बहेड़े की छाल २ भा० आंवला ४ भा० शतावरि २ टके भर मुलहठी २ टं० तज २ टं० सेंधानोन ५ टंक पीपल ५ टंक इन सब की बराबर मिश्री ले इन्हें महीन पीस २ टंक सहत और घृत के साथ ४८ दिन नित्य खाय तो तिमिर पटल कांच रतौंधी फूला नेत्र से जल आवे सबल वायु आदि सब नेत्र के रोगों को यह द्वादशामृत हरीतकी दूर करै है ॥ ५९ ॥

अथ त्रिफलादिघृतं ॥

त्रिफला का रस १ सेर जलभांगरे का रस १ सेर अडूसे का रस १ सेर शतावरि का रस १ सेर बकरी का दूध १ सेर गिलोय का रस १ सेर आंवले का रस १ सेर

कमलगट्टे । मुलहठी । त्रिफला पीपल । दाख । मिश्री । कटेली इन सबका रस ऽ॥ सेर ले इन सबमें गौका घृत पक्का २ सेर डाल मधुरी आंच से पकावे ये सब जलि जांय घृत मात्र आय रहै तब इस घृत को २ टके भर नित्यखाय तो नेत्र का तिमिर कांच फूला सबल वायु आदि सब रोग जांय इति महा त्रिफलादि घृतं ६० ॥

अथ गरमी के विकार दूर होने का अंजन और लेप की विधि ॥

आंख दूखे या सूजन होय तो आंख में अंजन वा लेप करने से आराम होय सोधा सुपेदा १० मासे उसके सोधने की बिधि सुपेदा को महीन पीस चीनी के बासन में बहुत पानी से धोवे जब सुपेदा नीचे बैठ जाव तब उसका पानी काढ़ डाले इस तरह तीन बार कर लीजे अत्तार की अंजरूत औषधि ३ मासे ले उसके सोधने की बिधि अंजरूत को महीन पीस फिर जिस स्त्री के बेटी होय उसका दूध ले और इस में इतना मिलावे जो ८ पहर में सूखिजाय इस तरह ५ पुट दे फिर कतीरा १ मासे भीमसेनी कपूर ४ रत्ती अत्तार की निसोत औषधि २ मासे सुपेद गोंद १ मासे तोल माफिक सब औषधि इकट्ठा कर गुलाब के जल में खरल करे फिर एक जीव कर बर प्रमाण गोली बांधे पीछे गुलाब के जल में अथवा सादे जल में घिसि अंजन करे अथवा लेप करे तो गरमी के सब विकार दूर होंय ॥ ६१ ॥ इति गरमी के अंजन लेप की बिधि और नेत्र के सब रोगों की उत्पत्ति लक्षण संख्या नाम यत्न संपूर्ण ॥

अथ कान के रोग सुश्रुत में २८ लिखे हैं सो लिखते हैं ॥

कर्णशूल १ कर्णनाद २ बधिर नाम बधिरपना ३ क्ष्वेड ४ कर्णस्राव ५ कर्णकंडू ६ कर्णगूथ ७ कर्णप्रतिनाद ८ कृमिकर्ण ९ चोटलगने से कर्ण में व्रण होय १० दोषों से कर्ण में व्रण होय ११ कर्णपाक १२ पूतिकर्ण १३ वायुका कर्णशोथ १४ पित्त का कर्ण शोथ १५ कफकाकर्ण शोथ १६

रुधिर का कर्णशोथ १७ वायुका कर्णशोथ १८ पित्तका कर्णशोथ १९ कफका कर्णशोथ २० रुधिरका कर्णशोथ २१ वायुका कर्ण अर्बुद २२ पित्तका कर्ण अर्बुद २३ कफका कर्णअर्बुद २४ रक्तका कर्णअर्बुद २५ मांसका कर्ण अर्बुद २६ मेदका कर्णअर्बुद २७ नसोंका कर्णअर्बुद २८ चरक में कर्णपाली के विषय ४ रोग अधिक कहे हैं उत्पात १ उन्मंथक २ दुःखवर्द्धन ३ परिलेहिन ॥ ४ ॥

अथ कर्णशूल का लक्षण ॥

जिसके कानमें वायुधसि जाय और वह कोप को प्राप्त होय तब कान में बहुत शूल चलावे उसको कर्ण शूल कहिये ॥ १ ॥

अथ कर्णनाद का लक्षण ॥

जिसके कान के छिद्र में बायु धसि जाय तब उस पुरुष के कान में भेरी मृदंग शंख को आदि ले अनेक शब्द होंय उसे कर्णनाद कहिये ॥ २ ॥

अथ बधिर का लक्षण ॥

जिसके कर्ण के छिद्र में बायु कफसंयुक्त प्रवेश करि उस में बैठ रहे तो मनुष्य को बधिरा करदे ॥ ३ ॥

अथ बधिर का असाध्य लक्षण ॥

बालक बूढ़ा और बहुत दिनका बधिराही होय सो अच्छा होय नहीं ॥

अथ क्ष्वेड कर्ण रोग का लक्षण ॥

जिसके कान में बायु पित्त कफ धसि जाय और उसके कान में बांस के फाड़ने का सा शब्द होय उसे कर्ण क्ष्वेड रोग कहिये ॥ ४ ॥

अथ कर्णस्राव का लक्षण ॥

जिसके शिरमें चोट लगी होय अथवा जिसके कान में जल पड़ा होयउसके कान से राद बहा करे उसे कर्ण स्राव रोग कहिये ॥ ५ ॥

अथ कर्णकंडू का लक्षण ॥

जिसके कान में कफ संयुक्त वायु पैठे उस कान में खाज करे उसे कर्णकंडू कहिये ॥ ६ ॥

अथ कर्णगूथ का लक्षण ॥

जिसके कानमें पित्तकीगरमी धसि जाय कफको शोषिले उसके कान में मलबहुत अये उसे कर्णगूथ कहिये ॥ ७ ॥

अथ कर्णप्रति नाद का लक्षण ॥

वह कर्णगूथ पतला पड़ि जाय पीछे वह नाक में आय प्राप्त होय उसे कर्णप्रति नाद कहिये ॥ ८ ॥

अथ कृमिकर्ण का लक्षण ॥

जिसके कान में बग पतंग कनखजूरा आदि कोई जानवर धसि जाय उसके कान में फड़फड़ावे और उस मनुष्य को बहुत व्याकुल करदे पीड़ा करै और पीड़ा आदि सब जाती रहें उसे कृमि कर्णरोग कहिये ॥ ९ ॥

अथ कर्णविद्रधि का लक्षण ॥

यह दो प्रकार की है एक तो कानमें चोट लगि जानेसे व्रणपड़ जांय और एक दोष से कान में व्रण पड़ि जांयपीछे उस कान से रुधिर राद आदि सब निकले और कान में दाह आदि सब रहैं उसे कर्णविद्रधि कहिये ॥ १० ॥

अथ कर्णपाक का लक्षण ॥

जिसका कान पित्त करके पकिजाय और कान में काढ़े के सदृश राद निकले उसे कर्णपाक कहिये ११ ॥

अथ पूतिकर्ण का लक्षण ॥

जिसके कान में व्रण पड़ै पीछे उसके कान से जलगिरा करै और उसमें राद भी पड़ै उसे पूतिकर्ण कहिये १२ ॥

अथवा वायु पित्त कफ रुधिर से जो होय वह उनके लक्षण से जानिये ॥ १३ ॥ और वायु पित्त कफ रुधिर के प्रभाव से मस्से के रूप कान में अर्श पैदा होय है उसको वातादिक से जान लीजिये १४ ॥ और कान में वायु पित्त

कफ रुधिर मांस मेद नसें ये सातोंही एक अर्बुद नामरोग गांठि रूप होय है उसै भी करैहैं उसका भी लक्षण अर्बुद रोग में कहा है सो जान लीजिये सब कान में २८ रोग हैं चरक के मत से कान के नीचे ४ रोग हैं बायुका रोग १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ॥ ४ ॥

अथ कर्णपाली में ५ रोग हैं तिनका और परिपोटक का लक्षण ॥

कानकी लोल कोमल बहुत होय है उसै बढ़ाया करै तब कानकी लोल सूज जाय और उसमें पीड़ा हो आवै उसै परिपोटक कहिये ॥ १ ॥

अथ उत्पात का लक्षण ॥

कानकी लोल में भारी गहना पहिरै उसके संयोग से अथवा किसी तरह लोलके खींचने से ऊपर सूजन होय आवै दाह और पीड़ा होय उसै उत्पात रोग कहिये २ ॥

अथ उन्मंथक का लक्षण ।

जो कानकी पाली नाम लोल को हठ से बढ़ाया चाहै तब वहां वायु कोप कर कफ संयुक्त सूजन को करै और वहां खाज होय उसे उन्मंथक कहिये ॥ ३ ॥

अथ दुख वर्द्धन का लक्षण ॥

जिसकी कानकी लोल दुख से बींधी गई होय औरवहां दाह और पीड़ा होय और पकि जाय उसै दुःख वर्द्धन कहिये ॥ ४ ॥

अथ परिलेहिन का लक्षण ॥

जिसकी कानकी लोल के ऊपर कफ रुधिर के कोप से सरसों सदृश फुनसियां होंय और उस जगह खाजचलेऔर दाह होय और पकिजाय उसै परिलेहिन कहिये ॥ ५ ॥

अथ कर्ण रोग का यत्न ॥

अदरक का रस सहत सेंधानोन तेल ये सब इकट्ठा कर इन्हें गरम करि कानमें डाले तो कानकी पीड़ा कर्णनाद

और बधिरपना और कर्णक्ष्वेड ये सब रोग दूर होयं ॥५॥ अथवा लहसन का रस। अदरक का रस। बरना की जड़ का रस। केले का रस। इन सब को इकट्ठा करि गरम करि कान में डालै तो कानकी पीड़ा आदि कानके रोग जांय ॥ ६ ॥

अथ कानके शूल दूर होने का यत्न ॥

आक के कोमल पत्तों को खटाई से महीन पीस इसका रस काढ़ै इस में तेल और नोन डालै पीछे इस को थूहर की लकड़ी में भरै फिर उस लकड़ी में कपड़ मिट्टी कर उस को पुट पाक कर उस का रस काढ़ै पीछे इस रस को थोड़ा गरम कर कान में डालै तो कानका शूल जाय ३ ॥ अथवा आक के पत्तों में घृत लगाय अग्नि से तपाय उन का रस काढ़ै पीछे इस रस को कुछ गरम कर कान में डालै तो शूल जाय ॥ ४ ॥ अथवा बकरे के मूत्र में सेंधानोन डालि थोड़ा गरम कर कान में डालै तो कान का शूल जाय ॥ ५ ॥ अथवा अरलू की जड़के रस में मधुरी आंच से तेलको पकावै जब वह रस जलि जाय तेल मात्र आय रहै तब इस तेल को कान में डालै तो त्रिदोष का उपजा भी कर्ण शूल जाय ॥ ६ ॥

अथ बधिर पने को आदि ले सब कान के रोगों के दूर होने का तेल ॥

कड़ुवे तेल में। सोंठि। मिरच। पीपल। कूट। पीपलामूल ॥ अपामार्ग का खार। जवाखार। बेलकी जड़ का रस। गोमूत्र ये सब मधुरी आंच से पकावै पीछे जब ये सब जलिजांय तेल मात्र रहै तब इस तेल को कान में डालै तो बधिर पना कान में शब्द होय कान बहता होय इन सब रोगों को यह दूर करै ॥ ७ ॥ इति बिल्व तैलम् ॥

अथवा बेल के कच्चे फलों का रस काढ़ि उसमें सज्जी का चूर्ण डाल उसको पीवै तो कान की पीड़ा बधिरपना दाह इन सब को दूर करै ॥ ८ ॥

अथ कान से राद बहती होय उसके अच्छे होने का तेल॥

आंवले के पत्तोंका रस। जामन के पत्तोंका रस। मऊआ के पत्तों का रस। बड़के बक्कल का रस। चमेली के पत्तों का रस। इस में तेल डालि मधुरी आंच से पकावै ये सब जलि जांय तेल मात्र रह जाय तब इस तेल को कान में डालै तो कान बहता अच्छा होय ९॥ अथवा रसौत को स्त्री के दूध में घिसि सहत मिलाय कान में डालै तो कान बहता बन्द होय १०॥ अथवा कूट। हींग। बच। दारु हल्दी। सोंफ। सोंठि। सेंधानोन इन्हें महीन पीस बकरे के मूत्र में घोलि इस में तेल डाल मधुरी आंच से पकावै जब ये सब जलि जांय तेलमात्र आय रहै तब इस तेलको कान में डालै तो राद बहती बन्द होय॥ ११॥

अथ कान में व्रण पड़ि गया होय उसके दूर होने का तेल॥

मोटी सीप के चूर्णको कड़ुवे तेलमें पकावे पीछे वह तेल कान में डाले तो कान के व्रण अच्छे होंय १२॥ अथवा आंवलासार गन्धक १ टं० खर मैनसिल १ टं० हल्दी १ टं० कड़ुआ तेल ८ टं० धतूरे के पत्तों का रस इन सब को बराबर ले इन्हें महीन पीस मधुरी आंच से पकावे जब सब जलि जांय तेल मात्र रहै तब इस तेल को कान में डाले तो कान के व्रण अच्छे होंय॥ १३॥

अथ कान में कृमि पड़ि गए होंय उसके दूर करने का यत्न॥

कृमि के दूर होने का यत्न जो पीछे लिखा है उससे कृमि रोग जांय॥ १४॥ अथवा बैंगन की जड़ के रस का धुआं सरसों के तेल के साथ कान में दे तो कान के कृमि जांय॥ १५॥ और कान की सूजन और कान के अर्बुद रोग का यत्न पीछे लिखा है उससे ये जांय ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं॥

अथ बधिरपने के दूर करने का तेल ॥

मूलीकी जड़ का रस कड़ुआ तेल सहत ये सब बराबर ले इन्हें कुछ गरम कर कान में डाले तो बधिर पना जाय १६ ॥ अथवा मिश्री । इलायची इन्हें महीन पीस कान में डाले तो बधिर पना जाय ॥ १७ ॥

अथ कानकी पीड़ाके दूर होने का तेल ॥

सोंठि । पीपल । सेंधा नोन । कूट । हींग । बच लहसन । तिलों का तेल इनको आकके पत्तों के रस में मधुरी आंच से पकावै ये रस आदि सब जलिजांय तेल मात्र रहै तब इस तेल को कान में डालै तो कानकी पीड़ा दूर होय ॥ १८ ॥

अथ कानके सब रोगों के दूर होने का तेल ॥

गाढ़ो और मोटो सीपों का चूर्ण । पद्माख । हींग । तूंबरा सेंधानोन । कूट । कपास की सींगी इन्हें पीस इनका काढ़ा कर इसमें कड़ुवा तेल ७ ट० भर डालै और डलडल का रस इन सब की बराबर इसमें डालै पीछे इसको मधुरी आंच से पकावै जब रस आदि सब जलिजांय तेल मात्र आयरहै तब इस तेल को कान में डालै तो कानके व्रण राद बधिर पना कान में शब्द होय इन सब रोगों को यह दूर करै १९ ॥ अथवा कूकर भांगरे का रस ऽ। भर हरफारेवड़ी का रस४ पैसेभर लहसनका रस ४ पैसेभर सोंफ २॥ ट० बच २॥ ट० कूट २॥ ट० सोंठ २॥ ट० मिरच २॥ ट० पीपल २॥ ट० बकरी का दूध ऽ॥ सेर कड़ुवा तेल ५ टके भर ये सब इकट्ठा कर मधुरी आंच से पकावै जब सब जलिजांय तेल मात्र आय रहै तब इस तेलको कानमें डालै तो बधिरपना कानकी राद और कानके सब रोगजांय २० ॥

अथ कान में राद बहती होय उसके अच्छे होने की औषधि ॥

समुद्र का फेन । सुपारी की राख । कत्था । इन्हें महीन पीस कान में डालै तो कान का बहना बन्द होय ॥ २१ ॥ ये सब यत्न वैद्यरहस्यमें हैं ॥

अथ कान की लोल पकि गई होय उसके अच्छे होने का यत्न ॥

शतावर। असगंध। दूध। अरण्ड कीजड़। और काले तिलों का तेल इन्हैं मधुरी आंचसे पकावै ये सब जलिजांय तेल मात्र आय रहै तबइस तेल को कानकी लोल में लगावे तो लोल की पीड़ा आदि सब मिटैं और कान की लोल बढ़ै ॥ २२ ॥

अथ परि पोटक अच्छे होने का तेल ॥

जीवनी गण में तेल पचाय मर्द्दन करै तो परि पोटक अच्छे होंय ॥ २३ ॥ जोंकों के लगाने से उत्पात रोग जाय ॥ २४ ॥ सुरमा। कलिहारी। लावची। कंकपक्षी का मांस। इनमें मधुरी आंच से तिलों का तेल पकावै जब रस जलि जाय तेल मात्र आय रहै तब इस तेल को कान की लोल में लगावै तो उन्मंथक जाय २५ ॥ अथवा जामन के पत्ते। आंमकेपत्ते। बड़केपत्ते इनका काढ़ा कर इस काढ़े में तेल पकावै फिर इस तेल का मर्द्दन करै तौ दुःखवर्द्धन रोग जाय ॥ २६ ॥ अथवा गोबर के ऊपले से सेंके अथवा दूध से वा गोमूत्र से कपूर का लेपकरै तो कान की लोल अच्छी होय ॥ २७ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाशमें लिखे हैं ॥ इति कर्ण रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ नासिका रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न संख्या और नाम सहित लिखतेहैं ॥

नासिका में ३४ रोगहैं पीनस १ पूतिनास २ नासापाक ३ पूयशोणित ४ बहुत छींक आवे ५ छींक आवे नहीं ६ नाक जला करे ७ प्रतिनाह ८ परिस्राव ९ नासाशोष १० प्रतिश्याय ११ चार प्रकार का १५ नासार्बुद सात प्रकार का २२ नासार्श चार प्रकार २६ नाकशोथ चार प्रकारका ३० नासिका में रक्त पित्त चार प्रकार का ३४ ॥

अथ पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाक में कफ भरि के स्वास अच्छी तरह आवे हीं और नाक रुकि जाय और सूखी रहै और उसमें

धुआं निकले और जिसकी नाकमें सुगन्ध दुर्गन्ध की बास आवे नहीं उसे पीनस कहिये ॥ १ ॥

अथ पूतिनासि का लक्षण ॥

जिसके गला तालू के मूल की वायु है सो पित्त कफ को दूषित करे और उसके मुह में और नासिका में वह वायु स्वास के मार्ग दुर्गन्ध को काढ़े उसे पूतिनास रोग कहिये ॥ २ ॥

अथ नासापाक का लक्षण ॥

जिसकी नाक में पित दूषित होय और नाक में फुनसी करे और उसको पकावे उसमें से राद काढ़े उसे नासापाक कहिये ॥ ३ ॥

अथ पूयरक्त का लक्षण ॥

जिसके ललाट में किसी तरह से चोट लगे तब उसके दोष कोप को प्राप्त होंय और नासिका के द्वारा राद को लिये रुधिर को निकाले उसे पूयरक्त रोग कहिये ॥ ४ ॥

अथ क्षवथु नाम छींक बहुत आवे उसका लक्षण ॥

जिसकी नाक में पवन दुष्ट होकर नाक के मर्म्म स्थानों को दूषित करे फिर वह कफसे मिले तब वह बहुत बार छींक को प्रकट करे उसे क्षवथु नाम रोग कहिये ॥ ५ ॥

अथ क्षवथु का और लक्षण ॥

जो पुरुष नाक में मिरच को आदि ले औषधि डाले अथवा सूर्य की ओर देखे अथवा नाक में सूत तृण आदि डाले तब उसकी नाक में छींक बहुत आवे इसे भी क्षवथु नाम रोग कहिये ॥ ६ ॥

अथ क्षवथु भ्रंश का लक्षण ॥

जिसकी नाक में पित्त करके कफ दग्ध होजाय और उस पुरुष को छींक आवे नहीं इसे क्षवथुभ्रंश रोग कहिये ॥ ७ ॥

अथ दीप्त रोग का लक्षण ॥

जिसकी नाक में पित्त कुपित होकर नाक में दाह बहुत करे और नाक में धुआं सा निकले और उस पवन कर के नाक बले उसे दीप्त रोग कहिये ॥ ८ ॥

अथ प्रतिनाह का लक्षण ॥

वायु कर के कफ संयुक्त है सो नाक के स्वर को आने दे नहीं उसे प्रतिनाह रोग कहिये ॥ ९ ॥

अथ परिस्राव का लक्षण ॥

जिसकी नाक के स्वर में गाढ़ा । पीला । सुपेदाई को लिये मल आवै उसे परिस्राव कहिये ॥ १० ॥

अथ नासासंशोष का लक्षण ॥

जिसकी नाक में वायु । पित्त । कफ ये तीनों दुष्ट होंय और वह महा कष्ट से सांसले उसे नास संशोष कहिये ११ ॥

अथ प्रतिश्याय का लक्षण ॥

जिसके पीनस का रोग होय और वह आलस्य कर उसका यत्न करे नहीं तब वह पीनस बढ़े फिर वह कोप को प्राप्त होय और स्थानों में जाय प्रगटे तब उसके बहुत नाम नजले आदि पड़ें और वह प्रतिश्याय नाम पीनस के अनेक रोगों को करे है ॥ १२ ॥

अथ पीनस के पूर्व्व रूप का लक्षण ॥

जिसे छींक आवै और मस्तक भारी रहै अंग जकड़बन्द हो जाय और रोमांच को आदिले और उपद्रव होंय तब जानिये कि इसके पीनस का रोग होगा ॥ १३ ॥

अथ वायु के पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाक का मार्ग रुकजाय और जिससे घोड़ा पतला गरम पानी गिरा करै और गला तालू ओठ ये सूखैं और उसकी कनपटी दूखै और मुंह का बोल घोंघी पड़जाय उसे बायु की पीनस कहिये ॥ १४ ॥

अथ पित्त की पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाक में दाह होय पीलाई लिये गरम २ पानी गिरे और वह मनुष्य क्षुध होजाय और उसका शरी गरम रहै और जिसकी नाक में अग्नि रूप धुआं निकले और वह वमन भी करै उसे पित्त की पीनस कहिये ॥ १५ ॥

अथ कफकी पीनस का लक्षण ।

जिसकी नाक में गाढ़ा सुपेद कफ बहुत निकले और उसका शरीर सुपेद हो जाय और आंखों के ऊपर सूजन होय मस्तक भारी रहै और गला तालू ओठ फिर इनमें खाज बहुत होय तब जानिये इसके कफकी पीनसहै ॥ १६ ॥

अथ सन्निपातकी पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाक में पीछे कहे हुये सब लक्षण मिलें और वह पीनस बारंबार होय और यत्न करने से जाय नहीं और पके भी नहीं उसे सन्निपात की पीनस जानिये सो असाध्य है ॥ १ ॥

अथ दुष्ट पीनस का लक्षण ॥

बारंबार जिसकी नाक झरा करै और सूख जाय और नाकमें अच्छी तरह स्वास आवै नहीं नाक रुकजाय और कभी खुलभी जाय और जिसमें सुगन्धि दुर्गन्धि का ज्ञान रहै नहीं उसै दुष्ट पीनस कहिये ॥ १८ ॥

अथ रुधिर से उपजी पीनस का लक्षण ॥

जिसकी छातीं में चोट लगी होय उसके रुधिर की पीनस होजाय नाक में रुधिर पड़ै और उसके पित्त के जो लक्षण पीछे कहे हैं सो होंय और उसकी आंखें लाल होंय उसै रुधिर की पीनस कहिये ॥ १९ ॥

अथ पीनस का असाध्य लक्षण ॥

आलस्य करके पीनस का यत्न करै नहीं तो सब पीनस असाध्य हो जाँय ॥ २० ॥

अथ पीनस वाले की नाक में कृमि पड़िजांय उसका लक्षण ॥

जिसके कान में पीनस करकै सुपेद और चिकने छोटे २ कृमि पड़िजांय और दीखैं नहीं उसके सिर का रोग हो जाय तथा और २ भी रोग को प्रकट करै बधिरपना। नेत्र के रोग सूजन। मन्दाग्नि इन सब रोगों को यह कृमि पीनस प्रकट करै है और नाक में अर्बुदनाम गांठि ७ प्रकार की सूजन ४ प्रकार की अर्शनाक में ४ प्रकार का रक्त पित्त नाक में ४ प्रकार का होय है पीछे इन सब के लक्षण लिखे हैं सो जान लीजिये ॥ २१ ॥

अथ पीनस के कच्चे पनेका लक्षण ॥

जिसका सिर भारी रहै भोजन में अरुचि होय नाक झड़ा करै धीरे बोले शरीर क्षीण पड़िजाय बहुत थूकै ये लक्षण होंय तो कच्चा पीनस जानिये ॥ २२ ॥

अथ पक्के पीनस का लक्षण ॥

जिसकी नाक का कफ गाढ़ा निकले और नाक के छिद्र में भी रहैं और वर्ण भी अच्छा हो जाय और स्वर भी अच्छा हो और भूख आदि सब लगैं उसै पका पीनस कहिये २३॥

अथ नाक के रोगों का यत्न ॥

कालीमिरच। गुड़। हींग। ये तीनों मिलाय अनुमान माफिक खाय तो पीनस का रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा कायफल। पुष्करमूल। काकड़ासिंगी। सोंठ। कालीमिरच। पीपल। कलौंजी। इन सबको महीन पीस २॥ टं० चूर्ण अदरक के रस में ले अथवा इसका काढ़ा ले तो पीनस स्वरभंग। पांडुरोग। सन्निपात। कफ। श्वास। कास इन सबको यह दूर करै ॥ २ ॥ अथवा कायफल। हींग। मिरच लाख। इन्द्रजव। कूट। बच। सहंजने की जड़। बायबिडंग इनका काढ़ा ले तो पीनस जाय ॥ ३ ॥

अथ व्योषादि गुटिका ॥

सोंठ। कालीमिरच। पीपल। चित्रक। तालीसपत्र।

डांसर । अमलवेत । चव्य । जीरा । इलायची । तज । पत्रज ये सब बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर पुराना गुड़ ले उसमें २॥ टं॰ भर की गोली करै १ गोली नित्य खाय १० दिन तो पीनस खांसी अरुचि दूर होय ॥ ४ ॥

अथ पीनस दूर होने का तेल ॥

कटेली । दाल्यूणी । बच । सहंजने की छाल । तुलसी के पत्तों का रस इन सब को तेल में पकावै पीछे इस तेल की नास ले तो पीनस जाय ॥ ५ ॥ इति व्याधि तैलं ॥

अथवा सहंजने की छाल । कटेली । निसोत । सोंठि । मिरच । पीपल । सेंधानोन । बेलके पत्तों का रस इन सब को तेल में पकावै पीछे इस की नास ले तो पीनस जाय ॥ ६ ॥ इति शिग्रु तैलं ॥

अथ जिसे छींक बहुत आवै उसका यत्न ॥

घृत । गूगल । मोम । इन की नाक में धूनी देतो छींक बन्द होय ॥ ७ ॥ अथवा सोंठ । कूट । पीपल । बेलकीगिरी । दाख । इनका काढ़ा कर इस तेल में पकावै पीछे इसकी नास ले तो छींक बहुत आवती दूर होय ॥ ८ ॥

अथ पीनस के दूर होने का चूर्ण ॥

बायबिड़ंग । सेंधानोन । हींग । गूगल । मैनसिल । बच इन्हें महीन पीस सूंघै तो पीनस जाय ॥ ९ ॥

अथ पीनस के दूर होने का तेल ॥

भांगरे के पत्तों का रस । सेंधानोन । इन में तेल पकावे फिर इस तेल को सूंघै तो पीनस तत्काल जाय ॥ १० ॥

अथ नाक में अर्शनाम मस्सा होय उसके दूर होने का तेल ॥

धमासा । पीपल । दारुहल्दी । अपामार्गके बीज । जवाखार । किरमाला कीगिरी । अथवा बकल । सेंधानोन । इस में तेल पकावै और यह तेल नाक के मस्से के लगावे तो मस्से दूर होय ॥ ११ ॥ और नाक के जो रोग कहे हैं उस में इसका यत्न देख लेना ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे

हैं ॥ अथवा सोनेके समय अधौटा पानी पीवै तो पीनस का रोग जाय ॥ १२ ॥ अथवा जीरा घृत खांड़ मिलाय खाय तो पीनस जाय ॥ १३ ॥ इति नासिका के रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ मुख के रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

मुखके ७ अंग हैं ओठ १ मसूढ़ा २ दांत ३ जीभ ४ तालू ५ गला ६ गलाको आदि ले मुख का सर्वांग ७॥ जीभ का ५ तालूका ९ कंठका १८ सर्व मुख में फैलता ३ ॥

अथ मुख रोगों की उत्पत्ति ॥

अनूप देश के मांस के खाने से बहुत दूधके पीने से बहुत दही और बहुत उड़द आदि के खाने से कोप को प्राप्तहुए जो वायु पित्त कफ सो मुख के रोगों को प्रकट करै हैं १ ॥

अथ ओठ के रोगों की उत्पत्ति संख्या ॥

ओठ के ८ रोग हैं वायु का १ पित्तका २ कफ का ३ सन्निपातका ४ रुधिरका ५ मांसका ६ मेदका ७ चोट लगनेका ८ ॥

अथ वायु के ओठ रोग का लक्षण ॥

जिसके ओठ कठोर और खरदरे और गाढ़े और काले होंय तिनमें पीड़ा बहुत होय और फटे बहुत होंय तो वायु के कोप का ओठ रोग जानिये ॥ १ ॥

अथ पित्त के कोप के ओठ रोग का लक्षण ॥

जिसके ओठों में फुनसियां होंय और वे फुनसियां बहने लगि जांय और उनमें पीड़ा भी चौगिर्द होय और दाह होय और पकि जांय और उनकी कान्ति पीली होजाय तब जानिये पित्त के कोप का ओठ रोग हैं ॥ २ ॥

अथ कफ के ओठ रोगों का लक्षण ॥

जिसके ओठ देह के वर्ण सदृश होंय और वे श्रवैं और उन में फुनसियां होंय और पीड़ा नहीं होय खाज आवै

और जिन में गाढ़ी कठोर कफ निकले उसे कफ के कोप का ओठ रोग जानिये ॥ ३ ॥

अथ सन्निपात के कोप के ओठ रोग का लक्षण ॥

कभी काले कभी पीले कभी सुपेद होंय और जिन में बहुत फुनसियां होंय और सब लक्षण जिनमें मिलें उसे सन्निपात के कोप का ओठ रोग जानिये ॥ ४ ॥

अथ रुधिर के कोप के ओठ रोग का लक्षण ॥

जिसके ओठों में फुनसियां बहुत होंय और जिनमें पीड़ा बहुत होय और उन फुनसियों का रंग छुवारे के समान होय और जिनमें रुधिर बहुत पड़ै ये लक्षण होंय तो रुधिर के कोप का ओठ रोग जानिये ॥ ५ ॥

अथ मांस के कोप के ओठ रोग का लक्षण ॥

जिसके ओठ का मांस दुष्ट होय उसके ओठ भारी और गठीले होजांय और जिसके रुधिर में जानवर डाले सो जानवर मूर्छित होजाय तब जानिये इसके रुधिर के कोप का ओठ रोग है ॥ ६ ॥

अथ मेद के कोप के ओठ रोग का लक्षण ॥

जिसके ओठों का रुधिर घृत के अथवा माड़के समान ओठों की फुनसियों में निकले और जिनमें खाज होय और ओठ कोमल होंय और रुधिर सुपेद पत्थर के समान गाढ़ाअवै तब मेद के कोप का ओठ रोग जानिये ॥ ७ ॥

अथ चोट लगने के ओठ रोग का लक्षण ॥

जिसके ओठ में किसी तरह की चोट लगी होय तब उसके ओठ फटि जांय और उनमें खाज होय और ओठ मथे से हो जांय और उनमें पीड़ा भी होय तब चोट लगने के कोप का ओठ रोग जानिये ॥ ८ ॥

अथ ओठों के रोगों का यत्न ॥

जिसके ओठों में रोग होय उसका जलौका से रुधिर कढ़ाइये तो रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा शुद्ध मोम से घृत डार

उसकी बत्ती से अच्छी तरह सिकावै तो ओठ के रोग जांय ॥ २ ॥ अथवा चार प्रकार के स्नेह हैं तेल १ घृत २ मांसका घृत ३ अथवा मांसके मध्यकी मींगी ४ इन चारों स्नेहों में मोम मिलाय इसमें सुहाता सेक करै तो ओठों के रोग जांय ॥ ३ ॥ अथवा फूलप्रियंगु । त्रिफला । लोध इन्हें महीन पीस स्नेह में इन का सुहाता ओठों के सेक करै अथवा सहत से खाय तो ओठों के रोग जांय ॥ ४ ॥

अथ प्रतिसारण विधि ।

ओठों के चूर्ण अवलेह अंगुली से शनैः शनैः लगावे उसै प्रतिसारण कहिये ॥

अथ ओठों में बहुत व्रण पड़िगये होंय उसका यत्न ॥

जो यत्न व्रण के अच्छे होने का पीछे लिखा है सो करै ५ ॥ इति ओठों के रोगों के लक्षण यत्न संपूर्ण ॥

अथ मसूढे के रोगों के प्रथम नाम और संख्या ॥

शीतादि १ दन्तपुप्पुट २ दंतवेष्टि ३ सौषिर ४ महासौषिर ५ परिदर ६ उपकुश ७ वैदर्भ ८ खलिवर्द्धन ९ अधिमास १० पंच नाड़ी वायु से मसूढ़े की नस निकले ११ पित्तसे मसूढ़े की नस निकले १२ कफसे मसूढ़े की नस निकले १३ सन्निपात से मसूढ़े की नस निकले १४ चोट लगने से मसूढ़े की नस निकले १५ दंतविद्रधि ॥ १६ ॥

अथ शीतादि मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

कारण बिनाही अकस्मात् मसूढ़े में व्रण करके रुधिर निकलै और उस रुधिर में दुर्गन्ध बहुत आवै और रुधिर काला होय और मसूढ़े कोमल होंय और बिखर जांय आपस में पकने लगें इस तरह कफ रुधिर के दुष्ट पने से उपजे इसे शीतादिक कहिये ॥ १ ॥

अथ दंत पुप्पुट मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

दांतों के तीन मसूढ़े में सूजन बहुत हो जाय इसे दंत वेष्टि पुप्पुट रोग कहिये यह कफ रुधिरके कोप से होयहै २ ॥

अथ दंतवेष्टि रोग का लक्षण ॥

जिसके मसूढ़े में राद को लिये रुधिर निकले और दांत हलने लगि जांय उसे दंतवेष्टि रोग कहिये ॥ ३ ॥

अथ सौषिर मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

मसूढ़े में सूजन हो आवै और उस में पीड़ा होय और लार पड़ै खाज होय इसे सौषिर नाम मसूढ़े का रोग कहिये यह कफ बायु से उपजै है ॥ ४ ॥

अथ महा सौषिर रोग का लक्षण ॥

उन मसूढ़ों में दांत हलने लगें और तालू बैठ जाय अथवा तालूपै छेद पड़िजाय यह सन्निपात के कोप से उपजे है इसे महा सौषिर कहिये ॥ ५ ॥

अथ परिदर मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांत के मसूढ़े बिखर जांय और उन में रुधिर बहै नहीं वह पित्त रुधिर कफ इनके कोप से उपजे है इसै परिदर कहिये ॥ ६ ॥

अथ उपकुश मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

जिसके मसूढ़े में दाह होय और पकि जाय दांत हलने लगि जांय मसूढ़े के दाबने से अथवा औषधियों के घसने से रुधिर निकले और उस में पीड़ा नहीं होय और मसूढ़े में दुर्गंधि आवै यह पित्त रुधिर से उपजै है इसै उपकुश मसूढ़े का रोग कहिये ॥ ७ ॥

अथ वैदर्भ मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

जिसके मसूढ़े में किसी तरह की चोट लगै अथवा वे घिस जांय तब उन में सूजन होजाय और दांत हिलने लगें और उन में दाह पीड़ा भी होय इसै विदर्भ मसूढ़े का रोग कहिये ॥ ८ ॥

अथ खलिवर्द्धन मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

जिसके मसूढ़े में दांत अधिक बढ़ें और वहां पीड़ा बहुत होय उसे खलिवर्द्धन मसूढ़े का रोग कहिये ॥ ९ ॥

अथ अधिमांस मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

जिसकी नीचे की डाढ़ के अन्त में सूजन बहुत होय और उस में पीड़ा भी बहुत होय और मुंहमें लार पड़ै यह कफसे उपजै है इसे अधिमांस मसूढ़े का रोग कहिये १०॥ अथवा मसूढ़े की नसों में वायु पित्त कफ सन्निपात और चोट लगने से पांच नसों का रोग कहिये ॥ ११ ॥

अथ दंतविद्रधि मसूढ़े के रोग का लक्षण ॥

दांत के मसूढ़े में रुधिर निकलै और वहां सूजन बहुत होय और उससे दाह और पीड़ा भी होय और राद रुधिर को लिये बहुत स्रवै उसै दंतविद्रधि मसूढ़े का रोग कहिये ॥ १२ ॥

अथ मसूढ़े के रोगों का और शीतादि मसूढ़े के रोग का यत्न ॥

इस रोग में मसूढ़े का रुधिर कढ़ाइये पीछे सोंठि। सरसों। त्रिफला। इनका काढ़ा कर कुल्ला करै तो शीतादि मसूढ़े के रोग जांय ॥ १ ॥ अथवा हीरा कसीस। पठानी लोध। पीपल। मैनसिल। फूलप्रियंगु। तेजबल। इन्हैं बराबर ले महीन पीस सहत से मसूढ़े के लगावै तो शीतादि मसूढ़े के रोग जांय ॥ २ अथवा तेल वा घृत का कुल्ला करै तो शीतादि मसूढ़े के रोग जांय ॥ ३ ॥

अथ दन्त पुप्पुट मसूढ़े का यत्न ॥

इस रोग में मसूढ़े का रुधिर कढ़ाइये पीछे इसके ऊपर पांचौ नोन जवाखार सहत डाल इसका काढ़ा करै तो यह रोग जाय ॥ ५ ॥

अथ चलदंत मसूढ़े का यत्न ॥

लोध। पतंग। महुआ। लाख। बेल। सिरसका बक्कल इन्हैं महीन पीस चूर्ण कर मसूढ़े से मसलै तो चलदंत मसूढ़े का रोग जाय ॥ ॥ ६ ॥ अथवा नागरमोथा। हड़की छाल। सोंठि। मिरच। पीपल। बायबिड़ंग। नींबके पत्ते इन्हैं महीन पीस गोमूत्र में गोली करै फिर उस गोली को

छाया में सुखाय सोते समय मुंह में रक्खै तो चलदंत मसूढ़े का रोग जाय दांत गाढ़े होंय ७ ॥ इति भद्रमुस्तादि गुटिका ॥

अथवा नीलेफूल का कटसेला । धमासा । खैर सार । जामुन का बक्कल । आम का बक्कल । मुलहटी । कमलगट्टे ये सब बराबर २ टके भर ले पीछे इन्हें १६ सेर पानी में औटावै इनका चतुर्थांश राखै पीछै इसमें तेल अथवा बकरी का घृत मधुरी आंच से पकावै जब रस आदि जलि जांय तेल मात्र रहै तब इस तेल को अथवा घृत को २ घड़ी मुंह में रक्खै तो दांत गाढ़े होंय ॥ ८ ॥ इति सहचरादि घृत तैलं ॥

अथ सोषिर मसूढ़े का यत्न ॥

इस रोग में मसूढ़े का रुधिर कढ़ाइये पीछे लोध । नागरमोथा । रसोत । सहत । इन सब को महीन पीस सहत में मसूढ़े के लेप करै और पीछे दूध के कुल्ले करै तो सौषिर मसूढ़े का रोग जाय ॥ ९ ॥

अथ परिदर मसूढ़े के रोग का यत्न ॥

प्रथम मसूढ़े का रुधिर काढ़े पीछे सोंठ । सरसों । त्रिफला इनका काढ़ा कर कुल्ले करै तो परिदर और उपकुश ये दोनों मसूढ़े के रोगो जांय ॥ १० ॥

अथ मसूढ़े में व्रण पड़ जांय उसका यत्न ।

गूलर के पत्ते । नोन । सहत । सोंठ । मिरच । पीपल । इन्हें औटाय काढ़ा कर और प्रथम मसूढ़े का शस्त्रादिक से रुधिर काढ़ै पीछे इस काढ़े के कुल्ले करै फिर इस मसूढ़े के लवण आदि का खार लगावै तो मसूढ़े का व्रण अच्छा होय और उसके कृमि मर जाय रोग जाता रहै ११॥

अथ खलिवर्द्धन मसूढ़े के रोग का यत्न ॥

इस रोग में मसूढे का मांस काढ़ि डाले फिर सहत के कुल्ले करै फिर बच । तेजबल । पाढ़ । सज्जी । जवाखार ।

पीपल। इन्हें महीन पीस मसूढ़े के लगावै तो खलिबर्द्धन मसूढ़े का रोग जाय॥ १२॥

अथ मसूढ़े की नसों में ब्रण पाँच प्रकार के पड़ गये होंय उसका यत्न॥

उन मसूढ़े का मांस कुछ शस्त्र से दूर करै फिर पटोल। नीब के पत्ते। त्रिफला इनका काढ़ा कर गरम सुहाता कुल्ले कीजै तो मसूढ़े की नसों का ब्रण जाय॥ १३॥ अथवा चमेली के पत्ते। धतूर के पत्ते। कटेली। गोखुरू का पंचांग। मंजीठ। लोध। खैरसार। मुलहटी इनका काढ़ा कर इस काढ़े में मधुरी आंच से तेल को पकावै फिर इस तेल के कुल्ले करै तो मसूढ़े के ब्रण आदि सब रोग जांय १४॥ इति मसूढ़े के रोगों का यत्न सम्पूर्ण॥

अथ दांतों के रोगों का नाम और संख्या लिखते हैं॥

दालन १ क्रमिदन्तक २ भंजनक ३ दन्तहर्ष ४ दन्तशर्करा ५ कपालिका ६ श्यावदन्त ७ कराल ८॥

अथ दालन नाम दांत के रोग का लक्षण॥

जिसके दांत में टूटे दांत की पीड़ा होय वह पीड़ा बायु से होय इसे दालन नाम दांत का रोग कहिये॥ १॥

अथ क्रमिदन्त रोग का लक्षण॥

जिसके दांत में काले छिद्र पड़िजांय दाह होय और उसमें से कुछ रुधिर निकलै और सूजन होय। बिना कारणही बायु कीसी पीड़ा होय। उसे क्रमिदन्त रोग कहिये २॥

अथ भंजन दांत के रोग का लक्षण॥

जिसके दांत टेढ़े होंय टूट जांय यह कफ से उपजै है उसे भंजनक नाम दांत का रोग कहिये॥ ३॥

अथ दन्तहर्ष दांत के रोग का लक्षण॥

जिस के शीतल जलादिक से रूखी बस्तु से शीतल पवन से खटाई से। दांत खट्टे होजांय वह बायु पित्त से होय है उसे दन्तहर्ष रोग कहिये॥ ४॥

अथ दन्त शर्करा दांत के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांत में मैल रहे मलको कफ बायु शोष ले फिर उसके दांत खरदरे लगैं और रेत कीसी तरह खिर जांय उसै दन्त शर्करा कहिये ॥ ५ ॥

अथ कपालिका नाम दन्त के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांत माटी के घड़े के कपाल समान होंय और उनमें छिद्र होंय और खिरें और उनमें मैल होय उसे कपालिका दांत का रोग कहिये ॥ ६ ॥

अथ श्यावदन्तक दांत के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांत दुष्ट रुधिर से मिल कर सब दग्ध हो जांय और दांत काले और नीले पड़ि जांय उसे श्यावदन्तक दांत का रोग कहिये ॥ ७ ॥

अथ कराल नाम दांत के रोग का लक्षण ॥

जिसके दांतों को बायु है सो शनैः नष्ट कर भयंकर कर दे इसे कराल दांतों का रोग कहिये यह रोग यत्न करने से भी अच्छा नहीं होय ॥ ८ ॥

अथ ग्रंथान्तर से हनुमोच दांतके रोगका लक्षण ॥

जिसकी डाढ़ में बायु कुपित होकर दांतों को पकड़े दांतोंमें तथा डाढ़में पीड़ा करे उसे हनुमोच रोग कहिये और उसमें अर्दित रोग के लक्षण मिलें ॥ ९ ॥

अथ दांत के रोगों को दूर करने वाला लाक्षादि तैलं ॥

लाखकारस ऽ। भर तिलोंकातेल ऽ। भर गौकादूध ऽ। भर लोध १ टके भर कायफल १ ट० मंजीठ १ट० कमलगट्टे १ट० कमल की केसर १ट० रक्तचन्दन १ ट० मुलहटी १ ट० इन सबका काढ़ा कर फिर इस काढ़े में मधुरी आंचसे तेल पकावे ये सब रस जलजांय तेल मात्र आय रहे तब इस तेल को मुहमें १ घड़ी राखे तो दांत के सब रोग जांय और दांत गाढ़े होंय ॥ इति लाक्षादि तैलं ॥

अथवा बायुको दूर करने वाला जो तेल उसके कुल्ले कर तो दांत के रोग जांय ॥ २ ॥

अथ क्रमिदांत रोग के दूर होने का यत्न ॥

हींग को थोड़ा गरम कर दांतों के बीच में देतो दांतों के क्रमि जांय ॥३॥ अथवा कागलहरी नीलकी जड़ । कड़वी तूंबी की जड़ इन्हें महीन पीस इनका दांतोंके मर्द्दन करे तो क्रमि जांय ॥ ४ ॥

अथ दांत खट्टे रहैं उसका यत्न ॥

सांभरनोन । नरकचूर । सोंठ । अकरकरा इन्है महीन पीस इनका दांतोंके मर्द्दनकरे तौ खट्टे दांत अच्छे होंय ५ ॥

अथ दांत के सब रोग दूर होने की औषधि ॥

पांचोनोन । नीलाथोथा । सोंठ । मिरच । पीपल । पीपलामूल । हीराकसीस । माजूफल । बायबिडंग इन्है महीन पीस दांतों के मर्द्दन करे तो दांतोंके सब रोग जांय ॥ ६ ॥

अथ दांतों के पुष्ट होने की मिस्सी ॥

हीराकसीस । माजूफल । लोहेकाचूर्ण । सोनामक्खी । मंजीठ । फुलाईफिटकड़ी । त्रिफला ये सब बराबर ले इन्है खरल कर महीन पीस कज्जल समान करे फिर १ मासे दो घड़ी दांतोंके मसलै इस बिधि से७ दिन करे तो दांत स्याह और गाढ़े होंय ॥ ८ ॥

अथ दांतों के सब विकार दूर होने की औषधि ॥

फुलाई फिटकड़ी । नीलाथोथा । तेजबल । पपड़ियाकत्था पीपलका बक्कल । लाख । सोंठ । मिरच पीपल । आंवला । हीराकसीस । माजूफल । मंजीठ । रूमी मस्तगी । मोलसिर का बक्कल । सेंधानोन । दक्खिणी सुपारी ये सब बराबर ले इन्हें कूट कपड़ छान कर निरगुण्डी के रसकी २१ पुट दे पीछे मोलसिरी के बक्कल की २१ पुट दे कै एक एक पुट दे कै धूप में सुखावे पीछे उसे महीन पीस सेंधानोन थोड़ा मिलावे पीछे इसका दांतों के मर्द्दन करे तो दांतोंके सब रोग जांज ॥ ९ ॥

अथ दांतों के दुखने की और औषधि ॥

कूट ५ टं० सोंठ ५ टं० मिरच ५ टं० खुरासानीअजवायन ५ टं० हड़कीछाल ५ टं० कत्था ५ टं० इन्हें महीन पीस दांतों के मर्दन करे तो दांत दुखना बन्द होय ॥ १० ॥

अथ दांत दुखने की और औषधि ॥

अथवा गंगापार की तमाकू। अकरकरा। कायफल। वायबिड़ंग। सोंठ। मिरच। पीपल। नोन। इन्हैं महीन पीस दांतों के मर्द्दन करै तौ दांत दुखना बन्द होय ॥ ११ ॥
इति दांतों के सब रोगों का यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ जीभ के रोगों की उत्पत्ति नाम और संख्या लिखते हैं ॥

जीभके रोग ५ प्रकार के हैं वायुका १ पित्तका २ कफका ३ अलास ४ उपजिह्वा ॥ ५ ॥

अथ वायु से उपजा जो जिह्वा का रोग उसका लक्षण ॥

जिसकी जीभ कटि जाय और सूजन आय जाय और हरी होजाय और जीभ में कांटे पड़िजांय मीठे को आदि ले स्वादका ज्ञान जाता रहै ये लक्षण होंय तो वायुका जीभ रोग जानिये ॥

अथ पित्त के रोग की जीभ का लक्षण ॥

जिसकी जीभ में दाह रहै और जिसका वर्ण लाल होय और कांटे पड़िजाय तब जानिये जीभ में पित्तका रोग है ॥ २ ॥

अथ कफ की जीभ के रोग का लक्षण ॥

जिसकी जीभ भारी दीखे और कड़ी होजाय और जीभ में सुपेद कांटे पड़ैं तो जीभ में कफका रोग जानिये ॥ ३ ॥

अथ अलास जीभ के रोग का लक्षण ॥

जीभ के नीचे बहुत सूजन होय जीभ को और दाढ़ीको लठर करदे हलने दे नहीं जीभ नीचे पकि जाय यह रोग कफ रुधिर से पैदा होय है इसको अलास हिये य असाध्य है ॥ ४ ॥

अथ उप जिह्वा का लक्षण ॥

जीभ की नोक के ऊपर सूजन होय मानो दूसरी जीभ है और जीभ में लार बहुत पड़ै खुजली और दाह होय इसे उपजिह्वा नाम जीभका रोग कहिये ॥ ५ ॥

अथ जीभ के रोगों का यत्न ॥

जीभ के सब रोगों को दूर करने के वास्ते रुधिर कढ़ाना योग्य है ॥ १ ॥ अथवा गिलोय। पीपल। नीबकी छाल। कुटकी इनका काढ़ा कर कुल्ले करे तो जीभ के रोग जांय ॥ २ ॥

अथवा ओठोंका यत्न जो पीछे कहाहै उससे भी जीभ का रोग अच्छा होय है ॥ ३ ॥ अथवा सोंठ। मिरच। पीपल। जवाखार। हड़। इन्हे महीन पीस जीभ के लगावे तो जीभ के रोग जांय ॥ ४ ॥ अथवा सोंठ। मिरच। पीपल। जवाखार। हड़कीछाल। इनमें तेल को प काय इस तेल के कु करे तो उप जिह्वा दूर होय ॥ ५ ॥ इति जीभ के रोगों के लक्षण यत्न संपूर्ण ॥

अथ तालू के रोगों के नाम और संख्या ॥

तालू के ९ रोग हैं गलशुण्डी १ तुण्डकेरी २ ध्रुव ३ कच्छप ४ ताल्वर्बुद ५ मांस संघात ६ तलु पुप्पुट ७ तलुशोष ८ तलुपाक ९ ॥

अथ गलशुंडी का लक्षण ॥

तालू की जड़ से सूजन बढ़ै और वह सूजन कटी खाल सदृश हो जाय तब जानिये इस खाल में वायु भरी है और उसको प्यास लगै और खांसी स्वास भी होय उसे गलशुण्डी रोग कहिये यह कफ रुधिर से उपजै ॥ १ ॥

अथ तुण्डकेरी का लक्षण ॥

तालू की जड़ से उपजी जो सूजन सो दाह और पीड़ा और पाक को लिये उपजे सो कफ रुधिर के दुष्टपने से उपजे है उसे तुण्डकेरी रोग कहिये ॥ २ ॥

अथ ध्रुव रोग का लक्षण ॥

जिसके तालू में ज्वर को लिये लाल सूजन होय उसे ध्रुव रोग कहिये ॥ ३ ॥

अथ कच्छप रोग का लक्षण ॥

जिसके तालू में सूजन कछुवे के आकार ऊंची होय और पीड़ा भी होय यह कफ से उपजे है उसे कच्छप रोग कहिये ॥ ४ ॥

अथ तालवर्बुद रोग का लक्षण ॥

जिसके तालू में कमल के आकार सूजन होय और जिस में बड़े अंकुर होय और दाह होय उसे तल्वर्बुद रोग कहिये ॥ ५ ॥

अथ मांससंघात रोग का लक्षण ॥

जिसके तालू में दुष्ट मांस बढ़े और उसमें पीड़ा नहीं होय उसे मांस संघात रोग कहिये ॥ ६ ॥

अथ ताल पुप्पुट रोग का लक्षण ।

जिसके तालू में बेर समान सूजन होय पीड़ा नहीं होय उसे ताल पुप्पुट रोग कहिये ॥ ७ ॥

अथ तालु पाक रोग का लक्षण ॥

जिसका तालू गरमी से बहुत पक जाय उसे तालुपाक रोग कहिये ॥ ८ ॥

अथ तालु के रोगों का यत्न ।

जो गलशुण्डी रोग होय उसका चतुर वैद्य है सो यत्न करके बिष काढ़ डाले तो गलशुण्डी रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा कूट । मिरच । बच । सेंधानोन । पाढ़ । नागर मोथा । उसे महीन पीस गलशुण्डी के मले तो गलशुण्डी रोग जाय ॥ २ अथवा पीपल । अतीस । कूट । बच सोंठि । काली मिरच । सेंधानोन । इन्हें महीन पीस सहत से गलशुंडी के लगावे तो गलशुंडी जाय ॥ ३ ॥ अथवा पीपल । अतीस । कूट । बच । रास्ना । कुटकी । नींबकीछाल । इन्हें जव कुट कर इन

का काढ़ा देतो गलशुंडी तुण्डकेरी आदि ले तालू के सब रोग जांय ॥ ४ ॥ इति तालुके रोगोंके लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ गले के रोगों के लक्षण यत्न नाम और संख्या लिखते हैं ।

गले के १८ रोग हैं पांच प्रकार की तौ रोहिणी वायु की १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपात की ४ रुधिर की ५ कंठशालूक ६ अधिजिह्वा ७ वलय ८ वलास ९ एक वृन्द १० वृन्द ११ शतघ्नी १२ गिलायु १३ गलबिद्रधि १४ गलौघ १५ स्वरघ्न १६ मांसतान १७ बिदारी १८ ॥

अथ वायु की रोहिणी का लक्षण ॥

सब जीभ में बहुत पीड़ा होय और जीभ के सब मांसके अंकुर निकल आवैं और उनसे कंठ रुक जाय और वायु के सब उपद्रव होजांय उसे वायुकी रोहिणी कहिये ॥ १ ॥

अथ पित्त की रोहिणी का लक्षण ॥

जिसका गला पकि जाय और गले में दाह और ज्वर होय उसे पित्तकी रोहिणी कहिये ॥ २ ॥

अथ कफ की रोहिणी का लक्षण ॥

जिसके गले का स्रोत कफ से रुकि जाय और गला देर से पकै और गला भारी होय उसे कफ की रोहिणी कहिये ॥ ३ ॥

अथ सन्निपात की रोहिणी का लक्षण ॥

ओंड़ा जिसका पाक होय और उस का वीर्य यत्न से भी दूर होय नहीं और जिस में सब लक्षण मिलैं उसे त्रिदोष की रोहिणी जानिये ॥ ४ ॥

अथ रुधिर की रोहिणी का लक्षण ॥

जिस के गले में पीड़ा हो आवै और जिस में पित्त के लक्षण मिलैं उसे रुधिर की रोहिणी जानिये ॥ ५ ॥

अथ कंठशालूक का लक्षण ॥

जिस के गले में बेर की मींगी प्रमाण कफकी गांठ हो

जाय और गले में खरदरे कांटें पड़ जांय और उस स्थान में पीड़ा भी होय उसे कंठशालूक रोहिणी कहिये ॥ ६ ॥

अथ अधिजिह्वा रोग का लक्षण ॥

जिसकी जीभकी नोक के ऊपर सूजन होय और रुधिर को लिये कफ थूकै और जीभ कफ रुधिर से लिपी रहै पकीली होय उसे अधिजिह्वा गले का रोग कहिये ॥ ७ ॥

अथ वलय नाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में कफ बढ़ै पीछे सूजन को करै अन्न आदि को गले में जाने दे नहीं उसका मार्ग रोक दे उसे वलय गले का रोग कहिये ॥ यह असाध्य है ॥ ८ ॥

अथ बलास नाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में कफ वायु बढ़ कर गले में सूजन करै और श्वास कफ वायु और पीड़ा को प्रकट कर मर्म्म स्थान को छेदता हुआ हृदय में पीड़ा करै उसे बलास गले का रोग कहिये ॥ ९ ॥

अथ एकवृन्द नाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में कफ रुधिर दुष्ट होंय गले के बीच दाह को लिये गोल और ऊंची सूजन करै और वहां खुजली भी चले और गला पकि जाय और भारी और कोमल होय उसे एक वृन्द गले का रोग कहिये ॥ १० ॥

अथ वृन्द नाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में पित्त और रुधिर कोप को प्राप्त होय और वायु संयुक्त गले में गोल सूजन को प्रकट करै बिना पीड़ा गले में दाह को करै और यह रोग तीव्र ज्वर को पैदा करै इसे वृन्द नाम गले का रोग कहिये ॥ ११ ॥

अथ शतघ्नी नाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में मांस का अंकुर गाढ़े २ कड़े २ कंठ रोक ने वाले बहुत होंय और उनमें पीड़ा चलै जलैं बहुत उन्हें प्राण का हरने वाला जानिये मानो कंठ में रुधि

की लट्ठी डाली है यह रोग त्रिदोष के कोप से पैदा होय है सो असाध्य है इसका नाम शतघ्नी है ॥ १२ ॥

अथ गिलायु नाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में आंवले की मींगी प्रमाण गांठि होय और उसमें पीड़ा कम होय और वह गांठि कफ रुधिर से प्रकट होय और भोजन करै तब वह बुरी लगै इसे शस्त्र से दूर करै तब वह दूर होय इसे गिलायु नाम गले का रोग कहिये ॥ १३ ॥

अथ गलविद्रधि का लक्षण ॥

जिसके सब गले में सूजन होय और उसमें प्राणको हरने वाली बहुत पीड़ा होय यह भी त्रिदोष के कोप से पैदा होय है उसे गल विद्रधि कहिये ॥ १४ ॥

अथ गलौघ नाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले के मार्ग में सूजन बहुत होय और जिस के गले के मार्ग में पवन जाने से भी रुकि जाय और उसके तीव्र ज्वर पैदा हो जाय यह कफ रुधिर के दुष्ट पने से पैदा होय है इसे गलौघ नाम गले का रोग कहिये ॥ १५ ॥

अथ स्वरघ्न नाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में कफ दुष्ट होय गले के स्वर को दूर करै और दुहरा सांस लिये जाय और घोंघों बोलै और भोजन अच्छी तरह से किया जाय नहीं और यह कफ कंठकी पवन को बिगाड़ै इसे स्वरघ्न गले का रोग कहिये ॥ १६ ॥

अथ मांसतान गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में सूजन क्रमसे बढ़ै और सब गले में सूजन हो जाय और प्राणों को हरनेवाली पीड़ा होय यह भी त्रिदोष से होयहै इसे मांसतान गले का रोग कहिये ॥ १७ ॥

अथ बिदारी नाम गले के रोग का लक्षण ॥

जिसके गले में तांबे के वर्ण समान सूजन दाह और पीड़ा को लिये बहुत होय और गला लटकि जाय और पकि जाय

जिसमें राद पड़ि जाय यह पित्त के कोप से होय है और वह बिदारी गले के पीछे होय जिस करवट सोवे वहां होय उसै बिदारी नाम गले का रोग कहिये ॥ १८ ॥

अथ गले के रोगों का यत्न ॥

जिसके रोहिणी रोग होय उसके गले का जलौका आदि से किसी तरह रुधिर कढ़ावै तो रोहिणी रोग जाय ॥ १९ ॥

अथ गले के सब रोगों का यत्न ॥

बमन करना । औषधियों से हुक्का पीना । औषधियों से कुल्ले करना । नास देना । रुधिर कढ़ाना । नोन का सेक ये सब गले के रोग को अच्छे हैं ॥ २० ॥ अथवा स्नेह के कुल्ले करै तो ये सब यत्न वायु के गले के रोग को अच्छे हैं २ ॥

अथ पित्त के गले के रोग का यत्न ॥

मिश्री । सहत । फूलप्रियंगु । इनके काढ़े से पित्त के गले का रोग जाय ॥ २१ ॥

अथ कफ के गले के रोग का यत्न ॥

घरका धूमस । कुटकी । इनके । काढ़े से कफ के गले का रोग जाय २२ ॥ अथवा कुटकी । सोंठि । पीपल । मिरच । वायबिडंग । दारुहली । सेंधानोन । इनका काढ़ा कर उस में तेल पकावै फिर इस तेल की नास दे तो कफ के सब रोग जांय ॥ २३ ॥ अथवा विष्णुक्रान्ता का काढ़ा पीवै तो रोहिणी नाम गले का रोग जाय ॥ २४ ॥ अथवा विष्णुक्रान्ता और शंखाहूली इन दोनों को घोट पीवै तो कंठशालूका तुण्डकेरी । उपजिह्वा । अधिजिह्वा एक वृन्द गिलायु ये सब रोग जांय ॥ २५ ॥ अथवा शस्त्र क्रिया कर गले का रुधिर कढ़ावै तो गलविद्रधि को आदिले गले के सब रोग जांय ॥ २६ ॥

अथ कंठ के रोगों का यत्न ॥

कंठ के रोग रुधिर कढ़ाने और नास देने से अच्छे होंय ॥ २७ ॥ अथवा दारुहल्दी । नीबकीछाल । इन्द्रजव । हड़कीछाल । तज । इनका काढ़ा कर उसमें सहत डाल पीवे तो कंठ के सब रोग जांय ॥ २८ ॥ अथवा कुटकी । अतीस । दारुहल्दी नागर मोथा । इन्द्रजव । इनका काढ़ा कर उसमें गोमूत्र डाल पीवे तो कंठ के सब रोग जांय २९ ॥ अथवा हड़कीछाल का काढ़ा सहत डाल पीवे तो कंठ के सब रोग जांय ॥ ३० ॥ अथवा मुनक्का । दारुकुटकी । सोंठ । मिरच । पीपल । दारुहल्दी । तज । त्रिफला । नागर मोथा । पाढ़ । रसोत । मूर्वा । तेजबल हल्दी इनका काढ़ा कर सहत डाल पीवे अथवा इनके कुल्ले करे अथवा सहत से इनकी गोली बांधे उस गोली को मुंह में रक्खे तो गला और कंठ के सब रोग जांय ॥ ३१ ॥ इति गले के सब रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ समस्त मुख रोगों की उत्पति लक्षण यत्न और संख्या लिखते हैं ॥

बायु का रोग १ पित्त का २ कफका ३ सन्निपात का ४

अथ बायु के मुख रोग का लक्षण ॥

जिसके मुख में सर्वत्र छाले होजांय और उनमें पीड़ा बहुत होय तो बायु का मुख रोग जानिये ॥ १ ॥

अथ पित्त के मुख रोग का लक्षण ॥

जिसके मुख में लाल छाले होंय या दाह को लिये पीले होंय उसे पित्त का मुख रोग कहिये ॥ २ ॥

अथ कफ के मुख रोग का लक्षण ॥

जिसके मुखमें सुपेद छाले बिना पीड़ा होंय और उनमें खुजली चले उसे कफ का रोग कहिये ॥ ३ ॥

अथ मुख रोग का असाध्य लक्षण ॥

जिसके ओंठ में और मसूढ़े में रुधिर के कोप से अथवा

त्रिदोष के कोप से छाले होंय सो असाध्य जानिये ॥ ४ ॥

अथ समस्त मुख रोगों का यत्न ॥

मुख में बायु के छाले होंय तो नोन फिटकड़ी के कुल्ले कराइये ॥ ५ ॥ अथवा बायु के दूर करने वाले तेल के कुल्लों से छाले जांय ॥ ६ ॥

अथ पित्त के मुख रोग के छाले का यत्न ॥

मुलहठी । खैरसार । इन्हें औटाय इसमें सहत डाल कुल्ले करे तो पित्त के मुख रोग के छाले दूर होंय ॥ ७ ॥ अथवा दूध को गरम कर उसमें थोड़ा घृत सहत डाल कुल्ले करे तो पित्त के मुख रोग के छाले जांय ॥ ८ ॥

अथ कफ के मुख रोग के छाले का यत्न ॥

नीलाथोथा । फिटकड़ी । इन्हें महीनपीस छाले के लगावै और मुंहकी लार डाले तो कफ के छाले जांय ॥ ९ ॥

अथ सन्निपात के मुख रोग के छाले का यत्न ॥

इस रोग में मुंह की नस की फस्त ले तो यह छाले जांय ॥ १० ॥ अथवा चमेली के पत्ते । गिलोय । त्रिफला । जवासा । दारुहल्दी । दाख इनका काढ़ा कर उसमें सहत डाल कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुख रोग के छाले जांय ॥ ११ ॥ अथवा काला जीरा । कूट । इन्द्रजव । इन्हें महीन पीस दांतों से उसका रस मुख में ले फिर थूक दे तो त्रिदोष का मुख पाक जाय ॥ १२ ॥ अथवा पटोल के पत्ते । नीबकीछाल । जामन के पत्ते । आम के पत्ते । चमेली के पत्ते । इनका काढ़ाकर फिर इसके कुल्ले करे तो त्रिदोषकेमुखपाक के छाले जांय १३ ॥ अथवा पटोल के पत्ते । त्रिफला । दारुहल्दी । इनका काढ़ा कर उसमें सहत डाल कुल्ले करै तो त्रिदोष का मुख पाक जाय ॥ १३ ॥ अथवा खस । पटोल । नागर मोथा । हड़की छाल । कुटकी । मुलहठी । किरमाला की छाल । रक्तचन्दन । इनका काढ़ा ले अथवा इनके कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुखपाक के छाले जांय १४ ॥

तिलों की डाड़ी । कमलकी जड़ । घृत । मिश्री । दूध । सहत इन सबको इकट्ठा कर कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुख पाक के छाले जांय ॥ १५ ॥ अथवा हल्दी । नीबकेपत्ते । मुलहठी । कमल कीजड़ । इन्हैं तेलमें पकावे पीछे इसतेल के कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुख पाक के छाले जांय ॥ १६ ॥ ये सब यत्न भाव प्रकाश में लिखे हैं ॥

अथ दांत हलते होंय और उसमें पीड़ा भी होती होय उसकी औषधि ॥

पीपल । सेंधानोन । जीरा । हड़की छाल । मोचरस । इन्हैं महीन पीस दांतों को रगड़े तो दांत हलते बन्द होंय और उनकी पीड़ा जाय ॥ १७ ॥ अथवा नागरमोथा । हड़की छाल । सोंठ । मिरच । पीपल । बायबिड़ंग । नींबकेपत्ते । इन्हैं महीन पीस गोमूत्र की ३ पुट दे छाया में सुखाय गोली करे पीछे वह गोली रात को मुख में धर सोवे पीछे प्रभात उस गोली को थूक दे फिर कुल्ले करे तो दांत के सब रोग जांय ॥ १८ ॥ अथवा फिटकड़ी । नीला थोथा । खैरसार । पपड़िया कत्था । तेजबल । कच्चीलाख । बंशलोचन । मिरच । आंवले । मंजीठ । रूमीमस्तगी । बोलसिर का बक्कल । सेंधानोन । माजूफल । दक्षिणी सुपारी इन्हैं महीन पीस कपड़ छानकर इसमें निर्गुंडी के रसकी १ पुट दे पीछे चमेली के रसकी पुट दे धूप में सुखाय ले पीछे महीन पीस दांतों में रगड़े तो दांत गाढे होंय और दांतों के सब रोग जांय ॥ १९ ॥

अथ जीभ के रोग की पुन: औषधि लिखते हैं ।

कचनार के बक्कलका काढा कर इसमें खैरसार मिलाय कुल्ले करे तो जीभ के सब रोग जांय ॥ २० ॥

अथ गले के सब रोग दूर करने की गोली ।

तेजबल । पाढ़ा । रसोत । दारुहल्दी । पीपल इन्हैं महीन पीस सहत से गोली बांधे पीछे गोलीको मुख में रक्खे तो सब प्रकार के रोग जांय ॥ २१ ॥

अथ मुखपाक के दूर करने की गोली ॥

खैरसार। जायफल। भीमसेनीकपूर। दक्खिणी सुपारी। तज। पत्रज। नागकेसर। इलायची। कस्तूरी ये सब बराबर ले महीन पीस खैरसार के काढ़े में इनकी चने प्रमाण गोली बांधे फिर इस गोली को मुंहमें राखे तो जीभ। ओठ। दांत मुंह। गला। तालू। इनके सब रोग जांय २२॥

अथ दूसरी खैरसार की गोली ॥

जायफल। कस्तूरी। भीमसेनी कपूर। सुपारी इनकी बराबर खैरसार ले इन सब को महीन पीस गोली करे और मुखमें राखै तो मुख के सब रोग जांय ॥ २३ ॥

अथ दांत में रुधिर निकलैं उसकी औषधि ।

सेंधानोन खैरसार। कूट। धनियां। मिरच। सोंठ। भुना जीरा। भुना नीला थोथा इन्हें महीन पीस दांतों को मर्दन करै तो दांत का रुधिर निकलना बन्द होय ॥ २४ ॥

अथ मुख पाक की और औषधि ॥

दारुहल्दी। गिलोय। चमेली के पत्ते। दाख। अजवायन। त्रिफला इनका काढ़ा कर कुल्ले करै तो मुख पाक जाय २५ ॥ ये सब यत्न बैद्य रहस्य में लिखे हैं ॥

अथ मुंह के ऊपर छाया को दूर करने का यत्न ।

लोध। धनियां। बच। गोरोचन। मिरच इन्हे महीन पीस मुखको लेप करै तोमुंहकी छाया जाय २६ ॥ अथवा सरसों बच। लोध। सेंधानोन इन्हें महीन पीस मुख पै लेप करै तो मुखकी छाया जाय ॥ २७॥ अथवा रक्तचन्दन। मंजीठ। कूट। लोध। फूलप्रियंगु। बड़के अंकुर। मसूरइन्हेंजलसेमहीन पीस मुखकी छाया को लेप करै तो छाया जाय २८ ॥ अथवा जायफल को घिस लेप करै तो छाया जाय॥ २९ ॥ अथवा आंक के दूध में हल्दी को भिगोय लेप करै तो मुख की छाया जाय ३० ॥ अथवा मसूर को दूध में पीस इसमें थोड़ा घृत मिलाय लेप करै तो मुख की छायाजाय और कांति बढ़ै॥

३२ ॥ अथवा केसर । रक्तचन्दन । लोध । खस । मंजीठ । मुलहठी । पत्रज । कूट । गोरोचन हल्दी । लाख । दारुहल्दी । नागकेसर फूलप्रियंगु । बड़कीअंकुर । चमेली के पत्ते । लोम । सरसों । सब इनका काढ़ा कर इसमें मधुरी आंच से तेल पकावै फिर इस तेल का मर्द्दन करै तो मुख की झांय। कील तिल मस्से आदि सब विकार जाय ॥ ३२ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह
जी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रंथे क्षुद्र रोग मस्तक और नेत्रों के सब
रोग कान, नाक, मुख, ओठ, मसूढ़े, दांत, जीभ, तालू, गला, कंठ,
इन सब रोगों के भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षण यत्न
निरूपणं नाम अष्टादशस्तरङ्गः ॥ १८ ॥ ± ॥

* * *

अथ सब स्थावर जंगम के विषमाल की और इनमे उपजे जो रोग
तिनको उत्पत्ति लक्षण यत्न संख्या लिखते हैं ॥

प्रथम विष दो प्रकार का है — स्थावर १ दूसरा जंगम स्थावर विष है सो दश जगह में रहै वृक्ष की जड़ में १ पत्र में २ फल में ३ पुष्प में ४ छाल में ५ वृक्ष के दूध में ६ वृक्ष के रस में ७ वृक्ष के गोंद में ८ धातु माल हरतालादिक में ९ कन्द नाम सिंगी मोहरादिक में १० इन दश जगह में स्थावर विष रहै है जंगम विष १३ जगह में रहै है ॥ मनुष्यादिक की दृष्टि में १ सर्पादिक की श्वास में २ श्वान शृगालादिक की डाढ़ में ३ व्याघ्रादिक के नखों में ४ विषखपरादिकों के मल में ५ मूत्र में ६ बन्दरादि कों के शुक्र में ७ सिड़ी जानवर अर्थात् बावले श्वानशृगाल को आदिले तिनकी गुदामें ८ सर्पादिकों के हाड़में ९ न्योला मच्छर को आदि ले इनके पित्तमें १० भौंरादिक के कांटे में ११ मूषक के दांत में १२ सिंहादिकों के रोम में १३ ॥

अथ स्थावर विष खाने से जो रोग होय हैं सो लिखते हैं ॥

स्थावर विष के खाने से ज्वर और हिचकी होय दांत खट्टे होजांय गला बंध जाय मुख में फेना आवै छर्दि और अरुचि स्वास मूर्छा होय ये जिसमें लक्षण होंय तब जानिये स्थावर विष को खाया है ॥ १ ॥

अथ वृक्षादिकों की जड़ के विष के खाने का लक्षण ॥

वमन और मोहहोय ॥ २ ॥

अथ वृक्ष के पत्र के विष के खाने का लक्षण ॥

जम्हाई बहुत आवै शरीर कांपै स्वास होय ॥ ३

अथ वृक्षादिक के फल के विष खाने का लक्षण ॥

मुख में सूजन और शरीर में दाह होय भोजन खानेमें द्वेष होय ॥ ४ ॥

अथ वृक्ष के पुष्प के खाने से अथवा सूंघने से जो रोग होय उसका लक्षण ॥

छर्दि और अफरा होय मूर्छा होय ॥ ५ ॥

अथ वृक्षादि के बक्कल के खाने या लगने के विष का लक्षण ॥

उसके मुख में दुर्गंधि आवै शरीर कड़ा होजाय मस्तक पीड़ा होय मुख में कफ बहुत निकले ॥ ६ ॥

अथ वृक्षादिक के दूध केविष के खाने का लक्षण ॥

हृदय दूखै मूर्छा होय मुख में फेना आवै गुदा को बंध छूट जाय जीभ भारी होजाय ॥ ७ ॥

अथ हरतालादिक धातुओं के विष खाने का लक्षण ॥

हृदय दूखै मूर्छा होय शरीर में दाह लगि जाय और तालू में दाह होय इस विषसे तत्काल मरै अथवा कालान्तर मेंमरै ८ ॥

अथ कंद विष सींगी मुहरा आदि के खाने आदि का लक्षण ॥

सींगी मुहरादि के खाने से मनुष्यादिक तत्काल मरिजांय हृदय दूखै मूर्छा होय शरीर में दाह होय तालू जलै ॥ ८ ॥

अथ स्थावर विष मात्र के शुद्ध हुये के खाने का गुण ॥

स्थावर विष मात्र रूखा और गरम और तीक्ष्ण है और

इसका सूक्ष्म गुण है और स्त्री संग बहुत करावै है और सब शरीर में तत्काल फैलि जाय है और उगि आवै और तत्काल इसका परिपाक होजाय है ये दशगुण स्थावर बिष में हैं ॥ १० ॥

अथ स्थावर बिष के खाने से जो रोग उपजैं सो लिखते हैं ।

बिष के रूखे पने से मल बिगड़ै और सब स्थानों के ओड़ को काटै और बिष के सूक्ष्मपने के गुण से शरीर के अंग २ में वह विष बंटिजाय और बिष के पराक्रम से स्त्री संग बहुत करै इस गुण से शरीर के दोषों को और शरीर की धातुओं को और शरीर के मल को बिगाड़ै और बिष के शीघ्रपने के गुण से शरीर को क्लेश दे इसी कारण से बिष का यत्न अति कठिन है ॥ ११ ॥

अथ बिष के पानी के बुझे हुये शस्त्र के लगने का लक्षण ॥

बिष के पानी का बुझा हुआ शस्त्र जिसके लगै उसका घाव तत्काल पकि जाय और उस घाव में से रुधिर बहुत निकलै और उसका रुधिर काला होय और जिसमें दुर्गन्धि बहुत आवै और जिसका मांस बिखर जाय तृषा लागै ताप दाह मूर्च्छा होय ये लक्षण होंय तो जानिये कि किसी वैरी ने बिष के पानी के बुझे हुये शस्त्रसे मारा है ॥

अथ बिष देने वाले के जानने का लक्षण ॥

विषदेने वाले मनुष्य की वाणी की चेष्टा मुख की कान्ति औरसी होजाय कोई उससे पूछै तो उसको उत्तर दे नहीं औरही कहै और बिष का देने वाला मोह को प्राप्त होय बोला जाय नहीं और बोले तो मूर्ख कीसी तरह बोले और अंगुली से पृथ्वी को खनै और भगि जाय और घर में से निकलने को करै और इधर उधर बारंवार देखता जाय और उसका चित्त बिपरीत होजाय ये सब लक्षण बिषके देने वाले में होंय हैं सो बुद्धिमान जान लें ॥ १२ ॥

अथ जंगम विष सर्पादि जिसे काटे उस्से उपजा जो रोग उसका सामान्य लक्षण ॥

जिसे ऐसे किसी जानवर ने काटा होय उसे निद्रा और तन्द्रा होय और उसका सब ज्ञान जातारहे दाह होय अंधेरी आवे और उस स्थान में सूजन होय और अतीसार होय ये सब लक्षण होंय तो जांनिये किसी विषैले जानवर ने काटा है ॥ १३ ॥

अथ भोगी मंडल नाम जो सर्प उसके काटने के पृथक् २ लक्षण ॥

वायु की प्रकृति वाला भोगी पित्त की प्रकृति वाला मंडल नाम कफ की प्रकृति वाला राजिल नाम ये सर्पजिसे काटैं उनका लक्षण लिखते हैं ॥ भोगी सर्प जिसे काटै उसके दंशकी जगह पीली पड़िजाय और उसके सब वायु के रोग उपजि आवैं ॥ और मंडल नाम सर्प जिसे काटै उसके काटने की जगह पीली पड़िजाय और कोमल सूजन होय और उसके पित्तके सब रोग होजांय ॥ और राजिल नाम सर्प जिसे काटे उसके काटने की जगह में स्थिर सूजन होय और उस स्थान में पीले चिकने भाग को लिये गाढ़ा रुधिर निकले और उसके कफ के सब रोग हो जांय ॥ १४ ॥

अथ देश विशेष और काल विशेष में जो सर्पादिक काटैं उनका लक्षण ॥

पीपल के स्थान में देहरे में मसान में डौढ़ी के निकट चौहटे में संध्या के समय भरणी नक्षत्र और मघा नक्षत्र में और मर्म स्थानमें जो सर्पादिक मनुष्यको काटैं तो मनुष्य मरजाय ॥ १५ ॥

अथ दर्वीकर नाम सर्प जिसका फन करछी ॥ सदृश होय उसके काटने का लक्षण ॥

जिसका फन हिये के सदृश अथवा छत्र वा कमल वा अंकुश के सदृश होय और वह सर्प जल्दी चले उसे दर्वीकर सर्प कहिये ॥ १६ ॥ इतने मनुष्यादिकों के सर्पादिक

काटे तो यत्न कीजै नहीं। अजीर्ण वाले को गर्मी के बिकार वाले को। बालक को। बूढ़े को। भूखे मनुष्य को। घायल को। प्रमेह वाले को। गर्भ वाली स्त्री को। जिसके शरीर में रुधिर नहीं होय इन मनुष्यों को सर्पादिक काटे तो असाध्य जानिये ॥ १७ ॥ अथवा जिसके मुख में रुधिर की धार पड़ै और जिसकी गुदा और इन्द्री में रुधिर की धार पड़ै सोभी असाध्य है ॥ १८ ॥

दूसरे विष का लक्षण ॥

स्थावर अथवा जंगम जो बिष हैं सो बहुत दिनों के प्रभाव से औषधि से भी बिष होजांय हैं उनका गुण जाता रहै उन पुरानी औषधादिक को बिष से मूर्छा भ्रम। वमनादि होजांय ॥ ९ ॥

अथ मूसे के बिष का लक्षण ॥

जहां मूसा काटे उस जगह रुधिर पीला निकलै और उस जगह मंडल पड़जाय और ज्वर। अरुचि रोमांच और दाह होय ये लक्षण होय तो मूसे का काटा जानिये ॥२०॥

अथ प्राणहर मूसे के बिष का लक्षण ॥

जिस मूसे के काटने से मूर्छा होय अंग में सूजन और शरीर का वर्ण और सा होजाय शरीर में खेद बहुत होय काटने की जगह में रुधिर बहुत पड़ै और ज्वर होय आवै सिर भारी होजाय लार बहुत पड़ै रुधिर आवै इस मूसे के काटे को असाध्य जानिये ॥ २१ ॥

अथ गिरगिट के बिष का लक्षण ॥

गिरगिट के काटने की जगह सूजन होय और वह जगह काली पड़ जाय और शरीर के नाना वर्ण होजांय और मोह होय। अतीसार होजाय तब जानिये कि गिरगिट के काटने का बिष है ॥ २२ ॥

अथ बीछू के काटने के बिष का लक्षण ॥

शरीर में जहां बिछू काटे उस जगह अग्नि लगिजाय

और ऊंचा चढ़ै और काटने की जगह फटने लगै ॥ २३ ॥

अथ बीछू के काटने का असाध्य लक्षण ॥

जो बीछू निपट ज़हरी होय और नाक में काटे तो उस जगह अग्नि बहुत जले उसकी जीभ पीड़ा से थकी जाय और उस जगह का मांस गिरने लगै ऐसा मनुष्य मर जाय ॥ २४ ॥

अथ बिषैले मैंढक के काटने के बिष का लक्षण ॥

बिषैला मैंढ़क जिसै काटे उसके काटने की जगह सूजन होय और वहां पीड़ा होय और उसै तृषा लगै और नींद बहुत आवै और वमन होय ॥ २५ ॥

अथ बिषैली मछली के काटने के विष का लक्षण ॥

बिषैली मछली जिसै काटै उसके शरीर में दाह लगै और उस जगह सूजन और पीड़ा होय ॥ २६ ॥

अथ बिषैली जोंक के काटने का लक्षण ॥

उस जगह खाज और सूजन और मूर्छा होय तब जानिये कि यह बिषैली जोंक कै काटने का जहर है ॥ २७ ॥

अथ बिषैलो बिसखपरी ने काटा होय उसका लक्षण ॥

उस जगह दाह होय और सूजन पीड़ा होय पसीना आवै ॥ २८ ॥

अथ कनसलाई के काटने का लक्षण ॥

जिस जगह कनसलाई काटे उस जगह पीड़ा होय पसीना आवै और दाह होय ॥ २९ ॥

अथ मच्छर के विषका लक्षण ॥

उस जगह खुजली चलै पीड़ा होय और कुछ सूजन होय ३० ॥

अथ बन के मच्छर के काटे का असाध्य लक्षण ॥

जिसै बिषैला मच्छर काटे उस के पिती समान लाल चकत्ते घाव समान गहरे पड़ि जांय और उस जगह पीड़ा बहुत होय यह असाध्य जानिये ॥ ३१ ॥

अथ बिषेली मक्खी के काटने का लक्षण ॥

जिस जगह बिषैली मक्खी अथवा भँवर मक्खी काटे वह जगह काली पड़ि जाय दाह होय मूर्छा और ज्वर होय और वहां चकत्ते होंय तो इसका काटा मर जाय॥३२॥

अथ सिंह बघेरा चीता जिसे काटे उसका लक्षण ॥

जिसे सिंहादिक काटे उसका घाव पके और उस में राद पड़े और ज्वर हो आवे ॥ ३३ ॥

अथ बावले स्वान का लक्षण ॥

जिसके मुंह से लार पड़े और वह स्वान अन्धा और बहरा होजाय और चौगिर्द दौड़े और उसकी पूंछ सूधी हो जाय और उसकी डाढ़ और कन्धे और मस्तक दूखैं तिससे उसका मुख नीचेही रहै ऐसा स्वान अथवा स्यार सिंह व्याघ्रादिक भी बावला जानिये ॥ ३४ ॥

अथ बावले स्वानादिक जिसे काटैं उसका लक्षण ॥

जिसे बावले स्वानादिक काटैं उसका रुधिर काला निकले और उसका हृदय सिर बहुत दूखै और ज्वर होय शरीर जकड़बन्द होय तृषा लगै और उस जगह खाज और पीड़ा होय शरीर का वर्ण औरसा होजाय शरीर में क्रोध बहुत होय घूमेर आवै दाह होय काटने की जगह सूजन होय गांठ पड़जाय काटने की जगह फटने लगि जाय और उस जगह फोड़े होंय ये लक्षण बावले स्वान के काटने के जानिये ॥ ३५ ॥

अथ इसका असाध्य लक्षण ॥

जो पुरुष जल में कांच में तेलादि में स्यार और स्वान को देखे और पुकार उठे टेढ़ी चेष्टा करने लगिजाय और डरे वह मर जाय ॥ ३६ ॥

अथ स्थावर बिषमात्र का यत्न ॥

जो स्थावर बिष खाय उसे औषधादिक से बमन कराइये तो स्थावर बिष जाय बिषमात्र गरम है इस वास्ते शीतल

सब यत्न अच्छे हैं ॥ १ ॥ अथवा सहत घृत संयुक्त विषके दूर करने वाली औषधि दीजे तो स्थावर विष जाय ॥ २ ॥ और स्थावर बिषवाले को खटाई मिरच दीजे नहीं ॥ ३ ॥ और उस के भोजन में सांठी चांवल । कोदों । सेंधानोन दीजे ॥४॥

अथ बिष के दूर करने का लेप ॥

फूलप्रियंगु । कांगनी की जड़ पानका बक्कल फूल बीज और सिरिस का पंचांग इन्हें गोमूत्र में महीन पीस लेप करे तो स्थावर बिषका रोग जाय ॥ ५ ॥ अथवा पीपल । छड़ । लोध इलायची । कालीमिरच । नेलवाला ।सोनागेरू । इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो विष जाय ॥ ६ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं ॥ अथवा चौलाई की जड़ को चांवलों के पानी में पीस पीवे तो स्थावर बिषका दोष दूर होय ॥ ७ ॥

अथ जंगम बिष का यत्न ॥

अथ मृत्यु पास छेद घृत लिखते हैं ॥

हड़कीछाल । गोरोचन । कूट । आककेफूल । कमलकीजड़ । नरसलकीजड़ । बेतकीजड़ । तुलसी इन्द्रजव । मंजीठ । जवासा । शतावरि । सिंघाड़ा इनका काढ़ा कर उस में गौका घृत पकावे पीछे ये सब जलि जांय घृत मात्र आय रहै तब इस घृत में बराबर का सहत डाल इसका शरीर के लेप करै तो बिष मात्र का दोष सांपका काटना आदि और सब जीवों का बिष दूर होय इस घृत को खाने में लेप में नास में दीजे ॥ ८ ॥ यह भावप्रकाश में है ॥

अथ सर्प के बिषके दूर होने का यत्न ॥

घृत । सहत । मक्खन । पीपल । अदरक । मिरच । सेंधानोंन । इन सब को महीन पीस पीवै तो काले सांपका काटा भी अच्छा होय ॥ ९ ॥ अथवा सिरस के फूल के रस में सहंजने के बीजा की ७ पुट दे पीछे उसका अंजन करे तो सांपका काटा अच्छा होय ॥ १० ॥ सुपेद सांठी की जड़

को पुष्यार्क के दिन ल्यावे पीछे उसे चांवल के पानी से महीन पीस पीवे तो सांपका काटा अच्छा होय ॥ ११ ॥

अथ बिच्छू के विष का यत्न ॥

जमालगोटे को घिस बिच्छू के डंकऊपर लगावे तो बिष दूर होय ॥ १२ ॥ अथवा नौसादर हरताल इन्हे पानी में महीन पीस बिच्छू के डंकपर लेप करे तो बिच्छू का विष दूर होय ॥ १३ ॥ अथवा पलासपापड़े को आक के दूध में घिस बिच्छू के डंकमे लगावे तो विष दूर होय ॥ १४ ॥ अथवा सिरस के बीजोंको बकरी के दूध में घिस बिच्छू के डंक के लगावै तो बिष जाय ॥ १५ ॥

अथ बिच्छू के बिष के दूर होने का मंत्र ॥

ॐ आदित्य रथवेगेन बिष्णु बाहु बलेनच ॥ सुवर्ण पक्षपातेन भूम्यांगच्छ महाबिष १ झोपक्ष जोग पदाज्ञाश्रीशिवोत्तम प्रभुपदाज्ञा भूम्यांगच्छ महाबिष इस मंत्र से २१ बार डंक के ऊपर झाड़ा दीजे तो बिच्छू का जहर जाय ॥ १ ॥

अथ कनेर के विष के दूर करने का यत्न ॥

हल्दी को दूध में महीन पीस उसमें मिश्री मिलाय पीवै तो कनेर का बिष उतरे ॥ १६ ॥

अथ धतूरे के विष के दूर करने का यत्न ॥

चौलाई की जड़ अथवा गिलोय इन्हेंपीवै अथवा कपासके पंचांग को पीवे तो धतूरे का बिष जाय ॥ १७ ॥

अथ आक के विष दूर होने का यत्न ॥

हल्दी तिल दूब इन्हैं बकरी के दूध में महीन पीस लेप करै तो आक का बिष जाय ॥ १८ ॥

अथ कौंच के बिष दूर होने का लेप ॥

घृत का मर्दन करै तो कौंच का बिष जाय ॥ १९ ॥

अथ मिलावे के बिष के दूर होने का यत्न ॥

सौबार के धोये घृत का मर्दन करै तो मिलावे का जहर जाय ॥ २० ॥

अथ मक्खी के बिष के दूर होने का लेप ॥

केसर। तगर। सोंठि इन्हैं जल से महीन पीस लेप करै तो मक्खी का बिष जाय ॥ २१ ॥

अथ भौंर मक्खी के बिष के दूर होने का लेप ॥

सोंठि । कबूतरकीबीट । बिजौरे का रस। हरताल सेंधानोन इन्हैं महीन पीस लेप करे तो भौंरा मक्खीका बिष जाय ॥ २२ ॥

अथ मूसे के बिष के दूर होने का यत्न ॥

धूमसा । मजीठ । हल्दी । सेंधानोन। इन्हें पानीमें महीन पीस लेप करे तो मूसे का बिष जाय ॥ २३ ॥

अथ मेढ़क के बिष दूर होने का यत्न ॥

सिरस के बीजों को थूहर के दूध में महीन पीस लेप करे तो मेढ़क का बिष जाय॥ २४ ॥

अथ कनसलाई के बिष के दूर होने का लेप ॥

दीपक के तेल का लेप करे तौ कनसलाई का बिष जाय॥ २५ ॥

अथ सर्प के बिष दूर होने का अंजन ॥

जमाल गोटे की मींगी में नींब के रस की ७ पुट दे धूप में सुखावे इसी तरह लाख के रसकी १ पुट दे पीछे इसका अंजन करे तो सांप का काटा अच्छा होय ॥ २६ ॥

अथ बावला कुत्ता स्यार आदि काटे उसका यत्न ॥

यह जानवर जिस जगह काटै उस जगह का रुधिर कढ़ाय डालिये अथवा उस जगह लोहेकी शलाका से दाह दीजे तो कुत्ता स्यार आदि का बिष दूर होय ॥ २७ ॥ अथवा धतूरे का रस १ ट० भर आक का दूध १ ट० घृत १ ट० इन्हें महीन पीस लेप करे तो बावले कुत्ते का बिष जाय ॥ २८ ॥ अथवा धतूरे के फलको बीजों समेत ले चौलाई की जड़के रसमें पीस अथवा गोभी और सहत से पीस पीछे लेप करे तो बावले कुत्ते का बिष जाय ॥ २९ ॥

अथवा मांस। आकका दूध। तेल गुड़ ये सब बराबर ले पीछे १ टंक नित्य ७ दिन खाय तो इसका विष जाय ॥ ३० ॥ अथवा इस मंत्रसे एक सौ आठ १०८ आहुत दे और जिस को बावला स्वान काटे होय उसे चौहटे में अथवा नदी के तीर स्नान कराय आप पवित्र होय इस मंत्र से एक सौ आठ अहुति दे पीछे डाभ से इसका झाड़ा दे तो उसका विष उतरे ॥

अथ मंत्र लिख्यते ॥

अलर्काधि पते यक्ष सारमेय गणाधिप । अलर्क जुष्ट मेतंमें निर्विषं कुरुमाचिरात् स्वाहा इति मंत्रः ॥

गुड़। तेल आकका दूध इनका लेप करै तो स्वान का विष जाय ॥ ३१ ॥ अथवा कूकर कीबीठ का लेप करे अथवा ग्वार के पट्ठे की गिरी। सेंधानौन। उसके ऊपर ५ दिन बांधे तो स्वान का विष जाय ॥ ३२ ॥ अथवा चौंलाई की जड़। तुलसी के बीज। वच इन्हें चांवल के पानी में पीस ७ दिन पीवे तो स्वान का विष जाय ३३ ॥ अथवा चौलाई की जड़ का रस और चोखा घृत मिलाय ७ दिन खाय तो स्वान का विष जाय ॥ ३४ ॥ अथवा कड़वी तूंबी की जड़ ४ टंक सोंठ ४ टं० मिरच ४ टं० नींब की निबौली ४ टं० सोधा जमाल गोटा ९ टं० निसोत ७ टं० इन्हैं महीन पीस गुड़ में २ ॥ टंक भर की गोली बांधे १ गोली गरम पानी से ७ दिन तथा १४ दिन ले तो बावले स्वान का विष जाय ॥ ३५ ॥ अथवा कड़वी तूंबी की जड़ । सिंगरफ । सोधा जमालगोटा । मिरच । फुलाया सुहागा ये सब बराबर ले इन की २ रत्ती भर की गोली चौलाई के रस में बांधे १ गोली गरम पानी से ७ दिन ले तो स्वान का विष जाय ॥ और जहां स्वान ने, काटा होय वहां इस गोली को मूत्र में घिसि लगावे तो मूत्र में होय लट गिर पड़ै ॥ ३६ ॥

इति स्वानादिक के विष का यत्न और स्थावर जंगम विष मात्र की उत्पत्ति लक्षण यत्न संपूर्ण ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप
सिंह जी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रन्थे स्थावर जंगम
विष मात्रके भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणं
नाम एकोनविंशतितमस्तरङ्गः ॥ १९ ॥

अथ स्त्रियों के प्रदर को आदि ले सब रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न लिखते हैं ॥

अथ प्रदर रोग की उत्पत्ति—विरुद्ध भोजन से बहुत मद के पीने से भोजन के ऊपर भोजन करने से अजीर्ण से गर्भ के पड़ने से अति मैथुन करने से सवारी के चढ़ने से मार्ग के चलने से शोच से अति तीक्ष्णपने से भार के उठावे से चोट के लगने से दिन के सोने से स्त्रियों के वायु पित्त कफ सन्निपात ये सब कोप को प्राप्त हो प्रदर के रोग को पैदा करे हैं सो प्रदर का रोग चार प्रकार का है वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ ॥

अथ प्रदर के रोग का सामान्य लक्षण ॥

स्त्री की योनि में नाना प्रकार का रुधिर बिनाही ऋतु निकले और रुधिर निकलते हड़फूटनि होय और सब शरीर में पीड़ा होय उसे प्रदर रोग कहिये ॥ १ ॥

अथ वायु के प्रदर रोग का लक्षण ॥

उसकी योनि का रुधिर रूखा होय और झागों को लिये होय और मांसके पानी सदृश होय ॥ २ ॥

अथ पित्त के प्रदर रोग का लक्षण ॥

उसकी योनि का रुधिर पीला जाय नीला सुपेदाई को लिये और लाल गरम बहुत जाय और शरीर में दाह होय यह पित्त के प्रदर का लक्षण है ॥ ३ ॥

अथ कफ के प्रदर रोग का लक्षण ॥

जिसका रुधिर गोंद समान चिकना और गुलाब के जल समान जाय उसे कफका कहिये ॥ ४ ॥

अथ सन्निपात के प्रदर का लक्षण ॥

सहत अथवा घृत समान हरताल के सदृश मस्तक की गूदी के समान मुरदे कीसी दुर्गन्धि को लिये जिसका रुधिर जाय तो त्रिदोष का जानिये ॥ ५ ॥

अथ रुधिर के बहुत जाने का उपद्रव ॥

रुधिर बहुत जाय तब स्त्री दुर्बल होजाय भ्रम होय मूर्च्छा और मद होय तृषा बहुत लगे दाह प्रलाप होय शरीर पीला होय तन्द्रा होय और बायु के और भी रोग होंय ६ ॥

अथ प्रदर का असाध्य लक्षण ॥

योनि से निरन्तर रुधिर चला करै बन्द नहीं होय और तृषा लगे दाह और शरीर में ज्वर होय शरीर दुर्बल होय उसे असाध्य जानिये ॥ ७ ॥

अथ शुद्ध आर्त्तव नाम स्त्री के धर्म का लक्षण ॥

जो स्त्री की योनि का रुधिर महीने के महीने शशा के रुधिर समान निकले और रुधिर में दाह नहीं होय और रुधिर निकलते पीड़ा नहीं होय और पांच रात्रि तक निकले और बहुत निकले नहीं और थोड़ा भी निकले नहीं उसे शुद्ध स्त्री धर्म्म जानिये ॥ ८ और स्त्री धर्म १६ दिन रहै है ॥

अथ प्रदर रोग का यत्न ॥

सोंचर नोन । जीरा । मुलहठी । कमलगट्टे । इनका काढ़ाकर सहत डालले तो बायु का प्रदर रोग जाय ॥ १ ॥ अथवा मुलहठी २ ॥ टं० मिश्री २ टंक इन्हें महीन पीस चावल के पानी में ले तो पित्त का प्रदर रोग जाय ॥ २ ॥ अथवा रसोंत २ ॥ टं० चौलाई की जड़का रस २ टं० भर उसमें सहत मिलाय ७ दिन पीवे तो सब प्रकार का प्रदर रोग जाय ॥ ३ ॥ अथवा आसापाले के बक्कल का काढ़ा

कर उसमें दूध डाल पीवैतो बहुत भी प्रदर का रोगजाय ॥ ४ अथवा डाभकी जड़ को चावल के पानी से पीस ३ दिन पीवे तो प्रदर रोग जाय ॥ ५ ॥ अथवा कठूंबर के बक्कल के रस में सहत डाले अथवा मिश्री डाले और चावल का पानी डाल पीवै तो प्रदर रोग जाय ॥ ६ ॥ अथवा दारुहल्दी । रसौत चिरायता । अडूसा । नागरमोथा । रक्तचन्दन । आकके फूल इनका काढ़ा कर उसमें सहत डाल पीवै तो लाल और सुपेद पीला सब प्रकार का स्त्री का प्रदर रोग जाय ॥ ७ ॥ इति दार्व्यादिक्काथः ॥

अथवा गूलर के फलों को सुखाय कर उन्हें महीन पीस उसमें मिश्री सहत डाल १ ट० भरकी गोली बांधे पीछे इस गोली को ७ दिन खाय तो प्रदर रोग जाय ॥ ८ ॥

अथ स्त्रियों के प्रदर का भेद सोम रोग होय है उसका लक्षण ॥

स्त्रियों के बहुत प्रसंग से शोच से खेदसे जहर के संयोग से अतीसार की भांति स्त्रियों के अथवा पुरुष के भी सोम रोग होय है । बारंबार मूत बहुत उतरे इसका नाम सोम रोग कहिये ॥

अथ सोम रोग का सामान्य लक्षण ॥

सुन्दर स्वरूपवान् स्त्री जो बारंबार बहुत मूतै और वह दुबली होजाय और उसको सुख घड़ी एक का भी होय नहीं बहुत मूतने से उसका शरीर सिथिल होजाय और मुख और तालू सूखा करै और मूर्छा होय और जंभाई बहुत आवै और प्रलाप होय उसकी त्वचा रूखी पड़िजाय और भोजनादिक में तृप्ति होय नहीं ये लक्षण जिसमें होंय उसे सोम रोग कहिये ॥ १ ॥

अथ सोम रोग का यत्न ॥

पक्के केले में मिश्री लगाय खाय तो सोम रोग जाय १ ॥ अथवा आंवले के रस में सहत डाल खाय तो सोम रोग जाय ॥ २ ॥ अथवा उड़दकाचून । मुलहटी । बिदारीकंद

इन्हें महीन पीस उसमें बराबर की मिश्री मिलाय १ टके भर दूध से नित्य १० दिन ले तो सोम रोग जाय ॥ ३ ॥

अथ सुपेद प्रदर के जाने का यत्न ॥

आंवले के ५ टंक बीजों को जलमें भिगोय महीन पीस छान उसमें सहत मिश्री मिलाय नित्य १४ दिन पीवै तो सुपेद प्रदर जाय ॥ ४ ॥

अथ मूत्रातीसार का लक्षण ॥

सोम रोग बहुत दिन रहै तो मूत्रातीसार होय इस मूत्रातीसार में बल जाता रहै और मूत्र बहुत उतरै ॥ ५ ॥

अथ मूत्रातीसार का यत्न ॥

ताल वृक्षकी जड़ । छुहारा । मुलहटी । बिदारीकंद इन्हे महीन पीस इसमें सहत मिश्री मिलाय १ टके भर नित्य खाय तो मूत्रातीसार जाय ॥ ६ ॥ अथवा पवांड़ की जड़ को चावलों के पानी से पीवै तो मूत्रातीसार जाय ७ ॥ अथवा सुपेद मूसली । तालवृक्ष की जड़ । छुहारा पक्काकेला । इन्हें दूध से पीवै तो मूत्रातीसार जाय ॥

अथ प्रदर काऔर यत्न ॥

मूसेकी मेंगिनी २ टंक इसमें बराबर की मिश्री मिलाय दूध से ३ दिन पीवै तो स्त्रीके लाल सुपेद सब तरह के प्रदर रोग अच्छे होंय ॥ ८ ॥ अथवा धवई के फूल । बीजाबोल । मूसे की मेंगिनी ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस मिश्री मिलाय २ टं० जल से ले तो प्रदर का रोग जाय ॥ इतिप्रदर रोगकी उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

अथ स्त्रियों की योनि के रोग की उत्पत्ति लक्षण संख्या लिखते हैं ।

स्त्रियों के मिथ्या अहार मिथ्या विहार करकै वायुपित्त कफ हैं सो दुष्ट होंय स्त्री की योनिके विषे बीस प्रकार के रोग को उपजावैं हैं तिनके नाम लिखते हैं ॥ उदावर्त्त १ वंध्या २ विप्लुता ३ परिप्लुता ४ वातला ५ लोहितक्षया ६ दुप्रजाविनी ७ वामिनी ८ पुत्रघ्नी ९ पित्तला १० अत्यानन्दा ११

कर्णिनी १२ कर्णिका १३ अति चरणा १४ अनावर्त्तवा १५ अस्तनी १६ खंडी १७ अंडिनी १८ विट्टता १९ सूचिवक्रा २० ॥

अथ स्त्रियों की योनि का लक्षण ॥

जो स्त्री धर्म हो तो बड़े कष्ट से भाग को लिये रुधिर
छोड़ उसै उदावर्त योनि कहिये ॥ १ ॥ और जो स्त्री धर्म
होय नहीं उसे वंध्या योनि कहिये ॥ २ ॥ और जिस की
योनि में नित्यही पीड़ा रहै उसै विप्लुता योनि कहिये ॥
३ ॥ और जिस स्त्री के स्त्रीधर्म होते में बहुत पीड़ा होय
उसै परिप्लुता योनि कहिये ॥ ४ ॥ और जिसकी योनि
कठोर होय और योनिमें शूलचले उसै वातलायोनि कहिये
॥ ५ ॥ और जिसकी योनि में दाह रहै और रुधिर निकला
करै उसै लोहितक्षया योनि कहिये ॥ ६ ॥ जिसकी योनि
स्रवा करे और कुपित रहै उसे दुःप्रजाविनी योनि कहिये
दुःप्रजाविनी अर्थात् उस योनि में संतति दुख से होय ॥ ७ ॥
जिस स्त्रीकी योनि पवन संयुक्त रुधिरको लिये वीर्य निकाले
उसे वामिनी योनि कहिये ॥ ८ ॥ और जिस स्त्री के गर्भ
रहै और फिर जाता रहै उसे पुत्रघ्नी योनि कहिये ॥ ९ ॥
और जिसकी योनिमें दाह बहुत होय और पकि जायऔर
शरीर में ज्वर रहै उसे पित्तला योनि कहिये ॥ १० ॥ और
जिसकी योनि मैथुन से संतोष को प्राप्त नहीं होय उसे
अत्यानन्दा योनि कहिये ॥ ११ ॥ और जिसकी योनि कर्ण
फूल के आकार होय और उसमें कफ रुधिर निकले उसे
कर्णिनी योनि कहिये ॥ १२ ॥ और जिस योनि में वीर्य
नहीं रहै उसे अति चरणा योनि कहिये १३ ॥ और जिस
स्त्री के बहुत छोटे स्तन होंय उसे अस्तनी योनि कहिये ॥
१४ ॥ और जिसकी योनि खंडिता होय और मैथुन करते
कुछ नीचे लटक आवे उसे खंडिता योनि कहिये ॥ १५ ॥
और जिसकी योनि का छिद्र सूक्ष्म होय उसे अंडिनीयोनि

कहिये ॥ १६ ॥ और जिसका मुंह बढ़ा होय उसे महा विवृता योनि कहिये ॥ १७ ॥ और जिसका मुंह सुई के समान होय उसे सूचीवक्त्रा योनि कहिये ॥ १८ ॥

अथ योनिकन्द रोग की उत्पत्ति लक्षण ॥

दिन के सोने से अति क्रोध के करने से खेद से अति मैथुन के करने से योनि के ऊपर किसी तरह की चोट लगने से अथवा योनि में नखदान के लगने से कफ कुपित्त होय योनि के विषे योनिकन्द नाम रोग को उपजावे है ॥

अथ योनिकन्द रोग का स्वरूप ॥

योनि के बीच एक गांठ राद रुधिर को लिये बड़हल के फल समान पीछे कहे हुए कारणों से उपजै उसे बद कहैं हैं और योनिकन्द नाम भी रोग कहैं हैं ॥ १ ॥ सो योनि कन्द नाम रोग चार प्रकार का है ॥ वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ॥ ४ ॥

अथ बायु के योनिकन्द का लक्षण ॥

उस योनि के बीच की गांठी रूखी होय और उसका वर्ण अच्छा नहीं होय और योनि के वर्ण समान होय और उस गांठी का मुख फटा होय उसे बायु का योनिकन्द कहिये ॥ १ ॥

अथ पित्त के योनिकन्द का लक्षण ॥

उस योनि की भीतरी गांठी दाह को लिये लाल होय और उसे ज्वर हो आवे इसे पित्त का योनिकन्द कहिये और जिस स्त्री के योनिकन्द रोग होय उस स्त्री के स्त्री धर्म नहीं होय ॥ २ ॥

अथ बंध्या स्त्री का यत्न ॥

जिस स्त्री के स्त्री धर्म होय नहीं वह स्त्री नित्य मछली का मांस खायतो स्त्री धर्म होय ॥ ३ ॥ अथवा कांजी नित्य खाय अथवा तिलनित्य खाय अथवा उड़द नित्य खाय अथवा दही नित्य खायतो उस स्त्री के स्त्री धर्म होय तब उसका

वंध्यापने का दोष दूर होय ॥ ४ ॥ अथवा सांटी के बीज। कड़वी तूंबी। दाल्यूणी। पीपल। गुड़। मेढ़ल। दारूकाझाग। जवाखार। थूहरकादूध। इन सब को इकट्ठा कर महीन पीस योनि में इनकी बत्ती डाले तो स्त्री के स्त्री धर्म्म तत्काल होय और उसके वंध्यापने का दोष तत्काल दूर होय ॥ ५ ॥ अथवा मालकांगनी। राई। विजयसार। वच। इन्हें महीन पीस शीतल जलसे ५ दिन पीवे तो उस स्त्री के स्त्री धर्म होय और उसका वंध्यापना जाय ॥ ६ ॥

अथ बांझ स्त्री के पुत्र होने का यत्न।

खरैटी। गंगेरनकी छाल। मऊआ। बड़के अंकुर। नागकेशर ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस गौके दूध में ५ टंक सहत डाल इस चूर्ण को नित्य १५ दिन पीवे तो वंध्या स्त्री के निश्चय पुत्र होय ॥ ७ ॥

अथ स्त्रीधर्म नहीं होय उसका यत्न।

कालातिल। सोंठ। मिरच। पीपल। भारंगी। गुड़ इन सब को १ टं० भर औटाय इनका काढ़ा कर १५ दिन पीवे तो उस स्त्री के स्त्री धर्म निश्चय होय और उसके रुधिर का गुल्म दूर होय और उसके पुत्र होय ॥ ८ ॥ अथवा असगन्ध के काढ़े में गौका दूध और घृत मिलाय ऋतु के समय स्त्री प्रभातही ५ दिन पीवे तो स्त्री के गर्भ रहे ॥ ९ ॥ अथवा सुपेद कटेली की जड़ पुष्य नक्षत्र के दिन उपाय कर २॥ टं० भर पीस दूध के साथ ऋतु के समय ३ दिन स्त्री पीवे तो निश्चय गर्भ को धारण करे ॥ १० ॥ अथवा कटसेलाकी जड़। धवई। बड़के अंकुर। कमलगट्टे इन्हें महीन पीस २॥ टं० ऋतु के समय स्त्री पीवे तो निश्चय गर्भ को धारण करे ॥ ११ ॥ अथवा पार्श्व पीपल अर्थात् सुपेद पीपल की जड़ अथवा इसके बीज और सुपेद जीरा और शरफोंका ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस २॥ टंक ऋतु के समय स्त्री दूध के साथ ले तो उस स्त्री के गर्भ रहै और

निश्चय उसके पुत्र होय ॥ १२ ॥ अथवा बाराही कन्द और कौया और शिवलिंगी इन्हें महीन पीस ऋतु के समय २ ॥ टंक दूध के साथ ले तो स्त्री के निश्चय पुत्र होय ॥ १३ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा बिजौरे के बीजों को गौके दूध में पकावे उसमें गौ का घृत मिलावे और उसकी बराबर नाग केशर मिलाय ऋतु समय ५ टंक मिश्री के साथ ७ दिन खाय तो स्त्री गर्भ को धारण करै ॥ १४ ॥ अथवा अरण्ड की अंडोली और बिजौरे के बीज इन दोनों को घृत में पीस दूध के साथ ऋतु में स्त्री ३ दिन पीवै तो स्त्री गर्भ को धारण करै ॥ १५ ॥ अथवा पीपल। सोंठ। मिरच। नागकेसर। इन्हें महीन पीस ऋतु के समय स्त्री घृत के साथ ३ दिन पीवै तो स्त्री गर्भ को धारण करै ॥ १६ ॥ यह सर्व्वसंग्रह में लिखा है ॥

अथ गर्भ नहीं रहने की औषधि ॥

पीपल। वांयविडंग। सुहागा ये बराबर ले इन्हें महीन पीस ऋतु के समय स्त्री ५ दिन जल से ले तो स्त्री के कभी गर्भ भी रहै नहीं १७ ॥ अथवा पुराना गुड़ १८० भर ले इसे औटाय ऋतु के समय स्त्री नित्य १५ दिन पीवै तो स्त्री कभी भी गर्भ को धारै नहीं ॥ १८ ॥ अथवा निबोली के तेल के फोहे को स्त्री ऋतु के समय योनि में ५ दिन दे तो स्त्री के कभी गर्भ नहीं रहै १९ ॥ यह भावप्रकाश में है ॥

अथ स्त्री की योनि के रोगों का क्रम से यत्न लिखते हैं ॥

तगर। कटेली। कूट। सेंधानोन। देवदारु इनका काढ़ा कर इस काढ़े में तेल पकावै पीछे इस तेल का फोहा योनि में रक्खै तो स्त्रीकी विप्लुता योनि का रोग जाय २० ॥ बायु की योनि के रोगों के दूर करने के वास्ते पाढल के पत्तों का अथवा उसके बक्कल को सिझाय उससे योनि को पसीना लिवावै और धोया करै तो बायु के योनि के रोग जांय ॥ २१ ॥ अथवा पित्त की योनि के रोगों को दूर करने

के वास्ते तिलों के तेल में निबोली को पकाय इस तेल से योनि को सेंके तो पित्त की योनि के रोग जांय ॥ २२ ॥ अथवा पित्त को हरने वाली औषधि के घृत से योनि को सेंके तो पित्त की योनि के रोग जांय ॥ २३ अथवा आंवले के रस में मिश्री डाल स्त्री १० दिन पीवै तो स्त्री की योनि का दाह जाय ॥ २४ ॥ अथवा कूकर भांगरे की जड़ को चांवलों के पानी के साथ स्त्री पीवै तो स्त्री की योनि में राद पड़ती दूर होय ॥ २५ ॥ अथवा नीब के पत्ते। किरमाला के पत्ते। वच। अडूसे के पत्ते। पटोल के पत्ते। इन्हें औटाय इस्से योनि को धोवे तो योनि की दुर्गन्धि जाय २६॥ और पीपल। मिरच। उड़द। सौंफ। कूट। सेंधा नोन। इन्हें औटाय इस्से योनि को धोवै तो योनि के कफ के सब रोग जांय ॥ २७ ॥

अथ योनि संकोचन की औषधि ॥

मूंगके फूल। खैर सार। हड़। जायफल। माजू फल। सुपारी इन्हें महीन पीस महीन वस्त्र से छान स्त्री की योनि में रक्खै तो स्त्रीकी योनि संकीर्ण होय ॥ २८ ॥ अथवा कौंच की जड़ के काढ़े से योनि धोवै तो स्त्री की योनि गाढ़ी होय ॥ २९ ॥ अथवा भांग को महीन पीस इसकी पोटली कर स्त्री योनि में रक्खै तो योनि महा संकीर्ण होय ॥ ३० ॥ अथवा मोच रस को महीन पीस इसकी पोटली कर स्त्री योनि में रक्खे तो स्त्री की योनि संकोच को प्राप्त होय ॥ ३१ ॥ अथवा आंवले कीजड़ कसेला। बंबूल की जड़। बेर की जड़। अडूसेकी जड़। माजूफल इन सब को औटाय इस पानी से योनि को धोवै तो योनि संकोच होय ॥ ३२ ॥ अथवा दही से योनि को धोवै तो योनि संकोच होय ३३ ॥ अथवा सुपेद फिटकड़ी को फुलाय माजू फल मिलाय महीन पीस पोटली कर योनिमें धरै तो योनि संकोच होय ३४ ॥

अथ योनिके सब रोगों के दूर होने का फल घृत ॥

मंजीठ । मुलहठी । कूट । त्रिफला । मिश्री । खरैटी । मेद । असगन्ध । अजमोद । दोनों हल्दी । फूल प्रियंगु । कुटकी । कमल की जड़ । दाख । रक्तचन्दन । ये सब धेले २ भर ले और गौका घृत ऽ। भर ले सतावरि का रस ऽ१ सेर ले पीछे इसे मधुरी आंच से पकावे ये सब जलिजांय घृत मात्र आय रहे तब इस घृत को पुरुष अथवा स्त्री नित्य १ ट० भर पीवे तो पुरुष जो नपुंसक भी होय तो महाकामी बड़ा पराक्रमी पुत्रों को उपजाने वाला इस फल घृत के प्रभाव से होय और स्त्री जो इस घृत को खाय तो योनिके सब रोग जांय और उसके घृतके प्रभाव से पुत्र होंय दीर्घायुर्बलवान बुद्धिमान होय ॥ ३५ ॥

अथ योनिकन्द का यत्न ॥

गेरू । वायबिडंग । हल्दी । कायफल । इन सबको महीन पीस त्रिफले के काढ़े में सहत मिलाय इस चूर्ण को स्त्री योनि में रक्खे तो स्त्री का योनिकन्द रोग जाय ॥ ३६ ॥

अथ गर्भिणी स्त्री के रोगों का यत्न ॥

जिस स्त्री का गर्भ गिरता होय उसे झाऊ की जड़ । अतीस । नागरमोथा । मोचरस । इन्द्रजव । इनका काढ़ा कर दे तो उस स्त्री का गर्भ गिरना बन्द होय ॥ ३७ ॥

अथ गर्भिणी स्त्री के ज्वर का यत्न ॥

मुलहठी । रक्तचन्दन । खस । गौरीसर । कमलकी जड़ इनका काढ़ा कर मिश्री सहत डाल पीवै तो गर्भिणी स्त्री का ज्वर जाय ॥ ३८ ॥

अथ गर्भिणी स्त्रीकी संग्रहणी का यत्न ॥

चांवलों के सत्तू को आम और जामन के बक्कल के काढ़े से ले तो गर्भिणी स्त्री की संग्रहणी जाय ॥ ३९ ॥ अथवा झाऊ वृक्ष का बक्कल । अरलू का बक्कल । रक्तचन्दन । खरैटी धनियां । कुड़ा की छाल । नागरमोथा । जवासा । पित्त-

पापड़ा। अतीस। इनका काढ़ा कर गर्भिणी स्त्री ले तो अतीसार और संग्रहणी ज्वर को दूर करे है ॥ ४० ॥

अथ स्त्रीके गर्भके गिरने की और गर्भस्राव की उत्पत्ति लक्षण ॥

बहुत मैथुन के करने से मार्ग के चलने से ज्वर के आने से उपवास के करने से चोट के लगने से अजीर्ण में भोजन करने से दौड़ने से वमन के करने से जुलाब के लेने से तीखी कड़वी गरम रूखी वस्तु के खाने से विषम आसन के बैठने से भय के होने से पेट में शूल के चलने से इतनी वस्तुओं से स्त्री के गर्भका गिरना और गर्भ का स्राव होय है ॥ ४१ ॥

अथ गर्भ के गिरने का और गर्भ स्राव कापूर्व्व रूप लिखते हैं ॥

स्त्री के गर्भ रहे पीछे चार महीने में जो गर्भ गिरे तो उसे गर्भ स्राव कहिये और चार महीने के उपरांत पांच छः महीने में गर्भ गिरे उसे गर्भ पात कहिये ॥ इस जगह दृष्टांन्त है जैसे वृक्ष के लगाफल किसी की चोट लगने से गिर पड़े तैसेही कच्चा गर्भ किसी तरह की चोट लगने से गिर पड़े ॥ ४२ ॥

अथ गर्भ स्रवता होय उसके थम्हने का यत्न ॥

कमल की जड़। कमल की नाल। कमल के फूल। मुलहठी इन्हें दूध के साथ औटाय पीवे तो गर्भ स्राव बन्द होय और यही गर्भिणी स्त्री के दाह। मूर्छा। छर्दि। अरुचि. इनको। दूर करे ॥ ४३ ॥

अथ गर्भ पात का उपद्रव ॥

स्त्री के गर्भ गिरे तब दाह होय। शूल होय। पसली और पीठ में पीड़ा होय। रजो धर्म बहुत होय और मूत्र उतरे नहीं ॥ ४४ ॥ और गर्भ स्थान में जाय उसके भी यही उपद्रव होंय ॥ ४५ ॥

अथ गर्भ पड़ता होय उसके थम्हने का यत्न ॥

डाभकी जड़। कासकी जड़। अरण्डकीजड़। गोखुरू की जड़। इसमें गौका दूध औटाय गर्भिणी स्त्री पीवे तो उसके

हृदय आदि का शूल जाय ॥ ४६ ॥ अथवा गोखुरू । मुलहठी । कटेली । मदन बाण के फूल । इन्हैं गौके घृत में औटाय स्त्री पीवै तो गर्भ पड़ना बन्द होय और स्त्री के शरीर की सब प्रकार की वेदना जाय ॥ ४७ ॥ अथवा कुम्हार के चाक की मट्टी । गेरू । चमेली । मंजीठ । धवई के फूल । रसौत । राल इनका चूर्ण कर ५ टंक सहत से स्त्री ले तो स्त्रीके प्रदर आदि सब रोग जांय ॥ ४८ ॥ अथवा भृंगीजानवर के घरकी मट्टी । मंजीठ । लज्जालू । कसेरू । कमल की जड़ इन्हें गौके दूध में औटाय स्त्री पीवे तो गर्भ गिरना बन्द होय ॥ ४९ ॥

अथ गर्भिणी स्त्री के अफरा होय उसका यत्न ॥

बच । रसौत । हींग । कालानोन । इनसें दूध औटावे पीछे पीवे तो स्त्री का अफरा जाय ॥ ५० ॥

अथ गर्भिणी स्त्री के मूत्र उतरै नहीं उसका यत्न ॥

डाभकी जड़ । दूबकीजड़ । कास की जड़ इन्हें दूध में औटाय स्त्री पीवे तो मूत्र उतरे ॥ ५१ ॥

अथ महीने के महीने ये औषधि दे तो स्त्री का गर्भ गिरे नहीं सो लिखते हैं ॥

मुलहठी । शालवृक्ष के बीज । क्षीरकाकोली । देवदारु । लूणाख्य अर्थात् लोनियासाग । कालातिल । राल । पीपल । सतावरि । कमल की जड़ । जवासा । गौरीसार । रास्ना । दोनोंकटेली । सिंघाड़ा । कसेरू । दाख । मिश्री इन्हैं औटाय महीने के महीने ७ दिन पीवे तो स्त्री का गर्भ गिरे नहीं और कोई उपद्रव होय नहीं ॥ ५२ ॥ ये सब यत्न सात महीने तक कीजे ॥

अथ आठवें महीने का यत्न ॥

कैथाकीजड़ । कटेलीकीजड़ । बेल कीजड़ । पटोल कीजड़ सांटीकीजड़ इन्हें दूधमें औटाय पीवेतो गर्भ पुष्ट रहै ५३ ॥

अथ नवें मास का यत्न ॥

मुलहठी । जवासा । क्षीर काकोली । गौरीसर । इन्हें धेले २ भर ले फिर उसै दूध में औटाय पीवै तो गर्भ पुष्ट रहै ॥ ५४ ॥

अथ दसवें महीने का यत्न ॥

सोंठ । क्षीरकाकोली । इन्हें दूध में औटाय पीवै अथवा सोंठ मुलहठी । देवदारु । क्षीर काकोली । कमलगट्टे । मंजीठ इन्हें जल में औटाय जल समेत दूध में औटावै पीछे पानी जल जाय दूध मात्र रह जाय तब इस दूध को पीवै तो स्त्री के गर्भ पुष्ट होय नीरोग रहै और उसके किसी तरह का उपद्रव उठे नहीं ॥ ५५ ॥

अथ वायु करके गर्भ सूख जाय उसका यत्न ॥

जिस स्त्री का गर्भ वायु करकै सूख जाय तिस स्त्री का उदर परिपूर्ण होय नहीं खाली रहै तब वह स्त्री पुष्टाई के लिये दूध मांस रस और पुष्ट बस्तु खाय और दूध पीवै तब वायु दूर होय गर्भ परि पूर्ण होय ॥ ५६ ॥

अथ गर्भ के बालक के होने का महीना लिखते हैं ॥

स्त्री नवें महीने अथवा दसवें महीने सन्तान को उपजावै है और कोई स्त्री ग्यारहवें अथवा बारहवें महीने सन्तान को उपजावै है और इन महीने उपरान्त जो गर्भ रहै वह गर्भ बिकार का जानिये और इस गर्भ को उदर के रोगों में गिन उसका यत्न कीजे ॥ ५७ ॥

अथ स्त्री के सुख पूर्वक प्रसव होने का यत्न ॥

सांप की कांचली । मरुवे अर्थात नागबोय इन दोनों की योनि में धूनी दे तो स्त्री सुख से सन्तान जन्मै ॥ ५८ ॥ अथवा कलिहारी की जड़ को स्त्री हाथ पैरों में बांधे तो स्त्री के तत्काल प्रसूति होय ॥ ५९ ॥ अथवा कूकरभांगरे की जड़ और पाढ़ल की जड़ को स्त्री हाथ पैरों में बांधे तो स्त्री के तत्काल प्रसूति होय ॥ ६० ॥ अथवा पोई की जड़ के काढ़े

में तिलों का तेल डाल स्त्री गर्भ के लेप करै तो सुख से तत्काल प्रसूति होव ६१ ॥ अथवा पीपल । बच इन्हें जल से महीन पीस योनि के लेप करै तो सुख से तत्काल प्रसूति होय ॥ ६२ ॥ अथवा अरण्ड के तेल को स्त्री की नाभि के लेप करै तो तत्काल प्रसूति होय ॥ ६३ ॥ अथवा बिजौरे की जड़। महुआ इन दोनों को घृत से पीस स्त्री पीवै तो तत्काल प्रसूति होय ॥ ६४ ॥ अथवा सांटी के जड़ को स्त्री की कटि में बांधे तो तत्काल प्रसूति होय ॥ ६५ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥ अथवा अपामार्ग की जड़ को । काकलहरी की जड़ को कटि में बांधे तो तत्काल प्रसूति होय ६६ ॥ यह योग चिन्ता मणि में लिखे हैं ॥

अथ सुख से तत्काल प्रसव करने का मंत्र यंत्र लिखते हैं ॥

मुक्ताःपाशाविमुक्तास्य मुक्ताःसूर्येणरश्मयः । मुक्ताः सर्वंभयादगर्भएहिमाचिर माचिर स्वाहा ॥ इस मंत्र से जल को ७ बार मंत्र करि स्त्री को पिलावे तो तत्काल प्रसूति होय ॥ ६७ ॥ अथवा इस यंत्र को स्त्री देखै तो तत्काल प्रसूति होय ॥ ६८ ॥

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ मूढ़ गर्भ की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

जिस स्त्री के शरीर में वायु कुपित होय तो उस स्त्रीकी योनि में और उदर कोख में शूल को करै और मूत्र उतरने दे नहीं और वह दुष्ट पवन गर्भ को योनि में चार प्रकार करके टेढ़ा कर दे सो लिखते हैं ॥

अथ गर्भ में दुष्ट पवन करके बालक चार प्रकार कर अथवा आठ प्रकार कर रहे हैं सो प्रकार लिखते हैं ॥

कीलक १ प्रतिखुर २ परिघ ३ बीज ४ ऊर्द्धबाहु चरण शिर पसलियों के भेद से आठ प्रकार से बालक गर्भ में रहे है १ ॥

अथ कीलक का लक्षण ॥

स्त्रीकी योनि के मुखमें कीलासा लगि जाय उसै कीलक कहिये १ ॥ औरस्त्री की योनि के मूढ़े हाथ पैर आड़ा आय जाय उसै प्रति खुर कहिये ॥ २ ॥ स्त्री की योनि के मूढ़े में आगसी लगि जाय उसै परिघकहिये ॥ ३ ॥ स्त्री की योनि के मूढ़े में शिर आय अटके उसे बीजक मूढ़ गर्भ कहिये ॥ ४ ॥ स्त्री की योनि के मूढ़े में पेट आय अटके ५ स्त्री की योनि के मूढ़े में पसवाड़ा आय अटके ६ और स्त्री की योनि के मूढ़े का मुख नीचा होय ७ स्त्री की योनि के मूढ़े में पसवाड़ा पीठ आय अटके ८ ऐसे मूढ़ गर्भ आठ प्रकार से होय हैं ॥

अथ मूढ़ गर्भ का असाध्य लक्षण ॥

जिस गर्भवती स्त्रीका मस्तक ढूधारहै नहीं लटका जाय और जिस स्त्री की लाज जाती रहै और अंग शीतल होजाय और शरीरकी नसें नीली होजांय उस स्त्रीका बालक मरा जानिये और वह स्त्री मर जाय ॥

अथवा जिस स्त्रीके गर्भ में बालक मरा होय उस स्त्री का गर्भ फड़कै नहीं और उसका मुंह काला पीला नसों को लिये होय और उसकी नाक और मुंह के स्वास में मरे कीसी दुर्गन्ध आवे और पेट में शूल चले ये लक्षण होंय उसे जानिये इसके उदर में मरा बालक है ॥ २ ॥

अथ जिस के पेट में बालक मरा होय उसका कारण ॥

जिस स्त्री का कोई भाई माता पिता पुत्र स्वामी आदि कोई प्यारा मरा होय अथवा उसका द्रव्यादिक किसी तरह से जाता रहै अथवा उसके उदर में किसी तरह की चोट लगि जाय तब उस स्त्रीको दुःख उपजे तब उस दुःखके प्रभावसे उसका गर्भ बहुत दुखी होय और उसकी कूख में अनेक रोग पैदा होंय तब उसके पेटका बालक पेट में मर जाय ॥ ३ ॥

अथ गर्भिणी स्त्री का असाध्य लक्षण ॥

जिस स्त्रीकी योनि का मुंह मरे बालक से ढकि जाय और कूख में शूल चले उस गर्भ की मकल्लक संज्ञा है और पीछे कहे उपद्रव सो भी होंय ॥ ४ ॥

अथ मूढ़ गर्भ का यत्न ॥

जिस स्त्रीके गर्भ समय भगके निकट बालक बुरी तरह आय गया होय उसकेवास्ते निपट चतुर जिसने बहुत बालक अच्छी तरह जनाया होय ऐसी दाई को बुलाइये सो हाथ में घृत लगाय वह हाथ चतुराई से भग में डाल बालक को सूधा कर जीवता ही तत्काल भग में से बाहर काढ़े ॥ ५ ॥

अथ गर्भ में बालक मर गया होय उसका यत्न ॥

निपट चतुर दाई होय सो चतुराई से भग में पैना छोटा नस्तर डाल उस मरे बालक का अंग २ काटि चतुरई से भग के बाहर सब अंग काढ़ै सो उस मरे बालक को इस तरह भगमें से काढ़ै नहीं तौ वह गर्भवती स्त्री उसके साथ मरिजाय और मरे बालक को गर्भ में से काढ़ने पीछे भग को चतुराई से गरम पानी से धोवे और उसी समय सुहावते गरम घृत से अथवा तेल से चुपड़ै तो भग कोमल रहै और उसमें शूलादिक कोई उपद्रव होय नहीं पीछे कड़वी तूंबी के पत्ते और पठानी लोध ये बराबर ले महीन पीस इसका भग में लेप करे तो भग ज्यों की त्यों अपने ठिकाने बैठि जाय अथवा पलासपापड़। पक्के गूलर का फल। इन्हें बराबर ले पीछे इन्हैं तिलों के तेल में महीन पीस भग के लेप करै तो भग गाढी हो जाय और इसी तरह २१ दिन करे तौ भगमें कोई रोग होय नहीं ॥ ६ ॥

अथ इसका और यत्न लिखते हैं ॥

सर्पकी कांचली। कूट। सरसों। इन तीनों को महीन पीस कडुवे तेलसे भगके धूनी दे तो भग के रोग जांय ७ ॥ अथवा कलिहारी की जड़ को औटाय उस पानी से हाथ

पैरों में लेप करै तो भग में से मरे बालक का दोष दूर होय ॥ ८ ॥

अथ मकल्लक रोग की उत्पति लक्षण ॥

जिस स्त्री के संतान हुई होय और वह स्त्री रूखी और वायल वस्तु खाय उस स्त्रीको तीक्ष्ण द्रव्य पीपला मूल आदि मिलै नहीं और वह खाय नहीं उसके वायु है सो नाभि के नीचे अथवा दोनों पसलियों में अथवा पेड़ू में रुधिर को रोक वायु की गांठि करै है अथवा वह वायु है सो नाभि और पेड़ू में उदर और पक्वाशय में शूल को प्रगट करै है अथवा वह वायु है सो पेड़ू में अफरा को करै है और मूत को उतरने दे नहीं इसे वैद्य मकल्लक रोग कहैं हैं १ ॥

अथ मकल्लक रोग का यत्न ।

जवाखार को गरम पानी में पीस जो स्त्री लेतो मकल्लक रोग जाय ॥ २ ॥ अथवा पीपल । पीपलामूल । मिरच । सोंठि । चित्रक । चव्य । सम्हालू । इलायची । अजमोद । सरसों । सेंकीहींग । पाढ़ । इन्द्रजव । जीरा । बकायन । मूर्वा । अतीस । कुटकी । वायविड़ंग । यह पिप्पल्यादि गण हैं इन्हें बराबर ले महीन पीस २॥ टं० । गरम पानी से ले अथवा इनका काढ़ा कर इसमें थोड़ा सेंधा नोन डालि ले तो स्त्री के कफ या वायु के सब रोग जांय और स्त्री के गोले शूल उदर के रोग ज्वर को दूर करै और भूख लगावै और आंवको दूर करै और यह मकल्लक रोग को निश्चयही दूर करै ॥ ३ ॥ अथवा सोंठि । मिरच । पीपल । तज । पत्रज । नाग केसर । इलायची । धनियां इन सब को महीन पीस २॥ टंक पुराने गुड़ से ले तो मकल्लक रोग जाय ॥ ४ ॥ और जिस स्त्री के प्रसूति हुई होय उस स्त्रीको युक्ति से अहार विहार करावै और वह इतनी वस्तु करै नहीं खेद मैथुन क्रोध ठंढे में रहना ये वस्तु करै नहीं मिथ्या आचरण करै तो उसके सूतिका रोग होय ॥

अथ गर्भिणी स्त्री का असाध्य लक्षण ॥

जिस स्त्रीकी योनि का मुंह मरे बालक से ढकि जाय और कूख में शूल चले उस गर्भ की मकल्लक संज्ञा है और पीछे कहे उपद्रव सो भी होंय ॥ ४ ॥

अथ मूढ़ गर्भ का यत्न ॥

जिस स्त्रीके गर्भ समय भगके निकट बालक बुरी तरह आय गया होय उसकेवास्ते निपट चतुर जिसने बहुत बालक अच्छी तरह जनाया होय ऐसी दाई को बुलाइये सो हाथ में घृत लगाय वह हाथ चतुराई से भग में डाल बालक को सूधा कर जीवता ही तत्काल भग में से बाहर काढ़े ॥ ५ ॥

अथ गर्भ में बालक मर गया होय उसका यत्न ॥

निपट चतुर दाई होय सो चतुराई से भग में पैना छोटा नस्तर डाल उस मरे बालक का अंग २ काटि चतुरई से भग के बाहर सब अंग काढ़ै सो उस मरे बालक को इस तरह भगमें से काढ़ै नहीं तौ वह गर्भवती स्त्री उसके साथ मरिजाय और मरे बालक को गर्भ में से काढ़ने पीछे भग को चतुराई से गरम पानी से धोवे और उसी समय सुहावते गरम घृत से अथवा तेल से चुपड़ै तो भग कोमल रहै और उसमें शूलादिक कोई उपद्रव होय नहीं पीछे कड़वी तूंबी के पत्ते और पठानी लोध ये बराबर ले महीन पीस इसका भग में लेप करे तो भग ज्यों की त्यों अपने ठिकाने बैठि जाय अथवा पलासपापड़। पक्के गूलर का फल। इन्हें बराबर ले पीछे इन्हें तिलों के तेल में महीन पीस भग के लेप करे तो भग गाढ़ी हो जाय और इसी तरह २१ दिन करे तौ भगमें कोई रोग होय नहीं ॥ ६ ॥

अथ इसका और यत्न लिखते हैं ॥

सर्पकी कांचली। कूट। सरसों। इन तीनों का महीन पीस कडुवे तेलसे भगके धूनी दे तो भग के रोग जांय ७ ॥ अथवा कलिहारी की जड़ को औटाय उस पानी से हाथ

पैरों में लेप करै तो भग में से मरे बालक का दोष दूर होय ॥ ८ ॥

अथ मक्कल्लक रोग की उत्पत्ति लक्षण ॥

जिस स्त्री के संतान हुई होय और वह स्त्री रूखी और बायल वस्तु खाय उस स्त्रीको तीक्ष्ण द्रव्य पीपला मूल आदि मिलै नहीं और वह खाय नहीं उसके वायु है सो नाभि के नीचे अथवा दोनों पसलियों में अथवा पेड़ू में रुधिर को रोक वायु की गांठि करै है अथवा वह वायु है सो नाभि और पेड़ू में उदर और पक्वाशय में शूल को प्रगट करै है अथवा वह वायु है सो पेड़ू में अफरा को करै है और मूत को उतरने दे नहीं इसे वैद्य मक्कल्लक रोग कहैं हैं १ ॥

अथ मक्कल्लक रोग का यत्न ॥

जवाखार को गरम पानी में पीस जो स्त्री लेतो मक्कल्लक रोग जाय ॥ २ ॥ अथवा पीपल । पीपलामूल । मिरच । सोंठि । चित्रक । चव्य । सम्हालू । इलायची । अजमोद । सरसों । सेंकीहींग । पाढ़ । इन्द्रजव । जीरा । बकायन । मूर्वा । अतीस । कुटकी । वायबिड़ंग । यह पिप्पल्यादि गण हैं इन्हें बराबर ले महीन पीस २॥ टं० । गरम पानी से ले अथवा इनका काढ़ा कर इसमें थोड़ा सेंधा नोन डालि ले तो स्त्री के कफ या वायु के सब रोग जांय और स्त्री के गोले शूल उदर के रोग ज्वर को दूर करै और भूख लगावै और आंवको दूर करै और यह मक्कल्लक रोग को निश्चयही दूर करै ॥ ३ ॥ अथवा सोंठि । मिरच । पीपल । तज । पत्रज । नाग केसर । इलायची । धनियां इन सब को महीन पीस २॥ टंक पुराने गुड़ से ले तो मक्कल्लक रोग जाय ॥ ४ ॥ और जिस स्त्री के प्रसूति हुई होय उस स्त्रीको युक्ति से अहार विहारकरावै और वह इतनी वस्तु करै नहीं खेद मैथुन क्रोध ठंढे में रहना ये वस्तु करै नहीं मिथ्या आचरण करै तो उसके सूतिका रोग होय ॥

अथ गर्भिणी स्त्री का असाध्य लक्षण ॥

जिस स्त्रीकी योनि का मुंह मरे बालक से ढकि जाय और कूख में शूल चले उस गर्भ की मकल्लक संज्ञा है और पीछे कहे उपद्रव सो भी होंय ॥ ४ ॥

अथ मूढ़ गर्भ का यत्न ॥

जिस स्त्रीके गर्भ समय भगके निकट बालक बुरी तरह आय गया होय उसकेवास्ते निपट चतुर जिसने बहुत बालक अच्छी तरह जनाया होय ऐसी दाई को बुलाइये सो हाथ में घृत लगाय वह हाथ चतुराई से भग में डाल बालक को सूधा कर जीवता ही तत्काल भग में से बाहर काढ़े ॥ ५ ॥

अथ गर्भ में बालक मर गया होय उसका यत्न ॥

निपट चतुर दाई होय सो चतुराई से भग में पैना छोटा नस्तुर डाल उस मरे बालक का अंग २ काटि चतुरई से भग के बाहर सब अंग काढ़ै सो उस मरे बालक को इस तरह भगमें से काढ़ै नहीं तौ वह गर्भवती स्त्री उसके साथ मरिजाय और मरे बालक को गर्भ में से काढ़ने पीछे भग को चतुराई से गरम पानी से धोवे और उसी समय सुहावते गरम घृत से अथवा तेल से चुपड़ै तो भग कोमल रहै और उसमें शूलादिक कोई उपद्रव होय नहीं पीछे कड़वी तूंबी के पत्ते और पठानी लोध ये बराबर ले महीन पीस इसका भग में लेप करे तो भग ज्यों की त्यों अपने ठिकाने बैठि जाय अथवा पलासपापड़ा। पक्के गूलर का फल। इन्हें बराबर ले पीछे इन्हें तिलों के तेल में महीन पीस भग के लेप करे तो भग गाढी हो जाय और इसी तरह २१ दिन करे तौ भगमें कोई रोग होय नहीं ॥ ६ ॥

अथ इसका और यत्न लिखते हैं ॥

सर्पकी कांचली। कूट। सरसों। इन तीनों का महीन पीस कडुवे तेलसे भगके धूनी दे तो भग के रोग जांय ७ ॥ अथवा कलिहारी की जड़ को औटाय उस पानी से हाथ

पैरों में लेप करै तो भग में से मरे बालक का दोष दूर होय ॥ ८ ॥

अथ मकल्लक रोग की उत्पत्ति लक्षण ॥

जिस स्त्री के संतान हुई होय और वह स्त्री रूखी और वायल वस्तु खाय उस स्त्रीको तीक्ष्ण द्रव्य पीपला मूल आदि मिलै नहीं और वह खाय नहीं उसके वायु है सो नाभि के नीचे अथवा दोनों पसलियों में अथवा पेडू में रुधिर को रोक वायु की गांठि करै है अथवा वह वायु है सो नाभि और पेडू में उदर और पक्वाशय में शूल को प्रगट करै है अथवा वह वायु है सो पेडू में अफरा को करै है और मूत्र को उतरने दे नहीं इसे वैद्य मकल्लक रोग कहैं हैं १ ॥

अथ मकल्लक रोग का यत्न ।

जवाखार को गरम पानी में पीस जो स्त्री लेतो मकल्लक रोग जाय ॥ २ ॥ अथवा पीपल । पीपलामूल । मिरच । सोंठि । चित्रक । चव्य । सम्हालू । इलायची । अजमोद । सरसों । सेंकीहींग । पाढ़ । इन्द्रजव । जीरा । बकायन । मूर्वा । अतीस । कुटकी । वायबिड़ंग । यह पिप्पल्यादि गण हैं इन्हें बराबर ले महीन पीस २॥ टं० । गरम पानी से ले अथवा इनका काढ़ा कर इसमें थोड़ा सेंधा नोन डालि ले तो स्त्री के कफ या वायु के सब रोग जांय और स्त्री के गोले शूल उदर के रोग ज्वर को दूर करै और भूख लगावै और आंवको दूर करै और यह मकल्लक रोग को निश्चयही दूर करै ॥ ३ ॥ अथवा सोंठि । मिरच । पीपल । तज । पत्रज । नाग केसर । इलायची । धनियां इन सब को महीन पीस २॥ टंक पुराने गुड़ से ले तो मकल्लक रोग जाय ॥ ४ ॥ और जिस स्त्री के प्रसूति हुई होय उस स्त्रीको युक्ति से अहार बिहार करावै और वह इतनी वस्तु करै नहीं खेद मैथुन क्रोध ठंढे में रहना ये वस्तु करै नहीं मिथ्या आचरण करै तो उसके सूतिका रोग होय ॥

अथ स्तन रोगों का यत्न ॥

स्त्री के स्तन के ऊपर बैद्य सूजन देखै तो बिद्रधि का यत्न जो पीछे लिखा है सो यत्न करै तो स्त्री के स्तन के रोग जांय १ ॥ और स्तन ऊपर गांठ कड़ी सी होय तो गांठ को दूर करने वाली शीतल औषधि लगावै तो स्तन के रोग जांय २ ॥ अथवा जोंक लगाय स्तन का रुधिर कढ़ावै तो स्तन के सब रोग जांय ॥ ३ ॥

अथ स्तन की पीड़ा का यत्न ॥

गरडुवा की जड़ को पानी में पीस उसका लेप करै तो स्तन की पीड़ा जाय ॥ ४ ॥ अथवा हल्दी । धतूरे की जड़ इन्हैं जल से महीन पीस लेप करै तो स्तन की पीड़ा दूर होय ॥ ५ ॥ अथवा बाछकंकोली की जड़ महीन पीस जल से लेप करै तो स्तन की पीड़ा जाय ॥ ६ ॥ अथवा लोह को गरम कर पानी में बुझाय वह पानी स्त्री पीवैतो स्तन रोग जाय ॥ ७ ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ॥

अथ रंड स्त्री के गर्भ निवारण और गर्भ पातन का यत्न ॥

ऋतु के समय चौथे दिन तालीस और गेरू २ टं० महीन पीस शीतल जल से पीवे तो स्त्री बंध्या होय ॥ १ ॥ ऋतु के समय चौथे दिन पलास पापड़े को सहत घृत से महीन पीस भगमें लेप करे तो वह स्त्री गर्भ को कभी धारण करे नहीं ॥ २ ॥ अथवा गाजर केबीज । कलौंजी इन्हें गुड़के साथ खाय तो स्त्री का गर्भ गिर पड़ै ३ ॥ अथवा चौलाई की जड़ को चांवलों के पानी के साथ स्त्री ऋतु के समय ५ दिन पीवै तो वह स्त्री बंध्या होय ॥ ४ ॥ अथवा ऋतु के समय नीब की जड़ को युक्ति से योनि में धूनी दे तो स्त्री बंध्या होय ५ ॥ अथवामेथी दाना ऽ॥ सेर गुड़ ऽ॥ सेर इन्हैं पानी से औटाय यह जल ५ दिनपीवे और गरडुवा की जड़ और राल इनको बराबर योनि में धरे तो रंडा स्त्री का गर्भ

पात होय ६ ॥ अथवा कड़वी तूंबी और सांप की कांचल सरसों इन्हें कडुवे तेल में पीस भग के धूनी दे तो स्त्री गर्भ का पातन होय ॥ ७ ॥ इति स्त्री के सर्व रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न सम्पूर्ण ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंहजी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रन्थे स्त्री के प्रदर को आदि ले सर्व रोगों के भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षणयत्न निरूपणं नाम विंशति मस्तरङ्ग २०

अथ बालकों के रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न ॥

प्रथम बालकों के नवग्रह जुदेही हैं इन ग्रहों से भिन्न हैं सो अपवित्र बालकोंको वे नवग्रह पीड़ा करे हैं इस कारण से उन नवग्रहों से बालक की रक्षा करनी चाहिये ॥

अथ बालक के नव ग्रहों का नाम ॥

स्कन्दग्रह १ स्कन्दापस्मार २ शकुनी ३ रेवती ४ पूतना ५ गन्धपूतना ६ शीतपूतना ७ मुखमंडिका ८ नैगमेय ९ ॥

अथ नव ग्रहों की उत्पत्ति ॥

ये नव ग्रह स्वामकार्त्तिक की रक्षा के अर्थ महादेव जी ने उत्पन्न किये हैं सो इन नव ग्रहों का स्वरूप महासुन्दर स्त्री का सा है और कोई एक का स्वरूप सुन्दर पुरुष का सा है अथवा स्वामकार्त्तिक जीका विशाख जिसका नाम सखा अग्नि समान जिसके शरीर की कांति इन सबको श्री महादेव जीने पैदा किया पीछे ये सब मिल स्वामकार्त्तिक जी के साथ रहने लगे फिर स्वामकार्त्तिक जी से उस सबों ने मिल विनय किया महाराज हम भूखे हैं खाने के वास्ते कोई आजीविका बतलाइये तब स्वामकार्त्तिक जीने महादेवजी से कहा तब श्रीमहादेवजीने आज्ञा दी जो जगत के विषय पशु पक्षी को आदि ले तिर्य्यंग योनि और मनुष्य

रहैं हैं और देवता भी रहैं हैं वे देवता मनुष्यों को पीड़ित करै हैं और काल पाकर देवता पशु पक्षी को भी पीड़ित करै हैं उष्ण काल में गरमी करके और वर्षाकाल में शीत पवन करके और शीतकाल में शीत करके और मनुष्य हैं वे नमस्कार जप होमादिक करके अच्छे प्रकार देवताओं को प्रसन्न कर भोजन का भोग दे हैं और इस तरह जो मनुष्य नहीं करैं हैं तिनके बालक को पीड़ा करो और उन्हे खाओ ॥ १ ॥

अथ बालग्रह ९ हैं सो बालकों को लेने का कारण ॥

जिन मनुष्यों के कुलमें देवता पितर ईश्वर ब्राह्मण अतिथि गुरु अतिथि की पूजादिक नहीं करैं और उन्हैं भोजनादिक कुछ नहीं दें और कांसी के फूटे पात्र में जो खांय हैं उनके बालकों को तुम खाओ यह महादेव जी ने उन ग्रहों से कही तब उनकी आजीविका हुई १ ॥

अथ बालग्रह जिन बालकों को लगैं तिनका लक्षण ॥

जिन बालकों को यह बाल ग्रह लगें सो बालक क्षण एक में तोउद्वेग को प्राप्त होंय और क्षणएक में डरने लगि जांय और क्षणएक में अपनी धाय को नखों से और दांतों से काटने लगि जांय और ऊंचा आकाश की ओर देखा करैं और अपने दांतों को चाबा करैं और कराहा करैं जंभाई लिया करैं और भौंह चढ़ाया करैं ओठ काटा करैं और मुख में झाग आवैं और वमन करैं अतीसार युक्त भी होंय और उनका शरीर क्षीण पड़िजाय और रात्रि में जागैं और शरीर में सूजन आय जाय और कंठ का स्वर घों घों होय और उसके शरीर में मछली की सी दुर्गंध होय और जिसका शरीर दुर्बल होय और गुदा में रुधिरजाय और शरीर की संज्ञा जाती रहै ये लक्षण जिन बालकों में होंय उनके बाल ग्रह लगा जानिये कि ये बालग्रहों के सामान्य लक्षण हैं ॥

अथ बालग्रह जिसके होय उसका विशेष लक्षण ॥

जिसके अंग शिथिल होजांय और शरीर में रुधिर की दुर्गंधि आवै और स्तनों का दूध पीवै नहीं और मुंह टेढ़ा होजाय और आधा अंग रहजाय और नेत्रों में आंसू रहैं रोवै ठोड़ी हाथ की मूठी बंधी रहै ये लक्षण जिसके होंय तब जानिये कि इसै स्कन्दग्रह लगा है ॥ १ ॥

अथ विशाख ग्रह जिसे लगा होय उसका लक्षण ॥

जिसकी संज्ञा जाती रहै और फिर संज्ञा आय जाय और कभी हाथ पगों को नचाने लगि जाय और बिन संज्ञा मल मूत्र करदे और जंभाई बहुत आवै मुखमें झाग आवैं तब जानिये कि इसै विशाख ग्रह लगा है ॥

अथ शकुनी ग्रह जिसे लगा होय उस का लक्षण ॥

अंग शिथिल रहै भयसे चकितरहा करै और उसकेशरीर में मछली कीसी दुर्गंधि आवै और शरीर में व्रण बहुत पड़ि जांय और दाह होय ये लक्षण होंय तब जानिये कि इसकेशकुनी ग्रह लगा है ॥ ३ ॥

अथ रेवती ग्रह जिसे लगा होय उसका लक्षण ॥

जिसका मुंह लाल और हरा होय और पीली जिसकी देह होय और पीड़ा को लिये हाथ पैर काले होंय ऐसा बालकहोय तब जानिये इसके रेवतीग्रह का दोष है ॥ ४ ॥

अथ पूतना ग्रह जिसे लगा होय उसका लक्षण ॥

जिसका शरीर शिथिल होय रात दिन सोवै नहीं और उसका मल पतला पड़िजाय और उसके शरीर में कागल कीसी दुर्गंधि आवै और छर्दि होय तृषा बहुत लगे ये लक्षण होंय तब जानिये कि इसके पूतना ग्रह लगा है ॥५॥

अथ जिसके गन्ध पूतना ग्रह लगा होय उसका लक्षण ॥

वह बालक स्तनका दूधपीवै नहीं अतीसार होय खांसी हिचकी छर्दि ज्वर होय और शरीर का वर्ण जाता रहै

और शरीर में रुधिर कीसी दुर्गंधि आवै तब जानिये कि इसको गन्ध पूतना का दोष है ॥ ६ ॥

अथ शीत पूतना के दोष का लक्षण ॥

जो बालक रोवाही करै और कांपा करै और जिसकी आंत बोलै शरीर शिथिल होजाय और अतीसार बहुत होय ये लक्षण होंय तो शीतपूतना का दोष जानिये ॥ ७ ॥

अथ नैगमेय ग्रह के दोषका लक्षण ॥

जिसके मुख में बहुत झाग आवैं और कांपे बहुत और ऊंचाही देखै और पुकारे बहुत और शरीर में दुर्गन्धि आवै संज्ञा जाती रहै तब जानिये कि इसके नैगमेय ग्रह का दोष है ८ ॥ और येही लक्षण डाकिनी के दोष का जानिये ॥ ९ ॥

अथ सामान्य ग्रह के दोषों का यत्न ॥

गोरखमुंडी । खस इनका काढ़ाकर इस काढ़े से बालक को स्नान करावै अथवा हल्दी । चन्दन । कूट । इन्हें पीस शरीर में लेप करै तो बालक के सामान्य ग्रह के दोष दूर होंय १ ॥ अथवा सांपकी कांचली । लहसन । सरसों । नीबके पत्ते । बिलाईकीबीठ । बकरे का बाल । मेढ़े के सींग । बच । सहत । ये सब पीस इन की बालक के धूनी दे तो बालक के ग्रहों के सब दोष जांय ॥ २ ॥ अथवा उतारा आदि सब यत्न करै तो बालक के ग्रहों के दोष जांय ॥ ३ ॥

अथ स्कन्दग्रह को आदि ले बालक के ग्रहों के विशेष यत्न ॥

वायु के दूर करने वाले वृक्षों के पत्तों का काढ़ा कर उस बालक को स्नान करावै तो बालक के ग्रहों के दोष दूर होंय ॥ ४ ॥ अथवा सरसों । सांपकीकांचली । बच । कागलहरी इन्हें कूट इस में ऊंट के और बकरे के बाल मिलावै और घृत मिलाय इसकी बालक के धूनी दे तो बालक के ग्रहों के दोष दूर होंय ॥ ५ ॥

अथ स्कन्दा पस्मार के दोष का यत्न॥

बेलकीजड़ । सिरसकीजड़। सुपेददूब। सुपेदसरसों। पाढ़। सुपेदराई। बावची। कायफल। कलूंभी। बायबिडंग। सम्हालू। गूलर। खरेटी। चिरपोटख अर्थात् मकोय। बकायन। काली तुलसी। भारंगी इनका काढ़ा कर के पानी से बालक को स्नान करावै तो स्कंदापस्मार बालक के ग्रह दोष जांय ६॥ अथवा गौ। बकरी। भेड़। भैंस। घोड़ा। गधा। ऊंट। इन सबके मूतों में तेलको पकावै मूत्र जलिजांय तेल मात्र आय रहै तब इस तेल को बालक के मर्दन करै तो स्कंदा पस्मार बालक के ग्रह का दोष जाय ७॥ अथवा गोमूत्र। बकरी का मूत्र। मस्तक केश। हाथीकानख। बैलकेरोम। इनमें घृत मिलाय इसकी धूनी दे तो बालक के स्कन्दापस्मार का दोषजाय॥ ८॥ अथवा जवासा। मैनसिल। कस्तूरी। कौंचकी जड़। इनकी बालक के धूनी दे वा बालक के बांधै तो बालक का स्कन्दा पस्मार ग्रहों का दोष जाय १०॥ अथवा बालक को चौहटे में स्नान करावै तो स्कंदापस्मार बिशाख का दोष जाय॥ ११॥

अथ शकुनी ग्रह के दोष दूर होने का यत्न॥

बेतकी लकड़ी। आमकी जड़। कैथकी जड़। इन के काढ़े के पानी से बालक को स्नान करावै तो शकुनी ग्रह का दोष जाय॥ १॥ अथवा झाऊकीजड़। मऊआ। खस। गौरीसर। कमलकीजड़। पद्माख। लोध। फूल प्रियंगु। मंजीठ। गेरू। इन्हें जल से महीन पीस इस का उबटना करै तो शकुनी ग्रह का दोष जाय २॥ अथवा स्कन्दापस्मार ग्रह का यत्न जो पीछे कहा है वह शकुनी ग्रह के दोष को दूर करै है॥ ३॥ अथवा शतावरि वा इन्द्रायन कीजड़ वा नागदोन वा कटेली वा सहदेई इन का पूजन कर बालक के गले में बांधे तो शकुनी ग्रह के दोष दूर होंय॥ ४॥ अथवा तिल। चांवल। फूलों की माला। हरताल। मैनसिल। इनको

बिधि पूर्वक शकुनी ग्रह को बलि दे और बालक को औषधि के जल से स्नान करावे तो शकुनी ग्रह का दोष दूर होय ॥ ५ ॥

अथ रेवती ग्रह का यत्न ॥

असगंध । मेढ़ासींगी । गौरीसर । सांटीकी जड़ । सेवती के फूल । बिदारीकन्द । इनका काढ़ाकर इसके पानी से बालक को स्नान करावै तो बालक के रेवती ग्रह का दोष जाय ६ ॥ अथवा बालक की देह में तेल का मर्द्दन करै अथवा कूट । राल । गूगल । खस । हल्दी । इनकी बालक के धूनी दे तो रेवती ग्रह का दोष दूर होय ॥ ७ ॥ अथवा सुगंधित सुपेद फूल । चांवलकी खील । दूध । शालि । दही इन्हें बालक के ऊपर डाल स्नान करावै और इन्ही की गो शाला में बलि दे तो बालक के रेवती ग्रह का दोष दूर होय ॥ ८ ॥

अथ पूतना ग्रह का यत्न ॥

नींबकीछाल । बिष्णुक्रांता । बनकीछाल । इनका काढ़ा कर इस जलसे बालक को स्नान करावै तो पूतना ग्रहका दोष दूर होय ॥ ९ ॥ अथवा नवीन बिदारीकन्द । सुपेद दाख । हरताल । मैंनसिल । कूट । राल इनका काढ़ा कर इनके रस में तेल अथवा घृत पकावै पीछे इस तेल अथवा घृत का बालक के मर्द्दन करै तो पूतना का दोष दूर होय॥ १० ॥

अथ गंधपूतना ग्रह का यत्न ।

नींबकेपत्ते । पटोलकेपत्ते । कटेलीकेपत्ते । गिलोय के पत्ते । अडूसे के पत्ते । इनका काढ़ा कर इस पानी से बालक को स्नान करावै तो गंधपूतना का दोष जाय ॥ ११ ॥ अथवा पीपल । पीपलामूल । दोनों कटेली इनका काढ़ा कर इसमें गौ का घृत पकावै फिर इस घृत का मर्द्दन करै तो बालक के गंधपूतना का दोष दूर होय ॥ १२ ॥ अथवा केसर

अगर। कपूर। कस्तूरी। चंदन। इन्हें महीन पीस बालक की आंखों के ऊपर लेपकरै तो गंधपूतना का दोष दूर होय ॥ १३ ॥ अथवा कूकर की बीठ। बालक के केश। बनकीछाल। घृत इन्हें बालक के ऊपर उतारि चौहटे में रक्खै तो गंधपूतना का दोष दूर होय ॥ १४ ॥

अथ शीत पूतनाग्रहका यत्न ॥

गोमूत्र। बकरी का मूत्र। नागरमोथा। देवदारु। चंदन को आदिले सब सुगन्धि ले इनमें तेल पकावै फिर इस तेल का बालक के मर्द्दन करै तो शीतपूतना के ग्रह का दोष दूर होय ॥ १५ ॥ अथवा कुटकी। नींबकीछाल। खैरसार। ढाककीछाल। काहूकीछाल। इनके काढ़े में घृत पकावै फिर इस घृत को बालक को खवावै अथवा लेप करै तो शीतपूतना का दोष दूर होय ॥ १६ ॥ अथवा नींब के पत्तों की बालक के धूनी दे अथवा बालक के गुंजा की माला पहिरावै तो शीत पूतना का दोष दूर होय ॥ १७ ॥ अथवा नदी के तटके ऊपर मूंग चांवल शीतपूतना को समर्पण करै तो शीतपूतना का दोष दूर होय ॥ १८ ॥

अथ मुखमंडिका ग्रह का यत्न ॥

कैथ। बेल। अरणी। अडूसा। सुपेदअरंड। कूट। इनके काढ़े के जलसे बालक को स्नान करावै तो मुख मण्डिका का दोष जाय ॥ १९ ॥ अथवा भांगरे के तेल या रसमें तेल पकावे फिर इस तेलका बालक के मर्द्दन करे तो मुख मण्डिका का दोष जाय ॥ २० ॥ अथवा राल। कूट। इनका काढ़ा कर इसके रसमें घृत पकाय बालक के मर्द्दन करे तो मुख मण्डिका का दोष दूर होय ॥ २१ ॥ अथवा गौ के स्थान में बलि करे और वहां इस मंत्र से स्नान करावे तो मुख मण्डिका का दोष दूर होय ॥ २२ ॥

अथ स्नान कराने का मंत्र ॥

अलंकृता कामवती शुभगा काम रूपिणी ॥ गोष्ट मध्या लयरता पातुत्वां मुखमंडिका ॥ २३ ॥

अथ नैगमेय ग्रह का यत्न॥

बेलकी जड़का बक्कल। अरणीकीजड़। कणगचकी जड़। इनके काढ़े के पानी से बालक को स्नान करावे तो नैगमेय ग्रहका दोष जाय॥ २४ अथवा फूलप्रियंगु। जवासा। सोंफ। चिलक वृक्षका बक्कल। गुड़हल। इनका काढ़ा कर इस काढ़े के रसमें तेल पकावे फिर इस तेल के पकतेही में गोमूत्र दही और कांजी डाले पीछे और इस तेल को पकावै ये सब जलिजांय तेल मात्र आय रहै तब इसका बालक के मर्द्दन करे तो नैगमेय ग्रह का दोष जाय २५ अथवा तिल। चांवल। फूलों की माला। लड्डू। इनके आदि ले मिठाई इन्हें बालक के ऊपर ७ बार उतार वृक्ष के पास धरे तो नैगमेय ग्रह का दोष दूर होय॥ २६॥

अथ उतारे का मंत्र॥

अजाननश्चलाक्षीतु कामरूपी महायश। बालं पालयतो देव नैगमेयो सिरक्षतु॥ २७॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखेहैं॥ अथवा रावणका बनाया बालतंत्र नाम ग्रंथ है उसके मंत्र से बालकों के डाकिनी आदिके अच्छे होने का लक्षण लिखते हैं॥ बालक के जन्म हुएके पीछे पहिले दिन प्रथम मास प्रथम वर्ष में मन्दा नाम मातृका को आदि ले रावण की बारह बहिन हैं सो बालक को पीड़ित करै हैं उनके ये लक्षण हैं बालक के ज्वर होय रोवे बहुत अथवा बोले नहीं उसके अच्छे होने के वास्ते बलि कहते हैं नदी के दोनों तटों की मट्टी ले उसका कोरी सैनक में पुतला करे और उसके पास चांवल और सात सुपेद फूल ध्वजा सात दिये सात गुल गुले सात पान गन्ध धूप मांस दारूये सब बालक के ऊपर वारि पूर्व दिशा की ओर चौहट में मध्यान के समय बलि दे और पीपल के पत्ते मस्तक पर धर बालक को स्नान करावे तो मन्दा नाम मातृका का दोष दूर होय॥ १॥ इसी प्रकार चार दिन करे और बालक

के सरसों। मेढ़े के सींग। नींबके पत्ते शिवनिर्माल्य इनकी धूनी दे तो बालक अच्छा होय ॥ २ ॥

अथ उतारे का मंत्र।

ओं नमो भगवते रावणाय हन हन मुंच मुंच स्वाहा ॥ ३ ॥

अथ बालक के जन्म से दूसरे दिन दूसरे महीने दूसरे वर्ष शुभदा नाम मातृका रावणकी बहिन बालकों के दोष करे है उसका लक्षण ॥

प्रथम ज्वर होय नेत्र मिचें नहीं शरीर कांपा करे बोले नहीं उसके अच्छे होने के वास्ते बलिनाम उतारा लिखते हैं ॥ जिससे बालक को सुख होय ॥ सवासेर। चांवल। दही। मछली का मांस। मदिरा। तिलका चूर्ण ये सब सरवे में धर पश्चिम दिशा की ओर चौहटे में तीन दिन संध्या समय बालक के ऊपर उतारा करै पीछे शालिके जलसे बालक को स्नान करावै फिर शिव निर्माल्य। खस। बिलाई का रोम घृत। दूब। इसकी बालक के धूनी दे ॥

अथ उतारे का मंत्र।

ओं रावणाय हन २ मुंच २ हुं फट् स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मण भोजन यथा शक्ति करावे तो शुभदा नाम मातृका दोष जाय ॥ ३१ ॥

अथ तीसरे दिन तीसरे मास तीसरे वर्ष पूतना नाम रावण की बहिन बालक के दोष करै है उसका लक्षण ॥

प्रथम बालक के ज्वरकरै। शरीर कांपै। बोले नहीं पुकारा करै। आकाश की ओर देखा करै। उस बालक के सुख के वास्ते उतारा लिखते हैं ॥ नदी के वार पार की मट्टी ले उसका पुतला बनावे पुतले को सरवे में धरै उसके मध्य तांबूल। रक्त चन्दन। रक्तपुष्प। सातदिये। सात बड़ी मांस। सुरा। भात धर दक्षिण दिशा में तीसरे प्रहर चौहटे में बलि दे पीछे शिव निर्माल्य। गूगल। सरसों नींबके पत्ते। मेढ़े के सींग। इनको धूनी ३ दिन दे

अथ उतारे का मंत्र ॥

ॐ नमो रावणाय नमः हन२ मुंच २ नाशय २ स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मणभोजन करावै तो बालक आरामहोय ३२॥

अथ चौथे दिन चौथे मास चौथे बर्ष मुख मंडिका नाम रावण की बहिन के दोष करने का लक्षण ॥

प्रथम ज्वर होय। कन्धा नवै नहीं नेत्र फटे रहैं बालक बोले नहीं। रोया करै। सोवे बहुत। हाथ की मुट्ठी बंध रहै उस के सुखके वास्ते उतारा लिखते हैं ॥ नदीके दोनों तटों की मिट्टी ले पुतला बनावै उसके आगे कमल के फल धरै गन्ध। तांबूल। सुपेदफूल। चार दिये। तेरह पुये मछली का मांस सुरा। छाक ये सब सरवे में धरै पीछे उत्तर दिशा में तीसरे पहर चौहटे में धरै तो बालक को सुख होय ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ॐ नमो रावणाय हन २ मथ २ स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावै तो बालक अच्छा होय ॥ ३३ ॥

अथ पांचवें दिन पांचवें महीने पांचवें बर्ष पूतना नाम मातृका रावण की बहिने के दोष का लक्षण ॥

प्रथम ज्वर होय शरीर कांपै और बोले नहीं हाथ की मुट्ठी खोले नहीं ॥

अथ उसके अच्छे होने का उतारा ॥

कुम्हार के चाक की मट्टी ले उसका पुतला बनावै उस के आगे गन्ध। तांबूल। चांवल। सुपेदफूल। पांच ध्वजा पांच दिये बड़े ईशान दिशा में उतारा धरै पीछे शांति के जलसे स्नान करावै फिर शिव निर्माल्य। सांप की कांच ली घृत। नींबके पत्ते। इनकी धूनी दे तो बालक अच्छा होय ॥

अथ उतारे को मंत्र ॥

ॐ नमो रावणाय नमः चूर्णय २ स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावैतो बालक अच्छा होय ॥ ३४ ॥

अथ छठे दिन छठे महीने छठे वर्ष शकुनी नाम मातृका रावण की वहिन के दोष का लक्षण ।

प्रथम ज्वरहोय । शरीर कांपै । राति दिन चैन पड़ै नही ऊंचा देखै उसके सुख के वास्ते उतारा । गेहूं के चूनका पुतला करै सुपेद फूललाल फूल पीले फूल मदिरा मांस १० दिये १० ध्वजा दूध जामुन इनका उतारा अग्नि कोण में मध्यान्ह समय धरै पीछे शीतल जलसे स्नान करावै फिर शिवनिर्माल्य लहसन गूगल । सरसों सांपकी कांचली । नींब के पत्ते घृत इनकी धूनी दे ॥

अथ उतारे का मंत्र ।

ओंनमो रावणाय चूर्णय २ हन २ स्वाहा ॥ ३५ ॥ तीसरे दिन ब्राह्मण को भोजन करावै तो बालक अच्छा होय ॥

अथ सातवें दिन सातवें वर्ष शुष्क रेवती नाम मातृका रावण की बहिन उसके दोषका लक्षण ॥

प्रथम ज्वर होय गात्र कांपै मुट्ठी बंधी रहै रोवे बहुत उसके सुखके वास्ते उतारा ॥ नदीके तट की मट्टीकापुतला करे उसके आगे लाल फूल तांबूल लाल चांवलकी खिचड़ी १० दिये मांस दारू १३ ध्वजा पश्चिम् दिशामें गांवके बाहर तीसरे पहर उतारा धरे पीछे स्नान करावे फिर शिवनिर्माल्य मेढ़े के सींग सरसों खस घृत इनकी धूनी दे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ओं नमो रावणाय तत्तेजसे हन २ मुंच २ स्वाहा चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावे तौ बालक अच्छा होय ॥ ३६ ॥

अथ आठवें दिन आठवें महीने आठवें वर्ष नाम मातृक रावण की बहिन उसके दोष का लक्षण

प्रथम ज्वर होय शरीर में दुर्गन्धि आवे अहार ले नही शरीर कांपे उसके सुखके वास्ते उतारा ॥ लाल फूल । पीली ध्वजा । रक्त चंदन । खीर । मांस । सुरा इनकी बलि प्रभात समय इस मंत्र से दे ॥ ओं नमो रावणाय त्रैलोक्य

विद्रावणाय चतुर्दश मोक्षणाय ज्वर हन २ ओं फट् स्वाहा ॥ ३७ ॥

अथ नवें दिन नवें महीने नवें वर्ष सूड़िका नाम मातृका रावण की बहिन उसके दोष का लक्षण ॥

ज्वर होय शरीर में पीड़ा होय छर्दि होय उसके सुखके लिये उतारा ॥ नदी के दोनों तटों की मट्टी का पुतला करै सुपेद वस्त्र पहरावे सुपेद फूल गन्ध तांबूल १२ दिये १२ ध्वजा उत्तर दिशा में गांव के बाहर उतारा करे पीछे शांति के जल से स्नान करावे गूगल। नींबके पत्ते। गायका सींग। सरसों। घृत इनकी धूनी दे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ओं नमो रावणाय हन २ स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावे तो बालक अच्छा होय ॥ ३८ ॥

अथ दशवें दिन दशवें मास दशवें वर्ष क्रिया नाम मातृका रावण की बहिन उसके दोष का लक्षण ॥

ज्वर होय। शरीर कांपै। रोवे। मल मूत्र करदे उसके सुखके लिये उतारा ॥ नदीके दोनों तटोंकी मट्टीका पुतला करे पीछे गंध तांबूल रक्तपुष्प रक्तचन्दन ५ ध्वजा ५ दिये पुआ मांस सुरा वायव्य कोण में बलि दे पीछे काक बिष्टा गौका सींग बिलाई के रोम नींब के पत्ते घृत इनकी धूनीदे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ओं नमो रावणाय चूर्णित हस्ताय मुंच २ स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावे तो बालक अच्छा होय ॥ ३९ ॥

अथ ग्यारहवें दिन ग्यारहवें मास ग्यारहवें वर्ष पिपीलिका नाम मातृका रावणकी बहिन उसके दोष का लक्षण ॥

ज्वर होय अहार ले नहीं ॥

अथ उसके सुख के लिये बलि ॥

गेहूं के आटे का पूतला करै उस पूतले के मुख में दूर की धार दे पीछे रक्तचन्दन पीलेफूल गन्ध तांबूल ७ दीये

८ बड़े लाल पुआ मांस सुरा पूर्व दिशा में उतारा धरै पीछे शांतिके जल से स्नान करावै फिर शिवनिर्माल्य गूगल। गौ का सींग सांप की कांचली घृत इनकी धूनी दे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ओं नमो रावणाय मुंच २ हन २ स्वाहा । चौथे दिन ब्राह्मण को भोजन करावै तो बालक अच्छा होय ४० ॥

अथ बारहवें दिन बारहवें मास बारहवें वर्ष कामुका नाम मातृका रावण की बहिन उसके दोष का लक्षण ॥

ज्वर होय हंसे हाथ से दूर करै पुकारै बहुत स्वास बहुत ले ॥

अथ उसके उतारे की विधि ॥

मावे का पुतला करै पीछे गंध। तांबूल। सुपेदपुष्प। ध्वज। १ लालपुआ इनकी बलि दे फिर शांति के जल से स्नान करावै पीछे शिव निर्माल्य। गूगल। सरसों। घृत इनकी धूनी दे ॥

अथ उतारे का मंत्र ॥

ओं नमो रावणाय मुंच २ हन २ स्वाहा। चौथे दिन ब्राह्मण को भोजन करावै तो बालक अच्छा होय ४१ ॥ यह रावण का बनाया कुमारतंत्र चक्रदत्त में लिखा है ॥

अथ वायु के रोगों की उत्पत्ति लक्षण ॥

धाय के भारी गरिष्ट भोजन करने से और उस के वायु पित्त के आचारों से बालक के शरीर में दोष कोप को प्राप्त होय है और ऐसे ही कुपथ्य के भोजन से धाय के स्तन में प्राप्त होय दूध के द्वारा बालक के वायु के रोग होंय हैं तब वह बालक क्षीण होजाय मुख सुपेद होजाय शरीर कृश होजाय और उसके मल मूत्र कठिनता से उतरै इसको आदि ले वायु के और भी रोग होय हैं ऐसे ही बालक पित्त से दुष्ट दूध पीवै तो बालक के पित्त का रोग पैदा होय है ॥ उस बालक के पसीना आवै मल पतला जाय शरीर पीला पड़ जाय तृषा बहुत लगै शरीर

गरम रहै इसको आदि ले पित्त के रोग होंय और उसके लार बहुत पड़ै नींद बहुत आवे शीत बहुत रहै शरीर सुन्न होजाय नेत्र मुंह सब शरीर भारी रहै और ज्वर को आदि ले जो रोग बड़े आदमी के होंय हैं वेही बालक के होय हैं और जो तालुक कंटक को आदि ले जो रोग बालक के होंय हैं सो बड़े आदमी के कोई भी होय नहीं ॥

अथ तालुक कंटक का लक्षण ॥

तालू के मांस में बालक के कफ कोप करै तब उसके तालू में कांटे पड़ जांय और उस का तालू बैठ जाय और तालू के बैठने से दूधपीवे नहीं मल पतला जाय तृषा बहुत होय आंख दूखै कंठ मुंह में पीड़ा होय मस्तक उठै नहीं वमन करे ॥ १ ॥

अथ महा पद्म रोग का लक्षण ॥

बालक के मस्तक में और गुदा में रोग पैदा होंय और वायु पैदा होय और पद्मके वर्ण समान जिस के वर्ण होय सो वे तीनों दोषों के कोपसे होंय हैं प्रथम वह रोग कनपटियों से हृदय में आवै पीछे हृदय से गुदा में आवै ऐसे ही पेड़ू से गुदा में जाय गुदा से फिर हृदय में जाय और हृदय से शिर में २ ॥

अथ कुकूणक रोग का लक्षण ॥

कुकूणक रोग दुष्ट दूधके पीने से बालक के होय है उस में नेत्र दूखें नेत्र में खाज होय आंसू बारम्बार बहुत पड़ैं और वह बालक ललाट नेत्र नाक इन्हें घिसा करे और धूप की ओर देखै नहीं आंखि खुले नहीं इसे कुकूणक रोग कहिये ३ ॥

अथ तुण्डि गुदा पाक रोग का लक्षण ॥

बालक की गुदा पक जाय और उसकी नाभि में पीड़ा होय उसे तुण्डि गुदा पाक रोग कहिये ४ ॥

अथ अहि पूतना रोग का लक्षण ॥

बालक की गुदा मल मूत्रसे लिपी रहा करै अथवा धोवै अथवा कपड़े से पोंछै बायु लगै तब खाज होय और गुदा लाल रहै और वह बालक गुदा को खुजावै तब उसके फोड़े होंय उसकी गुदासे पानी सा झरा करै औरउसकी गुदा में भयंकर व्रण हो जांय उसको अहि पूतना रोग कहिये ५ ॥

अथ अजगल्ली रोग का लक्षण ॥

जिसके शरीर में चिकनी लाल वर्ण की मूंग प्रमाण बहुत सी फुनसियां होजांय और उनमें पीड़ा नहीं होय वे कफ बायु से उपजैं हैं उसको अजगल्लिका कहिये ६ ॥

अथ पारि गर्भिक रोग का लक्षण ॥

जो बालक गर्भिणी स्त्री का दूध पीवै तौ उसके खांसी आवे अग्नि मन्द हो जाय शरीर मैं दाह और तन्द्रा होय और क्षीण पड़िजाय अरुचि होय घुमेर आवै और उसका पेटबढ़ि जाय उसै पारि गर्भिक रोग कहिये ७ ॥

अथ बालक के दांतों का रोग लिखते हैं ॥

बालकों के दांत आने के समय ज्वर होय पेट छूट जाय खांसी आवै छर्दि होय मस्तक और आंख दूखैं रतुवा होय ये लक्षण दांतों के रोगों का जानिये ८ ॥

अथ बालकों के रोगों के यत्न ॥

जो बड़े आदमियों के रोग होंय हैं वही बालकोंके होंय तो जो यत्न बड़े आदमियों का करैं वेही बालकों का कीजे और बालक को एक वर्ष तक एक रत्ती प्रमाण औषधि दीजे और दूसरे वर्ष से १ मासे दीजे यह मर्य्यादा है और बालक जहां हाथ लगा कर रोवै तो वहां रोग जानिये और उसका यत्न कीजे ॥

अथ बालक के ज्वर का विशेष यत्न ॥

नागर मोथा । हड़की छाल । नींबकी छाल । पटोल ।

इनका काढ़ा कर उसमें सहत डालबालक को पिलावै तो बालक का सब प्रकार का ज्वर जाय ॥ इति सर्व ज्वर के ऊपर भद्र मुस्तादि क्वाथ ९ ॥

अथ बालक के ज्वरातीसार का यत्न ॥

नागर मोथा । पीपल । अतीस । काकड़ा श्रृंगी इनका चूर्ण कर सहत से बालक को चटावै तो बालक का ज्वरातीसार जाय और खांसी वमन को दूर करै इति चातुर्भद्रादि ॥ १० ॥

अथ बालक के अतीसार का यत्न ॥

बेलकीगिरी । धवई के फूल । नेत्रबाला । लोध । गजपीपल । इनके काढ़े में सहत डाल दे तो बालक का अतीसार जाय ॥ ११ ॥

अथ बालक के भयंकर अतीसार का घोर यत्न ॥

मंजीठ । धवई के फूल । लोध । गौरीसर इनका काढ़ा सहत डाल दे तो बालक का भयंकर भी अतीसार जाय १२ ॥ इति समंगादि क्वाथः ॥

अथ बालक के आमातीसार का यत्न ॥

बायबिड़ंग । अजमोद । पीपल इन्हें महीन पीस चांवल के पानी से दे तो आमातीसार जाय ॥१३ ॥ इति बिड़ंगादि क्वाथः ॥

अथ बालक के रक्तातीसार का यत्न ॥

मोचरस । मंजीठ । धवई के फूल । कमल के फूल इन्हें महीन पीस सांठी चांवल के माड़ में दे तो रक्तातीसार जाय ॥ १४ ॥

अथ बालक के सब प्रकार के अतीसार का यत्न ॥

सोंठि । अतीस । नागरमोथा । नेत्रबाला इन्द्रजव इनका क्वाथ दे तो बालक का सब प्रकारका अतीसार जाय १५ ॥

अथ बालक के मोडानिवाही का यत्न ॥

चांवल की खील । मुलहठी । मऊआ इन्हें महीन पीस

मिश्री और सहत में चटावे तो बालक की सोड़ा निवाहैं जाय ॥ १६ ॥

अथ बालकों की संग्रहणी का यत्न ॥

हल्दी । चव्य देवदारु । कटेली । गजपीपल । पृष्टिपर्णी सौंफ इन्हैं महीन पीस सहत घृतके साथ चटावे तो संग्रहणी और पांडु रोग के ज्वरातीसार को दूर करै और भूख लगावे ॥ इति रजन्यादि चूर्ण ॥ १७ ॥

अथ बालक की खांसी का यत्न ॥

नागरमोथा । अतीस । अडूसा । पीपल । काकड़ाशृंगी इन्हैं महीन पीस सहत के साथ चटावे तो बालक के पांच प्रकार की खांसी श्वास जाय ॥ इति मुस्तादि ॥ १८ ॥

अथ खांसी का और यत्न ॥

कटेली के फूलों की केसर को सहतसे चटावे तो बालक की खांसी जाय ॥ १९ ॥

अथ खांसी स्वासका यत्न ॥

मुनक्का । दाख । अडूसा । हड़कीछाल । पीपल इन्हैं महीन पीस सहत और घृतके साथ चटावे तो बालक की हिचकी और छर्दि जाय ॥ २० ॥

अथ बालक की छर्दि का यत्न ॥

आमकीगुठली । और चांवल की खील । सेंधानोन । इन्हैं महीन पीस सहत से चटावे तो बालककी छर्दिजाय २१ ॥

अथ बालक के दूध गिराने का यत्न ॥

कटेली के डोंडे का रस । पीपल । पीपलामूल । चव्य । चित्रक । सोंठि इन्हैं महीन पीस सहत घृत से चटावे तो बालक की छर्दि जाय ॥ २२ ॥

अथ बालक के पेट में अफरा होय और शूल चलै उसका यत्न ॥

सेंधानोन । सोंठि । इलायची । सेंकीहींग । भारंगी इन्हें महीन पीस गरम पानी से ले तो बालक का अफरा और शूल जाय ॥ २३ ॥

अथ बालक का मूत्र बन्द हो गया होय उसका यत्न ।

पीपल। मिरच। छोटी इलायची। सेंधानोन इन्हैं महीन पीस मिश्री और सहत से चटावे तो मूत्र अच्छी तरह से उतरै २४ ॥

अथ बालक के लार बहुत पड़े उसका यत्न ॥

गौरीसर । तिल । लोध इनका काढ़ा कर सहत डाल बालक को पिलावे तो बालक की लार पड़ती बन्द होय २५ ॥

अथ बालक के मुंह में छाले पड़े होंय उसका यत्न ॥

पीपल का बक्कल और उसके पत्ते इन्हैं महीन पीस सहत में मिलाय चटावै तो बालक के मुख के छाले अच्छे होंय २६ ॥

अथ बालक की नाभि में सूजन होय उसका यत्न ॥

पीली मट्टी को अग्नि से लाल कर दूध से लगावै तो सूजन अच्छी होय ॥ २७ ॥

अथ बालक की नाभि पक गई होय उसका यत्न ॥

हल्दी । लोध । फूलप्रियंगु । इन्हैं सहत से महीन पीस नाभि के लेप करै तो नाभि का पकना अच्छा होय २८ ॥

अथ बालक की गुदा पकि गई होय उसका यत्न ॥

रसौंत को पानी में महीन पीस बालक की गुदा में लेप करै तो गुदा पकती बन्द होय ॥ २९ ॥ अथवा शंख । मुलहठी । रसौंत । इन तीनों को महीन पीस लगावै तो बालक की गुदा पकती बन्द होय ॥ ३० ॥

अथ बालक के दांत दोहरे आवैं उसका यत्न ॥

धवई के फूल । पीपल इन्हैं आंवले के रस में बालक के मुंह में लगावैं तो दांत अच्छी तरह आवैं ॥ ३१ ॥ और लाक्षादि तैल से बालक के ज्वरादिक सब रोग जांय ३२ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंहजी विरचिते अमृतसागर नामग्रन्थे बालकों के सर्व्व रोगों के भेद संयुक्त उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपणं नाम एकविंशतिमस्तरङ्गः ॥ २१ ॥ * ॥ * ॥

अथ बाजी करणादिक लिखते हैं ।

बाजी करण कहिये जो पुरुष देखने में मोटा पुष्ट दीखे और वह नपुंसक होय स्त्री के काम का नहीं होय उसका भेद ॥ वह नपुंसक पुरुष ७ प्रकार के होय हैं उसकी उत्पत्ति लक्षण लिखते हैं ॥ स्त्री से रमण की इच्छा तो होय और संग होय नहीं इस कारण से लिंग उठे नहीं उसे नपुंसक कहिये सो कारण लिखते हैं कड़वी वस्तु खटाई गरम वस्तु लोन इनके बहुत खाने से नपुंसक होय अथवा शोक से तथा क्रोध आदि के करने से वीर्य का नाश होय अथवा पुत्र स्त्री धन आदि के नाश से नपुंसक होय अथवा हाथ की लिंग में किसी तरह की चोट लगने से लिंग की नस मारी जाय उस्से और बहुत ब्रह्म चर्य्य के रहने से नपुंसक होय इन्हें आदि ले और भी कारण हैं ॥

अथ नपुंसकपने का यत्न ।

मधुरी वस्तु को आदि ले नाना प्रकार के मनोहर अति स्वाद युक्त जो भोजन तिनसे निपुंसक पना जाय ॥ १ ॥ अथवा महा सुन्दर जिसका सर्वाङ्ग ऐसी स्त्री के स्पर्श करने से नपुंसक पना जाय २ अथवा महा सुन्दर जो स्त्री जिसकी वाणी मधुर मनोहर लगै उस्से नपुंसक पना जाय ॥ ३ ॥ अथवा तांबूल सुन्दर आसव को पीना उपवन का रहना पुष्टई की औषधि दूध मिश्री के संयोग की मृगांक चन्द्रोदय को आदि ले सातों धातु दधि सिखरन उड़द ये सब वस्तु नपुंसक पने को दूर करै हैं ॥ ४ ॥ अथवा अमरस आदि का भोजन भीमसेनी कपूर कस्तूरी के संयोगकी पानकी बीड़ी को आदि ले और भी वस्तु से नपुंसक पना जाय ॥ ४ ॥

अथ गोक्षुरादि चूर्ण लिखते हैं ॥

गोखुरू । तालमखाना । असगन्ध । सतावरि । सुफेद मूसली । कोंच के बीज । मुलहठी । खरैटी के बीज । गंगेरन

की छाल। ये सब बराबर ले इन्हैं महीन पीस इसमें मिश्री अनुमान माफिक मिलाय औटाय दूध के साथ ५ टंक रात्रि में नित्य ले और पथ्य से रहै तो नपुंसक पना जाय ॥ ५ ॥

अथ सुपारी पाक लिखते हैं ॥

दक्षिणी सुपारी ऽ॥ सेर ले उसै २ दिन जलमें भिगोवै पीछे उन्हैं महीन कतर सुखाय ले फिर उसका चूर्ण करै और वस्त्र से छान बराबर घृत से सकरोय अठगुने दूध में उसका खेरा मावा करै पीछे अठगुनी मिश्री की चासनी कर उसमें सुपारी का मावा डाले और ये औषधि इस में मिलावै सो लिखते हैं॥ इलायची। खरैटी । गंगेरनकी-छाल। जायफल। लवंग। जाविनी। पत्रज। सोंठि। सतावरि। मूसली। कौंचकेबीज। बिदारीकन्द। गोखुरू। दाख। सालिब मिश्री। सिंघाड़ा। जीरा। कूड़। बंशलोचन। असगंध। केसर। कस्तूरी। कपूर। चन्दन। भीमसेनीकपूर। अगर। ये सब औषधि २ टके भर ले पीछे वैद्य अपनी बुद्धि माफिक ले और मृगांक चन्द्रोदय वंगसार अभ्रक सुगन्धि द्रव्य मेवा अपनी बुद्धिमाफिक इसमें डालै पीछे १ टके प्रमाण इसका मोदक करै १ मोदक नित्य खाय और पथ्य से रहै तो निश्चयही नपुंसक पना जाय॥ इति रतिवल्लभ पूंगी पाक ॥ ६ ॥

अथ आम्रपाक लिखते हैं ॥

पक्के मीठे आमका रस ऽ१६ सेर उसमें मिश्री ऽ४ सेर डाले और इसमें घृत ऽ१ सेर डाले और इसै मिट्टी के बासन में पकाय गाढ़ा कर चासनी समान करै और चांदी के बासन में धरै और इस में ये औषधि डाले सोंठि ८ टके भर मिरच ८ टके भर पीपल २ टके भर धनियां २ ट० भर जीरा १ ट० भर चित्रक १ ट० भर पत्रज १ ट० भर दालचीनी १ ट० भर नागकेसर १ ट० भर केसर १ ट० भर इलायची १ ट० भर लवंग १ ट० भर जायफल १ट० भर कस्तूरी ४

मासे भीमसेनी कपूर १ टंक भर सहत ऽ। भर पीछे इन सबको एक जीव कर अम्रतबान में भर रक्खै फिर इस में से १ टके भर नित्य खाय तौ नपुंसक पना दूर होय और स्त्री से संग बहुत करावै और संग्रहणी। क्षयी। स्वासका रोग। अरुचि। अम्लपित्त। रक्तपित्त। पांडु रोग। यह आम्रपाक इतने रोगों को दूर करै है॥ इति आम्र पाकः॥ ७॥

अथ हयरस आदि किसी तरह से नपुंसक होगया होय उसका यत्न॥

दखी गोखुरू का चूर्ण ५ टं० सहत ५ टं० मिलाय बकरी के दूध के साथ २ महीने ले तो नपुंसकपना जाय॥ ८॥

अथ चन्दनादि तेल लिखते हैं॥

रक्तचन्दन। पतंग। अगर। देवदारु। चीढ़। पद्माख। कपूर कस्तूरी। केसर। जायफल। जाविपी। लवंग दोनों इलायची। कंकोल। तज। दालचीनी। पत्रज। नागकेसर। नेत्रबाला। खस। छड़। दारुहल्दी। सूर्वा। कचूर। नागरमोथा। सम्हालू। फूलप्रियंगु। लोहबान। गूगल। लाख। नख। राल। धवई के फूल। कुसुमके फूल। पीपला मूल। मंजीठ। तगर। मोम ये सब औषधि चार २ मासे ले और इनका मधुरी आंच से काढा करे फिर इनका चौथा हिस्सा राखे फिर इसमें मीठा तेल ऽ। भर डाले फिर मधुरी आंच से पकावे जब काढे का रस जलिजाय तेल मात्र आय रहे तब छान कर पात्र में भर रक्खे पीछे इसका शरीर में मर्द्दन करे तो बूढ़ा भी आदमी तरुण होय और शरीर के सब रोग जांय इति चन्दनादि तैलं॥ ९॥

अथ वानरी गुटिका॥

कौंचके बीज ऽ। भर इन्हें गौके ऽ। भर दूध में शनैः २ पकावे फिर इनका छिलका दूर करे फिर इसको महीन चूर्ण कर दूध में उसन छोटे २ इसके बड़े कर गौके घृत में तले फिर इससे दूनी मिश्री की चासनी कर बड़ों को पागे

फिर इन बड़ों को सहत में डाले पीछे इन में से नित्य १० टंक २ महीने खाय तो नपुंसक पना जाय स्त्री संग में उसका वीर्य्य देर से संखलित होय ॥ इति बानरी गुटिका ॥ १० ॥

अथ नपुंसक पने के दूर करने का यत्न ॥

अकरकरा । सोंठ । लवंग । केसर । पीपल । जायफल । जाविची । सुपेदचन्दन । ये सब औषधि अधेले २ भर ले और अफीम १ टके भर ले फिर इन सब को सहत में महीन पीस उड़द प्रमाण गोली करे एक गोली राति में नित्य खाय ऊपर से दूध पीवे तो वीर्य्य देर से गिरे और नपुंसक पना जाय और बहुत स्त्रियों से भोग करे ११ ॥ अथवा बिदारीकंद का चूर्ण करउस चूर्ण में गीले बिदारी कन्द के रसकी २१ पुट दे दे सुखाता जाय फिर उसमें मिश्री सहत और घृत मिलाय नित्य २ टंक खाय अथवा चार मासे ले और इसके ऊपर मधुर दूध पीवे तो बूढ़ा मनुष्य भी जवान होय यह वृन्द में लिखा है ॥ १२ ॥ अथवा आंवले का चूर्ण करे फिर इस चूर्ण में गीले आंवले के रसकी २१ पुटदे सुखाय ले फिर इस चूर्ण को मिश्री सहत से नित्य २ २ टंक खावै तो नपुंसक पना जाय यह चक्रदत्तमें है १३ ॥

अथ मदन मंजरी गुटिका लिखते हैं ॥

सोंठ । मिरच । पीपल । इन तीनों का चार भाग करे पारे का १ भाग और बंगका २ भाग करे इन सबकी बराबर शतावरि । तज । पत्रज । नागकेसर । इलायची । जायफल । मिरच । पीपल । सोंठ । लवंग । जाविची इन सबको २ भाग ले फिर इन सबको महीन पीस मिश्री सहतघृत में गोली ५ टंक के अनुमान बांधे फिर १ गोली । नित्य खाय ऊपर से दूध पीवे तो बूढ़ा भी जवान होय ॥ इति मदन मंजरी गुटिका ॥ १४ ॥ यह योगतरंगिणी में है ॥

अथवा अफीम । पारा । ये बराबर ले पीछे इन दोनों को

धतूरे के बीज के तेल में ३ दिन खरल करे पीछे मिश्री और भांग बराबर मिलाय १ रत्ती खाय ऊपर से दूध पीवे तो वीर्य्य गिरे नहीं और नपुंसक पना जाय ॥ यह सारसंग्रह में लिखा है ॥ १५ ॥ अथवा जायफल। अकरकरा। लवंग। सोंठ। केसर। पीपल। कस्तूरी। भीमसेनी कपूर। अभ्रक इन सबकी बराबर अफीम ले फिर इन सबको महीन पीस मंग प्रमाण गोली करै फिर १ गोली तथा २ गोली लेतो वीर्य्य गिरै नहीं ॥ १६ ॥

अथ लिंग लेप का लिंगार्जुन गुटिका लिखते हैं ॥

चीनियाकपूर। सुहागा। पारा। ये सब बराबर ले पीछे इन्हें अगस्त के रसमें और सहत में १ दिन खरल करै फिर लिंग के लेप करै १ पहर राखै पीछे लिंग को धोवे फिर स्त्री से संग करै तो वीर्य्य देर में गिरै ॥ १७ ॥

अथ लिङ्ग लेप की पट्टी लिखते हैं ॥

सुफेद कनेर की जड़ का वक्कल। अकरकरा। अजमोद। काले धतूरे के बीज। जायफल इन सबको जलसे महीन पीस मिरच प्रमाण गोली बांधै फिर १ गोली मनुष्य के मूतसे घिस लिंग के लेप करै तो नपुंसक पना जाय वीर्य्य देर से गिरै ॥ १८ ॥ अथवा सूकरका घृत। सहत इन दोनों को खरल में घिस १ महीने तक लिंग के लेप करै तो लिंग की सब कसर मिटै ॥ १९ ॥ अथवा सुफेद कनेर की छाल को दूध में जमाय घृत काढ़े फिर इस घृतमें मोहरा। जायफल। जमालगोटा। अनुमान माफिक मिलाय लिंग के ७ दिन लेप करै ऊपर पान बांधे ब्रह्मचर्य्य से रहै तो नपुसक पना जाय ॥ २० ॥

अथ नपुंसकपना दूर करने की और औषधि ॥

चोपचीनी । सोंठ। मोचरस । दोनौं मूसरी। मिरच। वाय विड़ंग। सौंफ ये सब औषधि समान ले कपर छान

करि पैसा भर चूर्ण आधसेर अधौटा दूध के साथ ले तौ बल बढ़े पुष्टता होय ॥ २१ ॥

अथ दूसरी ओषधि ॥

चोपचीनी । पांच पैसा भरि सोंठि । ओम्बरस । दोनौ मूसली । मिरच । वाय विड़ंग । सोंफ । ये सब औषधि बराबर ले कपड़ छान करि १ सेर अधोटे दूध के साथ लेय तो धातु पुष्ट होय बल बहुत बढ़े ॥ २२ ॥

अथ तीसरी ओषधि ॥

शहत दो पैसा भर ऽ॥ गौ के दूध में मिलाय कर पिये तौ पुरुष के शक्ति अधिक होय ॥ २३ ॥

अथ चौथी ओषधि ॥

मैदा लकड़ी ऽ। भर ले काली बकरी के दूध में भिजोवे फिर कपर छान करि ऽ१ गौके दूध में भिजोय तीन दिन तक सुखनेदे तिसपीछे गोखरू तीनि पैसा भर चीनी खांड़ आध सेर मिलाय करि धरि राखै मात्रा १ पैसाभर ऽ॥ गौ के दूध में खाय तौ पुष्टता होय और नपुंसकता दूर होय ॥ २४ ॥

अथ पांचवीं ओषधि ॥

सुपेद कनेर कीजड़ दो पैसा भरिले महीन कतरि पांच सेर गौ के दूध में औटावै जब दूध ऽ३ शेष बचै तब उतारि ठंढा करि जड़ समेत जमाय दे फिर दूसरे दिन माखन काढ़ि ले तिस पीछे सात गरवा मगवावै जायफल ७ और नगजाविची पैसा भरि लें सातों गरवन में भरै पेट से ले मूड़ पांऊं काटि डालै फिर ऽ। भर गौके घीमें खूब खरल करि भूजै फिर उनकी मैदा को कनेर के घी में ४ रत्ती प्रमाण गोली बांधे फिर लिंग में लेप करै अथवा १५ दिन खाय तौ नामर्द मर्द होय ॥

अथ छठी ओषधि ॥

मंजीठ ऽ१ गोखुरू ऽ१ लभेरे के फल ऽ१ ले गौ के

पांच सेर दूध में औटावै जब ऽ१ शेष रहै तब उतारि गोखरू सुखाय लेय फिर तीनों औषधि शेष कपर छान करि आगे लिखी औषधी मिलावै जायफल पैसाभरि और मूसरी दोनों ऽ।-भर शतावरि ऽ। भर पीपरामूल ऽ= सोंठ ४ पैसा भर भांगरा ऽ। भर निर्गुंडी ऽ। भर ये सब औषधि कपर छान करि आध सेर घी मिलाय तीन तीन पैसा भरि गोली बांधै और दोनों समय एक एक गोली १४ दिन खाय तो नामर्द मर्द होय ॥

अथ सातवीं औषधि ॥

केंचुआ की मैदा १ पैसा भर और बीरबहूटी की मैदा १ पैसा भर कूठ १ पैसा भर जंगली सूअर की बसा १ पैसा भर अकरकरा १ पैसा भर बच १ पैसा भर ले कपड़ा की पट्टी बनाय मोमजामा करै फिर असगंध १ पैसा भर ले कपड़ छान करि पट्टी में धरै और सब औषधी सूअर की बसा में मिलाय सुपारी बचाय १४ दिन तक पट्टी बांधे तो नामर्द मर्द होय ॥

अथ आठवीं औषधि ॥

वत्स नागविष २ पैसा भर जमाल गोटा २ पैसा भर
सफेद घोंघची २ पैसा भर सपेद कनेर की जड़ २ पैसा भर
बीर बहूटी २पैसा भर अकरकरा २पैसा भर माल कांगुनी
ऽ१ भर चिमगुहर १ कुचिला २ पैसा भर. केंचुआ ऽ१
भर सरसांड़ा एक खुरासानी अजवायन २ पैसा भर सुहा-
गा २ पैसा भर मैनसिल २ पैसा भर लौंग २ पैसा भर
जायफल २ पैसा भर दालचीनी २ पैसा भर आककी जड़ २
पैसाभर चमेली की जड़ २ पैसा भर चिमगुहर और सूअर
सांड़े का यंत्र में तेल निकाले तिस पीछे औषधि सब
कपड़ छान करि बकरी के दूध में ३ दिन खरल करै तिस
पीछे यंत्र से तेल काढ़ि बंगला पान में चुपरि लिंग पर

सात दिन तांई बांधे और स्त्री भोगसे बचा रहै तौ नपुंसक पना दूर होय ॥

अथ नवीं औषधि ।

कनेर की जड़ २ पैसा भर सींगिया बिष १ पैसा भर चौराई के बीज १ पैसा भर शालम् मिश्री १ पैसा भर निर्गुंडी १ पैसाभर ये सब औषधि कपरछान करि पांच सेर गौ के दूध में औटाय जमाय के माखन काढ़ि ले फिर सुपारी बचाय उलटा बंगला पान में लगा के १४ दिन तांई पट्टी बांधै और स्त्री से बचा रहै तौ नामर्द मर्द होय ॥

अथ दसवीं औषधि ॥

हींग । धतूरे के बीज । अकरकरा । समुद्र फेन । दालचीनी ये सब औषधि बराबर ले कपर छान करि ऊंट कटेड़ा के रस में १४ दिन तक लिंग पर लेप करै तो नपुंसकता दूर होय ॥

अथ खाने की औषधि ॥

असगंध । जाविची । जायफल । लौंग । दाल चीनी । ये सब औषधि बराबर ले काले तिल ऽ। भर शहत ऽ। भरले गोली बांध २१ दिन खाय तौ नपुंसकता जाय ॥

अथ दूसरी औषधि ॥

अकरकरा पैसा भर अफीम अधेला भर दोनों मूसली पैसा भर कुलींजन पैसा भर लौंग पैसा भर बड़फली पैसा भर असगंध धेला भरि खांड़ ६ पैसा भर सब औषधि कपड़ छान कर खांड़ के संग में १ पैसा भरि की गोली बांध और १४ दिन तक रात्रि में खाय तो नपुंसकता दूर होय ॥

अथ लेपन ॥

तेलिया सुहागा १ टं॰ कूट १ टं॰ मैनसिल १ टं॰ चमेली के पत्तोंका रस४टं॰ तिलका तेल ऽ। भरले इन सबको कपड़छान करि तेलमें औटावै जब तेलमें खरल हो जाय तब उतारि रक्खै फिर तेल की पट्टी ७ दिन बांधे तौ नपुंसकता जाय ॥

अथ खाने की औषधि ॥

पोस्त आधसेर माजूफल आधसेर ले १ऽ मन भर पानी में औटावै जब सेर भरि शेषरहै तब उतारि आगेलिखी हुई औषधि कपड़छान कर मिलावै जायफल १ टका भरि लौंग १ टका भरि तज १ टका भरि बिलारीकन्द ४ टका सेंबर के बीज आधसेर नाग केसरि १ टका भरि सोंठ आध सेर पुराना गुड़ ऽ२ सेर गौ के दस सेर दूध में औटावै जब औटते औटते ऽ३ सेर शेष रहै तब गुड़ वो खांड डारि के औटावै जब गाढ़ा हो जाय तब उतार आंवरे की बराबर गोली बनावै और प्रातः काल डेढ़ पैसा भरि और संध्या को १ पैसा भरि पानी के साथ खाय तौ १४ दिनमें नपुंसकता दूर होय ॥ अब हस्त क्रिया और कच्चे कुश्ता आदि के खाने और सरदी गरमी या बहुत मेहनत से जो आदमी नामर्द हो गया हो उसके उपाय के लिये तिलालेप अच्छो २ खाने की पुष्ट औषधियों समेत आगे लिखते हैं ॥

अथ तिलाहथलस और सुस्ती का ॥

दालचीनी १० टं० जायफल १० टं० धतूरा जड़पत्ते समेत १० टं० जाविस्त्री १० टं० लौंग १० टं० बीरबहूटी १० टं० मालकांगनी १० टं० जमालगोटा १० टं० संखिया १० टं० तेलिया १० टं० चौहरली लाल १० टं० शिंगरफ १० टं० पारा १० टं० लोहबान १० टं० अद्रक का रस १० टं० चमेली के पत्ते १० टं० मैनसिल १० टं० हरताल १० टं० कूट १० टं० सुहागा १० टं० मीठा तेल १० टं० चिमगादर की चरबी १० टं० हल्दी १० टं० स्वेत कनेर की जड़ १० टं० लाल कनेर की जड़ १० टं० गिडोहे सूखे १० टं० रेंगमाही १० टं० शेर की चरबी ४० टं० अरंड का तेल १५ ०टं० मछली का पित्ता १० टं० मुर्गे का पित्ता १० टं० चोखो दारू १॥ टं० गधे का

मगज और जो यह न होय तौ गधे के पोतों में जोंक लगाय के दश टंक रुधिर लेले सूअर की चरबी १० टं० काष्ठादिक औषधियों को ऊपर छान करै गोली बांधे फिर उसे आतसी शीशी में भर कर मुंह पर सींक लगावै कपरौटी करै चपटा अधबर से फोड़े पेंदे में छेद करै पेंदे में शीशी को नारिकर फिर तेल निकाल लेय यदि तेल न निकल सके तौ गोली दो रत्ती के केसर में लेप करै और यद तेल निकल आवै तौ इन्द्रीपर की सुपारी और नीचे का जोड़ बचा के तेल मलै ऊपर से बंगला पान बांधे लंगोट बन्द रहै परेज करै खट्टी गरम चीज न खाय तो सुस्ती दूर होय ॥

तिला दूसरा ॥

कपड़ा बाफते का पावगज आक के दूध में भिगो के सुखाके थूहड़ के दूधमें भिगोवे पांच पैसा भरि घी उसपर लपेटे संबुल जर्द पीस उसपर लेप करै बत्ती बनावै लोहे के गजपर लपेटे उस का तेल निकासे यह तेल पान पर लगावै लिंग के ऊपर बांधे नामर्द मर्द होवै ॥

अथ तिला तीसरा ॥

पारा १ पैसा भर संखिया १ पैसा भर मीठा तेलिया १ पैसा भर भट कटैया १ पैसा भर हल्दी या जहर १ पैसा भर नागबच्च १ पैसा भर संबुल १ पैसा भर हरताल १ पैसा भर चिरमिठी सुपेद १ पैसा भर १ धतूर के बीज १ पैसा भर बीरबहूटी १ पैसा भर मैनसिल १ पैसा भर सिंगरफ १ पैसा भर लोहबान १ पैसा भर केंचवे १ पैसा भर मालकांगनी १ पैसा भर केंचके बीज १ पैसा भर कनेर की जड़ १ पैसा भर जमाल गोटा १ पैसा भर सबको पीस शीशी में चढ़ावै पाताल यंत्र करि तेल निकालै रत्तीभर लिंगको ऊपर मलै ११ दिन पान बांधें तो नामर्द मर्द होवै ॥

अथ तिला चौथा ।

जायफल १ पैसाभर सुहागातेलिया १ पैसा भर मैनसिल १ पैसाभर चमेली के पत्तोंका रस ३ सेर मीठा तेल आधसेर सबको मिलाय औटावै जब रस जल जावै और तेल मात्र रहजावै तब तेल शीशी में भर रक्खै लेप कर इन्द्री पर पान बांधे ११ दिन तो नामर्द मर्द होय ॥

अथ पोटली सेक की नसें जुड़ैं ॥

कान का मैल १ पैसा भर हाथी दांत का बुरादा ६ मासे कुलथी ६ मासे केचुवे ६ मासे बीर बहूटी ६ मासे अकरकरहा ६ मासे जायफल ६ मासे जाविची ६ मासे केसर ६ मासे हवासल की चर्वी १ पैसा भर मछली का भेजा १ मासे नौसादर १ पैसा भर सेर की चरबी १ पैसा भर गौका घी १ पैसा भर इन सबको धेले भर की पोटली करइन्द्री पर ११ दिन सेंक करै तो नसें टूटी हुई फिर जुड़ैं और नामर्द मर्द हो जाय ॥

अथ लेप वास्ते नामर्द के टूटी नसें जुडैं ।

इन्द्रजव। चिर्मिटी। सपैदकनेरकी छाल। मालकांगनी। धतूरेकेबीज। बच। खुरासानी। कटाईकेबीज। गजपीपल इन सबको बराबरले कूटपीस कर लेप करे तो इन्द्री पर नसें जुड़ैं ॥

अथ लेप ॥

अरंडी१पैसा भर अफीम६ मासे अकरकरा ६मासे जायफल६मासे दालचीनी ६ मासे बीरबहूटी ६ मासे लौंग६ मासे इन सबको पीस कूट लेप करे ७ दिन पान बांधे तो नामर्द मर्द होय अथवा चमेली के पत्तों का रस निकाल के कूट। सुहागा। और मैनसिल सब को तिलीके तेल में एकत्र करके औटावै जब रंग बदल जाय तब उतारि ले शीशीमें धरै ४० दिन मलै तो टूटी हुई नसें जुड़ैं अथवा मीठा तेल। मालकांगुनी। छुहारा येसब बराबर ले गरमकर लेप करै ॥

अथवा गंगेरन। आक। कनेर। पीपर। कूट। बच और माखन मिलाय लेप करै तो नसें जुड़ें स्थूल होय अथवा अकरकरा२टं० सफेद कनेर के फूल आधा टं० जाइफल १ टं० सफेद गोंद आधा टं० महीन पीस मर्दन करै तथा महिषी के दूध में मिलाय लेपन करै तो नसें जुड़ें कठोर होय॥

अथ खाने की औषधि॥

कोंच के बीज और जड़ को कूट पीस कर ४ मासे दूध के साथ मिश्री मिलाकर दोनों समय कुछ दिन तक सेवन करै तो बल वीर्य बहुत होय सहस्र स्त्री से भोग करै सुख पावै अथवा उर्द का चून जौका चून गोखरू के बीज सतावर सबको बराबर ले दूध में माड़ कर घृत में बड़ी करै संध्या समय १ खाय ऊपर से दूध मिश्री पीवे ६ मास पर्यन्ततो बूढ़ा भी जवान होय वीर्यबंधे अथवा त्रिफला। धवई के फूल बराबर लेकर पीस एकरस की भावना दे ७ दिन धूप में सुखावे संध्या को मिश्री सहत में मिलाय चाटे ऊपर से दूध पीवै कुछ दिन सेवन करै तौ शत स्त्री भोग करै काम बंधे भूख लगे पुष्ट होय महा कामी होय अथवा किवांच की जड़। तिल। असगन्ध। बिदारी कन्द। साठी चावल इन सब को बराबर ले पीस ऽ१ दूध में पचावै फिर प्रात समय५ टंक प्रमाण नित्यखाय और परहेज करै तौमहा कामी होय और रतिमें सुख उपजै अथवा बिदारी कन्द और गोखरू इन दोनों को पांच टंक ले फिर पीस कै मिश्री दूध के साथ फांके तौ बूढ़ा भी जवान होय महा कामी होय प्रमेह और बिन्दकुमाद भी जाय अथवा जायफल। जावित्री। लौंग। केसर। असगन्ध। कालेतिल। और अफीम। सबों को दो२ मासे ले खरल करै और२ मासे की सहत में गोली बांधे प्रभात समय सात दिन तक खाय तौ नामर्द मर्द होय॥ अथवा उरद। यव। असगंध के पांच बीज। सतावर। तालमखाना। सेमर की छाल। सब समान ले कर जो कोई

प्रेमसे दूध सों खाय तौ शत स्त्री भोग करै धात बंधे पर पथ्य से रहै अथवा जव और उर्द का चून ८ पैसा भर दूध और मिश्रीके साथ पीवै तौ वीर्य वृद्धि और धातु पुष्ट होय अथवा अधेले भर आंवले को एक रस की भावना देकर छाया में सुखावै पीछे शहत और मिश्री से ४ टंक खाइ तौ धातु बंधे सदा कामी होय अथवा अकर करा ३ टंक तेज बल ३ टंक जाविची ३ टंक नागकेशर ३ टंक जाइफल ३ टंक लौंग ३ टंक इलायची समूची ३ टंक सफेद मूशली ३ टंक शर्करा ४ टंक नागर पान २५ ले फिर बड़े बैर समान पानों के साथ गोली बांधे प्रात समय खाय तौ निर्वीर्य भी वीर्यवान होय ॥

अथ इन्द्री सूख गई होय तिसकी औषधि ॥

गौका घृत १ पैसा भर श्वेत कनेर की जड़ की छाल ३० टंक भर लौंग ३ टंक माल कंगुनी ५ टंक कूट ५ टंक अजवाइन खुरासनी ५ टंक अकर करा ५ टंक सफेद गुंजा ५ टंक कुचिला ५ टंक इसबंद ५ टंक कनक बीच ५ टंक पीपल ५ टंक जाइफल ५ टंक जाविची ५ टंक अफीम ३ टंक कटेरे के बीज १५ टंक मूसली बीज ५ टंक घृत में मिलाय कूट राखे सात रोज सीसी में भर पातालयंत्र चुआवै फिर ४ रत्ती प्रमाण नित्य खाय तौ अति कामी होय खट्टा न खाय परहेज करै ॥

अथ इन्द्री के बांक पन जाने का इलाज ॥

बिनौले की मींगी और बकरे की चरबी मिला लेप करै तौ बांक पन जाय और स्थूल होय अथवा सुहागा कूट । मैंनसिल बराबर लेकर कपड़ छान कर दमड़ी भर चमेली के पत्ते का रस मीठे तेल में पकावै फिर कपड़छान कर तेल सीसीमें रक्खै इन्द्री लेपन करै अथवा मलै तोएक मासमें बांकपन जाता रहै अथवा समन्दरफल दारुहल्दी

सुलहठी शहत गधे के पेशाब में घिसके मलै तौ बांक पन जाय स्थूल होय और बढ़े ॥

अथ स्तंभन औषधि

जाविची। सुपेदकनेरकी छाल। समुद्र सोख। खुरासानी अजवायन। अफीम। जायफल। पीपर। चीनी खांड़ ये सब बराबर लेकर कपड़ छान करि गुड़में गोली बांधे एक टंक प्रमाण गोली १ रात को खाय तौ १२ घड़ी तक स्तंभन होय दूध पिये तब स्खलित होय ॥

अथ दूसरी विधि ॥

सुपेद कनेर की छाल २ टंक सुपेद कबूतर की बिष्टा २ टंक ले और २ टंक के प्रमाण शहत में गोली बांधे और पोस्त के पानी से घिस कर लिंगपर लेप करै तौ दो घड़ी तक स्तंभन होय तथा तालमखाना। मूसरी। शतावरि। बच।खुरासानी ये सब औषधि ५ टंक ले बिजया १५ टंक ले घी ४० टंक खांड़ ३६ पैसा भर बिजया पीस के बंगलापान के तीन पुट दे फिर खांड़ को पाक करि दो टंक प्रमाण गोली बांधे १ संध्या समय में खाय तो काम वृद्धि होय ॥

अथ तीसरीविधि ॥

चौपाई ॥

एक टंक जो केशरि करै। दोय टंक लौंगै ले धरै ॥
तीन टंक जायफल सु लेय। चारि टंक अहिफेन करेय ॥
दो रत्ती कस्तूरी करै। मधु से बांधि जो गोली धरै ॥
टंक टंक गोली परमान। सांझसमय येखाय सुजान ॥
स्तंभन करैकायाबलहोय। दिनदिनरूप सवायोसोय ॥
उपजैअग्निक्षुधाअधिकाय। मनसोमिटै न रतिकीचाय ॥

अथ चौथो विधि ॥

भांग ६ मासे अफीम ६ मासे पोस्त ६ मासे छुहारा १ तोला बादाम की गिरी एक तोला सोठ की जड़ एक तोला धतूरे के बीज ६ मासे कूट पीस माजूम बनावै ३मासे

खायतो बंधेज करै अथवा अफीम १ मासे भांग २ मा शहत २ मासे खांड़ २ मासे पीस गोली धेला भर की बनाय खावै औ ऊपर से दूध पीवै तो बंधेज होवै ॥

अथ पंचम विधि ॥

मूसली दोनों १ तोला तालमखाने ६ मासे बीजबंध ६ मासे कनेर की जड़ की छाल ६ मासे गूलर की छाल ६ मासे गोंदनी की छाल ६ मासे वड़ की जटा ६ मासे लिसोढ़ा ६ मासे सेलखड़ी ६ मासे सब कूट पीस छान कर पुराने गुड़ में गोली बांधे एक मासे भर २ घड़ी पहिले खावै बंधेज होवे फिर सेंधानोन से छूटै ॥

अथ बंधेज की छठी विधि ॥

जायफल ३ मासे रूमी मस्तंगी ६ मासे लौंग ६ मासे इलायची के बीज ६ मासे पीस कर शहत में गोली बांधे बेर प्रमाण खावै तो बंधेज होवै ॥

अथ बंधेज की सप्तम विधि ॥

आक के फूल ६ मासे धतूरे के फूल ६ मासे मूसली काली १ तोला इसबंध १० मासे जायफल ६ मासे सबको पीस कर शहत में गोली बांधे बेर समान दो घड़ी पहिले खावै ऊपर से जलेबी खावै औ दूध पीवै तो बंधेज होवै अथवा उटंगन के बीज पैसा भरि काच की शीशी पैसा भरि निशास्ता पैसा भरि पीस छान पानी से ३ माशे ग्रास को फांके तो स्तम्भन करै ॥

अथ बंधेजकी अष्टम विधि ॥

लौंग। अफीम। भांग। छोटी इलायची। जायफल। जावित्री। कमल गट्टा इन सबों को महीन करि पान के रसमें गोली बांधे २ माशे प्रमाण खाइ तौ स्तंभन करै बिना खटाई न छूटै अथवा जिमीकन्द और तुलसी की जड़ इन दोनों को बराबर लेय फिर महीन करि पान के रस में गोली बांधे बीड़ी के साथ खाय तो स्तंभन बहुत करै अथवा दालचीनी

और काले तिल बराबर ले फिर महीन करि शहत में ७ माशे प्रमाण गोली बनावै सोते समय एक गोली खाय तौ मैथुनके पीछे १ प्रहर इन्द्री प्रबलता रहै अथवा कौंचकी जड़ अंगुल भर काटि अपने मुख में राखे रस चूसे जब तक मुख में में रहै कभी न छूटै ॥

अथ बंधेजकी नवम विधि ॥

कनेरकी जड़ ३ टंक अफीम १ टं॰ आदी के रससे इन्द्री पर लेप करै स्तंभन हो पान खाय तब छूटै अथवा खिरनी के बीज की मींगी महुआ के बीज की मींगी दोनों को पानी से पीस बत्तीसी बनाय सुपारी के बीच में रक्खै तौ मूत्र स्तंभन होय अथवा सुपेद कनेर की जड़ और त्वचा छांह में सुखाइ कपड़छान करि पांच टंक जायफल तेलिया २॥ टं॰ आफीम चोखी १ टं॰ बच्छनागविष १ टं॰ सब को बड़की जड़ के रसमें हलकरिके झरबेरी के बैर प्रमाण गोली बांधें छाया में सुखाय धरि राखै फिर गोली को पोस्त के पानी में घिस कर लिंग पर लेप करै तौ स्तंभन होय ॥

अथ बंधेजकी दशवी विधि ॥

चौपाई ॥

जाती फल विजिया अरु नाग । मिश्री मेलहु द्वादश भाग ॥
कुचिला समुद्र सोख के बीज । ऊट कटाई लैंगहु दीज ॥
पहिले तीनि बराबरि चारि । गोली बांधो मधु में डारि ॥
रही पांच की बांधहु बरी । क्रीड़ा हरि राधा सों करी ॥

अथवा अद्रकल्लूकी १टंक तेजबल १टं॰ नकछिकनी १टंक गुड़ ३ टंक मिलाइ एकत्र करि २ टंक प्रमाण की गोली बनावै संध्या समय खावै ऊपर से दही बड़े चारि पैसा भरि खावै तो चारि घड़ी के वास्ते स्तंभन होय ।

अथ बंधेजकी ग्यारहवीं विधि ॥

कौंचके बीज ५ टंक बंगामूढ़ ५ टंक मिरच ५ टंक इन सबों को बकरी के दूध सों लिंग पर लेपन करै तौ स्तंभन बहुत

करै अथवा चना आधे कच्चे आधे पक्के और चूना दोनों एकत्र करि नींबूकी फांकमें रख अग्नि में पकावै पांच घड़ी पीछे निकाल करि चूसे फिर भोजन करै तौ सात घड़ी को स्तंभन होय फिर सादा नींबू चूसे तब छूटै ॥

अथ बन्धेज की बारहवीं विधि ॥

बेलगिरी। सोंफ। और सुपेदा। तीनों को एकत्र करि कूट पीस कपड़छान करि खाय तौ जल्दी न छूटै अथवा केसरि १ टंक लौंग २ टंक जायफल १ टंक कस्तूरी १ टंक सब को एकत्र करि गोली बनावै फिर एक गोली रतिसे ३ घड़ी पहिले खाय तौ ६ घड़ी स्तंभन होय ॥

अथ म्रतिका मदन गुटिका बंधेज पर—औषधि तेरहवीं ॥

इलायची। केशर। तज। लौंग। जायफल। जावित्री रूमीमस्तंगी। अकरकरा। नागरमोथा। पीपल। अफीम चंदन। कस्तूरी। और कपूर इन सब को एक एक टं० ले पीस शहत में २ मासा भरि की गोली बांध संध्या समय खाय तो बंधेज करै ऊपर से दूध पीवै यह और भी बहुत गुण करता है पराक्रम भी इससे नहीं घटता ॥

अथ बंधेजकी दूसरी औषधि ॥

कपूर १ मासे अफीम ८ मासे केवांच के बीज ८ मासे अकरकरा ८ मासे लवंग ८ मासे गुजराती इलायची ८ मासे सोधावच्छनाग २ मासे मालकांगुनी ८ मासेसिंगरफ शोधा ३ तोला इन सब औषधियों को १०० पान के रस में गोली ३ रत्ती प्रमाण की बनावै रात्रि को खाय ऊपर से दूध पीवै यदि इस पर भी गरमी करै तौ घी खाय और ऊपर से दूध पीवै जो धातु इस पर भी स्खलित न होय तौ कागदी नींबू से तुरन्त स्खलित होय ॥

अथ बच्छनाग शोधन क्रिया ॥

बच्छनाग का टुकड़ा करै और गाई के गोती में ७ दिन तक भिजो रक्खै परंतु गोती नित्य नई होय औ

पुरानी फेंकदे फिर सातवे दिन गौ के दूध में औटावै फिर निकाल कर छांह में सुखावै तब शुद्ध होय ॥

अथ शिंगरफ शोधन विधि ॥

शिंगरफ भेड़ के दूध में डोला यंत्र करि औटावै तब शुद्ध होय फिर इन दोनों को ऊपर लिखी हुई स्तंभन औषधि में मिलावै ॥

अथ बंधेज की पन्द्रहवीं बिधि ॥

जायफल ५। टं० जाविची ५। टं० कनक बीज ५। टं० मुलहठी ५। टं० पारा ५। टं० अकरकरा ५। टं० लौंग ५। टं० अफीम ५। टं० सब को एकत्र करि शहत में गोली बांधे गुंजा प्रमाण सोते समय खाय तौ १ पहर तक बंधेज रहै फिर नींबू से छूटै अथवा लजालू का बीज तोला १ दूध में पीस कर गोड़ के तलुए में लेप करै तौ निस्संदेह बंधेज होय जब धोवै तब छूटै ॥

अथ बंधेज की सोलहवीं विधि ॥

सफेद घोंघची का तेल निकालकर पैरके नखों में लगावै तौ उत्तम स्तंभन होय और नींबू चूसे अथवा नोन की डली मुंह में डाले तब छूटै अथवा शिंगरफ ३। मासे अजवाइन खुरासानी ३। मासे अफीम ३ मासे जाइफल ३ मासे जाविची ३ मासे अकर करा १ मासे सबको एकत्र करि पुराने पान के रस में मटर बराबरि गोली बांधे फिर रात्रि को सोते समय खाय तो अति बंधेज करै फिर नोनसे छूटै ॥

अथ बंधेज की सत्रहवीं विधि ॥

दोहा ॥

मुंडी इसबंध जायफल जाविची अहिफेन ।
विजिया अजवायन दुनी सातोंस्तंभन मैन ॥
पीपर कुमकुम मायफल चन्दन नागर जानि ।
मिर्च अकरकरा कंकोलहीयेसबसमकरिआनि ॥

द्वादश मास जो खावई अरु मेलै अहिफेन ।
नित्य खायजो प्रात उठि द्रवैनतत चणमैन ॥

छप्पय ॥

शशि १ केसरि हग २ लोंग राम ३ जाती फल जानत ।
बेद ४ टंक अहि फेन गुंज द्वै दृग मद आनत ॥
सकल पीसि इक ठोर शहत सूं बटी बनावत ।
रती द्वैक परिमाण रसिक संध्या का खावत ॥
बरी एक भुंजत पुरुष अति आनंद तिय होत जस ।
तब लग मनोज मुंचै नहीं जबलग खात न अम्लरस ॥

सोरठा ॥

चतुर गुंज अहि फेन टंक एक हरि बल्लभा ।
रहै थकित होइ मैन जो बारिद ऋतु शरदमें ॥

अथ बंधेज की अठारहवीं विधि ॥

गीतिका छन्द ॥

बिब फल एक टोरि मध्य द्वै टंक पीपरि डारियै ।
लपटाय पट पिंडोर ताकों सकल मूदि संवारियै ॥
आगिमें वह डारिकै मध्य महिं आंच पकाइयै ।
औषधि सपूरन करि सुचूरन छीन अंबर छानियै ॥
सम दालचीनी चारुलै फटकरी अकेर लाइयै ।
पुनि आध टांक प्रमाण मधु सों वरी सुन्दर ठानियै ॥
रतिआदि मुख जलधोइ तासो लिंग लेपनकीजियै ।
हृदय का आनन्द उपजै तियन का सुख दीजियै ॥

अथ माजूम बंधेज पर ॥

केसर १ तोला लौंग १ तोला जाविची १ तोला अकरकरहा १ तोला रूमीमस्तंगी १ तोला मूसली दोनों ४ तोला चोपचीनी २ तोला इलायची २ तोला दालचीनी १ तोला पीपल १ तोला हड़ अतीस १ तोला सतावरि २ तोला बेखबलधी २ तोला मदनमर्त ४ तोला लाल मिरच अजवाइन खुरासानी १ तोला कबाबचीनी १ तोला अफीम २ तोला पिस्ता ४ तोला बादाम ४ तोला सालममिस्री ४ तोला वरक

नुकरादी ४ तोला इन सब औषधियों को पीस छानकर बराबर की चीनीकी चासनी कर सबों को मिलाय माजूम बनावै फिर अस्तवान में भर रक्खै संध्या समय ६ मासे खाय और ऊपर से दूधपीवै तो अति बंधेज करै बल न घटै और भी अनेक गुण करै॥

अथ माजूम दूसरी बंधेज पर॥

दालचीनी १ पैसे भर जायफल १ पैसे भर जाविची १ पैसे भर लवंग १ पैसे भर गुजराती इलायची १ पैसे भर कस्तूरी १ मासे जेठीमधु १ पैसे भर केसर मासे १ सालममिश्री १ पैसे भर तीखुर ८ पैसे भर गोखरू ८ पैसे भर वंशलोचन १ पैसे भर सतावर १ पैसे भर किवांच १ पैसे भर भीमसेनी कपूर ३ मासे बादाम का घी १ पैसे भर भांगका काढ़ा ऽ॥ घी गायका ऽ॥ सेर दूध ऽ१ सेर भर इन सब औषधियों को इकट्ठा करिके मिश्री की चासनी करि उस्में सब दवाओं को मिला कर माजूम थाली में जमा दे और कतर ले फिर शाम को १ कतरा खाय तो स्तंभन खूब होय और गरमी कम होय॥

अथ तीसरी माजूम बंधेज पर॥

कस्तूरी १ तोला जाविची १ तोला कबाब चीनी १ तोला कौंच बीज मुंडी और मोथा १ तोला बीज बन्द गोखरू १ तोलामिर्च सुरख दराज १ तोला केसर १ तोला नाग केसर १ तोला इलायची १ तोला चोपचीनी १ तोला गाजर केबीज १ तोला मालकांगनी १ तोला मदन मर्त १ तोला समुद सोखी १ तोला बनफसा की जड़ १ तोला कहरवा १ तोला लौंग १ तोला जोज १ तोला दालचीनी १ तोला उटंगन के बीज १ तोला रूमीमस्तंगी १ तोला मोचरस १ तोला स्याह मुसली १ तोला पीपरामूल १ तोला इन्द्रजव १ तोला सतावरि १ तोला अकरकहा १ तोला गुड़तिवर्षी ८ पैसा भरि इन सबको पीस छानि गोली गुड़ में बांधै जायफल प्रमाण

सोती समय १ गोली खाय ऊपर से दूध पीवै अगर दूध न होय तौ शक्कर से गोली खाय ले अति स्तंभन करै ॥

बहुत से पुरुषों की धातु लड़कपन में बहुत सी लालमिर्च अथवा खटाई खाने अथवा धूपमें रहने या बहुत मेहनत करने के कारण पतली पड़ जाती है और इस कारण से वे स्त्री प्रसंग में रमणी को आनन्द देनेके कारण शरमिंदा होते हैं और वीर्य जल्दी पतन होने से वे भी कुछ रतिका आनन्द नहीं जानते इस कारण कुछ अच्छी २ धातु पुष्ट की औषधि भी लिखते हैं ॥

अथ धातु पुष्ट के यत्न ॥

अथ धातु पुष्टिके लिये मदन मोदक गुटिका ॥ प्रसंग धना गौरी। कूट। गेरू। छड़ीला। अजमोद। त्रिफला। सोंठि। मुलतानी। विदारीकंद। धनियां। मोथा। मोचरस। गज पीपल। और सेमर का मूसरा। कचूर। दोनों मूसली। पीपल। दोनों कटाई। पचज। सोंठि। गेहूं का सत। दोनों जीरे। जटामासी। भारंगी। करंजकी मींगी। मुलहठी। कमल गट्टा। सिंघारा। काकरा शृंगी। नागकेसर। पुष्कर मूल। शतावरि। तालीस। लौंग। जायफर। जाविची। दाल चीनी। सुपारी। अगर। दोनों चन्दन। चीनियां कपूर। भांगरा। निर्गुंडी। चव्य ये सब औषधि बराबर ले कपर छान करै फिर गौका दूध पांच सेर ले और खोआ करै जब दो सेर शेष रहै तब उतारि ले तिस पीछे इतनी औषधि और मिलावै लौंग। चिरोंजी। गिरी। छुहारा। बादाम। असगंध। दोनों इलायची। दाख। भांग आधसेर ले पोटली बांध दूध में डारि के औटावै पीछे सब औषधि मिलाय दो २ पैसा भरि की गोली बांधे एक गोली प्रभात खाय तौ धातु पुष्ट होय भूख बहुत बढ़ै क्षीणता मिटजाय ॥

अथ धातु पुष्ट की दूसरी विधि ॥

अथ कुचिलादि गुटिका ॥ धातु पर ॥ कुचिला १ पैसाभर

सोंठि ५ पैसा भरि अकरकरा । जायफर । लौंग । जाविची रूमी मस्तंगी ये सब औषधि धेला २ भरि ले कपर छान कर ऽ२ सेर बंगलापान के रसमें खरल करै पहर ४ तिस पीछे छदाम २ भरि की गोली बांधे एक गोली पान के साथ खाय तौ धातु पुष्ट होय । भूख बढ़ै । उचाट मिटै । बल बढ़ै । स्त्री की शक्ति होय ॥

अथ धातु पुष्ट की तीसरी बिधि ॥

सेंबर के बीज ऽ॥ सेर ले दूध ऽ५ सेरमें औटावै फिर बीज सुखाय ये औषधि डाले जाविची । जायफर । लौंग दालचानी पैसा २ भरि ले मूसली दोनों पाव भरि ले निर्गुंडी मुंडी भारंगी भांगरा ये दो२ पैसा भरि ले सब कपर छान कर दो२ पैसा भरिकी गोली बांधे १ गोलीसोते समय आध सेर दूध के साथ खाय तौ धातु पुष्ट होय और वृद्ध भी तरुण होय ॥

अथ धातु पुष्ट की चौथी बिधि ॥

अथ माजूम धातु पुष्ट पर । जायफर । जाविची । लौंग । रूमी मस्तंगी । चीनियां कपूर । अकरकरहा । दालचीनी । तज । पत्रज । अगर । तगर । बंशलोचन । चन्दन । खस । कचूर । असगंध । पीपर । सोंठि । मिरच । तिल । कौंच के बीज । सालममिश्री । इलायची । बादाम । अखरोट । छुहारा । कपास के बीज । मूली के बीज । तालमखाना बीजबन्द । गोखरू । दोनों मूसरी । इन्द्रजव । मुलहठी । नागकेसर । सुगंध बाला । मोचरस । बिदारी कंद । कुलीजन । दोनों जीरे । कास की जड़ । कमल गट्टा । धनियां । घिला बीत । ये सब औषधि पैसा २ भरि ले रेहू मछली का तेल १ पैसा भरि लोहबान का तेल १ पैसा भरि । गिरी ७ पैसा भरि गौका घी ऽ१ चीनीखांड़ ऽ२ ये सब औषधि कपर छान करि घीमें भूनै खांड़ मिलाय आंवरे प्रमाण

गोली बांधे १ गोली प्रभात और एक संध्या को खाय तो बहुत पुष्टता होय ॥

अथ धातु पुष्ट की पांचवी विधि ॥

असगंध नागौरी। १६ टंक कपर छान करि आठ टंक। भरि घी में भूनै तिस पीछे घी निचोय ऽ५ दूध में औटावै फिर आगे लिखी औषधि मिलावै सोंठि। तज। पीपरि। मिरच। पत्रज। इलायची। सिंघाड़ा। केलाकी जड़। काकराशृंगी। दोनों चंदन। वंग। शिलाजीत। जायफर। नागकेसर। मोथा। कचूर। जाबिची। वंशलोचन। दोनों जीरे। चीनियां कपूर। सुगंध वाला। अभ्रक। रूमी मस्तगी। सार। कोंचके बीज। तालमखाना। बीज बंद। कमल गट्टा। तवाखीर। दोनों मूसली। निर्गुंडी। भांगरा। चीनीखांड। ऽ३ ये सब औषधि कपर छान कर उसी दूध में मिलाय खांड़की चासनी करि दो पैसा भरि के प्रमाण गोली बनावै १ गोली प्रभात खाय तो प्रमेह दूर होय वीर्य्य को प्रवाह थंभै और अति पुष्ट होय ॥

अथ धातु पुष्ट की छठों विधि ॥

चोप चीनी। मुलतानी। सोंठि। मिरच। मोचरस। वायविड़ंग। सोंफ। ये सब औषधि पैसा २ भरिले कपर छान करि के ऽ१ गौ के दूधमें औटावै जब आध सेर शेष रहे तब संपूर्ण औषधि और ऽ॥ सहत मिलाय टका भरि की गोली बांधे १ गोली प्रभात खाय तौ धातु पुष्ट होय ॥

अथ धातु पुष्ट की सातवीं विधि ॥

असगंध १ पैसा भरि। ब्रह्म दंडी १ पैसा भरि। निर्गुंडी १ पैसा भरि ले खांड़ ऽ। भर मिलाय बकरी के दूध के साथ ७ दिन ले तौ धातु बंद होय अथवा वंशलोचन। बिजय सार। की गाद। खांड़ ये तीनों बराबर ले पीवै तौ धातु बन्द होय ॥

अथ धातु पुष्ट की आठवीं विधि ।

मोचरस । मिरच । दोनों मूसली । मुलहठी । दोनोंजीरे । असगंध । रूमी मस्तंगी । शंखाहूली । इलायची । निर्गुंडी । गिलोय । उर्द की दाल । पीपर । भारंगी लौंग । शतावरि । सोंठि । मुंडी । भांगरा । दालचीनी । तज । चिरोंजी । दाख । छुहारा । बीज बंध । तालमखाना । बिदारी कंद । त्रिफला ये सब औषधि पैसा २ भरि ले कपर छान करि ऽ२५ गौ के दूध का खोआ करै जब दो सेर शेष रहे तब सब औषधि मिलाय पावभरि घी और पाव भरि शहत मिलाय आंवले के प्रमाण गोली बांधे १ गोली प्रात:काल और १ संध्या समय खाय तौ धातु की पुष्टता होय भूख बढ़ै ॥

अथ धातु पुष्ट को नवीं बिधि ॥

बिदारी कंद ऽ॥ तुलसी के रसकी तीन पुट दे फिर छाया में सुखा गौ का दूध ऽ५ औटावै जब ऽ२ शेष रहै तबउतारि कै बिदारी कंद और ऽ॥ खांड़ मिलाय सात भाग करि सात दिन खाय तौ धातु बहुत पुष्ट होय और ७ स्त्री से भोग करने की शक्ति होय ॥

अथ धातुपुष्ट की दशवीं विधि ॥

कस्तूरी । केसरि । जाविची । दालचीनी । अकरकरहा । लौंग । असगंध । मूली के बीज । रूमीमस्तगी । मिरच । तज । पत्रज । दोनों । मूसली । पीपरि । शालम मिश्री । बीज बंद । गोखरू । अजमोद । माल कांगुनी । समुद्रफेन । समुद्रशोष । गिलोय । चीते की छाल । उटंगन के बीज । कौंचकेबीज । इन्द्रजव । इसबंद । पीपला मूल । कमलगट्टा । ये सब औषधि पैसा २ भरि ले कपड़ छान कर ऽ१ चीनी खांड़ मिलाय पैसा २ भरि दोनों समय खाय तौ धातु पुष्ट और अधिक होय और पुरुष के शक्ति भी बढ़ै अथवा चोपचीनी । मोचरस । बायबिड़ंग । सोंफ । गजपीपल । गाजर के बीज । सलगम के बीज । तेजबल । इन्द्र-

जव। नाग केसर। दोनों मूसली। सेमरका मूसरा। लसोढ़े के बीज। शालिममिश्री। ऊंटकटावाकीजड़। तालमखाना। दालचीनी। शतावरि। गोखरू। दोनों भारंगी। भांगरा। चिरोंजी। कमलगट्टा। कोंच के बीज। ये सब औषधि पैसा २ भरि ले और गौका दूध ऽ५ औटावै जब सेर भरि रहै तब कपर छान कर सब औषधि मिलावे फिर सेर भर खांड़ मिलाय २ पैसे भरि की गोली बनाय खाय तौ धातु की पुष्टता होय बल बहुत बढ़ै॥

अथवा दोनों गोखरू। कोंचकेबीज। बीजबंद। शतावरि। बिदारी कंद। तालमखाना। असगंध। अड़ूसे की जड़। उटंगन के बीज। गिलोय। रक्तचंदन। तज। पत्रज। इलायची। पीपरि। त्रिफला। नागकेसरि। सेमर का मूसरा। ऊंटकटेड़े की जड़। कुड़ाकी जड़। ऊंखकी जड़ ये सब औषधि पैसा २ भरि ले कपर छान कर ऽ५ गौ के दूध में औटावै जब ऽ१ शेष रहै तब उसमें ऽ२ खांड़ और सब औषधि मिलाय २ पैसा भर की गोली बांधे एक गोली संध्या और एक गोली सबेरे खाय तौ धातु को पुष्ट करै और पराक्रम को बढ़ावै॥

अथ धातु पुष्ट की ग्यारहवीं बिधि॥

मूसली काली पैसा भरि। मूसली सफेद पैसा भरि। रतनजोत पैसा भरि। अजमोद पैसा भरि। सैमल का पौदा पैसा भरि। सतावर पैसा भरि। मोचरस पैसा भरि। समंदर सोख पैसा भरि। तालमखाना पैसा भरि। बीजबंद पैसा भरि। पिस्ता का फूल पैसा भरि। धनियां के चांवल पैसा भरि। दक्खिणी गोखरू पैसा भरि। रूमी मस्तंगी पैसा भरि। बंशलोचन पैसा भरि। सालममिश्री पैसा भरि। शकाकुल पैसा भरि। उटंगन के बीज २ मासे। चिरचिरे की गिरी पैसा भरि। धावे के फूल पैसा भरि जायफल ३ मासे इलायची ३ मासे। दालचीनी ३ मासे। शीतलचीनी ३

मासे। सेलखड़ी ६ मासे। चुनियां गोंद ६ मासे। कीकर का गोंद ६ मासे। पिस्ता पैसा भरि। अखरोट की गिरी पैसा भरि। नारियल की गिरी पैसा भरि बादाम की मीगी पैसा भरि। तरबूज के बीज पैसा भरि। चिरौंजी पैसा भरि इन सब औषधियों को कूट पीस शहत में माजूम पकावै गोली तोला भरि की बांध खाय तो धातु पुष्ट करै बल करै और भी गुण करै॥

अथ धातु पुष्ट की बारहवीं विधि॥

तालकेश्वर २ मासे। बंग ३ मासे। दूधी ७ मासे। तिलकू ९ मासे। पवांरके बीज ९ मासे। बीजबंद ९ मासे। गोखरू ९ मासे। सोंठि ८ मासे। मिर्च ९ मासे। गुड़ ५ पैसे भरि। सबको कपर छानिकै गुड़ में गोली बांधै फिर एक गोली नित्य प्रातःकाल खाय और खट्टे मीठे से परहेज रक्खै तो धातु बहुत पुष्ट होय॥

अथ धातु पुष्ट की तेरहवीं विधि॥

अजवाइन खुरासानी चीनियां कपूर। जायफल। लौंग। बीजबंद। अकरकरहा। शिंगरफ। माजूफल। फिटकरी। सुहागा। इन सब औषधियों को बराबर ले कपरछान करै परंतु कपूर पीछे से डाले फिर नीबू के रसमें झरबेरी के बैर की समान गोली बांधे एक गोली प्रात समय खाय तो सब धातु व्याधि जाय परहेज करै गेहूं चने और घी खाय खटाई आदि से परहेज करै अथवा बदाम केसर। माजूछोटी। जाविची। शहत। मीठे तेल में पीस पिसते के फूल। और गुड़ में गोली बांधे झार बैर प्रमाण फिर एक गोली प्रातःकाल खाय खटाई और गरम चीज से परहेज करै तो धातु पुष्ट होय॥

अथ धातु पुष्ट की चौदहवीं विधि।

हनद गूंद और गिलोय बराबर ले चूर्ण करि सबेरे गोघृत और दूध से खाय पथ्य गेहूं और चने की अलोनी

रोटी का करै तौ धातु पुष्ट होय अथवा बबूर की फली। दूधी। झरबेर की जड़की छाल। सब समान लेय उसमें चीनी मिलाय २ पैसे भरि नित्य दूध के साथ सवेरे खाय तौ धातु पुष्ट होय अथवा ताल मखाना । गोखरू । समुद्र सोख । सुपारी का फूल । आफूपारा । गोंद । सेंवर की छाल । स्याहमूसली । स्वेतमूसली । बीजबंद । कमल गट्टा ये सब औषधि २ टंक भरि ले उसमें २१ पैसा भरि सिंघाड़े का आटा और २६ पैसे भर चीनी मिलाय १ पैसे भरनित्य खाय तौ धातु पुष्ट होय परहेज करै अथवा तालमखाना पैसा भरि। गोखरू पैसा भरि। सिलाजीत पैसा भरि सबको एकत्र पीस ३ पैसा भरि चीनी मिलावै फिर ७ दिन तक अधेला २ भरि नित्य खाय और परहेज करै तौ धातु पुष्ट होय सही अथवा तालमखाना ५ पैसे भरि। तज ५ पैसे भरि। चीनी गोंद ५ पैसे भरि सबको पीस राखै फिर उसमें दुगुना शहत मिलाय २ पैसा भरि नित्य दूधके साथ निगलि जाय इसका सेवन २१ दिन तक करै और दूध ६ पैसे भर से शुरूअ् करै फिर सेर भर तक नित्य बढ़ावता जाय तौ धातु अति पुष्ट होय॥ इती बाजी करणाधिकार नपुंसक पने के दूर करने की विधि सम्पूर्णम्॥

इति श्री महाराज धिराज महाराणा राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप
सिंह जी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रंथे नपुंसक पने
के दूर करने के लक्षण भेद संयुक्त यत्न निरूपणं
नाम द्वाविंशति मस्तरङ्गः ॥

अथ शरीर की पुष्टाई का यत्न ॥

बूढ़पने को दूर करने की सातों धातु सातों उपधातु और चन्द्रोदय को आदि ले रसकी क्रिया और उनके खाने की विधि लिखते हैं॥ सोना १ रूपा २ तांबा ३ पीतल ४ सीसा ५ रांगा ६ लोहा ७॥

अथ मृगांक की विधि लिखते हैं ॥

सोने का पतला वरक कराय गरम कर तेल और कांजी और मट्ठे में त्रिफले में गोमूत्र में कुलत्थ के काढ़े में २ बार बुझावे फिर सोने से दूना पारा ले और सोने के वरक को खटाई के साथ खरल करै पीछे उसका गोला कर फिर इन दोनों की बराबर आंवलासार गन्धक। उस गोले के नीचे ऊपर दे सरवे के संपुट में धर कपड़ मिट्टी दे गजपुट में फूंक दे इस तरह इसमें ३ पुट दे तब यह मृगांक चोखा होय १॥ अथवा सोने का चोखा वरक ले उसका सोलहवां हिस्सा इसमें शीसा डाले फिर इन दोनों को खटाई से खरल करै पीछे इसको नीचे ऊपर सोधी गन्धक इसकी बराबर दे और सरवेमें धर उसको कपड़ मिट्टी कर गज पुट में फूंक दे इस तरह सात पुट दे तौ मृगांक चोखा बनै २॥ अथवा सोने का वरक मंगाय इसकी बराबर इसमें खटाई से खरल में पारा चरावे पीछे इस में कचनार के रसकी १ पुट दे पीछे उसमें अम्लिकाले के रस की ३ पुट दे फिर करिहारी की जड़ के रसकी १ पुटदे पीछे उसमें सोने के वरक से चौथा हिस्सा मोती डाले और खरल करै पीछे उसमें सबकीबराबर सोधीगन्धक डाले पीछे २ दिन खरल करै फिर उसका गोला कर सरवे में धर कपड़मिट्टी कर गजपुट में फूंक दे पीछे उसको स्वांग शीतल होने पर काढ़ै तो मृगांक चोखा बने ३ ॥

अथ मृगांक मारण की द्वितीय विधि ॥

रांगा१पैसा भरि शीसा १ पैसा भरि ले एक नये ठीकरे में चूल्हे पर चढ़ाय नीचे बबूल की लकड़ी जलावे जबये तीनौं पिघलजांय तब उसमें बिसखपराकी सूखी जड़ के छोटे २ टूक डालते जाय और करछी से चलाते जाय जब वह भस्म हो जाय तब ढकना करि दाबि रक्खै शीतल होय तब

उतारे और १ रत्ती पानके साथ खायतौ दाह जाय और धातु बढ़ै ॥

अथ मृगांक के खाने की विधि ॥

१ रत्ती मृगांक ले उसमें सहत २॥ टं मिलाय उसमें पीपल एक मिलाय खाय तो खांसी, खास, छर्द, अरुचि, आदि ले सब रोगों को दूर करै २ महीने खाय तो शरीर को पुष्ट करै पथ्य से रहै खटाई आदि खाय नहीं ॥ इति मृगांक की विधि ॥

अथ रूप रसकी विधि लिखते हैं ॥

चांदी का वरक ३ भाग ले और हरताल का वरक १ भाग ले पीछे इन दोनों को खटाई से खरल करै फिर इनका गोला कर सरवे के संपुट में धर गजपुट में फूंक दे इसी तरह १४ पुट दे तो रूपरस निपट चोखा बने पीछे एक रत्ती नित्यखाय तो बहुत गुण करै ५ ॥ अथवा चांदी के पाचों के नीचे ऊपर रूपामक्खी बराबर कर दे और सरवे के संपुट में फूंक दे तो रूपरस चोखा होय १ रत्ती १ महीने तक खाय तो बहुत गुण करै ॥ ६ ॥

अथ रूप रस की दूसरी विधि ॥

रूपा २ पैसा भर जस्ता धेला भर ले लीला थोथा सों शोधै १ पहर नीबू के रसमें शोधे १ पहर गौके माठा में शोधे १ पहर खरगोश के मूत में शोधे १ पहर फिर तांबे के पात्रमें धरके फूंक देय तौ रूपा सिद्ध होजाय फिर१रत्ती नित्य आमले मुरब्बे में खाय तौ बहुत गुण करै ॥

अथ तीसरी विधि ॥

खजूर का रस १० सेर चूना २ सेर और १ शंख मंगाय कपर छान करै फिर इन तीनों को मिलाय ४ पहर कपर छान करै तिस पीछे इन सबको १ शंख के भीतर भरै तिसमें २ पैसाभर शुद्ध रूपा धरै फिर शंख पर ३ कपरोटी करि उसे १ मटुके के भीतर थोडासा चूना डारि बीच में

लटकावै और मटुके के पेट में छेद कर उसमें १ नली लगावै फिर उसका मुंह मूंद कपरौटी करै और नलीके मार्ग से मटुके के भीतर खजूर का रस डारै और नली का मुंह मूंदि गढ़िल्ला खोद घोड़े की लीद में ८ दिन गाड़ि रक्खे तौ रूपा सिद्धि होय फिर चावल प्रमाण पान में प्रात समय खावै दूध और घृत का सेवन अधिक करै तौ भूख लगावै शरीर को पुष्ट करै और भी अनेक गुण करै ॥

अथ चौथी विधि ॥

१ गोह मारि उसमें जितना समाय तितना रांगा भरि मुड़ और पूंछ काटि दोनों मार्ग सींदे फिर उसको एक कुल्हड़ा लगाय ऊपर सात कपरौटी करि सुखावै जब वह सूखि जाय तब उसमें गोह भरै और उसके मुंह पर २ कपरौटी करै और गज पुट में कंडा की आंच से फूंक देय जब शीतल होय तब निकाले तौ सिद्ध होय और १ रत्ती तोले भर रांगको बेधै और ५० वर्ष की अवस्था पर खाय तौ बहुत गुण करै और धातु बढ़ावै ॥

अथ पांचवीं विधि ॥

रांग ६ पैसा भर ले ढाककी लकड़ी में टांकी दे ऐसा छेद करै कि जिसमें १ सेर रांग समाय फिर उसमें नौन बिछावै तिसके ऊपर नकछिकनी बिछाय रांग धरै तिसके ऊपर फिर नौन बिछाय और बज्र मुद्रा करि उस पथली में चारों ओर से कंडा भरि आंच दे जब शीतल होय तब निकालै तौ सिद्ध होय और १ रत्ती तोले भर रांग को बेधे और खाय तौ पूर्ववत् गुण करै ॥

अथ छठवीं विधि ॥

गंधक १ पैसा भरि सोरा १ पैसा भर गोभी का रस १२ टका भर ले औ प्याले मगाय उनमें चार२ टका भर गोभी का रस डाले तिस पीछे सोरा और गंधक ले गोभी के रसमें २ पहर खरल करै फिर उसको प्याले में डारि

चूल्हे पर चढ़ाय दे और करछा से टालते जाय जब रस जलजाय तब दूसरा प्याला चढ़ाय दे फिर तीसरा प्याला चढ़ावै और ऊपर से रस डालता जाय जब पिघल जाय तौ भस्म होय और १ रत्ती तोले भर रांग को बेधे और पूर्ववत् बहुत गुण करै ॥

अथ सातवीं विधि ॥

पारा और रूपे के ताव दोनों बराबर ले फिर इनको तेल में फिर मठे में फिर गोमूत्र में फिर कांजी में फिर कुथली के क्वाथ में शोध कर त्रिफला क्वाथ सों शोधे फिर इनको खरल में जब तक पिट्ठी के प्रमाण न होजावै घोटे फिर गंधक हरताल ये दोनों बराबर ले उसमें मिलाय नीबू के रससों घोट फिर करवे में धरके कपरौटी करै आंच देय रूपा सिद्ध हो जाय खायतो अनेक गुण करै ॥ इति रूप रस की विधि सम्पूर्ण ॥

अथ तांबेश्वर की विधि ॥

चोखे तांबे का पत्र गाढ़ा कराय तेल में मट्ठे में त्रिफले के रस में सात बार शोधि ले पीछे उन पत्रों की बराबर रूपामक्खी महीन पीस उन के नीचे ऊपर दे सरवे में संपुट कर गजपुट में फूंक दे तो तांबेश्वर चोखा बने पीछे इन १ रत्ती नित्य १ महीनेतक खाय तो श्वास खांसी को आदिले सर्ब रोग जांय और बहुत गुण करै ॥ ७ ॥

अथ दूसरी विधि ॥

तांम्र ५ तोला ले पत्र कराय प्रथम गो मूत्रमें ७ बार फिर माठा में ७ बार बुझावै तिस पीछे इमली के फूल मगाय १ हांडी में भरै तिस के बीचमें परत दे तांबके पत्रमें धरै और पानी डारि बारह पहर की आंच देय तिस पीछे पत्र रेति कढ़ाई में डारि नींबूके रसमें खरल करै रफि ५ तोले पारा मगाय कागजी नींबूके रसमें २पहर खरल करि तांबे में मराय दे तिस पीछे सात तोले गंधक मगाय नींबूके रस

में खरल करि उसकी गोली बनावै गोली के भीतर तांबा धरै फिर उसके ऊपर नीबू के रससे ७ कपरौटी करै फिर मटकी मगाय मटुकी के ऊपर ७ कपरौटी करिके सुखावै उसमें बालू भर बीचमें यंत्र धरै और बज्रमुद्रा करि भट्ठी पर चढ़ाय २४ पहर की आंच दे जब शीतल होय तब उतारै इसकी मात्रा १ रत्ती खाय तौ ५ सेर की भूख होय सरदीदूर होय नामर्द मर्द होय कास, श्वास, जाय बात पित्त जाय बात दूर होय ॥

अथ तीसरी विधि।

तांबा ५ पैसा भरले पत्र करावै फिर उन्हें तपाय सरसोंके तेल में ७ बार बुझावै नकछिकनी के रसमें ७ बार बुझावै घिक्कुवारिके रसमें ७बार बुझावै आकके दूधमें ७ बार बुझावै तिस पीछे अमली के फूलन में १२ पहर औटावै फिर खटाई की हांडी में बंद कर ३दिन अग्नि करता जाय चौथे दिन रेतवावै और इस तांबे के चूर्ण में २॥ पैसे भर पारा मिलाय कराही में डारि नीबू के रसमें खरल करि पारा चराय दे फिर उसमें १ पैसा भर गंधक डारि नींबूके रसमें गोली बनावै फिर कुम्हारसे कटोरासा संपुट बनवाय उसमें चौराई की जड़ पीस के बिछावै तिस पर गदा पुरैना की जड़ बांटि गोली के ऊपर लपेटै फिर चौराई की जड़ पीस संपुट के भीतर बिछावै और उस पर गंधक डारि भीतर गोला धरै फिर संपुट को बंद कर ऊपर से ७ कपरौटी करै और उसे मोटी हांडी में धरै हांडी पर ७ कपटरौटी कर पेंदी में छेद कर उसमें बालू भरै उस बालू के बीच में तांबे के गोले को धरि हांडी के मुह पर परिया धरि बज्रमुद्रा करै तिस पर भी ७ कपरौटी करै फिर उसे भट्ठी पर चढ़ाय नीचे २४ पहर तक तेज अग्नि लगावै जब स्वांग शीतल होय तब उतारै तौ औषधि सिद्ध होय फिर उसमें अकरकरहा। लौंग। कुटकी मिलाय बंगला पान के रसमें

ऐसी गोली बांधे जिसमें गोली पीछे २ रत्ती तांबा आवै और १ गोली खाय तौ खांसी, कफ, ऊर्द्ध स्वास, आमवात, धातु क्षीणता, दूरि होय और काम की वृद्धि होय जो इस औषधि को नियम करि खाय तौ वृद्ध देह तरुण हो और देह के वात विकार जांय नेत्रों में ज्योति बढ़ै और बहुत गुण करै ॥

अथ चौथी विधि ॥

एक सेर तांबे के पत्र कराय गोमूत्र में मट्ठा में तेल में तीन तीन बार बुझावै फिर पारा पाव सेर गंधक पाव सेर इन दोनों को घिकुआरि के रस में एक दिन घोटि तांबे के पत्रों पर लेप करै फिर सुखाय दूसरी बार लेप कर हांडी में धरि और ऊपर से परिया से मुह बंद करि हांडी को चूल्हे पर चढ़ाय नीचे से ८ पहर अग्नि जलावै जब लाल होजावै तब काढ़ि ले तौ तांबेश्वर सिद्धि होय १ रत्ती प्रति दिन पान में खाय तौ सर्व रोग जांय गुण करै ॥

अथ पांचवीं विधि ॥

तांबे के पत्र करावै फिर पारा और गंधक बराबर ले नींबू के रस में घोटि उन तांबे के पत्रों पर लेप करै फिर उन्हें संपुटमें धरि ऊपर सात कपरोटी करि बकरी की लेंड़ी की आंच में ७ बार गज पुट दे जब स्वांग शीतल होय तब निकाले तौ तांबेश्वर सिद्धि होय मात्रा रत्ती १ पान के साथ ले तौ सर्व रोग जांय गुण करै अथवा तांबेश्वर रत्ती तीन। तज। पत्रज। बच। नागकेसर। लौंग। जायफल। जावित्री। त्रिकुट। अकर्करा। मजीठ। ये औषध चार२ मासे ले घिकुआर के रस में गोली बांधे अथवा शहत और मिश्री में गोली बांधे और प्रति दिन खाय तौ धातु बढ़ै और कास, स्वास, बीसो प्रमेह, आमवात, छर्दि, अजीर्ण, रक्त पित्त, दाह ये सब रोग जांय और भी अनेक गुण करै ॥

अथ छठी विधि ॥

तांबा १ पैसा भरि नैनियां गन्धक १ पैसा भरि ले

डिबिया में धरि कपरौटी करि अरने कंडों में दहका दे जब शीतल होय तब निकाल पथरसंगा और मूली दोनों का रस धेला २ भरि डारि खरल करै फिर आंच दे तौ तांबेश्वर सिद्ध होय और जो ये सब औषधि बंगमें डारि खरल करि फूंकदे तौ बंगेश्वर सिद्ध होय ॥

अथ सातवीं विधि ॥

४ पैसा भरि तांबे की कटोरी बनवाय गरम करि १०१ बार नींबूके रस में बुझावै तिस पीछे २ सेर कारे धतूरे के पत्तोंकी २ रोटी बनावै उनमें से एक हंडिया की पेंदी में बिछावै तिसके ऊपर ४ पैसा भर आमलासारगंधक पीस के धरै तिसके ऊपर वह रोटी औंधावै फिर दूसरी रोटी कटोरी के ऊपर धरि दोनों का मुख बन्द करदे फिरि हंडिया का मुख बन्द करि १२ पहर की आंचदे जब स्वांग शीतल होय तब निकाले तौ तांबेश्वर सिद्ध होय मात्रा १ सरसों बराबरा पानमें २१ दिन खाय तौ काया कल्प होय ज्वर जाय गुण बहुत करै ॥

अथ आठवीं विधि ॥

तांबा १ पैसा भर रांग धेला भर नकछिकनी छदाम भर घरिया में धरि फूंक दे तौ तांबा भस्म होजाय फिर उसे पिसी हुई पथरसंगा कीजड़ । नकछिकनी समेत पारा गंधक मिलाय घरिया में धरि फूंक दे तौ तांबेश्वर सिद्ध होय ॥

अथ नवीं विधि ॥

दोहा ॥

घोटि जंभीरी रंग सों पारा गंधक दोय ।
पत्र लपेटै ताम्र के तासों यह विधि होय ॥
सरवा मध्ये पत्रधरि कपरौटी करवाय ।
तीनवार दमि आंचदे ताम्र भस्म होजाय ॥

अथ दसवीं विधि ॥

प्रथम अधोतर या गजी की चद्दर ले चने के खेत में-कई दिन तक प्रातःकाल फेरे जब उसमें चनों की नोनी लग जाय तब उसकी नोनी झारले तिस पीछे सात चुकरियां मंगाय उनमें नोनी भरि बीच में एक २ पैसा धरै फिर उनके मुंह दीवलों से बन्द कर ऊपर से कपरौटी कर सुखावै तिस पीछे गढ़िल्ला खोदि उसमें कंडा भरि बीच में चुकरियां धरि फूंक देय जब अग्नि शीतल होय तब निकाल लेय तौ वह १ रत्ती तोले भर रांगा को बेधे यह सदाशिव का कहा हुआ है ॥ इति बंगेश्वर विधि ॥

अथ नागेश्वर की विधि ॥

सीसेको गलाय तेल में मट्ठे में गोमूत्र में कांजी में त्रिफले के पानी में आकके दूध में ७ बार बुझावै पीछे कड़छुले में धर चूल्हे पर चढ़ाय नीचे अग्नि जलावै पीछे सीसेके ऊपर पीपल के छोतरे का चूर्ण और अमली के छोतरे का चूर्ण सीसे से चौथाई ले उस सीसे के ऊपर थोड़ा २ डालता जाय और लोहेकी कड़छी के पेंदेसे उसै १ दिन निरन्तर रगड़ता जाय पीछे इसे जीरे से उसन गजपुट में फूंकदे पीछे इसी तरह जंभीरीके रसकी १० पुटदे पीछे नागरबेल के पत्तों के रसकी १० पुट दे फिर सीसे के बराबर मैनसिल ले उसै कांजी से खरल करै पीछे टिकड़ी बांधि सरवे में धरि गजपुट में फूंकदे पीछे स्वांगशीतल होनेपर काढ़ै इसी तरह ६० पुट दे तो नागेश्वर चोखा होय गुण बहुत करै सब रोगोंको दूर करै खानेकी मात्रा १ रत्ती तथा २ रत्ती ॥

अथ दूसरी विधि ॥

सीसेको शोध कड़छुले में चढ़ावै नीचे अग्नि जलावै केथड़े के घोटे से १ दिन निरन्तर रगड़ताजाय वह भस्म लालहोय उसकीमात्रा १रत्ती नित्य २१ दिन खायतो बहुत गुण करै ॥

अथ तीसरी विधि ।

सीसा ५ पैसा भर मैनसिल १ पैसा भर छाछियागन्धक १ पैसा भर लेकर सीसे के पांच पत्र करावै तिस पीछे दो संपुट मंगाय दोनों औषधि महीन पीस कर उनमें बिछावै तिसके ऊपर परत देके सीसे के पत्र धरै फिर ऊपरसे और औषधि दे ऊपरसे दूसरा दिया धरि ७ कपरौटी करै फिर उस संपुट को एक अंगीठीमें धरि अरने कंडोंसे गजपुट में फूंक दे जब शीतल होय तब निकाले १ रत्ती खाय तौ धातु बढ़े भूख बहुत होय ॥

अथ वंगेश्वर की विधि ॥

रांगे को गलाय २ तेल में मट्ठे में गोमूत्र में कांजी में त्रिफले के पानी में सात बार बुझावै और आक के दूध में सात बार बुझावै पीछे कड़कुले में धर चूल्हे पर चढ़ाय रांगे से चौथाई पीपल का छोतरा और चौथाई अमली का छोतरा इन्हैं महीन पीस रांग के ऊपर डालता जाय और कड़छी के पेंदे से २ पहर तक रगड़ता जाय तब वह रांगा भस्म होय पीछे रांगे के बराबर हरताल ले खटाई से खरल करै गजपुट में फूंक दे इसी तरह १० पुट दे तब बंगेश्वर सिद्ध होय गुण बहुत करै मात्रा १ रत्ती ॥ अथवा वंग पाव भर ले उसकी बराबर पारा ले इनको एक जीव कर पल करै पीछे एक बड़ा उपला ले उसमें कसेला का चूर्ण पाव भर बिछाय उसके ऊपर रांगे का टुकड़ा धरै फिर ऊपर कसेले का चूर्ण धर आस पास उपले धरै बिना पवन की जगह में फूंक दे उस रांग के फूले हो जांय यह बहुत गुण करै ॥

अथ दूसरी विधि ।

रांग ऽ॥ ले कढ़ाईमें पिघलावै तिस पीछे ऽ३ अजवायन और हल्दी ऽ। भरके एकत्र पीस कढ़ाई में रांगपर बुरकता

जायऔर ढांककी लकड़ीसे चलाता जाय तौ रांग मरै ॥ अथ खाने की बिधि ॥ ३तोलेबंग और लौंग। इलायची। जायफल। जावित्री। सोंठि। मिरच। पीपल। तज। पत्रज। नागकेसर। ये सब औषधि बराबर ले १ टंक की गोली बांधे १ गोली प्रति दिन खाय तौ शुक्र वृद्धि होयऔर क्षयता हड़फूटन दाह मूत्रकृच्छ्र ज्वर ये सब रोग जांय ॥

अथ तीसरी विधि ॥

रांगा और पारा बराबर ले अग्नि दे तौ रांगा मरै और जो गुण स्वर्ण के खाने से होय सो बंगेश्वर करै ॥

अथ चौथी विधि ॥

रांगा ५ पैसा भर हल्दी १५ पैसा भर दोनों अजवायन १५ पैसा भर ले कपरछान कर रांगे को गरम कर कोरे खपरा में चढ़ाय पिघलावे ऊपरसे थोड़ी२औषधि डालता जाय जब सिद्धि होजाय तब सब समेट एक दीवामें बंदकर कड़ी आंच दे जब शीतल होय तब निकाल फिर लौंग इलायची के अनोपान से खाय तौ जरनि जाय भूख बढ़े सोंठि से लेय तौ बात जाय भूख बढ़े और अनेक गुणकरै ॥

अथ पांचवीं विधि ॥

रांगाको लोहे की कलछीमें तपाय गौका मट्ठा तिलका तेल और गोमूत्र का बहेड़े की कठौती में डारि इक्कीस २ बार बुझावै तिस पीछे गज भर लंबा और गज भर चौड़ा गढ़िल्ला खोद उसमें आरने कंडे भरि ऊपर से पीपल की छाल बिछाय तिसके ऊपर रांगा धरि पीपल की छाल धरै फिर और कंडा धरि फूंक देय तो भस्म होय ॥

अथ छठी विधि ॥

टाट बिछावै तिसके ऊपर भांग बिछाय रांग के पत्र धरै इसी भांति करै परत देके गज पुट में फूंक देय तौ बंग सिद्ध होय ॥

अथ सातवीं विधि ॥

चौपाई ॥

पहिले दूध आक को लावै।
तासों ले हरताल पिसावै॥
रांग पाव सों वह हरताला।
लपिटावै इत उत ततकाला॥
ताऊपर पीपल को बकला।
सूखो कूटि देय पुनि सकला॥
धरि सरवा में करि कपरौटी।
गज पुट आंच देय पुनि मौटी॥
सात बार यहि बिधि पुट देय।
पीपल वकला फिरके लेय॥
बार बार इमि आंच दिखावै।
मरै वंग सो कामें आवै॥

अथ सार की बिधि ॥

गजबेलि के लोहे का चूर कराय उसे तेल में मट्ठे में गोमूत्र में कांजी में सातबार बुझावै पीछे छीलर के रससें खरल करै गजपुट में फूंक दे पीछे ग्वार के पट्ठे की ३ पुट दे पीछे आकके दूधकी ७ पुट दे और थूहर के दूधकी ७ पुट दे त्रिफले के रसकी ७ पुट दे डोड़ा के पत्ते के रस की ७ पुट दे इसी तरह पुट दे दे भस्म कर पत्थर के ऊपर पीसे जब तक वह जल ऊपर तिरै तब तक भस्म करै तो गुण बहुत करै अथवा गजबेलि के चूर में नींबू के रस की और नौसादर की २१ पुट दे गज पुट में फूंकता जाय और पीसता जाय तो सार चोखा होय और गुण बहुत करै मात्रा १ रत्ती नित्य खाय तो सर्ब रोग को दूर करै॥

अथ दूसरी विधि ॥

चौपाई ॥

करि सरिया गज बेलि रितावै।
ताको चूर्ण तोलि मगवावै॥

ता चूर्ण को द्वादश अंशा।
ईंगुर डारै बिधि औसंशा॥
घृत कुमारि को डारै नीर।
दोय पहर लों घोटै धीर॥
सरवा मधि धरि करि कपरौटी।
आंच देय गज पुट की मोटी॥
फिरि फिरि घोटै फिरि २ आंच।
बार बार इमि करिये सांच॥
तब लोहा मरिजाय निदान।
होय सिद्धि औषधि परमान॥

अथ रस मारण बिधि॥

लोह और चूना ५ पैसा। भर मैंनसिल धेला भर। कसीस धेला भर। ये दोनों औषधि सूखी पीसे फिर औषधिन के तीन भाग करे एक भाग चुकरिया में पानी डारके डारै फिर लोह और चूना दोनों को लोह के बासन में डारि लोह के घोट से घोटै और औषधिन का पानी डालता जाय इस भांति ७ दिन घोटै तिस पीछे सात आंच दे जब शीतल होय तब उतारै तौ सिद्ध होय अनोपान सोंठि १ टका भर मिश्री १ टका भर ये दोनों औषधि मिलाय के २१ पुड़िया बांधे और क्षीणधातु पुरुषको देय ऊपर से ऽ१ गौ को दूध पिलावै तौ धातु वृद्धि होय॥

अथ दूसरी बिधि।

सार २ पैसा भर ले मूंगा के रसमें ७ बार बुझावै फिर मूली के रसमें ७ बार बुझावै तिस पीछे धेला भर नवसादरले सारमें मिलाय सूखे खरल करै और थोड़ा सा पानी गेरि चुकरिया भरके ३दिन राखै तौ सार सिद्धि होय सीसा धातु को ऽ१ दूधके अनुमान से १ रत्ती देय तौ धातु बढ़ै॥ इति सार बिधिः॥

अथ धातु उपधातु के मारण की विधि ॥

सोनामक्खी और रूपामक्खी १ अभ्रक २ मैनसिल ३ हरताल ४ पारा ५ खपरिया ६ सुरमा ॥ ७ ॥

अथ सोना मक्खीका शोधन ॥

सोनामक्खी ३ भाग सेंधानोन १ भाग ले इन दोनोंको लोहे के करछुले में धर बिजौरे के रसमें और जंभीरी के रसमें जहां तक लोहे के पत्र लाल हो जांय तब तक पकावै तो सोना मक्खी शुद्ध होय ॥ १ ॥

अथ सोना मक्खी का मारण ॥

सोनामक्खी को कुलत्थ के काढ़े में पीस सरवे के संपुट में धर गजपुट में फूंक दे अथवा तेल में पीस गजपुट दे अथवा मट्ठे में पीस गजपुट दे अथवा बकरी के दूध में पीस गजपुट दे तो सोनामक्खी मरै इसकी मात्रा १ रत्ती खाय तो गुण करै ॥ २ ॥

अथ अभ्रक शोधन मारण विधि ॥

काले भोडल को ले अग्नि में तपाय दूधमें बुझावै अथवा चौलाईके रसमें बुझावै अथवा खटाई में बुझावै तब अभ्रक शुद्ध होय पीछे अभ्रक का पृथक्२ पत्र कर उन्हें कूट महीन कर सुखाय दे पीछे उन्हे कम्बल में धरै और उसमें शालि मिलाय अभ्रक को शालि समेत मसल २ महीन कम्बल से पानी कर पृथक् बासन में बाहर काढ़ै तब वह धान्याभ्रक होय पीछे इस अभ्रक को आकके दूधमें खरल कर इसकी टिकड़ी बांधे पीछे सुखाय आकके पानी में लपेट कपड़ मिट्टी दे बिना सरवे गजपुट में फूंक दे इसी तरह ७ पुट दे और इसी तरह थूहरके दूधकी ७ पुट दे इसी प्रकार ग्वार के पट्ठे की ७ पुट दे इसी तरह चौलाईके रस की ७ पुट दे अथवा नागरमोथा के काढ़े की वा कांजीकी वा चित्रक के काढ़े की वा जंभीरी की वा त्रिफले की वा गोमूत्र की इन

सबकी सात२ पुटदे तौ अभ्रक बहुत बने और यह अभ्रक नित्य१ रत्ती २ महीने तक खाय तो प्रमेहको आदि ले सब रोग जांय और शरीर को बहुत पुष्ट करै और नपुंसकपना दूर होय ॥

अथ अभ्रक की दूसरी विधि ॥

सुपेद भोडल की बराबर गुड़ ले उस गुड़ को पानी में घोले पीछे भोडल के पत्तों को गाढ़ा २ लेप करै और उन पत्तों के ऊपर सोरा भुरकाता जाय सोरा भोडल से आधा ले और भोडल की तह करता जाय भोडल की तह को उपलों में फूंक दे वह भोडल खिल जाय निश्चन्द्र होय यह भी गुण करै मात्रा १ रत्ती की ॥

अथ अभ्रक मारने की तीसरी विधि ॥

डेढ़ तोले अभ्रक लेकर टाट की थैली में बांधकर खूब मलै जब वह सैदासी होजावै तब उसमें डेढ़ तोला गुड़ और डेढ़ तोला कलमी शोरा मिलाकर खरल करै फिर उसके चार भाग करै और चारोंको चार बड़े २ उपलों में खोद कर रक्खै और उन पर एक २ उपला और रक्खै फिर एक गढ़ा हाथ भर गहरा खोद कर उसमें जितने आरने उपले आवें भर कर उन चार उपलों को रक्खै फिर आंच लगादे जब शीतल होय तब निकालै इसी प्रकार से हर दफे गुड़ और कलमी शोरा मिलाकर चार दफे फूंके फिर सिद्ध हो जाय तब२ रत्ती प्रमाण मुनासिब औषधियों के साथ खावे तो हर एक बीमारी को आराम करै ॥

अथ चौथी विधि ॥

श्याम अभ्रकले दूध तेल कांजी औ कुलथीका क्वाथ इनमें इक्कीस २ बार बुझावै फिर शोरा को गरम पानी में १०१ बार बुझावै फिर खरल करि टिकिया बांधि सुखावै तिस पीछे टिकिया की बराबर शोरा दे गजपुट की आंच दे तो सिद्ध

होय जो कच्चा रहै तौ फिर आंचदे फिर और औषधी के साथ खाय तौ सरदी गरमी के सब बिकारों को दूरकरै॥

अथ पांचवीं बिधि॥

भुड़हर ट१० और गुड़ पुराना ऽ= शोरा ऽ= लेकर पुराने गुड़ और दोनों को ऊपर नीचे चढ़ाय ।ऽ कंडों में फूंक दे जब शीतल होय तब हौले हौले निकाल लेवे॥ इति अभ्रक विधि॥

अथ हरताल का शोधन मारण॥

पीले हरतार का पत्र कर और उसकी पोटली बांधि हांड़ी में कांजी भर दोला यंत्र में १ पहर तक पकाइये पीछे चूने की कली के पानी में पोटली कर दोला यंत्र से ४ पहर पकाइये इसी तरह हरताल को पकावै तौ हरताल शुद्ध होय॥

अथ हरताल का मारण॥

शोधी हरताल को खरल में महीन पीस दूधके रसमें २ दिन खरल करै पीछे खरैटी के रसमें २ दिन खरल करै पीछे इसका गोला कर छायामें सुखावै फिर छीलकी राख को हांडी में दाब २ भरै उसके बीचमें इस हरतालके गोले को धरै पीछे हांडी को चूल्हे पर चढ़ाय नीचे ३ दिन तक निरंतर क्रमसे मंदमध्य और तेजअग्नि जलावै और उसका धुआं निकलने दे नहीं और धुआं निकले तो धुवेंको छीले की राख से मूंदता जाय पीछे स्वांग शीतल होने पर उस हरताल को हांडी में से काढ़ै तब यह हरताल सिद्ध होय सुपेद होय खाने में मात्रा १ रत्ती खाय तो सब रोग मात्र को यह दूर करै है और भूख बहुत करे॥ इति हरताल मारण विधि॥

अथवा प्रथम हरताल को इस बिधि से शोध ले पीछेइस हरताल को ग्वारके पट्ठे के रसमें ३ दिन खरल करे पीछे

चूल्हे पर चढ़ावै फिर उसके नीचे ४ पहर अग्नि जलावै फिर स्वांग शीतल होने पर काढ़ै और वह पूरी तौल उतरै निरधूम होय उसे पानमें १ रत्ती खाय तो यह कोढ़ को दूर करे है खाने में मोठ चना की रोटी अलोनी खाय तो कोढ़ जाय ॥

अथ हरतार की दूसरी विधि ॥

हरताल २ पैसा भर पारा २ पैसा भर ले सूखा खरल करै २ पहर तिस पीछे सूंगाके रस में खरल करै १२ पहर अर्क के दूध में खरल करै १२ पहर सहजना के रसमें खरल करै १२पहर मकुना सेंउड़के दूधमें खरलकरै १२ पहर तिस पीछे माटी की घरिया में भरि १०१ कपरौटी करिके खूब सुखावै तिसपीछे माथे बराबर गढ़िला खोद उसमें बहुतसी लकड़ी और कंडे भरै और उसके बीच में उस हरतालके यंत्र को धरि कर फूंक दे जब शीतल होजाय तब युक्ति से काढ़ले यंत्र फूटने न पावै जाड़े में पान के साथ खावै तौ ५५ की भूंख करै गर्मी में मक्खन के साथ खाय तौ रात्रि भर में ७ स्त्री भोग करै ॥

अथ तीसरी विधि ॥

हरताल ५ पैसा भर ले गोमूत्र में ८ पहर भिजोवै तिस पीछे गोमूत्र में ३ दिन खरल करै सेंउड़ के दूध में खरल करै ३ दिन सहदेयी के रसमें खरल करै ३ दिन आकके दूधमें खरल करै ३ दिन राई के रसमें खरल करै ३ दिन चिरचिरा के रसमें खरल करै ३ दिन गुवारि के रसमें खरल करै ३ दिन बकरीके दूधमें खरल करै ३ दिन नकछिकनीके रसमें खरल करै ३ दिन नींबू के रसमें खरल करै ३ दिन बड़के दूध में खरल करै ३ दिन पीछे चंदिया बांधि सुखावै ७ दिन फिर माटी हांडी मंगाय सात कपरौटी कर सुखाय उसमें पीपल की लकड़ी की राख भरै तिसके बीचमें भोडल के २ पत्र मंगाय उनके बीच में उस चंदिया को धरि ऊपर से फिर

उसी राख को हाथ से दबाय भरै फिर हांडी के मुंह पर परिया धरिके बज्रमुद्रा करै तिस पीछे बडे चूल्हे पर चढ़ाय ३२ पहर की आंच दे प्रथम दीपक कीसी आंच फिर २ पहर तक दे फिर मसाल कीसी आंचदे ४ पहर खिचरी कीसी आंचदे ६ पहर बेंगन कीसी आंचदे १२ पहर दीपक कीसी आंच करै ८ पहर तिस पीछे स्वांग शीतल होजाय तब उतारे मात्रा २ चावल भर पान के साथ खाय तौ सकल कुष्ट दूरि होय ॥

अथ चौथी बिधि ॥

हरताल १ पैसा भर ले पोटली बांधि १५ गौके दूधमें ४ पहर औटावै फिर उसमें से काढ़ि हल्दी और बिष में खरल करै ४ पहर नकछिकनी के रसमें खरल करै ४ पहर भोगी के रसमें खरल करै ४ पहर पथरचटा के रसमें खरल करै ४ पहर भांगरा के रसमें खरल करै और १५ पीपल की छाल मंगाय उसको मैदा करै फिर उस छाल की घरिया बनावे तिसमें हरताल भर२ घरियों के भीतर घरिया पर तीन कपरौटी करै फिरि अंगीठी में कंडा भरि गजपुट की आंच दे जब स्वांग शीतल होय तब उतारि १ रत्ती पान के साथ खाय तौ सकल कुष्ट दूर होय ॥

अथ पांचवीं विधि ॥

हरताल धेला भर पारा धेला भरले नींबू के रसमें खरल करै ४ पहर तक चंदिया बांधे फिर पीपल की राख मंगाय उसे केला के रस में भिगोय १ हांडी में भरे तिस के बीच में हरताल की टिकिया धरै ऊपर से कुम्हार के आवां की भांति बंद करै और नीचे अग्नि जरावै जब शीतल होय तब काढ़ै यंत्र फूटने न पावै तब सिद्ध होय और इसको १ रत्ती तोले भर रांग को बेधे ॥

अथ छठी विधि ॥

हरताल १ पैसा भर ले के पुराने कंडाको खालि उसकी

घरिया बनाय तिसमें धरे फिर उस पर कुचिलाके पत्तोंका रस निचोवै जो हरे पत्ते ना मिलैं तौ सूखे पत्तोंको भिगो कर निचोवै तिस पीछे अग्निदे इस भांति ८ बार करै जब सुहागे कीसी खील होजाय तब बंद करै तौ हरताल की शुद्ध भस्म होय और १ रत्ती तोले भर रांगको बधे ॥

अथ सातवीं विधि ॥

हरताल २ पैसा भर पारा २ पैसा भर ले दोनों को खरल करै १ पहर तिस पीछे मूंगाके रसमें खरल करै १२ पहर सहजने की जड़के रसमें खरल करै १२ पहर आमके दूधमें खरल करै १२ पहर मकुना सेंहुड़े के दूध में खरल करै १२ पहर तिस पीछे चंदिया बनाय सुखावे १२ पहर तिस पीछे सरवों के यंत्र में धर १०१ कपरौटी करै फिर खूब सुखाय के माथे बराबर गढ़िल्ला खोद उसमें बहुत सी लकड़ी और कंडा भरै तिसके बीचमें यंत्र धरि कुम्हारके आवां के समान बनाय आंचदे जब स्वांग शीतल होय तब युक्ति से काढ़े जिसमें यंत्र न फूटै इसकी मात्रा १ रत्ती भरि खायतौ भूख बहुत बढ़ै ऽ५ भोजन करै और जब तक जीवै तब तक भूख न घटै ॥

अथ आठवीं विधि ।

हरताल ६ पैसाभर फिटकरी ९पैसा भर ले सबी खरल करै २ पहर तिस पीछे आकके दूध में खरल करै ४ पहर फिर चंदिया बनाय सुखावै ८ पहर तिस पीछे उस चंदिया को २ सरवों में धरि ३ कपरौटी चढ़ाय सुखावै और कमर बराबर गढ़िल्ला खोद आधे में कंडा भर सरवा धरे तिसके ऊपर से और कंडा भरि अग्नि दे ऊपर से ढांपि दे जब स्वांग शीतल होय तब निकालि उसमें ये औषधि कपर छानकर मिलावै लोंग। जायफल। दालचीनी। अकरकरहा। कुटकी। जाबित्री। और अदरख के रस में २ रत्ती के प्रमाण हरताल पारा इसकी गोली बांधे १ मासा की

और ४९ दिन खाय तौ सकल कुष्ट दूर होंय और देहकी सूजन जाय धातु पुष्ट होय देहके मंडल मिटि जांय पथ्य चनाकी रोटी खाय ४९ दिन पर्यंत ॥

अथ नवीं बिधि ॥

हरताल १० टंक महीन पीसे तिस पीसे २५ टंक सीसेको खपरा में चढ़ाय नीचे अग्नि जलावै जब पिघल जाय तब उसमें हरताल को चूर्ण डारि करछी से चलावै जब उसमें अग्नि उठै तब औटे हुये सरफोंका के पानी से बुझावै और १ रत्ती अजवायन के साथ खाय तौ नामर्द मर्द होय ॥

अथ दशवीं बिधि ॥

हरताल २ पैसा भर ले घिकुवारि के रसमें खरल करै ८ पहर सहिजना की जड़ के रसमें खरल करै ८ पहर फिर गोली बांधि सुखाय १ कागदी नीबू के भीतर धरै और ऊपर से सात कपरौटी करै गोला बनावै तिस पीछे पीपल की लकड़ी की राख कराय हांडी में भरै तिसके बीचमें गोला धरि ऊपर से मुंह तक दाबि के खूब भरै और हांडी पर ७ कपरौटी करै फिर हांडी के मुख पर परिया धरि बज्रमुद्रा करै तिस पर ३ कपरौटी करि सुखाय भट्टी पर चढ़ाय आंचदे २४ पहर जब शीतल होय तब उतारै तौ हरताल सिद्धहोय मात्रा१रत्ती पानके साथ खायतो काया शुद्ध होय छठये दिन खाय तौ अगम जानै सतये दिन खाय तौ तीनों लोक देखै आठवें दिन खाय तौ महादेव को आशीर्वाद होय नवें दिन खाय तौ धन देखै दशवें दिन खाय तौ हरिण कीसी चौकड़ी फांदै और ग्यारहवें दिन खाय तौ सिद्ध होय ॥

अथ ग्यारहवीं बिधि ॥

हरताल १ पैसा भर ले तांबा की डिबिया में भरै तिस में ६ पैसा भर बड़े गोखुरू को रस डारि बंद करि ऊपर

कपरौटी करै फिर राखमें गाड़िके ऊपर से आग जलावे और प्रातःकाल उखारिले फिर उसमें नीबूको रस और आंवलासार गंधक डारि अग्नि दे तौ हरताल मरै ॥ ११ ॥

अथ बारहवीं विधि ॥

ताम्रकी हरताल ले नींबू के रसमें ३ दिन राखै चौथे दिन काढ़ि टिकिया बनाय मटुका के भीतर पेंदी में धरै ऊपर से सरवा औंधाय उसके चारों ओर फिटकरी बिछावै तिस के ऊपर मटुका के मुंहतक बालू भरके नीचे अग्नि जलावै जब ऊपर की बालू गरम होय तब उतारि ले और चाहे जिस काम में लावै ॥ १२ ॥

अथ तेरहवीं विधि——तिजारी के ऊपर ॥

ताबकी हरताल १ पैसा भर ले गुवार के रसमें १ पहर खरल करै फिर हरताल से चौगुनो फिटकरी ले १ चुकरिया में नीचे २ पैसा भर फिटकरी धरै और तिस पै हरताल धरि ऊपर से फिर २ पैसा भर फिटकरी धरै और उसका मुंह बंद करि ऊपर से कपरौटी करै तिस पीछे सवा हाथ गहिरा डेढ़ हाथ चौड़ा गढ़िला खोद उसमें अरने कंडे भरि बीच में चुकरिया धरै तिसके ऊपर और कंडा धरि फूंक दे जब बरिके बुझाय जाय और शीतल हो जाय तब निकाल इसमें से १ रत्ती बतासे में खाय तौ तुरन्त तिजारी जाय २ घड़ी पीछे दूध भात खाय और जो सन्निपात वाले को देय तौ चावल भर अथवा डेढ़ चावल भर पान और १ लोंग में खवावै तौ चैतन्य होय जो सन्निपात मैं बहुतही डूबा होय तौ पान और लोंग के रसमें चटाय देय तौ बोध होय संदेह नहीं ॥ १३ ॥

अथ हरतार के गुण ॥

चौबोला ॥

श्री हरताल गुणौघ बतावत चावल एक प्रमाण जो खावै ।
पानमें खात हरै सब व्याधिन दूध औ भात को भोजन पावै ॥

होय जो पुष्ट बने अति बीरज बीरज राखि समाधि लगावै ।
और गुनन की गम्य नहीं परजानत यह सब रोग भगावै ।

अथ चौदहवीं विधि ॥

हरताल २ भाग पारा २ भाग फिटकरी ५ भाग लेकर घुइकर्ड़ि नाम औषधि के रसमें घोल कर संपुट में बंद कर गजपुट में फूंक दे तौ हरताल की भस्म होय ॥इति हरताल मारण बिधि ॥ १४ ॥

अथ चन्द्रोदय की बिधि ॥

सोनेका चोखा बरक १ टके भर और शोधा पारा ८ टके भर ले अथवा सिंगरफ का निकाला पारा ८ टके भर शोधी आंवलासार गन्धक १६ ट० भर ले फिर तीनों को खरल में डाल नांदरावसि अर्थात् नरमे के फूलके रससे ३ दिन खरल करें फिर ग्वार के पट्ठे के रससे ३ दिन खरल करै फिर इसको सुखाय कांचकी आतशी शीश में कपड़ मिट्टीदे फिर इसै सुखाय इस शीशी में ये सब औषधि सोने के बरक समेत भरै फिर शीशी का मुंह बांध दे और बालुका यंत्र में धर चूल्हे पर चढ़ावै नीचे अग्नि जलावै प्रथम मन्द मध्य और तेज अग्नि दे इसी तरह ३२ पहर की आंच दे फिर स्वांग शीतल होन पर बालुका यंत्र में से शीशी को काढ़ फिर सीसी में से चन्द्रोदय को काढ़ डिब्बी में भर रक्खै इस का रंग सिंगरफ सदृश लाल होय पीछे इसमें से मात्रा १ रत्ती ले और इसमें जायफल । भीमसेनी । कपूर । समुद्रशोष । लवंग । कस्तूरी यह सब ४ मासे मिलाय नित्य खाय तो गुण बहुत करै ऊपर से औटाय मिश्री के संयोग से रुचि माफिक रात में दूध पीवै और मांस आदि पुष्टाई की वस्तु खाय और खटाई खाय नहीं तो बहुत स्त्रियों से संभोग करै और नपुंसक पनेको यह चन्द्रोदय दूर करै है और वीर्य्य का बंधेज करै है—इति चन्द्रोदय रसके बनाने और खाने की बिधि सम्पूर्ण ॥

अथ स्वर्ण भस्म ।

शुद्ध सोना तिसका दूना शुद्ध पारा नीबू के रसमें घोटि गोली करि गोली के समान गंधक पीस तरे ऊपर धरै फिर मट्टी के दो सरवा ले एक में गोला धरि दूसरा ऊपर से ढक दे उस पर कपरौटी करि बिनवां कंडा की आंच दे इसे सराव संपुट कहते हैं इसी प्रकार आगि से निकालि निकालि संपुट करि चौदह वार आंच देव यों प्रति आंचमें गंधक देने से स्वर्ण भस्म निर्भय होता है अथवा मासे भर सोना गलाइ मासे भर शीशा डालि उतारि ठंढा करि चूर्ण करै नीबू के रसमें गोला बांधे नीचे ऊपर गंधक धरि गोले के समान सरवा संपुट करै फिर गोटा की आंच दे तौ सोना भस्म हो अथवा कचनार के रस में पारा गंधक समान मिलाय खरल करै जब कजली हो तब सोने के पत्र पर लगावै फिर कचनार की छाल पीसि के उस गोली पर बहुतसी लपेटै फिरि दो घड़िया मिट्टीकी बनाय एक में धरि दूसरी ऊपरढांपिकसकर कपरौटी करि सुखायबड़ी आंच दे इसी तरह प्रथम कही रीति से तीनि आंच दे जब जिलाने से न जिये तौ उत्तम है फिर उसकी भस्म जैसे कचनार विधान में कही तैसेही करै यह कलियारी से भी मरता है ऐसेही ज्वाला मुखी अर्थात् अरणी से भी मरता है अथवा मैनशिल से सिंदूर मलै फिर मदार के दूध में सतावर घोटि घोटि सुखावै तब दश मासे सोना गलावै जब वह चर खाने लगै तब वह मैनशिल सिंदूर का सिद्ध चूर्ण सोने में छोड़ करि बुकनी देकर तीव्र आंच दे और जब तक वह बुकनी न जरिजाय तब तक आंच देता रहै इसी प्रकार से बुकनी दे दे तीन आंच दे तौ सोना भस्म होय अथवा कबूतरवा कुक्कुट की बीट दोनों को सोने के पत्र पर लपेटै और उसीके समान गंधक चूर्णभी दोनों ओर धरै तबसंपुट करै फिरि थोरीसी भूमि खोदि पांच कंडे में फूंकि दे इसी प्रकार नौ आंच देय

दशवीं बारबड़ी आंच ३० कंडे की दे इस प्रकारसे सोनाभस्म होता है परंतु ऊपर लिखी हुई विधि करने के पहिले वैद्य को उचित है कि स्वर्ण को कांजी गोमूत्र कुरथी क्वाथ इन सब में तीन तीन बार बुझा कर धातु को शुद्ध कर ले ॥

अथ सुवर्ण के शोधन मारण की क्रिया ॥

दोहा ॥

कूटि छानि कचनार को रस कढ़ाय गलवाय ।
तीन बार सोना तहां डारु सुहागा जाय ॥ १ ॥
या सोने को तबक करि पारा तबक समान ।
डारि खल्ल मधि घोटि के गोला करै निदान ॥ २ ॥
सोना पारा दोय के सम गन्धक जो लेय ।
गन्धक गोला के तरे अरु ऊपर वह देय ॥ ३ ॥
तब गोला वामें धरै कपरौटी करवाय ॥
सूखै आंच गजपुट करै बनके ऊपर लाय ॥ ४ ॥
तौ सोना या जतन सौं भस्म होय मरि जाय ॥

अथ रस सिंदूर की विधि ॥

इसै हरगौरी रस भी कहै हैं प्रथम पारे को शोधि खरल में डाल हल्दी और ईंट धूमसा और नीबू का रस इस्में ३ दिन खरल करै तब इसकी सातों कांचली दूर होंय पीछे त्रिफला कांजी । चित्रक । ग्वार के पट्ठे । सोंठ मिरच । पीपल इनमें ३ दिन खरल करै पीछे लहसन के रस में ३ दिन खरल करै फिर जम्हीरी के रस में ३ दिन खरल करै पीछे हांडी में धर दूसरी हांडी का मुख जोड़ै फिर मुंह को खाम चूल्हे पर चढ़ावै और ऊपर की हांड़ी की पेंदी पर गीला कपड़ा रक्खै नीचे अग्नि जलावै तब वह पारा ऊपर की हांडी के पेंदी में जाय लगै तब पारे को काढ़ ले अथवा सिंगरफ का पारा विधि से काढ़ ले पीछे इस पारे को बांझककोड़े के रसमें खरल करै पीछे हांडी में बांझककोड़े का रस डाल उस रस में ये वस्त्र, और

डाले सरफोंकाकी जड़ और जिमीकन्दका रस और भांगरे का रस साम्हरनोन। सेंधानोन। और कांजी ये सब बस्तु हांडी में डाल फिर इसमें दोलक यंत्र कर कपड़े में पारा बांध ४ पहर पकाय ले तब वह पारा शुद्ध होय॥ इति पारा शुद्ध करने की बिधि॥

अथवा हजार १००० नीबूके रसमें सोंठ। मिरच। पीपल। राई। सांभर नोन। चित्रक। हींग ये सब औषधि डाल २१ दिन तक इस रस में पारेको खरल करै तब वह पारा शुद्ध होय शुद्ध हुये पीछे यह सोधा पारा ५ टके भर ले और सोधी आंवलासार गन्धक ५ टके भर ले और नौसादर २ टं० ले फिटकड़ी २ टं० ले पीछे इन सबको ३ दिन खरल करै पीछे आतशी शीशीके ७ कपड़ मट्टी दे और उस शीशी में औषधि भरै फिर शीशी का मूढ़ा खाम दे बालुका यंत्र में शीशी को धर फिर उसको भट्टी के ऊपर चढ़ावै नीचे क्रम से मंद मध्य और तेज अग्नि जलावै इसी तरह ३२ पहर की अग्नि दे पीछे स्वांग शीतल होने पर बालुका यंत्र में से शीशी को काढ़ै फिर शीशी मेंसे इस रस सिंदूर को काढ़ १ रत्ती नित्य पान के साथ खाय और पथ्य से रहै तो सब रोगों को जुदा २ अनोपान से यह दूर करै है और भूख लगावै और शरीर को पुष्ट करै है॥ इति हरगौरी रस की क्रिया॥

अथवा सिंगरफ से निकाला पारा अथवा यही शोधा पारा और आंवलासार गन्धक इन दोनों को बराबर ले और इन्हें बड़को जटा के रसमें १ दिन खरल कर फिर आतशी शीशी के कपड़ मट्टी दे उसमें यह भरै फिर इस शीशी के पतली ईंट से खाम दे और बालुका यंत्रमें शीशी को धरै फिर बालुका यंत्र को भट्टी पर चढ़ाय क्रमसे २१ पहर मन्द मध्य और तीक्ष्ण अग्नि दे पीछे स्वांग शीतल होने पर यंत्र मेंसे काढ़ फिर इस शीशी में से काढ़ै इसका

रंग सिंगरफ समान होय माशा १ रत्ती पान में खाय तौ गुण बहुत करै सब रोगों को दूर करै ॥ इति रस सिंदूर की क्रिया ॥

अथ पारा मारने की बिधि ॥

पारे को खरल में डाल गूलर के दूध में १ पहर खरल करै पीछे इसकी गोली बांधै फिर गूलर के दूध में चोखी हींग घिस इस हींग की २ मूसी अर्थात् घरिया बनावै फिर पारे की गोली को मूसी में धर दूसरी मूसी को मुंह जोड़ मूसी को खाम दे पीछे सुखाय १ सेर ऊपले की भूभल में पकावै तब वह पारा सुपेद खिलजाय तब इसकी भस्म होय यह भस्म सब रोग मात्र को दूर करै है ॥ इति पारा मारने की क्रिया ॥

अथवा अपामार्ग के बीजों को महीन पीस इसकी२मूसी बनावै पीछे गूलर के दूध में पारे को खरल करै फिर पारे की गोली बांध यह गोली मूसी में धरै पारे की गोली के नीचे ऊपर दड़घल के फूल । बायबिड़ंग । खैर इनका चूर्ण कर मेलै इस मूसीका गोली करै फिर इस गोलीको धवनी से कोयले में धंवावै फिर इसके कपड़ मट्टी दे गजपुट में फूंक दे तब इसकी भस्म पूरी तोल उतरे यह भस्म सब रोगों को दूर करै ॥ इति पारा भस्म की क्रिया ॥

अथ दूसरी बिधि ॥

पारा ७ तोला गन्धक ७ तोला सोना मक्खी ७ तोला इन तीनों को इकट्ठा कर नीबू के रसमें खरल करै तिस पीछे आतशी शीशीमें भर उस शीशी को बालूके यंत्र में धरि ८ पहर आंच दीजै फिर उतारि के गन्धक २४ मासे राई ७ तोले डालि के ४ दिन खरलकरै फिर दूसरी शीशीमें डालि बालू के यंत्र में चढ़ाय आंच दे ७ दिन शीतल होय तब उतारे माशा १ चांवल भर पानके साथ खाय तौ १५ की भूख

होय ऐसी विधि से सात शीशी भरे तौ ऽ१। मनकी भूख होय ॥

अथ तीसरी विधि ॥

पारा २ पैसे भर ले स्याह धतूरे के रसमें खरल करै ३ पहर करिहारी के रसमें खरल करै ३ प्रहर तिस पीछे शीशी पर ७ कपरौटी कर औषधि भरिके मुख मूंदि अरने कंडों से गजपुट में फूंकदे शीतल होय तब निकाले इस विधि से थोड़ी कंडा को आंच अंगीठी में दे तौ सिद्ध होय गुण बहुत करै भूख ऽ५ की लगै और ७ स्त्री से भोग करै ॥

अथ बसन्तमालती रसकी क्रिया ॥

सोने का वरक १ मासे मोती २ मा० सिंगरफ ३ मा० मिरच ४ मा० खूरतखापरा ८ मा० खापरे को गोमूत्र में १६ पहर गोलक यन्त्र से पकावै फिर इन सबको खरल में डाल मक्खन से खरल करै जितना मक्खन सोखै तितना मिलावै फिर नींबू के रस में खरल करै वह मक्खन सूख जाय इतना खरल करै और इसकी चिकनाई दूर करै इस प्रमाण चाहे जितना करै फिर इसकी गोली कर इसै १ रत्ती २ पीपल और सहत के संयोग से नित्य खाय तौ विषमज्वर आदि ले सब रोगों को दूर करै और इसे पुष्टाई के संयोग से खाय तो शरीर को पुष्ट करै ॥ इति बसन्त मालती रसः ॥

अथ शिंगरफ शोधन विधि ॥

नींबू के रस की ७ पुट दे भेड़ के दूध की ७ पुट दे तौ शिंगरफ शुद्ध होय ॥

अथ सिंगरफ मारण विधि ॥

चोखे सिंगरफ की ४ पैसे भर की डली ले इसे कड़छुले में धर इस डली के ऊपर नींबू का ऽ१। भर रस सुखावै पीछे सिंगरफ के ऊपर प्याज का रस ऽ५ सुखावै पीछे इस डली को काढ़ और कड़छुले में धरै इस डली के नीचे ऊपर ऽ

भर प्याज की लुगदी दे पकावै इस डली को जुदी काढ़ै पीछे ऽ। भर कुचिला ऽ। भर राई ऽ। भर मालकांगनी ऽ१ प्याज ऽ१ घृत ऽ१ सहत इन सबको महीन पीस एक लुगदा कर कड़ाही में धरै और लुगदा के बीच में सिंगरफ की डली धरै और इसके नीचे ८ पहर अग्नि जलावै तब यह सिंगरफ सिद्ध होय तोल में पूरा उतरै रंग लाल होय खाने की मात्रा आध रत्ती की अथवा १ रत्ती पानमें खाय पथ्य से रहै तो सब रोगों को यह दूर करै भूख बहुत लगावै और नपुंसक पने को दूर करै है ॥

अथ दूसरी विधि।

सिंगरफ ४ पैसा भर पीपल ४ पैसा भर दोनों मिलाय खरल करै १ पहर पीछे काले धतूरे के रस में खरल करै- २१ पहर तिस पीछे चंदिया बांधे तिसके ऊपर धेला भर बत्सनाग विष पानी से पीस के लपेटै फिर उस चंदिया को सुखाय महीन कपरा में बांध फिर ऽ५ गौका दूध मंगाय एक हंडियामें भर उसमें चंदिया डारै और हंडिया के मुख पर घरिया धरि उड़द के चून से चहुं ओर बन्दकर चूल्हे पर चढ़ाय मध्यम आंच करै ६ पहर तक जब शीतल होय तब उतारि दूध पृथ्वी में गाड़ि दे सिंगरफ निकासले मात्रा ४ रत्ती पान के साथ खाय तौ देह में बल बढ़ै सुरखी बढ़ै झोल मिटै भूख बढ़ै पुरुष शक्ति होय ॥ २ ॥

अथ तीसरी विधि ॥

गो मूत्र ऽ८ कराही में चढ़ावै तिसमें विषका डेला डारि करछी से टारते जाय जब गाढ़ा होय के ऽ। शेष रहै तब उसमें १ पैसा भर ईंगुर खरल करै जैसे गाढ़ा होता जाय तैसे गोमूत्र डारता जाय जब सब सूख कर गाढ़ा होजाय तब टिकिया बनाय सरवा के संपुट में धरि ४ कपरौटी कर गज पुट में फूंक दे जब शीतल होय तब निका-

सके मात्रा १ रत्ती पान में खाय तौ पुष्टता और सुरखी करै खासी जाय ॥

अथ चौथी बिधि ॥

सिंगरफ को थूहड़ की पुंगरिया में धरि के १०१ बार लेंडी की आंच में बुझावै तिस पीछे आंवलासार गन्धक डारि कुम्हड़ा में धरि आवां में धरै तौ सिद्ध होय ॥ इति सिंगरफ मारने की विधि संपूर्ण ॥ इति पुष्टाई के सातो धातु उपधातु के मारने की बिधि और रस चन्द्रोदय को आदिले रसों के बनाने की बिधि संपूर्ण ॥

अथ सुम्बल खार मारण विधि ॥

सुम्बलखार २ पैसा भर ले गधे का मूत ऽ२ थूहड़ का दूध ऽ२ इन दोनों को एक हंडिया में भरि दोला यंत्र में सुम्बल खार लटकावै और मध्यम आंच करै जब दोनोंका खार होजाय तब निकाले तिस पीछे १०१ इन्द्राणी के फल मंगाय एक फलमें भरि दो कपरौटी करै थोड़े से कंडों में आंच दे इस भांति प्रत्येक फलमें १०१ आंच दे तौ सुम्बल सिद्ध होय १ रत्ती तोले भर रांग को बेधै ॥

अथ पीतर कांसा मारने की विधि ॥

दोहा ॥

घोटि जंभीरी रंगसों पारा गन्धक दोय।
पत्र लपेटैं दुहुन के तासों यह विधिहोय ॥
सरवा मध्य पत्र धरि कपरौटी करवाय।
तीन बार इमिआंचदे उभयभस्महो जाय ॥

अथ कनक सुन्दर रस: ॥

काली मिरच। सोधा हुआ। सिंगरफ। सुहागा। गन्धक। शुद्ध सींगिया विष। शुद्ध पीपल धतूरे के बीज इन सबोंको खरल में डाल के भांगके रस में २ पहर घोटै तौ कनक सुन्दर नाम यह महा रस अति उत्कर्ष संग्रहणी रोग को दूर करता है और अतीसार मन्दाग्नि इन सबको दूर करै है ॥

अथ बड़वा नल रस: ।

हरताल १ भाग पारा १ भाग सीसे की भस्म १ भाग शुद्ध गन्धक २ भाग मिरच १६ भाग इन सबको पीस कर १ रत्ती घी के साथ खाय तौ विशूची सब प्रकार के शूल प्लीह और उदर रोग दूर होंय तथा गुल्म संग्रहणी श्वास खांसी कफ बात और मन्दाग्नि आदि अनेक रोगोंको यह बड़वा नल रस दूर करता है ॥

अथ बन्हि रस: ॥

जाविची ३ कर्ष मिरच पल १ गंधक कर्ष आधा पारा कर्ष आधा लोंग कर्ष आधा विष कर्ष आधा इन सब औषधियों को अमिली के पत्तों के रसमें पीस कर गोली बनावै तोल में १ मासे इस गोली के सेवन से अग्नि ऐसे बढ़ती है जैसे कि अग्नि की बिद्यामे अग्नि बढ़ि जाती है और शूल आदि समस्त रोगोंको यहबन्हिरस दूर करता है ॥

अथ शंखली रस: ॥

पारा १ भाग गन्धक १ भाग शंख की भस्म ८ भाग कौड़ीकीभस्म ६ भाग मिरच १२ भाग और पारेसे चौथाई सुहागा इन सब को पीस कर ४ मासे घीके साथ खाय तौ क्षयी रोग दूर होय ॥

अथ शंखद्राव रस: ।

आक सेंहुड़ थूहड़ अमिली ढांक केला तिल अपामार्ग गोखरू कौड़ी शंख इन सबों की भस्म से उत्पन्नखार पारा पांचों नोन पांचौ खार ये सब बराबर ले और सबों तिहाई गन्धक और रेहू सज्जी सोरा कसीस नौसादर चारौं चीजें सब औषधियोंकी बराबर ले और इन सबोंकी कजली करके नीबू के रस में घोटै तिस पीछे नलिका यं में चढ़ा कर चार पहर की आंच देकर उसमें से सुई गलाने वाला जो रस टपकै उसको लेले और उसमें से रत्तीया ६ रत्ती नलिका से दे तौ गुल्म बवासीर प्लीह आ

रोगों का नाश करै यह शंखद्राव प्रत्यक्ष फल का दिखाने वाला है इसमें संदेह नहीं ॥

अथ सीतारि रसः ॥

चौपाई ॥

ताम्र सुहागा गन्धक लीजे ।
बिष पारद हरताल धरीजे ॥
भांग तूतिया दोय मिलाय ।
ए सब लीजै शुद्ध कराय ॥
घटिका एक ताहि पिसवाय ।
घोटि करैला रंग मिलाय ॥
जाको नाम सीत अरि जानि ।
शंभु शिवा सों कह्यो बखानि ॥
मिसरी जीरा में सहदेइ ।
सकल सुयशु याको सुनि लेइ ॥
सीतज्वर अति जाय नसाय ।
एक दोई चौथाई जाय ॥

अथ पंचामृत परपटी रस लिख्यते ॥

दोहा ॥

लोहा अभ्रक पारदे अर्क शुद्ध सब लेह ।
दूनो गन्धक सबनि ते लोह पात्र भरि देह ॥

चौपाई ॥

बदरी काष्ठ आंच मृदु दीजे ।
सिद्धि जानि पुनि ये बिधि कीजे ॥
गोमय ते फिर भूमि लिपाऊ ।
तामें कदली पत्र बिछाऊ ॥
रस उतारि तापर सब नावे ।
फिर कदली के पत्र बोढ़ावे ॥
या विधि सो रस सिद्ध प्रमाणा ।
पंचामृत परपटी बखाना ॥

संग्रहणी अतिसार नसाइ ।
जीरण ज्वर यक्ष्मा मिटि जाय ॥
प्लीह पांडु ज्वर अर्श नसाइ ।
अनिल पित्त अरु अग्नि बढ़ाइ ॥

दोहा ॥

जीरा सेंधौ हींग में संग्रहनी अनुपान ।
केवल जीरा संगमें पांडु रोग में जान ॥
सहत पीपरी संगही जीरण ज्वरमिट जाइ ।
सर्व रोग में दीजिये सुधि हनुमान बताइ ॥

अथ बिलासनी बल्लभ रस लिख्यते ॥

दोहा ॥

गन्धक पारो भाग द्वै कनक बीज सम लेइ ।
काढ़ि धतूरे तेल में शुद्ध सो घोटन देइ ॥
कहेउबिलासिनिबल्लभै याकोनाम सोहाय ।
दोय बल्ल मिश्री सहत देत प्रमेह बहाय ॥
करै मनोज प्रकाश अति वीर्य बन्ध सो होय ।
हरै माननी मान को जो यह सेवै कोइ ॥

अथ हीरा शोधन मारण विधि ॥

कुरथा और कोदो के क्वाथ को दोल यन्त्र में भरि तिसमें भटकटैया की जड़ की लुगदी में हीरा रख कर कपड़े में बांधि तीन दिन सिद्ध करै तब हीरा शुद्ध होय फिर आगमें तपाय खर मूत्र में २१ बार बुझावै ७४ मत्कुण अर्थात खटकिरवा और हरताल पीस गोलाकर उसमें हीरा धरि तीव्र आंच दे मूषा यंत्र में राखि भाथी में फूंक दे फिर अश्व मूत्र में २१ बार बुझाय हरताल गोलामें धरि फूंकै इसी तरह २१ बार अश्व मूत्रमें बुझाय२ फूंकै यह इस प्रकारसे भस्म होता है इसका चूर्ण सर्वत्र साध्य है अथवा हींग। सेंधानोन कुरथी के क्वाथ में डारि उसमें यह तपाइ २१ बार बुझावै तो हीरा मरै अथवा मेढक का सिके पालमें मूंदै और

उसे डरावै जब वह भय से मूतै उस मूत में हीरा तपाय बहुत बुझावै तो खिलिकर चूर्ण हो ॥

अथ वैक्रांति शोधन मारण ।

वैक्रांति नाम कच्चे हीरे का है काला हो वा लाल उसको १४ बार बुझाइ लाल करि करि हीरे की तरह शोधे फिरि उसे मेढ़ा सिंगी के पंचांग के गोल में रखि कर मूसा यंत्र में भरि संपुट करि फूकदे इसी प्रकार से सात बार करै तौ वैक्रांति भस्म होय इसको हीरे की जगह दे ॥

अथ सर्वरत्न शोधन मारण ।

अच्छे मोती वा माणिक वा मूंगा अरणी रसदे डोला यंत्र में सिद्ध करै एक पहर तौ शुद्ध होय घीकुआर और चौराई वा स्त्री का दूध इन तीनों में सात सात बार माणिकादि तपाइ तपाइ बुझावै मूंगा मुक्तादि सब क्षण भर में वर्ण पलट जाते हैं संशय नहीं मूंगा और मोती सोना मक्खी की रीति भी मरता है और सब रत्न हीरे की तरह शोधे और मारै ॥

अथ शिलाजीत शोधन ॥

ग्रीष्म की ताप करि पर्वत से चुआ शिलाजीत लाइ गाय का दूध वा त्रिफला क्वाथ वा भंगरे के रस में पहर भर घोटि दिन भरि घाम में धरे जब सूखि जाय तब शुद्ध होय अथवा अच्छे शिलाजीत की शिला ले छोटे छोटे टूक करै अति उष्ण जलमें पहर भरि राखै तब उतारि ले उसे ही क्षारक कहते हैं यह सफेद होता जाता है और सब पानी न जरै तौ क्वाथ सम रहता है ये दो प्रकार सार वैद्य जन औषधि में देते हैं कुरैया। पलास। बकायन। बहेड़ा। अमलतास। मदार। अलसी। सेंहुड़। चिर्चिरा। पाढ़ा। केला। जमाल गोटा। सहिजन। मूली इत्यादि क्षार वृक्ष हैं ॥

अथ तूतिया शोधन विधि ॥

विलाई की बीट और तूतिया का दशांश सुहागा दै घोरि मध्यम आंच दे फिर दही का पुट दै फूंकै तिसके उपरांत शहद पुट दे फूंकै तब शुद्ध होय ॥

अथ सुरमा शोधन मारण विधि ॥

सुरमा चूर्ण करि जंभीरी नीबू के रसमें घोरि एक दिन घांम में धरै तौ सर्व कार्य लायक होता है उसी प्रकार से गेरू। कसीस। सुहागा। कौड़ी। शंख। फिटकरी। चोक। ये सब शुद्ध हांय ॥

अथ मैनसिल शोधन मारण ॥

बकरी के मूत्र में डोला यंत्र में तीनि दिन पकाय बकरी के पित्त में सात भावना दे तब मैनसिल शुद्ध होय अथवा अगस्त पत्र के रस में सात भावना दे तौ मैनशिल कार्य साध्य हो ॥

अथ खपरिया शोधन ॥

खपरिया लै गोमूत्र दे डोला यंत्र में शुद्ध करै तब कार्य्य साध्य होय ॥

अथ सब धातुन का सत निसारण विधि ॥

लाही। लघुमीना कुगरी पय। सुहागा। हृगसींग। पीना सरसों। सहिजन लाल गुंजा। गुड़। सेंधव। जव। कटुका घृत मधु इनमें जो एक दो नहीं तौ चिन्ता नहीं जिस धातु में चाहे तिसमें दे अंध मुख यंत्र करि आंच दे तौ सब धातु का सत निकलता है ॥

अथ गंधक शोधन विधि ॥

लोहे की कढ़ाई और घी दोनों को अति तप्त करि घी के समान गंधक चूर्ण छोड़े जब गलै तब चतुर्गुण दूध में गरम ही नाइ कर बुझावै तौ गंधक शुद्ध हो यह सर्व कार्य योग्य है ॥

अथ शिंगरफ से पारा निकाल ने की विधि ॥

शिंगरफ को नीबू के रस अथवा नीम के पत्तों के रस में १ पहर घोटै फिरि उसे डमरू यंत्र करि उतारि ले तौ पारा शुद्ध हो पारा उड़ालेने से भी शुद्ध हो जाता है और सर्व कार्य कारक होता है ॥

अथ पारे के मुख करण विधि ॥

काल कूट। बच्छनाग। सिंगिया। प्रदीपन। हलाहल। ब्रह्मपुत्र। हरदिया। सुलक। सौराष्टक ये नव विष हैं और मदार। सेंहुड़। धतूरा। करियारी। लाल कनेर। घुंघुची और अफीम। ये सात उपविष हैं इन सब विषों में मरदन करने से पारा पक्ष हीन होता है और समस्त धातों के भक्षण करने को समर्थ होता है अथवा त्रिकुटा। दोनों खार। राई। पांचों नमक। लहसुन। नवसादर। और सहजने की छाल। ये सब बरा बरि ले चूर्ण करै फिरि पारे के समान ले जंभीरी के रस वा नीबू के रस अथवा कांजी में गरम करि खरल करै तीन दिन रात तब पारा सब धातुनि को खाइ और तोलन बढ़ै और पारे के मुख होता है अथवा-छुर बुन्दा। वा वीर बहूटी में तीन दिन घोटै फिर पांचौ लौन और नीबू के रसमें घोटै तब पारे का मुख खुले और धातु भक्षण करै ॥

अथ द्वितीय ज्वरांकुश रसः ॥

हरिण का सींग चूर्ण करि बराबरि जैत का रस ले-माटी के बासन में धरि मुंह मूदि दो पहर की आंच दे उतारि लेइ फिर आठवां अंश त्रिकुटा दे पीसै फिर चारि रत्ती रस ज्वरांकुश। पान के रस के साथ दें तौ वातपित्त ज्वर नाश हो यह ज्वरांकुश रस सर्व ज्वरों को हित है ॥

अथ ज्वरारि रस ॥

पारा। खपरिया। हरताल। तूतिया। सुहागा। और गन्धक। ये सब समान शोधि करे ले के रसमें एक दिन

घोटि कर काच पात्र में अर्द्ध अंगुल मोटा लेपि पात्र का मुख मूंदि कपरौटी करि बालू के यंत्र में धरि यंत्र मुख खुला राखि आंच देय जब उस बालू में धान डालने से खील हो जाय तब जानिये कि रस सिद्ध भया जब वह स्वभाव से ठंढा हो तब उसे पात्र से छुड़ाले फिर इस ज्वरारि रस के समान मिरच मिलाय पीसिलेइ और माषे भरिके पान के टूक में धरि खिलावै तौ ज्वर का नाश करै तीन दिन खाने से अति कठिन ज्वर अतरिया तिजारी चतुर्थिक आदिक ज्वरों को नाश करै ॥

अथ शीतज्वरारि रस ॥

हरताल। तूतिया। तांबा। अभ्र। सोधा पारा। गंधक शुद्ध मर्दित। ये सब कर्ष२करि भरि लेकरि त्रिफला के रस में घोटि गोला बांधि कपरौटी माटी लेपि तब फूंकि मदार के दूध में सात भावना दे फिरि जमालगोटा की जड़ के काढ़े में फिरि निशोथ के काढ़े में सात भावना दे तब एक माशे रस और पचास मरिच छह माशे गुड़ दो तुलसी दल भक्ति पूर्वक तीन दिन खाय इस रस का नाम शीतारि है और बहुत दुर्लभ है इसमें पथ्य दूध भात दे तौ जूड़ी दाह ज्वर तिजारी चातुर्थिक अतरिया नित्य और ज्वर जनित बिकार सब नाश होय ॥

अथ ज्वरघ्न गुटिका ॥

शुद्ध पारा १ भाग एलुआ। पीपरि। जंगीहड़। अकरकरहा। कड़ुआ तेल। शोधा हुआ गंधक। इन्द्रायन। ये चारि चारि भाग ले इन्द्रायन के रस में घोरि माष प्रमाण गोली बांधे और इस ज्वरघ्नी गुटिका को तरुण ज्वर में गुर्च के रस के साथ देय तौ ज्वर जाय ॥

अथ लोक नाथ रस ।

पारा बुभुक्षित धातु भक्षक दो भाग ले दोनों को खरल करि कजली करै और पारे से चौगुणी पारे की भस्म और

पारे के समान सुहागा गौके दूध में घोटै और पारे से अठगुणी शंख की भस्म शुद्ध सब पीसि दो सवों के भीतर रक्खे दोनों को संपुट करि वस्त्र लपेटि माटी लगाइ गजपुट में फूंक दे जब ठंढा हो तब निकाले खुरच करि खरल करै फिर यह रस छः रत्ती ले मिरच के साथ खरल करै और वात रोग में घी के साथ दे और पित्त में मक्खन के साथ दे कफरोग में शहद से दे अतीसार छर्द अरुचि ग्रहणीदुर्बलतामन्दाग्नि कास श्वास गुल्म इन रोगों में भी शहद युक्त दे इस लोकनाथ पर प्रथम तीन कौर घी भात खाय फिरि क्षण भरि बिना तकिये बिछोने खाट पर उताना सोवै तिस के उपरांत जिस प्रकार चाहे सोवै और खटाई छोड़ि मधुर दही अच्छा घृत के साथ अन्न खाय और जंगली मृगादि पशु पक्षी आदि का मांस घृत में अच्छी तरह भूंजि करि अवश्य खाय और संध्या के समय पक्का अद्दविशेष दूध भात भोजन करै और मूंग के मोदक अधिक घृत में बने हुये खाय भोजन के साथ और तिल आवरा पीसि उबटना लगाइ वा घी मर्दन करि अन्हाइ अथवा उष्णोदक से कमर तक स्नान करै तैल को न छुवै और बेल। करेला। मकूरी। अमिली। श्रम। स्त्रीभोग। इत्यादि को त्यागि दे और मद्य अचार हींग सोंठि उर्द मसूर पेठा राई बेर और कांजी तजै और सम्पन्न न सोवै कांसे में न खाय ककारादि आम के कल और साग तजै यह लोकनाथ रस शुभ मुहूर्त पूर्णा तिथि शुक्ल पक्ष बलवान चन्द्रमा देखि कुमारि जिवाय दान दे दुघटिका साधि भक्षण आरंभ करै इसके खाने पर तप आती है तब मिश्री गुर्च का सत वंशलोचन इन सबको मिला करि दे कचूर अनार दाख ऊंख की गंडेरी दे तौ रसताप दूरिहो वा धन की छाल घृत में भूजिकै चूर्ण कर मिश्री मिलाय खिलावै उसी ताप में धनियां और गुर्च का काढ़ा दे अथवा खसखसका काढ़ा मधु मिश्री मिला कर दे इससे

रक्त पित्त कफ कास श्वास स्वरभंग ये सब अच्छे होंय और भांग भूजि लोकनाथ रस संयुक्त खिलावे रातको नींदनाश में अतीसार में संग्रहणी में मन्दाग्नि में ये सब दूरि होंय और सोंचर। हड़। पीपरि के साथ खिलावै और गरम पानी पिलावै तौ शूल और अजीर्ण दूरि होय और पीपर और सहत युक्त देतो पिलही वात रक्त छर्दि अर्श दूर करै और नासास्रु अरण अनार के रस में दे वेर सिखी मोरपंख की भस्म मिश्री शहद युतारद खाय तौ छर्दि हिचकी दूरि करै ये जो भांति भांति के अनो पान लोक नाथ रस के कहे सो सब पारखी करे समें भी उसी प्रकार देना जैसे मृगांक हेम गर्भ मौक्ति काचा और पंचरत्नादि पोटली का रस इन सबों में लोक सदृश पथ्य करे तौ संपूर्ण रोग अच्छे होंय ॥

अथ मृगांक पोटली रस :

सोने का यंत्र समान बनाइ सोने के समान पारा मिलाइ खल करै और कचनार रस वा अरणी रस वा करिया रस में घोटै जब गोला बंधि जाय तब चौथाई सुहागा दे और स्वर्ण का दूना मोती का चून दे और इन सब के समान गंधक दे फिर सब को खल करि गोला बांधि स्वन कपड़ा लपेटै उस पर माटी लहेसि सुखाकर सराव संपुट करि लोन पूरित पात्र में संपुट धरै फिर उसको सुखाय गज पुट में फूंकि दे फिर ठंढा होने पर निकालि सोने के प्रमाण पारा और गंधक ले पूर्ववत रसमें खरल कर फिर उसी क्रिया से गजपुट में फूंकि दे जब ठंढा होय तब निकासि दो गुंजा रस आठ मिरच वा तीन पीपरि के साथ दे और औषधि को विचारि करि रत्ती भरि घाटि बाढ़ विचारकर दे और घी अथवा शहद के साथ दोष बिचारि करि देना चाहिये और पथ्य इसमें लोक नाथ के सदृश देना चाहिये चित्त एकाग्र करि अति पवित्र हो खाय तौ श्लेष्मा

ग्रहणी कास । श्वास । छर्द्दि । अरुचि यह रस इन सब रोगों को दूर करता है बलहीन को बलवान करता है दुर्बल को मोटा करता है ॥

अथ कफ छर्द्दि पर हेम पोटली रस ॥

पारा और पारे की चौथाई सोना ले खरल करै जब पीठी होजाय तब दोनों से दूनी गंधक दे फिर कचनार के रस में घोटि गोला करै उसे मूषा यंत्र में भरि संपुट करि बस्त्र लपेटि माटी लगाय सुखाय भूधर यंत्र में फूंक दें अथ भूधर यंत्र ॥ एक हाथ लंबा और एक हाथ चौड़ा गढ़ा खोदे उसमें एक छोटासा गढ़ा खोदे उस छोटे से गढ़े में औषधि रख माटी से दाबि तिस पर बिनुवां कंडों की करसी करि बड़े गढ़े में भरि तीन दिन आंचदे जब स्वभाव से शीतल हो तब निकालि समान गंधकले अद्रक अथवा चीते के रस में घोटि बड़ी पीली कौड़ी में भरि औषधि का अष्टमांस सुहागा सुहागे का आधा सिंगिया दोनों को सेंहुड़ के दूध में पीस कौड़ी का मुख बंद करि फिर मट्टी के पात्र में चूना ल्हेसि कौड़ी में भरि दूसरे दिवस बंद करि मुद्रित करि गजपुट में आंच दे जब ठंढा हो तब निकालि लोकनाथ की रीति से खिलावै और मृगांक की रीति से पथ्य दे तीन दिन लोन बर्जित है और जो छर्दि होय तौ गुर्च का रस वा क्वाथ मधु युक्त दे और कफार्ति में गुड़ अद्रक रस युक्त दे और अतीसार में भूनी भांगही दोनों के साथ दे कास श्वास ग्रहणी छर्द्दि और अरुचि इन में दही और भांग के साथ दे यह अग्नि दीपन और कफ बात नाशन है यह हेमपोटली रस बहुत श्रेष्ठ है ॥

अथ हेम गर्भ रस कास पर ॥

पारा ४ भाग सोना ४ भाग दोनों की पीठी करि द्वादश भाग गंधक दे और तीनों की कजली करि १६ भाग मोती २४ भाग शंख १ भाग सुहागा ये सब एकत्र करि पके

नींब के रस में घोटै गोला बांधि मूसापुट में धरि मुद्रा साधि सुखाय हाथ भरि भू खोदि उसमें धराय हाथ भरि कंडा भराय फूंक दे जब शीतल परे तब निकालि धरै चारि रत्ती रस मिर्च उनतीस गो घृत में पीसि चांदी वा मांटी वा कांच के पात्र में धरि खिलावै और लोकनाथ रस समान पथ्य बतावे इस यत्न से कास। श्वास। छर्दि। बात। कफ। ग्रहणी। अतीसार वाले को देइ यह हेम गर्भ पोटली इन सब रोगों को हर लेइ॥

अथ द्वितीय आनन्द भैरव रस॥

शुद्ध। शिंगरफ। सिंगिया। मिरच। सुहागा। पीपरि ये सब समान ले महीन चूर्ण करिये यह आनन्द भैरव रस रोगी का बल देखि रस एक जुवार वा दो गुंजा इन्द्रायन कुरैया छाल दोनों दश माशे पीसि रस युक्त शहद में मिलाइ चटावै तौ त्रिदोष जाय वो अतीसार दूर होय और गऊका दही वो मट्ठा वो घृत पथ्य भात के साथ खाइ ठंढा पानी पिलावै और भांग अच्छी तरह धोय बनाय रात को पिलावै॥

अथ सन्निपात पर लघु सूचि का भरण॥

सिंगिया १ पल पारा ४ माशे दोनों को खल करि दो पर कांच के लुक करी हुई में धरिके मुद्रा करि सुखाय चूल्ह पर चढ़ाय मंद मंद दो पहर की आंच दे दोनों जुदा करि ऊपर के सरबे में लगा हुआ धुआरस लेसे छील जिस पात्र में पवन न जासकै ऐसी सूची मुख सीसी में रक्खै फिर उ सीसी से जितना रस निकले उसे सन्नि मूर्छित का शि मुंड़ाइ पूछने दे जो रक्तनिकले उसी घाव पर उस रसको अंगुली से मलै जौ रुधिर और रसमें मिलि जाय तौ मूर्छित जागै उसी प्रकार से सांप का काटा हुआ भी जागै फिरि इसे इस उपचार से तप आवै तब उस रोगीको मधर अर्थात् गंडेरी अनार छुआरा दाख देखि लावै॥

अथ सन्निपात पर जल बूंद रस ॥

पारे की भस्म समान गंधक और चौथाई मैनसिल। सोनामक्खी। पीपरि। सोंठि। मिर्च ये सब समान ले और खरल करि मछली के पित्ते में सात भावना दे इसी प्रकार से मयूर पित्त में भी सात भावना दे सुखाइ दो गुंजा स्वेत मुसली के रसमें खवावै और पंचकोल अर्थात् सोंठि। मिर्च। पीपरि। दाख। चीता इनके काढ़ेमें भी दे यह जलबुन्द रस सन्निको दूर करता है जल ठंढा पिये ठंढे जलसे हाथ मुह धोवे जलका स्पर्श राखे तौ औषधि बलपाती है और सन्निपात को दूर करती है ॥

अथ सन्निपर पंच वक्त्र रस ॥

शुद्ध पारा। सींगिया। गंधक। मिरच। सुहागा। पीपर। धतूरे के रस में १ दिन मर्दन करै घाम में सुखावै यह पंच वक्त्र रस दुइ गुंजा सन्निपात में देइ तौ सन्निपात दूर होय मदार मूल क्वाथ सोंठि। मिरच। पीपर के साथ दे यही अनोपान है पथ्य दही भात इसको शहत के साथ खाने से कफ जनित उपद्रव दूर होते हैं और अद्रक और शहत के साथ देय तौ अग्नि दीपन करै और यथा योग्य घृत मांस खाय तौ अग्नि प्रबल करै ॥

अथ सन्निपात पर उन्मत्त रस ॥

पारा। गंधक। सम भाग ले और धतूरे के फल के रस में खरल करै १ दिन फिर इसमें इसके समान त्रिकुटा डालि पीसे इस उन्मत्त रस का नाश देनेसे सन्निपात दूरि होय ॥

अथ शूल पर नाराच रस।

पारा। सुहागा। सम भाग करि समान मिरच। गंधक। पीपरि और सोंठि दो २ भाग ले खरल करै फिर सबके समान शुद्ध जमाल गोटा ले सबको एकत्र करि खरल करै और गुंजा भरि देने से रेचन होय यह नाराचना रस अध्यान मल विष्टंभ उदावर्त ये सब रोग नाश करता है ॥

अथ शूल पर इच्छाभेदी रस॥

शुद्ध शिंगरफ। सुहागा। सोंठि। पीपर। कर्ष २ भरि चोक। पल भरि जमाल गोटा। पल भर सबको खरल करि गोदूध में तीन गुंजा रेचनार्थ देय इस इच्छा भेदी रससे विष्टम्भ अध्मान ये दूरि होंय॥

अथ च्ई पर राज म्टगांक रस॥

पारा की भस्म ३ भाग सोने की भस्म १ भाग तांबेकी भस्म १ भाग मैनसिल शुद्ध गंधक हरताल दो २ भाग इन सबको घोटि कौड़ीमें भरि बकरी के दूध में सुहागा पीस कौड़ी का मुख मूंद माटी पात्र में धरि संपुट करि सुखाय गजपुट में फूंकि देय जब सिराय तब खरल करै इस राज म्टगांक रस को ४ गुंजा देइ तौ च्ई च्य होय इसका अनोपान २९ मिर्च के साथ अथवा पीपर और सहत के साथ देय॥

अथ खरामग्नि रस॥

शुद्ध पारेसे दूनी शुद्ध गंधक खरलकर कजली करि दोनों के समान फौलाद भस्म ले सब घीकार के रस में दोपहर घोटि बासन में राखि रंड पत्र से ढांपि पहर भरि धूप में धरे उष्ण होय तब नाज की रासि में १ दिन १ राति गाड़ि के निकारि ले फिर खरल करि वस्त्र में छानि ले तब जल पर डारै तौ तिरैगी॥

अथ स्वयमग्नि रस॥

त्रिकुटा। त्रिफला। इलायची। जायफल। लौंग ये सब नव भाग ले फिर सब खरल करि सहत के साथ दो निष्क खाय यह स्वयमग्नि रस च्ई और कासको नाश कर्ता है॥

अथ श्वास पर सूर्यावर्त रस॥

पारे की आधी गंधक २ पहर घीकार के रसमें घोटि दोनों सम तांबे के पात्र ले तिस पर यह कजरी लेप करै फिरि १ दिन थाली यंत्र में पकाय ऐंचले अथ थालिकायंत्र

माटी का हांडी में लोन भरि तिस पर तांबे का पात्र धरि मुख मूंदि कपरौटी करि फूंक देय यह सूर्यावर्त रस पीसि दो गुंजा खवावै तौ श्वास नाश करै ॥

अथ द्वितीय स्वच्छन्द भैरव रस ॥

शुद्ध पारा । मरालोहा । सोनामाखी । गंधक । हरताल । हड़ । अरणी । सेवड़ी । त्रिकुटा । भुना सुहागा । सींगिया ये सब समान मिलाय खरल करि फिर १ दिन गोरखमुंडी के रसमें खरल करि दो गुंजा समान गोली करै यह स्वच्छन्द भैरव रस बात रोगी को खिलावै रासन । गुर्च । देव दारु । सोंठि रंडकी जड़ इनका काढ़ा करि गुग्गल युक्त गरम उसके साथ पिलावै यह अनोपान सुख दाई है ॥

त्रिविक्रम रस स्मरी पर ॥

मरा तांबा । बकरी का दूध । समान ले किसी पात्र में धरि आंचदे दूध उतारि धरै तब तांबे के समान शुद्ध पारा गंधक ले सेवड़ी रसमें १ दिन घोटि गोली करि मूसा यंत्र में धरि बालुक यन्त्र में आंचदे तब दो गुंजा खिलावै बिजौरा को जड़ को समेवा काढ़े में यह रस दे इस रसका नाम त्रिविक्रम है मासे भर सेवन करै तौ पथरी दूर होय ॥

अथ महा हरतालेश्वर ॥

हरताल । सोनामाखी । मैनसिल । पारा । सेंधव । सुहागा ये सब समान खरल करि पारे से दूनी गंधक ले और गन्धकके तुल्य मरा तांबा जंभीरी के रसमें ५ दिन घोटि सराव संपुट में धरि कपरौटी करि भूधर यंत्र में फूंक दे इसी प्रकार से ६ बार फूंके फिर निकारि बिजैसारमें ५ दिन घोटे पूर्ववत तब ६ पल रस ले मरा तांबा २ पल मरा लोहा ४ पल ये तीनों जंभीरी के रस में १ दिन घोटि दस गाइटा में आंचदे इसभस्म का तीसवां अंस सींगिया दे खरल करै तब दो मासे भैंस के रसमें नित्य खाय इस पीछे बकुची का

चूर्ण दश मासे मधुयुक्त घीके साथ खाय तौ सबकुष्ट नाश होय इसका नाम महातालेश्वर है ॥

अथ कुष्ट कुठार रस ॥

पारे की भस्म। गंधक। मराहुआ लोहा। ताम्र गुग्गल त्रिफला बकाइन चीता शुद्ध शिलाजीत इन सबको सोलह शाणले और कञ्चरेंजे के बीजों का चूर्ण चौंसठि शाणले और अभ्रक भस्म भी चौंसठि शाणले इन सब द्रव्यों को इकट्ठी कर समान घृत में सानि घृत भांड़ में भरि करि रखि छोड़े फिर आठ मासे खिलावै तो सब कुष्ट दूर करै इस कुष्टकुठार रस से गलित कुष्ट भी अच्छा होजाता है ॥

अथ उदयादित्य रस ॥

शुद्धपारा। दूनी गंधक ले घीक्वार के रसमें १ दिन मर्दन करै फिर उसका गोला बांधि माटी के पात्र में धरि उसके ऊपर १ कटोरी जो पारे से तिगुने तांबे की गहरी बनी हो ढक दे और ढकने के चारों तरफ राख भरि चूल्हे पर चढ़ा दे और दो पहर की आंचदे परंतु इस अन्तर उस तांबे की कटोरी पर गोबर मिला हुआ जल छोड़ता जाय अन्त में तीव्र आंच दे ठंढा करि उतारि ले फिर कठगूलर चीता। त्रिफला। अमलतास। पञ्चविड़ंग। बकुची के बीज इन का क्वाथ करि इस को भावना दे २१ दिन घोटे यह उदयादित्य रस २ गुंजा खिलाने से विचर्चिका दाद श्वेत कुष्ट यह सब अच्छे होंय इसका अनोपान खदिरसार क्वाथ वा गऊ का दूध अथवा त्रिफले के क्वाथ में तीन माशा बकुची का चूर्ण मिला देय इस रस से तीन दिन में फूटक कुष्ट और ७ दिन में श्वेत कुष्ट दूर होता है ॥

अथवा यह लेप लगावै नीलपत्र। गुंजक। कसीस। धतूरा। हंसपद। सूर्यमुखी। छोटी लुनियां। ये सब समान भागले जहां फूटा हो तहां लेप करिदे तौ सात दिनमें गलित कुष्ट अच्छा होय और श्वेत कुष्ट साध्य अथवा असाध्य

कैसाही होय दूर होय इसी पर महात्मा लोगों ने और भी लेप कहा है घुंघची और चीता जल में पीसि लेप करै तौ श्वेत कुष्ट दूर होय अथवा मैनशिल चिर्चिरा और राख पीसि पानी के साथ लेप करने से श्वेत कुष्ट दूर होय॥

अथ कुष्ट पर सर्वेश्वर रस॥

शुद्ध पारा १ पल और गंधक ४ पल ले १ पहर खरल करै फिर मरा तांबा अभ्रक लोह शुद्ध ईंगुर एक २ पल ले और मरा सोना और चांदी भी एक २ पलले और १ मासे हीरा २ पल हरताल का सतले जंभीरी धतूरा। कसा। सेंहुड़। मदार। बकाइन। कुचला। करैर। मूल। इन सबके रसमें एक २ दिन भावना दे घोटै इसी प्रकार से ७ दिन करै फिर सुखाय कपरौटी करि बालू के यंत्र में ३ दिन तक मंद २ आंच दे पचावे इसको निकालि चूर्ण करि एक पल सौगीया और २ पल पीपल का चूर्ण ले मिलावै फिर दुइ गुंजा सहत के साथ खिलावे तौ श्वेत कुष्ट दूरि होय और इसके ऊपर से बकुची। औ देवदारु का चूर्ण कर्ष भरि रंडी के तेल में मिला चाटे॥

अथ मेह बद्ध रस।

मरा पारा। कांती भस्म। लोह भस्म। शिलाजीत। शुद्ध सोना माखी शुद्ध मैनशिल। शुद्ध त्रिकुटा। त्रिफला। झर बेरी की गूदी। कैथा। और हरदी इन सब का चूर्ण भंगरे के रसमें घोटै जब सूख जाय तब सहद मिलाय चाटे और ४ मासे नित्य खाय तौ प्रमेह नाश होय—और बकाइन के ६ बीज ले ४ पैसा भरि चांवल का धोवन और ८ मासे घी इन सबको मिलाय पिये तौ दिनी प्रमेह दूर होय॥

अथ जलोदर परवह्नि रस॥

पारा ४ पल। गंधक आठ पल। हरदी। त्रिफला। हड़ इन सबों को दो २ पल ले और निशोथ जैपाल चीता इन सबों

को तीन २ पल ले और त्रिकुटा जमाल गोट की जड़ श्वेत जीरा ये आठ २ पल ले फिर सबको मिलाय खरल करै फिर जयंती रस सेंहुड़ का दूध भंगरे का रस अथवा काढ़ा और रेंडी का तेल इन सबों में क्रम से सात ७ भावना दे इस महा वह्नि रस को ४ मासे मुंहमें धरि गरम पानीसे उतारि जाय फिर जब मल गिर जाय तब संध्याको रेचन होने पर मट्ठा भात और सेंधव पथ्य दे और गरम जल पिये तौ सब पेट के रोग दूर होंय मूढ़ वात भी जाय ॥

अथ विद्या धर रस ।

शुद्ध गंधक । हरताल । सोना माखी । मरा तांबा । मैनशिल । पारा इन सबको समान ले खरल करै फिर पीपल के काथमें दिन भर खरल कर १ दिन सेंहुड़ के दूध में खरल करै फिर २ मासे सहत में चाटै तौ गुल्म प्लीहा दूर होय इस रस को खा ऊपर से दूध पिये ॥

अथ त्रिनेत्र रस ।

सुहागा । हिरन का सींग । मरा हुआ सोना । तांबा । और पारा इनको एक दिन तक अदरक के रसमें घोटै फिर गजपुट में फूंक दे इस त्रिनेत्र रस को मासे भरि घृत और सहत में चाटै और उसके ऊपर सेंधव । जीरा । हींग । घृत और शहत भी चाटै इस प्रकार से महीने भर नियम करै तो पसली की सब पीड़ा जाय ॥

अथ गज केसरी रस ।

शुद्ध पारा दूनी शुद्ध गंधक दोनों को बल पूर्वक घोटि दोनों के तुल्य शुद्ध तांबा ले कजरी में मिलाय संपुट करै फिर मिट्टीके बरतन में नोन के बीज में संपुट गाड़ि गजपुट की आंच दे जब ठंढा हो जाय तब निकालि ले फिर खरल करि पक्कपान के रस खवावे तौ पेट का शूल दूर होय और उसी पर भूनी हींग । सोंठ । जीरा । बच । मिरच । इनके चूर्ण को उष्णोदक के साथ पिये तौ असाध्य शूल भी नाश होय ॥

अथ अग्नि तुण्डी रस ॥

शुद्ध पारा। विष। गंधक। तीनों अजमोद। त्रिफला। सज्जी। जवाखार। चीता। सेंधव। जीरा। काला नोंन। विड़ंग। गंगा लोन। त्रिकुटा इन सबके समान भाग ले और सबके समान कुचला ले जंभीरीके रसमें छोटी मिरच सम गोली बांधि खाय तौ मंदाग्नि दूर होय ॥

अथ अजीर्ण कंटक रस ॥

पारा। सींगिया। गंधक। तीनों शुद्ध और समान ले खरल करि सबके समान मिरच दे भटकटैया के रसमें भिजोय २१ बार घोटि तीन रत्ती भरिकी गोली बनाय खाय इस गोली से अजीर्ण शांति होय और विसूचिका जाय ॥

अथ मांपान भैरव ॥

मरा हुआ पारा और तांबा। हींग। पोहकर मूल। सेंधव। शुद्धगंधक। हरताल। कटुकी सबों कों बराबरले खरल करै और गदापुरैना। बंदाल। मेवड़ी। चौराई। करई तोरई। इनसबों के रसमें क्रमसे बलपूर्वक घोटै फिर माशेभर सहत के साथ खाय और ऊपर से निंदक क्वाथ पिये तौ कफ रोग जाय ॥

अथ वात नाशक रस ॥

शुद्ध पारा। शुद्धसोना। शुद्ध लोहा। शुद्ध हीरा। शुद्धसोनामाखी। शुद्ध हरताल। शुद्ध सुरमा। शुद्ध तूतिया। अफीम ये सम भाग लें और १ भागमें पांचों नमकले सबको सेंहुड के दूध में खरल करि संपुट में राखि भूधर यंत्र में पचावै फिर माशे भर अद्रक के रस में खाय तौ सब वायु नाश होय अथवा पीपरा मूल के क्वाथ में पीपरि मिलाय खाय तौ सब दाद विकार दूर होय ॥

अथ कनक सुन्दर रस ॥

आठ भाग सोने की भस्म और १२ भाग पारे की भस्मले और १२ भाग शुद्ध गंधक ले २ शाण ताम्र भस्म ले और

अभ्रक कीभस्म ४ भाग सोनामाखी की भ० २ भाग वंग की भ० २ भाग सुर्मा की भ० ३ भाग लोह भ० ८ विष की भ० ३ करियारी पल भरि इन सबों को आंवले और जंभीरी के रस में खरल करि संपुट करि थोरी आंच दे फूंकि फिर खरल करै फिर माशे भरि खिलावै तौ सन्निपात दूर होय और अदरक अथवा लहसुन के रसमें खिलावै तौ कुष्टविसर्प भगंदर ज्वर विष विकार ये सब जांय ॥

अथ भैरव रस ॥

पारा ३ निष्क गंधक ३ निष्क इन दोनों को घोटि कजली करि तांबा चांदी पीतरि वंग पोलाद आदि की कर्ष कर्ष भरि भस्म ले सहिजने की जड़का रस सोंठिका काढ़ा बेलके फल का रस चौराई का रस आदि में पहर भर घोटि गोला बांधे फिर इस गोले को दोकांच के प्यालों के नोन पूरित के संपुट में राखि उसके ऊपर से कपरौटी मिट्टी करै फिर इसको एक मिट्टी के पात्र में धरि बालुका यंत्र करि २ पहर की आंच दे जब ठंढा होय तब निकालि उसमें एक कर्ष मूंगे का चूर्ण विष भाग भरि काले सर्पके जहर युक्त एक दिन खरल करै फिर कांचकी शीशीमें भरि दो पहर की आंचदे जब ठंढा होय तब निकालि करि चूर्ण करै फिर तगर। मुशली। जटामासी। चूक। जगन्नाथी। पीपरि। नील की पत्ती। इलायची। चीता। कटसरैया। सौंफ। बनतुई। धतूरा। अगस्त। मुराडी। मकुआ चमेली। मैन फल आदि के रसमें अथवा काढ़े में एकर बार घोटि सुखाय राखे फिर इस रसको सन्निपातमें मिरच दो गुंजा जंभीरी अथवा अद्रक के रसमें दे यह रस शारंगधर में लिखा है ॥

अथ ग्रहणी कपाट रस ॥

चांदी। मोती। सोना। लोह। इनकी भस्म एक २ भाग ले शुद्ध गंधक २ भाग शुद्ध पारा ३ भाग ले खरल करै फिर

इसको कैथे के रस में खरल कर हिरण के सींग में भरि ३० गोइटा को आंच दे जब ठंढा हो तब निकारि ले बरियारे के रसमें ७ बार खरल करै तिस पीछे चिर्चिरे के रस में ३ बार खरल करै फिर लोध। अतीस। मोथा। धवपुष्प। इन्द्रजव और गुर्च इनके रसमें क्रमसे तीन २ बार खरल करै और मासे२ भर सहत और मिर्च मिलाय चाटै तौ सब अतीसार संहग्रणी दूर होय और अग्नि दीपन होय॥

अथ वज्र कपाट रस॥

पारे और अभ्रक की भस्म। शुद्ध गंधक। जवाखार। सुहागा। अरणी। बोजबाल। बच। इन सबको समान भाग ले यह रस जंभीरी और भंगरे के रसमें तीन२ दिन घोटि गोला करि सुखाय लोहे की कड़ाही में धरि ऊपर से मिट्टी का पात्र ढंकि ४ घड़ी तक मंद२ आंच दे फिर उसको उतारि करि उसके समान उसमें अतीस मोथा रस डालि कैथे और भांगरे के रसमें ७ बार घोटै फिर धवपुष्प। इन्द्रजव। मोथा। लोध। बेल और गुर्च इनके रसमें एक२ बार घोटि सुखा ले फिर इस रसको शाणभरि सहत के साथ खाय और ऊपर से चीता। सोठि। पांगानौन। बेल। सधव इन सब का समान भाग चूर्ण करि उष्ण जलके साथ खाय तो ग्रहणी दूरि होय॥

अथ मदन कामदेव रस॥

चांदी। हीरा। सोना। तांबा आदि की भस्म पारा। गंधक। लोहा। तीनों शुद्ध ले इन सातों को क्रमसे बढ़ती भाग ले और घीकार के रसमें घोटि शीशीमें भरि कपरौटी कर माटी के पात्र में नीचे ऊपर नोन पूरि बीच में शीशी धरि संपुट करि चूल्हे पर धरि मंद२ आंच दिन भर जलावे फिर निकारि मदार के दूध में खरल करै फिर असगंध का कोली। बिनाभी असगंध। किमाच। मुशली। तालमखाना और सतावरि इनके रसमें तीन२ भावना दे फिर कमलकी

भरले जड़। कसेरू और कांस इनमें तीन भावनादे और कस्तूरी। त्रिकुटा। कपूर।शीतलचीनी। इलायची। लवंग आदि को पीसेफिर पूर्व चूर्णजो भावनादि से सिद्ध किया है उसका अष्टमांश कस्तूर्यादि चूर्ण युक्त करि सबके समान शक्कर मिलाय शाण ५ भरि खाय ८ पैसा भर दूध पिये पथ्य मधुर करै इसके खाने से बहुत स्त्री गमन करै और धातु न घटै॥

अथ कन्दर्प सुन्दर रस॥

पारा। शुद्ध हीरा। मोती। चांदी। सोना। कृष्णाभ्रक। इन पांचों की भस्म कर्ष २ भरि ले कर रखै के क्वाथ में १ दिन घोटे फिर मूंगे का चूर्ण शुद्धगंध कदोदो कर्ष मिलाय असगंध के रसमें एक दिन घुटाय मृग के सींग में भरि कपरौटी करि थोड़ी आंच में धरि फूंकदे तिस पर धवफूल के रस अथवा क्वाथ में भावना दे फिर काकोली। बिनाआसन मुरेठी। जटामासी। बरियारा। गुलशकरी।ककई। भसींड। हिंगवट। मुनक्का। पीपरि। कावादी। कटिसरैया। वन मूंग। मुग्ध पर्णी। फालसा। कसेरू। महुआ। किवांच के बीज इन सब के रस में एक एक भावना दे सुखाइ खरल करि धरि राखै और इलायची। तज। पत्रज। बंशलोचन। लौंग अगर। केशर। मोथा। कस्तूरी। पीपरि। सुगन्धवाला और कपूर इनका चूर्ण करि शाण भरि ले और शाण भरि पूर्वोक्त कंदर्प सुन्दर रस और खांड़ आंवला बिदारी कंद इन सबको मिलाय कर्ष भरि घी राति को विषयी पुरुष खाय दूध पिये तो बहुत स्त्री के साथभोग करै औ वीर्य हानि न हो॥

अथ लोह रसायन॥

पारा और गंधक दोनों को शुद्ध एकएक भाग ले दोनों को घोटि कजली करै फिर तीन भाग शुद्ध पोलाद का चूर्ण ले कजली के साथ पहर भरि घोटे तिस पीछे घीक्वार के रसमें ३ दिन तक घाम में बैठि करि घोटे फिर घाम और

घोटने की गरमी से बहुत धूआं उठेगा जब कड़ा हो तब गोला बांधि रेंड पत्र लपेटि तांबे के पात्र में राखि घाममें तीन दिन गाड़ रक्खे फिर निकालि घाममें धरि सबुजा के रस की ३ भावना दे जब सूखि जाय तब सोंठि। मिरचि। पीपरि। तीनों के तीन क्वाथ करि तीन भावना दे फिर रूसा। गुर्च। चीता। इन को एक एक के रसमें तीन २ भावना दे जलसे निकारि लोह पात्र में धरि त्रिफला में घोटि मेवड़ी अनार का छिलका। भसींड़। भंगरा। कटसरैया। पलास। केले का वृक्ष। रस बिजैसार के रस का क्वाथ। नीलसुंडी रस। बबूर फली। फलीसा इन सब के रस अथवा क्वाथ में ३ भावना दे फिर बरियारा। शतावरि। गुखरू। कुरहट इनके रसमें तीन २ भावना दे जो सब मिलि जाय फिर प्रभात समय ८ मासे रस घृत और शहत में खिलावे और ऊपर से पल भरि त्रिफला का क्वाथ पिये यही इसका अनोपान है और तीन मासे सेवन करै तौ श्वेत बार न हों और त्वचा पर झुर्री न परै और मंदाग्नि श्वास खांसी पांडु कफ बायुबिकार इन सबके अर्थ त्रिफला युक्त खाय और पीपरि और शहत में देय तौ बल सुन्दरता और आयु बढ़ावे और लोह खाने वाला श्वेत कुम्हड़ा तिलका तेल उर्द राई मद्य खटाई ये पदार्थ छोड़ दे॥

इति श्रीमन्महाराजा धिराज राजेन्द्र श्री सवाई
प्रताप सिंह जी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रंथे
सर्व धातु भस्म रसादि निरूपणं नाम
षट विंशतित मस्तरङ्गः॥*॥*॥

अथ आसव बनाने की बिधि लिखते हैं॥

अथ-दशमूलासव की विधि॥

शालिपर्णी। पृष्टिपर्णी। दोनों कटेली। गोखुरू। बेल। अरणी। अरलू। कुंभेर। पाढ़ल। इन सबकी जड़ ५ टं०

चित्रक २५ ट० भर पुस्करमूल २५ ट० भर लोध २० ट०भर गिलोय २० ट० भर आंवले १६ ट० भर धमासा १२ ट०भर खैरसार १२ ट० भर बिजैसार १२ ट० भर हड़की छाल १२ ट० भर कूट ९६ ट० भर मंजीठ १२ ट० भर देवदारु २ ट० भर बायबिड़ंग २ ट० भर मुलहटी २ ट० भर भारंगी २ट० भर कैथ २ ट० भर बहेड़े की छाल २ ट० भर सांटी की जड़ २ ट० भर पद्माख २ ट० भर नागकेसर २ ट० भर नागरमोथा २ ट० भर चव्य२ ट० भर छड़ २ ट० भर फूलप्रियंगु २ ट० भर गौरीसर २ ट० भर कालाजीरा २ ट०भर निसोत २ ट० भर सम्हालू २ट० भर रासना २ट० भर पीपल २ ट० भर सुपारी १ ट० भर कचूर १ ट० भर हल्दी २ ट० भर सौंफ २ ट० भर इन्द्रजव २ ट० भर काकड़ासिंगी २ ट० भर काकोली २ ट० भर क्षीरकाकोली २ ट० भर ऋद्धि २ ट० भर वृद्धि २ ट० भर मुनक्का दाख ६० ट० भर सहत ३२ ट० भर धवई के फूल ५ सेर बोरझड़ी ५ सेर बेलकी छाल १५ सेर इन सबको अठगुने पानी में औटाय उसका चौथा हिस्सा रक्खे अथवा इन सबको जवकुट कर बड़े मटके में धरै इसके अनुमान माफिक पानी डालै और पानी में चोखा गुड़ पक्का १ मन मिलावे और खाय अर्थात घूरे की जमीन में इस मटके को गाड़ दे और मटके का मुंह ढांक दे २१ दिन पीछे जब इसका जावा उठे तब जावेको और मटके में भरै दारू काढ़ने के यंत्र से और वासन में इस आसव को कढ़ाय ले और उस यंत्र के मुंह पर यह सुगन्ध की औषधि पोटली कर डाले खस। चन्दनकाचूर। जायफल। लवंग। दालचीनी। इलायची। पत्रज। केसर। पीपल। ये सब औषधि दो २ टके भर लीजै और कस्तूरी ४ मासे इन्हें पीस उस यंत्र के मूंढे पर पोटली करि धरै इसी तरह यह आसव बनाय ले पीछे इसको पुराना करि २ट० भर अनुमान माफिक जो मदात्यय के प्रकर्ण में इसकै

पीने की विधि लिखी है उसके माफिक पीवे तौ क्षयी रोग संग्रहणी अरुचि शूल श्वास कास भगन्दर बायु के सब रोग कोढ़ बवासीर प्रमेह मन्दाग्नि उदरके सब रोग पथरी मूत्रकृच्छ्र इन सबको यह दूर करै और भूखको बढ़ावै और नपुंसक पने को दूर करै और शरीर को पुष्ट करै और शरीर में बीर्यको बहुत बढ़ावै—इति दशमूलासबकी विधि सम्पूर्ण ॥ और इसी तरह सब आसव दाख अंगूर आदि के बना लेय ॥

अथ मूसली पाक बनाने की विधि ॥

सुपेद मूसली पाव भर ले कौंचके बीज २॥ टं० बिदारी कन्द २॥ टं० गोखरू २॥ टं० शतावरि २॥ टं० खरैटी के बीज १ टं० गंगेरणि की छाल १ टके भर तज १ टं० भर सोंठ २ टं० भर इन्हें महीन पीस इनकी बराबर घृत में इन्हे भकरोय १० सेर दूध में पकावे और दूधका खैरा अर्थात् कड़ा मावा करै पीछे १ सेर खांड़ की लड्डुओं कीसी चासनी करै पीछे चासनी में यह मावा डाले और यह औषधि चासनी में डाले मिरच २ टं० भर पीपल २ टं० भर सोंठ २ टं० भर दालचीनी १ टं० भर पत्रज २॥ टं० इलायची १ टं० भर नाग केसर २ टं० भर कस्तूरी ४ मासे लवंग १ टं० भर जायफल १ टं० भर जावित्री १ टं० भर बंशलोचन १ टं० भर इन औषधियों को जुदी २ पीस इस चासनी में डालै और सारबंग अभ्रक मृगांक और हर गौरीरस ये भी अनुमान माफिक चासनी में डालै पीछे इनको एक जीव कर गोली १ टं० भरकी बांधे इस गोली को नित्य एक प्रभात एक संध्या समय खाय तौ शरीर को पुष्ट करै और प्रमेहादिक सब रोगों को दूर करै है—इति मूसली पाककी विधि संपूर्ण ॥ और इसी तरह सब पाक करले ॥

अथ शिलाजीत के शोधने की विधि ॥

शिलाजीत जो पर्वत का मद उसे लीजे अथवा जिसमें

वह निकला हो उस पत्थर को ले फिर उस शिलाजीतको गौके दूध में भिगोवे अथवा त्रिफले के काढ़े में भिगोवे अथवा भांगरे के रसमें भिगोवे १ दिन पीछे उस बासन में उसन खूब मसले फिर उसको कपड़छान कर धूपमें सुखाय ले तब वह शुद्ध होय ॥ अथवा शिलाजीत के कांकरे को ले उन्हे पीस गरम पानी में २ पहर रक्खे फिर उसको मसल और मट्टी के पात्र में वस्त्र से छान ले पीछे उस पात्र को धूप में धरे ऊपर का पानी उसका दूसरे पात्रमें नितार ले इसी तरह वारंवार दो महीने तक करता जाय तब वह शिलाजीत शुद्ध होय अग्नि में निर्धूम होय और अग्नि में धरने से लिंगोपम खड़ा होजाय शोधा शिलाजीत प्रमेह को आदि ले बहुत रोगों को दूर करै है और शरीर को पुष्ट करै है ॥ इति शिलाजीत शोधनम् ॥

अथ जवाखार को आदि ले सम्पूर्ण खारों के बनाने की बिधि ॥

कांचे जवों को काटि उन्हे सुखाय ले फिर जलाय उसकी राख कर उस राख को बासन में २ दिन तक भिगोय दीजे पीछे टिकड़ी के कपड़ा बांध उस कपड़े में वह राख सब समेत पानीमें डालदे जब तक उसमें खारा पानी निकले तब तक और पानी डालता जाय पीछे उस पानीको कढ़ाई चढ़ाय वह पानी जला दीजै जब उस कढ़ाई में उस पानी का नोन समान खार जमि जाय इसी तरह सब खार कर लीजै इति जवाखारको आदिले सब खारोंके बनानेकी बिधि ॥

अथ चनाखार के बनाने की बिधि ॥

मांह के महीने में चने के खेत होंय हैं उस खेत के ऊपर महीन कपड़ा ३ घड़ी ४ घड़ी के तड़के चतुर आदमी फेर लावे और वही कपड़ा १५ दिन तक फेरै और नित्य उस कपड़े को सुखाता जाय वह कड़ा होय तब तक पीछे उस कपड़े को पानी में भिगोय दे कड़ाही में और कपड़े से वह पानी छान ले पीछे कड़ाही में वह नितरा पानी

डाल चासनी समान गाढ़ा कर बासन में भर राखे तो वह चोखा चनाखार होय और वह खट्टा बहुत होय ॥ इति चनाखार बनाने की विधि सम्पूर्ण ॥

अथ स्नेह विधि ।

स्नेह चारि प्रकार का है घृत १ तैल २ बसा अर्थात् मांसमें मिली चरबी ३ और हाड़ के भीतर की मज्जा ४ वैद्य को उचित है कि इन चारों को सूर्योदय होते मनुष्य को पिलावे फिर इनमें भी दो भेद हैं स्थावर १ जंगम २ स्थावर का अर्थ अचर अर्थात् जहां उपजै वहीं स्थिर रहै इस प्रकार से स्नेह अनेक प्रकार के हैं और जंगम का अर्थ चर है अर्थात् जो श्वास सहित हो इसमें घृत श्रेष्ठ है अथ स्नेह भेद । घी और तेल मिलावै उसे यम कहते हैं और घी तेल और बसा मिलावै उसे त्रिवृत्त कहते हैं और घीतेल बसामज्जा संयुक्त हो उसे महान् कहते हैं । अथ स्नेह पान । क्रम रोगी को घृत तीन दिन पिलावै तेल चार दिन बसा पांच दिन मज्जा छह दिन घृतादि स्नेह ७ दिन और फिर अधिक से अधिक पान करने से आहार होजाता है और औषधि से दृढ़ गुण नहीं करता अथ स्नेह मात्रा प्रकार वातादि दोष ऋतु काल जठराग्नि अवस्था और निर्बल सबल सम बल बिचारि अल्पमध्य अथवा ज्येष्ठ मात्रा यथोचित रोगीको घृत स्नेह की मात्रा देना चाहिये और मात्रा और प्राण और बिना दोष समझें और बिना बल जाने न्यूनाधिक मात्रा अकाल वा बिपरीत भोजन और बिहार करने से सूजन अर्श ऊंघना निद्रा असावधानता ये रोग होते हैं दवना समय घट बढ़ बिना रुचि देश काल बिरुद्ध खाने को मिथ्याहार कहते हैं और अकाल परिश्रम करना ऋतु से बिपरीत यथा गरमी में धूप खाना सरदी में बहुत जलाभ्यास बिना बस्त्र इत्यादि को मिथ्या बिहार कहते हैं अथ मात्रा प्रमाण ॥ दीप्ताग्नि वाले को मात्रा घृतादि स्नेह

पलभरि देना मध्यमाग्नी मनुष्य को ३ कर्ष प्रमाण मंदाग्नि मनुष्य को दो कर्ष प्रमाण मात्रा का देना उचित है और ऋषि घृतादि पान की सामान्य मात्रा कहते हैं ये तीन प्रकार की हैं प्रथम महती अर्थात् जो आठ पहर में पचै दूसरी मध्यमा अर्थात जो दिन भर में पचै तीसरी अल्पा अर्थात् जो दो पहर में पचै इन तीनों मात्राओं में तिलका प्रमाण नहीं जैसा पचै वैसाही देय सब मात्राओं से अल्पा सुखदाई है ॥

अथ अल्पादि मात्रा गुण ॥

अल्प मात्रा दो कर्ष की अग्निदीप्त करती है और इससे स्त्री प्रसंग की इच्छा होती है और जो थोड़े वातादि कुपित हों उन्हें शांति करती है और मध्यम मात्रा कर्ष तिनका शरीर पुष्ट धातुवृद्धि श्रम शांति करती है और ज्येष्ठ मात्रा पलभर की है इस मात्रा से कुष्ट रोग बीस प्रकार का उन्माद भूत प्रेत बाधा और मृगी ये रोग दूर करती है ॥ दोषोचित अनोपान पित्त कोप में केवल घृत बायु कोप में सैंधव संयुक्त घृत और कफ कोप में सोंठि मिर्च पीपरि बा सार पीसि घृत में युक्त करि पियावे और ऋषाई उस घृत विषार्ति और बात पित्त दोष छीज बुद्धि और सुधि भुलाना इन सबों में घृत अवश्य पिलाना चाहिये और कृमि विकार बायु वृद्धि शरीर कफ और मेद वृद्धि इन सब में तैलका देनाउचित है और जो तैल उसे सौभाविक अहित हो तौ अग्नि भी दीप्त करैगा और जो मनुष्य परिश्रम करि दुर्बल और पीड़ित हो धातु क्षीण शुष्करक्त शरीर पीड़ा अस्साक आक्षेपकादि बायु बलिष्ट बायु इनमें बसा पिलाना योग्य है और दुष्ट कोष्टक्लिशत बायु पीड़ित और प्रबलाग्नि वाले को मज्जा का पिलाना योग्य है और सर्व शरीर को हित है ॥

अथ स्नेह पान समय ॥

शीत काल में दिनमें पिलावै उष्ण काल में रातको वात पित्त अधिक वाले को रात को और वात और कफ अधिक वाले को दिन में पिलावै और घृतादि कर्म विशेष कर नाश के कारण मर्दन को कुल्ली को मस्तक में दाबने को काल और आंखि में डालने को घृत वा तेल वातादि दोष सबल निर्बल विचार वैद्य युक्त करै ॥

अथ स्नेह पानानुपान ॥

घृत उष्णोदक के साथ पिये तेल यूष के साथ पिये और चरबी हाड़ मज्जा माड़ युक्त पीने से सुखदाई होता है और जिसे स्नेह न भावै उसे अन्न के साथ दे और बालक बूढ़ा सुकुमार दुर्बल मृदुमायुक्त मनुष्य को गरमी में भात के साथ दे ॥

अथ स्नेह वागू ॥

तिल को भले प्रकार कूटि उसमें थोड़े चावल का चून डालि थोड़ा घृत और जल देकर पतला पकाइ ले तब गुनगुना खाय तौ धातु को बहुत उत्पन्न करै और शरीर को चिकना करै ॥

अथ धारोष्ण दुग्ध विधि ॥

दोहनी के भीतर मिश्री पीसि घृत मिलाय तिस करै तिससे कि दुग्ध दुहा तुरंत गर्म २ पिलावै तौ धातु जल्द पैदा हो और स्नेह पीने पर परिश्रम करने वा कफ कृत पदार्थ खाने से स्नेह न पचा हो वा मलारोधि क्रिया हो तौ उष्ण जल से वमन करावै तौ अजीर्ण दोष मिटै जो स्नेह अजीर्ण की शंका होतो तप्त जल प्यावै जब शुद्ध डकार आवै और अन्न पर इच्छा करै तौ जाने कि अजीर्ण शांति भया और स्नेह जन्य पित्त कोप यत पित्त प्रकृति को स्नेह पान से गरमी होती है और प्यास विशेष लगती है उसे सीत जल पिलावै वमन करावै तौ प्यास ऊष्मा शांति होय और स्नेह

निषेद अजीर्ण में उदर रोग में तरुण ज्वर में दुर्बल को अरुचि को अति स्थूल को मूर्छा में मदार्ति को बस्ति कर्म भये को बिरेचन भये को बमन को परिश्रमी को गर्भ गिरी स्त्री को इन सबको स्नेह न प्यावै स्नेह योग्य औषधि दे और जिसे खेद निकला हो रेचन कराया होय मद्य पीने वाले को मैथुनश्रमी को बाल वृद्ध को रूक्ष शरीर को रक्त धातु क्षीण को वातार्ती को तिमिर रोगी को घृतादि स्नेह पिलाना योग्य है ॥

अथ स्नेह गुणादि लक्षण ॥

जो स्नेह पान से गुण भया हो तौ शरीर में बायु शुद्ध कर्ता है अग्नि की दीपन चिकना झाड़ा सफा तन कोमल तेज युक्त चिकना ग्लानि रहित स्नेह में भी मनुष्य ऐसा हो जाता है उपद्रव बिना शरीर हलका इन्द्री निर्मल जिसके ये लक्षण होंय उसको जानो कि स्नेह अच्छा भया और रूखे लक्षण होंय तौ स्नेह पान बिपरीत समझना ॥

अथ स्नेह बहुत पीने के उपद्रव ॥

अन्न न भावै मुख में पानी छुटै मल मार्ग में जल न रहै और मल बढै तन्द्रा अतीसार शरीर पांडु ये सब अति स्नेह के लक्षण हैं ॥

अथ स्नेह रूक्ष सूक्षस्निग्ध प्रतीकार ॥

रूक्ष मनुष्य को बिना मक्खन निकाला मट्ठा तिलका कल्क यव का सत्तू खिलाय स्निग्ध करै और स्निग्धके समान चावल चनादि खिलाय रूखा करै ॥

अथ स्नेह सेवन गुण ॥

अग्नि दीप्त शुद्ध कोढ़ धातु पुष्ट इन्द्री दृढ़ जरा रहित बल क्रांति युक्त लक्षण होते हैं और स्नेह सेवन में ये बातें मना है श्रम न करै ठंडे पदार्थ तजै मल मूत्र न रोके बहुत न जागे दिन में न सोवै और कफ कृत पदार्थ रूक्षान्न न खाय ॥

अथ स्वेद विधि ॥

स्वेद चार प्रकार का १ ताप २ उष्मा ३ उपनाह ४ द्रव स्वेद ताप और उष्मा स्वेद कफ के रोग को दूर करै है वालू रेत नोन वस्त्र गरम हाथ टकनी अंगीठी इतने सेंक करै पसीना आवै उसे तापस्वेद कहिये ॥ १ लोहकी पींड़ीईंट आदि के तपाने से पसीना आवै उसे उष्मास्वेद कहिये २ ॥ ताप और उष्मा इन दोनों के मिलने से जो पसीना आवे उसे उपनाह स्वेद कहिये ३॥ और शरीर को वस्त्र से ढांक और शरीर के ऊपर गरम खटाई के पानी से सींचे अथवा बायु को दूर करने वाली औषधियों का गरम पानी शरीर के ऊपर डालै पसीना बहुत आवै उसे द्रवस्वेद कहिये ॥ ४ ये चारों प्रस्वेद बायु के रोगों को दूर करै हैं ॥

अथ महा साल्वण स्वेद ॥

कुलत्थ । उड़द । गेहूं । अलसी । तिल । सरसों । सौंफ । देवदारु । सम्हालू । जीरा । अरंडोली । अरंड की जड़ । रास्ना । सहजने की जड़ इन सबको नोन समेत कांजी से अथवा किसी खटाई से महीन पीस उसको गरम कर शरीर में जहां बायु भरी होय वहां सेंके तो बायु के सब रोग जांय—इति महा साल्वण स्वेद ॥ इति स्वेद विधिः ॥

अथ बमन विधि ॥

शरद बसन्त वर्षा इन ऋतुओंमें मनुष्य मात्रको बमन और जुलाब लेना योग्य है जिसके शरीर में कफके रोग होंय और हृदय आदि दूखै और विषका दोष होय और श्लीपद का कोढ़ । विसर्प । प्रमेह । अजीर्ण । भ्रम । श्वास । खांसी । पीनस । मृगी । उन्माद । रक्तातीसार । नाक । तालू । ओठ । कान पकि गए हों । दो जीभ हो गई होंय । अतीसार होय । पित्त कफके रोग होंय । मेद बढ़ि गई होय । शिरके रोग होंय । पसलियां । दूखैं तत्काल ज्वर होय । और अरुचि होय इन सब रोगोंमें बमन करना योग्य है बमनसे ये रोग जांय १ ॥

और इतने रोगों में बमन करावे नहीं तिमिर के रोगमें। गोलेके रोग में। उदर के रोग में। दुर्बल और बूढ़ेको। गर्भिणी को। और स्थूल को। चोट लगी होय उसको। मेद वाले को। भूखे को। उदावर्त्ती को। बायु के रोगी को। इन्हे बमन करावै नहीं॥

अथ बमन की बिधि॥

मैदड़ी रावड़ी पतली को पेट भर खवाइये और मैदड़ी में दूध मट्ठा दही ये डाल कंठ पर्यन्त खवाइये पीछे सेंधानोन सहत बच यह खवाय ऊपर गरम पानी पिलाय गलेमें अंगुली डाल बमन करावै॥२॥ अथवा कुटकी और तीखी वस्तु अथवा मैढ़ल का चूर्ण गरम २ पानी से ले अथवा फिटकिरी तमाकू आदि गरमपानी से ले तो बमन होयअथवा नीब को आदि ले कड़वद्रव्यसे बमन होय तो यह पीछे कहे सब रोग जांय औरबमन करै पीछे जीभ में जीरा आदि अच्छी वस्तु लगावै अथवा बिजौरा आदि अच्छी वस्तु लगावे अतर आदि सुगन्धि सूंघिये अच्छे २ भोजन करिये इति बमन बिधि:॥

अथ गंडूक बिधि माह॥

गंडूक चारि प्रकार का है स्नेहक १ शमन २ शोधन ३ रोपण ४ इसी प्रकार से कवल भी ४ प्रकार का है॥

अथ स्नेहका गंडूक भेद॥

चिकने और उष्ण पदार्थ को स्नेह कहते हैं यह बायु की प्रबलता में देना चाहिये और ठंडे पदार्थ को शमन कहते हैं इसे पित्त के बिकार में देना चाहिये और कडुआ खट्टा और उष्ण पदार्थ को शोधन कहते हैं इसे कफ के बिकार में देना चाहिये और कषाय। कटु। मधुर। तप्त। किया पदार्थ को रोपण कहते हैं इसे ब्रणादि में देना चाहिये इसीप्रकार से कवल में भी जानना चाहिये॥

अथ गंडूक कवल रीति ॥

गीला काढ़ाआदि मुह में भरि खूब गुल्ल गुलानेको गंडूक कहते हैं और कल्क करि मुख में धरि इधर उधर फेरने को कवल कहते हैं ॥

अथ उभयो द्रव्य प्रमाण ॥

गंडूक में जो क्वाथ दिया जावै उसके द्रव्यका प्रमाण कोल कोल मात्र है और कवल कर्ष २ प्रमाण है इन गंडूक और कवल से योग्यावस्था पांच वर्ष के ऊपर है इसको चित्त सावधान करि रोगों के निवारण के लिये कपोल गला मुख आदि को कुछ सेंकि तीन वा पांच वा सातवें दोषके नाश पर्यन्त गंडूक करै और जब तक मुख में कफ न भरि-आवे अथवा तीनों दोष शांति न होजावें अथवा नेत्र और नाक से जल नउपकने लगै तब तक गंडूक करै ॥

अथ बात रोग स्नेह गंडूक ॥

मनुष्य को बात की प्रबलता में तिल कल्क पानी दूध वा तिलादि स्निग्ध गंडूक देना चाहिये ॥

अथ पित्त शमन गंडूक ॥

तिल । नील कमल । घृत । खांड़ । दूध । और शहत आदि को युक्त करि कुल्ला करने से पित्त करिके उत्पन्न हुई जो दाह तिसे दूर करता है ॥

अथ वृणादि पर गंडूक ॥

सहत के कुल्ले करने से मुख क्षत रस ज्ञान चटकना दाह प्यास आदि उपद्रव दूरि होते हैं और मुख शुद्ध होता है ॥

अथ विषादि पर गंडूक ॥

घृत वा दूध के कुल्ले करने से बिष बिकार चूने से फटा अग्नि से जला मुख अच्छा होय ॥

अथ दातों को पुष्टकारक गंडूक ॥

जिस मनुष्य के दांत हिलते होंय वह तिलके तेल में

सेंधव मिलाय कुल्ले करै तौ दांत हिलना बंद होय ॥

अथ मुख शोख पर गंडूक ॥

जिस मनुष्य का मुख सूखता हो अथवा फीका फीका रहता हो तौ वह कांजी के कुल्ले करने से शांति होय ॥

अथ कफ दोष पर गंडूक ॥

अदरक के रसमें। सेंधव। त्रिकुटा। राई आदि पीस मिला करि कुल्ला करने से कफ दोष मिटै ॥

अथ कफ रक्त पित्त पर गंडूक

त्रिफले के चूर्ण को सहत मे डालि कुल्ला करै तो मुख में कफ रक्त पित्त दोष कदापि न रहै ॥

अथ मुख रोग पर गंडूक

दारु हरदी। गुर्च। त्रिफला। दाख। चमेली। और जवासा ये समान ले क्वाथ करै फिर उसमें उसके छटे भाग की तुल्य सहत डालि कुल्ले करै तौ त्रिदोष मुख पाक जाय ॥

विशेष ॥

जो द्रव्य गंडूक करने वाली है उसको प्रति सारण और कवल में भी देना योग्य है ॥

अथ कवल विधान ॥

केशर। बिजौराकीगूदी। सेंधव। त्रिकुटा इन सबका कौर बनाय मुखमें विलोवे तौ मुख की कठोरता और कफ वात की अरुचि दूर होय ॥

अथ प्रति सारण प्रकार ॥

प्रति सारण में औषधि देने के ३ प्रकार हैं कल्क १ अवलेह २ और चूर्ण ३ जैसा मुख में रोग देखै उसी प्रकार की औषधि ले अंगुली के अग्र भाग से मुखके भीतर मलै ॥

अथ प्रति सारण चूर्ण

कूट। दारुहरदी। धव पुष्प। पाढा। कुटकी। हरदी। तेजबल। मोथा। लोध इनका चूर्ण जीभ और दांतों की जड़में बार २ मल राल गिरावे तौ इससे दांतोंकी पीड़ा रक्त का गिरना मसूड़ोंका सूजना और दाह ये रोग दूरिहोंय ॥

अथ गंडूकादि हीन वृद्ध भये से उपद्रवके लक्षण ।

कफ़की न्यूनता अधिक खाद और अज्ञान होता है अन्न से अरुचि अतियोग से मुख पकना पिरकी होना मुख शोष ग्लानि आदि उपद्रव होते हैं ॥

अथ सम्यक् गंडूक लक्षण ॥

मुख व्याधि नाश चित्त प्रसन्न निर्मल मुख लहलका जीभ को खादि आदि से सम्यक् गंडूक जानना ॥

अथ बिरेक नाम जुलाब की विधि ॥

प्रथम पुरुष को बिधि पूर्वक बमन कराइये पीछे उसे पाचन द्रव्य दीजे उसके शरीर के कफके रोग जहां तक पचिजांय और शरद और बसन्त ऋतु में निश्चय जुलाब दीजै और जुलाब लेनेसे निश्चय रोग जाय तब चाहै जिस ऋतु में जुलाब दे और इतने रोग वाले मनुष्यों को निश्चय यही जुलाब दे तब ये रोग जांय ॥ अजीर्ण ज्वर होय जिसके शरीर में मलका संग्रह होय बायु रक्त भगन्दर बवासीर पांडु रोग उदर रोग गोला हृद्रोग अरुचि योनिका रोग गरमीका रोग कान नासिका का रोग प्रमेह फोड़ा बिशूचिका और नेत्र का रोग शूल शिर का रोग मुख का रोग शोथ मूत्राघात यह रोग वाले मनुष्य जुलाब लें तो ये रोग तत्कालजांय १ ॥ और इतने मनुष्य जुलाब लें नहीं ॥ बालक बूढ़ा जिसका शरीर बहुत चिकना होय शस्त्र लगे से क्षीण पड़िजाय भयभीत खेद युक्त पिपासित स्थूल पुरुष गर्भिणी स्त्री तत्काल ज्वर चढ़ा होय सो तत्काल जिसके सन्तति हुई होय ऐसी स्त्री मन्दाग्नि वाला मेद के रोग वाला रूखा जिसका शरीर होय इतने पुरुष जुलाब लें नहीं और पित्त की प्रकृति वाले को कोमल जुलाब दीजे और कफकी प्रकृति वाले को मध्यम जुलाब दीजे और बायु की प्रकृति वाले को कड़ा जुलाब दीजे तब इन सबको अच्छा होय ॥

अथ मृदु जुलाब लिखते हैं ॥

दाख । दूध । हड़ को आदि ले ॥

अथ मध्यम जुलाब लिखते हैं ॥

निसोत । कुटकी । किरमाला को आदिले ॥

अथ तीक्ष्ण वा कड़ा जुलाब लिखते हैं ॥

थूहर का दूध । चोख । दात्यूणी । जमाल गोटा । और इच्छाभेदी को आदि ले ॥

अथ पुनः जुलाब लेने की विधि ॥

प्रथम पांच सात दिन तो पुरुष मुंजस ले सोनामुखी २ ॥ टं० जीरा १ । टं० सोंफ २॥ टं० मुनक्का दाख २॥ टं० गुलाब के फूल २॥ टं० पाढ़ १० टं० इन सबको तीन ऽ॥। पाव पानी में औटाय ऽ। भर रक्खै पीछे इसपानी को छान नित्य ४ दिन पीवै तो उदर का मल पचै और थोड़ा २ निकला करै और नित्य चांवल की खिचड़ी घृत समेत खाय और पांचवें दिन सोनामुखी १० टंक निसोत १० टंक गुलाब १० टंक जीरा २ ॥ टंक सोंफ ५ टंक पाढ़ १० टंक इन्हें औटाय नित्य ४ दिन ले और घृत समेत खिचड़ी खाय तो जुलाब अच्छा उतरै और इससे सब रोग जांय खट्टा खारा खाय नहीं जुलाब में दस्त ३० आवैं तो उत्तम जुलाब जानिये और दस्त २० आवैं तो मध्यम जुलाब जानिये और दस्त १० आवैं तो हीन जुलाब जानिये ॥

अथ छओं ऋतु के पृथक् २ जुलाब लिखते हैं ॥

बसंत ऋतु में तो सोनामुखी । निसोत । गुलाब के फूल सोंफ । जीरा । खांड़ । चीनी । इनका जुलाब लीजे । ग्रीष्म ऋतु में निसोत । मिश्री । इन दोनें को बराबर ले जुलाब ले तो रोग जांय शरीर शुद्ध होय ॥

अथ वर्षा काल का जुलाब लिखते हैं ॥

निसोत । पीपल । दाख । सोंठ । सहत । इनके जुलाब ले तो रोग जांय ॥ ३ ॥

अथ शरद ऋतु का जुलाब लिखते हैं ॥

निसोत । अमलतास । नागरमोथा । दाख । नेत्रवाला । मुलहटी । चन्दन । सोनामुखी । मिश्री । इनका जुलाब ले तो रोग जांय ॥ ४ ॥

अथ हिम ऋतु का जुलाब लिखते हैं ।

निसोत । चित्रक । पाढ़ । चोखीसोनामुखी । बच इनका जुलाब गरम पानी से ले तो रोग जांय ॥ ५ ॥

अथ शिशिर ऋतु का जुलाब लिखते हैं ॥

निसोत । पीपल । सोंठ । सेंधानोन । सहत । सोनामुखी । इनका जुलाब ले तो रोग जांय ॥ ६ ॥

अथ अभयादि मोदक लिखते हैं ॥

हड़कीछाल । मिरच । सोंठ । बायबिड़ंग । आंवला । पीपल । पीपलामूल । तज । पत्रज । नागरमोथा ये सब बराबर ले और इनसे तिगुनी दात्यूणी ले और इन सब से अठगुणा निसोत ले और इन सब से छःगुणी मिश्री ले और इन सब को महीन पीस सहत में २॥ टंक प्रमाण की गोली बांधे पीछे गोली एक प्रभातही शीतल जल से ले तो जुलाब अच्छा उतरे जब तक बहुत गरम पानी पीवे नहीं तब तक जुलाब लगा करे और इसमें बहुत जुलाब लगे तो मनुष्य के ये सब रोग जांय विषमज्वर । मन्दाग्नि । पांडु रोग । खांसी । भगंदर । प्रमेह । राजयक्ष्मा । नेत्ररोग । बवासीर । कोढ़ । गंडमाला । उदर रोग । बायु के रोग । अफरा । मूत्रकृच्छ । पथरी । जांघ । कटि की पीड़ा । इन सब रोगों को यह अभयादि मोद दूर करे है और जवान करे है ॥ इति अभयादि मोदक ॥ १ ॥

अथ जुलाब लेने वाला इतनी बस्तु करे सो लिखते हैं ॥

जुलाब लगे पीछे शीतल जल से आंख धोवे अतर सूंघे पान खाय पवन के स्थान में रहै नहीं शीतल जल से न्हाय नहीं गरम जल बारम्बार पीवे जब तक पूरा जुलाब लगै और बीच में ये नहीं करे तो नाभि और कूख में शूल चले

पीछे मल उतरे नहीं और पवन सरे नहीं पित्ती आदि रोग होजांय शरीर भारी रहे दाह और अफरा होय घुमेर आवें छर्हि होय तो पीछे उसको पाचनादि दे शुद्ध करे तौ ये सब रोग जांय और भूख लगे शरीर हलका रहै और जुलाब बहुत लगै तो मूर्च्छा होय गुदा बाहर निकसि आवे और शूल चलै और अतीसार को आदि ले और भी रोग होंय तब उसे शीतल जल से स्नान करावे और चांवल। मिश्री। सहत। शिखरन। दही। ये सब खवावे और बकरी का दूध मिश्री डाल पिलावे और सांठी चांवल। मसूर ये खवावे तो बहुत जुलाब थम्है॥

अथ अच्छा जुलाब होय उसका लक्षण लिखते हैं॥

मन प्रसन्न रहै। बायु सरे। सब इन्द्रियों में बल होजाय बुद्धि निर्मल होय। भूख अच्छी तरह लगै। सब शरीर में बल होय॥ इति बिरेचन नाम जुलाब की बिधि सम्पूर्ण॥

अथ छओं ऋतु में हड़ खाने की विधि॥

ग्रीष्म ऋतु में १ हड़कीछाल का चूर्ण कर उसमें बराबर का गुड़मिलाय नित्य ६० दिन तक खाय तो रोग होय नहीं॥ वर्षा ऋतु में २ हड़ का चूर्ण कर सेंधानोन के साथ खाय तो रोग नहीं होय॥ और शरद ऋतु में मिश्री के साथ ३ हड़ का चूर्ण खाय तो रोग नहीं होय॥ और हेमन्त ऋतु में ४ हड़ का चूर्ण सोंठ के साथ खाय तो रोग नहीं होय॥ और शिशिर ऋतु में ५ हड़ का चूर्ण पीपल के साथ खाय तो रोग होय नहीं॥ और बसन्त ऋतु में ६ हड़ का चूर्ण सहत के साथ खाय तो रोग होय नहीं॥ इति छओं ऋतुमें हड़ खाने की विधि॥

अथ बस्ति कर्म की विधि लिखते हैं॥

बस्ति कर्म नाम पिचकारी की बिधि सो जिस रोगी का मल मूत्र वायु के रोग कर के रुकगया होय उसके पिचकारी इन्द्री में दे और वह पिचकारी जस्त की नली लगाय बकरे

कै अंडे की बने हैं ॥ अथवा सुवर्ण से आदि ले धातुओं की नली गौ के पूंछ के आकार बने हैं सो इसमें औषधियों का जल भर इन्द्री में या गुदा में बस्ति कर्म करै तो बायु के सब रोग जांय ॥ सो यह बस्तिकर्म् २ प्रकार का है ॥ अनुवासन नाम १ निरूह नाम २ तेल घृत आदि की जिसके पिचकारी दीजे उसे अनुवासन बस्ति कर्म कहिये ॥ और निरूह बस्ति का भेद एक उत्तर बस्ति है ॥ १ ॥ और अनुवासन का भेद मात्रा बस्ति है ॥ २ ॥ उसकी तोल २ टके भर जलकी है इतने रोग वाले को अनुवासन बस्ति दीजै नहीं भस्मक केवल बायु का रोग । मूर्छा । अरुचि । खांसी । स्वास । क्षयी इन रोग वालों को और भय भीत को अनुवासन बस्ति दीजे नहीं ॥ और इन रोग वाले को अनुवासन बस्ति करावै एक वर्ष से ले छः वर्ष तक वाले को छः अंगुल पिचकारी की बस्ति दीजै और बारह वर्ष वाले को आठ अंगुल की और बारह वर्ष के उपरान्त बारह अंगुल की पीछे बुद्धि के अनुमान से दीजे और पिचकारी के घृत लगाय दीजे और बस्ति कर्म से शरीर में बलबढ़ै रोग जाय और शीत काल में और बसन्त ऋतु में स्नेह की बस्ति दीजे और ग्रीष्म वर्षा शरद ऋतु में रात्रि अनुवासन बस्ति कर्म करिये और बहुत चिकना भोजन करावै नहीं हलका भोजन करावै और स्नेह में सौंफ का जल सेंधानोन डाल गुदा में बस्ति दीजे गरम पानी में भोजन कराय सौर फिराय और मलमूत्रा दिक कराय और बायें पसवाड़े की तरफ सुवाय और बाईं जांघ ऊंची कर गुदा में स्नेह की पिचकारी दे और बायें हाथ से पकड़ और दाहने हाथ से दाबै तब गुदा में पिचकारी का जल और स्नेह जाय पड़ै और पिचकारी दे तौ वह देने वाला पुरुष और लेने वाला पुरुष इतनी वस्तु करे नहीं जम्हाई । खांसी । छींक ये ले नहीं ३० ताली बजावे तहां तक बस्ति करे अथवा

मुखसे १०० तक की गिनती करै पीछे सब शरीर को पसार सूधा सोवे फिर दोनों पाओं की अंगुली और अंगूठे को चतुर मनुष्य से खिचवावे फिर सेज के ऊपर सूधा सोवे नींद ले इसी तरह करै तो बस्ति बायु के सब रोगों को दूर करे और गुदा में लीन्हीं जो बस्ति सो मल समेत गुदा मेंसे सब मल को और बायु के रोगों को दूर करे है और अनुबासन बस्ति कर्म इस बिधि से छः सात आठ नव बार एक २ दिन के अंतर से करने से सब बायु के रोगों को दूर करे है ॥ अनुबासन बस्ति कर्मके पीछे निरूप कहिये और जिसके मलाशय में अथवा पक्वाशय में अनुबासन बस्ति चलानेसे उसी जगह उसका स्नेह युक्तजल आदि जाय गुदा मेंसे निकले नहीं पेडू को मसलने से भी तो निरूह बस्ति और दीजे उस औषधि की बत्ती कर गुदा में चलावे तो बायु सरै और उसका मल निकल जाय और शरीर शुद्ध होय अथवा जुलाब दे काढ़िये ॥

अथ अनुबासन बस्ति के देने का तेल ।

गिलोय । अरण्ड की जड़ । कणगच की जड़ । भारंगी । अडूसा । रोहिष । सतावर । सहजना । कागलहरी । इन्हें टके २ भर ले और जव । उड़द । अलसी । बेलकी जड़ । कुलत्थ । ये सेर २ लीजे इन सब औषधियों को ६४ सेर पानी में औटाय इनका चौथा हिस्सा राख उसमें मीठा तेल ४ सेर पकाय लीजै रस जलि जाय तेल मात्र आय रहै तब इसे छान १ टके भर तेल गुदामें दीजै तो सब बायु के रोग दूर होंय ॥ इति अनुबासन तैलं ॥ इति अनुबासन बस्ति बिधिः ॥

अथ निरूह बस्ति करने की विधि ॥

निरूह बस्ति तो बहुत प्रकार की हैं और इसके बहुत से कारण हैं और निरूह बस्तिका अस्थापन भी नाम है और निरूह बस्ति का अधिक देने का प्रमाण है इतने रोग

वाले को निरूहवस्ति दीजिये जिसका शरीर चिकना बहुत रहै और हृदय में चोट लगी होय शरीर क्षीण होय अफरा छर्द्दि। हिचकी। ववासीर। श्वास। खांसी। गुदाकी सूजन। अतीसार। विशूचिका। उदावर्त्त। वातरक्त। विषम ज्वर। मूर्च्छा। तृषा। उदर रोग। अफरा। मूत्रकृच्छ्र। पथरी। चरण रोग। मान्दाग्नि। शूल। अम्लपित्त। हृदय के रोग इन सब रोगों में जिसके कोई रोग होय उसको निरूहवस्ति दी हुई इन सब रोगों को दूर करै है और निरूहवस्ति के देने की विधि अनुवासन वस्ति की विधि में लिखी है और यह निरूहवस्ति भी दो चार बार एक एक दिनके अन्तर से पीछे लिखी है उसी विधि से दीजै॥ और केवल वायु का विकार होय तो कषैली कड़वी स्नेह संयुक्त दीजै और पित्त का विकार होय तो दूध संयुक्त दो वस्ति दीजै और कफका विकार होय तो कषैले कडुवे और मूत्र को आदि ले निरूहवस्ति दीजै और सुकुमार को बालक को बूढ़े को मृदुवस्ति दीजै॥

अथ उत्क्लेशन बस्ति विधि॥

अरंडोली। महुआ। पीपल। सेंधानोन। बच। झाऊ रूख कावक्कल। इन्हैं औटाय इतनी बस्ति दीजै॥ इति उत्क्लेशन बस्ति॥

अथ दोष हर बस्ति की विधि लिखते हैं॥

सौंफ। मुहलटी। बेल। इन्द्रजव। इन्हैं कांजी और गोमूत्र में पीस दे तो सर्व दोष जांय॥ इति दोष हर बस्ति॥

अथ लेखनवस्ति लिखते हैं।

त्रिफले का काढ़ा गोमूत्र। सहत। जवाखार ये दीजै तो दोष जांय॥ इति लेखन बस्ति॥

अथ शोधन बस्ति लिखते हैं॥

हड़ किरमाला आदि ले इनका जुलाब या इनकी पिचकारी दे उसे शोधन बस्ति कहिये॥

अथ शमन बस्ति ॥

फल प्रियंगु । मुलहटी । नागरमोथा । रसौत । इन्हें दूध में पीस इनकी पिचकारी दे उसे शमन बस्ति कहिये ॥

अथ वृंहण बस्ति लिखते हैं ॥

पुष्टाई की औषधियों आदि का काढ़ा कर उसमें मीठा द्रव्य मिलाय और घृत मांस आदि इनकी पिचकारी दे उसे वृंहण बस्ति कहिये ॥

अथ पिच्छिल बस्ति लिखते हैं ॥

बेरी के पत्ते । शतावरि । लहसुआ । मोचरस इन्हें दूध में पकाय उस में सहत डाल बस्ति दे उसे पिच्छिल बस्ति कहिये ॥

अथ निरूह बस्ति की तोल का प्रमाण लिखते हैं ॥

प्रथम तो किंचित् सेंधानोन डाले पीछे उसमें ऽ॥ सहत और ऽ॥ सेर घृत डाले इन तीनों को खूब मथि इसकी पिचकारी पांच सात बार एक दिन के अन्तर से चतुराई से देय यह निरूह बस्ति के तोल का प्रमाण है ॥ इति निरूह मात्र बिधि ॥

अथ मधु तैल बस्ति की विधि लिखते हैं ॥

अरंड की जड़ का काढ़ा कर उसमें सहत और मीठा तेल १० टं० भर डाले और सौंफ १ पैसे भर सेंधा नोन अधेले भर । इन्हें पीस पीछे इन्हें मथ और इनकी पिचकारी देतो मेद । गोला । कृमि । फीया । मल के रोग । उदावर्त्त इन सब रोगों को यह बस्ति दूर करै व और शरीर में बलको बढ़ावै है ॥ इति मधु तैल की बस्ति ॥

अथ स्थापन बस्ति ॥

सहत । घृत । दूध । तेल दोदो पैसे भर ले इनमें आक के बक्कल का रस और सेंधानोन अधेला भर डाले इन सबको एक जीव कर पिचकारी दे उसे स्थापन बस्ति कहिये ॥

अथ सिद्ध बस्ति लिखते हैं ॥

पीपल । पीपलामूल । चव्य । चित्रक । सोंठ । इनका काढ़ा

करउसमें तेल। सहत। सेंधानोंन। मुलहटी इन्हें औटाय यह भी मिलाय इसकी पिचकारी दे उसे सिद्ध बस्ति कहिये॥

अथ फल बस्तिलिखते हैं॥

गुदा में और बाहर घृत लगाय अपने अंगूठे प्रमाण पुष्ट ढंडी १२ अंगुल की आधी गुदा में डालै और इसको चतुराई से पिचकारी दे उसे फल बस्ति कहिये॥ और निरूह बस्तिका भेद उत्तर बस्ति है॥ और बस्ति कर्म कराने वाला गरम पानी में स्नान करे और दिन में सोवे और अजीर्ण और कुछ भी कुपथ्य करे नहीं॥ इति अनुवासन और निरूह बस्ति को आदि ले सब बस्तिकी विधि संपूर्ण॥

अथ हुक्के को आदि ले धूमपान की विधि लिखते हैं॥

धूमपान छः प्रकार का है॥ शमन १ बृंहण २ कासहर्त्ता ३ बमन कर्त्ता ४ व्रणधूपन ५ तीक्ष्ण औषधियों के धूमपान को सोधन कहिये॥ ६॥ इतने रोगियों को धूमपान करावे नहीं खेद संयुक्त। भय भीत दुखी दांत का रोगी रात में जगा होय तृषित दाह वाला तालूके रोग उदर के रोग मस्तक के रोग छर्दि अफरा बावके रोग प्रमेह पांडु इन रोग वालों को गर्भिणी स्त्री क्षीण पुरुष बालक वृद्ध इन सब पुरुषों को धूमपान करावे नहीं और धूमपान है सो बायु और कफ के सब रोगों को दूर करै है और सब इन्द्रियों को और मनको प्रसन्न करै है केशों और दातों को पुष्ट करै है और इलायची आदि का धुवां ले जे उसे शमन धूम कहिये॥ १॥ और राल आदिका धवां लीजे उसे बृंहण धूम कहिये॥ २॥ और तीक्ष्ण औषधियों के धुवें को रेचन कहिये॥ ३॥ मिरच आदिक के धवें को कासघ्न कहिये ४॥ खाल के धुवें को बमनकर्त्ता कहिये॥ ५॥ नींब बच आदि का धुवां ब्रणादिक के दीजे उसे ब्रण धूपन कहिये॥ ६॥

अथ अपराजित धूप लिखते हैं॥

मोर के पङ्ख। नींबकेपत्ते। कटेलीका डोडा। मिरच। हींग। कूड़। कपास। बकरे का बाल। सांप की कांचली। बिलाई की बिष्टा। हाथी दांत। इन्हें पीस घृत मिलाय धूनी दे तो भूत पिशाच राक्षस प्रेत डाकिनी आदि ले सब दोष दूर होंय और ज्वर को दूर करै॥

इति अपराजित धूप॥

अथ माहेश्वर धूप लिखते हैं॥

हींग। देवदारु। बेलपत्र। गौका घृत। कुक्कट का हाड़। सरसों। नींव के पत्ते। मस्तक के केश। सांपकी कांचली। बिलाई की विष्टा। गौकासींग। मेढ़ल। दोनों कटेली। कपासतुष। बकरे का रोम। चन्दन। मोरपङ्ख। बकरे का मूत्र इन्हैं पीस मनुष्य के धूनी दे तो भूत पिशाच राक्षस डाकिनी प्रेत चुड़ेल इन्हें आदि ले सब दोष दूर होंय और सब प्रकार का ज्वर इस धूप से दूर होय॥ २॥ इति माहेश्वर धूप इति हुक्के को आदि ले सब धूम की बिधि सम्पूर्ण॥

अथ रुधिर छुड़ाने की विधि लिखते हैं॥

मनुष्य के शरीर में बैद्य है सो रुधिर के बिकार को भले प्रकार देख उसका रुधिर ऽ१ सेर तथा ऽ॥ सेर तथा ऽ। भर तथा ऽ= पाव कढ़ावे और शरद ऋतु में जो बिकार होंय तो थोड़ा रुधिर कढ़ावे तो मनुष्य के रुधिर का विकार नहीं होय॥

अथ शुद्ध रुधिर का स्वरूप॥

रुधिर का मीठा रस लाल वर्ण होय शीतल और गरम होय नहीं और भारी चिकना और दुर्गन्ध को लिये होय और यह रुधिर दग्ध हुआ गरमी के सब विकारों को करै है और शरीर में रुधिर दुष्ट होय तब पीड़ा होय शरीर पकि जाय दाह होय और शरीर में चकत्ते पड़जांय खाज

पड़ि जाय तो खटाई और मिठाई की वांछा रहै मूर्च्छा आवै शरीर रूखा रहै शरीर की नसें शिथिल होजायं ॥ २ ॥

अथ वायु से दुष्ट हुआ जो रुधिर उसका लक्षण ॥

अरुणरंग होय। झाग आवे। कठोर होय और जिसकी उतावली सूक्ष्म धार चलै सुई समान शरीर में चुभके चलें और लाल होंय ये सब लक्षण होंय तब जानिये कि रुधिर वायु से दुष्ट हुआ है ॥ ३ ॥

अथ पित्त से दुष्ट हुये रुधिर का लक्षण ॥

रुधिर पीला हरा नीला काला होय जिसमें दुर्गन्ध बहुत आवे चले नहीं गरम होय मक्खी और कीड़े खांय नहीं जिस रुधिरमें ये लक्षणहोंय उसे पित्तसे दुष्टहुआ जानिये ॥४॥

अथ कफ से दुष्ट हुये रुधिर का लक्षण ॥

रुधिर शीतल और बहुत चिकना होय। गेरू के रंग समान होय मांस की पोटली सदृश होय धीरे चलै ये लक्षण जिस रुधिर में होंय उसे कफसे दुष्टहुआ जानिये ॥ ५ ॥

अथ सन्निपात से दुष्ट हुये रुधिर का लक्षण ।

जिसमें ये सब लक्षण मिलैं और कांजी समान रंग होय उस रुधिर को सन्निपात से दुष्ट हुआ जानिये ॥ ६ ॥

अथ विष कर के दुष्ट हुये रुधिर का लक्षण ॥

जिसका रुधिर काला होय और नाकमें बहुत चलै दुर्गन्ध बहुत आवे कांजी कासा रंग होय इसे कोढ़ होय आवे सावन की कीड़ी के समान जिसका रंग होय और शरीर में सूजन और दाह होय शरीर पकि जाय ये लक्षण जिसमें होंय उसे विष कर के दुष्ट हुआ जानिये ॥ ७ ॥

अथ इतने रोगों में रुधिर कढ़ाना योग्य है सो लिखते हैं ॥

सूजन और शरीर में दाह होय अंग फोड़े और फुनसियों से पकि जाय शरीर का वर्णलाल होजाय बात रक्त का रोग और ब्याज आदि रोग होंय स्तन का रोग होय शरीर भारी रहै नेत्र लाल होंय तन्द्रा आवे नासिका मुखके रोग

होंय । फिया । गोला । बिसर्प । बिद्रधि होय छाले आदि रोग मस्तक पीड़ा । उपदंस नाम गरमी का रोग । रक्त पित्त इन सब रोगों में रुधिर कढ़ाना योग्य है इन सब रोगों में सींगी अथवा जोंक लगावे अथवा तूंबी लगावे अथवा शिरा छुड़ावे तब मनुष्य के रोग जांय ॥ ८ ॥

अथ इतने रोग वाले मनुष्य का फस्त करके रुधिर कढ़ाना योग्य नहीं है सो लिखते हैं ।

क्षीण पुरुष और विषय बहुत करे नपुंसक भयभीत गर्भिणी स्त्री प्रसूता स्त्री पांडु रोगी इन सबको और जुलाब आदि पंचकर्म जिसने नहीं किया होय उसके बवासीर । सर्वांगशोथ । खांसी श्वास । छर्दि । इन रोग वाले को और पसीना युक्त जिसका शरीर होय उसे और १६ वर्ष की अवस्था वाले मनुष्य को और ७० वर्ष के ऊपर अवस्थावाले को इतने मनुष्य को शिरा छुड़ाना योग्य नहीं ॥ ९ ॥ और इन रोगों में रुधिरकढ़ाने से रोग जाय तो जोंक लगाय के रुधिर कढ़ावे और बिष करके दुष्ट हुआ जो रुधिर उसकी शिरा छुड़ाना योग्य है अथवा पछना दे रुधिर कढ़ाना योग्य है और वायु पित्त कफ करके दुष्ट हुये रुधिर को सींगी जोंक तूंबड़ी करि कढ़ाना योग्य है जोंक तो एक हाथ का रुधिर सोषै सींगी तूंबड़ी १२ अंगुल को सोषै पछना एक अंगुठे प्रमाण को सोषै और शिरा शरीर के सर्वांगका सोषै और शीत ऋतु में इतने रोगों में रुधिर कढ़ावे नहीं सो लिखते हैं ॥ क्षुधा मूर्च्छा वाले को नींद भ्रांति मद मल मूत्र का जिसके बेग होय इन पुरुषों का रुधिर नहीं कढ़ावे ॥ १० ॥ और जलौकादि कों कर जिस का रुधिर नहीं निकला होय तिनके व्रणके मुंह की कूट । सोंठि । मिरच । पीपल । सेंधानोन इन से मसले तो रुधिर अच्छी तरह निकले ॥ और रुधिर अच्छे समय में कढ़ावे

बहुत शीत बहुत धूप नहीं होय भोजन हलका कराय रुधिर कढ़ावे ॥

अथ रुधिर बहुत निकले उसका इन वस्तुओं से यत्न करै तो थम्हे सो लिखते हैं ।

लोध । राल । रसौत । जव । गेहूं का आटा । धौका बक्कल । गेरू । सांपकी कांचली । रेशमी वस्त्र कीराख । साल्हरकी पाल । इन्हे ब्रण के लगावे तो रुधिर थम्है और भी ब्रणका शीतल यत्न करै ॥ अथवा शिरा छुड़ाने की नसके ऊपर दाह दे अथवा उस नसके खार लगावै अथवा न सके कषैली बस्तु से लेप करै और बांये अंड के सूजन होय तो दाहिने हाथ की नीचे की नस को दग्ध करै और दाहिने अंड के सूजन होय तो बायें हाथ के अंगूठे की नीची नस को दग्ध करै अथवा बायें अंगूठे के सूजन होय तो दाहिने हाथ की शिरा छुड़ावै और दाहिने अंड के सूजन होय तो बायें हाथ की शिरा छुड़ावै तौ वह सूजन जाय और विशूचिका जाय ॥ ११ ॥

अथ फस्त छुड़ाने से रुधिर निकले तो इतने रोग होंय ।

अंधा होजाय आधा अंग सन्न होजाय तृषा के रोग होंय अंधेरी आवै मस्तक पीड़ा होय स्वास खांसी होय हिचकी आवै दाह और पांडु रोग होय और रुधिर बहुत ही छूटे तो मनुष्य मर जाय और इस शरीर में रुधिर करके जीवन है शरीर का रुधिर जाता रहै तो मरण होय इसी शरीर के रुधिर का तत्काल प्रबन्ध करै और रुधिर छूटे सूजन होय तो थोड़ा गरम घृत कर उसको सेकै तो उसकी पीड़ा और सूजन दूर होय और रुधिर बहुत निकले तो उस पुरुष को हिरन के मांस का अथवा बकरे के मांस का शोरुआ योग्य है अथवा उस में दूध पीना योग्य है अथवा सांठी चावल की खीर खाना योग्य है जब तक पीड़ा शांत होय शरीर हलका होजाय और मन प्रसन्न या तब तक यह खाय ॥

अथ रुधिर छुड़ाने का कुपथ्य ॥

मैथुन क्रोध शीतल जल से स्नान बाहर की बहुत पवन एकासन बैठना दिन में नींद नोन और खट्टी वस्तु कड़वी वस्तु शोच बाद अजीर्ण में भोजन ये सब वस्तु रुधिर छुड़ाने वाला करै नहीं और जहां तक शरीर में बल आवै तहां तक कुपथ्य करै नहीं ॥ इति फस्ल आदि करके रुधिर छुड़ाने की बिधि सम्पूर्ण ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रतापसिंह जी
विरचिते अमृत सागर नाम ग्रंथे सर्व आसवों के बनाने की बिधि
शिला जीत शोधने जवाखार को आदि ले खारों की बिधि
चणक खारके शोधने की बिधि स्नेह बिधि स्वेद बिधि
बस्ति कर्म हुक्के को आदि धूमपान की बिधि
रुधिर छुड़ानेकी बिधि १० निरूपणं नाम
सप्तविंशति मस्तरङ्गः ॥ २४ ॥

अथानु भूता वलेह कल्प ना माह ॥

द्रव्य को क्वाथ सदृश औटावै फिरि विशेष आंच देइ जब गाढ़ा होय तब अवलेह कहैं कोई कोई लेह भी कहते हैं इसकी मात्रा ४ मुद्रा भरि इसमें चूर्ण से चतुर्गुण मिश्री लेना चाहिये और गुड़ दूना और द्रव्यादि चौगुने यह रीति सर्वत्रहै जब आंच देने पर तार बंधे और पानी में पाक की बूंद न डूबै न घुलै तब सिद्ध जानै और अंगुली के दबाने से कुछ दबै तब सुगंधि रसादि डालै अब इसका अनोपान भी लिखते हैं दूध से ऊष से उत्पत्ति वस्तु यूस से पंच मूल क्वाथ से इन अनोपान से देना अथवा और कोई रोगोचित अनुपान हो उसके साथ देना चाहिये ॥

अथ हिचकी और काम श्वास पर भट कटैयावलेह ॥

भटकटैया ४ सेर ले उसे द्रोण भरि जल में औटावै जब चौथाई रहै तब उसमें चूर्ण डालै गुर्च। चाव। चीता। मोथा। काकड़ा शृंगी। त्रिकुटा। जवासा। भारंगी ये

सब और कचूर पलपल भरि ले चूर्ण करै शक्कर बीस पल घृत ८ पल तेल ८ पल ये सब काढ़े में औटावै फिर जब ऊपरकही हुई रीति के अनुसार अवलेह सिद्धि हो तब ८ पलशहद ४ पल बंशलोचन ४ पल पिपरी का चूर्ण मिलाय उत्तम पात्र में रख छोड़े इस अवलेह से हिचकी कास श्वास अशेष नाश करै ॥

अथ क्षयादि परच्यवन प्रसावलेह ॥

सिरस। अग्नि मंथ। खंभारी। पाटल। बेल। स्योन।का वन मूंग। वनउर्दी। गुखरू। भटकटैया। पीपरि काकड़ा शृंगी। दाख। गुर्च। हड़। नाग बलापता लावा ला रूसा। रिद्धि बिना। बाराही कंद। दधि। याफली। कचूर तीव करिष बकायिना। विलाई कंद। मोथा। पुष्करमूल काकतुंडी। वन मूंग। वन उर्दी। इलायची। गदाचूर्ण। काकोली। क्षीरकाकोली। इन बिना असगंध। कमलगट्टा। महामेदा इन बिना मुरली। अगर। सफेद चन्दन। इन सबको पल पल भरिले जौको पकरि ५०० आंवले और चूर्ण द्रोण भरि पानी बड़े पात्र में डालि पकवावै जब अष्ट मांशशेष रहै तब उतारि आंवरा की गुठली दूरि करै कपड़ा में निचोवै अंवरा स्वरस और काढ़ा छानि जुदा धरै फिरि आंवले की गूदी मल करि सात पल घृत में भूंज ले तब वह काढ़ा और अर्द्ध तोला खांड़दे अवलेह सा पकै तब यह चूर्ण डालै पीपरि दोपल बंश लोचन चारि पल तज इलायची पत्रज केसरि चारों तीन शाण शहद ६ पल दे यह च्यवनप्रास च्यवन ऋषी का कहा हुआ है अग्नि बलको देखि क्षीण पुरुष खाइ यहएक रसायन है बालक अथवा वृद्ध जिसकी मंद नाड़ी चलै अंगुरि तरे सूखि गया हो और हृदय रोग स्वर क्षीण को खिलावै श्वास कास प्यास वात रक्त। जंघ पीर वात पित्त। शुक्र मूत्र दोष। ये सब नाश होंय सदास्मृति बढ़ावै स्त्री

को सुखद हो क्रांति वर्ण प्रसन्नता उदय हो शरीर जीर्ण न हो ॥

अथ रक्त पित्तपर कूष्माड पाक ।

कुम्हड़े को छील करि १०० टुकड़े करै फिरि उसे दूने पानी में पचावे जब आधा रहै तब उतारि ले फिरि उन टुकड़ों को वस्त्र में बांधि निचोड़ धूपमें सुखा गुदनी से गोदै फिरि उसे ७ पल घी में तांबे की कढ़ाई में भूंजै और उसका निचुड़ा हुआ पानी उसी में डालदे फिर सौ पल खांड़ दे पकाइ सोंठि । पीपरि । जीरा । दो दो पल धनिया । पत्रज । इलायची । मिर्च । और चावये अर्ध अर्ध पल ले इनका चूर्ण और घृत का आधा शहद डारि बलानुसार रक्त पित्त । ज्वर । छई । प्यास । कास । श्वास । छर्दि । आदि रोगवाले पुरुषों को दे तौ रोग अवश्यजाय ॥

अथार्शपर खण्ड कूष्माडा वलेह ।

पेठा और आतसीकंद के छोटे छोटे टुकड़े करि दोनों को एकत्र करि उसी रीति से अवलेह बना कर खिलावै तौ अर्शमन्दाग्नि मूढ़ पात ये सब रोग अच्छे होंय ॥

अथ बेई पर अगस्त्त हरीत की ॥

बड़ी हड़ें १० जव आढ़क भरि दशमूल वीसपल चीता । त्रिफला जलालू । पाढ़ाबेलि । इन्द्रजव । बच । भिलावा । अतीस । बिड़ंग सुगंध वाला इनको पल पल भरि ले घृत कुड़व प्रमाण ले और ठंढा होने पर कुड़व भरि शहद डालै यह अवलेह सर्वार्श को वेगही नाश करता है और दुर्गम रोग अतीसार अरुचि ग्रहणी पांडु रक्त पित्त कमल पित्त शोथा प्रवाहिका ये सब रोग दूरि होंय इसका अनोपान छगरी का दूध वा मट्ठा वा दही वा घी उसी का जो पानी और औषधि भोजन के पाचन समय खाय ॥

अथ सर्वातीसार पर कुरैयाष्टक ॥

अर्द्ध तोला कुरैया की छाल द्रोण भरि पानी में पकाइ

जब चौथाई रहै तब यह चूर्ण डालै जलालू धव फूलबेल पाढ़ा मोच रस मोथा अतीस इन सबको पल पल भरि लै फिरि इसै औटावै और जब कलछी में लगने लगै तब सिद्धि जानौ फिरि इसै बकरी के पय अथवा पानी अथवा माड़ केसर पीवै तौ सर्बातीसार की घोर वेदना दूर होय सब भांति रक्तस्राव सर्बार्श प्रवाहिका नाश करै ॥

अथ श्वास कास सहित कफ ज्वरावलेह ॥

श्वास और कांसके साथजो कफ ज्वर होय तौ मेंढासिंगी पीपल। कायफल। और कूट इन चारों को कूट करि चूर्ण करै उसको बर्ण माक्षिक वा साधारण मधुके साथ मिला करि चाटै तौ श्वास कांस के साथ जो कफ ज्वर सो नष्ट होय इसमें कुछ शंका नहीं ॥

अथ श्वासे अवलेह माह ॥

आठ तोले का १ पल इस परिमाण से एकसौ तोले भरि बकरी का मूत्र और एकसौ पल बहेड़ा इनको मधु के साथ पकावै जब पकि कर चाटने योग्य काढ़ा होय तब उतारि कर धरि रक्खै और प्रातःकाल में चाटा करै तौ खांसी श्वास और कफ ये रोग बलवान भी हो गयेहों तौ भी तुरंत जाते रहैं और रोगी सुख पावै ॥

अथासवकल्पना ॥

उदकादि द्रव्य वस्तु में औषधि दे करि पात्र में भरि मुंह मूंदि मास भरि रखने से औषधि उत्तम होती है इसका नाम आसव अथवा अरिष्ट है इनमें भेद यह है कि उदकादि पदार्थ में जो औषधि पूर्वोक्त रीति से सिद्ध करै उसे आसव कहते हैं और जो किसी द्रव्य के क्वाथमें उसी रीति से सिद्ध करै उसे अरिष्ट कहते हैं इसके खाने की मात्रा ४ रुपये भरि है इसमें जलादि पदार्थ द्रोण भरि दे गुड़ तुला भरि दे शहत अर्द्ध तुला देना उचित है और द्रव्य का चूर्ण गुड़ जितना है उसका दशांस दे अथ सिंधु मद्य भेदाः ॥

जोकच्चे ऊख रसादि मधुर पदार्थमें सिद्ध करे उसे शीत रस सिंधु कहते हैं और जो पकाय के रसमें सिद्ध करै उसे पक्क रस सिंधु कहते हैं सुरा प्रसन्नादि करि अग्नि बलनय से उतारै उसे सुरा कहतेहैं सुराके फेनको प्रसन्ना कहते हैं और फेन रहित गो नीचे रहै उसे कांदवरी अथवा घन कहते हैं जो सुरा के नीचे रहै उसे जगल कहते हैं और जगल के घने भाग को मेदक कहते हैं मेदक पकाने से जो सार निकले उसे सुरा बीज कहते हैं और ताड़ अथवा खजूर का रस अग्नि यंत्र योग करिका कच्चा ले मद सिद्ध करै उसे बारुणी कहते हैं कंद मूल फल घृत तैल आदि स्नेह लवण ये सब द्रव्य पदार्थ में अग्नि अथवा यंत्र योग से मथन करै उसे सूक्त कहते हैं और जो बिनिष्ट अर्थात चलित रस लेके खमीर वह खमीर मद्य वा तुरंत मधुर द्रव में द्रव्य चूर्ण डालि मास भरको संधित करी उसे चुक्र कहते हैं अथवा गुड़ पानी तेल कंद मूल फल इन्है पूर्वोक्त रीति से करि मास भरमें सिद्ध करै उसे गुड़ सूक्त कहते हैं इसी प्रकार ऊख रस और दाख का सूक्त भी होता है और यवों को पानी के साथ एक दिन तक संधित करै उसे तुषाव कहते हैं और यवगूरी पानीमें सिझाय एक दिन संधित राखै उसे सौवीर कहते हैं और कुरथी अथवा चावल पानी में सिझावै उसे मांड़ कहते हैं और उस मांड़में सोंठि। राई। जीरा। हींग। नोंन डारि तीन चार दिन संधित राखै उसे कांजी कहतेहैं और मूलीके उबाले हुए पानी में हींग। सरसों। जीरा। सेंधा और अदरक डालि चारि पांच दिन राखै उसे संडाकी वा आसव कहते हैं आसव और अरिष्ट बनानेकी यह रीति है॥

अथ रक्त पित्त पर खसासव ॥

खस। सुगंध वाला। कमल पत्र खंभारी। नील कमल। पद्माष। माल कांगनी। लोध मंजीठ। जवासा। पाढ़ा।

चिरायता। कुटकी। बट। जव। गुलरी। कचूर। पित्तपापड़ा। श्वेत कमल। परवर। कचनार। जामुन। सेमर का गोंद। इन सबको पल पल भरि ले फिर चूर्ण करि दाख बीसपल देइ और धव के फूल १५ पल दो द्रोणजल तोलाभरि शक्कर तोलाभरि शहत जटामासी और मिर्च इनका धुआं दे बासन में सब औषधि भरि महीना भर तक रक्खे इसे उसी सव कहते हैं यह रक्त पित्त को नाश करता है और पांडु। कुष्ट। प्रमेह। अर्श। क्रमि। सूजन। ये दोष भी अच्छे होंय॥

अथ छर्दिपर पीपर आसव॥

पीपरि। मिरिच। चाब। हरदी। चीत। मोथा। बिडंग। सुपारी। लोध। पाढ़ा। आंवरा। छरीला। खस। सुपेदचन्दन। कूट। लवंग। तगर। जटामासी। दालचीनी। इलायची। तेजपात। पुष्पप्रियंगु। बागोंदी। नाग केसरि। इन सबको आधा आधा पल ले महीन पीसि तीन तोला गुड़ सहित दो द्रोण जलमें डाले और दश पल धवपुष्प साठि पल दाख इन सबको मट्टी के पात्र में एक मासराखै जब जाने कि सब औषधी एक तन होगई तब खिलावै परन्तु अग्नि बल देखि ले इस के खाने से छर्दि पेटरोग दुर्बलता। ग्रहणी। पांडु। अर्श वह पीपरि आसव इन सब रोगों को बहुत शीघ्र दूरि करता है॥

अथ पांडु पर लोहासव।

लोह चूर्ण। त्रिकुटा। त्रिफला। अजवायन। बिडंग। चीता। और मोथा। इन सबको चारि २ पल ले इन सब का चूर्ण करि चौंसठि पल शहद तोलाभरि गुड़ और दो द्रोण जल दे फिर घृत पात्र में इसे १ मास राखै यह लोहासव पीने से पांडु शरीर फूलना गुल्म अर्श कुष्ट पिलही खाज श्वास कांस भगंदर अरुचि ग्रहणी हृदि ये सब रोग नाश होंय॥

अथ ज्वर पर कुरैयारिष्ट ॥

कुरैया की छाल। दाख आधा तोला। महुआ। खंभारी की छाल दश दश पल ले फिर इसे चारि द्रोण पानी में पचावै जब द्रोण भरि रहै तब उतारि ले फिरि उस में बीस पल धव के फूल और तोला भरि गुड़ डारि मट्टी के पात्र में मास भर तक रक्खे यह कुटजारिष्ट सब ज्वर दूरि करि अग्नि को तीक्ष्ण करता है ॥

अथ विद्रधी पर विड़ंगारिष्ट ॥

विड़ंग। पीपरा मूल। रासन। कुरैया की छाल एक पाढ़ा। एल। बालछड़। और आंवला। ये सब पांच पांच पल ले इसे आठ द्रोण जल में औटावै जब द्रोण भरि रहै तब उतारि ले जब ठंढा हो जाय तब तीन सै पल शहद बीस पल धव फूल और तज पत्रज इलायची ये दो २ पल ले और गोंदी कचनार लोध ये पल पल भरि ले और त्रिकुटा आठ पल चूर्ण करि डालै फिरि इन को घृत के पात्र में एक मास तक भर राखै फिर जैसा अग्नि बल देखै उसी प्रमाण से पिलावै तौ विद्रधि दूर होय और प्रमेह ऊरुस्तंभ पथरी प्रत्यष्टीला भगदर गंडमाला हनुस्तंभ आदि रोग इस बिड़ंगारिष्ट से दूर होते हैं ॥

अथ प्रमेह पर देवदारु आरिष्ट ॥

अर्द्ध तोला देवदारु। रूसा। बीस पल मंजीठ। इन्द्रजव दतूनि। तगर। दोनों हरदी। रासन। बिड़ंग। मोथा। सिर्सर। बेर। अर्जुन। ये सब दश दश पल ले और अजवाइन। कुरैया। चन्दन। गुर्च। कटुकी। चीता ये आठ आठ पल ले इसको ८ द्रोण पानी में पचावै जब द्रोण भरि रहै तब उसमें ये औषधि डालै धवपुष्प १६ पल तीन तोला प्रशहद त्रिकुटा २ पल तज पत्रज इलायची ४ पल औ हिंगु ४ पल नागकेशरि २ पल इन सब का चूर्ण करि घी के बरतन में मासभरि राखै फिर इसे पिये तौ दुर्जय

प्रमेह भी नाश हो और वात रोग ग्रहणी अर्श मूत्रकृच्छ्र इनको नाश करै यह देवदारु अरिष्ट दाद कुष्ट को भी अच्छा करता है ॥

अथ कुष्ट पर खदिरारिष्ट ॥

खैर अर्द्ध तोला देवदारु अर्द्ध तोला बकुची १२ पल हर्दी २० पल त्रिफला २० पल इनको आठ द्रोण जल में पचावै जब द्रोण भरि रहै तब ठंढा करि राखै और नीचे लिखी औषधि डालै शहद २ तोला खांड़ १ तोला धवफूल २ पल कंकोल नागकेशरि जायफल लौंग इलायची तज पत्रज ये सब पल २ भरि ले पीपरि ४ पल इसे घीके बरतनमें मास भरि रखिकर पिये तौ महा कुष्ट हृदय रोग पांडु अर्बुद गुल्म ग्रंथि कास पिलही ये सब जांय यह एक खदिरारिष्ट सब कुष्टों को बहुत शीघ्र नाश करता है ॥

अथ दाद पर बबूलारिष्ट ॥

बबूर की छाल २ तोला ले ४ द्रोण पानी में पचावै जब द्रोण भरि रहै तब उतारि ठंढा करि तोला भरि गुड़ दे और १६ पल धवके फूल २ पल पीपरि जायफल शीतलचीनी तज पत्रज केसरि लौंग और मिरच ये पल पल भरि ले फिर इनको पीसि मास पर्यंत माटी के पात्र में राखै इस बबूलारिष्ट से दाद कुष्ट अतीसार प्रमेह श्वास कांस सब रोग दूरि करै ॥

अथ उरक्षत पर द्राक्षारिष्ट ॥

अर्द्ध तोला दाख। दो द्रोण जल में पचावै जब चौथाई रहै तब उतारि ठंढा करि ये औषधि डालै गुड़ दो तोला तज। इलायची। पत्रज। केशर। फूलप्रियंगु। अथवा मकरा। मिरच। पीपरि। बिड़ंग ये सब एक २ पल माटी के पात्र में धरि एकांग करि बासनके मुखपर मुद्रा करि मास भरि राखै तबपिये तौ उरक्षत दाद कास और गले के भीतरी रोग दूरि होंय यह द्राक्षारिष्ट बल करै मल शोधे॥

अथ रोहिता रिष्ट अर्श पर ॥

रूर हारीकुशा १ तोला ले ४ द्रोण पानी में पचावै जब चौथाई रहै तब उतारि ठंढा करि २०० पल गुड़ १६ पल धवकेफूल। और सोंठि। पीपरि। पीपरामूल। बच। चीता। पत्रज। इलायची। तज। त्रिफला। इन सबको पलपल भरि ले फिर चूर्ण करि सब द्रव्यों को बासन में भरि कर धरै फिर उसे महीना भरि पीछे पीवै तौ कांच के रोग ग्रहणी पांडु हृदय रोग पिलही गुल्म और कुष्ट और अरुचि आदिरोग इस रोहितारिष्ट से निस्सन्देह दूरि होंय ॥

अथ सर्व प्रमेह पर दश मूलारिष्ट ॥

दश मूल पांच पांच पलले चीता और पुष्कर मूल पच्चीस पच्चीस पल ले लोध २०पल। गुर्च २०पल। आंवरा १६ पल जवासा १२ पल। खैर बिजय सार और हड़ आठ आठ पल। कूट मंजीठ देव दारु बिड़ंग भारंगी कपित्य बहेड़ा गदा पुरैना चाव जटामासी मकरा सरिवन कृष्णजीरा निसोथ सेवड़ी कांजी रासन पीपरि सुपारी कचूर हरदी सौंफ पद्माक नागकेसर मोथा इन्द्रजव सोंठि दूनों कट सरैया मेदा महा मेदा काकोली रिद्धि वृद्धी ये सब दोदो पल ले इन सब औषधिन का अठ गुणा जल औटावै जब चौथाई रहि जाय तब उतारि माटी के पात्र में धरै फिर दाख आठ पललै चौगुने पानी में औटावै जब चौथाई जलि जाय और तीन चर्ण रहै तब ठंढा करि पहिले क्वाथ के साथ मिलावै और शहद पल ३२ गुड़ ४०० पल धव के पुष्प ३०पल शीतलचीनी। खश। चन्दन। जायफल। लौंग। तज इलायची। पत्रज। केशरि। पीपरि इन सब का चूर्ण दोदो पल ले और कस्तूरी ४ मासे इन सबको इकट्ठा करि उसी में डारि धरती खोदि गाड़ै उसमें का रसपिये निर्मली डाले तौ रस निर्मल हो जाय इसके पान करनेसे ग्रहणी अरुचि शूल श्वास कास भगंदर बात व्याधि चई छर्दि पांडु कमल

कुष्टअर्श प्रमेहऔर मन्दाग्नि उदररोग सिकता प्रमेह पथरी मूत्र कृच्छ और धातु क्षय ये रोगजांय दुर्बल मोटा होय बांझ पुत्र जनै यह दश मूला रिष्ट तेज धातु बल देता है ॥

इति श्री मन्महाराजा धिराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी
बिरचिते अमृत सागर नामग्रंथे अनुभूतावलेहा सवारिष्ठ
कल्पना निरूपणं नाम अष्टाविंशतिस्तरङ्गः ॥

* * *

अथ घृत तेल साधना माह ॥

कल्क से चतुर्गुण घृत अथवा तेल औ क्वाथादि द्रव्य भी चौगुणो देना उचित है इस की मात्रा पल भरि है जिस द्रव्य का क्वाथ दैना हो तौ चौगुणे जलमें औटाव जब चतुर्थांश रहिजाय तब उसे उतारि छानिले फिरि उसमें घृत तैल आदि सिद्ध करै और कोमल द्रव्यों में चौगुणा जल और कठोर में अठ गुणा और अत्यन्त कठोर में सोलह गुणा जल देना चाहिये और जो द्रव्य न अति कोमल होय कठोर हो उसमें अठ गुणाजल दैना चाहिये अथवा रुपया भर से ४ रुपिया भर तक सोलह गुणा पानी दे कर क्वाथ करै और पलसे कुड़व तक अठगुणा और प्रस्थसे खारी पर्यंत चौगुणा दे और जो केवलकल्क पानी घी अथवा तेलमें सिद्धि करै तौ चतुर्थांश कल्क देयथासेर भर तैल हो तौ पाव भरि कल्क हो और जोकल्क काढ़े के साथ घी और तेल पकावै तौ घृत और तैल का षष्टांश कल्क दैना जैसे तीन पाव में आध पाव और जब कल्क रस के साथ घी अथवा तैल में पकावै तौ तैल का अष्टमांश कल्क दैना चाहिये यथा सेर भर में आध पाव घृत और तैल प्रमाण यही है दूध दही रस मट्ठा इन में अष्ट मांश कल्क देइ और कल्क को अच्छी प्रकार पकाने के कारण जल चौगुणा देना चाहिये और जहां कल्क घृत तैल क्वाथ और प्राय ये पांचौ होंय तहां

ओषधादिक के समान देना चाहिये और जल चौगुणा देना जब सणी द्रणी द्रव्य घृत अथवा तैल में पकानी हो तौ जल में द्रव्य पीसि गोली अथवा कल्क करि चौगुणे पानी में पचावै और जो केवल काढ़े में कहा हो तहां उसी क्वाथ की द्रव्य का कल्क करि घृत अथवा तैल युक्त वह काढ़ा और चौगुना पानी देय पकावै और जहां कल्क रहित है तहां केवल द्रव्य वस्तु दूध पानी देकर पकालेना जब फूल के कल्क में स्नेह सिद्ध कहैंगे तब चौगुणा जल देंगे और जब स्नेहसे स्नेह सिद्धि कहैंगे तब स्नेह का अष्ट मांस दूसरा स्नेह ले पुष्प कल्क युक्त पकालेना चाहिये फिर जब वह स्नेह पाक अंगुली में लेके मलने से बत्ती बन जाय और उसे अग्नि पर डाल और जल से चिर्चिराहट का शब्द न करै तब सिद्धि भया जानना तैल को फेन उठने से सिद्ध जानना और घृत में फेन शांति होने से सिद्ध जानना जवगन्ध आवै और घृत अथवा तैल निर्मल होजाय और रस उत्पत्ति करै तब घृत अथवा तैल सिद्ध हुआ जानिये स्नेह पाक तीन प्रकार का है मृदु १ मध्य २ और खर ३ जो कल्क मोमवत रहै तौ मृदु जानिये और जो कल्क निरस हो कुछ कोमल रहै तौ मध्य जानिये और जो कल्क निरस और कठोर हो जाय वह खर है और जो इस प्रमाण से अधिक जल जाय तौ समझलेना चाहिये कि स्नेह बिगडि गया और अकार्य गया जो कच्चा रहै और उसका सेवन करै तौ मन्दाग्नि हो और भारी हो नास लेने को नरम हित है और मध्यम सर्व कार्य साधक है और खर मर्दन के अर्थ है जहां जैसा चाहै वहां उसी प्रकार का बनाले तैल घृत और गुड़ये एक दिन में न साधै दिनान्तर दे करै तौ अधिक गुण करै ॥

अथ पिलही पर क्षार घृत पल ॥

पीपरि पीपरा मूल चाव चीता सोंठि सेंधव इन सब को

पल पल भरि लै प्रस्थ भर घी में पचावै और दूध चौगुणा लें जबसिद्धि होतौ यह घृत प्लीहा का नाश करता है विषमज्वर मन्दाग्नि दूर होय और रुचि करै ॥

अथ संग्रहणी अतीसार पर चगेरी घृत ।

पिपरी । पीपरामूल । चीता । गज पीपरि । गोखरू । सोंठि । धनिया । पाढ़ा । बेलि । अजवायन ये सब पल पल भरि लें और घृत चौंसठि पल और चगेरी अर्थात् छोटी लुनियां का रस २५६ पल दै और २५६ पलदही के दे फिरि मंद मंद आंच से पकावै जब सिद्ध होय तब इस घृत का नाम चगेरी घृत है इस घृत से बात कफ ग्रहणी अर्श दूरि हो पेटफूलना कांच का निकलना मूत्रकृच्छ्र प्रवाहिका ये सब नाश होंय ॥

अथ अतीसार पर मसूर घृत ।

शत पल मसूर ले उसे द्रोण भर जल में उसका क्वाथ करै जब चौथाई रहै तबउस काढ़े में आठ पल बेल की गूदी दे और प्रस्थ भरि घृत दे पचावै उस से सब अतीसार ग्रहणी और बिथरा मल गिरना प्रवाहिका ये सब दूरि होंय ॥

अथ रक्त पित्त पर कामदेव घृत ॥

असगंध १०० पल गोखरू ५० पल शतावरि । बिलाईकंद । बनउर्दी । बरियारा । गुर्च । पीपरि । कारिगुसा । रक्त कमलगट्टा । गदापुरैना । खंभारि पुष्प काले उर्द इनसब को दश दश पल ले द्रोण भरि जलमें ले पचावै जब चतुर्थी शर है तब आढक भरि घृत दे पचावै फिरि दाख पद्माख पीपरि रक्तचन्दन पचज नागकेसरि किवांच के बीज हरमिजी नील कमल का फूल बिना कमलगट्टा सरिवन पिठवन जीव गण पूर्वोक्त जो नमिले तौ केवल वरियारा देना ये सब द्रव्य कर्ष कर्ष भरि ले और शक्कर २ पल युक्त करना और आढक भरि पौंडाकारस ये सब इकट्ठा उसमें पचावै जल केवल घी रहिजाय तब छानि ले रक्तपित्त क्षत-

स्तंभ क्षीण कमल वातरक्त हलीमक इनको हरै स्वर्ण हो और स्वरक्षय मूत्र कृच्छ्र उदर हय सुरी पीडा को दूर करै यह घृत बङ्करस्त्री को दे तौ बांझ पुत्रवती हो दुर्बल को दे तौ मोटा हो यह घृत श्रेष्ट है बलकर्त्ता है शरीर की रंगत अच्छी हो हृदय को प्रिय पुष्ट करता है रसायन है तेजबल आयु और प्राण बढ़ाता है कर्ष बढ़ाता है दुर्बलेन्द्री पुरुष को बली हो सब रोग नाशहो जैसे सींचने से वृक्ष तरुण होता है उसी प्रकार से मनुष्य का शरीर भी नवीन होता जाता है यह कामदेव घृत बड़ा गुण दाई है ॥

अथ कल्याण घृत अपस्मार पर ॥

त्रिफला। दूनौ हर्दी। रेणुका। सरिवन। पिठवन। मकरा। बनहर्दी। बनमूग। देवदारु। एलुवा लून। मिलै तौ सुगंधबाला। दो तगर। इन्द्र दन्त। जमालगोटे का बीज। अनार। नागकेसरि। नीलकमल। इलायची। मजीठ। बिड़ंग पद्माष। कूट। मालती। पुष्प श्वेत। चन्दन। तालीस पत्र। वृद्ध भटकटैया। ये सब कर्ष कर्ष प्रमाण पानी में पीसि कल्क करि चौगुणा पानी दे उसपनी में प्रस्थ भरि वह घृत और वह कल्क दकर पकावै फिर रोगी को देतौ मिरगी चित्त भ्रम ज्वर जई बात रक्त कांसमन्दाग्नि नाक टपकना कटि पीड़ा तिजारी चातुर्थिक मूत्र कृच्छ्र बिसर्पिका खजुरी पांडु दोनों विष में और रोग सब अच्छे हो बांझ पुत्र जने भूत राक्षस बाधा सब दूरिहोय इस घृत का नाम पानी कल्याण प्रसिद्ध है ॥

अथ बात रक्त पर अमृतादि घृत ॥

गुर्च का कल्क गुर्च का क्वाथ दूध के साथ घृत पचावै इससे बात रक्त और कोढ़ अवश्य दूरि होय ॥

अथ बात कुष्ठादि परमा तिक्तादि घृत ॥

छितौनी। अमलतास। अतीस। कटुकी। पाढ़ा। मोथा। खस। त्रिफला। पित्तपापड़ा। पटोल। नीम। मंजीठ। पीपरि

पद्माष । कचूर । चन्दन । जवासा । इन्द्रारुन । दोनों हरदी । गुरच । सरिवन । पिठवन । मुर्री । वृषा । शतावरि । त्रायमान प्रसिद्ध है । इन्द्रजव । मुरैठी । चिरायता । इन सब को कर्ष कर्ष भरि ले घी चौगुना दे और घी का दूना आंवले का रस दे और अठगुना जल दे इस सिद्ध घी को सब बात रक्त के बिकार में देइ अठारहों कुष्ट और रक्त पित्त में देइ रक्तार्शपाण्डु हृदि रोग गुल्म बिसर्प प्रदर गंडमाला क्षुद्र रोग ज्वर दूरि करै इस का नाम महा महा तिक्त है इस से ऊपर कहे हुये सब रोग दूरि होंय ॥

अथ कुष्ट दाह और खाज पर कसीसादि घृत ।

कसीस । दोनोंहल्दी । मोथा । हरताल । मैनशिल । कबीला गन्धक । बिडंग । गुग्गल । लोध । मिर्चि । कूट । तूतिया । पीतसरसों । रसौत । सिंदूर । राल । लालचन्दन । खैर । नीमका पत्ता करंज सरिवनबच । मजीठ । मऊआछाल । जटामासी । सिरसलोध । पद्माष । गदापुरैना । हड़ । ये सब एक एक कर्ष लें इन सब का चूर्णकरि तीस पल घृत में साने फिर उसे ताम्र पात्र में भरि, सात दिन धूप में धरै इस घी के लगाने से कुष्ट दाद खाज बिचर्चिका शुक दोष बिसर्पि शीतला बात पित्त जनित मस्तक घाव गर्मी नासूर सोथ भगंदर लूता ये सब दूरि हों और घाव अति शुद्ध हो पूरि आवैं और घाव का चिन्ह भी न रहै ॥

अथ घाव पर जाती घृत ॥

चंबेली । नीम । पर्वल तीनोंकीपत्ती । दूनों हर्दीं । कटुकी । मजीठ । मुरैठी । मौम । करंज । खश । सारिवन । तूतिया । इन सब को समान ले इनकी लुगदी करि घृत में पचावै इस घीके लगाने से घाव नासूर और मर्म स्थान का दुखदाई गंभीर घाव पीड़ा सब दूर होंय ॥

अथ उदर रोग पर बिंदु घृत ।

चीता थंभा हली । हड़ । कबीला । दोनों निशोथ ।

बिधारा। अमलतास। जमालगोटा। त्रिफला। कटु तरोई। देवदाली अर्थात् बंदाल। नील की पत्ती कौवा घुंठी। सेहुंड़ की छीमी। पीपरामूल। बिड़ंग। कटुकी। चोकरा ये सब कर्ष कर्ष भरि ले इनका कल्क करि प्रस्थ भरि घी में पचावै ६ पल सेहुंड़ का दुग्ध डालै दो पल मदार का दुग्ध डालै यह सिद्ध घृत है तौ गुल्म कुष्ट अच्छा होय शूल उदावर्त शोथ पेट फूलना भगंदर आठों उदर रोग दूर होंय और आठ बूंद पानी से वा दूध से वा ऊंटनी के दूध से अथवा कुलथी के क्वाथ से गरम पानी से जौ बूंद पिये तौ दस्त हों और इस बिंदु घृत को नाभि पर लेप करने से दस्त आते हैं ॥

अथ नेत्रों पर त्रिफला घृत।

त्रिफले का रस १ प्रस्थ रूसे का प्रस्थ भंगरे का १ प्रस्थ बकरी का दूध १ प्रस्थ घी कर्ष भरि और द्रव्य। त्रिफला। पीपरि। दाख। चन्दन। सेंधव। बरियारा। दोनों काकोली। बिनाअसगन्ध। मेदा। बिना मुरेठी। मर्चि। शोंठि। खांड़। सेत कमल। रक्त कमल। गदा पुरैना। दोनों हल्दी। मुरेठी। इनका कल्क करि घी में पचावै तौ नक्तांधा नकुलांध खाज पिल्लरोग नेत्रस्राव पटल तिमिर नीलबिंदु ये सब अच्छे होंय इस त्रैफलादि घृत को खाइ अथवा नास ले और यथोचित अनो पान करै ॥

अथ घाव पर गौर्यादि घृत ॥

दोनों हरदी। शालि पर्णी। मुरा। सरिवन। दोनों चन्दन। मुरेठी। कमल केसर। कमल नील। कमल खस। मेदा। बिना मुरेठी। त्रिफला। आम्बट। पीपरि। पाकरि। गूलर। इनकी छाल सब कर्ष कर्ष भरि ले कल्क करि प्रस्थ भरि घी में पचावै यह गौर्यादि घृत विसर्पिका अग्निआसन सीतला कीट विष छत सब को अच्छा करै ॥

शिरो रोग पर मयूर घृत।

बरियारा। मुरेठी। रासन। दशमूल। त्रिफला। दो दो

पल ले द्रोण भरि जल में पकावै मयूर मांस बिना आंत ओझरी पित्त पांव पानी में गलावै जब चौथाई रहै तब उतारि ले फिर इसकी बराबरि इसमें चीर डाले और प्रस्थ भरि घीमें जीवनी गण और काढ़ा सब पचावै इस घृत से सिर रोग मन्या बिथा पृष्टग्रह लकवा कर्ण नाक नेत्र जीभ गला आदि सब रोगों को दूर करै इस घृत को खाय सूंघे मले कानमें डाले और इस का सेवन हेमंत शिशिर बसंत आदि ऋतुओं में करै यह बड़ा गुण दायक घृत है ॥

अथ बंध्या को फल घृत ॥

त्रिफला । मुरैठी । कूट । दोनों हरदी । कुटकी । बिडंग । पीपरि । मोथा । कायफर । मेदा । महामेदा । बिना मुरैठी । दोनों काकोली । बिना असगन्ध । सरिवन । पिठवन । मकरा सोंफ । हींग । रासन । दोनों चन्दन । चमेलीके फूल । बंशलोचन । कमल । शक्कर । अजमोद और दहून ये कर्ष कर्ष भरि ले इन का कल्क करै और जिस गायके बछड़े का भी रंग गायकासा हो उसका घृत प्रस्थ भरि ले और चौगुना दूध दे बिनवांकंडा की मंद २ आंच दे पचावै और सुन्दर तिथि पुष्यनक्षत्र में मट्टी या तांबे के पात्र में स्त्री अथवा पुरुष शुभ दिन में पिये तो पुरुष वृषभ तुल्य कामी रहै और कैसाही असमर्थ हो उसे पुरुषत्व उत्पन्नहो और बांझ के पुत्र होय और जिस स्त्री के पुत्रमरिजाते हों उसके भी पुत्रहों और घृत के सेवन से शत वर्ष की आयु होय इस घृतको भारद्वाज ऋषि ने कहा है वैद्य लोग इस घृत के साथ लक्ष्मण बूटी की जड़ को बिना कहे देते हैं ॥

अथ योनि दोषपर त्रिफलादि घृत ॥

कटसरैया । गुर्च । गदापुरैना । शिर्स । दोनों हरदी । रासना । मेदा । शतावरि । इनका कल्क प्रस्थ भरि ४ प्रस्थ घी में पकावै जब यह सिद्धि होय और स्त्री इसे पान करै तो सब योनि दोष दूरि होंय और पलित चलित निम्नित निकृत

पित्त योनि बिभ्रांत खंड योनि आदि योनि के रोग मिटैं और गर्भ टिकै यह फल घृत योनि दोष कोबहुत अच्छा है ॥

अथ बिष परपंचतिक्त घृत ॥

रूसा । नीम गुर्च । भटकटैया । पटोल । इनहीं का काढ़ा और कल्क में घृत पकाय खाय तौ बिषमज्वर जाय और पाण्डु कुष्ट बिसर्प कृमि अर्श ये भी दूरि होंय ॥

अथ कुष्ट पर भूनि बादि घृत ॥

चिरायता त्रिफला खस । नीमकी छाल । मोथा । अरूसा । मुलहठी । सालिपर्णी । कुटकी । अत:मणी । रसौत । गिलोय । पीपरि । पद्माख । कचूर । इन्द्रायणि के फल । इन्द्रजव । मूर्वा । पृष्टिपर्णी । अतीस । हलदी । शतावरि ये सब औषधि धेला धेला भरि ले और इन सब औषधियों से दूने आंवले के फल ले अठगुने पानी में काढ़ा करै फिरि काढ़ा घृत में मिलाय अग्नि पर चढ़ाय दे जब काढ़ा जरिजाय और घृत मात्र शेष रहे तब उतारि ले मात्रा पैसा १ भरि प्रातःकाल पिये तौ कुष्ट जाय और उन्माद ज्वर पेट की ग्रन्थि गल शोथ गंडमाला गलग्रह आदि सब रोग निस्सन्देह जांय ॥

अथ बिंदु घृत ॥

कम्पिल्ल त्रिवृता: समंस्नुहि पय:सर्वैः समानो रसो धात्र्याः सर्व समानकं घृत मदस्तुल्यंपयः सैंधवम् खल्यांशं बिपचेदिदं बिजयते कर्ष प्रमाणं घृत गुल्मान् शूल परिग्रहादि सहिता लीढा दरं कच्छपम् ॥

अथ टीका ॥

कबीला । निसोत । इन दोनों की बराबरि सेंहुड़ का दूध और उतनाहीं आंवले का रस और सबों की बराबरि घी और घीकी बराबरि दूध और सेंधानमक डालि करि मंद अग्नि से औटा के घृत बनावै तौ यह बिंदु

घृत १ कर्ष प्रमाण खाने से गुल्म और शूलादि उपद्रव सहित प्लीहोदर और कछुइया को दूर करता है ॥

अथा नुभूत तेल प्रकर्ण माह ॥

अथ प्रथम लाक्षादि तेल ।

एक आढक अर्थात् तीनसेर और ६ रुपया भरि लाख ले चारि आढ़क पानी में काढ़ा करै जब चौथाई रहै तब उतारि लेउसमें प्रस्थ भरि तेल दे (६४ रुपये का प्रस्थ होता है) और दहीका जल आढ़क भरि दे और सोंफ । असगन्ध । हरदी । देवदारु । कुटकी । सेवड़ी । बीजसुरी । कूट । मुरेठी । चन्दन । मोथा । रासन ये कर्ष कर्ष भरि ले इनका चूर्ण करि तेल में मध्यम आंच दे सिद्ध करै इस तेल के लगाने से विषमज्वर नाश हो कासश्वास नाकबहना रीढ़पीड़ा पीठ जकड़ना वात पित्तज मिरगी यक्षराक्षसी उन्माद खाज पेटपीर दुर्गन्ध देह फूटन मिटै गर्भिणी मलै तौ गर्भ पुष्ट हो ॥

अथ वायु पर नारायण तेल ।

असगन्ध । परिया । बेल । पाढ़ा । भटकटैया । दोनों गोखुरू । ककई । नीम । सोहनपत्ती । गदापुरैना । गन्ध-प्रसारिणी । अरणी । ये सब द्रव्य दश दश पल ले फिरि सब को चारि द्रोण पानी में पकावै जब एक द्रोण रहै तब एक आढ़क तेल में शतावरि का रस एक आढ़क देइ जो गीली होय तौ रस निचोड़ कर देइ और जो सूखी होय तौ काढ़ा करिके दे और तेल का चौगुना गऊ का दूध दे तिस में कल्क दे धीरे धीरे पचावै और कूट । इलायची । चन्दन । सुगंधबाला । जटामासी । छरीला । सेंधा लोंन । असगन्ध । बरियारा । रासन । सोंफ़ । देवदारु । शालपर्णी । बनउर्दी । बनमूंग । तगर ये सब दो दो पल लेकर कल्क करै और तेल में साधि लेइ फिरि उस तेल को नास देइ शरीर पर मलै पिचकारी आदि कर्म में देइ पक्षाघात ठोड़ी जकड़ना गल

जकड़ना कूकरा वहिरा लंगड़ा कमर जकड़ना देह का सूखना नपुंसकत्व ये सब अच्छे होंय और ज्वर क्षय होय और अंड वृद्धि अंत्र वृद्धि दंत रोग शिरोरुज पसुरी पीड़ा पंगत्व वृद्ध सी बुद्धि हानि बिषम बात सब देह की बाई जाय और इस तेल के प्रभाव से बंध्या के पुत्र हो यह तैल मनुष्य घोड़ा हाथी सब को हित है जैसे नारायण दुष्ट दैत्यों को नाश करते हैं उसी प्रकार से यह तैल भी दुष्ट बात के रोगों को नाश करता है इस तैल में ऊपर जो द्रोण कहा है वह द्रोण १३ सेर और एक छटांक का होता है॥

अथ बात पर वरियारा तेल ॥

वरियारा की जड़का क्वाथ। कुरथी क्वाथ। यवक्वाथ। झड़ाबेरी क्वाथ। इन सब को आठ आठ सेर ले और सेर भरि तेल ले और जीवनी गण। शतावरि। इन्दारुन। मजीठ। कूट। छरीला। तगर। अगर। सेंधव। बच। गदापुरैना। जटा मासी। सरिवन। पिठवन। तेजपात। सोंफ। असगंध। इन सबको मिला करि पचावै गर्भिणी स्त्री और धातु क्षीण पुरुष अति श्रमी प्रकृती को दे यह तेल राजा और सुखी पुरुषों के कारण है यह वरियारा तैल सब बात को हरता है॥

अथ प्रसारिणी तैल।

गन्ध प्रसारिणी १०० पल अर्थात् एक पंसेरी भरले द्रोण भरि जलमें पचावै जब चौथाई रहै तब उतारिले उसमें काढ़े के बराबर दही और तेलदे और तेलके समान कांजी और तेल का चौगुना दूध और तेल का आठवां भाग आगे लिखी हुई सब द्रव्यें ले मुरैठी। पीपरा मूल। सेंधा नोन। चीता। बच। गन्ध प्रसारिणी। देवदारु। रासन। गजपीपरि। भिलावां। सोंफ। जटा मासी। इन सब का कल्क तैल में पचावै यह तैल अति उत्तम है बात श्लेष्म रोग को नाश करता है और कूबड़ा अंग भंग पंगु आदि को हित

है और गृद्दसी वायु हनुपृष्ट शिरग्रीव और कटि इनका जकड़ना दूर करै और कठिन वात रोग को नाश करै ॥

अथ वायु पर माष तेल ।

उर्द । यव । असौं । भटकटैया । केवांच । कुरैया । गोखरू । सोनाक इन सातों को पल पल भरि ले फिरि इस को चौगुने पानी में पचावै जब चौथाई रहै तब उतारि ले और बिनवर गूदी । बेर । सनई बीज । कुरथी । इन सबको चौदह चौदह पल ले फिरि इसे चौगुने पानी में पचाइ जब चौथाई रहै तब उतारि ले और प्रस्थ भरि छागमांस चौंसठ पल जल में पचाइ उतारि छान ले तब प्रस्थ भरि तेल में सब क्वाथ और मांस जूसदे करि पचावै और आगे लिखा हुआ कल्क भी इसके साथ पचावै गुर्च । सोंठि । गदापुरैना । रासन । रगड । पीपरि । । बरियारा । गन्धप्रसारिणी । जटामासी । कटुकी । ये सब आधा आधा पल घी में आंच दे उस तेल में पकावै इस तेल से ग्रीव जकड़ना बाहु व्यथा अर्द्धांग दूखना अक्षेप उरुस्तंभ पतानक सर्वाङ्ग कंप शीत रस इस माषादि तेल से ये रोग नाश होंय और सब वात बिकार दूरि होंय ॥

अथ शतावरि तेल ॥

शतावरि । दोनों बाला । दोनों पर्णी । रंड । असगन्ध । गोखरू । बेल । कास । कुरैया । सब डेढ़ २ पल ले कल्क करि चौगुने जल में पचावै जब चौथाई रहै तब उतारि ले फिरि प्रस्थ भरि तैल और प्रस्थ भरि दूध में पचावै और एक प्रस्थ शतावरि रस प्रस्थभरि पानी पचावै फिर शतावरि । देवदारु । जटामासी । तगर । चन्दन । सोंफ । बरियारा में कूट । इलाइची । छरीला । कमल । रिद्धि सिद्धि बिना बराही । कंठ मेदा । बिना मुरैठी । दो दफै कही है इस कारण दुगनी लेना काकोली बिना असगन्ध जीवक बिना बाराही कंदरा ये सब कर्ष कर्ष भरि ले इसका कल्क करि

गोबर की आंच में पचावै इस तैल को माथे में लगा ने से पुरुष स्त्रियों में वृषभ तुल्य रहै स्त्री पुत्र जनै और स्त्री के सर्व योनि बिकार नाश होंय अंग शूल शिर शूल कमल पांडु गृध्रसी प्लीह शोष प्रमेह दंडापतानक बायु दाह सहित बातरक्त बात पित्त मद कान रुधिर अध्यान रक्त पित्त ये सब दूरि होंय यह शतावरि तैल कृष्ण से आत्रेय जीने कहा है ॥

अथ अर्श पर कसीस तेल ॥

कसीस। करिसारी। कूट। सोंठि। पीपरि। सेंधव। मैनसिल। कनेर। बायबिड़ंग। चीता। अरूसा। जमालगोटा। बनतरुई। बीजचोक। हरताल ये सब कर्ष कर्ष भर ले इनका कल्क करि प्रस्थ भर तेल में पकावै और दो पल सेहुंड़ का दूध २ पल मदारका दूध और तेलका चौगुना गोमूत्र दे करि अच्छी तरह से पकावै यह तेल खारनाद आचार्य ने कहा है इस तेल के लगाने से बवासीर का मस्सा गिरि पड़ता है और चार कर्म कष्ट सहित नहीं होता ॥

अथ बात रक्त पर पिंड तेल ॥

मंजीठ। सरिवन। राल। मुरेठी। मोम ये पल पल भरि ले फिर इनको तेलमें पचावै फिर उतारि कर धरि राखै इस तेल के लगाने से बात रक्त निस्सन्देह दूर होय ॥

अथ कंडूपर मदार तेल ॥

ग्वार पत्र का रस और हरदी का कल्क सरसों के तेलमें पचावै फिर इसके लगाने से खुजली दाद बिचरचो आदि सब रोग दूरि होंय ॥

अथ कुष्ठपर मरिच तेल ॥

हरताल। निशोथ। रक्तचन्दन। मोथा। मैनसिल। जटामासी। दोनों हरदी। देवदारु। इंद्रायन। कनेर। कूट। मदार का दूध। गोबर का रस ये सब कर्ष कर्ष प्रमाण ले और अर्द्ध पल संखिया और प्रस्थ भरि तैल गोमूत्र दूना जल दूना

देइ मरिचादि तैल से कुष्ट के घाव अच्छे होंय और श्वेतरक्त और कृष्णादाग मिटें और खसरा सेहुआ कटीला और भैंसहीदाद ये सब दूरि होंय ॥

अथ घातु पर त्रिफला तैल ॥

नीम । चिरायता । दोनों हरदी और रक्त चन्दन इनका बना तेल लगाने से मनुष्य को बहुत गुण करता है ॥

अथ पलित पर निम्ब तैल ॥

नीमके बीज की मींगी को भंगरा के रसमें भावना दे फिर आसन रसमें दे फिर उसका तेल निकालि नास ले तौ अकाल के पके हुए बाल कालेहों और इसमें दूध भात का पथ्य दे अथवा मुरेठी कच्चे आवले का कल्क चौगुणा दूध चौगुणा तेल दे पकावै तिसके उपरांत चौगुणा पानी दे पकावै जब केवल तेल रहै तब उतारि ले कर इसका नास ले तौकेश सघन होंय ॥

अथ करंज तैल इन्द्र लुप्त पर ॥

कंजा । चीता । चमेली और कनेर से तैल पकाइ लगावै तौ बाद चारा दूरि होय ॥

अथ पलित पर नीलकादि तैल ॥

नीलकेतकी । मूल भंगरा । कटसरैया । अर्जुन फूसन । का हार । चमेली । कालेतिल । तगर । कमलका सर्वांग लोह चूर्ण । मालकंगुनी । अनारकीछाल । गुर्च । त्रिफला कमल की जड़की मट्टी इन सबों को कर्ष२ भरि ले उसमें त्रिफले के क्वाथ सहित तैल पचावै और इसमें भंगरे का रस भी डालै जब सिद्ध होय तब उतारि ले फिर इसे लगावै तौ बालस्थित होंय अकाल पलित अच्छा हो दारुण उपजिह्वक घिर रोग ये सब अच्छे होंय ॥

अथ पलित पर भृंगराज तैल ॥

भंगरे के रसमें लोह चनवा कीट त्रिफला सारिवन इनके

कल्क में तेल पचावैं इस तैल से पलित खाज इन्द्र लुप्त ये सब रोग मिटैं ॥

अथ मुख दंत रोग पर इरिमेदादि तैल ॥

खैर छाल १८० पल कूटि करि द्रोण भरि जलमें पचावै जब चौथाई रहै तब उतारि ले फिर उसमें आधा आढ़क तैल दे खैर। लौंग। गेरू। अगर। पद्माख। मंजीठ। लोध। मुरैठी। लाही। वटकीजड़। मोथा। तज। जायफल। कपूर कंकोल। खदिर सार। पतंग। धौपुष्प। इलायची। और नाग केसरि ये सब कर्ष २ ले इसमें तैल को पचाय लगावै तौ मुख रोग दूरि होय और मुखमास बढ़ना दांत हलना दांत फूटना मुख और कान का विकार दांतों का ठंढा होना दांत किरना दांत कृमि दंत फूटना दुर्गंध जीभ रोग तालू रोग ओष्ट रोग ये सब दूरि होंय ॥

अथ कर्ण शूल पर हिंगु तैल ॥

सरसोंका तेल ऽ१ मडुआका तेल ऽ१ अरंडी का तेल ऽ१ भंगरा का रस ऽ॥ गौका घी ऽ॥ ले सबको तेल में एकत्र करि चढ़ाय दे जब तेल खरा होजाय तब सब औषधि गौ के ऽ१ दही में सानिकर औटावै जब सिद्धिहोय तब लगावै तौ बात जाय और स्त्री की प्रसूति जाय और देहके सकल रोग जांय और सब प्रकार का ज्वर जाय और अग्नि बात भी जाय ॥

अथ पंचस्नेही तैल बात पर ॥

सोंठि। पीपर। मिरच। कूट। अरणी के पत्तों का रस। कंजा। अजमोद। त्रिफला। हींग। बच। कायफर। सरसों। बाय विड़ंग। अजवाइन। मोथा। राई। मंजीठ। सुगन्धवाला। जटामासी। पपरा बीज। पान। गजपीपरि। शतावरि। हल्दी। देवदारु। धनियां। लहसुन। बिषमैनफल। निर्मली। ये सब औषधी दो दो पैसे भरि ले तिलका ऽ१ सरसोंका तेल ऽ१ अरंडी का तेल ऽ॥ गौका घी ऽ१

मालकांगुनी का तेल ऽ।॥ सब तेलों को एकत्र करि चढ़ावे फिर औषधि कपर छान करि जब तेल खरा हो जाय तब उसमें औटावे जब सिद्ध होजाय तब देह में लगावे तौ प्रसूति जाय अंग की पीड़ा जाय हाथ पांव और कटि की पीड़ा उचाट बाय ये सब रोग दूरि होंय ॥

अथ अठरंगा तेल झोला पर ॥

सहजने की जड़। बकाइन की जड़। धतूरे की जड़ पुरानेअंड की जड़। आककी जड़। गुरसकरी की जड़। कनेर की जड़। करियारी की जड़। घोंघची की जड़। नीम की जड़। छोटी बड़ी कटाई की जड़। अरसी की जड़। असगंध मझुआ बिष ये सब औषधि पैसा २ भरि ले चंदिया बनावे फिर ऽ१ तिलका तेल ले आग पर चढ़ावै जब तेल खरा हो जाय तब उसमें चंदिया छोड़ दे जब औटते २ चंदिया तेलके ऊपर आय जाय तब हींग तुंबर सोंठि इनको कडुए तेल में पचावै इसै कानमें डालने से पीर दूर होय ॥

अथ बधिरत्व पर बेल तेल ॥

छोटे बेल को गोमूत्र में कल्क करि तेल बकरी का दूध पानी सहित पकाइ कान में डालने से बधिरत्व दूरि होय ॥

अथ कर्ण बहने पर क्षार तेल ॥

लघुमूलीका खार। सज्जी। यवाखार। पांचोंनोन। हींग। सहिजन। सोंठि। देवदारु। बच। कूट। सोंफ। रसौत। पीपरामूल। मोथा। ये सब कर्ष २ भरि ले इनका कल्क करि प्रस्थ भरि तेल में केले का रस और बिजौरे के रस सहित पकावै और चौगुणा मधु शुक्त दे इस तेल से पीवका कान से गिरना शब्द होना पीड़ा बहिरापन कान कीड़ी और कान के सब और मुख रोग दूर होंय ॥

अथ मधु शुक्त—जंभीरी। नीबू का रस। प्रस्थभर सहत

कुड़व भर और पीपर पलभरि इन सबको इकट्ठा करि बच का काढ़ा अदरकका रस गुड़ इन सबको भी मिश्रित करि माटी के पात्र में राखि मूंदि धान्य राशिमें तीन रात्रि रख करि उसे निकालि ले इसे मधु शुक्त कहते हैं ॥

अथ पीनस पर पाढ़ादि तेल ॥

पाढ़ा। दोनों हल्दी। मुरी। पीपर। चमेली पत्र और दतून इनके तैल से दुष्ट पीनस अवश्य दूरि होंय ॥

अथ नाक रोग पर भटकटैया तेल ॥

भटकटैया। दतूनि। बच। सहिजन। तुलसी। सोंठि मिरच। पीपरि। सेंधव इनके तैल से नाक से पीव का गिरना और भी अनेक नाक के रोग दूरि होंय ॥

अथ छिक्का पर कूठ तेल ॥

कूठ। बेल। पीपरि। सोंठि। और दाख इनका काढ़ा और कल्क करि तैल अथवा घृतमें पचाय नासले तौ छींक रोग दूर होय ॥

अथ नाशार्श पर गृहधूमादि तेल ॥

रसोईके स्थान का करुआं। पीपरि। देवदारु। यवाखार। करंज। सेंधव। चिवड़ाबीज। इनका तैल नाकरोग को बहुत शीघ्रही हर लेता है ॥

अथ सब कोढ़ों पर तेल ॥

छमियां सेंहुड़ का दूध। मदारका दूध। धतूरे और चीते का रस। भैंस के गोबर का रस। तिलके तेलमें इन सबको पचावै जब केवल तैल रहै तब उसमें चतुर्गुण गोमूत्र दे फिर पचाय जब तेल रहै तब प्रस्थ भरि तैल में गन्धक मिलावा चीता। मैनसिल। हरताल। बिड़ंग। दोनों। अतीस। कटुतुरई। कूट। जटामासी। बच। त्रिकुटा। दारुहल्दी। मुरैठी। सज्जी। जीरा। देवदारु ये सब कर्ष २ भरि ले तैल को सिद्ध करै इस तैल के लगाने से सब कुष्ट नाश होंय ॥

अथ कनेर का तैल रोम सातन पर ।

कनेरकीमूल । दंती कीमूल । निशोथ । कटुतुरई । केला । क्षार और केले का पानी इनमें तैल सिद्ध करि लगावै तौ रोम गिरि परै ॥

अथ पित्त ज्वर पर तैल ॥

दोहा ॥

हलदी लाख मंजीठ को कलक करै बुध धीर ।
लेय तेल षट गुण बहुरि और दही को नीर ॥
छाछि कलक वा तेल में डारै वैद्य पचाय ।
तेल लगावै अंग में दाह शीत ज्वर जाय ।

अथ अन्य लाक्षादि तैल ।

साजी १ पैसाभरि सोंठि १ पैसाभरि छपलोट १ पैसाभरि चोवा १ पैसाभरि पिलवनी १ पैसाभरि लाखपीपरको ६ पैसा भरि हल्दी ६ पैसे भरि मंजीठ ४ पैसे भरि ये सब औषधी कपर छान करै फिर औषधिन से ६ गुणा मट्ठा ले सरसों का तेल डेढ़ सेर ले चूल्हे पर चढ़ावै जब खरा हो जाय तब औषधी औटावै फिर जब सिद्ध होय तब देह में लगावै तौ शीत ज्वर दाह ज्वर जाय और स्त्रीका गिरता हुआ गर्भ थमि जाय ॥

अथ विजय नारायण तैल ।

सरसों ५ टं० वायबिड़ंग ५ टं० मंजीठ५ टं० बच५ टं० कूठ५टं० जायफर ५ टं० चाव ५टं० कचूर ५टं० अजमोद ५ टं० पौहकर मूल ५टं० चन्दन दोनों ५टं० राई ५टं० मोथा ५टं० कलोंजी ५ टं० चिरायता ५ टं० ये सब औषधी कपर छान कर तिलका तेल १ सेर उतारि कर देहमें लगावै तौ झोलावाई और गठिया और तेरहों सन्निपात जांय ॥

अथ मरिचादि वृहत्तैल ।

निशोथ की जड़ । दन्ती की जड़ । आकका दूधऔर पत्तों कारस । देवदारु । हल्दी । दारुहल्दी । जटामांसी । रक्त।

चन्दन। इन्द्रायणी की जड़। कनेर की जड़। हरताल। मैनसिल। चीते की छाल। मुरहटी। बायबिड़ंग। पमार के बीज। लहसन। करिकचि हाऊ की जड़। सिरसकी छाल सुनमन। थूहर का दूध। गिलोय। अमलतास। कंजासोधा। खैर। पीपरि। बच। जाबित्री। सेवकी जड़ ये सब औषधि बराबर ले और औषधियों से दूना सरसों का तेलल और चौगुणा गोमूत्र ले प्रथम तेल में गोमूत्र पचावै तिस पीछे पानी में सब औषधी पीसि औटावै जब सिद्ध होय तब उतारि लगावै तौ २० प्रकार के कोढ़ जांय कानकी पीड़ा और अंग के मंडल जांय॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंहजीविरचिते अमृत सागर नामग्रंथे घृत तेल साधना नाम अष्टविंशति मस्तरङ्ग १८॥

अथ अनेक रोगों पर अनुभूत काढ़े॥

क्वाथ अर्थात् काढ़ा पांच प्रकार का है स्वरस अर्थात् अंगरस १ कल्क २ क्वाथ ३ हेम ४ फांट ५ ये एकसे एक गुण में न्यून हैं यथा स्वरस अर्थात् अंगरस से लघु कल्क॥

अथ स्वरस माह

किसी द्रव्य को उत्तम भूमि से उखाड़ कर बिना पानी डाले कूट कर कपड़े में रख कर रस निचोड़लेब उसरस को स्वरस अर्थात् अंगरस कहते हैं और किसी द्रव्य को सोलह तोले कूट कर उसे दुगुण जल में रात्रि दिन भिजोइ राखै उस रस को भी स्वरस कहते हैं और जो द्रव्य हरी न मिलै तौ सूखी द्रव्य अठ गुण पानी में औटै जब चौथाई रहै तब ले ले औटी द्रव्य का रस भारी होता है इस कारण से कार्य में आधा पल लेना उचित है और सूखी द्रव्य रात की भी जो का रस हलका है इसे वह पल भर लेना चाहिये और स्वरस अथवा काढ़ा वा यंत्रका निकाला रस इन में शहद शक्कर गुड़ खार जीरा। नमक घृत। तेल

और चूर्ण ये सब आठ माशे युक्त करना गुरच का रस शहत युक्त खाने से सब प्रमेह नाश होय और आंवले का रस हरदी । का चूर्ण । शहद मिश्रित । करि खिलाने से भी प्रमेह नाश होय ॥

अथ वासा स्वरस रक्त पित्तादि पर ॥

रूस का स्वरस । सहत । मिलाय पीने से रक्त पित्त नाश हो और ज्वर । खांसी चढ़ी कमल कफ और पित्त इन रोगों को भी नाश करै ॥

अथ त्रिफलादि स्वरस कमल पर ॥

त्रिफले का रस । और शहत । अथवा बड़ी हल्दी का रस । और शहत । अथवानीब का रस । और शहत । अथवा गुरच का रस । और शहद । युक्त पिये तौ कमल रोग निस्सन्देह नाश हो ॥

अथ तुलसी आदि स्वरस विषम ज्वर पर ॥

तुलसी का रस । मरिच का चूर्ण । अथवा सूगा का रस । और मिर्च । साथ पिये तौ विषम ज्वर दूर होय ॥

अथ जम्बादि स्वरस रक्ता तीसार पर ॥

जामुन । आंब । आंवरा । इन तीनों की पत्ती का रस शहद घृत और दूध सहित पिये तौ दिनीरक्तातीसार दूरि होय ॥

अथ बबूरादि स्वरस अती सार पर ॥

बबूर की छाल का रस । शहत । युक्त पिलावै तौ सात भांति का अतीसार जाय वाकुरे का रस अथवा करील का रस । शहत के । साथ पिये तौ अतीसार जाय ॥

अथ अदरक स्वरस अण्ड कोश और स्वास पर ॥

अदरक का रस । और शहद । पिये तौ वातांड वृद्धि पचै स्वांस । खांसी । अरुचि । नाक बहना । सब रोग मुक्त होय ॥

अथ बीज पूर स्वरस पार्श्वादि शूल पर ॥

बिजौरा । नीबू का रस शहत । और नवाखार । सहित

पिये तौ पसुरी का शूल हृदय का शूल पेडू कीपीर कोष्ठ वृद्धि इन सब रोगों से निर्मुक्त होय ॥

अथ शतावरि रस पित्त शूल पर ।

शतावरि का स्वरस शहत के साथ पिये तौ पित्त शूल नाश हो जाय ॥

अथ घीकुवार रसप्लीहा पर ।

घी क्वार का रस हरदी चूर्ण पिये तौ पिलही अपची पेटकी गांठि ये सब रोग निस्सन्देह दूरि होंय ॥

अथ मुंडीखरस गंड माला अपची पर ।

मुंडी के स्वरस को आठ तोले पियेतौ गंडमाला अपची और क्वांवर रोग नाश होंय ॥

अथ मुंडी स्वरस सूर्य्या वर्त्तादि पर ॥

मुंडी के स्वरस को उष्ण करि मर्चि के चूर्ण युक्त करि सात दिन पीवै तौ सूर्या वर्त आधा सीसी आदि सब रोग निस्सन्देह दूरि होंय ॥

अथ उन्माद पर ब्राह्म्यादि स्वरस ।

ब्राह्मी श्वेत कुह्मड़ा कचूर कौघांला इन का स्वरस भिन्न भिन्न शहत और कुष्ट के साथ पिये तौ सर्व उन्माद जाय और श्वेत कुह्मड़े का रस पुराने गुड संयुक्त पीने से दुष्ट कोद्रव का उन्माद नाश होता है ॥

अथ बरियारे का स्वरस घाव पर ।

शस्त्र के लगे घाव में तुरत ही बरियारे का रस लगावै तौ घाव अच्छा होय ॥

अथ पुट पाक स्वरस सविधि ॥

पुट पाक का रस लेते हैं इससे उस का यत्न कहते हैं कोई ओदी द्रव्य हो उसे पीस कर गोला बांधे तिस पर रेंड वा बरगद वा जामुन का पत्ता लपेटे फिर कपरोटी करि दो अंगुल मिट्टी लेसै फिर अग्नि में रक्खै तिस को

उपरान्त उसे जब लाल होजाय बाहिर निकासले फिर उसका रस निचोड़ ले इस रस को पुट पाक कहते हैं फिर चारि रुपया भरि रस रुपया भरि सहत संयुक्त पिये और जो कल्क चूर्ण पतली द्रव्य मिश्रित करनी हो पुट पाक रसके यथा योग्य देना चाहिये ॥

अथ कुरैया पुटपाक सर्वातीसार पर ॥

चारि तोले कुरैया की छाल चावल के धोवन में पीस कर गोला बांधि जामुन के पत्ते लपेटि फिर सूत से बांधि गेहूं का आटा लपेटि उस पर मिट्टी लगावै फिर उसे गाय के गोबर में फूंक दे जब अंगार सा होजाय तब निकासि ले फिर रस निचोड़ शीतल करि शहत मिलाय पीवै तौ बहुत दिनों का कठिन अतीसार भी दूर होय ॥

अथ चावल धोवने की क्रिया ॥

चारि रुपैया भरि शुद्ध चावल अठगुने पानीमें धोइ ले वही चावल का धोवन सर्वत्र लिया गया है ॥

अथ पुन: पुट पाक: ॥

अरलू जो करील वा सोहन पाता का पुट पाक अग्निको दीपन करता है जब शहत और मोचरस मिलाय करि दे तब अतीसार दूर होय ॥

अथ पुन: पुट पाक: ॥

बड़। पीपल। गूलर। पाकर। जगन्नाथी पीपल इनकी छाल पानी में पीस गोला बांधि स्वेत तीतर का पेट फाड़ि उसकी अंतड़ियों में वह गोला रखकर पुट पाक करै फिर पके पर गोला निकार के रस को निचोड़ ले फिर वही रस शहत के साथ दे तौ सब अतीसार जांय ॥

अथ अन्य पुट पाक: ॥

पक्के अनार का पुट पाक बनाय तिसका रस शहत मिलाय कर दे तौ सब अतीसार दूरि होय ॥

अथ बिजौरा पुटपाक उबाकी पर।

बिजौरा नीबू। जामन की पत्ती वा जड़के पुट पाकका रस शहत के साथ देय तौ सब प्रकार की छर्दि दूर होय॥

अथ बासा पुटपाक रक्तपित्त कासज्वर पर॥

रूसे का पुट पाक रस शहत के साथ पीने से रक्त पित्त कास छर्दि ज्वर ये सब दूरि होंय॥

अथ भटकैया कास स्वास पर॥

भटकटैआ के पंचांग का पुटपाक रस पीपरिका चूर्ण डारि कर दे तौ कास स्वास और कफ ये सब दूरि होंय॥

अथ बिभीत पुटपाक कास स्वास पर॥

बहेड़े के ऊपर घी चुपड़ कर उसके ऊपर आटा लपेटि अंगार पर पुटपाक बनावै फिर उसका छिलका मुख में रखने से कास स्वास स्वर भंग आदि सब रोगों को दूरकरै॥

अथ सुंठी पुटपाक: आमातीसार पर॥

सोंठि का चूर्ण करि उसकी गोली घृत के साथ बनावै फिर उसे रेंड पत्र में लपेटि मन्दाग्नि में पुट पाक करै फिर उस चूर्ण को सबेरे शरबत के साथ खाय तौ आमातीसार की पीड़ा दूर होय—अथवा सोंठि के चूर्ण को रेंडकी जड़ के रस में सानि पुट पाक करि रस निकाल शहत के साथ खाय तौ आम वात की पीड़ा दूरि होय॥

अथ सूरनपुटपाक बवासीर पर॥

इसका पुट पाक बना करि नमक और तैलके साथखाय तौ अर्श नाश होय॥

अथहरिण शृङ्गपुटपाक हृदयसूल पर॥

हरिण के सींग को शवराव के पुट पाकमें जला कर गो घृत में डाल कर पिये तौ हृदय शूल निस्सन्देह जाय॥

अथ क्वाथ माह॥

चार रुपैया भरि द्रव्य चौंसठि रुपैया भरि पानी मिट्टी पात्र में भरि मन्दाग्नि में औटै जब आठ रुपैया भरि रहै तब

उतारि ले फिर कुछ उष्ण रहै तब पिये इस क्वाथ के चारि नाम हैं शृत १ क्वाथ २ कषाय ३ निर्यूह ४ आहार का रस-पके पर वृद्ध बैद्य के उपदेश से दै पल काढ़ा पिये क्वाथ में मधु मिश्री डारने का प्रमाण जो बायु प्रधान हो तौ मिश्री थोड़ी देना पित्त में अष्ट मांश कफ में षोड़शांश शहद बायु में षोड़शांश पित्त में अष्टमांश और कफ में चौथा अंश देना चाहिये अथ जीरादि अनेक वस्तु डालने का प्रमाण॥ जीरा। गूगल। क्षार। सेंधव। शिलाजीत। हींग। और त्रिकुटा ये काढ़े में चारि मासे दे और जियादा और कम देना चाहै तौ समय और बलको विचारि ले और दूध घी गुड़ तेल गोमूत्र और खासादि चूर्णादि ये सब बल और समय देख कर दश दश मासे देना उचित है॥

अथ गुर्चादि काढ़ा सर्व ज्वरों पर।

गुरच। धनियां। नीम की छाल। पद्माष। रक्तचन्दन इसे गुर्चादि क्वाथ के पीने से सर्व ज्वर नाश होते हैं यह क्वाथ दीपन है और दाह, तृष्णा, लार, उबकाई, ये सब दूर होते हैं॥

अथ गुरचादि पाचन बात ज्वर पर॥

गुर्च। पीपरामूल। सोंठि इनका काढ़ा बात ज्वर में सदैव दे यह पाचन है॥

अथ बात ज्वर पर काढ़ा॥

शालपर्णी। अर्थात्। बिनउर्दी वरियारा। रासन। गुर्च। सरिवन इनका काढ़ा पिये तो तीव्र बात ज्वर जाय अथवा खंभारी। सरिवन। दाख। त्रायमाण। गुर्च इनका काढ़ा गुड़ डारि कर पिये तो बात ज्वर जाय॥

अथ कटु फलादि पाचन पित्त ज्वर पर॥

कायफल। इन्द्रजव। पाढ़ा। कुटकी। नागरमोथा इनका काढ़ा पित्त ज्वर में दश दिन देय तौ पित्त ज्वर दूर होय॥

अथ पित्त पापरादि क्वाथ पित्त ज्वर पर ॥

पित्तपापरा। खसा। कुटकी। चिरायता। जवासा। प्रियंगु दाना पीत सरसों सा होता है इनका काढ़ा चीनी डालि कर पिये तौ तृषा, दाह, रक्त, पित्त, ज्वर, ये सब दूरि होंय अथवा दाख। हड़। मोथा। कुटकी। अमलतास। पित्त पापड़ा इनका क्वाथ करिदेय तौ पित्तज्वर तृष्णा मूर्च्छा दाह रक्त पित्त इन सब रोगों को शमन और भेदन करता है ॥

अथ बिजोरा पाचक कफ ज्वर पर ॥

बिजौरा की जड़। हड़। सोंठि। पीपरामूल। जवाखार। डालि के कफ ज्वर के बारहें दिन काढ़ा पिये तो जल्दी पाचनकरै अथवा चिरायता। नीम। पीपल। कचूर। शतावरि। गुरुच। भटकटैया। इनका काढ़ा भी कफ ज्वर को नाश करता है अथवा पटोल। त्रिफला। कटुकी। कचूर। खसा। गुर्च। इनके काढ़े में शहत मिला कर पीवै तौ कफ ज्वर नाश होय ॥

अथ पित्त पापड़ा क्वाथ बात ज्वर पर ॥

पित्त पापड़ा। मोथा। गुरुच। सोंठि। चिरायता इन औषधों का काढ़ा करै फिर इस पंच भद्र काढ़े के पीने से बात पित्त ज्वर दूर होय ॥

अथ छोटी भटकटैया क्वाथ बात कफ ज्वर पर ॥

भटकटैया। सोंठि। पुष्कर मूल इनके काढ़े को पीने से कफ बात ज्वर नाश होता है और सन्निपात ज्वर में पिये तौ कास स्वास अरुचि इन सबों को हरता है और सुपारी की भी पीड़ा को हरता है ॥

अथ अमल तासादि क्वाथ कफ बात ज्वर पर ॥

अमलतास। पिपरामूल। मोथा। कटुकी इनका काढ़ा बात कफ ज्वर को बेगही नाश करता है और आम और

शूल को शमन करता है और गोटा गिरावै अग्नि दीपन पाचन करै ॥

अथामृताष्टक क्वाथ ॥

गुरच । नीम । कटुकी । मोथा । इन्द्रजव । सोंठि । पटोल । रक्त चन्दन । इनका क्वाथ और पीपर का चूर्ण डारिके पीने से पित्त कफ ज्वर नाश होता है और उबकाई । अरुचि हृल्लास । दाह । तृषा । इनको भी निवारण करता है ॥

अथ भटकटैयादि क्वाथ सर्वज्वरन पर ॥

दोनोंभटकटैया । सोंठि । धनियां । देवदारु इन औषधों का काढ़ा पाचन है और सर्व ज्वरों को हरता है ॥

दश मूल क्वाथ वात कफ पर ॥

बन उर्दी । बनमूंग । दोनों भटकटैया । गोखरू । बेलकी जड़ । अग्निमंथ । सोहन पत्ता । खंभारी । पाढ़ा इन दशों मूलों का काढ़ा पीपर के चूर्ण के साथ पिये तौ बात कफ ज्वर नाश होय और सन्निपात । ज्वर । सूतिका दोष । मुख सूखना सीतल अंग । भ्रम । पसीना । खास । कास । को नाश करै और हृदय शूल पार्श्वपीर । तन्द्रा । सब मुक्त होंय ॥

अथान्य हरीत की क्वाथ सन्निपात ज्वर पर ॥

हड़ । मोथा । धनियां । रक्त चन्दन । पद्माख । रूसा । इन्द्रजव । खस । गुर्च । अमलतास । पाढ़े की जड़ । कुटकी पीपर का चूर्ण समेत इनका काढ़ा पिये तौ सन्निपात ज्वर । तृष्णा । दाह । कास । भ्रम । श्वास । तन्द्रा । आदि रोगों को नाश करै यह क्वाथ दीपन और पाचन भी करै है और बायु से मल मूत्र रोध वमन । कंठ दोष अरुचि ये उपद्रव नाश करै ॥

पुनरष्टांग दश मूल क्वाथ ॥

चिरायता । कुटकी । मोथा । धनियां । इन्द्रजव । सोंठि । दशमूल । देवदारु । गज पीपल । समेत क्वाथ पिये तौ

पसुली की पीर सन्निपात। ज्वर। कास। श्वास। बमन। हिचकी। तन्द्रा। हृदय रोग ये सब नाश होंय ॥

अथ कायफर क्वाथ कास ज्वर पर ॥

कायफर। मोथा। भारंगी। धनियां। खस। पित्तपापड़ा। हड़। काकड़ासिंगी। देवदारु। और सोंठि इनके काढ़े को पीनेसे कास ज्वर। नाश होता है और स्वास कफ और कंठ रोग ये भी दूर होंय ॥

अथ अन्य क्वाथ ॥

गुर्चका काढ़ा पीपरि युक्त पीने से जीर्ण ज्वर छूटता है और पित्तपापड़े का क्वाथ पीपर युक्त पीनेसे पित्त ज्वरनाश होता है और भटकटैया में पीपल डाल कर पियेतौ कास। श्वास। पीनस। अरुचि। गला बैठना। शूल। जीर्ण। ये सब रोग दूर होते हैं ॥

अथ सर्व शीत ज्वरों पर भटकटैया क्वाथ ॥

भटकटैया। धनिया। सोंठि। गुर्च। मोथा। पद्माष। रक्तचन्दन। चिरायता। पटोल। कूसा। मोचरस। कटुकी। इन्द्रजव। नीम। भारंगी। पित्तपापड़ा। इनका क्वाथ प्रात समय पीवै तौ सर्व शीत ज्वर नाश होय ॥

अथ विषम ज्वर पर मोथा क्वाथ ॥

मोथा। भटकटैया। गुर्च। सोंठि। आमला शहत। पीपरि। युक्त पिये तौ विषम ज्वर नास होय ॥

अथ नित्य आते ज्वर पर पटोल क्वाथ ॥

पटोल। त्रिफला। नीम। दाख। अमलतास। कूसा। इनके क्वाथ को शहत और खांड़ युक्त पीने से एकाहिक ज्वर दूरि होय ॥

अथ तृतीय ज्वर पर गुडूच्यादि क्वाथ ॥

गुर्च। धनिया। मोथा। रक्त चन्दन। खस। सोंठि इनका काढ़ा शक्कर और शहत युक्त पिवै तौ तृतीय ज्वर। प्यास। दाह ये सब उपद्रव दूरि होंय रोगी अच्छा होय ॥

अथ चतुर्थ ज्वर पर देव दारु क्वाथ ।

देवदारु । हड़ । रूसा । साल पर्णी । सोंठि । आंवरा । इन्द्रजव का काढ़ा मिश्री युक्त पीने से चतुर्थिक ज्वर जाता है और श्वास कास मन्दाग्नि आदि रोग भी दूर होते हैं ॥

अथ ज्वराती सार परगुरुच्यादि क्वाथ ।

गुर्च । धनिया । खस । सोंठि । सुगन्धवाला । पित्तपापरा बेल । अतीस । पाढ़ा । रक्त चन्दन । कुरैया । चिरायता । मोथा और इन्द्रजव इन द्रव्यों का काढ़ा ठंडा करि शहत मिश्री करिकै पीवै तौ ज्वरातीसार और रक्त पित्त नाश होय ॥

अथान्य क्वाथ ।

सोंठि । कुरैया । मोथा । गुर्च और अतीस इनके काढ़े का पीने से सर्व ज्वरातीसार नाश होय ॥

अथ धान्य पंचक क्वाथ आम शूलपर ॥

धनिया । सोंठि । बेल । मोथा और खस इनके क्वाथ से आम और शूल बेगही दूर होय यह क्वाथ ग्राही दीपन और पाचन है अथवा शहत । धनियां और सोंठ का क्वाथ भी दीपन और पाचन है और जो रेंड की जड़ युक्त करै तौ आमबात दूर होय ॥

अथ आमाती सार परकुरैया क्वाथ ।

कुरैया की मूल । अतीस । बेल । मोथा । खस इन द्रव्यों का काढ़ा पीने से अतीसार अवश्य नाश होता है ॥

अथ कुटजाष्टक क्वाथ ।

कुरैया । मूल । अतीस । पाढ़ामूल । धवफूल । लोध । मोथा । हाऊबेर । अनार इनका काढ़ा मधुऔर मोचरस युक्त पिये तौ सब अतीसार जाय यह क्वाथदाह रक्त कठिन शूल आदि को भी दूर करता है ॥

अथ अतीसार पर हाऊबेर क्वाथ ।

हाऊ बेर । धौफूल । लोध । लजालू । कुरैया । धनियां । अतीस । मोथा । गुर्च । बेल । और सोंठि इनका काढ़ा पीनेसे

बहुत काल का भी अतीसार दूर हो जाता है और अरोचक आम शूल आदि के। भी हरता है और पाचन दीपन भी है ॥

अथ बालकोंके सर्वातीसार पर क्वाथ॥

धवफूल। बेल। लोध। सुगंधबाला। गज पीपरि। इन का काढ़ा मधु युक्त देने से अथवा इसका अवलेह बना कर देने से बालकों के सर्वातीसार नाश होते हैं ॥

अथ संग्रहणी पर वन उर्दी क्वाथ ।

बन उर्दी। बरियारा। बेल। धनियां और सोंठि। इनका काढ़ा देने से पेट शूल नाभिशूल सहित बाल संग्रहणी को दूर करै॥

अथ चतुर्भद्र क्वाथ ॥

गुर्च। अतीस। सोंठि। मोथा। इनका क्वाथ असाध्यभी ग्रहणी को दूर करता है और दीपन और पाचन भी है ॥

अथ सर्वातीसार पर इन्द्र जव क्वाथ ॥

इन्द्र जव। धनियां। पटोल इनका काढ़ा खांड और शहत के साथ खाइ तौ छर्दि और अतीसार जाय अथवा आम की गुठली बेल का काढ़ा शहत और मिश्री युक्त पीने से सब अतीसार दूर होते हैं ॥

अथ कृमि पर त्रिफला क्वाथ ॥

त्रिफला। देव दारु। मोथा मूसा कानी। हंसिजन। क्वाथ पीपर। बिडंग युक्त पीने से कृमिज उपद्रव सब दूर होंय ॥

अथ कमल पर त्रिफलादि क्वाथ ॥

त्रिफला। गुर्च। कुटकी। नीम। चिरायता। बसा। इनका क्वाथ। शहतके साथ पीने से कमल और पांडुरोग नाश होते हैं ॥

अथ पांडु पर गदा पुरैना क्वाथ ॥

गदापुरैना। हड़। नीम। दारुहल्दी। कुटकी। पटोल। गुर्च। सोंठि। इनका काढ़ा पियै तौ पांडु कास

उदर रोग । श्वास । उदर शूल । सर्वांग सूजन ये सब रोग दूरि होंय ॥

अथ रक्त पित्त पर रूस क्वाथ ॥

रूसा । दाख । हड़ । इसका काढ़ा शहत अथवा मिश्री के साथ पिये तौ रक्त पित्त की दारुण पीड़ा कास श्वास ये सब रोग नाश होंय अथवा रूसे का काढ़ा शहत के साथ पिये तौ रक्त पित्त कास श्वास क्षई कफ पित्त ज्वर ये सब रोग दूरि होंय ॥

अथ कास ज्वर पर रूस क्वाथ ॥

रूसा । भटकटैया । गुर्च । इनको मधुयुक्त खाने से ज्वर कास मिटै और जो भटकटैया का काढ़ा पीपल के चूर्ण संयुक्त दे तौ खांसी जाय ॥

अथ कास श्वास पर क्षुद्रादि क्वाथ ॥

भटकटैया । कुरथी । रूसा । सोंठि । पुष्करमूल यह क्वाथ पीनेसे कास श्वास रोग दूर होते हैं ॥

अथ हिक्कापर मेवड़ी क्वाथ ॥

मेवड़ी कांजी । पीपल । भुनी हींग युक्त पीनेसे पांचौ प्रकार की हिचकी जाय ॥

अथउबकाई पर बिल्वादि क्वाथ ॥

बेलकी छाल अथवा गुर्च काढ़ा मधु युक्त पीनेसे त्रिदोष जन्य छर्दि मिटती है और जो पित्त पापड़ा और शहत युक्त पीवें तौ पित्त छर्द नाश होय ॥

अथ गृध्रसी बायुपर दशमूलक्वाथ ॥

हींग । पुष्कर मूलका चूर्ण । दशमूल क्वाथमें युक्त करि पिये तौ गृध्रसीबायु जाय और जो मेवड़ी क्वाथ में हींग वा रेंडमूल के चूर्ण युक्त पिये तौ गृध्रसी बायु तुरन्त मिटि जाय ॥

अथ बायु पर रासन पंचक क्वाथ ॥

रासन । गुर्च । देवदारु । सोंठि । रेंडमूल इनका काढ़ा

पीने से सप्त धातु गत बात सब अंग बायु दूर होंय अथवा रासन। गोखरू। रेंड। देवदारु। पुरैना। गुर्च। अमलतास। इनका काढ़ा करके सोंठि के चूर्ण के साथ पीने से जांघ कटि पसुरी और छाती की पीड़ा और भारी आमबात सब मिटैं ॥

अथ सम्पूर्ण बायु पर महा रासनादि क्वाथ ॥

दो भाग रासन और सब एक भागमें जवासा। बरियारा। रेंड। देवदारु। कचूर। बच। रूसा। सोंठि। हड़। चाब। मोथा। महापुरैना। गर्ब बिधारा। सोंफ। गोखरू। असगन्ध। अतीस। अमलतास। शतावरि। पीपल। इन्द्रजव। धनियां। और दोनों भटकटैया इनका काढ़ा सोंठि चूर्ण डाल पाक वा पीपल का चूर्ण वा योगराज गुग्गुल के साथ अथवा अजमोदादि चूर्ण के साथ अथवा रेंडीके तेल के संग दे तौ सर्वांग कंप। कूबड़। बज्रघात। बाहुक। गृध्रसी। आम। पीलपांव। अपतंत्र। अंडवृद्धि। पेटफूलना। जंघ पीर। धातु रोग। बंध्या की योनि दुष्टतादि सब दूरि होंय यह महारास्नादि क्वाथ ब्रह्माने कहा है इसमें बहुत मनुष्य सब औषधिका दूना रासन लेतेहैं सो अनुचितहै ॥

अथ छातीकी पीरपर अरंड का क्वाथ ॥

रेंड। बिजौरा की जड़। गोखरू। दोनों भटकटैया। पाषाणभेद। बेलकी लकड़ी। इन सब जड़ों का काढ़ा रेंडी का तेल। हींग। जवाखार। सेंधव युक्त पिये तौ स्तन पीड़ा कंठ और हृदय की पीड़ा मिटै ॥

अथ बात शूल पर शुंठी क्वाथ ॥

सोंठि। रेंडमूल। इन्द्रजवका काढ़ा। भूनी हींग। काला नमक युक्त पीनेसे बात शूल दूर होता है ॥

अथ पित्त शूल पर त्रिफला क्वाथ ॥

त्रिफला और अमलतास इनके काढ़ेमें शक्कर शहत युक्त कर पिये तौ रक्त पित्त दाह पित्त शूल ये सब रोग जांय ॥

अथ कफ शूल पर रंडमूल क्वाथ ॥

रंडकी जड़ २ पल लेकर १६ पल जल में काढ़ा करै फिर उसमें जवाखार डाल कर पिये तौ पार्श्व पीर हृदय पीर कफ जन्य नाश होय ॥

अथ हृदय रोग पर दश मूल क्वाथ ॥

दशमूल का काढ़ा। जवाखार। और सैंधव युक्त पीनेसे हृदय रोग बायुगोला कास श्वासादि सब रोग नाश होंय॥

अथ मूत्र कृच्छ्र पर हरीतकी क्वाथ ॥

हड़। जवासा। अमलतास। पाषाणभेद। और गोखरू इनका काढ़ा शहत युक्त पीनेसे मल मूत्र रोध दाह सहित सब रोग अच्छे होंय ॥

अथ मूत्र रोग पर अर्जुन क्वाथ ॥

आकाश बवरि। काशकी जड़। तीनों कटसरैया। दोनों कुशनरकट मूल। गोदी। शिवलिंगी। अरनी चूरण। हालवारी। पाषानभेद वा करील। गोखरू। चिर्चिरा। कमल पत्र। यह परि तरू श्रेष्ठ गण है इस क्वाथ के पीनेसे शर्करा पथरी मूत्र कृच्छ्र मूत्राघात संपूर्ण रोग नाश होंय ॥

अथ स्मरी शर्करादि पर एला क्वाथ ॥

इलायची। मुरैठी। गोखरू। भेवड़ी। बीजरंड। रूसा। पीपर। पाषाण भेद। इनका काढ़ा शिलाजीत संयुक्त पिये तौ शर्कर प्रमेह मूत्र कृच्छ्र ये रोग नाश होंय ॥

अथ मूत्र कृच्छ्र पर गोखरू क्वाथ ॥

गोखरू के पंचाङ्गका काढ़ा मिश्री सहित संयुक्त पिलावे तौ मूत्र कृच्छ्र उष्ण वायु ये रोग अच्छे होंय ॥

अथ मूत्र कृच्छ्र पर त्रिफला क्वाथ ॥

त्रिफला। दारुहल्दी। मोथा। देवदारु इनका काढ़ा शहत युक्त पिये तौ प्रमेह नाश होय पुनः तैसेही कुरैया

त्रिफला । दारुहल्दी । मोथा । ककड़ी । इनका काढ़ा शहत के साथ पीने से प्रमेह नाश होता है ॥

अथ प्रमेह पर त्रिफला क्वाथ ॥

त्रिफला । मोथा । दारुहल्दी । इन्द्रायणिकी जड़ इनका काढ़ा हल्दी के चूर्ण युक्त पियेतौ सकल प्रमेह नाश होंय ॥

अथ प्रदर पर दारुहल्दी क्वाथ ॥

दारुहल्दी । रसवत । मोथा । भिलावां । तेल । रूसा और चिरायता इन का काढ़ा ठंढा करि मधु संयुक्त पियै तौ पीत श्वेत कृष्ण लाल सहित शूल स्त्री का उदर रोग ये सब अच्छे होंय ।

अथ तन व्रणादि पर बटादिक क्वाथ ॥

बटपाकर । आंब । सवेत । सबेर । तुनि । जेठीमधु । चिरोंजी । लोध । गुलरी । पीपल । धूक । जगन्नाथीपीपरि । पलास । दोनों तंदुक । जामुनि । आम । हड़ । कदंब । अर्जुनतरु । भिलावा । कायफल । जो द्रव्य इसमें न मिले सो त्यागि देय यह न्यग्रोधादि गण क्वाथ बहुत ग्राही है जो घाव खराब होगया हो तो अच्छा होय योनि दोष । दाह । मेद । प्रमेह । बिष ये सब नाश होंय बेतस को कहीं जगन्नाथी पीपल कहते हैं ॥

अथ मेद रोगपर बेल क्वाथ ॥

बेल । अरणी । सोहनपात । खंभारी । इन सबका काढ़ा शहत के साथ पियै तौ मेद दोष मिटै अथवा त्रिफले का काढ़ा शहतके युक्त पियै तौ मेद दोष जाय अथवा उष्णजल ठंढा करि शहत के साथ पियै तौ मेद रोग जाय ॥

अथ उदर रोग पर चाव क्वाथ ॥

चाव । चीता । सोंठि । देवदारु । इनका काढ़ा निशोथ चूर्ण और गोमूत्र के साथ पियै तो उदर रोग दूरि होय ॥

अथ पेट फूलने पर गदापुरैना क्वाथ ॥

गदापुरैना । गुर्च । देवदारु । सोंठि । यह काढ़ा गोमूत्र गुग्गुल युक्त पियै से पेट की सूजन मिटती है ॥

अथ पिलही पर हरीतकी क्वाथ ॥

हड़ । अगियाखार । इनका काढ़ा जवाखार और पीपरि युक्त पीने से प्लीहा । बायगोला । यकृति अच्छी होय रोगितना करिके खैर लेना ॥

अथ शोथ पर गदा पुरैना क्वाथ ॥

गदापुरैना । दारुहल्दी । सोंठ । गुर्च । चीता । भारंगी । देवदारु । इनके क्वाथ से हाथ पांव उदर छाती मुख की सूजन ये सब जांय ॥

अथअण्ड वृद्धि सूजन पर त्रिफला क्वाथ ॥

त्रिफला के काढ़े में गोमूत्र संयुक्त करि पिये से बात कफ जन्य अण्डवृद्धि जाय ॥

अथ आंत वृद्धि पर रासन क्वाथ ॥

रासन । गुर्च । बरियारा । मुरैठी । गोखुरू । रेंड इनके काढ़े में रेंड़ी का तेल मिला कर पीने से अंत्र वृद्धि मिटै ॥

अथ गण्डमाला पर कचनार क्वाथ ॥

कचनार की छाल का काढ़ा सोंठि युक्त करि पीवै तौ गण्डमाला निस्संदेह नाश होय ॥

अथ पीलपांव पर सहोड़ा क्वाथ ॥

सहोड़े का काढ़ा गोमूत्र युक्त पिये तौ पीलपांव और मेद दोष निस्संदेह नाश होय ॥

अथ अन्तर बिद्रधि पर गदापूर्णा क्वाथ ॥

गदा पुरैना । बरुणा इनका क्वाथ पिये तौ भीतर का फोड़ा वा पिड़की अच्छी होय ॥

अथ बरुणादि गत क्वाथ ॥

बरुणपत्र । सौनसिरी वा बिजगुरी । आबेलि चिर्चिरा । चीता । दोनों अरणी । दोनों सहिजन । दोनों भटकटैया । तीनों कटसरैया । अमुर्स मेषशृंगी । चिरायता । बनकुंदुरू का मूल वा पालव । करंज । शतावरि इस बरुणादि गण

क्वाथसे मेद दोष शुद्ध होय और गुल्म । शिर:शूल । अन्तर्विद्रधि ।पीनस । ये सब दूरि होंय मेढ़ासिंहीप्रसिद्ध है ॥

अथ भगन्दर पर खदिरादि क्वाथ ॥

खैर । त्रिफला का काढ़ा । भैंस का घृत । बायबिड़ंग के चूर्ण संयुक्त पिये तौ भगन्दर निस्सन्देह अच्छा होय ॥

अथ गरमी पर पटोलादि क्वाथ ॥

खैर । त्रिफला का काढ़ा । पटोल । त्रिफला । बच । चिरायता । खैर । काहो । रासन । गुग्गुल के साथइन औषधियो का क्वाथ पिये तौ सब उपदंश दूर होंय ॥

अथ रक्तपित्तातीसार पर मोथादि प्रमथ्या ॥

मोथा । इन्द्रजौ का प्रमथ्या दो पल ठंढा कर मिश्री युक्त पिये तो रक्तातीसार नाश होय ॥

अथ यवागू बिधान माह ।

सोलह तोले द्रव्यमें उसका सोलह गुना पानी ले फिर आग पर रखने से जब आधा जल रहिजाय तब द्रव्य छानि कर फेंकि देइ जो पानी रहिजाय उसे यवागू कहते हैं इस पानी में रोगीको पथ्य देते हैं इस प्रकार जो सेष पानी रहा तिसमें पथ्य चुरवै जब रस को सोख ले तब देते हैं ॥

अथ यूष बिधि माह ॥

सोंठि का कल्क औषधि एक पल तिसमें पीपरि पांच मासे प्रस्थ भरि पानी में पचाइ तिसमें अन्न खूब गलाइ के देतौ उसे यूषक कहते हैं ॥

अथ सन्निपात पर सप्तमुष्टि यूष ।

कुरथी । यव । बेर । मूंग । मूली की पेंदी जो पत्तोंके पास होती है ये सब सूखी द्रव्य इन सब का यूष । सोंठि । धनियां युक्त पीवै तौ कफ बात नाश होय इस सप्त मुष्टिक यूष से सन्निपातज्वर जाय आमबात जाय कंठ हृदय और मुख ये शुद्ध रहैं ॥

अथ पानादि कल्पना ॥

कूटो द्रव्य पल भर चौंसठ पल पानी में औटै जब आधा रहि जाय उस पानी को मक्त कहते हैं इसे भोजन समय दे वा थोड़ा थोड़ा करि देइ ॥

अथ ज्वर तृषा पर उशीरादि पान ॥

खस पित्तपापड़ा । सुगन्धवाला । मोथा । सोंठि । रक्तचन्दन इन्हें पकाइ पानी ठंढा करि देय तौ प्यास ज्वर नाश होय ॥

अथ उष्णोदक ॥

राति को उष्णोदक पीनेसे कफ । आमवात । मेदा । बस्ती शोधन । दीपन । श्वास । कास । ज्वर ये रोग जाते हैं ॥

अथ क्षीर पाक विधि ॥

द्रव्य का अठगुना दूध और दूध का चौगुणा पानी एकत्र कर औटावै जब पानी जल जाय तब दूध पिये तौ आमशूल दूर होय ॥

अथ अन्न प्रकार ॥

अन्न को यवागूसे छगुणा जल देकर पकावै उसे कृश और घना कहते हैं चावल । मूंग । माष । तिल । इनका यवागू यह ग्रहणी को बल देताहै तृप्त करै वायु नाश करै और पल भर अन्न में चौगुना अन्न पकावै उसे बिलेपी कहते हैं यह अन्न तृप्त करता है मन प्रसन्न करता है प्रिय हैं मधुर है औ पित्त नाशक है ॥ अथ पय अन्न को चौदह गुने पानी में सिद्ध करै पतला मट्ठा नहो जो पिया जाय उसे पय कहते हैं उस्से कुछही गाढ़े को यूश कहतेहैं यह यूश हलकाहै ग्रहणीको शुद्धकरताहै धातुपुष्ट करताहै बल करताहै कंठशुद्ध करताहै लघुपाकहै और कफ हारकहै ॥

अथ भात बिधि ॥

चावल से चौदह गुना पानी लेकर उस पानी में चावलों को पकावै उसका माड़ निकाले सो मीठा है हलका है

उसेउभक्त मंड कहते हैं उसीमें सोंठ सेंधव डारिके पिये तौ यह शुद्ध मंड दीपन पाचन करै और अष्ट गुण मांड धनियां। त्रिकुटा सेंधव मट्ठा। तेल की भुनी हींग तक्र युत माड़का अष्ट गुण माड़ नाम है प्राणदाता है बस्तिशोधन रक्तबर्धन ज्वरघ्न सब दोष हरण॥

अथ यव मंड॥

यवको कूटि भूनिकर चुरवै उसको वाद्य मंड कहते हैं यह कफ पित्त हरता है कण्ठको शुद्ध करता है और रक्त पित्त को नाश करता है॥

अथ लाज मंड॥

धान का लावा। कूटी द्रव्य वा भूजाधान का बनावै इसको लाजा मंड कहते हैं यह कफ और पित्तको हरता है ग्राही है और तृष्णा और ज्वरको नाशकरता है॥

अथ अजीर्णमें उत्पन्न हुये ज्वर पर काथ॥

पीपर। पीपरामूल। सोंठि। अजवाइनि। बायबिड़ंग। देवदारु और दोनों कटाई इनका काढ़ा देनेसे अजीर्ण ज्वर दूर होय अथवा पीपर। पीपरा मूल। सोंठि। मिरच। छोटी हड़। लौंग। धनियां। अमलतास और देवदारु इन द्रव्यों का अष्टावशेष काढ़ादे तौ ज्वर जाय अथवा सोंचर नोन और बकाइन का काढ़ा दे तौ ज्वर जाय अथवा पीपर। पीपरामूल। गिलोय। सोंठि इन को बराबर ले इनका क्वाथ करि दे तौ ज्वर जाय अथवा पीपर। पीपरामूल। सोंठि। अजवाइन। बायबिड़ंग। देवदारु। चव्य। दोनों कटाई। इन सबको बराबर ले क्वाथ करि दे तौ ज्वर दूर होय॥

अथ सन्निपात पर काढ़ा।

भारंगी। मिरच। सोंठि। कूट। अकरकरा। अतीस। बच कलोंजी। अंतःमनि। चिरायता। अजमोद। अजवाइन। पीपला मूल। काकड़ाशृंगी। दवागूमी। बायबिड़ंग।

दोनौं कटाई। चाब चित्रक। पाढ़ा। शालिपर्णी। पृष्टिपर्णी। आक की जड़ ये सब औषधि दोदो टंक ले फिर उसके तीन भाग करै और एक भाग को अष्टा वशेष क्वाथ करि दे तौ १३ सन्निपात दूरि होंय॥

अथ सन्निपात पर कायफलादि क्वाथ॥

कायफल।नागरमोथा। बच।पाढ़ा। पोहकरमूल। पित्तपापड़ा। देवदारु। हड़ का काढ़ा। ककरा सृंगी। पीपरि। चित्रक। सोंठि। भारंगी। इन्द्रजव। कुटकी। कचूर। धनियां। रोहिष। बेल। खम्भारी। बहेड़ा। दोनों कटाई। गोखरू। शालिपर्णी। पृष्टिपर्णी ये सब औषधि दो दो टंक ले तीन भाग करै एक भाग का अष्टावशेष क्वाथ दे तौ सन्निपात। कर्ण मूल। हिचकी और पित्त ये सब दूरि होंय॥

अथ बात रक्त पर गुरूच्यादि क्वाथ॥

गुरच। रेंड की मूल। रूसा इनका क्वाथ रेंडके तेलके साथ पिये तौ सर्वांग प्रवर्ती बात रक्त निश्चय करिके दूर होय अथवा परवर। त्रिफला। कुटकी।गुरच। शतावरि इन का काढ़ा पिये तौ बात रक्त दाह युक्त आराम होय॥

अथ स्वेत दाग जाने का काढ़ा॥

आंवला। खैरसार इन दोनों का काढ़ा बकुची चूर्ण युक्त थोड़े दिनों के भये कुष्ट पर अभ्यास करि पिये और पथ्य यथावत् करै तौ स्वेत दाग निस्संदेह मिटि जाय॥

अथ बात रक्त कुष्ट पर लघु मंजिष्ठादि क्वाय।

मंजीठ। त्रिफला। कटुकी। बच। दारुहल्दी। गुर्च। निंब इनका क्वाथ पिये तौ बात। रक्त। कंडू। गलित कुष्ट। रक्त। मंडल ये दूर होंय॥

अथ सर्व कुष्ट वृद्धि पर मंजोष्ठादि क्वाथ॥

मंजीठ। मोथा। कुरैया। गुर्च इनको कूट कर सोंठि। भारंगी। भटकटैया। बच। नीम। दोनोंहल्दी। त्रिफला। परवर। कटुकी। मूरवा। वायविडंग। रासन। सीता।

सतावरि । त्रायमाण । पीपरि । इन्द्रयव । रूसा । भंगरा । देवदारु । पाढ़ । खदिरसार । रक्तचन्दन । निशोथ । वरुण । चिरायता । बकुची । अमलतास । सहोरा । बकायन । करंज । अतीस । खस । इन्द्रारुन जवासा । सारिवा । पित्तपापड़ा ये सब द्रव्य समान ले कर काढ़ा करि पीपल । गुग्गुल मिश्रित करि पिये तौ अठारहों कोढ़ और वात रक्त पीड़ा उपदंश पीलपांव । शून्यवायु । पक्षाघात । मेदादोष । नेत्ररोग यह वृद्ध मंजिष्ठादि क्वाथ इन रोगोंको निस्संदेह नाश करता है ॥

अथ शिरोशूल नेत्र पर हरीतकी क्वाथ ॥

हड़ । बहेड़ा । आंवला । भूनिंब । अर्थात् चिरायता । हर्दी । निंब । आंवा हल्दी । गुर्च इस काढ़े में गुड़ मिश्रित करि पियेतौ शिरोशूल । भौंह । कान । आधाशीसी । सूर्यावर्त्त । लेवाड़ी । दंतपात । रोगदंत । रतोंधा । पटल । फूली । नेत्ररोग । नेत्रपीड़ा ये सब दूर होंय ।

अथ नेत्र रोग पर अरुसादि क्वाथ ॥

रूसा । सोंठि । गुर्च । हल्दी । रक्तचन्दन । चीता । चिरायता । नीम । कटुकी । परवर । त्रिफला । नागरमोथा । जव इन्द्र,यव । कुरैया इनके क्वाथसे सर्व नेत्र रोग नाश होंय स्वर भंग से कंठ खुजलाना पीनस । श्वास । कलेजे का घाव जाता रहै अथवा गुर्च । त्रिफला का काढ़ा शहत पीपर संयुक्त ठंढाकरि पीने से सर्व नेत्र रोग विनाश होंय ॥

अथ तचक पर पिप्पलादि क्वाथ ।

पीपर । गूलर । पकरिया । बेड । बेंतस इनका काढ़ा करि घाव धोवै तौ उपदंश अर्थात् गरमी और घाव सूजन सब अच्छे होंय अथवा औषधि पीस कै गोली बनावै तब अठगुना पानी में डारि काढ़ा करै जब चौथाई पानी रहै तब उतारि ले उसे प्रमथ्या कहते हैं इसके पानीकी मात्रा दो पल है ॥

अथ सन्निपात पर अन्य काढ़ा ॥

भारंगी । सोंठि । मिरच । अजमोद । अजवाइन । हींग । पीपलामूल । काकड़ाशृंगी । दूव । मूगा । वायबिड़ंग । दोनों कटाई । चाब । चीतेकीछाल । पाढ़ा । शालिपर्णी । पृष्टिपर्णी । मदार कीजड़ ये सब औषधि बराबरिले तीनभाग करि एक भाग को अष्टावशेष काढ़ा करिदे तौ सन्निपात दूरिहोय ॥

अथ सन्निपात पर चित्रकादि काथ ॥

चित्रक । पीपरामूल । पीपरि । बच । चाब । सोंठि । अतीस । जीरा । पाढ़ । सरसों । मिरच । कायफल । पुष्करमूल । वायबिड़ंग । दोनोंकटाई । जवासा । अजवाइन । अजमोद । गजपीपरि । मदारकीजड़ । बकाइनकीजड़ । हींग ये सब औषधि ढाई २ टंक ले तीन भाग करै एक भाग का अष्टावशेष काथ करिदे तौ शीतज्वर दूर होय और तेरहों प्रकार के सन्निपात जांय ॥

अथ अतीसार पर काढ़ा ॥

धनियां । सोंठि । नागरमोथा । बेलगिरी । मूजकीजड़ ये सब औषधि पैसा २ भरिले तीन भाग करि एक भाग को अष्टावशेष काथ दे तौ अतीसार दूर होय अथवा सोंठि । अजवाइन । अतीस । हींग । नागरमोथा । बेलगिरी और गिलोय ये सब बराबरिले काथ करिदे तौ अतीसार जाय ॥

अथ प्रसूत पर काढ़ा ॥

पीपरि । देवदारु । मोथा । अगर । पीपरामूल । कलौंजी । वायबिड़ंग ये सब दो दो टंक ले काढ़ा करिदे तौ प्रसूति रोग अच्छा होय अथवा देवदारु । बच । कूट । लौंग । पीपरि । सोंठि । कायफल । मोथा । चीतेकी छाल । मूजकी जड़ । कुटकी । धनियां । हड़ । गजपीपरि । जवासा । अतीस । कलौंजी । गोखरू । ये सब औषधी पैसा २ भरि ले तीन भाग करि एक भाग को काढ़ा करि २ रत्ती हींग और २ रत्ती सेंधा नमक डारि कर दे तौ प्रसूति जाय ॥

अथ श्वेत कुष्ट पर काढ़ा ॥

आंब की जड़ २१ पैसा भरि कोंचकी जड़ २१ पैसा भरि बेर की छाल २१ पैसा भरि मंजीठ २१ पैसा भरि ये सब बरा बरि ले १ पैसा भरि का काढ़ा २१ दिन पीवै और देह में बायु न लगने पावै तौ श्वेत कुष्ट दूर होय ॥

अथ ज्वर का क्वाथ ॥

पहले दिनके ज्वरको सात दिन लंघन करायके देवदारु। धनियां। छोटी बड़ी भटकटैया और सोंठ ये सब दो तोला लेकर सोलहगुणे जलमें क्वाथ करै पीछे जब चौथाई रहि जाय तब मन्दोष्ण होने पर पान कराय दे तौ तीन अथवा पांच दिन में ज्वर नष्ट हो जाय ॥

अथ क्रमेण वात पित्त कफ ज्वरेषु क्वाथ ॥

वातके तापमें गिलोय। सोंठि। मोथा। और धमासा जिसे जवासा भी कहते हैं इन चारों का क्वाथ पीवै और पित्तके ताप में चिरायता कुटकी मोथा पित्त पापड़ा और जवासा इन पांचोंका क्वाथ पीवै और कफके ज्वरमें सोंठि। अडूसा नागरमोथा और जवासा इनपांचोंका क्वाथ पीवै और गिलोय। सोंठि। और पीपरामूल। इन तीनों का क्वाथ वात ज्वरको नष्ट करता है॥ और गिलोय। पित्तपापड़ा। मोथा। चिरायता। और इनका काढ़ा पीनेसे वात पित्त का ज्वर नष्ट होय ॥

अथ अन्य क्वाथ ॥

दाख। पित्तपापड़ा। स्योनाक जिसे इतर जन अमलतास कहते हैं कुटकी। मोथा। हड़ इन। द्रव्योंका काढ़ा मूर्च्छा राज यक्ष्मा। पसीना। प्यास। घबड़ावना और भ्रांति इन संयुक्त जो पित्तज्वर इनको नाशकरै और जवासा। कगुनी। चिरायता। कुटकी। अडूसा। पित्तपापड़ा इन छओं का क्वाथ तृष्णा शरीर में दाह असृ पित्त रोग और पित्तका ज्वर इनको नष्ट करै अथवा गिलोय। आंवरा। और पित्त-

पापड़ा इनका काढ़ा पीने से पित्तज्वर अवश्य नष्ट होय ॥

अथ अन्य क्वाथ ॥

रक्त चन्दन। पद्माक की त्वचा। धनियां। गिलोय। और नीम। इनका क्वाथ पीने से पित्त और कफ से जन्मा जो ज्वर और प्यास वो वमन वो मन्दाग्नि ये सब नष्ट होंय ॥

अथान्य क्वाथ ॥

दाह के साथ ऐसे ज्वर में प्यास होय तौ सुगन्ध वाला। वीरण मूल्य अर्थात् खस। मोथा। पित्तपापड़ा। सोंठि। और रक्त चन्दन। इनका क्वाथ करै जब शीतल हो जाय तब उसै पिला दे तो ज्वर की तृष्णा नष्ट होय ॥

अथ ज्वर में मुख का कडूपन जाने का क्वाथ ॥

कुटकी का क्वाथ करके जिसको बुखार आता हो दे तौ पित्त ज्वर से हुआ जो कडुआ मुख सो जाय ॥

अथ मुख रोग और खांसीपर क्वाथ ॥

कायफल का तृण अर्थात् राम कपूर। मोथा। धनिया। काकड़ाशृंगी। बच। हड़। जिसमें पांच रेखा हों भारंगी। पित्त पापड़ा। सोंठि। देवदारु। इन ग्यारह औषधिन का क्वाथ कर के छान ले पीछे उसमें चारि माशे हींग भून कर उसे पीसि लै और दो तोले सहत इन दोनों को क्वाथ में गेरके जो पीले तौ खांसी श्वास रोग मुख के रोग और ज्वर का वेग तथा कफ की वृद्धि और कंठ की पीड़ा ये सब उस की नष्ट हो जांय ॥

बुद्धि भ्रंश पसीना शीत और अनर्थ बोलने पर क्वाथ ॥

पीपलामूल। इन्द्रयव। सेंऊड़। अथवा देवदारु। गूगल। पीपरि बायबिड़ंग। भारंगी। दालचीनी। सोंठि। मिरच। चीता। कायफर। पोहकरमूल। रासन। जैतकेबीज। हड़। दोनों कटहरी। अजवाइन। जटामासी। चिरायता। घुड़बच। चाव। और पाढ़ा। इन बीस द्रव्यों का काढ़ा पीने से सकल सन्निपात। बुद्धिभ्रंश। पसीना। शीत का लगना

अनर्थ का बोलना । शूल । अधोवायु । रुकने से पीड़ाकेसाथ पेटफूलना । हृदयकाविस्फोटक । कफयुक्त वायु । और प्रसूति वायु के सब रोग नष्ट होंय ॥

अथ प्रसूता वातव्याधि हरण क्वाथ ॥

अर्कमूल । जवासा । चिरायता । देवदारु । रासन । जैत के बीज । संभालू । घुड़ बच । अरणी । सहजना । पीपलामूल । पीपल । बच । चीता । सोंठ । अतीस । भंगरा । इन सोलह औषधों का क्वाथ दुःसह सन्निपात के ज्वरों को धनुर्वायु को दातों के बंध को शीत के असह्यो ऐसे शरीर के कांपने को कास और श्वास को और प्रसूता स्त्री के वात व्याधिको हरण करै ॥

अथ सकल सन्निपाता पह क्वाथ ॥

कुटकी । चिरायता । पित्त पापड़ा । गिलोय । कचूर । रासन । जैत के बीज । पीपर । पुष्कर मूल । त्रायती अर्थात् बला वा बकुला । भटकटैया । देवदारु । सोंठि । हड़ । जवासा । और भारंगी इन पन्द्रह औषधों के क्वाथ के पीने से सारे सन्निपात दिनकी नीद रात्रिका जागना प्यास मुख का सूखना तथा देहका दाह खांसी और सब प्रकार के श्वास के रोग ये नष्ट होंय ।

अथ हुचकी प्यास वमन और जलन पर क्वाथ ॥

रक्त । चन्दन । खस दोनों । कुटज की छाल । पाढ़ा । जिसे पर्वती । पयंडू कहै हैं कमल । धनियां । गिलोय । चिरायत । मोथा । सुगंधबाला । बेलगिरी । अतीस । और सोंठ इनका क्वाथ पीने से हुचकी । प्यास । वमन । जलन । अन्न में अरुचि और सब भांति के अतीसार ये रोगजांय ॥

अथ पंच मूलादि क्वाथ माह ॥

लघु पंच मूली । पाढ़ा मोथा बारियाला । इन्द्रजौ । कुटज कीछाल । खस । कटुकी । गिलोय । सोंठि । बेलगिरी । इन

पन्द्रह औषधियों का काढ़ा बमन। खांसी। श्वास। और शूल। इनके साथ ज्वरातीसार को दूर करै॥

अथ शोकातीसार क्वाथः॥

देवदारु। अतीस। पाढ़ा। विड़ंग। मोथा। मिरच और कुटज की छाल इनका क्वाथ पीने से शोक से भया जो अतीसार वह चलाजाय अथवा सुगंध वाला बेलगिरी। मोथा। धनियां और सोंठ इन पांचो का क्वाथभी अतीसार। को दूर करता है अथवा धनियां। सुगन्ध वाला। बेलगिरी और मोथा इन पांचो का क्वाथ करके शीतल होय तब पीवै तौ अतीसार रोग नष्ट होय॥

अथ श्वास हरण क्वाथ॥

बांसा। हल्दी। पीपरि। गिलोय। भारंगी। रुद्रजटा। सोंठ। कटहली की जड़ इन आठों का काढ़ा करै उसमें पीसी हुई मिरच डाल कर पीवै तौ श्वास का रोग शान्त होय अथवा सोंठ का काढ़ा भी पीने से श्वास रोग शांत होता है॥

अथ कास हरण क्वाथ॥

पीपल का चूर्ण मिलाय करि कटहली की जड़ के बक्कल का काढ़ा पीने से कास। का रोग शीघ्र ही दूर होता है अथवा सोंठि और भारंगी का काढ़ा पीवै तौ कास और श्वास दोनों रोग दूर होंय॥

अथ बाल तीसारेषु क्वाथ॥

धवई के फूल। लोध। बेलगिरी। मोथा। मजीठ और सुगन्धवाला इन पांचों का क्वाथ। वा चटनी। पिलाने अथवा चटाने से बालक के अतीसार को दूर करै है॥

अथ फांटमाह॥

कुटी हुई द्रव्य पल भर एक कुड़व पानी मिट्टी के पात्र में अच्छी तरह तप्त करि उतारि ले फिर उस कुटी हुई द्रव्य का उष्णोदक में डारि ढक दे जब ठंढा होय तब

छानि लेइ उसे फांट कहतेहैं इस फांटकी मात्रा आठ रुपये भरि है और मिश्री शहत पुराना गुड़ इसमें उसी प्रकार से पड़ता है जिस प्रकार से काढ़े में डालना कहा है ॥

अथ पित्त ज्वर पर धूक फांट ॥

महुआ। मुरैठी। फालसा। चन्दन। कमलनील। लोध। नागकेसरि। त्रिफला। सारिवन। दाख। लावा तप्त बारि में डाल मिश्री शहत संयुक्त पिलावै इस फांट वा हेमसे बात पित्त। ज्वर। दाह। प्यास। मूर्छा। मति भ्रम। रक्त पित्त। मद ये सब दूर होंय इस कार्य में कुछ बिचार नहीं ॥

अथ प्यास पर आमादि फांट ॥

आम। जामनकी कोपल। बट। डिंगसा। और जटाखस इनका फांट करि पिये तौ ज्वर। प्यास। छर्दि। अतीसार। मूर्छा ये सब रोग निस्संदेह दूर होंय ॥

अथ पित्त तृषा पर मधूक फांट ॥

महुआ। चन्दन। खंभारी। खस। धनियां। सुगन्धबाला। बदाख। इनका फांट शक्कर मिला कर पिये तौ तृष्णा। दाह। मूर्छा। भ्रम ये सब जांय ॥

अथ मंथ फांट भेद माह ॥

द्रव्य का चौगुना जल मिट्टी के पात्र में डारि के मथै उस पानी को छानि दो पल पिये और खजूर। अनार दाख। तितड़ी। अमिली। आंवला। फालसे इनका मंथ सकल मद नाशक है ॥

अथ उबकाई पर मसूर आदि मंथ ॥

मसूरि का। सत्तू शहत दाडिमरस इनका मंथ पिलावै तौ सन्निपात जनित छर्दि जाय ॥

अथ तृष्णा पर यवमंथ ॥

यवका सत्तू ठंढे पानीमें मथे बहुत गाढ़ा न हो पिये तो तृष्णा दाह रक्त पित्त इन सबको यह दूर करता है ॥

अथ हेम माह ॥

कुटी हुई द्रव्य पल भर छः पल जलमें सांझको भिगोय राखै प्रात समय निचोड़ करि छान ले इसको हेम कहते हैं और कोई २ शीतकषय भी कहते हैं इसकी मात्रा भी फाण्ट की तरह दो पल है यह सर्वत्र निश्चय जानो ॥

अथ रक्त पित्त पर आम्रादि हेम ॥

आम । जंबू । अर्जुन । इनको कूट करि पानी में भिजोवै फिर उसका हेम प्रात समय शहत मिलाय करि पीवै तौ रक्त पित्त जाय ॥

अथ तृष्णा पर मरीच्यादि हेम ॥

मिरच । मुरैठी । कठगूलर की कोंपल । नील कमल इनका हेम करि पीने से तृष्णा छर्दि आदि रोग नाश होते हैं ॥

अथ पित्त पर नील कमलादि हेम ॥

नील कमल । बरियारा । दाख । महुआ । मुरैठी । खस । पद्माक । खंभारी फल । फालसा यह शीतकषाय के पीने से हेम वात पित्त ज्वर प्रलाप भ्रम छर्दि मोह तन्द्रा येसब रोग दूरि होंय ॥

अथ जीर्णज्वर पर गुडूच्यादि हेम ॥

गुर्च का हेम पीने से जीर्णज्वर नाश होता है और बासा अर्थात् रूसा के हेम को पान करने से पित्तज्वर दूरि होता है और कास रक्त नाश होता है और धनियां का हेम शक्कर डालि पीने से अंतरदाह तृष्णा मूर्छा शोथ ये सब रोग नाश होते हैं ॥

अथ रक्त पित्त पर धनियां हेम ॥

धनियां । आंवला । रूसा । दाख । पित्तपापड़ा इसके हेम से रक्त पित्त ज्वर दाह तृषा कंठशोष ये सब रोग निस्सुन्देह नाश होंय ॥

अथ कल्क माह ॥

सूखी द्रव्य को जलमें पीसै ओटी निर्जल तिसे कल्क और

प्रक्षेप कहते हैं इसकी मात्रा दशमासे है कल्क में मधु। घृत। तेल। मात्रा से दूना देना मिश्री। गुड़। समान मात्रा के प्रति ओटी पतली चौगुणी॥

अथ पांडु पर वर्द्धमान पीपल॥

पीपरि तीन वा पांच वा सात बढ़ावै और जौ पीपरि से आरंभ करै तै प्रति दिन बढ़ावै फिर दश दिनतक उतनी प्रति दिन घटावे इस प्रकार से बीसवें दिन प्रथम दिन की मात्रा पूरी करै यों बर्द्धमान पीपल सिद्ध करने से पाण्डु वात कास स्वास अरुचि उदर विकार चई कफ बात छाती जकड़ना ये सब दूरि होंय और जो पानी वा दूध के साथ पिया चाहै तो तीनदिन तक दो अथवा तीन तोले दूध लैना फिर कल्क से चौगुणा ले॥

अथ घावपर निम्ब कल्क॥

नीमपत्र की लुगदी घावपर लगावै उस्से घाव साफ हो पूरता है जहां लुगदी लग सकै और जहां लुगदी न लगसकै उसे घाव नहीं कहते वह नासूर है और उसकी विधि दूसरी है और खाने से छर्दि स्वन कुष्ट पित्त क्रम क्रम से अच्छा हो॥

अथ गृध्रसी पर बकाय टून कल्क॥

बकायन की जड़की छाल का कल्क गृध्रसी वायु को दूर करता है और एक लहसन की पिट्ठी करि उसमें तिलका तेल मिश्रित करि खाय तौ तीव्र वात विषमज्वर नाश होय॥

अथ वात रोग पर दूसरा कल्क॥

पक्के लहसुन के जवा छीलकर भीतर के अंकुर निकाल तक्र में डारि रात्रिभर राखे तो उसकी कुगंधजाय फिर तक्र से निकाल पीसकर पंचमांस इस चूर्ण को जो आगे कहते हैं सो डाले वह चूर्ण यह है काला नमक। अजवायन। भूनी हींग। सेंधव। त्रिकुट। जीरा इन सब को बराबर

कूट ले यह चूर्ण और लहसुन की लुगदी मिलाय करि दश मासे खाय तौ अग्नि प्रबल होय रोगी की शक्ति बिचारि ऋतु अनुसार मात्रादे अनोपान रण्डकी जड़ की छाल का काढ़ा सर्बांग वा एकान्त बात मृगी उन्माद गठिया गृध्रसी छाती पीठ कटि हांवं पसुरी कोखपीड़ा और क्रमि दोष नाश होय और रोगी को उचित है कि लघु भोजन घाम त्याग अक्रोध जल थोड़ा पिये दूध और गुड़का त्याग करै और इस औषधि का भोगी पथ्य शराब। मांस। और खटाई खाय॥

अथ ऊरुस्तंभ पर पीपलादि कल्क॥

पीपर। पीपरामूल। भिलावे की लुगदी शहद से युक्त दे तौ गठिया निस्सन्देह दूर होय॥

अथ परिणाम शूल पर विष्णुकान्ता कल्क॥

विष्णु क्रांता की जड़ का कल्क मिश्री सहत और घी युक्त सात दिन पिये तौ परिणाम शूल जाय पुनः सोंठि। गुड़। तिल। दूध में पीसे इस कल्क से परिणाम शूल मिटै और आम बात जाय॥

अथ रक्तार्श पर चिर्चिरादि कल्क॥

चिर्चिरा का चावल। चावल के धोवन में पीस कर पिये से रक्तार्श दूर होय॥

अथ रक्तातीसार पर वेर कल्क॥

वेर मूल की छाल। तिलका कल्क। शहत और दूध में पिये से रक्ता तीसार निश्चय नाश होय॥

अथ रक्त छर्द पर लाही कल्क॥

एक कर्षलाही। पेठा के रसमें पीस कर पिये से रक्त छर्द छाती क्षत क्षय निस्सन्देह जाय॥

अथ रक्त प्रदर पर चौराई कल्क॥

चौराई की जड़ चावल के धोवन में पीस कर शहत और रसौत के साथ पिये तौ रक्त प्रदर दूर होय॥

अथ अतीसार पर अङ्कोल कल्क ॥

अंकोल की मूल की छाल को चावल के धोवन में पीस कर सहत डारि कर पिये तो अतीसार और विष ये दूर होंय ॥

अथ बिषपर खिखसा कल्क ॥

खिखसा वा सिरस मूल वा बेर मूल का कल्क घीके साथ खाने से बिष नाश होय ॥

अथ दीपन पाचन पर हरीतकी कल्क ॥

हड़ । सोंठि । सेधव । पीपल का कल्क तीनों दोषों को निस्सन्देह हरता है पुनः हड़ । सोंठ । सैंधवका कल्क दीपन और पाचन है ॥

अथ क्रमि पर निशोथ कल्क ॥

निशोथ । पलास बांदा । खुरासानी अजवाइन । कबीला । बाय बिडंग इन सबको समान ले मट्ठे के साथ खाने से क्रमि रोग बहुत शीघ्र दूर होंय और नैनू मिश्री । नागकेसर के कल्क से रक्तार्शनाश होता है और मसूड़ का कढ़ा हुआ यूष बेलफल इनका कल्क उस यूष के साथ पीने से सङ्ग्रहणी नाश होय और भटकटैया फल का कल्क मट्ठे के साथ पीने से संग्रहणी नाश होती है ॥

इति श्री मन्महा राजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप
सिंह जी विरचिते अमृतसागर नाम ग्रन्थे स्वरसादि भेदेन
अनुभूत क्वाथकल्पना नाम एकोनत्रिंशतिमस्तरङ्गः ३० ॥

अथ नव दुर्गा चूर्ण ॥

अनारदाना ऽ। जीरा स्याह १५ मासे जीरा सफेद ३० मासे सोंठि १५ मासे तंतरीक १५ मासे हड़का बकला १५ मासे छोटी हड़ १५ मासे निसोत १५ मासे लाहौरी नोन ३ मासे इन सब औषधियों को कूट पीस कपड़छान करि चूर्ण बनावै फिर नित्य भोजन के पश्चात् तीन मासे खाय तो मन्दाग्नि जाय और भूख बढ़ै ॥

अथ दूसरा चूर्ण ॥

पोस्त । हड़ । सौंफ । सोंठ । इन सबों को बराबर ले फिर सौंफ और हड़ को घृत में खाली भून ले और फिर उन दोनों को भी मिलाय दो पैसा भरि मिश्री मिलावै फिर दो पैसा भरि नित्य पांच दिन तक ठंढे पानी से खावै तौ आंव लोहू और मरोड़ा सब दूर होंय ॥

अथ तीसरा चूर्ण ॥

हड़ । आंवले । चीता । पीपल । सेंधानोन इन पांचों औषधियों को बराबर ले फिर कूट पीस चूर्ण बनावै फंकी गरम पानीसे करै तौ सब उदर बिकारों को दूर करै और पाचन करै भूख बढ़ावै ॥

अथ बाई का चूर्ण ॥

सोंठि । पीपल । सनाह । हड़ । बहेड़ा । आंवला । चीता । सेंधा नमक । सांभर नमक । खारी नमक । काली मिर्च । निसोत । पोदीना । सौंफ । अनार दाना । हींग १ मासे । अजवाइन । अजमोद । मेथी । तेलियासुहागा । सिवाय हींगके और सब दवाइयां छः मासे ले फिर सबको कूट पीस नीबू और अदरक के रस में गोली बनावै फिर एक तथा दो नित्य खायतौ बाय के सब बिकारों को दूर करै ॥

अथ दूसरा चूर्ण ॥

सोंठि २ मासे सुहागातेलिया २ मासे पीपल २ मासे काली मिरच २ मासे हड़ ६ मासे पांचोनोन ५ तोला अजवाइन ६ मासे इन सब औषधियों को ले फिर कूट पीस सहजने के रसमें गोली से बांधै फिर एक तथा दो नित्यखाय तौ चौंसठ बाय दूरि करै ॥

अथ अग्नि दीपक चूर्ण ॥

पारा १ टंक सुहागा २ टंक गंधक १ टंक मीठातेलिया ३ टंक संख ४ टंक कौड़ी जर्द जली हुई ४ टंक सोंठि १ टंक काली मिर्च १ टंक नीबू के रसमें सात पुट

दे कर मूंग बराबर गोली बांधे फिर नित्य खावै तौ अजीर्ण मंदाग्नि को दूर करे क्षुधाको बढ़ावै और अर्द्धाङ्ग शूल विशूचिका इन सब रोगों को दूर करै ॥

अथ नागरादि चूर्ण ॥

सोंठि। मोथा। अजवाइन। जावित्री। तज। पत्रज। श्वेतजीरा। कालाजीरा। पीपल। कालीमिर्च। जायफल। आंवला चीता। लौंग। इन सब औषधियों को बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै नित्य खाय तौ अनेक गुण करै॥

अथ अमृत चूर्ण ॥

हड़। बहेड़ा। आंवला। सोंठि। कालीमिर्च। पीपल। लौंग। जावित्री। बायबिड़ंग। जायफल। सफेदजीरा। धनियां। अजवायन। अनारदाना। पांचोंनौन। इन सब औषधियोंको बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिरि नित्य खायतौ बहुत गुण करै॥

अथ ज्वरका चूर्ण ॥

आंवले। चीता। हड़। पीपल। और सेंधा नमक इन सबको बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै गरमपानीसे फंकी करै तौ सब ज्वरों को दूर करै ॥

अथ आमवात और शूल का चूर्ण ।

सोंठ। हड़। बायविड़ंग। सेंधानमक। पीपल इन सब को कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर टंक प्रमाण खाय तौ तीन दिन में आम बात। जाय॥

अथ हिंग्वाष्टक चूर्ण ॥

अजमोद २ तोले जीरा २ तोले सोंठि २ तोले कालीमिर्च २ तोले पीपल २ तोले सेंधानौन १ तोले सांभर नमक १ तोला इन सब औषधियों को कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर भोजन के ग्रास में घृत और चांवल के साथ खाय तौ शूल अर्द्धाङ्ग और अजीर्ण सब रोगों को दूर करै और भूंख बहुत लगावै॥

अथ वायु का चूर्ण ।

सोंठि । मिरच । पीपल । हड़ । सहजने के बीज । लौंग । इन सब औषधियों को एकत्र करै सहजने के रसमें गोली बेर प्रमाण बांधे फिर नित्य खाय तौ चौसठ वायु और बहत्तर शूलों को दूर करै ॥

अथ वायु का दूसरा चूर्ण ॥

पीपल । सौंफ । लौंग । खोटक सज्जी । सोंठि । सेंधानोन इन सब औषधियों को तोले तोले भर लेकर कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर नित्य खाय तौ बाय को दूर करै ॥

अथ बाय का तीसरा चूर्ण ॥

लौंग । इलायची । तज । पत्रज । तगर । कंकोल । काला अगर । नागकेसरि । जायफल । सोंठ । जावित्री । सफेद जीरा । स्याह जीरा । सौंफ । पीपल । मिरच । पोहकरमूल । नरकचूर । हड़ । बहेड़ा । आंवला । चीता । तालीस । देवदारु । धनियां । अजवायन । मुरैठी । बंशलोचन । अजमोद काकड़ाशृंगी । पीपलामूल । भूनी हींग । मोथा । अतीस । सतावर । इन सब औषधियों को तोला तोला भर लेकर पीस छान चूर्ण बनावै उसमें बराबर की मिश्री मिलावै फिर प्रात समय नित्य खाय तौ बाय को दूर करै और भी अनेक गुण करै है ॥

अथ सुदर्शन चूर्ण ॥

हड़ । बहेड़ा । आंवला । सोंठ । काली मिरच । पीपल । हल्दी । दारुहल्दी । गिलोय । कूट । मोथा । जवासा । काकड़ाशृंगी । कटहरीकी जड़ । पीपलामूल । कचूर । बच । पोहकरमूल । मुलहटी कुढ़ेकीछाल । सौंफ कमलगट्टा । इन्द्रजव । देवदारु । मंजीठ । पद्माक । खस । तज । मोखुरू । सालिम । मिश्री । अजवायन । अतीस । बेलगिरी । पत्रज चीता । इन सब औषधियों को तोलातोला भरले पीस ।

कूट छान चूर्ण बनावै फिर गरम जलसे फंकी करै तौ सर्व ज्वरों को दूर करै और सन्निपात अजीर्ण और शूल बिरचिका भी जाय ॥

अथ लवंगादि चूर्ण ॥

लौंग। अगर। कपूर। कमलगट्टा। सफेद चन्दन। स्याहजीरा। सफेदजीरा। खस। इलायची। मोथा। जटामासी। तगर। वंशलोचन। पीपल। कंकोल। कालीमिर्च। जायफल। तज। नागकेसर। इन सब औषधियों को तोला तोला भर ले कूट पीसछान चूर्ण बनावै और आधी मिश्री मिलावै फिर ३ मासे नित्य फंकी करै तौ इतने रोग जांय मन्दाग्नि १ त्रियोदशवाय२ पित्त कफ३ कंठरोग ४ कास५ स्वास ६ अतीसार ७ गुल्म ८ प्रमेह ९ और संग्रहणी १० ॥

अथ भास्कर चूर्ण ॥

पीपल। पीपलामूल। सांभर नोन। सेंधानोन। काला नोन। कचनोन। तनिछारीनोन। सफेदजीरा। स्याहजीरा। बायबिड़ंग। पत्रज। तालीस। चव्य। कालीमिरच। सोंफ। तज। इलायची। अनार दाना इन सब औषधियों को ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर नित्यखाय तौ उदर के सब बिकारों को दूर करै और गरम जल सों फांके तो अजीर्ण सन्निपात जाय ॥

अथ चन्दनादि चूर्ण ॥

चन्दन। लौंग। कपूर। अगर। कमलगट्टा। सफेद जीरा। जीरा स्याह। अनारदाना। काला नमक। इन सब औषधियों को तोले तोले भरिले कूट पीस छान चूर्णबनावै फिर नित्य खाय तौ उदरके सर्व्व बिकारों को दूर करै ॥

अथ गंगधर चूर्ण ॥

मोथा। सोंठ। इन्द्रजव। धावके फूल। लोध। मोचरस। पेठे के बीज। राल। लजालू की जड़। अतीस। पोस्त इन सब औषधियों को तोला २ भरि ले कूट पीस

छान चूर्ण बनावै फिर चावल के धोवन के साथ फंकी करै तौ पेट के रोग अतीसार संग्रहणी दूर होंय ॥

अथ नाग केसरादि चूर्ण ॥

नागकेसर। चन्दन। लोध। खस। बेलगिरी। मोथा। इन्द्रजव। सोंठ। अतीस। धाय के फूल। सौंफ। तीनवर्ष की आंबकी पुरानी गुठिली। जामुनि की गुठिली। सौचर नोन। कमलगट्टा। मजीठ। छोटी इलायची। अनारदाना। तब इन सब औषधियों को तोला तोला भरि ले कूट पीस छान चूर्ण करि के मिश्री मिलावै फिर चावलके धोवन से फांके तौ संग्रहणी अर्श बवासीर अतीसार ये सब रोग नाश होंय ॥

अथ दूसरा चूर्ण ॥

चीता। हड़। बहेड़ा। आंवला। वाय बिडंग। फौलादसार। इन सब औषधियों को तोला तोला भरि ले कूट पीस छान चूर्ण करै फिरि ३ मासे शहद में ३ मासे चूर्ण मिलाय खावै तौ भगन्दर बवासीर मन्दाग्नि अरुचि और अनेक रोगों को दूर करै ॥

अथ पुरुष चूर्ण ॥

अकरकरहा। सोंठि। कंकोल। केसरि। पीपल। जायफल। लौंग। चन्दन। अफीम। मासेभर या ६ रत्ती और इन सब औषधियों को तोले तोले लेचूर्णकरि शहदसों संध्या समय खायवो रात्रिको स्त्री सेवन करै तौ अति पुष्ट बंधेज होवै ॥

अथ कापूरादि चूर्ण।

कपूर। तज। कंकोल। जावित्री। लौंग। नागकेसरि। सोंठि। काली मिरच। पीपल इन सब औषधियों को तोला तोला२भर ले पीस कूट छान चूर्ण बनावै मिश्री बराबर की मिलावै फिर तोला भर नित्य खाय तौ श्वास कास गुल्म छर्दि इन सब रोगों को नाश करै ॥

अथ तालीसादि चूर्ण ॥

तालीस । सोंठि । पीपल । कालीमिर्च । बंस लोचन । छोटी इलायची । तज । खस इन सब औषधियों को तोला तोला भरि ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै बराबर की मिश्री मिलावै फिर जल सों फांके तौ इतने रोगों को नाश करै काश श्वास तप संग्रहणी अतीसार जांय ॥

अथ अजवायनादि चूर्ण ॥

अजवायन । तंतरीक । सोंठि । कालीमिर्च । पीपल । अमलबेत । अनार दाना । सौंचर नोंन । जीरा । बायबिड़ंग । इन सब औषधियों को तोला तोला भर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर ३ मासे नित्य खाय तौ इतने रोग जांय जिह्वा रोग हृदय का रोग पार्श्वरोग पसली का शूल कुष्ट कास श्वास संग्रहणी रक्त विकार जांय ॥

अथ वाय खाण्डव चूर्ण ॥

धमासा । जवाखार । सोंठ । काली मिरच । पीपल । पेठे के वीज । हड़ । बहेड़ा । आंवला । लोध इन सब औषधियों को तोलेतोले भर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै शहद से खाय तौ कंठ के सब रोग जांय ॥

अथ इलायची का चूर्ण ।

इलायची । लौंग । नागकेसरि । झड़बेरीकी मीगी । धान की खील । तज । नागरमोथा । चंदन । पीपल । भूनीहींग । गेरू । हड़ । नारियल की जटाओं की राख । तुलसी पत्र । इन सब औषधियों को एकएक तोला पीस कूट छान चूर्ण बनावै और शहद से चाटै तौ त्रिदोष की छर्दि नाश करै ॥

अथ सरस्वती चूर्ण ॥

कूट । अजमोद । असगन्ध । सफेद जीरा । स्याह जीरा । सोंठ । पीपल । काली मिर्च । हल्दी इन सब को एक २ तोला ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै शहद से चटावै तौ मति निर्मल होय विद्या आवै ॥

अथ सिद्धार्थ चूर्ण ॥

सफेद सर्सों । बच । भूनी हींग । करंज के बीज । देवदारु । मजीठ । हड़ । बहेड़ा । आंवला । सफेद चमेली की छाल । मालकांगुनी । तज । सोंठ । काली मिर्च । पीपल । हींग । सिरस की छाल । हल्दी । दारु हल्दी इन सब औषधियों का एक एक तोला ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै गौके मूत्रसे खाय तौ इतने रोग जांय सन्निपात । आटौज्वर ॥

अथ पेटके दुखका चूर्ण ।

पटोल । हल्दी । वाय विड़ंग । हड़ । वहेड़ा । आंवला । कमलगट्टा । नीलकी जड़ । निसोत इन सब औषधियों का एक २ तोला ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै दूध से फांके तो पेट का दुख दूर होय ॥

अथ निंबादिक चूर्ण ॥

नीम की कोपल । नीम की छाल । नीब के फूल । नीम की जड़ । नीमकाठा । हड़ । बहेड़ा । आंवला । सोंठि । काली मिर्च । पीपल । भारंगी । गोखरू । पौहकर मूल । चीता । बिड़ंग । बिदारी कंद । सारकुस्ता । गिलोयका सत । हल्दी । दारुहल्दी । बावची । कूट । इन्द्रयव इन सबको तोला तोला भरले एकत्र करिबिजयसार की ७ पुटदे और फिर भंगरा के रसकी ७ दे फिर खाय तौ रक्त पित्त रक्त वाय भगंदर नारीव्रण मुखकारोग और दुक्ख और भी अनेक रोग दूर करै ॥

शृंगादिक चूर्ण ।

काकड़ासिंगी १ तोला निर्गंध १ तोला चिफला ३ तोला कटेटीकीजड़ १ तोला भारंगी १ तोला पुष्कर मूल१ तोला लौन५ तोला इनसबको एकत्रकरि कूटपीस छान चूर्ण बनाव फिर गरम जल सों फंकी करै तौ इतने रोग जांय हड़फूटन पीनस नजला बाय और शरीर के दुक्खों को दूर करै ॥

अथ पथरी मूत्र कृच्छ्का चूर्ण ॥

बड़कोनटा । पीपलकोनटा । खस । चीता । पुरानी आंबकी गुठली । जामनकी गुठली । चिरोंजी । आलूबुखारा । धौंका गोंद । मजुआ । मुलैठी । लोध । बरनेकी छाल । नीमकी कोंपल । पवाड़की जड़ । हड़ । इन्द्रयव । भिलावां । इन सबको एकत्र करि पीस छान चूर्ण बनावै मठ्ठत के साथ खाय तौ मूत्र कृच्छ्र और पथरीजाय ॥

अथ अग्निमुख चूर्ण ॥

चीता । पाढ़ा । लोटकसज्जी । नवाखार । करंज केबीज । समुद्र फेन । इलायची । पद्माख । भारंगी । बिड़ंग । पुष्करमूल । चूर्ण नरकचूर । दारुहल्दी । निसोत । मोथा । बच इन्द्रयव । हाऊबेर । अनारदाना । त्रिकुटा । भिलावां अजमोद । अजवाइन । देवदारु । अतीस । हड़ । तिलकाखार । सहंजनेकाखार । बावचीकाखार । ढाककाखार । कौटीकुसा इन सब औषधियों को तोला तोला भरि ले एकत्र करि अदरकके रसमें १२ पहर खरल करै फिर दूधके साथ फांके तो गुदाके सब रोग जांय भोजन भात दूध करै ॥

अथ भगन्दर विजय चूर्ण ॥

त्रिकुटा । बच । हींग । पाढ़ा । नवाखार । सज्जी । हल्दी । हड़ । चिरायता । इन्द्रयव । चीता । गज पीपल । नमक । पीपला मूल । विडंग । अजमोद । त्रिफला । सपेद जीरा । स्याहजीरा । ये सब औषधियों को एकएक तोला ले एकत्र करि कूट पीस छान चूर्ण करै फिरि ताते पानी के साथ खाय तौ वाय । शोथ । अर्श । भगन्दर । हृदय शूल । पार्श्वशूल । अरुचि । प्लीह । प्रमेह । कमल वाय । पाण्डुरोग। आमवात । संग्रहणी । प्रसूत । इन सब रोगोंको दूर करै ॥

अथ अतीसार का चूर्ण ॥

समुद्र सोख । मायी । राल । माजू । पलन । जायफल । छोटीइलायची । सेलखड़ी । बेलगिरी । इनसब औषधियों को

तोला २ भरले एकत्र करिकूट पीस छानचूर्ण बनावै फिरि पानी से फंकी करै तौ अतीसार जाय ॥

अथ संग्रहणी और अतीसार का चूर्ण ॥

कालीमिरच्च । पीपल । तमाल पत्र । पीपला मूल । इलायची । दालचीनी । जायफल । नेत्र वाला । बंसलोचन । चंदन इन सबको एकत्र करि तोले तोले भर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर २ मासे नित्य की फंकी करै तौ संग्रहणी पुराना ज्वर अतीसार सब दूर होंय ॥

अथ वाय शूल का चूर्ण ।

बड़ी हड़ का वक्कल । सोंठ । सनाय । गुजराती । निसोत । पुरानी सोंफ । स्याह नमक इन सब औषधियों को पैसा २ भरि ले एकत्र करि कूट पीस छानि चूर्ण करि तत्ते पानी से फंकी करै तोतत्काल वाय गोला जाय पथ्य मूंग की दाल भात या रोटी या खिचड़ी खाय और चीजों से परहेज करै ॥

अथ काल चूर्ण की विधि ॥

सोंठि १। पीपल १। कालीमिर्च १। सफेद जीरा १। स्याहजीरा १। हींग १। सेंधा नमक १। सांभर नमक १। कचनमक १। अमचूर सेर भरि चूक ऽ। भरि सबको एकत्र करि चूर्ण बनावै खाय तौ पाचन शक्ति उत्पन्न करै ॥

अथ शीत ज्वर का चूर्ण ॥

पीपरि । सोंठि । गिलोय । पीपरा मूल । इनका चूर्ण करि जलसों फंकी करै तौ शीत ज्वर दूर होय ॥

अथ तालीसादि चूर्ण ॥

तालीस । तज । पत्रज । इलायची । नाग केसरि । सोंठि । मिरच । पीपर । पीपरामूल । सारिवा के बीज । त्रिफला । जायफल । जावित्री । पुष्करमूल । चीते की छाल । दोनों अजवायन । असगन्ध । गौरी । नागर मोथा । बंशलोचन । दोनों जीरे । कलौंजी । धनियां । काकरासिंगी । सार।बंग ये सब औषध दो दो टंक ले एकत्र करि कूट पीस छानि

ऽ।।। कच्ची खांड़ मिलाय बासन में धर रक्खे फिर टका भरि मात्रा खाय तौ ज्वर जाय पित्त पचि जाय भूख लगै खांसी जाय और बल बढ़े पुष्टता होय॥

अथ तुंबुरू आदि चूर्ण॥

तुंबुरू। सोंचर नमक। सारिवा। अजमोद। जवाखार। पीपरि। मिरच। बच इन सब औषधों को तीन तीन टंक ले एकत्र करि पीस कूट कपर छान चूर्ण बनावै फिर अधेला भरि गरम पानी के साथ खाय तौ सात प्रकार के ज्वर दूर होय॥

अथ गुडूच्यादि चूर्ण॥

गिलोय। तेजबल। अतीस। मोथा। पीपर। काकड़ा शृंगी। इनको बराबर चूर्ण करि मठा के साथ दे तौ ज्वर खांसी अतीसार ये सब रोग जांय॥

अथ तालीसादि चूर्ण॥

तालीस। ब्रह्मदंडी। मोचरस। सोंठि। बंशलोचन। गज पीपर। इलायची। तज ये सब औषधि टका टका भरि लै चूर्ण करि ३२ टका भरि खांड़ मिलाय अधेला भरिखाय तौ ज्वर खांसी मस्तक शूल अजीर्ण ये सब रोग जांय॥

अथ अतीसार पर चूर्ण॥

अतीस। गजपीपर। कुडाकी छाल। जायफल। इलायची। मोचरस। बेलगिरी। धायके फूल। नागर मोथा। काकड़ाशृंगी। सुगंधवाला ये सब औषधि दो दो टंकले कपर छान करि पैसे भरि शहत के साथ खाय तौ अतीसार दूर होय और शूल जाय वो रक्त वन्द होय॥

अथ तेरहों सन्निपात पर सिद्धार्थ चूर्ण॥

सरसों। बच। कूट। पीपर। मिरच। सोंठि। कुटकी। कायफर। चीतेकी छाल। बायबिड़ंग। मंजीठ। जीरा। कलोंजी। अजवाइन। अजमोद। भारंगी। पाढ़ा। हींग। जायफल। पीपरामूल ये सब औषधि पांच पांच टंक लै

के छानि करि गोमूत्र से मर्दन करै तौ १३ सन्निपात शीत उचाट बाय सर्दी पसेव ये सब दूर होंय ॥

अथ आमातीसार पर चूर्ण ॥

सेंधानोन । कालानोन । हींग । बच । हड़ । अतीस इन को बराबरिले फिर अधेला भर गरम पानी के साथले तौ अतीसार अच्छा होय ॥

अथ द्वितीय चूर्ण ॥

नागकेसरि । तवाखीर । रक्तचंदन ये बराबर ले चूर्ण करि शीतल जल के । साथ खाय तौ अतीसार जाय ॥

अथ हिंग्वष्टक चूर्ण सर्व रोग पर ॥

दोनों हींग । जीरा । काली मिरच । सोंठि । पीपरि । सेंधानमक । गजपीपरि । अजमोद ये सब बराबरि लें अदरक के रस में । गोली बांधे अथवा अदरकके रससे चूर्ण खाय तौ सर्व रोग जांय ॥

अथ दूसरा हिंग्वष्टक चूर्ण ॥

हींग । सोंठि । मिरच । पीपरि । पीपरामूल । त्रिफला अजवायन । अजमोद । खुरासानी अजवाइन । कायफर । बच । चीते की छाल । बायबिड़ंग । रेंड़ का । पत्रज । पोहकर मूल । गजपीपर । सेंधानोन । कालानोंन । सांभरि नोंन । सज्जी । जवाखार । अकर करहा । सुहागा भूना ये सब बराबरि पैसा पैसा भर ले कपर छान करि चूक की २ पुटदे मट्टी के कोरे पात्रमें धरे और ३ टं० खाय तो ७ प्रकार के शूल जांय और बायगोला । हिचकी पेटका भारी पन खांसी कफ ये सब रोग जांय सही ॥

अथ द्वितीय तालीसादि चूर्ण सर्व रोग पर ॥

तालीस । लौंग । पत्रज । पीपरि । पोहकरमूल । बायबिड़ंग । जायफर । जावित्री । खैरसार । भारंगी । बच । दोनों जीरे । कायफर । कुचिला । गजपीपरि । कलोंजी । असगंध । मिरच । अकर करहा । अजवायन । अजमोद । खुरासानी

अजवाइन। भूनी फिटकरी। सोंठि। चिरायता। हींग। कूट। त्रिफला। कुटकी। काकरा शृंगी। हड़छोटी बड़ी। बंग। अभ्रक सार। सेंधानोंन। ये सब औषधि पैसा २ भर लेय कपर छानि करि तिस पीछे चार सेर दूध औटावै जब दूध सेर ,१ शेष रहै तब दूधमें सब औषधी मिलाय दो दो पैसा भर की गोली बांधे १ गोली प्रातःकाल खाय तौ बल बढ़े पुष्टता होय पुरुष शक्ति अधिक होय खटाई का परहेज करै ॥

अथ मिरचादि चूर्ण सकल प्रमेह पर ॥

मिरच। कंकोल। लौंग। खस। रक्त चंदन। कमलगट्टा। कलोंजी। अगर नागकेसरि। पीपरि। सोंठि। सोंचर। सुगंध वाला चीनियां। कपूर। जायफर। बंसलोचन। छेकुरा की छाल। तज। पत्रज। केला की जड़। कोंच के बीज। असगंध। मोचरस। नागर मोथा। सिंघाड़ा। उर्दकी दाल धुली। गंगेरन। अंजीर दोनों सेवर का मूसरा। शतावरि दोनों मूसली। निर्गुंडी। मुंडी। भांगरा। ये सब औषधि दो दो टं० ले अभ्रक १० टं० सार १० टं० बंग १० टं० सब औषधि कपर छान करि कच्चीखांड़ ,१ सेर मिलाय के धरि राखे पांच टं० प्रातःकाल और संध्या समय खाय तो सकल प्रमेह दूरि होंय मूतको प्रवाह थंभैदाह जाय पुष्टता होय खांसी शूल और बात जाय स्त्री खाय तौ पीर दूर होय यह चूर्ण राजाओं के योग्य है ॥

अथ पुष्टि करन चूर्ण ॥

मुलहठी। विदारी। कन्द। तज। लौंग। गोखरू। गिलोय सफेदमूसरि। इन सब औषधियों को बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर धेला भर नित्य ,॥ सेर दूध के साथ खाय तौ पुरुष के सदा बल रहै ॥

अथ मधु यष्ठी चूर्ण विधि।

मुलहठी। गिलोय। त्रिफला। बिदारीकंद। दोनों

मूसली। नागकेसरि। शतावरि ये सब औषधि बराबर ले कपड़छान करि चूर्ण बनावै फिर घृत और शहत मिलाय ४ चारिमासे भरि २५ दिन तक नित्यखाय तौ वृद्ध पुरुष भी ७ स्त्री भोग करै॥

अथ प्रमेह नाशन चूर्ण॥

शंखाहूली। इलायची। शिलाजीत ये तीनों बराबर ले और तवाखीर और कच्ची खांड़ ये दोनों दूनीले फिर सब को एकत्र करि कूट पीस छानि चूर्ण करि धेलाभरि नित्य शीतल जल के साथ लेतो प्रमेह दूरि होय॥

अथ खण्डादिचूर्ण॥

खांड़ ऽ॥ मिरच। लौंग। दाख। बदाम। चिरौंजी। तज। पत्रज। इलायची। रक्तचन्दन। पीपरि। दोनोंजीरे। सोंठि। धनियां। पीपरामूल। कौंच के बीज। मोथा। वंशलोचन। कमलगट्टा। तवाखीर। दोनों मूसली। शतावरि ये सब औषधि पैसापैसा भरिले फिर कूटपीस कपड़छान करि २५ दिन तक नित्यखाय तौ सकल प्रमेह दूरि होंय और धातु बढ़ै पुष्टता होय॥

अथ असगन्धादि चूर्ण॥

असगंध। विधारा। स्याहमूसली। सफेदमूसली। तालमखाना। बिदारी कन्द। बीजबन्द। सेंबर का मूसला। बड़ा गोखरू ये सब औषधि टका टका भरि ले कूट पीस कपड़छान करि चूर्ण बनावै फिर उसमें बंग १० टंक अभ्रक १० टंक सार १० टंक खांड़ ऽ३ शहत ऽ१ गौका घी ऽ१ गौका दूध ऽ५ ये सब औषधि कपड़छान करदूध में खोआ करै जब दो सेर रहै तब उतारि सब औषधि मिलाय २ पैसा भरिकी गोली बांधे फिर एक गोली प्रभात समय खाय तो धातुकी पुष्टता होय देहमें बल बढ़ै बात दूरि होय॥

अथ प्रसूति का चूर्ण ।

देवदारु । अजमोद । वाय बिड़ंग । सोंठि । चित्रक । मिरच । सेंधानोन । कालानोन । सोंफ । हल्दी येसब औषधि पैसा पैसा भरले ६ पैसा भरि पुराने गुड़ में अधेला भरि की गोली बांधे और दोनो समय खावतो प्रसूति जाय ॥

अथ स्वेत कुष्ट का चूर्ण ।

कठूमरि वा कठिअंजीर को बकला ऽ। भरि बाकुची ऽ। भरि इन तीनों औषधियोंको एकत्र करि चूर्णकरै फिरि पैसा पैसा भरि नित्य दूनो समय पानी के साथ खाय तो स्वेत कुष्ट जाय ॥

अथ लाई चूर्ण ।

त्रिजातकव्योष वरारसेन्द्रगन्धाजमोदा मिसि बेल्लराभय:
बिल्वानलाजा निलवंगधान्यगजोप कुल्या मधुकम् वदन्ति॥१॥
कुबेर हिंग्वाह्व यमोचसारा: क्षारौ जया सर्वचतुर्थ भागा:
इदंहि चूर्णं त्रिनिहन्ति तूर्णं सुप्रसूति का संग्रहणी विकारम् २ ॥ समस्तरोगान्तक मग्निक र्दभाजि ष्णुना कारि सुत क्रयीतम् ॥ इदंम्प्रयोगंबहुधानु भूतं चकार धात्री किलका पिलाही ॥ अर्थ ॥ त्रिजात अर्थात् तज । पत्रज । इलायची । व्योष । अर्थात् सोंठि । मिरच । पीपल । त्रिफला । अर्थात् हड़ । बहेड़ा । आंमला । पारा । गन्धक । अजमोद । सोंफ़ । वायबिड़ंग । हलदी । बेलगिरी । चीते की छाल । जीरा । लौंग । धनियां । गजपीपलि । मुलहठी । पांचोनोन । अर्थात् सेंधा १ काला २ बिड़ ३ सामुद्र ४ गर ५ कंज की मींगी । हींग । मोचसार । सज्जी । जवाखार । और सब औषधियों से चौथाई भाग इन सब औषधियों को कूट कर चूर्ण बनावै और रोगी को मठा के साथ दे तौ शीघ्रही संग्रहणी रोग दूर होय और सब रोगों का नाशक तथा अग्नि का और कांतिका बढ़ाने वाला है यह प्रयोग बहुत अनुभूत है और इसको लाई नाम किसी धायने बनाया है ॥

अथ बृहत् निम्बादि चूर्ण ॥

भुजङ्ग प्रयात छन्द ॥

हिंगुव क्षार वै सिंधुसैा बचले । कंज गूदी मिलै पापरी मूलले ॥
चाब चीते बचामिर्च जीरा मरै । चेतकी सोंठि ह्रीवेर मोदा धरै ॥
सटी पीपरी धान्य लैपुष्करै । अम्लवेतै विडंगै समैलै धरै ॥
चूर्ण सेवै यथा शक्ति भावै गुनै । अस्मरी अर्शप्लीहा सदालै हनै ॥
आम बंधै बिबंधै ओमूलै हरै । पांडु गुल्म हृदै रोग सोई जरै ॥
अर्षता अनने अग्नि मंदैमहा । कासस्वासै सहिक्का त्रिनाशै कहा ॥

दोहा ॥

भोजन प्रथमै घीत्रसे सेवन करै जो कोय ।
बात गुल्महा क्षुधा कर त्रिकुटादिक है सोय ॥

अथ त्रिकुटादि चूर्ण ॥

दोहा ॥

त्रिकुट हींग अजमोद लै पुनि जीरा युग लेइ ।
सेंधो नोंन मिलाय कै चूरण सम करु सेइ ॥

अथ रुचि क्यादि चूर्ण ॥

चौपाई ॥

सोचर सैंधव चित्रक लीजे । त्रिकुट चैल भागह्नी दीजे ॥
शिवा और युगजीरा आनै । बायबिड़ंग जवाइन जानै ॥
अज मोदा उत चूरण करै । मातु लुंग अमली रस परै ॥
तामें गुटिका लेय बनाय । अग्नि मंद अति देइ नसाइ ॥
सकल बदन की शूल नसावै । पचै अन्न अति क्षुधा बढ़ावै ॥

अथ सुंठ्यादि चूर्ण ॥

त्रोटक छन्द ॥

सुंठी युगतीनि सो भाग धरै । पीपरि पुनि तामह चारि परै ॥
अजमोद जवाइन भाग परै । युगभाग सो सैंधव आनि ठरै ॥
सब चूरण के समडारि शिवा । सुंठ्यादि प्रसिद्ध सोनाम भवा ॥
लोलिंब्र सो राज बिचारि कहे । मलताप प्रताप को बेगिटहे ॥
ओदरै पुनि शूल अनेक टरै । सबबात व्यथा अस बात हरै ॥

निसि बासर भोजन चित्त बसै । नानाबिधि भोजन दोष नसै ॥

अथ बृहद् बड़वानल चूर्ण ।

दोहा ॥

सुंठीपीपरि चीतलै पूतविड़ंग मिलाय । कंज की गूदी हर्रईसमसर्करा मिलाय ।
अग्निप्रकाबैसुधाकरबातगुल्म नचजाय । बड़वानल चूरणकह्योग्रन्थनको मतपाय ॥

अथ अमल बेत लवण भास्कर चूर्ण ।

संचलनोन १ पैसा भरि समुद्र लून १ पैसाभरि सांभरि नोन १ पैसाभरि सेंधानोन १ पैसाभरि पीपल २ पैसा भरि पीपला मूल २ पैसा भरि स्याह जीरा १ पैसा भरि पत्रज २ पैसाभरि नागकेसरि २ पैसाभरि तालीस २ पैसाभरि काली मिरच १ पैसा भरि जीरा सपेद २ पैसा भरि सोंठि १ पैसा भरि अनार दाना १ पैसाभरि इलायची २ पैसा भरि लौंग १ पैसा भरि दालचीनी ८ माशे जवाखार २ पैसा भरि खुरासानी अजवाइन २ पैसा भरि कलौंजी २ पैसाभरि त्रिफला ३ पैसा भरि मूलीके बीज १ पैसा भरि अमलबेतकी गिरीको काढ़लै फिरि उसमें और सब दवाइयों को कूटि पीस भरै उसको रीता न रक्खै जबहीरीता होय उसमें निचोड़ता जाय और प्रात घाम और रात्रिकी छायामें सुखावै फिर २ माशे नित्य खाय तौ उदर बिकार सब दूरहोय भूख बहुत लगै अन्न पचै ॥

अथ संचल क्रिया ॥

संचल ऽ। भरि । सेंधा ऽ। भरि । वजंगरोलून ऽ१ सेर सांभर ऽ। भरि आंवला ऽ१ सेर पीस पान और गोमूत्रके साथ हांड़ीमें भरि चूल्हे पर चढ़ावै नीचे अग्नि दे शीतल होय तब हांड़ी फोड़ फेंके फिरि उसे नित्य खाय तौ रोग सबही जाय ॥

अथ बाइशून का चूर्ण ॥

त्रिकुटा । अजमोद । सेंधा । स्याह जीरा । सुपेद जीरा । इनसबोंको एकत्र करि पीसकूट चूर्णबनावै और हींग

को भूनकरि मिलावै फिरि ४ माशे नित्यभोजनके पहिले ग्रास के साथ खायदूनों औरसमय घृत खायतौ बाय शूल जाय ॥

अथ सामुद्र चूर्ण ॥

सेंधा नोन । सोचल नोन । समुद्र नोन । खारीनोन । अजमोद । जवाखार । बायबिड़ंग । हड़ । पुष्करमूल । पीपल । सोंठि । अजवाइन । निसोत इन सब औषधियों को बराबरि ले कर पीस कूट छानि चूर्ण बनावै फिर १ टंक गरम पानीके साथले तौ गुल्म जई की आंटी पवन बधवाई इन सब को दूरि करै और भूख बहुत लगावै ॥

अथ पाचक चूर्ण ॥

त्रिफला । त्रिकुटा । बाइबिड़ंग । लौंग । पीपल । तज । सुहागा सुभ्रफूला इतने नोन तीनों । जीरा । चित्रक इन सब को समानले पीस कूट छानि चूर्ण बनावै फिर २ माशे प्रति नित्य खाइ तो हजम बहुत करै और भूंख बहुत लगै ॥

अथ चित्रादि चूर्ण ॥

खुरासानी अजवाइन । हड़ । बिहारीसोंठि । सतुवा । लौंग । पीपल । मधुबहेड़ा । आंवला । मिर्च । संचल । सेंधा । जवाखार । इन सबको नीबूके रस में तीन पुटदे फिर छाया में सुखाबेर प्रमाण गोली बांध खाइ तो बहुत गुण करै ॥

अथ कंठक चूर्ण ॥

चौपाई ॥

मिर्च कुलिंजन सम करि राखे । खट्टा मिट्ठा जरा न चाखे ॥
वर्ष एक जो साधे कोय । पिक सम कंठ ताहि को होय ॥

अथ मन्दाग्निनाशक चूर्ण ॥

चौपाई ॥

सेंधा सोचल बाय बिड़ंग । त्रिफला त्रिकुटा तुम्बर लवंग ॥
चित्रकहिंग अजवाइन मानि । जीरे अनारदाने आनि ॥
इन औषध का चूरण करो । तीन निबु पुट उसमें धरो ॥
टंक दोय जब प्रातहि खाय । मन्द अग्नि तबही मिटिजाय ॥

अथ कंडूनाशन चूर्ण ॥

दोहा ॥

हल्द बावची निम्बफल अरु आमला मिलाय ।
टंक दोय गोमूत्र सन पीवत कण्डू जाय ॥

अथ प्लीहा को चूर्ण ॥

सेंधा । सोंचल । जवाखार । हींग । हड़ । पीपल । अजमोद । बाइबिड़ंग । सज्जी इन सबको एक एक टंक ले एकत्र करि चूर्ण बनावै फिर ७ मासे भरि नित्य पांच पैसा भरि गो घृत के साथ मिलाय कर खाय तो प्लीहा रोग जाय ॥

अथ अग्नि कर चूर्ण ॥

सोठा चूक ४ पैसा भरि मिश्री ऽ। लौंग ४ पैसा भरि पीपल १ पैसा भरि काली मिर्च १ पैसा भरि बड़ी इलायची १ पैसा भरि सबको पीस चूकमें मिलावै फिर इस करदे में मलै और ६ मासे भर खुराक खाय तौ इतने रोग जांय गरमी । चिनग । ज्वर । जर्दी और भूख बहुत लगावै ॥

अथ अफरे का चूर्ण ॥

सोंठि का सत १ पैसा भरि पीपल १ पैसाभरि अजमोद ३ टंक अजवाइन १ टंक सेंधा २ टंक हड़ें १४ सबको जुदा जुदा पिसाय राखे फिर प्रात समय ताजे पानी से पहिले हड़ें और सेंधा मिलाय खाय पीछे सबके मिलाय खाय जो माफकत आवै तौ और अधिक खाय और संध्या समय खिचड़ी खाय तौ अफरा जाय ॥

अथ हड़ क्रिया ॥

हींग २ टंक संचल २० टं० सेंधा १६ टं० सांभरि १२ टं० चारौ पानी में मिलावै पहली तयार करै त्रिकुटा सर्व मिलाय पानीमें डाले उसका मुंह बांधि चारि दिन तक धूपमें सुखावै फिर ऽ। भरि आंवला डाले फिर तीसरे दिन चूक डाले चूक न डाले तौ निंबूका रसडाले फिर सबको हड़ों समेत बांधले फिर हड़ोंको जितने पानी में डूब जांय छोड़दे तौ हड़ें बनैं ॥

अथ अपूर्व चूर्ण ॥

त्रिफला । त्रिकुटा । हींग । सुहागा । सेंधा । सोंचल्न । लौंग । चीता सबको बराबर ले हींग और सुहागेको भून ले फिर सबको एकत्र करि सहजनेके रससें गोली बांधे चने प्रमाण अब चाहै खायक्षुधा बढ़ावै और अन्न पचावै ॥

अथ ज्वर पर पीपर चूर्ण ॥

पीपल को कूट पीस कर शहत के साथ चाटै तौ ज्वर कास श्वास हिचकी कंठरुज पिलही आदि सकल रोगोंको नाश करै ॥

अथ प्रमेह पर त्रिफला चूर्ण ॥

हड़ १ भाग आमले ४ भाग इनसब को कूट पीस चूर्ण बनावै और खायतौ इतने रोग नाश करै प्रमेह, शोथ, विषमज्वर आदि को नाश करता है दीपन है और कफ पित्त नाशन है कुष्ट हरण रसायन है वही त्रिफला शहत घृत युक्त खाने से नेत्र रोग नाश होते है ॥

अथ त्रिकुटा चूर्ण ॥

पीपरि । मिरच । सोंठि इसेत्रुषण और त्रिकुटा कहते हैं इस का चूर्ण दीपन है कफ कुष्ट और पीनस इन सबै को नाश करता है आम अरुचि प्रमेह गुल्म और कण्ठ रोग सबको दूर करता है ॥

अथ कफादि पर पंच कोल चूर्ण ॥

पीपरि । चाव । सोंठि । पीपरा मूल । चीता इसे पंचकोल कहतेहैं इसका चूर्ण बनायकर खानेसे पाचन दीपन होता है और अनाह । पिलही । गुल्म शूल कफ उदर रोग सब को नाश करता है ॥

अथ त्रिगन्ध चूर्ण ॥

पत्रज । तज । इलायची । इनको त्रिगंध कहते हैं इसका चूर्ण रूखा और उष्ण है यह चूर्ण कुछ पित्तकारक है कांति रुचिकर्ता तीक्ष्ण है और विष और कफको नाश करता है ॥

अथ जीवनी गण॥

काकोली। क्षीरकाकोली। जीव करिषभक। मेदा। महामेदा। जीवंती। दूधिया। लता का छीमी जिसकी तरकारी होतीहै मुरैठी। मूगफली। उर्दफली। इनका चूर्ण स्थित कारक है भारी दुग्ध बर्द्धनी है धातु पोषक है धातु शोधक है स्निग्ध ठंढी तृष्णा रक्त पित्त छर्दि शोष ज्वर दाह बायु इन सब को हरता है॥

अथ त्रिण मूत्र पर लवण पंचक चूर्ण॥

सेंधालोन। कालालोन। बिड़नोन। खारीलोन। गड़नोन। सांभरनोन ये पांच क्रमसे जानो इनमें सेंधा मुख्य है जहां किसी नौन का नाम न लिखा हो वहां सेंधा नमक लेना चाहिये इनके चूर्ण का पाक मधुर है मल मूत्र पकाइ के गिराता है चिकना बशकर्ता बलहर्ता धातुको गर्भकर्ता दीपन तीक्ष्ण का पित्त बढ़ाता है और गुल्मादि दो खार हैं सज्जीखार औ जवाखार सोये दोनों अग्नि समान दीप्य मान हैं॥

अथ वृद्ध सुदर्शन चूर्ण॥

त्रिफला। हलदी। दोनों भटकटैया। कचूरा। त्रिकुटा। पीपरामूल। मुर्रागुर्च। जवासा। कटुकी। पित्तपापड़ा। मोथा। त्रायमान। नेत्रवाला। नीमकीछाल। पोहकरमूल। मुरैठी। कुरैया। जवाइन। इन्द्रजौ। भारंगी। सहजनका बिया। भुनी फिटकरी। बच। तज। पद्माख। खस। श्वेतचन्दन। अतीस। बरियारा। बनउर्दी। बनमूंग। बायबिड़ंग। तगर। चीता। देवदारु। चाव। पटोल। जीवन्ती करिषभक। इन दोनों के अभाव में बिलाई कन्द। लोधा। लौंग। वंसलोचन। कमलपत्र। काकोली के अभाव में मुलैठी लेना तेजपात। जावित्री। तालीस पत्र। इन सब औषधियों को समान ले चूर्ण करै फिर उसमें सब चूर्ण का आधा चिरायता डाले फिर इस वृद्ध सुदर्शन चूर्णके खानेसे त्रिदोष और सर्व ज्वर नाश होते हैं

और एकाहिक द्वंद्व सन्निज मानस आदि सब ज्वरों को दूर करता है शीत ज्वर जूड़ी अंतरिया तृतीयक चातुर्थिक मोह तन्द्रा भ्रम तृषा कास पांडु हृदयरोग रीढ़-पीड़ा कटि पांव जांघ पसली इन अंगन की पीड़ा को नाश करता है और जैसे सुदर्शन चक्र दैत्यों को नाश करता है उसी प्रकार से यह वृद्ध सुदर्शन चूर्ण भी सर्व ज्वरों को नाश करता है ॥

अथ कासश्वास ज्वर पर त्रिफलादि चूर्ण ॥

त्रिफला और पीपल दोनों को कूट पीस चूर्ण बनाय कर शहत के साथ चाटै तो कास श्वास ज्वर को नाश करै और अग्नि को प्रबल करै ॥

अथ कफज्वर पर कायफलादि चूर्ण ।

कायफल । मोथा । कुटकी । कचूर । काकरासिंही । पुष्करमूल । इन्द्रायन । इनको इकट्ठी कर कूट पीस छान चूर्ण बनाय शहत और अदरक के रसके साथ चाटे तो ज्वर हरै कंठ शुद्ध होय कास श्वास अरु त्रिताव शूल छर्दि चर्द्द इन सबों को दूर करै ॥

बालक की खांसी और ज्वर पर काकरासिंही आदि चूर्ण ॥

काकरा सिंही । अतीस । पीपर । इन सबों को कूट पीस छान मधु से चटावै तो बालक की खांसी ज्वर छर्दि दूर होय ॥

अथ आमातीसार पर सुंठ्यादि चूर्ण ॥

सोंठि । अतीस । हींग । मोथा । कुरैया और चीता इन सब दवाओं को ले इकट्ठी कर कूट पीस छान चूर्ण बनाय उष्णपानी के साथ खाने से आमातीसार दूर होय॥

अथ आम बात पर हरीतक्यादि चूर्ण ॥

हरीतकी । सेंधा नोन । काला नोन । बच । हींग । इन सब औषधियों को ले कूट पीस छान चूर्ण करि ठंढे जलके

साथ पिये तौ आमजातातीसार जाय यह चूर्ण ग्राही है और अबल अग्नि को दीपन करै है ॥

अथ सर्वातीसार पर लघुगंगाधर चूर्ण ॥

मोथा। इन्द्रजव। बेल। लोध। मोचरस। धौफूल। इनसब औषधियों को ले इकट्ठा करि कूट पीस छानि चूर्ण करि मट्ठासे गुड़डारि कर ले तौ सब अतीसार प्रवाहक बंद करै यह लघुगंगाधर चूर्ण परम ग्राही है ॥

अथ अतीसार पर अन्यवृद्ध गङ्गाधर चूर्ण ॥

मोथा। सोंठि। कुरैया। धौफूल। सुगन्धबाला। बेल। मोचरस। पाढ़ा। इन्द्रजव। मधुकटैया। आमकीबिजली। अतीस। लज्जालू इन सब औषधियों को इकट्ठी करि कूट पीस छान चूर्ण बनाय सहत और चावल के धोवन संयुक्त लेतौ प्रवाहिक सब अतीसार ग्रहणी जल्दी आराम होय यह वृद्धगंगाधर चूर्ण सरित प्रवाहको रोक सकता है और मट्ठा मिरच चूर्ण चीता कालानोन संगौपनेसे ग्रहणी नाश होय उदर रोग प्लीहा मन्दाग्नि गुल्म अर्श इन सब बीमारियों को अच्छी करता है ॥

अथ ग्रहणीपर कपित्थाष्टक चूर्ण ॥

पक्का कैथा ८ भाग। खांड़ ६ भाग। अनार। अमिली। बेल। धौफूल। अजमोद। पीपर इनसब औषधियोंके तीन२ भागले मरिच। जीरा। श्वेत धनियां। पीपरामूल। सुगंधबाला। अजवाइन। तज। पत्रज। इलायची। नागकेसरि। चीता। सोंठि इन सबोंको एक एक भागले फिर सबको कूट पीस छान महीन चूर्ण बनावै फिर इस कपित्थाष्टक चूर्ण के खाने से गले के रोग अतीसार छर्द्दि गुल्म ग्रहणी आदि ये सब रोग अच्छे होंय ॥

अथ ग्रहणी पर दाडिमाष्टक चूर्ण ॥

अनार ८ रु० भर शक्कर ३२ रु० भर तज। पत्रज। इलायची। तीनों मिला कर ४ रु० भर त्रिकुटा १२ रु० भर इन

सब औषधियों को ले एकत्र करि कूट पीस छान चूर्ण करै इसकेखाने से रोचन दीपन कंठ शुद्ध और ज्वर नाश होता है और यह चूर्ण ग्राही है ॥

अथ अतीसार पर वृद्ध दाड़िमाष्टक चूर्ण ॥

अनार ८ पल । पीपल । पीपलामूल । अजवाइन । धनियां । श्वेत जीरा । सोंठ ये सब पल पल भर ले बंशलोचन दशमासे पत्रज । एला । नागकेसरि इनको पांच पांच मासे ले यह दाडिमाष्टक चूर्ण अतीसार गुल्म संग्रहणी गलाग्रह मन्दाग्निऔर पीनस का सब रोग नाश करै ॥

अथ सुकुमार लवंगादि चूर्ण ॥

लवंग । शुद्ध कर्पूर । इलायची । नागकेसर । जायफल । खस । सोंठि । कृष्णाजीरा । कृष्णअगर । बंशलोचन । जटामासी । नीलकमल । पीपल । चन्दन । तगर । सुगन्धबाला कंकोल इन सब औषधियों को लेकर सबको कूट पीसछान चूर्ण की आधी मिश्री मिलावै तब यह चूर्ण तयार हो फिर इसके खाने से रोचन और तृप्ति होती है और धातुके पुष्ट करता है और त्रिदोष को हरता है और बलप्रद कंठहृदय कास हिचकी पीनस छर्दि तमक श्वास अतीसार उरक्षत प्रमेह अरुचि गुल्म ग्रहणी इनसबकोदूर करता है ।

अथ जातीफलादि चूर्ण ।

जायफल । लोंग । इलायची । तज । पत्रज । नागकेसरि कपूर । चन्दन । तिल । बंशलोचन । तगर । आंवला तालीस पत्र । पीपरि । हड़ । चीता । कालाजीरा । सोंठ विड़ंग । मरिच । सब के समान मोथा लेना फिर इन स औषधियों को इकट्ठी कर कूट पीस छान चूर्ण करि उस चूर्ण के समान खांड़ मिलावै फिर कर्ष प्रमाण खाय त इसके प्रभाव से ग्रहणी कास श्वास अरुचि छर्दि वात क नाक टपकना ये सब रोग शीघ्र नाश हो जाते हैं ॥

अथ अरुचि पर महाखांडव चूर्ण ॥

मरिच । नागकेसरि । तालीस पत्र । पांचोंलोन इन सब को समान भाग लेना और ग्रंथि । चित्रक । तज । पीपल । अमिली और जीरा ये सब दो दो भाग ले धनियां अमलवेत । सोंठि । बड़ी इलायची । बेर । अजमोद । मोथा । इनको तीन तीन भाग ले इन सब औषधों को चौथाई अनार ले और आधी मिश्री मिलाकर खाय तौ रोचन दीपन करै हृदय को बलप्रद है अतीसार हृदय रोग कंठ बलन मुखरोग शीत रस पेटफूलना अर्श गुल्म कृमि छर्दि पंच विधि सब श्वासनाश करै ॥

अथ उदर रोग पर नारायणी चूर्ण ।

चीता । त्रिफला । सोंठि। पीपरि । मरिच । जीरा । हड़ । बेर । बच । अजवाइन । ग्रथ । सोंफ । असगन्धी । अजमोद । कचूर । धनियां । बिड़ंग । कालाजीरा । चूक । पुष्करमूल । दोनों खार । पांचो नमक । इन सबको समान ले और इन्द्रायन दोदो भाग ले निशोथ तीन भाग ले जमालगोटा तीन भाग पीत पुष्प सेंऊड़ मूल चारिभाग ले फिर इन सब को एकत्र करि कूट पीस छानि चूर्ण बनावै फिर कठिन कोढ़ रोगी को प्रथम पाचन स्वेदन करि यह चूर्ण रेचनार्थ देइ तौ हृदय रोग पाण्डुरोग कास श्वास भगन्दर मन्दाग्नि ज्वर कुष्ट ग्रहणी कंठ रुज इन सब रोगों को नाश करता है ॥ अथ अस्य अनोपान: पेटफूले तौ मठा संग गुल्म में बेर काथ संग मल फोरने में दही वा जल अजीर्ण में उष्णोदक पेट रोग में अमला कठोदरादि में उष्ट्री दुग्ध अथवा गोतक्रमें वात रोग में सुरा मण्ड में दे अर्श में अनार रस के साथ दे दोनों विष सैंध्या के साथ दे यह नारायण चूर्ण दैत्य रूपी दुष्ट रोगों को हनने वाला है ॥

अथ अजीर्ण पर हबुषादि चूर्ण ॥

झाड़बेर । त्रिफला । त्रायमाण । पीपरि । चूक । निशोथ ।

पीत। पुष्प सेहुड़की जड़। कुटकी। वच। नीलकीपत्ती। सेवन। काला नमक। इन औषधियों को लेकर कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर इसको उष्णोदक अथवा गोमूत्र। अनार का रस। त्रिफला का रस वा मास रस। आदि किसीके साथ रोगी को जैसा उचित समझै दे तौ अजीर्ण प्लीहा गुल्म शोथ अर्श विषमाग्नि हलीमक कामल पांडु कुष्ट पेट फूलना उदर रोग आदि सब रोगो को दूर करता है॥

अथ शूलादि पर पंचसम चूर्ण ॥

सोंठि। हड़। पीपल। निशोथ। काला नमक। इन सब औषधियों को सम भाग लेकर कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर खाय तो बड़ा शूल पेट फूलना जठरसम्बन्धी अर्श आमवात इन सबको दूर करै॥

अथ नाराच चूर्ण ॥

पीपर १० मासे निशोथ ४ रुपये भर खांड़ पल भर इनसबको एकत्रकरि चूर्ण बनावै फिर कर्ष प्रमाण शहत के साथ खाय तौ पेट फूलना नाय गोटे उदर कफ पित्त शूल आदि सबको नाश करै॥

अथ प्लीहादि पर लवण चितयादि चूर्ण ॥

तीनोंलवण। दोनोंखार। सोंफ। सोवाबीज। अजमोद। ममरी। हाऊबेर। दोनों जीरे। मिरच। पीपरामूल। पीपर। हुरहुरा। कचूर। मगरैल। सोंठि। चीता। चव। बिड़ंग। अमलबेत। अनार। इमलीकी छाल। निशोथ। जमालगोटा। शतावरि। इंदूरन। भारंगी। देवदारु। अजवाइन। धनियां। तुंबरु। पुष्करमूल। बेर। हड़। येसब समान ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर अदरक और बिजौरे के रसमें भावना दे फिर इसको घी अथवा पुरानी मद्य अथवा उष्णोदक के साथ अथवा बेर के काथ मट्ठा ऊंटपय या दही के तोड़ के साथ ले तौ यकृति प्लीहा

कटिशूल गुदा कोख और हृदय रोग अर्श मन्दाग्नि मलस्तंभ गुल्म प्लीह उदररोग हिचकी पेटफूलना श्वास कास इन सबको दूर करता है अथवा वैद्य इनका घी बना कर दे तोभी ये सब रोग जांय ॥

अथ शूल पर तंबुरादि चूर्ण ॥

तुंबरू तीनोंलवण । अजवाइन । पोहकरमूल । नवाखार । हड़ । हींग । बिड़ंग । इन सब द्रव्यों को बराबर ले और निशोथ तीनभाग ले फिर कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर उष्णोदक अथवा बायब क्वाथ के साथ पिवै तौ सब शूल गुल्म पेटफूलना ये सब रोग दूर होंय ॥

अथ मन्दाग्नि पर चित्रकादि चूर्ण ॥

चीता । सोंठ । हींग । पीपरि । पीपरामूल । चव । अजमोद । मिरच । इन सबों को कर्ष २ भरि ले और दोनों खार । सेंधा । काला । पांगा । कटीला । सांभर । इनको तोल तोल भरले फिर सबका चूर्ण कर बिजौरे के रसमें बांटि धूप मेंसुखायले यह चूर्ण गुल्म ग्रहणी आम रोग को हरै अग्निको दीप्त करै रुचि बढ़ावै औरकफको नाश करै ॥

अथ मन्दाग्नि पर अग्नि दीपन चूर्ण ।

सेंधा नमक । पीपरामूल । पीपरि । बाबचीता । सोंठि । हड़ क्रमसे बढ़ाय कूट पीस छान चूर्ण करै जैसे सेंधा १ मासे तौ पीपरामूल २ माशे फिरइसी प्रकारसे बढ़ाते चले जाओ इसके खाने से सकल मन्दाग्नि नाश हो जाती है ॥

अथ बातादि पर अजमोद चूर्ण ॥

अजमोद । बिड़ंग । सेंधानमक । देवदारु । चीता पीपरामूल । सौंफ । पीपरि । मरिच इन सब द्रव्योंको कर्ष कर्ष प्रमाण ले और हड़ पांच कर्ष बिधारा दश कर्ष सोंठि एक कर्ष इन सब औषधिन को ले कूट पीस छानि चूर्ण करै फिर गुड़ मिश्रित करि उष्णोदक से पिये अच्छी तरहसे खायतो सूजन दूरहोय आमवात गांठिपीर गृध्रसी

बायु कटिपीड़ा पीठ गुदा जांघ पीर तूनी बायु प्रतूनी बायु बिश्वाची कफरोग बायु रोग ये सब रोग नाश होंय ॥

अथ शूलादि पर हिंग्वादि चूर्ण ॥

हींग। पाढ़ा। छड़। धनियां। अनार। चीता। कचूर। अजमोद। त्रिकुटा। हाऊबेर। अमलबेत। ममरी। इमलीकी छाल। जीरा। पुष्करमूल। बच। चाव। दोनों खार। पांचो नमक इन सब औषधियों को ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर भोजनादि अथवा पुरानी भंगमें खाय तौ बात कफका गुल्म कोष्ठबद्धष्टालिका हृदय पेडू पसुरी गुदा योनि आदिके सर्व शूलों को नाश करै और मूत्रकृच्छ्र पेटफूलना पांडु अरुचि हिचकी यकृत प्लीह श्वासकास गलरोग ग्रहणी अर्श इन परभी यह चूर्ण है और बिजौरे के रसकी सात भावना दे गोली बांध ले इससे बात कफरोग नाशहोय ॥

अथ अरुचि पर जवानी खांड़ चूर्ण ॥

अजवाइन। अनार। सोंठि। इमली की छाल। अमलबेत इन सबोंको चारि २ भाग ले और मरिच ढाई भाग। पीपर दश भाग। तज। काला नमक। धनियां। जीरा ये सब दोदो भाग ले और शर्करा ६४ भाग इन सबको कूट पीस छान चूर्ण बनावै इस चूर्ण में जो भाग कहा है वह भाग ४ माशे का होता है और इस चूर्ण के खाने से पांडु हृद्रोग ग्रहणी छर्दि शोष अतीसार प्लीहा पेटफूलना कोष्ठबद्ध अरुचि शूल मंदाग्नि अर्श जीभरोग गलरोग ये सब नाश होंय ॥

अथ अरुचि पर तालीसादि चूर्ण ॥

तालीस। मिर्च। सोंठि। पीपरि। वंश लोचन इन औषधियों को क्रम २ से १ कर्ष २ कर्ष ३ कर्ष ४ कर्ष ५ कर्ष ले और इलायची। तज ये आधा २ कर्ष ले खांड़ ३२ कर्ष ले फिर इनका चूर्ण बनाय खावै तो पाचन और रोचन करै और कास श्वास ज्वर छर्दि अतीसार शोष पेट-

फूलना । प्लीह । ग्रहणी । पांडु । इन सबको नाश करै ॥

अथ कामक्षय पित्तादिपरसीतोपलादि चूर्ण ॥

मिश्री १६ कर्ष वंशलोचन ८ कर्ष पीपल ४ कर्ष छोटी इलायची २८६ कर्ष तज १ कर्ष इसका चूर्ण करि शहत घी मिला चाटै तौ स्वास कास छई हाथपांव का तपना मंदाग्नि जीभसूखना पसुरीपीड़ा अरुचि ज्वर रक्तपित्त ये सब रोग नाश करै ॥

अथ ग्रहणी गुल्मपर लवण भास्कर चूर्ण ॥

पांगानमक ८ रु० भर कालानमक ५ रु० भर बिड़सेंधा । धनियां । पीपरि । पीपलामूल । कालाजीरा । पत्रज । नागकेसरि । तालीस । अमलबेत इन सबों को दो दो कर्ष ले मरिच । जीरा । सोठि कर्ष कर्ष भरि ले अनार ४ कर्ष भरि ले इलायची और तज पांच मासे इन सबों को एकत्र करि कूट पीस छानि चूर्ण बनावै फिर इसको एक शाण मात्रा मद्य मट्ठा अथवा दही के तोड़ के साथ दे तौ बात कफ गुल्म प्लीह पेट रोग छर्दि अर्श ग्रहणी कुष्ट कोष्ट बद्ध भगंदर सूजन शूल स्वास कास आमदोष हृदय रोग मन्दाग्नि आदि सबरोगों को दूर करता है और दीपन पाचन भी है इस चूर्ण को श्री भास्कर ने प्रथम सब लोगों के हित कहा है ॥

अथ बात पित्त कफ छर्दि पर एलादि चूर्ण ॥

इलायची । प्रियंगु । मोथा । बेर की मींगी । पीपरि । श्वेत चन्दन । लावा । लवंग । नागकेशर इन सबको एकत्र करि कूट पीस छान चूर्ण करै फिर इस में शहत और मिश्री मिलाय चाटै तौ बात पित्त कफजन्यछर्दि नाश करै ॥

अथ कुष्टपर निंब चूर्ण ॥

नीमके पंचांग का चूर्ण सूक्ष्म पीस कर १५ पल लोहभस्म । हड़ । बायवड़नींब । चीता । भिलावा । बिड़ंग । खांड । आंवरा । हल्दी । पीपर । मिरच । सोठि । बकुची । अमलतास ।

गोखरू इन सब औषधियों को पल पल भरि लेकर कूट पीस छानि चूर्ण बनावै फिर उसे भांगरे के रस में भावना दे फिर खैर और आसन सेर भर पानी में काढ़ा करि अष्टमांस रहनेदे फिर उससे उसकी भावना दे फिर सुखा चूर्ण रख छोड़ै फिर इसै एक कर्ष प्रमाण खैर आसन के क्वाथ अथवा दूध अथवा घी के साथ एक मास पर्यन्त ले तौ सब कोढ़ नाश करै यह रसायन है यह चूर्ण सबरोग नाश करता है ॥

अथ पुष्ट पर शतावरि चूर्ण ॥

शतावरि । गोखरू । किमाच के बीज । गुलसकरी । बरियारा । तालमखाना । इन सब औषधियों को बराबरि ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर गोदुग्ध से नित्य पिये तौ इसके प्रभाव से स्त्रीसे तृप्ति कभी न हो और जो स्त्री प्रसंग न करै तौ बली होय वरण श्वेत होय ॥

अथ पुष्टि पर अश्व गंधादि चूर्ण ।

नागौरी असगंध ४० तोलाभर विधासरा ४० तोला भर ले इनों का चूर्ण कर घृतके बरतन में रक्खे । फिर १० माशे दुग्ध में पिये तौ स्त्री से कभी तृप्ति न होय ॥

अथ धातु वृद्धि पर नवायसादि चूर्ण ॥

चीता । त्रिफला । मोथा । बिड़ंग । त्रिकुटा । इन सबोंको समान ले और पोलाद भस्म १।२ इनका चूर्ण शहत और घृत के साथ चाटै अथवा गो मूत्र या मट्ठा के साथ पिये तौ पांडु हृदि रोग भगंदर सूजन कोढ़ उदर रोग अर्श मन्दाग्नि अरुचि और क्रिमि आदि रोगों को नाश करै ॥

अथ स्तंभन पर अकरकरादि चूर्ण ।

अकर करा । सोंठि । कंकोल । केसर । पीपल । जायफल । लौंग । श्वेतचन्दन । इनको कर्ष कर्षभरिले फिर कूट पीस कर पल भर अफीम दे कपड़छान कर ले और सबकी बराबर खांड़ मिलावै फिर माशे भर शहतसे चाटै तौ

वीर्यस्तंभन करै पुरुष स्त्री को सुख देता है कामी पुरुष इस चूर्ण को रात्रि समय सेवन करै ॥

अथ चन्द्रकलाभिधं चूर्ण ।

चिरायता । कुटकी । मोथा । इन्द्रजव । सोंठि । मिरच । पीपल । इनके समान भाग ले और इन्द्रजवके वृक्ष की छाल का सोलहवां भाग ले और चीते की छाल के दो भाग ले फिर कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर इस चूर्ण की फंकी उससे दूना पुराना गुड़ पानी में मिला कर फंकी करै तौ पांडु रोग ज्वर अतीसार अरुचि कामला ग्रहणी बायगोला और प्रमेह ये सब रोग नष्ट होंय और रोगी सुखी होय ॥

अथ अन्य चूर्ण ।

सज्जी । जवाखार । खारी नमक । काला नमक । सेंधा नमक । सोंठ । मरिच । पीपल । चव । अजमोद । चीता । पीपलामूल । हींग । जीरा । सोंफ । इनसब को समान भाग ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर इसको गरम पानी के साथ अथवा झड़बेरी के बेरों के ओटे जलके साथ अथवा वातारक्त के साथ पीवै तौ हृदि रोग क्षुधा की मन्दता बायगोला अर्श संग्रहणी आदि सब रोगदूरि होंय ॥

अथ अन्य चूर्ण ।

सज्जी । जवाखार । पीपलामूल । पीपल । चव । चीत । सोंठि । मिरच । सेंधा निमक । सांभर निमक । खारीनिमक । समुद्र निमक । हींग । अजवाइन । इन सब को समान ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर इसमें अमलवेत अथवा बिजौरा नींबू अथवा पानी आमला इन तीनोंमें से किसी एक के रसकी भावना देके बनाय रक्खे यह चूर्ण अति दीपन पाचन है और कफबादी संग्रहणी और अर्श रोग आदि इन सबोंको नाश करता है ॥

अथ अन्य चूर्ण ।

चीता । बच । बेलगिरी । सोंठ । इन सबों को एकत्र

करि कूट पीस छानि चूर्ण बनावै फिर इस चूर्ण को तक्र के साथ लेने से दुष्ट संग्रहणी दूर हो जाती है ॥

अथ अन्य चूर्ण ॥

काला नमक। चीता। मिरच। इनके चूर्ण को तक्र के साथ पीने से संग्रहणी उदर रोग बायगोला अर्श क्षुधा की मन्दता और प्लीह ये सब रोग नाश होंय॥

अथ चिंतामणि चूर्ण।

जैतकेबीज। बरियाले की जड़। पदमाष। काह्न। देवदारु। त्रिफला। सोंठि। मिरच। पीपल। बिडंग। इन सबों को समान ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै फिर इस चूर्ण को विषम मधु घृत के साथ खाया करै तौ श्वास रोग और कांस रोग दोनों दूर होजांय ॥

अथ अन्य चूर्ण।

पीपल। पीपलामूल। बहेड़े का बक्कल। सोंठि। इन के चूर्ण को माक्षिक के साथचाटने से खांसी का रोग शांत हो जाय॥

अथ अन्य चूर्ण।

सोंठि। मिरच। पीपल। इन्हें सम भाग लेकर चूर्ण करै उस चूर्ण के समान गुड़ और दुगुना घी मिलाय के चाटने से श्वास का रोग बहुत शीघ्र नष्ट होता है ॥

अथ अन्य चूर्ण ॥

त्रिफला। गिलोय। चीता। रायसन। बायबिड़ंग। सोंठि। मिरच। पीपल। इन दशों द्रव्यों को बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बनावै जितना चूर्ण होय उसमें उसी हिसाब से शक्कर घोर कर इसका सेवन करैतौ खांसी का रोगजाय॥

अथ लोलिंबराज मिदं चूर्ण ॥

सोंठि के पांच भाग। पीपल के चारि भाग। अजमोद के तीन भाग। अजवायन के दो भाग। नमक का एक भाग। इन पन्द्रह भागों के तुल्य हड़ लेकर कूट पीस

छानचूण बनाय खाय तौ पेट की गुड़गुड़ाहट पेट के शूल आमके रोग बायगोला और मलके रोग हरै ॥

अथ अमलबेत चूर्ण ॥

संचल नमक १ पैसाभरि समुद्र नमक १ पैसाभरि सांभरि नमक १ पैसाभरि सेंधानमक १ पैसाभरि पीपल २ पैसाभरि पीपलामूल २ पैसा भरि स्याह जीरा २ पैसा भरि पतरज २ पैसाभरि नागकेसर २ पैसाभरि तीलल २ पैसाभरि मिर्च १ पैसा भरि जीरा सुपेद २ पैसा भरि सोंठि १ पैसा भरि अनार दाना १ पैसा भरि इलायची २ पैसा भरि लौंग १ पैसा भरि दाल चीनी २ पैसा भरि जवाखार २ पैसा भरि खुरासानी अजवाइन २ पैसाभरि लैंजी २ पैसाभरि त्रिफला ३ पैसा भरि मूली के बीज १ पैसाभरि अमलबेत कीगिरी काढ़ले इन सब औषधियों को कूट पीस गिरी में भरै फिर जितना खाली होता जाय उसमें नींबू निचोता जाय कभी खाली न होने दे तब सीधा सवाहै रहै प्रात घाम रात्रि छाया में सूखे तब ३ मासे खाय तौ उदर विकार सबही जायं और भूख लगे और हजम बहुत करे ॥

अथ संचल क्रिया ॥

संचल ऽ। भरि सेंधा ऽ। भरि जंगरा नमक ऽ१ सेर सांभल ऽ। भरि आमला ऽ१ सेर पीस छान गोमूत्र हांड़ी भरि चढ़ावै नीचेआंच दे शीतल होइ तब हांड़ीफोड़ फेंक दे खाइ रोग जाय सही ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र सवाई प्रताप
सिंह जी विरचिते अमृतसागर नाम ग्रंथे अनुभूत चूर्ण
कल्पना नाम एकोनविंशतितमस्तरङ्गः ॥

अथ बटी कल्पना माह ॥

बटी अर्थात् गोली कई नामोंसे प्रसिद्ध हैं उनमेंसे कुछ ये हैं बटिका। गुटिका। वटीमोदक। पिण्डी और गुण्डी इत्यादि यह गोली बिना आग के योगके गूगल से बंध जाती हैं और घृत से भी बंधती हैं इन गोलियों में मिश्री चौगुनी गुड़ दूना चूर्ण लिखे प्रमाण देना गुग्गल और घृत बराबर देना द्रव्य वस्तु दूनी देना इसी रीत को जितने सद्वैद्य हैं सब करते हैं इसके खाने का प्रमाण कर्ष मात्र है अथवा देह बल दोष देख कर जैसा उचित हो खिलावै ॥

अथ अर्शपर इन्दारु की गुटिका ।

इन्दारु। मोथा। सोंठि। जमालगोटा की जड़कीछाल। छड़। निशोथ। कचूर। बिडंग। गोखरू। चीता। बच। इन सबों को दो दो कर्ष ले और जमीकन्द आठ पल। निधास चारि पल। और भिलावां ४ पल द्रोण भरि पानी में औटै जब चौथाई रहै तब उतारि ले फिर छान करि उसका तिगुणा गुड़ दे पतकारे जब वह पककर नितरि उठै तब उसमें यह चूर्ण डालै ॥ चीता। निशोथ। जमाल गोटा की जड़। बच। ये सब पल पल भरि त्रिकुटा। इलायची। बड़ातज ये तीन तीन पल ले इनको पीस छान कर प्रस्थ भर घृत में पूर्वोक्त यह चूर्ण युक्तवं धने माफिक हो तैसा मिलावै तब बाहुशाल गुड़ सिद्ध होय फिर यह सर्वार्श गुल्म बातोदर आढ्यवायु नाक टपकना छई पीनस हलीमक पांडु प्रमेह ये सब नाश होय ॥

अथ कांस पर मरिचादि कुटिका ॥

मरिच। पीपरि। कर्ष कर्ष भरि यवाखार पांच माशे अनार ८ कर्ष गुड़ आठ कर्ष में चारि चार माशे की गोली बांधे इस गोली को मुख में धरे राखे इसके प्रभावसे सब खांसी दूर होय ॥

अथ श्वास पर गुड़ादि गुटिका॥

गुड़। सोंठि। हड़। मोथा की गोली जितने गुड़ में बंधै माशे भर की मुहमें राखे तौ सब श्वास कांस हरै इसी प्रकार से मुख में केवल बहेड़ा रखनेसे भी यह रोग जाय॥

अथ प्यास पर आवलादि बटी॥

आंवरा। कमल। कूटला। अट जटा इन्हैं पीस शहत में गोलीबांधि मुखमें राखैतौ महातृषा मुख सूखनादूरहोय॥

अथ सन्निपात पर संजीवनी गुटिका॥

बिडंग। सोंठि। पीपरि। हड़। आंवला। बहेड़ा। बच। गोखरू। भिलावां। शुद्ध सींगिया इन सबको बराबर ले गोमूत्रमें खरल करै फिर घुंघचिल समान गोली बांध अदरक के रस में खिलावै जो अजीर्ण होय तौ १ गोली दे जो बिसूचिका होय तौ २ गोली इसी प्रकार सांप के डसे को सन्निपात में चारि देवै इस बटी का नाम जीवनी अर्थात् मनुष्य को जिवाने वाली है॥

अथ पीनसादि पर त्रिकुटादि वटी।

त्रिकुटा। अमलबेत। बच। तालीस। दलचीता। जीरा। इमली की छाल। इन सबों को कर्ष २ भरि ले और तज पत्रज इलायची चारिचारि माशे ले और गुड़ कर्ष भरि इसका व्योषादि गुटिका नामहै पीनस श्वास कांस को नाश करती है रुचि बढ़ावै कंठ स्वर शुद्ध करै नाक पकना बंद करै यदि आम दोष हो तौ सोंठि और गुड़ की गोली देना अजीर्ण में गुड़ और पीपरि कब्जि में गुड़ और जीरा और अर्श में गुड़ और हड़की गोली देना॥

अथ अर्श पर वृद्ध दारु मोदक॥

बिधारा। भिलवां। सोंठि। पीसि गुड़में गोली बांधि देइ तौ छओं भांति के अर्श दूरि करै॥

अथ अर्श पर शूरनि बटिका।

सूखे सूरन का चूर्ण ३२ भाग चीता १६ भाग सोंठि

४ भाग मरिच २ भाग इन सब का चूर्ण करि गुड़में गोली बांधि खिलावैतौ सब अर्श नाश होय अथवा शूरण बिधारा सोलह २ भागले मुसली ८ भाग लेइ चीता भी ८ भागलेइ त्रिफला । बिड़ंग । सोंठि । पीपरि । भिलावां । पीपरामूल । तालीस । ये भिन्न भिन्न चारि २ भाग ले तज इलायची और मरिच ये दोदो भाग ले इन सबका चूर्ण करि दूनेगुड़ में गोली बांधि खिलावै तौ अग्नि प्रबल होय अर्श बात कफ जन्य ग्रहणी श्वास कांस क्षय प्लीहा पील पद शोथ प्रमेह भगंदरवालों का श्वेत होना ये सब दूरि होंय धातु और बुद्धि प्रबल होय यह रसायन है ॥

अथ कामलादि पर मंडूर बटी ॥

त्रिफला । त्रिकुटा । चाव । पीपरामूल । चीता । देवदारु । सोनामक्खी । हरदी । मोथा । मंजीठ इनको कर्ष कर्ष भरि ले और मूंडूर शोध करि सब से दूना ले अष्टगुणे गोमूत्र में पकाइ गोली बांधि मट्ठे के साथ खाय तौ कामल पांडु अर्श शोथ प्रमेह कष्ट कफरोग गठिया अजीर्ण प्लीहा इन सबकोनाश करै ॥

अथ चन्द्र प्रभा गुटिका ॥

कपूर । बच । मोथा । चिरायता । गुर्च । देवदारु । हल्दी । अतीस । दारुहल्दी । पीपलामूल । चीता । धनियां । त्रिफला । बच । बिड़ंग । गजपीपरि । त्रिकुटा । सोनामाक्खी । भस्म । सज्जी खार । जवाखार । तीनों नमक । सेंधा । काला और पांगाये द्रव्य चारि २ माशे निशोथ दात्यन । पत्रज । तज । इलायची । बंश लोचन । ये सब कर्ष कर्ष भरि ले औ लोहे की भस्म २ कर्ष ले इन सब का चूर्ण करि मिश्री ४ कर्ष शुद्ध शिलाजीत ८ कर्ष इन सबको एकत्र करि कूटि कर सुन्दर गुटिका बनावै यह चन्द्रप्रभा गुटिका सब रोगोंको नाश करै कास प्रमेह कृच्छ्र मूत्राघात पथरी विढबंध पेटफूलना शूल इन्द्री फूलना ग्रंथी अर्बुद

अंडवृद्धि कटि शूल श्वास कांस कुष्ट मेद अन्त्रवृद्धि पांडु कमलमेल मेद सर्वांग खजुरी प्लीह उदररोग भगंदर दंतरोग नेत्ररोग स्त्रीके ऋतुरोग पुरुषका धातु रोग मन्दाग्नि अरुचि बात पित्त कफ सब नाश करै बल करै धातु बढ़ावै यह रसायनि है १० माशे वा १६ माशे अथवा दोष बल विचारि कर खाय ॥

अथ गुल्म पर काकायन गुटिका ॥

अजवायन । धनियां । जीरा । मिरच । कृष्णकान्ता । अजमोद । मगरेला । भिन्न भिन्न चार २ भाग पृथक् ले भुनी हींग ६ भाग ले दूनों खार । पांचौ नमक । निशोथ ये सब आठ आठ भाग लेइ और दन्तूनि । कचूर । पुष्कर मूल । बिडंग । अनार । हड़ । चीता । अम्लबेत । सोंठि । ये सब सोलह भाग ले फिर इसका चूर्ण करै और बिजौरा के रसमें बटी बांधे फिर घृत । दूध । मद्य । नींबू का रस । उष्णोदक । इन के साथ काकायन । बनाकर वैद्य पिलावै गुल्मको नाश करै बात गुल्मको मद्यमें पित्त गुल्म को गोक्षीर संग कफ गुल्म को गोमूत्र के साथ त्रिदोष गुल्म में दशमूल के क्वाथ के साथ स्त्री के रक्त गुल्मको उष्टीदुग्ध संग देइ ॥

अथ बात रोग पर कैशोर गुग्गुल ॥

त्रिफला तीन प्रस्थ । गुर्च १ प्रस्थ इन सबको कूटि कर डेढ़ द्रोण जल में औटावै जब अर्द्ध जल रहै तब छानि कर शुद्ध गुग्गुल प्रस्थ चारि डालै फिरि लोह पात्रमें लोहे की करछी से घोटि गुड़ पाकसम गाढ़ा करि ये औषधि डालै आंवला । बहेड़ा । अर्ध अर्ध पल गुर्च १ पल त्रिकुटा ६ कर्ष बिड़ंग अर्ध पल दन्तूनि १ कर्ष निशोथ १ कर्ष इन सब को गुड़पाक में सानि पिण्डबांधि घीके पात्र में धरै फिर इसकी गोली पण प्रमाणदे अथवा दोष विचारि कर दे और इसका अनोपान तप्तवारि दुग्ध

मंजीठ क्वाथ अथवा वैद्य जो उचित समझै उसके साथ देतो सब कुष्ट जांय त्रिदोष जन्य वात रक्त जाइ सब तरह के व्रण गुल्म प्रमेह पिड़िका प्रमेह उदररोग मन्दाग्नि कास सूजन पांडु आमरोग ये सब रोग इसके खाने से निस्सन्देह नाश होंय यह भी एक रसायन है इस क्वाथ को कैशोरक रिषीन कहा है इस कारण से इसका नाम किशोर गुग्गल है यह गुग्गुल कांतिप्रद है और रसादि क्वाथ के साथ खाने से नेत्र रोग दूर होता है और वरुणादि क्वाथ के साथ गुल्मरोग दूरि करै और खदिरादि क्वाथ के साथ व्रण रोग और कुष्ट दूरि करै खट्टी तीक्ष्ण मैथुन श्रम घाम क्रोध इन सबको त्यागि करे और संयम बहुत करै ॥

अथ भगंदर पर त्रिफला गुग्गल ।

त्रिफला चूर्ण ३ पल पीपल का चूर्ण पल भर शुद्ध गुग्गल ५ पल इनसबको एकत्र करि गोली बांधि रोगी की अग्नि विचार के देतो भगन्दर गुल्म शोथ औ अर्श दूरि होंय ॥

अथ प्रमेह गोक्षुरादि गुग्गल ।

गोखरू २८ पल छै गुने पानी में काढ़ा करि अर्धशेष ले फिरि सात पल गुग्गल डालि पकावै जब गुड़ पाकसा हो तब आगे लिखी हुई द्रव्यों को उसमें डालै त्रिफला। त्रिकुटा। मोथा। ये सातौ पल पल भरि मिलाय पिण्डीकर गोली बांधे फिरि प्रमेह मूत्र कृच्छ्र प्रदर मूत्राघात वात रक्त वात रोग शुक्र रोग पथरी इन सबको नाश करै ॥

अथ कुष्ट पर त्रिफला मोदक ।

त्रिफला ८ पल भिलावा ४ पल बकुची ५ पल विगंड ४ पल लोह भस्म। निशोथ। गुग्गल। शिलाजीत। सब एक एक पल। पुष्करमूल। अर्द्ध पल। चीता अर्द्ध पल। मरिच २ शाण। सोंठ। पीपरि। मोथा। तज। इलायची। पत्रज। केसरि इन सब को शाण शाण भरि ले फिर चूर्ण करि सब चूर्ण के

समान खांडले पाक करि चूर्ण डाल गोली बनावै गोलीका प्रमाण पल भरि है फिरि अग्नि बल देखि रोगी को खिलावै तौ सब कुष्ट नाश करै त्रिदोष सर्व आमरोग भगन्दर प्लीहा गुल्म जिह्वा कंठरोग ग्रीव पीठि ये सब रोग नाश होंय शरीर के नीचे के रोगों में भोजनान्त औषधि देना मन्दाग्नि जनित में भोजन के मध्य देइ शिवबन्धी रोगों में भोजनान्त देना ॥

अथ गंडमाला पर कचनार गुग्गल ॥

कचनार की छाल १० पल त्रिफला ६ पल त्रिकुटा ३ पल वरुण १ पल इलायची । पत्रज । कर्ष कर्ष भरि इन सब को एकत्र करि चूर्ण करै फिरि सर्व चूर्ण समान गुग्गल पीस करि चूर्ण मिलाय पिंड बनावै फिर ४ माशे की गोली बनाइ रोग और औषधि बल देखि रोगी को प्रात समय दे तौ गंडमाला अपची अर्बुद घाव ग्रन्थि कुष्ट भगंदर आदि सर्व रोगों को नाश करै और इसका अनोपान मुंडी रस अथवा हड़के क्वाथ अथवा उष्णोदक के साथ है ॥

अथ धातु पुष्ट पर माषादि मोदक ॥

माश अर्थात् उर्दकी दाल को धोइ चूर्ण करि ले गोहूंका चूर्ण यव की गूदी का चूर्ण सांठी चावर का चूर्ण पिपरी चूर्ण सब पल पल भरि ले फिर सब चूर्ण का आधा घृत लेकरि भूजै फिरि चूर्ण के समान खांड़ले तब सब का दूनत जल डारि मंद मंद आंच दे घोटै जब सिद्धि होय तब पल पल भरि के लड्डू बांधि संध्या समय खाय कर उसके ऊपर से चारि पल दुग्ध पिये फिर खार और खटाई दो रस न खाय स्त्री प्रसंग करै तौ वीर्य न द्रवै देह पुष्ट रहै ॥

अथ सूरन वटिका ॥

सुखाजमीकंद ८ भाग चीतेकीछाल ४ भाग हड़ ५ भाग सोंठि ५ भाग मिरच । पीपल २ भाग गुड़ १४ भाग ले गोली बनावै गोली रुचि की देने वाली है और मंदाग्नि

बवासीर कब्जियत तथा उदर रोगों को दूर करती हैं तैसे ही गीले पीलू के फलों के खाने से बवासीर कृमि संग्रहणी गुल्म ये रोग दूरि होंय ॥

अथ आदित्य बटी ।

चौपाई ॥

बच औ सोंठि हींग विष आन । जीरा मिर्च चीत तज जान ।
सम करि भृंग राज रस लीजै । ताहि एक दण मर्दन कीजै ।
चना सरिस गुटिका तेहिकरै । आदित बटी नाम शुभ धरै ।
बात रोग हिय रोग बहावै । अष्ट शूल अरु गुल्म नशावै ।
पचै अन्न अति अग्नि बढ़ावै । अर्चमान को खोजि घटावै ।

अथ कांस श्वास गुटिका माह ।

मोथा । सोंठि । हरीत की । इन तीनों को पीस करिगोली बांध और उसे तीन दिन तक मुख में रक्खा करै और से थूरा करै तौ श्वास रोग और कांस रोग ये दूरि होंय ॥

अथ लवंगादि गुटिका माह ।

लौंग । मिरच । बहेड़े का बक्कल । इन तीनों के समान भाग ले करि कूट पीस करि इकट्ठे करि ले और इनसब के समान खैरसार भी पीस करि ले ले इसके पीछे बबूल की छाल को औटा करि उसका पानी गेर कर उसकी गोली बांध ले फिर उस गोली के खाने से आठ घड़ी के पीछे सब प्रकार की खांसी को दूरि करि रोगी को सुखी करता है ॥

अथ सन्निपात पर गोली ।

लौंग । जायफल । जाविची । तज । पत्रज । जमालगोटा । भुना सुहागा । हड़का छिलका । घृतकी भुनी ऊई हींग । इन सब औषधों को धेला धेला भरि ले फिरि कूट पीस कपरछान करि सैंजने के रस में गोली बांधे फिर जो एक गोली गरम पानी के साथ खाय तौ दस्त लगै पेटका भारी-

पन जाय ज्वर और शीत जाय जो इस गोली को १० वर्ष पर्यन्त खाय तौ कुष्ट भी जाय ॥

अथ सन्निपात पर दूसरी गोली ॥

मिरच ५ टं० विष २ टं० इनको कूटि धेला भरि बच ५ धेला भरि सोया इनको कपर छान करि अदरक के रसमें २ पहर पर्यन्त खरल करै तिस पीछे १ रत्ती प्रमाण गोली बनावै फिर १ गोली देय तौ सन्निपात जाय ॥

अथान्य वटिका ॥

अकर करहा १ टं० हड़कीछाल १ टं० विष १ टं० मिरच ३ टं० बच ७ टं० वायविडंग ७ टं० बहेड़े की छाल ऽ॥ सेर इन सब औषधियों को कपर छान करि ऽ॥ सेर बहेड़े की छाल के रसमें १ रत्ती प्रमाण गोली बांधे फिरि १ गोली दे तौ सन्निपात दूरि होय और बात खांसी गला माथे का शूल हड़फूटनि ये सब रोग जांय ॥

अथ दाह युक्त अतीसार पर गोली ॥

जाविती । जायफर । नागकेसरि । लोंग । अफीम । इन सब औषधियों को एक एक टं० ले फिरि महीन पीस पानी में एक रत्ती प्रमाण गोली बांधि जीर और सोंठि के अनोपान से खवावै तौ अतीसार दूरि होय और दाह मिटै ॥

अथ अतीसार पर लीलावती गोली ॥

बच । रूमीमस्तंगी । अनार की कली । बंश लोचन । आम की गुठिली । लोध । मुलहटी । धायके फूल । मोच रस । कुड़े की छाल । जायफर । बबूर की कली । माईं ये सब औषधि धेला धेला भरि ले और इन सब से दूना खैर ले और खैर से द्विगुणकुल्हड़ा के बीज ले इन सब औषधियों को कपरछान कर पोस्त के पानी में चारि चारि माशे की गोली बांधे फिर १ गोली चावल के धोवन के साथ दे तौ सात प्रकार का अतीसार जाय पथ्य दही और भात है ॥

अथ अजमोदादि गुटिका ॥

अजमोद ɔ। भरि। हड़। बहेड़ा। आंवरा। सोंठि। सुलतानी। बिदारीकंद। धनियां। मोथा। मोचरस। गजपीपरि। लौंग। जायफर। पीपरि। चीतकी छाल। अनार दाना। भारंगी। कमल गट्टा। मिर्च दोनों जीरे। कुटकी। अजवायन। पीपरामूल। रेणुका। वायबिडंग। बच। कायफर। पित्तपापड़ा। तिधारा। दतूनियां। कुरदाना सार। ये सब औषधि कपरछान करै तिसपीछे बीस बर्ष का पुराना गुड ɔ१ सेर भर ले पाक करि सब औषधि मिलाय दो दो पैसा भरि की गोली बनावै फिरि एक गोली गरम जल से प्रभात समय खाय तौ कछुई और पेट का भारी पन जाय और उदर बिकार जाय ॥

अथ अपर अजमोदादि गुटिका पुष्टि पर ॥

अजमोद। हड़। बहेड़ा। आंवला। बिदारीकन्द। सोंठि। धनियां। मोचरस। मोथा। गजपीपरि। लौंग। जायफर। पीपरि। सुलतानी। विजया। अनारदाना। दोनों जीरे। चित्रक। भारंगी। कमलगट्टा। कौंच के बीज। मुलहटी। शिलाजीत। काकड़ाशृंगी। केसरि। नागकेसरि। पोहकरमूल। शतावरि। ये सब औषधि बराबरि पैसा पैसा भरि ले कपरछान करि तिसपीछे पांच सेर गौकादूध मगाय औटावै जब एक सेर शेष रहै तब एक सेर खांड और सब औषधि मिलाय २ पैसे प्रमाण गोली बांधे फिर एक गोली नित्य खाय तौं बल बढ़ै पुष्टता अधिक होय ॥

अथ जमालगोटे की गोली आमबात पर ॥

जमाल गोटा धेलाभरि। सज्जी। सांभरिनमक। सोंचर नौन। सेंधा नोन। धेला धेला भरि ले सोंठि ५ टंक गौका दही ɔ२ सेर ले इन सब औषधियों को कपड़छान करि दही डारि आंवरे के प्रमाण गोली बांधे १ गोली

प्रभात खाय तौ आमबात पेट का भारीपन देह के शोथ जांय और दोनों समय खाय तौ पेटके कृमि जांय ॥

अथ भूख बढ़ने की गोली ॥

सेंधा नमक। हड़। सज्जी। जवाखार। सोंचर नमक। सांभरि नमक। खारी नमक। सोंठि। जीरा। मोथा। अजवाइन। पीपरि। मिरच। चीते की छाल। अजमोद। बायबिड़ंग। धनियां। तितिरीक। ये सब औषधि पैसापैसा भरि ले कपरछान करि चूक के रसमें और अदरक के रस में धेला धेला भरकी गोली बांधे फिर एक गोली नित्य खाय तौ अन्न बहुत पचै बात दूरि होय भूख बढ़ै ॥

अथ कफऔरभूखपर चित्रकादिगोली ॥

चीतेकीछाल। पीपरामूल। अजवाइन। भुनासोहागा। पांचौ नमक। सोंठि। पीपरि। मिरच। हींग। अजमोद। ये सब औषधि बराबरि ले कपरछान करि बिजौरा नींबू के रसमें धेला धेला भरि की गोली बांधे फिर १ गोली खाय तौ कफ दूरि होय और भूख बहुत लगै अन्न बहुत पचै ॥

अथ मुख पाक पर खैरसार गोली ॥

जायफल। कस्तूरी। भीमसेनीकपूर और सुपारी इनसब के बराबर खैरसार ले फिर इसै महीन पीस गोली बनाय मुखमें धरै तौ मुखके सब रोग दूरि होंय अथवा खैरसार। जायफल। भीम सेनी कपूर। दक्खिणी सुपारी। तज। पत्रज। नागकेसरि। इलायची। कस्तूरी। ये सब बराबरि ले महीन पीस खैरसार के काढे में चने प्रमाण गोली बनावें एक गोली मुखमें राखै तौ जीभ ओंठ दांत मुख गला तालू इन सब के रोग दूरि होंय ॥

अथ पाचक की गोली ॥

पाव भर आककी मुंह मुंदी कली पावभरि मिरच। सेंधानमक २ पैसा भरि इन सबको मिलाय महीन पीस

झरबेरी के बेर प्रमाण गोली बनावै और १ गोली जल के साथ खाय तौ अजीर्ण अफरा आदि उदर रोग दूरि होंय और भूख बहुत बढ़ै ॥

अथ शंख बटी गोली ॥

शंख को सातबार तपाय मट्ठा में बुझावै तौ शंख की भस्म होय फिरि शेष भस्म छटांक भरि सोंठि आधपाव जीरासफेद २ ट० भरि चौकिया सुहागा २ ट० भरि पोदीना २ट० भरि अमलबेत २ट० भरि जवाखार १ट० भरि जरेष्क। २ट० भरि भूनीहींग पैसा भरि सेंधा नमक २ट० भरि कचलोन२ट० भरि काला नमक २ट० भरि इन सबको महीनपीस कपरछान कर ऽ॥ सेर सहजने के रसमें घोटै तिस पीछे ऽ॥ सेर नींबू के रसमें घोटै फिर झरबेरी के बेर समान गोली बनावै और एक गोली प्रात काल तथा संध्या समय खाय तौ अफरा आदि उदर रोग सब दूरि होंय और पाचन होय और भूख की वृद्धि निस्संदेह होय ॥

अथ गन्धक बटी ॥

शुद्धगन्धक २॥ टंक चित्रक २ टंक कालीमिरच २टं० पीपरि २ टंक जवाखार २ टंक सेंधा नमक २ टंक कालानमक १ टं० सांभरि नमक १ टं० इन सबको पीस नींबू के रस में ७ दिन खरल करै तिस पीछे १ टं० प्रमाण गोली बनाय १ गोली जलके साथ ले तौ अजीर्ण शूल आम का दोष वायगोला अफरा ये सब रोग निस्संदेह तत्काल दूरि होंय ॥

इति श्रीमन्महाराजा धिराज महाराज राजेन्द्र
श्री सवाई प्रतापसिंह जी विरचिते अमृत
सागर नाम ग्रंथे अनुभूत बटी
कल्पना निरूपणं नाम त्रिंशतितमस्तरङ्गः ॥ * ॥

अथ लेपन विधान ॥

लेप के तीन नाम हैं लिप्त लेप और लेपन और सुखलेप दोषघ्न विषघ्न और वर्ण प्रद हैं इन का प्रमाण तीन भांति पर है जो लेप अंगुल भरि मोटा हो वह दोषघ्न कहलाता है और पौन अंगुल मोटे लेपको विषघ्न कहते हैं और अर्द्धांगुल लेपको वर्णप्रद कहते हैं और लेप रोग को हरते हैं और सूखे क्रांति को दूर करते हैं ॥

अथ दोषघ्न लेप ।

गदापुरैना । देवदारु । सोंठि । सिर्स । सहिजन । तुचा । इन पांचो को सम भाग ले कांजी पर पीसि सूजन पर लेप करै तौ सूजन दूरि होय और बहेड़े की मींगी के लेप से भी दाह पीड़ा दूरि होय ॥

अथ दशाङ्ग लेप ।

सरसों । मुरैठी । तगर । लाल चन्दन । इलायची । मासी । हर्दी । दारु हर्दी । कूट । नेत्रबाला इन दशों को सम भाग चूर्ण करि पंचमांश घृत मिलाय पानी में पीसि लेप करै तौ विसर्प विष दोष विस्फोटक सूजन दुष्ट फोड़ा ये सब नाश होंय ॥

अथ विषघ्न लेप ।

बकरी के दूधको तिलके साथ पीसकरि मक्खन मिलाय लेप करै अथवा काली मिट्टी और तिलका लेप करै तौ विष सम्भव सूजन भिलाव सूजन ये दूर होंय ॥

अथ अन्य लेप ।

करियारी । अतीस । कटु । दूधिया । कटु तरुई । मूरी तीनों के बीज पांचो के समान कांजी में पीस करकीट दंश और विस्फोटक पर लगावै तौ इनका दोष मिटै ॥

अथ क्रांति कारक लेप ॥

रक्त चन्दन । मंजीठ । कूठ । मालकांगुनी । बटाकुर । मसूर । इन सब को समान ले जलमें पीसि लेप करै तौ

व्यंग रोग मिटै और क्रांति बढ़ै अथवा बीज पूर की जड़ घृत मशिल गोमय रस मिलाय लेप करै तौ क्रांति बढ़ै और व्यंग रोग दूरि होय ॥

अथ तरुण पिटिका पर लेप ॥

जो तरुण मनुष्य के मुखपर छोटी छोटी पिरकी उभरती हैं उनको तरुण पिटिका कहते हैं। अथ लेप॥ लोध और धनियां को पीसि लेपकरै अथवा गोरोचन और मिरच पानी में पीसि लेप करे अथवा सरसों वच लोध और सेंधव ये सम भाग ले जलमें पीसि लेप करै तो मुंहपर तरुण पन की पिटिका अच्छी होंय ॥

अथ व्यंग रोग पर लेप ।

अर्जुन की छाल वा मंजीठ वा श्वेत घोड़े के नखभस्म आदि मेंसे कोई द्रव्य ले सहत संयुक्त लेप करै तौ व्यंग रोगजाय॥

अथ मुखपर की झांई पर लेप ।

मदार के दूध में हल्दी को घिसकर लगाने से बहुतदिन की भी हुई झाईं निश्चय दूरि होंय ॥

अथ तरुण पिटिका पर लेप ।

बटकापीलापत्र । चमेली । रक्तचन्दन । कूठ । दारुहल्दी । और लोध इन सब को पीसि लेप करै तौ तरुण पिटिका व्यंग और झाईं दूरि होंय ॥

अथ रूखी पर लेप ।

पुराने तिल वा उसकी लकड़ी कुक्कुटबीठ दोनों गोमूत्रमें पीस लेप करै तौ रूखी दूर होय अथवा खैर नीम नासुन तीनों की छाल गोमूत्र में पीसि लेप करै तौ रूखी दूरहोय ॥

अथ दारुण रोग पर लेप ।

चिरौंजी । मुरेठी । कूट । माख । सेंधव इन सब को समान भाग ले पीस कर शहत मिलाय लेप करै तौ दारुण रोग दूर होय अथवा खस खस को दूध में पीसि लेप कर

अथवा आम की बिजली औ छोटीहड़ दूधमें पीस लेप करै तौ दारुण रोग नाश होय ॥

अथ इन्द्रलुप्त पर लेप ॥

कड़ुए परवल की पत्ती के रसको तीन दिन लेप करैतौ बादखोरा दूर होय अथवा भटकटैया और शहत लेप करै अथवा घुंघुची के पत्र वा फल का रस शहत के साथ लेप करै अथवा भिलावे का रस और शहत दोनों को लेपकरै तौ बादखोरा दूरहोय ॥

अथ केश वर्द्धन लेप ॥

गोखुरू और तिल के पुष्प दोनों को बराबर ले चूर्ण कर फिर समान घृत और शहतमें फेंट कर लगावै तौबार बढ़ैं

अथ बालों के उगने पर लेप ॥

हाथी दांत को जलाइ रसोंत और बकरी के दूधमें पीस लेप करै तो जहां बार भी न हों यथा हथेली वहांभी जमें

अथ इन्द्रलुप्त पर द्वितीय लेप ॥

मुरेठी । कमल । दाख तीनों को घृत तिलका तेल और गौ के दूध में लेप करै तौ बादखोरा दूर होय अथवा चतुष्पद चर्म रोम नख सींग और हाड़ इनकी भस्म तिलकेतेल के साथ लेप करै तौ नष्ट बारभी जमें ॥

अथ कृष्ण करण लेप ॥

इन्द्रायन के बीजका तेल पाताल यंत्र से निकार सपेद बालों पर लगावै तौ काले हों अथवा लोह चूर्ण भंगरा। त्रिफला । कालीमिट्टी इन सबको चूर्ण करि ऊष्ण रस में सानि मास भरि राखि कुछ दिनों लेप करै तौ अकाल के स्वेत बाल काले हों अथवा आंवले ३ हड़ २ बहेड़ा १ आमकी बिजुली ५ लोह चूर्ण एक कर्ष ले सबको कढ़ाई में खूब घोटै और उसको दिन राति उसी में रहने दे और फिर लेप करैतौ स्वेतकेश काले हों अथवा त्रिफला । तिल केपत्ते । लोहेका चून और भंगरा सबको सम भागले बकरे

के मूत्र में पीस पके हुयेवालों पर लेप करै तौ वाल काले होंय अथवा त्रिफला । लोहकाचूर्ण । अनारकीछाल । कमलकी वाल इनको पांच पल ले और भंगरे का रस छः प्रस्थ निचोड़ि उसमें पूर्वोक्त द्रव्य एकत्र करि लोहे की कढ़ाईमें सूक्ष्म करि घोटै और एकमास तक उसमें राखै तिस पीछे निकालि बकरी के दूध में पीस श्वेत वालों पर लेप करै और अरण्ड के पत्ते बांधै फिर रात्रि भर बंधे रहने दे और प्रभात स्नान समय धोय डालै इस प्रकार से तीन दिन लेप करै तौ सफेद वाल काले होंय ॥

अथ लोमशातन प्रकार ॥

अथ बाल गिराने का लेप ॥

शंख चूर्ण दो भाग । हरिताल एक भाग । मैनशिल अर्द्ध भाग इन सब दवाइयों को पानीमेंपीस जहां के बाल गिरानेहों वहां लेप करि दे और बाकी बालों को कपड़े से ढकदे फिर लेप के पहिले बाल दूरकरि उसकी जगहमें यह लेप सात बार करै तब सब बार गिरैं और फिर न होंय अथवा हरताल । शंख चूर्ण । पलास क्षार । दो दो भाग ले केलेके दण्ड अथवा आक पत्र के रस में पीस लेप करै तौ बार गिरिजांय यह लेप बार गिराने को अच्छा है ॥

अथ सपेद कुष्टपर लेप ॥

पीली चमेली । गज पीपरि । कासीस । विड़ंग । मैनशिल गोरोचन । सेंधव इनसबको बराबर ले गौके मूत्र में पीस लेपकरै तौसफेद कुष्ट दूरि होय ॥ अथवा काकठोंठी । कूट । पीपरि । इन सबको समानले खसीके मूत्र में पीस लेप करै तौ श्वेत कुष्ट दूर होय अथवा बकुची । अमलवैत । सलाष । कठगूलरी । पीपरि । रसौत । लोहचून । कालेतिल । आठों को सम भाग ले गोपित्त में पीस लेप करै तो श्वेत कुष्ट दूरि होय ॥

अथ सेहुंआं लेप ॥

आंवरा । राल । जवाखार । इन सबको सोबीर अथवा कांजीमें पीस लेप करै तो सेहुंआं दूर होय वा दारुहरदी । मूरी के बीज । हरताल । देवदारु । और पान ये सब कर्ष२ भरि ले और शंख चूर्ण । शाणभर ले पानी मेंपीस लेप करे तौ सेहुवां दूरि होय ॥

अथ नेत्र लेप ॥

हड़ । सेंधव । गेरू । रसौत । चारों को समान ले पानी में पीस पलक पर लेप करै तौ सब नेत्र रोग दूरि होंय ॥ अथवा रसौत । सोंठि । मिर्च । पीपरि । इन चारों को समान ले पानीमें पीस गोली बनाइ पलक पर लेप करे तौ नेत्रों की खुजली और गुहांजनी और छोटी छोटी पिड़की दूरि होंय ॥

अथ खुजली पर लेप ॥

चकौड़ के बीज । बकुची । सरसों । तिल । कूट । हरदी । दारुहरदी । और मोथा इन आठों को सम भाग ले मट्ठे में पीस लेप करै तौ खुजली । दाद । बिचर्चिका । पायफूटना आदि रोग दूर होंय ॥

अथ सूखी खाज पर लेप ॥

चोक । बिड़ंग । शिंगरफ । गन्धक । चौकोड़ के बीज । कूट । सिंदूर इन सातों को समान ले नीम के पत्ते धतूरके पत्ते और पान तीनों का रस निकाल जुदे २ पूर्वोक्त द्रव्य रसमें पीस लेप करै तौ सूखी खाज दाद विचर्चिका पद फूटना खाज रकस कुष्ट ये सब नाश होंय ॥

अथवा दूब । छोटी हड़ । सेंधव । चकवड़के बीज । और कटसरैया इन पांचों को मिट्टी में पीस लेप करै तौ खुजली दाद आदि दूरि होंय ॥

अथ रक्त पित्त पर लेप ॥

लालचन्दन । खस । मुरेठी । बरियारा । व्याघ्रके केश और

कमल ये छओं सम भाग ले पानी में पीसि लेप करै तौ रक्त संबन्धी सिरके रोग जांय ॥

अथ उदर रोग पर लेप ॥

सरसों । हरदी । कूट । चकौडके बीज और तिल ये सब समान ले कड़ुये तेल में पीसि लेप करै तौ शीत पित्त सम्बन्धी उदर रोग दूरि होंय ॥

अथ बात विसर्प पर लेप ॥

रासन । नील कमल । देवदारु । रक्तचन्दन । मुरेठी और बरियारा इन सबको बराबर ले दूधमें पीसि घृत मिलाय लेप करै तौ बात बिसर्पि दूर होय ॥

अथ पित्त बिसर्प पर लेप ॥

कमल की नाल । रक्त चन्दन । लोध । खस कमल । कोकाबेली । सरिबन । आंवरा । जंगीहड़ । येसब बराबर ले पानीमें पीसि लेप करै तौ पित्त बिसर्प अवश्य दूर होय ॥

अथ कफ बिसर्प पर लेप ॥

त्रिफला । पद्माष । खस । धवकेफूल कनेरमूल और जवासा ये सब समले पीसि लेप करैतौ कफ बिसर्प दूर होय ॥

अथ पित्त वात रक्त पर लेप ॥

सोर फली । नील कमल । पद्माष । सरसों के फूल इनका चूर्ण करि घृतको सौ बार धोय मिलाय खूब फेंट करि लेप करे तौ बात रक्त जाय ॥

अथ नाक रक्त श्राव पर लेप ॥

आवले को घृत में भूजि कांजी के पानीमें लेप करै तौ नाक से रुधिर गिरना बंद होय ॥

अथ बातज शिरः पीड़ा पर लेप ।

कूट । वा मुचकुंद पुष्प को कांजी के जलमें पीस रंडका तेल । मिलाय मस्तक पर लेप करे तौ वात जन्य सिर की पीड़ा मिटे अथवा देवदारु । तगर । कूट । सुगंध वाला । पांचो को समान ले कांजी में पीस रंड का तेल मिलाय मस्तक पर लेप करे तौ बात संभव शिरः पीड़ा दूर होय ॥

अथ पित्तज शिरो रोग परलेप ।

आंवरा । कसेरू । सुगन्ध बाला । कमल । पद्माष । रक्त चंदन दूबजड़ । खस । नरकट की जड़ । इन सब को बराबर ले पानी में पीस माथे पर लेप करै तौ पित्त संबंधी और रक्त पित्त सम्बन्धी मस्तक पीड़ा दूरि होय ॥

अथ कंसमव शिरः पीर पर लेप ।

सेवड़ीं के बीज । तगर । बाल छड़ । मोथा । इलायची अगर । देवदारु । जटामासी । रासन और रंडमूल । ये सब द्रव्य पानी में पीसि गरम करि माथे पर लेप करे तौ कफ सम्बन्धी पीड़ा दूरि होय ॥

अथ सूर्यावर्त पर लेप ।

सरिवन । कूट । मुरेठी । पीपरि । नील कमल इन सब को कांजी में पीस रेंड का तेल मिलाय लेप करै तौ सूर्यावर्त अर्थात् आधा सीसी दूर होय ॥

अथ शङ्खक अनन्त वात और सर्ब शिरो रोग परलेप ।

छतारी । नील । कमल । दूब । कारे तिल और गदा पुरैना पांचो को समान ले पानी में पीस लेप करैतौ शंखक अनंतवात सब शिरः पीड़ा मिटै ॥

अथ पित्त शोथ परलेप ।

मुरेठी रक्तचंदन । मुर्री । नरकट की जड़ पद्माष खस । नेत्रवाला कमल ये सब समान ले पानीमें पीसि लेप करै तौ पित्त शोथ नाश होय ॥

अथ कफ शोथ पर लेप ।

पीपरि । पीना । सहिजने की छाल । बालू वा खांड़ इन सबको गोमूत्र में पीस गुन गुना लेप करै तौ कफ शोथ दूर होय ॥

अथ आगंतुक और रक्त शोथ परलेप ।

हरदी दारुहरदी । रक्त और श्वेत चंदन हड़ । दूब । गदा पुरैना । खस । पद्माष । लोध । गेरू । रसौत येसब समान भगा

ले पानीमें पीसि आगंतुक और रक्तज शोथ पर लेप करै तौ उक्त रोग दूर होंय ॥

अथ व्रण पकाने पर लेप ॥

सनकी जड़। मूरी। सहिंजन के बीज। तिल। सरसों। यव। लोहकीट। अरसी ये आठों समान ले पानी में पीसि लेपकरै तौ व्रण पके

अथ व्रण फोरने पर लेप ॥

लटजीराकी जड़। चीते की जड़। अथवा छाल। सेहुंड़। मदारकादूध। गुड़। भिलावा। कसीस। सेंधव ये औषधि दूध में पीसि व्रण पर लेप करै तौ अवश्य फूटे—अथवा करंजकीमींगी। भिलावा। दतूनि मूल कीछाल। चीता। कनेर ये पांचों कबूतर वा कुंज वा गिद्ध आदि की बीट के समान ले लेप करेतो फोड़ा फूटै अथवा सज्जी। जवाखार। दोनो का लेप करै अथवा चौक की जड़की छाल ले लेप करै तौ फोड़ा फूटै ॥

अथ व्रण शोधन लेप ॥

तिल। सेंधव। मुरेठी। नीमकेपत्ते। हल्दी। दारुहल्दी। निशोथ। ये सब समान भाग ले चूर्ण करि घीमें घेपि फूटे हुये फोड़े पर लगावे वा इनके कल्ककीटिकिया बनाइ घीमें छोड़ जलावै जब टिकिया जलि जाय तब उतारि टिकिया फेंक दे और घी राखि छोड़े इन दोनो प्रकार से व्रण शुद्ध होता है ॥

अथ व्रण शोधन पर लेप ॥

नीमके पत्ते। घृत। मधु। दारु हरदी। मुरेठी। और तिल इन सबको पीस लेप करै तौ व्रण शुद्ध होय और पूर आवे ॥

अथ क्रमि निवारण लेप ॥

करंज। नीम। बकाइन। तीनों को घिस क्रमिके स्थान में भरे तौ क्रमि मरि जांय वा लहसुन वा हींग भरे वा हींग और नीम के पत्ते भरे तो तौ क्रमि नाश होंय ॥

अथ ब्रण शोधन रोपण परलेप ॥

नीम के पत्ते तिल दतूनि की जड़ सेंधव ये सब समान पीसि सहत यक्ता लेप करे तौ ब्रण शुद्ध हो पूरि आवै ॥

अथ पेटपीर परनाभि लेपन ॥

मैनफल । कुटकी । कांजी में पीस कुछ गरम करि नाभिपर लेप किये से पेट शूल मिटै ॥

अथ बात बिद्रधी पर लेप ॥

सहिंजन की छाल । बकायन के पत्ते । रेंड़मूल । यव । गेहूं । मूंग ये सब बराबर पीसि सुखोष्ण लेप करै तौ बिद्रधी दूर होय ॥

अथ पित्त बिद्रधि पर लेप ॥

लावा । मुरेठी को शक्कर और घी में लेप करे अथवा असगन्ध । खस । रक्तचन्दन । दूध में पीस लेप करे तौ बिद्रधी दूर होय ॥

अथ कफ बिद्रधि पर लेप ॥

ईंट । बालू । लोहा कीट । गोबर । चारों को गोमूत्र में पीस लेप करे तौ कफ बिद्रधि दूर होय ॥

अथ आगंतुक बिद्रधि पर लेप ॥

रक्तचन्दन । मजीठ । हरदी । मुलहठी । ये सब समान दूध में पीसचोट अथवा रुधिर बिकारपर लेपकरेतौ अच्छा होय ॥

अथ बात गलगंड पर लेप ॥

बेत । और सहजने के बीज । समान ले जलमें पीस शीतगरम प्रदेह संज्ञक लेप करै रोग दूरि होय इसी प्रकार से दशमूल भी पीस लेप करै ॥

अथ कफ गलगंड़ परलेप ॥

देवदारु । इन्द्रायन दोनों को नौ नौ ले लेप करे तौ गण्डमाला दूर होय ॥

अथ अपची पर लेप ॥

सरसों । नीम के पत्ते । और भिलावा । तीनों को बरा-

बर ले मेष के मूत्र में लेप करे तौ अपची जाय ॥

अथ गंडमाला अर्बुद गलगंडपर लेप ॥

सरसों। और सहिंजने के बीज। सनई के बीज। और अरसी। जव। मूली के बीज। ये सब औषधि समान भाग ले मट्ठे में पीस लेप करे तौ गण्डमाला अर्बुद गलगण्ड ये रोग दूर होंय ॥

अथ अपबाहुक पर लेप ॥

केवल बात पीड़ित कोई अंग अपने स्वाभाविक कर्म में पीड़ा करे तहां के रोम दूर करि घुंघुची पीसि सुखोष्ण लेप करनेसे अपबाहुक वायु विश्वाची हाथकी गृध्रसी और जंघा की वायु संभव पीड़ा दूर होय ॥

अथ पीलपाव पर लेप ॥

धतूरा। रंड। सेवड़ी तीनों की पत्ती। गदापुरैना सहिजने कीछाल। सरसों। येछओ पीसि अति कालके भये पील पांव पर लेप करेतौ अच्छा होय ॥

अथ उपदंश पर लेप ॥

कनेर की जड़ पानी में पीसि इन्द्री पर लेप करेतौ उपदंश संबन्धी असाध्य पीड़ा दूर होय ॥

अथ कुरंड रोग पर लेप ॥

कालाजीरा। हाऊबेर। कूट। रंड मूल। बेरकी छाल ये पांचो समान ले कांजी के पानीमें पीसि अंडकोश पर लेप करेतौ अच्छे हों अथवा त्रिफला कढ़ाई में जलाइ राख करि शहत में फेंटि लेप करेतौ गरमी के घाव शीघ्र पूर आवें अथवा रसौत सरसों दोनों समान पीसि शहत में घेपि उपदंश संबंधी दादबहते हुये व्रण पर लेप करेतौ उपदंश दूरिहो ॥

अथ अग्निदग्ध पर लेप ॥

वंशलोचन। पाकरि। रक्तचन्दन। गेरु। गुर्च ये पांचों पीसि घीमें मिला जरे पर लगावे अथवा घीको चौराई के

क्वाथ में मिला लेप करै तौ जरेकी व्यथा दूरिहो अथवा यवको राख तिलके तेलमें घेपि लगावै तौ दग्ध व्रण पूरि आवै ॥

अथ योनि संकोर्ण लेप ॥

पलासफल । गूलर के फल । तिलके तेलमें पीसि शहत मिलाय योनिमें लेप करै तौ दृढ़ और संकुचित होय अथवा माजू कपूर पीसि शहत में फेंटि लेप करैतौ गिरीहुई योनि तनि आवै ॥

पुरुषकी इन्द्री कठोर करने का लेप ॥

मरिच । सेंधव । पीपरि । तगर । भटकटैया के फल । लटजीरेके बिया । कालेतिल । कूट । यव । उरद । असगंध ये सब समान पीसि शहत मिश्रित करि नित्य इन्द्री पर मला करैतौ इन्द्री मोटी होय और स्त्री के स्तनों पर लगाया करै तौ स्तन कठोर परिजांय और पुरुषके भुजदंड और कानों पर मलना अच्छाहै अथवा श्वेतफूल का असगंध सेंधव दोनों सूक्ष्म पीसि चौगुना घृत घृतका चौगुना भेड़का दूध एक करि आंच पर दूध जराइ वा छानि इन्द्री पर लगावै तौ इन्द्री मोटी हो ॥

अथ योनिद्रव लेप ॥

धूतूरनके पत्तोंका रस ले पारा रक्तकनेर के सोंटे से घोटि बार बार रस डारि जब कजरी पीठीके समान होजाय तब इन्द्री पर लेपि स्त्री प्रसंग करै तौ स्त्री सुख पावै और पहिले वीर्य पात करै ॥

अथ देह दुर्गन्ध निवारण लेप ॥

धानोंको हड़ और पानी में पीसि लेप करै तौ दुर्गन्ध दूरहो अथवा भुंजीहुई कुरथी । कूट । जटामासी । श्वेत चन्दन का बुरादा । भूंजेचने । इन सब को पीसि कपर छानकर चूरा करैतौ दुर्गन्ध दूरि होय ॥

अथ वशीकरण लेप ॥

वच । कालानोन । कूट । हरदी । दारुहरदी । मिरच । ये सब समान पानीमें पीसि देहमें लगावे तौ अच्छा है ॥

इति श्रीमन्महा राजाधिराजश्री महाराज राजेन्द्र श्री
सवाई प्रताप सिंहजी विरचिते अमृतसागर नाम
ग्रंथे अनुभूत लेपन विधान निरूपणं
नाम विंशतिमस्तरङ्गः । ३० ॥

* * *

अथ छः ऋतु का वर्णन लिखते हैं ।

हिमऋतु १ शिशिरऋतु २ बसन्तऋतु ३ ग्रीष्मऋतु४ बर्षाऋतु ५ शरदऋतु ६ ये सब दो २ महीने की हैं ॥ अगहन पौष तो हिमऋतु । माघ फाल्गुण शिशिर ऋतु । चैत्र वैशाख बसन्तऋतु । ज्येष्ठ आषाढ़ ग्रीष्मऋतु । श्रावण भादों बर्षाऋतु आश्विन कार्तिक शरद ऋतु हैं ॥ ६ ॥

अथ अन्य मतसे लिखते हैं ॥

मेष और वृष की संक्रांति ये दोनों ग्रीष्मऋतु हैं ॥ १ ॥ और मिथुन कर्क की संक्रांति को प्रावट ऋतु कहिये इस ऋतु में बादलों से अम्बर छाया रहै मरोड़े को लिये थोड़ा बरसे भी यह ऋतु बर्षा ऋतु का भेद है ॥ २ ॥ सिंह और कन्या की संक्रांति को बर्षा ऋतु कहिये ॥ ३ ॥ तुला और वृश्चिक की संक्रांति को शरद ऋतु कहिये ॥ ४ ॥ धन और मकर की संक्रांति को हेमन्त ऋतु कहिये ॥ ५ ॥ कुम्भऔर मीन की संक्रांति को बसन्त ऋतु कहिये ॥ ६ ॥

अथ इन छओं ऋतुमें वायु पित्त कफ का संचय प्रकोप और शांति लिखतेहैं ।

ग्रीष्म ऋतुमें वायुका संचय । बर्षाऋतु में बायु का कोप । शरद ऋतु में बायु की शांति ॥ १ ॥ बर्षा ऋतु में पित्त का संचय । शरदऋतु में पित्त का कोप हिम ऋतु में पित्त की

शांति ॥ २ ॥ शिशिर ऋतुमें कफका संचय बसन्त ऋतु में कफका कोप ग्रीष्म ऋतु में कफकी शांति ॥ ३ ॥ समय में वायु पित्त कफों के प्रकोप और शांति आहार बिहार से होयहै और ये बिना समय आपही शांत होय हैं ॥

अथ वायु के कोप करने का आहार बिहार लिखते हैं ।

यह बिना समय हलकी रूखी वस्तु थोड़ी वस्तु और अति शीतल वस्तु अति खेद से संध्या समय मैथुन करिके शोच भय चिन्तासे और रात्रिके जागने से चोटके लगने से अन्न के अजीर्ण होनेसेधातु के चीणपने से और इन्हें आदिले और भी कारणों से वायु का कोप होय है ॥ और वायु के कोपको दूर करने का यत्न करै तौ वायु की शान्ति होय ॥

अथ पित्त के कोप करने का आहार बिहार लिखते हैं ॥

कड़वी खट्टी गरम तीक्ष्ण ये वस्तु बहुत खाय उससे और क्रोध से धूप को आदि ले गरम वस्तु से मध्यान्ह समय में क्षुधा और तृषा के रोकने से अन्नके अजीर्ण होने से आधी रात के समय इन कारणों से पित्त है सो कोप को प्राप्त होय है और पित्तके कोप दूर करने के कारणों से पित्तकी शांति होय है ॥ २ ॥

अथ कफके कोप करने का आहार बिहार लिखते हैं ॥

मीठी चिकनी द्रव्य के खाने से शीतल भोजन के करने से दिनके सोने से अग्नि के मन्द होने से प्रभात के समय भोजन करे पीछे खेद आदि ले और कारणों से कफ कोपको प्राप्त होय है और कफ के कोप को दूर करने के कारणों से कफ की शांति होय ॥ ३ ॥

अथ हिम ऋतु के सेवन का आहार बिहार लिखने हैं ॥

नवीन भैंस और गौ का घृत मीठा गुड़ मीठा दही नोन तेल का मर्दन तिल गेहूं उड़द मिश्री को आदि ले मीठी द्रव्य सोंठ संयुक्त हड़ अग्नि निर्वात स्थान नूतन वस्त्र नवीन

स्त्री को आदि ले अच्छी वस्तु ॥ इति हिम ऋतु के आहार बिहारादिक ॥ १ ॥

अथ शिशिर ऋतु के आहार बिहारादिक लिखते हैं ॥

पीपल संयुक्त हड़ मिरच अदरक नवीन घृत सेंधा नोन बड़े गुड़ दही और हिम ऋतु में जो कहे हैं वे सब ॥ इति शिशिर ऋतु की विधि ॥ २ ॥

अथ वसन्त ऋतु के आहार बिहार लिखते हैं।

बसन्त ऋतु में कोप को प्राप्त हुआ जो कफ सो रोगोंको उत्पन्न करै जठराग्नि का नाश करै इस लिये सहत संयुक्त हड़ खाय तो कफ दूर होय और शरीर में बल होय और वसन्त ऋतु में चूरण पथ्य है और चित्रक का खाना पथ्य है और कफ हारी द्रव्य अच्छे हैं ॥ इति बसन्त ऋतु की विधि ॥ ३ ॥

अथ ग्रीष्म ऋतु के आहार बिहार लिखते हैं ॥

ग्रीष्मऋतु में सूर्य सर्व प्राणी मात्र का बल हरले है इस वास्ते वृक्षादिक की सघन छाया की सेवा योग्य है गुड़ संयुक्त हड़ शीतल जलको आदि ले द्रव्य मधुर और हलका भोजन दाख चिकनी द्रव्य शिखरन सत्तू मिश्री का सरबत शीतल जल में पैरना खसखाना फुवारा आदि का छुड़ाना कपूर चन्दनादिक का लेप दिन का सोना खसका पंखा खीरका भोजन इन्हें आदि ले और भी अच्छी वस्तु ये सब इस ऋतु में पथ्य हैं और कड़वी तीक्ष्ण वस्तु नोन खटाई दाह को करने वाली वस्तु खेद दारू धूप ये कुपथ्य हैं ॥ इति ग्रीष्म बिधिः ॥

अथ वर्षा ऋतु के आहार बिहार लिखते हैं।

सेंधा नोन संयुक्त हड़। चिकनी द्रव्य नोन। खटाई। सालिममिश्री। सोंठ। मिरच। पीपल। पीपला मूल। चित्रक। सेंधानोन। इन संयुक्त दही कामठा गरमपानी। कुयें का

जल सुपेद बस्त्र भ्रमण हलका भोजन जुलाब ये इस ऋतु में पथ्य हैं ॥

अथ इस ऋतु में कुपथ्य ।

दिन का सोना खेद धूप में रहना तालाब का जल दही वन ध्यान मैथुन ये कुपथ्य हैं ॥ इति बर्षा ऋतु की बिधि ॥

अथ शरद ऋतु के आहार बिहार लिखते हैं ।

बर्षा ऋतु में उपजा जो पित्त सो शरद ऋतु में कोप को प्राप्त होय उसके दूर करने के वास्ते मिश्री संयुक्त हड़ का सेवन और मिश्री को आदि ले मीठी बस्तु साठी चावल मूंग सरोवर का जल औटा दूध ये पथ्य हैं और कुपथ्य तीक्ष्ण बस्तु नोंन खटाई आसव धूप दूध दिन का सोना पूर्व्व की पवन शरद ऋतु में इतनी बस्तु कुपथ्य हैं ऋतु उतरने में सात दिन तक उसी ऋतु की बिधि करै और आठवें दिन से प्रारम्भ वाली ऋतु की बिधि करे ॥ ६ ॥ इति छओं ऋतु के आहार बिहार की विधि सम्पूर्ण ॥

अथ दिन चर्या अर्त्थात् दिन में जो करै उसकी बिधि लिखते हैं ।

मनुष्य है सो चार घड़ी के तड़के उठिके अपने इष्टदेव का और देवता का ध्यान करै पीछे यह चिन्तन करै कि आज के दिन यह कार्य्य करना और यह कार्य्य नहीं करना उसका बिचार करले पीछे शय्या से उठि मल मूत्र को त्याग करै और इनका बेग रोके नहीं उत्तर दिशा की ओर मुख कर मल मूत्र दिन में करै और रात्रि में दक्षिण दिशा की ओर मुख कर मल मूत्र करै और मल मूत्र करती समय बोले नहीं और मल मूत्र करै पीछे खैर वृक्ष बौलसरी आदि की अपने हाथ की कनिष्टिका अंगुली समान पतली और सूधी बारह अंगुल की दातवन करै फिर उसको फार कर जीभ को शोधै फिर शीतल जल से १२ कुल्ले करै पीछे शीतल ही जल से मुख धोवै तो मुख के सब रोग जांय और सेंधानोन आदि उसमें सोंठ

भुना जीरा मिलाय महीन पीस नित्य मर्दन करै तो दांतों में रोग नहीं होय फिर शरीर के नारायणादि तेलको मर्दन करै पीछे उसकी चिकनाई दूर करने के वास्ते चने का आटा और कठोरल आदि का उबटन करै पीछे शरीर में बल राखि शरीर के बल माफिक कुश्ती करै पीछे श्रम दूर कर कुछ एक सुहावते गरम पानी से कमर ऊपर से स्नान करै तो रोग होय नहीं ॥

अथ स्नान के गुण ॥

स्नान हैं सो शोच और गरमीके रोग और हृदय का ताप और रुधिर का कोप शरीर की दुर्गन्धि इनको दूर करै है कांति और तेज को बढ़ावै है पाप और मनकी ग्लानि को दूर करै है क्षुधा रुचि और बुद्धि धर्म सुख द्रव्य इन सबको बढ़ावै है शरीर को आनन्द दे है शरीर की क्षमता और मार्ग के खेद को दूर करै है ये स्नान में गुण हैं और इतने रोग वाला मनुष्य स्नान करै नहीं ॥ नींद से उपरान्त और नींद आवती होय और ज्वर और खेद और हिचकी के रोग वाला भोजन करके क्षीण पुरुष कफ और वायु और वमन के रोग वाला स्नान करै नहीं स्नान करै पीछे संध्या वन्दन देवता गौ ब्राह्मण आचार्य्य गुरू अतिथि आदि का पूजन करै पीछे शक्ति माफिक दान दे फिर मध्यान्ह के समय बलि वैश्व देवादिक करि किसी अतिथि को भोजन अपनी शक्ति माफिक करावे पीछे आप कुटुम्ब समेत भोजन करै प्रथम मधुर और चिकना हितकारी चांवल मूंग गेहूं आदि की रोटी घृत संयुक्त चोखी तरकारी के साथ खाय और शनैः २ भोजन करै भोजन में शीघ्रता करै नहीं और भोजन के अन्त में मिश्री के संयोग से दूध पीवे भोजन के अन्तमें दही खाय नहीं और भोजन बहुत थोड़ा न खाय और बहुत भी खाय नहीं अपनी रुचि माफिक भोजन करै और भोजन करते माता पिता

मित्र बैद्य पाकका कर्त्ता मोर चकोर। कूकड़। स्वान। बानर इनको बैठाले इनकी दृष्टि अच्छी है और अगस्त १ कुम्भकर्ण २ शनैश्चर ३ बड़वानल ४ भीमसेन ५ इनपांचों का स्मरण करै तो भोजन अच्छी तरह पचिजाय और भोजनके उपरान्त सुगन्धित फूल की माला अतर अच्छे वस्त्र इनको धारणकरै और पीछे खस के पंखे आदि से पवन करावे और शीतल छाया में रहै और भोजन के उपरान्त २ घड़ी पीछे शीतल और मीठा जल थोड़ा २ पीवे बहुत पीवे नहीं बहुतपीवे तो रोग होय और भोजन के आदि में जलपीवे तो अग्निकी मन्दता होय भोजन के अन्तमें पीवे तो बिषका सा गुण करै अजीर्ण में जल पीवे तो अजीर्ण पचि जाय अन्नपचे पीछे जल पीवे तो शरीर में बल होय और रात्रिके अन्तमें जल पीवे तो सब रोग जांय और भोजन कर बैठि जाय तो शरीर में भारीपना होय और भोजन कर सूधा सोवे तो बल होय भोजन कर बायें करवट सोवे तो आयुर्बल बढ़ै और भोजन करे दौड़े तो उसके संग मृत्यु दौड़े है भोजन करे पीछे बायें करवट २ घड़ी सोवे नींद ले नहीं अथवा भोजन करे पीछे १०० पग चलै अथवा भोजन के अन्तमें गौ की छाछ पीवे तो गुण करै अच्छा रात्रिका जमाया भैंस अथवा गौ का दही उसे वस्त्र में मथि छान ले फिर उसमें मिश्री का बूरा और मिरच। इलायची। भीमसेनीकपूर को आदि ले अनुमान माफिक मिलाय इस शिखरन को पीवे तो शुक्र और बल को बढ़ावे और रुचि करै और वायु पित्तके रोगको दूर करै इति शिखरन करने की बिधि भैंस के दही को छान उसमें सोंठि मिरच पीपल राई नोन इन्हें महीन पीस मिलाय अनुमान माफिक खाय तौ कफ वायु को दूरकरै और यह बलको करै है और शीतकाल के बिषय दही खाय ॥ इति मट्ठा करने की बिधि ॥

संध्या के समय इतनी वस्तु करै नहीं भोजन १ मैथुन २

निद्रा ३ पढ़ना ४ संध्याकेसमय भोजन करे तो रोग होय
संध्या में मैथुन करे तो भयंकर सन्तान होय २ निन्द्रा आ
तो दरिद्र होय ३ पढ़ने से आयर्बल की क्षय होय ॥ ४ ॥

अथ रात्रि चर्या नाम रात्रि में जो आहार बिहार करे सो लिखते हैं

रात्रि में चांद की चांदनी में सोने से कामदेव की वृ
होय और वह चांदनी शरीरके दाहको दूर करै है ॥ औ
अंधेरी रात आनन्दादिक को दूर करे है रात्रिके प्रथम पह
में भोजनादिक करै पीछे शयन करै सुन्दर स्थान में सुन्द
यौबनवती स्त्री से शक्ति माफिक संभोग करै और शक्ति
उपरान्त सुन्दर स्त्रियों से भी संभोग करे नहीं ॥ संभोग की
आदिमें भैंसका अथवा गऊकादूध औटाय मिश्रीके संयो
से पीवे और संभोग के अन्त में भी रुचि माफिक पीवे तो
पुरुष के जरापने का रोग कभी होय नहीं ॥

अथ ६ वस्तु प्राण को तत्काल हरें हैं सो लिखते हैं ॥

सड़ा मांस १ वृद्ध स्त्री २ धूप का सोना ३ तत्काल का ज
माया दही ४ प्रभात समय मैथुन ५ प्रभात समय निद्रा
ये छः तत्काल प्राण को हरें हैं ॥

अथ छः वस्तु मनुष्य को तत्काल आनन्द दे हैं सो लिखते हैं ॥

तत्काल का मांस १ नवीन अन्न २ बाला स्त्री ३ क्षीरक
भोजन ४ नवीन घृत ५ उष्णोदक से स्नान ६ ये छः वस
प्राणी को तत्काल आनन्दित करें हैं ॥

अथ छओं ऋतु में जिस विधिसे स्त्री से संभोग करे सो लिखते हैं ॥

हिमऋतु १ और शिशिर ऋतु में २ तो अपनी शरीर क
शक्ति माफिक बारम्बार स्त्री से संभोग करै तो रोग हो
नहीं शरीर में आनन्दही रहै ॥ २ ॥ और वसन्त ऋतु
तीसरे और शरदऋतु में तीसरे चौथे दिन स्त्री सेवन श
माफिक करे तो रोग होय नहीं और वर्षा में पांचवें औ
ग्रीष्म ऋतुमें छठें या पन्द्रहवें दिनस्त्रीसे संभोग शक्ति माफि
करे तो रोग होय नहीं शीतऋतु में तो रात्रि में संभो

कीजे ग्रीष्मऋतु में दिनमें वर्षाऋतुमें भी दिन में और रात्रि में जब मेघ गाजे और बरसे उस समय स्त्री से संभोग होय तो रोग होय नहीं शरदऋतु में कामदेव जागे तब कीजै तो रोग होय नहीं ॥

अथ इतनी स्त्रियों से संभोग करिये नहीं ।

रजस्वला स्त्रीसे १ रोगवाली स्त्री से २ वृद्ध स्त्री से ३ जिस स्त्रीके कामदेव जगै नहीं उस स्त्रीसे ४ मलीन स्त्रीसे ५ सात महीने की गर्भिणी से ६ और जिस स्त्री की योनि में गरमी का रोग होय उसे ७ इतनी स्त्रियों से संभोग कीजे नहीं ॥

अथ और तरह भी मैथुन वर्जन लिखते हैं ।

भययुक्तपुरुष १ अधीर पुरुष २ क्षुधित ३ रोगी ४ तृषित ५ बालक ६ वृद्ध ७ मलमूत्र आदि की जिस के बेग लगि रही होय ८ इतने पुरुष मैथुन करे नहीं ॥

अथ अति मैथुन से इतने रोग होंय सो लिखते हैं ।

शूल चलै १ खांसी आवै २ विषमज्वर होय ३ क्षीण पड़ि जाय और वायु के पक्षाघातादिक रोग होंय ४ अथ मैथुन के उपरान्त स्नान करै मिश्री के संयोग का गरम दूध पीवै मांसादिक । मीठारस खाय आसव पीवै खस के व्यजन से पवन करावै शयन करै रात्रि को बहुत जागे नहीं दिन में बहुत सोवै नहीं और रात्रि के अंतमें ५ घड़ी के तड़के आठ अंजलि प्रमाण शीतल जल पीवै पीछे ४ घड़ी के तड़के उठै इस विधि से सदा करै तो उस पुरुष के कभी भी रोग होय नहीं सदा आरोग्य रहै ॥ इतिरात्रि चर्य्याकी विधि सम्पूर्ण ॥ ये सब विधि भावप्रकाश और शार्ङ्गधर में लिखी हैं ॥

अथ मनुष्यों के शरीर मेंजोकुछ वायु पित्त कफ सर्व धातु उपधातु और शरीर की उत्पत्ति और नाश इन्हें आदि लै सब स्वरूप यथार्थ अति संक्षेप से अपनी बुद्धि माफिक लिखते हैं ॥

मनुष्य के शरीर में इतनी वस्तु हैं ॥ कला ७ आशय ७

धातु ७ उप धातु ७ सातों धातुओं के मल ७ त्वचा ७ दोष३ देह में मांस हाड़ और मेद इन सबके बांधने की नसें १०० हैं और दोसौ दश २१० इस में हाड़ हैं और कई एक आचार्य्यों के मत से २०० हाड़हैं १०७ मर्मस्थान हैंनसें ७० हैं रस के बहने वाली धमनी नाड़ी २४ हैं मांस की पीड़ी ५०० हैं स्त्रियोंके मांस की पीड़ी ५२०हैं सब से बड़ी नाड़ी सब शरीर व्यापिनी १६ हैं उन्हें कंडरा कहेंहैं इस मनुष्य के शरीर में १० छिद्र हैं॥ स्त्री की देह में १३ छिद्र हैं॥ स्त्रियों के देह में शास्त्र के अनुसार अपनी बुद्धि के माफिक जो कुछहैं सो लिखते हैं॥

अथ कला का स्वरूप लिखते हैं।

धातु और आशय इन के बीच जो झिल्ली है जिसमें बालक रहै है उसै कला कहिये सो वह कला ७ प्रकार की है मांस रुधिर मेद इन तीनों के बीच एक झिल्ली है १ इन के और फिया के बीच में एक झिल्ली है २ आंतों के बीच एक झिल्ली है ३ एक झिल्ली उदर की अग्नि को धारण कर रही है ४ एक झिल्ली वीर्य को धारण कर रही है ५ इन्हें सात कला कहिये॥

अथ सात आशय लिखते हैं॥

हृदय में आशय नाम स्थान कफका घर १ हृदय के नीचे आमका स्थान२ नाभिके ऊपर बाईं और अग्नि का स्थान ३ अग्नि के ऊपर तिल है नाभिके नीचे पवन का स्थान ४ पवन के स्थान के नीचे पेडू में मलका स्थान ५ पेड के लगताही कुछ नीचे मूत्र का स्थान है उसै वस्ति कहिये ६ हृदय के कुछ ऊपर जीवका और रुधिर का स्थान॥ ७॥ ये सम्पूर्ण स्त्री और पुरुषों के आशय हैं॥ और स्त्री के आशय ३ अधिक हैं एक तो गर्भका स्थान १ दो दूध के स्थान स्तन २॥

अथ सात धातु लिखते हैं।

रस १ रुधिर २ मांस ३ मेद ४ अस्थि ५ मींगी ६ शुक्र ७

कीजे ग्रीष्मऋतु में दिनमें वर्षाऋतुमें भी दिन में और रात्रि में जब मेघ गाजे और बरसे उस समय स्त्री से संभोग होय तो रोग होय नहीं शरदऋतु में कामदेव जागे तब कीजै तो रोग होय नहीं ॥

अथ इतनी स्त्रियों से संभोग करिये नहीं ।

रजस्वला स्त्रीसे १ रोगवाली स्त्री से २ वृद्ध स्त्रीसे ३ जिस स्त्रीके कामदेव जगैनहीं उस स्त्रीसे ४ मलीन स्त्रीसे ५ सात महीने की गर्भिणीसे ६ और जिस स्त्री की योनि में गरमी का रोग होय उसे ७ इतनी स्त्रियों से संभोग कीजे नहीं ॥

अथ और तरह भी मैथुन वर्जन लिखते हैं ।

भययुक्तपुरुष १ अधीर पुरुष २ क्षुधित ३ रोगी ४ तृषित ५ बालक ६ वृद्ध ७ मलमूत्र आदि की जिस के बेग लगि रही होय ८ इतने पुरुष मैथुन करे नहीं ॥

अथ अति मैथुन से इतने रोग होंय सो लिखते हैं ।

शूल चलै १ खांसी आवे २ विषमज्वर होय ३ क्षीण पड़ि जाय और वायु के पक्षाघातादिक रोग होंय ४ अथ मैथुन के उपरान्त स्नान करै मिश्री के संयोग का गरम दूध पीव मांसादिक । मीठारस खाय आसव पीवै खस के व्यजन से पवन करावै शयन करै रात्रि को बहुत जागे नहीं दिन में बहुत सोवै नहीं और रात्रि के अंतमें ५ घड़ी के तड़के आठ अंजलि प्रमाण शीतल जल पीवै पीछे ४ घड़ी के तड़के उठै इस विधि से सदा करैतो उस पुरुष के कभी भी रोग होय नहीं सदा आरोग्य रहै ॥ इतिरात्रि चर्य्याकी विधि सम्पूर्ण ॥ ये सब विधि भावप्रकाश और शार्ङ्गधर में लिखी हैं ॥

अथ मनुष्यों के शरीर में जोकुछ वायु पित्त कफ सर्व धातु उपधातु और शरीर की उत्पत्ति और नाश इन्हें आदि ले सब स्वरूप यथार्थ अति संक्षेप से अपनी बुद्धि माफिक लिखते हैं ॥

मनुष्य के शरीर में इतनी वस्तु हैं ॥ कला ७ आशय ७

धातु ७ उप धातु ७ सातों धातुओं के मल ७ त्वचा ७ दोष३ देह में मांस हाड़ और मेद इन सबके बांधने की नसें १०० हैं और दोसौ दश २१० इस में हाड़ हैं और कई एक आचार्य्यों के मत से २०० हाड़हैं १०७ मर्मस्थान हैं नसैं ७० हैं रस के बहने वाली धमनी नाड़ी २४ हैं मांस की पीड़ी ५०० हैं स्त्रियोंके मांस की पीड़ी ५२०हैं सब से बड़ी नाड़ी सब शरीर व्यापिनी १६ हैं उन्हें कंडरा कहैंहैं इस मनुष्य के शरीर में १० छिद्र हैं॥ स्त्री की देह में १३ छिद्र हैं ॥ स्त्रियों के देह में शास्त्र के अनुसार अपनी बुद्धि के माफिक जो कुछहैं सो लिखते हैं ॥

अथ कला का स्वरूप लिखते हैं।

धातु और आशय इन के बीच जो झिल्ली है जिसमें बालक रहै है उसै कला कहिये सो वह कला ७ प्रकार की है मांस रुधिर मेद इन तीनों के बीच एक झिल्ली है १ इन के और फिया के बीच में एक झिल्ली है २ आंतों के बीच एक झिल्ली है ३ एक झिल्ली उदर की अग्नि को धारण कर रही है ४ एक झिल्ली वीर्य को धारण कर रही है ५ इन्हें सात कला कहिये ॥

अथ सात आशय लिखते हैं॥

हृदय में आशय नाम स्थान कफका घर १ हृदय के नीचे आमका स्थान२ नाभिके ऊपर बाईं और अग्नि का स्थान ३ अग्नि के ऊपर तिल्ल है नाभिके नीचे पवन का स्थान ४ पवन के स्थान के नीचे पेडू में मलका स्थान ५ पेड के लगताही कुछ नीचे मूत्र का स्थान है उसै वस्ति कहिये ६ हृदय के कुछ ऊपर जीवका और रुधिर का स्थान ॥ ७॥ ये सम्पूर्ण स्त्री और पुरुषों के आशय हैं॥ और स्त्री के आशय ३ अधिक हैं एक तो गर्भका स्थान १ दो दूध के स्थान स्तन २ ॥

अथ सात धातु लिखते हैं।

रस १ रुधिर २ मांस ३ मेद ४ अस्थि ५ मींगी ६ शुक्र ७

ये सातों धातु पित्तके तेज कर पची हुई महीने एक में वीर्य्य को पैदा करैं हैं चौथे चौथे दिन एक एक धातु पैदा होय है जो अन्न पानी खाय सो पित्त के तेज से पके प्रथम रस पैदा होय पीछे वह पित्त के तेज से पकि रस का रुधिर होजाय है इसी तरह सातों धातु जानि लीजे ॥

अथ सात उपधातु लिखते हैं ॥

जीभ का मल नेत्र का कपोल गाल का मल ये तीनों रसधातु की उपधातु हैं ॥ १ ॥ रंज कफ पित्त रुधिर की उपधातु हैं ॥ २ ॥ कान के मलको मांस की उपधातु जानिये ॥ ३ ॥ जीभ और दांत के मलको उपधातु जानिये ॥ ४ ॥ बीसों नखों को हाड़ों की उपधातु जानिये ॥ ५ ॥ नेत्र में कीचड़ आवे उसे उपधातु जानिये ॥ ६ ॥ मुख ऊपर चिकना पना और काला पन होय ये शुक्र की उपधातु हैं ॥ ७ ॥ और स्त्री के २ धातु और हैं एक तो स्तनों में दूध १ और एक स्त्री धर्म २ ये दोनों समय में होयं और समय में हों जाते रहैं ॥ और और भी सातों धातु से पैदा होय सो पैदा सो लिखते हैं ॥ शुद्ध मांससे पैदा हुआ जो घृत उसे वसा कहिये ३ पसीना ४ दांत ५ केश ६ ओज ७ ये सब शरीर में रहैं हैं सो चिकने और शीतल हैं शरीर में बल और पुष्टता के करने वाले हैं ये भी सातों धातु से पैदा होय हैं ॥

अथ सातों त्वचा लिखते हैं ॥

ऊपरकी त्वचा अवभासिनी नाम चिकनी है और विभूति का स्थान ॥ १ ॥ दूसरी लाल जिसमें तिल पैदा होय है ॥ २ ॥ तीसरी त्वचा सुपेद है उसमें चर्मदल नाम रोग पैदा होय ॥ ३ ॥ चौथी त्वचा तांबे के रंग समान है उसमें सुपेद कोढ़ पैदा होय है ॥ ४ ॥ पांचवीं त्वचा वेदिनी नाम उसमें सब कोढ़ पैदा होंय ॥ ५ ॥ छठी त्वचा रोहिणी नाम उसमें गूमड़ी गंडमालादिक पैदा होय हैं ॥ ६ ॥ सातवीं त्वचा

स्थूल नाम उसमें विद्रधि रहै है ॥ ७ ॥ ये सातों त्वचा दो जव के प्रमाण मोटी हैं ॥

अथ तीनों दोषों का स्वरूप लिखते हैं ॥

वायु १ पित्त २ कफ ३ इन्हें दोष भी कहिये और इन्हें मल भी कहिये सो एकएक पांच प्रकार के हैं ये पांचों पृथक् २ स्थान में रहैं हैं इन तीनों में वायु बलवान् है सो वह बात शरीर में सबवस्तु को बिभागकर सब शरीरमें नसोंके द्वारा सर्वत्र पहुंचाय दे है पित्त और कफ पंगुले हैं यह वायुही इस शरीरमें बलवान होय सब रसादिकों को सब देह में पहुंचावै है यह वायु रजोगुण मय सूक्ष्म शीतल रूखा और हलका है यह वायु मलके आशय में १ कोष्ट में २ अग्नि केस्थानमें ३ हृदय ४ कंठ ५ इनमें रहै है ये मुख्य स्थान हैं और यह सब शरीर में रहै है गुदामें तो इसका अपान नाम है १ नाभि में इसका समान नाम है २ हृदय में प्राण नाम है ३ कंठमें उदान नाम है ४ जो सब शरीर में रहै उसका नाम व्यान है ॥ ५ ॥ इति वायु का स्वरूप ॥

अथ पित्तका स्वरूप ॥

पित्त। गरम पतला सत्व गुणमय कडुवा है और यह दग्ध हुआ खट्टा होय है यह पांच स्थानों में रहै है अग्न्याशय में तिलप्रमाण यह अग्नि स्वरूप होय रहै है १ त्वचा में यह कांति का करने वाला है २ नेत्रों में यह रहकर सब को देखने वाला है ३ यकृत् में यह रहकर सब वस्तु को पचाय दे है और खाये रसको रुधिर करदे है ४ और हृदय में रहता जो पित्त सो बुद्ध्यादिक को करै है ॥ ५ ॥ पाचक १ भ्राजिक २ रंजक ३ आलोचक ४ साधक ५ ये पित्तके नामहैं ॥

अथ कफका स्वरूप ।

कफ चिकना पिच्छिल तमो गुणमय है यह दग्ध हुआ खारी होय है आमाशय १ मस्तक २ कंठ ३ हृदय ४ सन्धि ५ ये मुख्य स्थान हैं इनमें रहै है और देह में रहता हुआ

देह को स्थिरता को और सब अंग के कोमलपने को करै है ॥ क्लेदन१ स्नेहन२ रसन३ अवलम्बन४ ये इसके नाम हैं ॥

अथ स्नायु अर्थात् नसों कास्वरूप ॥

अथ मनुष्य देह में मांस हाड़ मेद इनके बांधने के विषय स्नायु नाम नसैं कही हैं ॥

अथ हाड़ों का स्वरूप ॥

देह के विषय ये आधार हैं देह इन बिना खड़ा रहै नहीं और देह में सार येही हैं ॥

अथ मर्मस्थान का स्वरूप ॥

जीव को धारने वाला मर्मस्थानही है ॥

अथ नसों का स्वरूप ॥

संधि२ इन से बंधी हैं और वायु पित्त कफ और ७ धातुओं को भी यही नसैं बहैं हैं ॥

अथ धमनी नाड़ी का स्वरूप ॥

धमनी नाड़ी रस और पवन को बहै है ॥

अथ मांस की पीड़ी का स्वरूप ॥

मांस की पीड़ी शरीर में बल को करै है और शरीर को धारण कर रही है ॥

अथ कंडरा का स्वरूप ॥

सब से बड़ी नसों को कंडरा कहिये सो १६ हैं वे सब अंगों का प्रसारण देह और संकोच करै हैं ॥

अथ रस रंध्रों का स्वरूप ॥

नाक में दो नेत्रों के दो कानों के दो हैं लिंग गुदा और मुख के एक २ छिद्र हैं दशवां मस्तक में ये पुरुषों के रंध्र हैं और स्त्रियोंके ३ अधिक हैं दोस्तनोंमें एक गर्भाशयका और इस शरीरके रोम२ में सूक्ष्म अनंत छिद्र हैं नाभिके पास बांई ओर फुस २ है उदान वायुका जो आधार उसै फुस२ कहिये और प्लीह नामफिया है और नाभिके पास दाहिनी ओर यकृत् है और रुधिरके बहनेवाली जोनसैं तिनका मूल प्लीह

नाम क्रिया है और रंजक नाम जो पित्त उसका जो स्थान उसके विषय जो रक्तका स्थान उसे यकृत कहिये ॥ नाभिके बायें भागके विषय आमाशय के ऊपर जो वह तिल है सो जलके बहने वाली जो नसैं तिनका मूल है और वह तिल उसको ढांक दे है और कूख में जो दो गोले तिन्हैं वृक्क कहिये वे दोनों जठर का जो मेद उसै पुष्ट करैं हैं और विषण जो पोता सो वीर्य को लेचलने वाली जो नसैं तिनका आधार है और यह पुरुषार्थ को लेचलने वाला है और लिंग गर्भ को देने वाला है वीर्य औ मूत्र का घर है और हृदय मन चित्त बुद्धि अहंकार इनका स्थान है और ओज का घर है सो और नाभि है सो जो धमनी को आदि ले नसैं तिनका स्थान है और सब शरीर में सब नसें फैल रही हैं नाभिसे और यहां की वायुके और सब धातुओं के संयोगसे नाभि की जो वायु है सो सब शरीर को पुष्ट करै है और नाभि की जो पवन है सो हृदय के कमल में जाय उसका स्पर्श कर कण्ठके बाहर जाय और कुछ विष्णुपद का जो अमृत उसै पीनेको नासिका के द्वारा जाय है पीछे यह नासिका की पवन आकाश के अमृत को पीकर फिर मुख नासिका आदि के द्वारा वेग करके उदर में आय प्राप्त होय है फिर यह सम्पूर्ण देहको और जीवको और जठराग्नि को पुष्ट करै है ॥ शरीर की और हृदय की प्राण पवन का जो संयोग उसे आयुर्बल कहिये और किसी समय इन दोनों का संयोग दूर होय उसे मरण कहिये ॥

इस पृथ्वी के विषय कोई प्राणी अमर नहीं है इस कारण मृत्यु है सो निवारी नहीं जाय वैद्य है सो रोग को दूर करै मनुष्यके रोग साध्य है और वह मनुष्य पथ्यादिक नहीं करै तो उस मनुष्य के साध्य रोगही याप्य हो जांय और वह मनुष्य कुपथ्य कराकरै तो याप्य रोगकी असाध्य है और वह असाध्य रोग कुपथ्य के करने वाले मनुष्य को

निश्चय मार डाले इस कारण चतुर मनुष्य हैं सो रोगोंमें शरीर की रक्षा करैं कर्म-विपाक के जानने वाले को धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चारों का साधन कहा है सो मनुष्य का शरीरही है जो पुरुष इस मनुष्य शरीर को मारै वह सबको मारे है और जो इस मनुष्य शरीरकी रक्षा करै वह सबकी रक्षा करे सातों धातु और सातों धातुओं का मल औ वायु पित्त कफ ये सब बराबर शरीरमें रहनेसे शरीर को पुष्ट करे हैं और ये सब घटे बढ़े और कुपित हुये शरीर का नाश करै हैं ॥ इति सातों कला आदि का विचार सम्पूर्ण ॥

अथ सृष्टिके उपजाने का कथन लिखते हैं ॥

इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का कारण इच्छा सहित सच्चिदानन्द स्वरूप ऐसा जो ब्रह्म परमात्मा उसकी प्रकृति नाम माया है सो वह परमात्मा की माया नित्य है जैसे सूर्य की प्रतिछाया नाम प्रकाश है सो वह परमात्मा की माया है तो जड़ परन्तु चैतन्य जो परमात्मा उसके संयोगसे इस अनित्य संसार को नट के ख्याल की तरह यह माया करती भई और इस संसार की माया जो प्रकृति सो प्रथम बुद्धि को उपजाती है वह कैसी है इच्छा मयी महत्तत्व जिसका रूप पीछे महत्तत्व से अहंकार उत्पन्न भये पीछे वह अहंकार रजोगुण सत्वगुण तमोगुण में तीन प्रकार का हुआ पीछे सत्वगुण रजोगुण से मिल दश इन्द्रियों को पैदा करता है और मनभी इन दोनों ही से पैदा होता है ॥

अथ दश इन्द्रियों का स्वरूप लिखते हैं ॥

कान १ त्वचा २ नेत्र ३ जिह्वा ४ नासिका ५ ये तो पांच ज्ञानेन्द्री और वाक ६ हाथ ७ पग ८ लिंग गुदा १० ये पांच २ कर्म्मेन्द्री हैं तमोगुण है सो बहुत सत्वगुण से मिल अहंकार से पंच तन्मात्रा को उत्प करै है ॥

अथ पंच तन्मात्रा का स्वरूप ।

शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गन्ध ५ इन्हें तन्मात्रा कहिये पीछे पंचतन्मात्रा से पांच महाभूत उत्पन्न होते हैं शब्द तन्मात्रासे तो आकाश १ स्पर्श तन्मात्रासे वायु २ रूपतन्मात्रासे अग्नि३ रसतन्मात्रासे जल४ गन्धतन्मात्रा से पृथ्वी पैदा हुई ५ ॥

अथ ज्ञानेन्द्रियों का विषय ।

कान का विषय शब्द १ त्वचा का विषय स्पर्श २ नेत्र का विषय रूप ३ जिह्वा का विषय स्वाद ४ नासिका का विषय सुगन्ध दुर्गन्ध का ग्रहण ॥ ५ ॥

अथ कर्मेन्द्रियों का विषय ।

वाणी का विष बोलना १ हाथ का विषय ग्रहण करना २ पैरों का विषय चलना ३ लिंग का विषय मैथुन ४ गुदा का विषय मलका अच्छी तरह त्याग ॥ ५ ॥

अथ प्रकृति नाम लिखते हैं ।

महातत्वनाम महाअहंकार १ पंचतन्मात्रा ५ प्रकृति १७ इन्द्री १० मन १ महा भूत ५ ये १६ बिकार हैं ये सब मिलैं तब २४ तत्त्व होंय पीछे पांच तत्त्वों का यह शरीर रूप घरबने तब इस घरमें जीवात्मा शुभ अशुभ कर्मोंके आधीन मनरूपी दूतके बस हो शरीर रूपी घरमें आयके बसे पीछे जीव संयुक्त इस शरीर को बुद्धिमान देही कहैं हैं सो यह देही पाप पुण्य सुख दुःखादिकों से व्याप्त हुआ और यही जीवात्मा मनसे बंधा हुआ अपने किये हुये कर्म बंधन से बंधा है और काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ अहंकार५ इन्द्री १० बुद्धि १ ये सब अज्ञान हुये जीवात्मा के बंधन के अर्थ हैं और जीवात्मा को आत्मज्ञान होय तो इसकी मुक्ति होय और जिसमें दुःख उपजे उसै व्याधि कहिये जिसमें सुख उपजे उसै आरोग्य कहिये ॥ इति सृष्टि की उत्पत्ति ॥

अथ आहार और परिपाक और गर्भकी उत्पत्ति और बालक के पोषणादि का लक्षण ।

जो भोजनादिक करै सो हृदय की प्राण पवन से प्रेरित

प्रथम आमाशय में जाय प्राप्त होय है तब वही षट रस का आहार मधुरपने को और फेन भावको प्राप्त होय तब फिर वही आहार पचिके पित्तके प्रभाव से कुछ एक पका अम्ल पने को प्राप्त होय है पीछे आहार नाभि की समान नाम पवन से प्रेरित छठी ग्रहणी कलामें प्राप्त होय है तब वह आहार कोष्ट की अग्नि से ग्रहणी कलामें पचि कड़वा होजाय है पीछे वही आहार कोष्ट की अग्नि से पचि रस हो जाय है और वह अच्छे प्रकार पके नहीं और कच्चा रहै तो उसी आहार का आंव होय है और कोष्ट की अग्नि बलवान होय तो आहार का रस मधुर हो जाय है तब वही मधुर होय चिकनेपने को प्राप्त होय हैं फिर वही रस भले प्रकार पका हुआ सम्पूर्ण इस शरीर की धातुओं को पुष्ट करै है तब यह रस अमृत की उपमा को प्राप्त होय है और यह आहार रस मन्दाग्नि से दग्ध होय तो उदर में कडुवा रस होजाय अथवा खट्टा रस होजाय अथवा यही रस विष के स्वभाव को प्राप्त होय अथवा यही रस रोगों के समूह को शरीर में करदे और शरीर में सूजन करदे और यही आहार का रस इस शरीर में सार नाम बल है और सारहीन होय तो यह मल पतला होजाय है सो अच्छा नहीं और पिये जल के सार को नसों के द्वारा वायु। शरीर में पहुंचाय दे है और इसके निस्सार को पेडू में प्राप्तकर मूत्र कर दे है सो वह मूत्र लिङ्ग के द्वारा बाहर निकले है और उस आहार का जो रस सो नाभिकी समान पवन से प्रेरित मनुष्य के हृदय मेंजाय प्राप्तहोय है औरपीछे वह रसपित्त करपचे तोलाल रंगहोय फिरवह रस रुधिर होजाय है सोवह रुधिर सब शरीरमें रहै है औरवह रुधिर जीवका उत्तम आधार है औरवह रुधिरचिकना भारीहै और बलवान मीठाहै और वहदग्ध हुआ पित्तकी तरह होयहै एक२ धातु सवाचार२ दिन में पैदाहोय हैं पुरुषके महीनेमें भोजन किया आहार बीर्य होजायहै और स्त्रियोंके भोजनकिया आहार१ महीने

मेंस्त्री धर्मद्वारा रज होजाय है फिरस्त्री और पुरुष दोनोंमिल मैथुन करें तब स्त्रीकी भगका शुद्ध रुधिर और पुरुषका शुद्ध वीर्य ये दोनों उससमय मिलिस्त्रीके गर्भस्थान में गर्भहोजाय है पीछे वह भगके द्वारा नवें महीने में बाहर निकले तब उसे बालक कहिये और उससमय स्त्रीकेरज अधिकहोयतो कन्या होय और उस समय पुरुषके वीर्य अधिक होय तो पुत्रहोय और उस समय स्त्री और पुरुषइन दोनोंके रजऔर वीर्य बराबर होयतो नपुंसक पैदाहोय फिर परमेश्वर की जैसी इच्छा होय सोई होय लिखा नियम होय नहीं ॥

अथ बालकको औषधि देनेकी मात्रा लिखते हैं ।

१ महीनेका बालक होय तो दूध । सहत । मिश्रीघृतके साथ १ रत्ती औषधि दीजे पीछे जैसे २ बालक बढ़ै तैसेही औषधि एकबर्ष तक बढ़ाता जाय पीछे १ मासे औषधि १६ बर्ष तक दीजे फिर औषधि मात्र ७० बर्षतक इतनीही राखिये फिर बालक की तरह औषधि की मात्रा घटाय दीजे यहतो विधि कल्कचूर्णादिक की है और काढ़ाकी तौल इस्से चौगुनी जानलीजे और बालकको काजल उबटना स्नान कराया कीजे और महीने के महीने बालक को बमन करायदीजे और हड़ घिस उसकी घूंटी नित्य दे और अन्न का ग्रास पांचवें बर्ष दीजे और जुलाब १६ बर्षके उपरान्त दीजे और मैथुन२० बर्ष उपरान्त कराइये इसबिधिसे मनुष्य चलैतो उसके कभीं रोग होय नहीं और उसके वृद्धावस्था व्यापे नहीं ३० बर्ष तक शरीरका मोटापनरहै है ४० बर्ष पर्यन्त मनुष्यके वृद्धि का आगम रहैहै ५० बर्ष पर्यन्त त्वचा का गाढ़ापना रहैहै ६० बर्ष पर्यन्त नेत्र की ज्योति अच्छी तरह प्रकाशित रहैहै ७० बर्षपर्यन्त मनुष्यके शरीर में वीर्य का अधिकपना रहै है ८० बर्ष पर्यन्त मनुष्य के शरीरमें पराक्रम अधिक रहै है ९० बर्ष पर्यन्त अच्छी तरह ज्ञान रहै १०० बर्ष पर्यन्त बोलने और हाथ पगोंमें बलमल मूत्रके त्यागकी संज्ञा रहैहै ११० बर्ष पर्यन्त स्मरण मात्र

का स्थान रहै है १२० वर्ष पर्यन्त प्राण मात्र शरीर में रहैं हैं यह मनुष्य का शरीर निरोग रहै है तो आयुर्बल का प्रमाण १२० वर्ष का है इति आहार का परिपाक गर्भ की उत्पत्ति और बालक के पोषणादिका सम्पूर्ण ॥

अथ वायु की प्रकृति का लक्षण लिखते हैं ।

छोटे केश होंय और शरीर कृश और रूखा होय वाचाल मन होय आकाश में रहने वाले स्वप्न होंय ये लक्षण होंय तो वायु की प्रकृति मानिये ॥ १ ॥

अथ पित्त की प्रकृति का लक्षण ।

युवा अवस्था में सुपेद बाल आवैं बुद्धिमान होय और पसीना बहुत आवै क्रोधी होय स्वप्न में तेज देखे ये लक्षण होंय तो पित्त की प्रकृति जानिये ॥ २ ॥

अथ कफ की प्रकृति का लक्षण ।

जिसकी गंभीर बुद्धि होय स्थूलअङ्ग होय चीकने केश होंय बलवान होय स्वप्न में जलाशय देखे ये लक्षण जिसमें होंय उसे कफ की प्रकृति कहिये ॥ ३ ॥

अथ मेद का लक्षण ।

कफ और तमोगुण अधिक होय तो मूर्छा होय १ ॥ और वायु पित्त रजोगुण अधिक होय तो घुमेर और भ्रांति होय २ ॥ कफ और तमोगुण अधिक होय तब भौंर आवे भ्रांति होय ॥ ३ ॥ कफ वायु और तमोगुण अधिक होय तो तन्द्रा होय ॥ ४ ॥ और बल जातारहै तो ग्लानि होय दूख और अजीर्ण और खेद इनसे भी ग्लानि होय ॥ ५ ॥ बल थके उत्साह नहीं होय उसे आलस्य कहिये ॥ ६ ॥ इसे आदि ले बुद्धिमान पुरुष और भी जान ले ॥ ७ ॥ इति शरीर का संक्षेप निरूह सम्पूर्ण ॥

इति श्री मन्महाराजा धिराज महाराज राज राजेन्द्र श्री सवाई
प्रतापसिंहजी विरचिते अमृतसागरनामग्रन्थे ऋतुवर्णन नाम
ऋतुचर्य्या १ दिनचर्य्या २ रात्रिचर्य्या ३ शारीरक ४
सर्व्वअङ्ग संयुक्त वर्णन नाम एकत्रिंशतिमस्तरङ्गः ३१ ।

SPS
610 N 29 A
6402

امرت ساگر

که امرت روپی اوشدهیونکا ساگر ہے

یعنے

ایک تالاب عمیق ہی ادون دواؤن مفرد و مرکبکا جنکی خاصیت تاثیر آبحیات ہے

جو

حسب الحکم فلک کاب گردون جناب مہاراج ادھراج مہاراجہ سوائی پرتاب سنگھ بہادر بیکنٹھ باشی والی
و فرمانروای راج جی پور کی منافع خلائق کی لیی ہزارہا روپیہ صرف ہوکر بڑی بڑی بیدون کی اتفاق رائے
سی عمدہ عمدہ پوتھیون بید ک سی آزمودہ دواؤن کی نادر نادر نسخونکا ترجمہ بھاکھا زبان مارواڑی مین ہوا
اور مختلف مطابع مین ہزارون لاکھون چھپکر شائع ہوئین
چونکہ وہ زبان عام فہم نتھی کہ ایک دیس خاص کی بولی ہی لہذا اس پوتھی بید ک کثیر المنافع کو باستظہار ہمت و
برضاجوئی راسی صواب اندیش نوابین والاتمکین مہاراجہ مانسنگہ بہادر قائم جنگ بیکنٹھ باشی منجانب
مطبع بمصارف کثیر واقف علوم سنسکرت و بھاکھا پنڈت کالیچرن صاحب نے زبان سلیس بھاکھا مروج عالم
مین حرف بحرف صاف صاف ترجمہ فرمایا اور بہ حفظ حق تالیف درستی زبان سی چار مرتبہ طبع ہوا
جسنے اس ترجمہ کو دیکھا بہت پسند کیا از بس اسکی دواؤن کا شہرہ ہوا ہر ایک نے بڑی خواہش
سے خریدہ تا آنکہ یہ پستک تین مرتبہ مین ہزارہا چھپی ہاتھون ہاتھ بکی جس نے جو ایک نسخہ اسکا
آزمایا سریع التاثیر کثیر النفع پایا دوائی کام کیا بید کا نام ہوا اور بڑی بڑی حکمای وقت کی مشورہ
اور صلاح سے اس مطبع نامی گرامی بیدونکی ذریعہ سی
اور بید کی کتابون بر بہتری بہتری۔ لکھوترئی سی عمدہ عمدہ نسخہ بقدر ایک ثلث بڑہائے گئے

مقام لکھنؤ ماہ اپریل ۱۸۷۸ع

مطبع منشی نولکشور مین باسلوب تازہ چھپا